रामायण सप्तकाण्ड

वंगदेशोद्भव प्राचीन कविकुलरत्न भक्तश्रेष्ठ
महामना पण्डित कृत्तिवास प्रणीत
व
श्रीकालीप्रसन्न सिंह (सबजज, लखनऊ) कर्तृक
नानाग्रन्थसंकलित व टिप्पणी समन्वित
भाषानुवादित ।

बालकाण्ड ।

प्रथम संस्करण

पण्डित रामरत्न वाजपेयी
प्रिंटर व प्रोप्रायटर व पब्लिशर के प्रबन्ध से
लखनऊ स्टीम प्रिंटिंग प्रेस लखनऊ में छपा
सन् १९१६ ई०

मूल्य ४)   डाकव्यय १=)

प्रकाशक का निवेदन।

कोई ५२५ वर्ष हुए होंगे कि बँगला के साहित्य-भाण्डार में सरस्वती देवी के कर-कमलों में महाकवि कृत्तिवास ने एक सुमनोहर ग्रन्थ-रत्न अर्पण किया था। इसका नाम है कृत्तिवासीय "रामायण सप्तकाण्ड"। स्वर्गीय बा० कालीप्रसन्नसिंह सब जज महाशय की सदिच्छा से इसका हिन्दी भाषा में अनुवाद होनेलगा। सबसे प्रथम लंकाकाण्ड की रचना हुई, फलतः उसके प्रकाशित होने पर हिन्दी भाषा भाषियों ने जाना कि बँगला के साहित्य-कानन के इस कोकिल की मधुर कुहुक में कैसा रस है। इसके पूर्व उन्हें सिवा गुसाईंजी की मधुर कविता के भाषा ग्रन्थों द्वारा राम भक्ति रूप आनन्द के रसको लूटने का ऐसा सौभाग्य प्राप्त न हुआ था। इस रचना को राम पदानुरागी कविता प्रेमियों ने इतना अधिक अपनाया कि थोड़े ही समय में इसके तीन संस्करण निकल चुके।

इस उत्साह से उत्तेजित होकर हमने अब बालकाण्ड भी प्रकाशित कर दिया है। जो पाठक लङ्काकाण्ड में कवि की प्रतिभा-मयूरी का मत्त नृत्य देख चुके हैं, वे उनके प्रथम काण्ड की चातुरी देखने के लिये अवश्यही लालायित होंगे। लीजिये, आपकी उस चिर-कामना को सफल करने के लिये यह ग्रन्थकुसुम सज्जित किया गया है। आशा है कि लंकाकाण्ड की भाँति यह भी आपको पसन्द आवेगा।

जिन महानुभाव नागरी-हितैषी बङ्गाली सज्जन के अशेष परिश्रम से हिन्दी भाषा भाषियों ने पहले पहल महाकवि कृत्तिवासको पहँचाना, उन बाबू कालीप्रसन्नसिंहजी का देहान्त हो गया। आपका देहान्त होजाने पर, इस काम को आगे चलाते रहने के लिये हमने उनके पुत्रों से कापी राइट खरीद लिया। और लंकाकांड के दो संस्करण अपने यहाँ छाप कर (सब से पहले संस्करण के प्रकाशक स्वयं अनुवादक महाशय थे) अब हम ने यह बालकाण्ड भी प्रकाशित कर दिया है। यदि उक्त बाबू साहब का इतनी जल्दी देहावसान न हो गया होता, तो बहुत सम्भव था कि अबतक सातों काण्ड भी प्रकाशित हो गये होते और उनका देहान्त हो जाने पर यदि हम इसे अपने हाथ में न ले लेते, तो न जाने यह काम और कितने दिनों तक पीछे पड़ा रहता।

साहित्य की उन्नति न तो अकेला लेखकही कर सकता है और न अकेला प्रकाशक ही। एक ग्रन्थ का प्रणयन करता है, और दूसरा उसे वह कलेवर प्रदान करता है, जिससे ग्रन्थ अनेक पाठकों के पास पहुँच सके । परन्तु पुस्तक का यथोचित आदर कर-उसकी बिक्री बढ़ाकर-लेखक व प्रकाशक को अधिकाधिक पुस्तकें लिखने व प्रकाशित करने के लिये उत्साहित करना पाठकों के ही आधीन है । यदि इस पुस्तक को अपनाकर हिन्दी पाठकों ने हमें इसी प्रकार से उत्साहित किया तो आशा है कि शीघ्र ही हम शेष कांड भी पाठकों की भेंट कर सकेंगे ।

निवेदक

कृष्णजन्माष्टमी सं० १९७३

रामरत्न वाजपेयी

प्रोप्रायटर

लखनऊ स्टीम प्रिंटिङ्ग प्रेस लखनऊ.

कवीश्वर कृत्तिवास * ।

नवीन कलिका के उन्मेषकाल में, बङ्गसाहित्य-कानन में एक कलकण्ठ कोकिल की मीठी तान मुखरित हुईथी। आज न जाने कितना समय बीतगया; कितने ही सुख-दुःख, शोक और सन्ताप की लहरें उसके ऊपरसे आयीं और गयीं; कितनेही वज्र-निनाद, कितनीही:वीण-वेणु-मुरज की मधुर ध्वनियां अपना अपना नवीन विस्तार फैला चुकी हैं; किन्तु वह झङ्कार, काव्य-कानन के कोकिल का वह सुधास्वर, आज भी बङ्गदेश के नर-नारियों के मर्म मर्म में प्रतिध्वनित हो रहा है। वह कोकिल कौन है? वङ्ग साहित्य के आदि कवि कृत्तिवास। और उस कोकिल की मीठी तान है "रामायण सप्तकांड।" संस्कृत के अगाध साहित्यप्रासाद में आदिकवि बाल्मीकि जिस आसन पर बिराजे हुए हैं, उसी प्रकार के आसन पर बङ्गभाषा के साहित्य-सदन में कृत्तिवास सुशोभित हो रहे हैं।

चण्डीदास और विद्यापति ठाकुर चिरकाल से बङ्गभाषा के आदिकवि माने जाते हैं। उनके प्रतिष्ठित आसन के समीप ही महाकवि कृत्तिवास का आसन है। अब से कोई सवापांच सौ वर्ष पूर्व ये महाकवि अपनी कविता की सुरीली ध्वनि से बङ्गदेश को भावमग्न कररहे थे। कृत्तिवास के काल-निरूपण पर जिन जिन ने विचार किया है, प्रायः वे सभी इस विषय में सहमत हैं। स्वर्गीय प्रफुल्ल बाबू ने अनेक प्रमाणों के द्वारा सिद्ध किया था कि सम्वत् १३६२ में कृत्तिवास आविर्भूत हुए थे। स्वर्गीय रामगति न्यायरत्न महाशय भी कृत्तिवास को बँगला के आदिकवि लिख गये हैं। विश्वकोषकार की सम्मति में महाकवि कृत्तिवास १४१५-१४३० खृष्टाब्द में जीवित थे। दीनेशबाबू ने इन्हें सवा पाँच सौ वर्ष से पूर्व का माना है।

जिन भट्टनारायण प्रभृति पाँचब्राह्मणों को महाराज आदिशूर कान्यकुब्ज से बङ्ग देश में ले गये थे, उनमें भरद्वाज गोत्री श्रीहर्ष पण्डित भी थे। इन्हीं श्रीहर्ष के वंश में महाकवि कृत्तिवास ने जन्म पाया। आलोचना करने से जाना गया है कि नीचे की बारहवीं पीढ़ी में कृत्तिवास उत्पन्न हुए थे।

श्रीचैतन्यदेव का आविर्भावकाल सम्वत् १५४२ है। प्रसिद्ध अष्टाविंशतत्त्वस्मृति ग्रन्थ के प्रणेता रघुनन्दन उनके सहपाठी थे। किन्तु कुलपञ्जिका के हिसाब से ज्ञात होता है कि रघुनन्दन, कृत्तिवासके पश्चात् पाँचवीं पीढ़ीके समकालीन हैं। इस हिसाब से भी इन महाकवि का समय अबसे सवापाँचसौ वर्ष पूर्व सिद्ध होता है।

कृत्तिवास ने अपने वंश का परिचय एक स्थान पर इस प्रकार दिया है-

"कृत्तिवास पण्डित मुरारि ओझार नाति।
जार कण्ठे सदा केलि करेन भारती॥"

* बंगवासी प्रेस की छपी बंगला रामायण के आधार पर

"मा मालिनी नाम जार बाप बनमाली ॥"*

माधवाचार्य श्री हर्ष से त्रयोदश पुरुष थे। माधवाचार्य के पुत्र थे 'उत्साह' और उनके 'आयित'। आयित के उद्धव (ऊधो), उनके शिव, शिव के नृसिंह, जो फुलिया ग्राम में आकर रहने लगे थे। नृसिंह का वंशवृक्ष इस प्रकार है:—
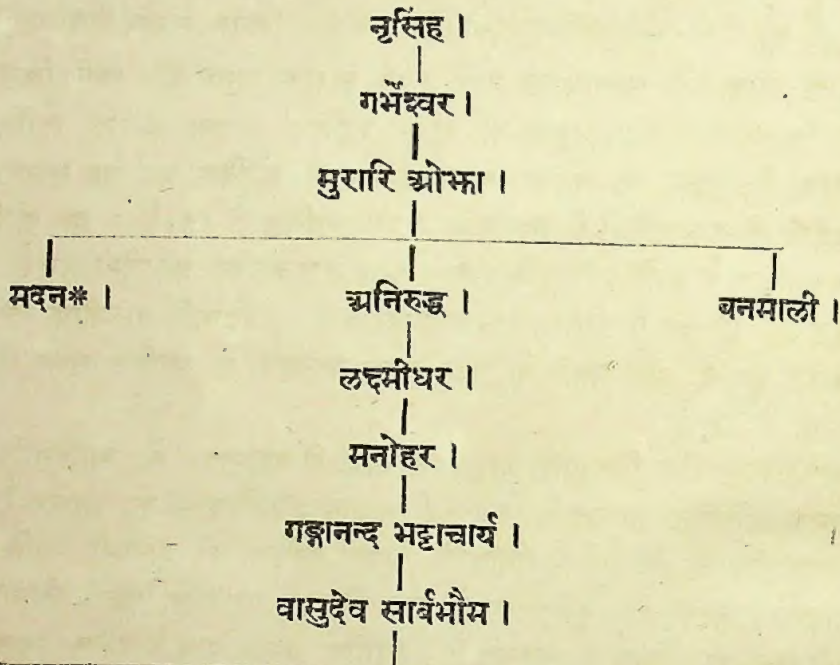
कृत्तिवास। शान्ति। माधव। मृत्युञ्जय। बलभद्र। श्रीकण्ठ। चतुर्भुज। ४ कन्याएँ

कृत्तिवास ने अपनी रामायण में, अनेक स्थानों पर अपनी जन्मभूमि का उल्लेख किया है। उस का नाम है फूलिया ग्राम। नवद्वीप के अन्तर्गत रानाघाट डिवीज़न से कोई एक कोस पर दक्षिण-पश्चिम में यह ग्राम है। एक समय था जब यह स्थान विशेष समृद्ध था; और ग्रामरत्न कहा जाता था। इस ग्राम में ढूंढ़ने पर भी अब कृत्तिवास के निकेतन का कोई पता नहीं चलता। वहाँ अब जङ्गल है, और है पशु-पक्षियों की लीलाभूमि। कृत्तिवास के बाल्यकाल के सम्बन्ध का कोई विशेष परिचय उनके ग्रन्थ (रामायण) में पाया नहीं जाता। फिर भी "कृत्तिवास पण्डित विदित सर्वलोके", "कृत्तिवास कविवर सर्वशास्त्रे सुगोचर" "कृत्तिवासः कविर्धीमान् सौम्यः शान्ति जन प्रियः।" आदि पदों से उनकी पाण्डित्यख्याति और शास्त्र-पारगंतता का परिचय पाया जाता है। आप कविरत्न की उपाधि से अलंकृत थे इसका भी उल्लेख पाया जाता है।

गुरुगृह से विद्या प्राप्त कर आप गौड़ेश्वर के यहां गये और वहाँ पाँच श्लोकों की भेंट के परिवर्तन में सम्मान प्राप्त किया। कहा जाता है कि गौड़ेश्वर के प्रार्थना करने पर ही आप ने रामायण की रचना की थी। सुना गया है कि हाराधन दत्त भक्तनिधि के पास सम्वत् १५५८ की लिखी हुई रामायण की एक पोथी है। उसमें कृत्तिवास का

*इन्हीं के वंश में, नीचे की दसवीं पीढ़ी में बँगला के प्रसिद्ध कवि भारतचन्द्र हुए थे।

लिखा हुआ आत्मविवरण भी है। नहीं मालूम, इस प्रति को किसी खोजी पुरुष ने देखा भी है या नहीं। यह विवरण कविता-बद्ध है।

कृत्तिवास ने रामायण का प्रणयन कब किया, इस सम्बन्ध में कोई एक मत नहीं। स्वर्गीय रामकमल विद्यालङ्कार लिख गये हैं कि सोलहवीं सदी के प्रारम्भ में रामायण रची गयी और श्रीहरिमोहन मुखर्जी अपने "बङ्गभाषा के लेखक" ग्रन्थ में लिख गये हैं कि सम्वत् १५६५ रामायण की रचना का काल है। स्वर्गीय आर. सी. दत्त और महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री आदि विद्वान भी इस बातका यथोचित निर्णय नहीं कर पाये।

इसे एक प्रकार से सभी मानते हैं कि कृत्तिवास ने रामायण की रचना श्रीचैतन्यदेव से बहुत पहले कर ली थी। कृत्तिवासप्रणीत रामायण में नवद्वीप का नाम तो है, पर श्रीचैतन्यदेव का कहीं उल्लेख नहीं। यदि श्रीचैतन्यदेव उनसे प्रथम हो गये होते, अथवा समकालीन ही होते, तो यह कब सम्भव था कि उनका नामोल्लेख इतने बड़े काव्य में न होता। और श्रीचैतन्य के समकालीन वैष्णव पद-प्रणेता जयानन्द अपने चैतन्यमङ्गल में कृत्तिवास का परिचय दे गये हैं। इससे प्रतीत होता है कि श्रीचैतन्य के समय में रामायण की रचना हो चुकी थी और रामायण के रचना-काल में उनका आविर्भाव न हुआ था। श्रीचैतन्यदेव ने सम्वत् १५४२ में जन्मग्रहण किया था। फलतः १५६५ सम्वत् रामायण का रचना-काल माना नहीं जा सकता।

बङ्गाल में बहुतेरे लोगों की समझ है कि महाकवि कृत्तिवास संस्कृत के पण्डित न थे; उन्होंने कथकड़ों से कथाएँ सुन सुन कर अपनी रामायण बनाई है। परन्तु इस बात पर विश्वास नहीं होता। पहले लिखा जा चुका है कि कृत्तिवास सुपण्डित थे। उनके निज वर्णन से भी यही सिद्ध होता है कि इसकी रचना वाल्मीकि के आधार पर हुई है। वाल्मीकि की कथा के साथ कृत्तिवास की कथा की तुलना करने से भी इसी बात पर विश्वास होता है।

यहाँ यह बतला देना आवश्यक है कि यह रामायण वाल्मीकि रामायण का अविकल अनुवाद नहीं है। फलतः आदिकवि को आदर्श मान कर अपनी कल्पना और कवित्व शक्ति का वे विस्तार कर गये हैं। यदि उन्होंने कथकड़ों से सुन सुन करके ही रामायण की रचना की होती, तो यह कैसे सम्भव था कि काण्ड के पश्चात् काण्ड, स्थल के पश्चात् स्थल, नद-नदी-कानन-गिरि-निकुञ्ज-निर्झर-फल-पत्र-प्रसून आदि के वर्णन का धारावाहिक मेल होता। इसमें सन्देह नहीं कि स्थान स्थान में परिवर्तन और परिवर्द्धन है, किन्तु इसे तो कवि ने अपनी इच्छा से जान बूझ कर किया है। उन्होंने जहां उचित समझा, वहां वाल्मीकि रामायण का अनुसरण किया है, जहां पुराणान्तर की कथा को लेना उचित समझा, वहां उन्होंने वैसा किया है। ये तो उनकी कल्पना की लीलाएं हैं।

कृत्तिवास की रचना से वाल्मीकि का वैसा ही मेल है जैसा कि तुलसीकृत रामायण का। तुलसीदासजी ने श्रीरामचन्द्र का वर्णन देव-स्वरूप में किया है, इसी मार्ग से कृत्तिवास भी गये हैं। कृत्तिवास के राक्षस भी युद्धक्षेत्र में श्रीराम को देवता समझ अवसर पाते ही स्तुति करने लगते हैं और कवि स्वयं जहां तहां राम-माहात्म्य का कीर्तन करते जाते हैं।

वाल्मीकि की सीता के चित्र में और कृत्तिवास की सीता के चित्र में भी अनेक स्थलों पर विलक्षण विभिन्नता है। सीताहरण के समय वाल्मीकि की सीता क्रुद्ध फणिनी की

भाँति गर्जती हैं तो कृत्तिवास की सीता "भय के मारे केले के पत्ते की भाँति काँपती है"। बाल्मीकि की सीता बलदर्पिता आर्यरमणी है, तो कृत्तिवास की सीता लज्जावती लता हिन्दू कुलाङ्गना। राम और सीता के चरित्र चित्रण में आदिकवि और कृत्तिवास के बीच इस प्रकार प्रार्थक्य है। अन्यान्य स्थलों में भी इसी प्रकार का वर्णन-वैचित्र्य है।

कृत्तिवास की रचना-सामग्री केवल बाल्मीकि रामायणही, वरन् मूलरामायण, अद्भुतरामायण, अध्यात्मरामायण, कालिकापुराण और उपपुराण आदि ग्रन्थ हैं। कृत्तिवास ने कहीं से भी कोई भाव क्यों न लिया हो, पर इसमें सन्देह नहीं कि उनकी कविताशक्ति और कल्पना-चातुरी बड़ी विलक्षण है। उनकी मोहिनी कल्पना अनुपम छटा का विकास कर गयी है।

कृत्तिवास की रचना अनेक स्थलों पर सरल, सरस और मधुर है। बङ्गाल में बालक बालिकाओं को इसके कितनेही स्थल उसी प्रकार कठाग्र हैं, जिस प्रकार कि हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में तुलसीकृत रामायण की चौपाइयाँ।

गोस्वामी तुलसीदासजी की मधुर रस परिप्लुत रामायण की काट छाँट कर लोगों ने जिस प्रकार उसको नष्ट भ्रष्ट कर डाला है (और आज तक यह काट छाँट जारी है-रुकी नहीं) उसी प्रकार की दशा कृत्तिवास की भी है। बङ्गाल के लोगों को समझ है कि जो रामायण आजकल कृत्तिवास के नाम पर पढ़ी-सुनी जाती है, इसमें कृत्तिवास की रचना अत्यल्प है। परवर्ती लेखकों के प्रमाद के कारण कृत्तिवास की आदि रचना परिवर्तित और परिवर्द्धित हो चुकी है।

वर्तमान रामायण की भाषा से ही इसका पता लग जाता है। ऐसी परिमार्जित, परिशोभित और विशुद्ध बँगला भाषा शैशव की अस्फुट अवस्था में नहीं हो सकती। रामायण की भाषा से, उन दिनों के लिखे गये काग़ज़ पत्रों की भाषा का मिलान नहीं मिलता। दस पाँच पंक्तियों में ही यह प्रभेद नहीं है, किन्तु अनेक स्थल के स्थल, भाषा का विपरीत रूप धारण किये बैठे हैं।

कृत्तिवासके पुराने संस्करणों में, जो पुराने ढंगके शब्द थे, वे नये संस्करणोंमें बदल डाले गये। कई स्थानों पर तो पंक्तियां की पंक्तियां बदल दीगई हैं। श्रीयुक्त हीरेन्द्रनाथ दत्त महोदय ने ऐसे कितने ही स्थलों के, नये पुराने अवतरण उद्धृत कर उक्त बात को प्रमाणित कर दिया है। सन् १८०३ ई० में श्रीरामपुर में पादड़ी लोगों के यत्न से पहले पहल कृत्तिवासीय रामायण छापी गई। फिर गुप्तप्रेस का संस्करण प्रकाशित हुआ। छापे की अपेक्षा हस्तलिखित प्रतियों में ही पाठ परिवर्तन अधिक है।

संस्कार-संशोधन सदा से होता आया है। कोई ७० वर्ष हुए होंगे जब, स्वर्गवासी पं० जयगोपाल तर्कालंकार कृत संशोधन प्रकाशित हुआ। कृत्तिवास की रचना को ग्राम्य-दोष दूषित, अशुद्ध और असंलग्न समझ कर उन्होंने संशोधन किया था। फलतः आज कल जिस रामायण का प्रचार है उसका आदर्श पण्डित जयगोपाल का संस्करणही है। जयगोपाल ने अच्छा किया अथवा बुरा, यह नहीं कहना है; किन्तु कहना यह है कि कृत्तिवास का आधुनिक भाषा भाव उन्हीं की सम्पत्ति है। जयगोपाल ने ग्रन्थ भर में अपना नांव ठाव तक कहीं भी नहीं दिया। इससे सिद्ध है कि उन्होंने सदिच्छा के वशवर्ती होकर लोकोपकार के लिये ही यह किया था।

कृत्तिवासीय रामायण बालकाण्ड का

सूचीपत्र।

सर्ग	विषय	पृष्ठ

॥ इति ॥

* श्रीगणेशायनमः *

कृत्तिवासीय रामायण ॥

बाल काण्ड ।

प्रथम सर्ग ॥ १ ॥

वैकुण्ठ पुरीमें श्री विष्णुभगवान का चार अंशमें प्रकट होना तथा अवतार तत्त्व निरूपण

सो०—श्री वैकुण्ठ ललाम, लोक शिरोमणि मनहरण ।
राजत जहँ घनश्याम, गरुड़ गामि कमलारमण ॥
जहँ न सूर शशि भास, मासदिवस निशिसोंरहित ।
प्रभुकर चारु निवास, निज द्युति ते भासितपवित ॥
अति विशाल अरु खर्व, लोक निम्नतल हैं जिते ।
सतत प्रकाशित सर्व, तासु अलौकिक ज्योति ते ॥
फलप्रद तहां विभात, चिरथिर सुरतरु रुचिरवर ।
जनु समूर्ति दर्शात, चतुर्वर्ग भवताप हर ॥
परम प्रयत हरिधाम, सुखद सरस आनन्दमय ।
शोभित रुचिर ललाम, मरकत मणि वैदूर्यचय ॥
हरिपद रत नर जोय, विषय वासना सों विरत ।
लहिशुचि हरिपुरसोय, पुलकितचितविहरतसतत ॥
रहत जोय नरलीन, विषय लालसा मधि सदा ।
जन्म वादि तिन कीन, लहहिं नाहिं हरिपुर कदा ॥

काम क्रोध मद लोभ, जीति जोय हरिपद भजत।
चित निष्काम अछोभ, नित्य निकेतन सो लहत॥
भोगहिं परमानन्द, तहँ न नेक दुष्कृति सुकृति।
चिदानन्द सुख कन्द, दरश सुधा ते तृप्त निति॥
जरा मृत्यु दुख क्लेश, लेश न तिन कहँ व्यापहीं।
धारि दिव्य वर वेश, दीप्ति मान ह्वै राजहीं॥
जान सकल नर नारि, करत निर्मली अमल जल।
तिमिकलिकलुषनिवारि, करतकृपाहरिचितविमल॥
एक समय भुवनेश, भावि चिन्तना करि हृदय।
चारि दिव्य वर वेश, किय धारण छवि पुञ्जमय॥
सुघर श्याम अभिराम, रामभरत अरु लक्षमण।
शत्रूहन गुणधाम, जिन्हन मनन भव भय हरण॥
सीय रूप श्री धारि, परा शक्ति सुर सेविता।
कनक लता अनुहारि, रामवाम भइँ शोभिता॥

युगलमूर्ति यह वरणि न जाई ❋ मनोतीत सब भांति सदाई॥
जगमय उभय वदत श्रुति चारी ❋ मंगल मूल अमंगल हारी॥
ईश सनातनि शक्ती माहीं ❋ नित सम्बन्ध भिन्न कछु नाहीं॥
जिमि न भेदरविकिरण मझारी ❋ पृथक न जिमि तरंग अरुवारी॥
सीमा गगन वर्ण आकारा ❋ पुहुप गंध अरु धर्म अचारा॥
मन आतम विराग निर्वेदा ❋ क्षमा साम रस रूप अभेदा॥
तेहि विध पुरुष प्रकृति यहजोऊ ❋ भेद न एक एक ते दोऊ॥
यहदोउ प्रथित नाम श्रुति कहही ❋ गुणपद वाचि केवलहिंअहही॥

दो०-शीतगन्ध[१] जेहि विधकहे, मलयज के गुण दोय।
शीतलता सौरभ उभय, प्रकट हृदय मधि होय॥

---

१ चन्दन॥

तेहि विध जगत नियन्ता माहीं ❋ द्वै विधके गुण प्रकट लखाहीं ॥
एक उग्र यक मृदुरस खानी ❋ इतहिनपुरुष प्रकृतिकरिजानी ॥
द्व गुण संयुत विभु भगवाना ❋ नरचित वृत्तिहि तासु प्रमाना ॥
एकहि मानस सोंहिं सदाई ❋ द्विविध प्रवृत्त नरन प्रकटाई ॥
द्वै मधि यककर भाव कठोरा ❋ जस साहस दृढ़ता रिस घोरा ॥
द्वितिय भाव अति मधुर सुहाई ❋ यथा क्षमा लज्जा सरलाई ॥
सहज सहन शीलता सनेहू ❋ दया आदि जेतक गुण येहू ॥
इमि द्वै भांति प्रवृत्ति विकासू ❋ विभुके द्विधा सत्व कर भासू ॥

दो०-जिमि वाचक मनुजत्वके, उभय वृत्ति यह जोय।
तिमि ज्ञापक विभुतत्त्व के, पुरुष प्रकृति मिलि दोय ॥
यदपिसत्असतउभयकृति, इनहि वृत्ति ते होय।
परतेहि वर्तत सुकृति मधि, प्रकृत संत जन जोय ॥
जस असाधु जन रोष ते, करेहिं वहुल अपकार।
पर सोइ रोषते साधु सुधि, साधत जग उपकार ॥
यहि विशाल संसार महँ, यावत दृश्य लखाय।
तिन सबके द्वै भित्ति हैं, नित्य अनित्य सदाय ॥
नित्य भित्तिकर संततहि, परमारथहि अधार।
अनितभित्तिकरअहैथिति, नश्वर वस्तु मझार ॥
चन्द्रछटालखिजिमिउपज, कामुक के उर काम।
परसोइलखिसुधिउरप्रकट, विभुकर हास्य ललाम ॥
वहिर दृष्टिते सृष्टि मधि, अति शिशुतायि समान।
सुखकर प्रियतरभीतिहर, नाहिं अवस्था आन ॥

सो०-प्रकृत शान्ति सुखलाहु, निर्भरता ते होत है।
सो जग मधि सब काहु, मातृक्रोड़तजिअपरनहिं॥
जननि क्रोड़ मधि बाल, तेहि निर्भरता हेतु ते।

विगत चिन्त सब काल, अतिप्रमुदितचितविहरहीं॥
पर जगजात जननि के अंका ❋ होत न शमनशमनकर शंका ॥
भव सम्भव भरोस यहि ठाई ❋ सतत अपूरण देत दिखाई ॥
परयदिलौकिकजननिहिजगनर❋मानिनिदर्शनविश्वजननिकर॥
जग कारणहि जननि अनुहारी ❋ ध्यावहिं प्रेम भाव नरनारी ॥
तौ तिन हृदय प्रेम रस जोई ❋ प्रगट होत कहि जात न सोई ॥
अल्प बुद्धि मानव गण जेते ❋ नित्य पदार्थ लहन हित तेते ॥
अनित पदार्थ केर अनुशीलन ❋ करहिंयेहिसिखवतश्रुतिदर्शन ॥
गोचर सोंहिं अगोचर ज्ञाना ❋ होत वदत बुध बुद्धि निधाना ॥
हेरहि जन जित दीठि उठाई ❋ विविधरूप तित प्रकृति लखाई ॥
तुंग शृंगमय कहुँ नग श्रेणी ❋ कहुँमनहरनिकिलोलिनिवेणी॥
तिमिराकार लखिय कोइ धाई ❋ घुमरि घोर वारिद घहराई ॥
कहुँ विहरत मृग विहग निरंतर ❋ ललित हरित तृणपूरित प्रांतर ॥
कतहुँ निरस मरुपुनि कोइओरा ❋ तमसाछन्न गहन घन घोरा ॥
कबहुँ चन्द्र चर्चिता विभावरि ❋ कबहुँ तामसी निशा भयंकरि ॥

दो०—यहिविध भौतिक दृश्य लखि, तत्त्वदर्शि उरमाहिं ।
विश्वव्यापि विभु कर सोई, युग्म भाव प्रकटाहिं ॥
झंझानिल करका कड़क, गिरिन अनल उद्गार ।
महि कम्पन कुधरन ढहन, जल प्लावन अनिवार ॥
घन घर्षण उल्का खसन, कुलिशन पतन घनेर ।
दावहुताशन घन गहन, दहन पादपन केर ॥
भरी तिमिर तर शर्वरी, दमकन दामिनि दाम ।
भाँति भाँति उत्पात इमि, जब लखात भवधाम ॥

सो०—तब सुखप्रद सुखसार, मधुर मूर्ति निखिलेशकर ।
होय भैरवाकार, चित्त माहिं उद्भासहीं ॥

भावुक उर तेहि काल, जस जाके उर भावना।
तस विभु मूर्त्ति कराल, भिन्न भिन्न प्रकटत यथा ॥
रूप प्रचण्ड काल अनुहारी ❋ उत्कट विकट भृकुटि भयकारी ॥
नाग चर्म कटितर परिधाना ❋ अंगराग घन भस्म मसाना ॥
मुण्ड माल गल ग्रन्थित व्याला ❋ धधकत भाल हुताशन ज्वाला ॥
कर खर्पर खरशूल कठोरा ❋ धुधुकत विषम शृंग ध्वनिघोरा ॥
जटा जाल घन रुक्ष विशाला ❋ प्रलयानल इव नेत्र कराला ॥
रुचि अनुहारि काहु उर माहीं ❋ अपर भाव यहिविध प्रकटाहीं ॥
उग्ररूप सायुध भुज चारी ❋ द्युति मध्याह्न भानु अनुहारी ॥
केहरि नाद कम्प तिहुँ धामा ❋ दलन दनुज दल रत संग्रामा ॥
उत्थित अट्टहास घन घोरा ❋ अस्त्रपुञ्ज गर्जत चहुँ ओरा ॥
झटन विखंडित मुण्ड प्रचण्डा ❋ अविरतढहतमनहुँगिरिखण्डा ॥
दो०—पुनि शोभा प्राकृतिक जब, जगत माहिं दर्शात।
तब मनुजन मन मधुररस, मधि निमग्न ह्वैजात ॥
हिय अनभव तब होत है, मनहुँ चतुर्दिशि माहिं।
सुषमाशशि विहँसतवदन, रह हँसाय जगकाहिं ॥
तब चम्पक वरणी शशि वदनी ❋ मृगशावक लोचनछबिसदनी ॥
जगत मातु मूरति जग पावनि ❋ प्रकटतचितइमिमुदउपजावनि ॥
अंग नवल नीलाम्बर सोहै ❋ कमल माल गल जगमनमोहै ॥
वाहु प्रसून वलय छवि छाई ❋ पदन मणिन मंजीर सुहाई ॥
चितवनि नेहसुधा वर्षावनि ❋ मृदुबिहँसनजनप्रीतिबढ़ावनि ॥
कर चालन नित अभय प्रकाशी ❋श्रुतिस्वभक्तनुतिश्रवणकेआशी॥
नव प्रसूति जननी जेहि भांती ❋सबकृतिविसरिशिशुहिदिनराती
विहँसति लखति नेहभरिलालति ❋ नवनवयतनसोहिंप्रतिपालति ॥
तेहि प्रकार मनुजन मन माहीं ❋ जेहि क्षणमधुर भावप्रकटाहीं ॥

तब अनन्त बिभु जगत अधारा * परहिंजानि जननी अनुहारा ॥
गूढ़ रहस साकार उपासन * अहै याहि उर प्रेम विकाशन ॥
यहि विनुसकल साधकन काहीं * मनन अचिन्त्यसुलभहैनाहीं ॥
निर्गुण ब्रह्म भाषत श्रुति जोई * सबन चिन्तवन सुलभ न सोई ॥
जेहि विध सुन्यो शब्दयककाहू * बूझै अर्थ न बिनु तेहि लाहू ॥
केवल नाम वस्तु कर लीन्हे * जानि न जायविनागुणचीन्हे ॥
याकर विविध प्रकार प्रमाना * जानत तत्त्वनिधान सुजाना ॥

दो०—ब्रह्मतत्त्व दुर्ज्ञेय अति, अगम असीम अनन्त ।
जाहिविसूरतदिवसनिशि, अमित सूरि सुर संत ॥
पुनि यहि दुर्गम पन्थ के, पथिक अल्प भव धाम ।
यहिहितनिजनिजशक्तिलगि,चलिनरकरहिंविराम॥

जगत जनक जन रंजन कारी * सकलविश्वमय सबगुणधारी ॥
करिय ईश गुणगण यतचिंता * तत लखात प्रभुताइ अनंता ॥
ब्रह्म बिचार जान जस जोई * तसमति सरिस गाव सबकोई ॥
प्रकृत तत्त्वविद गुणि गण जेते * किय बखान जड़ चेतन तेते ॥
पुरुष प्रकृति कोउकर मन भावा * नादहिंकोउअनादिकहिगावा ॥
इमिजगभ्रमहिहरणहितबुधजन * जगतकारणहिकीन्हनिरूपन ॥
पर जगधंधि अन्धजन काहीं * यहहुनसुलभजो बूझिसकाहीं ॥
पुनि अचिंत्य चिंता केहि भाँती * करिसकविषयनिरतनरजाती ॥
भगवतभक्तिहिभवभय तारिणि * मुक्तिजननिजनमनमलहारिणि
चित्तहि मथिसो भक्ति प्रकटाई * मुख भारति सों जानि न जाई ॥
श्रुति सम्मत बुधगण कह तासू * नव प्रकार ते होत विकासू ॥
यथाश्रवण सुमिरन गुणकीर्तन * पद सेवन अर्चन अरु वन्दन ॥
दास्य सख्यअरु आत्म विसर्जन * अहैं येहि नव भक्ति निदर्शन ॥

टिप्पणी १ देखो ॥

तिन मधिप्रथम भावयह ख्याता ❋ हरिगुणश्रवणश्रवणसुखदाता ॥

दो०-सबन विदित जस जगतमधि, निज प्रियजन करकोय।
सुयश सुकीरति नाम सुनि, अति हर्षित चित होय ॥
तिमि विचित्र हरि चरित श्रुति, भणित प्रयतनित नाम।
सुनि गदगद चित होत नित, प्रकृतभक्त भव धाम ॥
पर केवल श्रवणहीते, तृप्त होत नहिं प्रान।
निज मुखहू सों विभु चरित, करहिं सतत ते गान ॥
साधक साधित येहि है, द्वितिय भक्ति कर भाव।
जाहि कीरतन नाम सों, संत सूरि सुर गाव ॥

सो०-सुमिरन करन सदाय, भक्तिकेर लक्षण तृतिय।
अर्थ तासु मनलाय, निज प्रिय जनकर चिन्तवन ॥
तजियत बिषय विकार, तन्मय होनहि मर्म तेहि।
चौथ भाव सुखसार, पद सेवन कहँ केहत हैं ॥
जिमि सेवक चितलाय, स्वामिहि संतोषन निमित।
करत अनेक उपाय, विविध भाँति सेवकाय करि ॥

प्रकृत भक्ततिमि सकल विसारी ❋ इष्टदेव मूरति हिय धारी ॥
सेवारत नितप्रति रह ऐसे ❋ सती तीय सेवत पति जैसे ॥
पञ्चम भाव भक्ति कर अर्चन ❋ तेहिविधानइमिवदत साधुगन ॥
पार्थिव प्रेम विकाशन रीती ❋ अर्पण विविध वस्तुसह प्रीती ॥
पर जग प्रकृतभक्त कर चारू ❋ यहिविध शुचि अर्चन उपहारु ॥
भक्ति सुगंधि गन्ध मनहारी ❋ भेट प्रेम पुलकित दृगवारी ॥
चित शुधि सुमन धूप अनुरागू ❋ ज्ञानदीप बलि स्वारथ त्यागू ॥
वन्दन षष्ठ भक्ति कर भावा ❋ प्रणति अर्थ जेहि वेदन गावा ॥
निज निर्मल उर मुकुट मझारी ❋ मन वांछित विभुमूर्ति निहारी ॥
परमानन्द मगन है नीके ❋ उघरत दिव्य विलोचन हीके ॥

दो०—सप्तम लक्षण दास्यहै, तासु प्रथित यह रीति।
विभुपद महँनिजकर्मफल, अर्पण करन सप्रीति॥
नीतिविहित यह भृत्यगण, करत कृत्य हैं जोय।
तेहिफलकर अधिकारियक, तासु स्वामिही होय॥
अष्टम लक्षण सख्य है, यहिविधि तासु विकास।
विभुसन सरल सनेह करि, थापिय दृढ़ विश्वास॥
सो०—प्रीति पात्रहै सोय, जापै होय प्रतीति दृढ़।
सुकृति कुकृति कृतिजोय, तासनकरि न दुरावसक॥
प्रकृत सख्यता कर परिणामा * अहै आतम उन्नति जग धामा॥
सुकृति प्रवृत्ति कुमति अपहारा * संतत होत प्रकृत सखद्वारा॥
नवम भाव इमि वद बुध लोगू * आत्म विसर्जन तजियत भोगू॥
सुख सम्पति अरुतनु मनकाहीं * करहिं समर्पण विभुपद माहीं॥
राग विराग त्याग ह्वै जाहीं * होंहि विलीन ब्रह्मसुख माहीं॥
पर मूरति कल्पना विहाई * यहनव भाव साधि नहिं जाई॥
प्रकृत उपासक कर यह रीती * करि इष्टहि आदर्श सप्रीती॥
तदनुसार निज चरित स्वभाऊ * करन हेतु सत करत उपाऊ॥
नतु नुतिमन्त्र ध्यान आराधन * होत विफल यावत यहसाधन॥
यहिहित विभु भवभीर उधारी * जगत वद्धजेहि शक्ति मझारी॥
भक्ति प्रेम जग करन प्रचारा * करहिंचरितधरिविविधप्रकारा॥
याते सकल जगत के प्रानी * अमितभाँतिहरिगुणसकजानी॥
दो०—यहिविनु निर्गुण ब्रह्म कहँ, जो अव्यक्त अकाय।
चञ्चल मन मनुजन सदा, ध्याउब अति कठिनाय॥
प्रेमहु तेहि प्रति उपजही, जो प्रत्यक्ष लखाय।
अलख तर्क अनुमान मधि, संशय रहत सदाय॥
यह सहजही जीवकर रीती * जो दर्शत तेहिप्रति दृढ़प्रीती॥

प्रफुलित कंजत्याजि अलिव्राता * खोज न मलय गंध विख्याता ॥
अलख देव बनते अधिकाई * प्रापित सुमन घ्राण सुखदाई ॥
तृषित लब्ध जल सो सुखि जैसे * श्रुत सुधाब्धि सनह्योहिं न तैसे ॥
अणु परमाणु ज्ञान यह दुस्तर * थके चिन्तवन करिबहु बुधवर ॥
भक्ति प्रेम रसिकहि यह ज्ञाना * नहिं करिसक सन्तोष प्रदाना ॥
यहिहित शुचि भगवत अवतारा * प्रेम भक्ति मनुजन दातारा ॥
जे अद्वैत ब्रह्मवादी जन * अहैं विशेष प्रणति के भाजन ॥

दो०—परतिन मत अल्पज्ञ कहँ, इमि दुर्ज्ञेय असार ।
पक्वविल्व फलपै यथा, शुककर चंचु प्रहार ॥
ब्रह्म ब्रह्म केवल रटन, यहि प्रकार विनु ज्ञान ।
जिमि प्रकटत ध्वनि यंत्रते, पर कछु यंत्र न जान ॥

सो०—श्रुति पढ़ि सकत न कोय, यथावर्ण शिक्षा विना ।
ब्रह्मज्ञान नहिं होय, तिमि साकार विहाय कै ॥

परमारथ पद केर प्रकाशन * वर्णमाल साकार उपासन ॥
शिक्षक स्वयं तासु जग स्वामी * विश्वम्भर हरि अंतर्यामी ॥
यह जानत जगमधि सब कोई * बिनु अभ्यास न विद्या होई ॥
बालक प्रथम दारु असि द्वारा * सीखत असि संचलन प्रकारा ॥
बिना सीख जिमि बालक काहीं * फेरब प्रखर खड्ग शुभ नाहीं ॥
तिमि चञ्चलचित नरहि निरंतर * निराकार निर्णय अति दुस्तर ॥
जानत तरन जोइ नर नाहीं * जोगति तेहि अथाह जलमाहीं ॥
ज्ञान हीन मनुजन गति सोई * निराकार चिन्तन मधि होई ॥

दो०—यथा अशोधित क्षेत्र महँ, उपजत अन्न न कोइ ।
चित्त शुद्धि बिनु तौन विध, ब्रह्मज्ञान नहिं होइ ॥
प्रथमहि मानस क्षेत्र ते, काम क्रोध मदरारि ।
लोभ मोह इन कण्टकहि, फेकिय दूरि उखारि ॥

श्रुति दर्शन हलते बहुरि, जोति हृदय क्षितिकाहिं।
समदम धृति मृदुता दया, बवै बीज तेहि माहिं॥
पर हरि कृपा वारि बिनु बरसे * तेहिकृषि माहिं नाहि फल दरसे॥
हेतु तासु यहि कृषी मझारा * बाधक जन्तु अनेक प्रकारा॥
काक कुसंग द्विरद अभिमाना * मत्सर महिष मोह मृग नाना॥
शलभ प्रलोभ कुशील शृगाला * मूष द्वेष क्रुद कोल कराला॥
अरु उत्पात होहिं बहु भाँती * जे परमारथ कृषी अराती॥
भूरितुषार असार विचारा * विषयविकार अमितघनधारा॥
परनिन्दा हिम उपल प्रवर्षन * भ्रान्तिअशान्ति दुरन्तसमीरन॥
इन आपदन हेतु भयहारी * धरि अवतार करहिं रखवारी॥
सो०-सरस रसिक जन काहिं, परम रसायन हरिचरित।
सोरस नहिंजिन माहिं, लहि माणिक गुञ्जा गिनत॥
कलुषित उरनर जोय, ईश रहस्य अगम्य तेहि।
मंजु कंज तजि सोय, पंक अंग लेपन करहिं॥
जस रुचितिनन हृदयमहँ भावत * तेहिप्रकार हरिलीलहु ध्यावत॥
परजेहि भाँति मलिन जलमाहीं * चन्द्रन मलिन परे परछाहीं॥
वायस चंचु गंगमधि धोई * नहिं अपावनी सुरधुनि होई॥
तिमिभ्रमान्ध भगवतकृति काहीं * कबहुँनाहिंकरिअशुचिसकाहीं॥
अशन सकल जनजीवन मूला * रुग्नहि सोइ होत प्रति कूला॥
भगवत चरित विमल रसखानी * भुंजत स्वाद रुचिर शुचिज्ञानी॥
अमिय मूरि हरिपद अनुरागा * कहुपावहिं केहि भाँतिअभागा॥
सुकृतिवंत जिनमन मल नाहीं * ते हरि चरित प्रयत सर गाहीं॥
दो०-जलथल नभचर अचर मधि, प्रकट अवशि करतार।
पर जन मन सरसिज विकस, ध्याय मनुज अवतार॥
मानव प्रिय मानव चरित, जिन्है नाहिं प्रिय आन।

मनुज भावते यहि निमित, करहिं ब्रह्म गुण गान ॥
निराकार वादिनहु के, ईश कल्पना माहिं ।
मानव वृत्ति विहायके, अपर न कछु प्रकटाहिं ॥
सो०—जिते शब्द व्यवहार, विभु कीर्तन मधिते करहिं ।
सो सुनि हृदर मझार, बूझि परत नर वृत्तिही ॥
न्यायि कृपाल उदार, स्वजन निरंजन प्रेम वश ।
दीन शरण दातार, नरकृत वाचक शब्द यह ॥
इनहि शब्द समुदाय, निगुण ब्रह्मगुण कथनमहँ ।
करहि प्रयोग सदाय, निराकार वादिहु सकल ॥
मनुज चरितही यक सब भांती * सकहिं बूझिसहजहिनरजाती ॥
यदि सन्देह करहिं यह कोई * अज असीम जगव्यापक जोई ॥
सो परिसीम क्षुद्रतनु माहीं * केहिविधकरतप्रकटनिजकाहीं ॥
तो तेहि उतर ख्यात तिहुँधामू * सर्व शक्तिधर विभुकर नामू ॥
सकल काज समरथ भगवंता * तिनकर गुणगण अहैं अनंता ॥
यहि विध तर्क पयोधि अपारा * नरबुधि लघुतरि पावकिपारा ॥
अहै धन्य जग मधि नर सोई * कौनेहु भाव भजै हरि जोई ॥
वृथा वाद अब सकल विहाई * वरणहु रामचरित सुखदाई ॥
दो०—भक्त मनोरथ हेतु प्रभु, कमलापति भवभूप ।
कोटि काम मदहर सुघर, धरेहु मनोहर रूप ॥

रामगीतीछन्द ॥

आनन्द कन्द गोविन्द छवि हरिधाम मधि इमि भास ।
जनु चारु शोभा सिन्धु उत्थित पूर्ण इन्दु विकास ॥
नव नील नारद सरिस अनुपम श्यामतनु अभिराम ।
मुनि ध्येय पद पंकज रतन मंजीर शोभि ललाम ॥

छविखानि मृदु मुसकानि युत इमि वर वदन दर्शात।
जेहि कोटि शारद शशिहु उपमा देत चित सकुचात॥
युग लोचनायत फुल्ल नीलारुण नलिन दल न्याय।
जेहि दरशहित चञ्चल रहत वर भक्त भृंग सदाय॥
रद श्रेणि मुक्तापांति कांति लजावने छवि ओक।
जेहि शुभ्र ज्योति समूह ते भासित भयो तिहुँलोक॥
पीयूष सागर तट सरिस शुचि अधर मंजु सुहाय।
लह विम्वफल अरुणता जेहि प्रतिविम्व मात्रहि पाय॥
कुण्डल दमक द्युति दामिनीवत मणिरचित छविसारि।
लोलित सुगोल कपोल पै शशि सूर प्रतिभा हारि॥
अति प्रभाशाली रतन निर्मित क्रीट शोभित शीश।
जनु नील भूधर शृंग पै विलसत शरद रजनीश॥
चर्चित सुअंग कुरंगमद लहिगन्ध शुचि मनमोह।
मनहर सुघर दामिनिनिकर इव पीतपट वपुसोह॥
भुज युगल मानस सरसि वारिज नाल मद संहारि।
आजानु लम्वित अमितबल नित स्वजनपालनकारि॥
खल दनुज दलबल दलन अद्भुत गठन धनुकर भास।
जनु इन्द्रचाप समेत शोभित रुचिर नील अकास॥
रविरश्मि ज्योति विकासि तूण विभात पृष्ठ मझार।
अँग अंग मधि अनुपम विभूषण सोह विविध प्रकार॥
यहि भांति त्रिभुवन भूप रूप अनूप सुभग ललाम।
धारयो स्वभक्ततन हेतु लीलामय प्रभू निष्काम॥

नारिन्द छन्द॥

हरि प्रियतमा रमा निरुपमा रूप सीय कर धारी।
रामवाम दिशि हुलसि विशोभित विकस प्रभा मनहारी॥

भक्त वृन्द सुखकन्द रक्त अरविन्द सरिस पद भ्राजत।
पदनख झलक मनहुँ पूरण शशि है दशखण्ड विराजत॥
चन्द्र सरोज दोउकर यकथल माहिं निहारि विकासा।
भ्रमर चकोर छोरि उर चिन्तन नचन लगे सहुलासा॥
शशिते फुलित कमल लखि अलिदल यह विचार उर ठाना।
अबनिशि दिवस अवशि हर्षित मनविचारि करबमधुपाना॥
कमल वन्धु शशि काहिं होत लखि जनु रवि हृदय लजाई।
धरिबहुरूप चरण नख कोनन शरण लीन द्रुत आई॥
करि अतिक्षीण अनंग अंग जनु तेहि थल रह्यो सुहाई।
गहिरनाभि मानस सर वर सम शोभा वरणि न जाई॥
अनुपम सुघर उदर छवि आकर त्रिवली वन्ध सुरोचन।
जेहि मझार आवद्ध स्वयं प्रभु हरि भव वन्धनमोचन॥
इन्द्रचाप सुघरता लजावन वाहु लता छवि खानी।
विविध रतन आभरण विभूषित द्युति नहिं जात बखानी॥
सुघर अलक्तक निन्दक करतल मृदुल सरज की नाई।
रत्नमुन्दरी शोभित अँगुरिन चम्पक देखि सिहाई॥
वदन इन्दु सरसिज मृणाल इव रुचिर कण्ठ मन भावन।
अमृत सिन्धुथित अर्द्ध इन्दु सम सुन्दर चिवुक सुहावन॥
सुधाकेर आधार मनोहर सुघर अधर अरुणारे।
शुभ्र कुन्द कलिका श्रेणी सम दशन पांति द्यतिवारे॥
सुभग नासिका तिलप्रसून झषकेतु तूण मदहारा।
खञ्ज सफरि मृग भये पराजित लोचन युगल निहारी॥
श्रुतिलगि भृकुटि वक्र लखि भावत मानहु युगल भुजंगा।
निकरि विवर ते प्रेम बतकही करि रहे खंजन संगा॥
सुन्दर भाल विन्दु सिन्दुरकर यहि प्रकार छवि छाई।

सुघर मुकुर मधि मनहुँ मनोहर बाल दिनेश सुहाई ॥
यहि विधि रमा रमेश रूपधरि राजे जग हितकारी।
तेज पुंज अरु रूपराशि जनु लसत उभय तनुधारी ॥
श्री हरि अंश भरत अरु लक्ष्मण शत्रूहन बलधामा।
शोभित गहे छत्र अरु चामर अनुपम व्यजन ललामा ॥

दो०-रुद्ररूप मारुत सुवन, भुवन विदित जेहि ज्ञान।
जोरिपाणि प्रभु विनयमधि, मगन वीर बलवान ॥
दीन हीन कृत्तिवास यह, माँगत कर फैलाय।
यहीरूप ध्यावत निरत, अंत होय यह काय ॥

द्वितीय सर्ग ॥ २ ॥

श्री महादेव, ब्रह्मा व नारद सम्वाद तथा राम नाम माहात्म्य ॥

दो०-धारि चारि आकार इमि, श्री पति जगदाधार।
वैकुण्ठहि निज प्रभा ते, रहे प्रकाशि अपार ॥
ताहि समय शुचि ज्ञानमय, नारद तपो निकेत।
कीन्ह गमन वैकुण्ठ कहँ, भगवत दर्शन हेत ॥

मधुरमधुर ध्वनि बीन बजावत ❋ प्रमुदितचितभगवतगुणगावत ॥
दरश आश तनु पुलकित भारी ❋ जाय रुचिर गोलोक मझारी ॥
प्रभुकर अद्भुत अभिनव रूपा ❋ प्रभा पुञ्ज छविखानि अनूपा ॥
लखिअतिचकितभ्रमितमुनिराई ❋ मन विह्वल तनु दशा भुलाई ॥
अनिमिष यकटक रहे निहारी ❋ भइगतिशशिचकोर अनुहारी ॥
गदगद उर मुख फुरत न बैना ❋ प्रेमवारि दरविगलित नैना ॥
बहुक्षण लगिमुनिज्ञान निधाना ❋ रहे हेरि हरि छवि धरि ध्याना ॥

हृदय मझार वारही वारा ❋ लगेकरन यहि भाँति विचारा ॥
केहिहित रमारमण भव भूपा ❋ किय धारण अस रूप अनूपा ॥
पुनिविचार असकिय तेहिकालू ❋ त्रिकालज्ञ हैं शम्भु कृपालू ॥

दो०—यहि रहस्य कर हेतु अत्र, पूँछहु शिवढिग जाय।
असचिन्ताकरि नाइशिर, कीन्ह गमन मुनिराय ॥
प्रथमजाय विधिके निकट, सब वृत्तांत सुनाय।
गये बहुरि कैलास कहँ, तिनहु न संग लिवाय ॥

पहुँचे पुरि कैलास मझारी ❋ गये मोहि गिरि छटा निहारी ॥
तुंग शृंग वर लाग अकाशा ❋ कोटि चन्द्रवत करत प्रकाशा ॥
किन्नर यक्ष गातुगण शाला ❋ शोभितजहँतहँरुचिरविशाला ॥
कहुँ कहुँ सिद्ध साध्य समुदाई ❋ करहिं योग साधन मनलाई ॥
तहँ न पक्ष तिथि सम्वत वारा ❋ मंत्र तंत्र श्रुति एक प्रकारा ॥
सदैव सुख दुख एक समाना ❋ विचलत नाहिं कोउकर ज्ञाना ॥
हिंसा द्वेष लेश तहँ नाहीं ❋ प्रेम समान परस्पर माहीं ॥
शोक ताप कर तहां न नामू ❋ शिव सुधाम केवल शिवधामू ॥

दो०—द्वेष भाव पशुगणहु मधि, तहाँ लेशहू नाहिं।
करहिं परस्पर केलि तेउ, सहज बैरजिन माहिं ॥
शारदूलमृग अहि नकुल, पञ्चानन मातंग।
प्रीति सहित आनन्द ते, बिचरि रहे यक संग ॥

जगत माहिं जोइ मत्सर मोहा ❋ क्षोभ लोभ मदकाम बिछोहा ॥
धर्म अधर्म पुण्य अरु पापा ❋ शिवप्रताप तहँनेक न व्यापा ॥
पद्म योनि नारद मुनि राऊ ❋ अस हेरत बृषकेतु प्रभाऊ ॥
गये मुदित शिव धाम मझारा ❋ इमि दूरिहि ते शिवहि निहारा ॥

---

१ गन्धर्व ॥ २ द्वादश गणदेवता विशेष यथा १ मन २ मता ३ प्राण ४ नर ५ पान ६ वीर्य्यवान् ७ विनिर्भय ८ नय ९ हंस १० नारायण ११ वृष १२ प्रभु ॥

मणि वेदी शुभप्रदी सुहावन * तेहिपर लसत शंभु भवभावन ॥
हेमभ जटा शीश मधि भ्राजै * भाल विशाल बालविधु राजै ॥
गात विभात विभूति मसाना * कटिमधि बाघछाल परिधाना ॥
गल भुजगेन्द्र हार वर सोहै * श्रवण शंख कुण्डल मनमोहै ॥

दो०-भुवन छारकारी अनल, धक धकात वर भाल ।
कर शोभित मन्दाकिनिज, कमल बीज जयमाल ॥
शैल सुता भवभय हृता, रहीं वाम दिशि राजि ।
मनहुँ कनक चम्पक सहित, रजत अद्रि रह भ्राजि ॥

निकटजायविधि मुनितपधामा * जोरियुगल करकीन्ह प्रणामा ॥
देखि तिन्हैं शंकर हर्षाने * दै आसन विधिवत सन्माने ॥
पूंछिकुशलपुनि शिवसुखदानी * बोले अमिय सरिसइमि बानी ॥
हे विरंचि नारद मुनिराजू * लखियततुम्हैंमुदितअतिआजू ॥
पर विस्मितहु कछुक दोउ अहहू * याकर कहा हेतु है कहहू ॥
कह बिरञ्चि सुन हे वृषकेतू * कहत न बनत हर्षकर हेतू ॥
आजु रमापति त्रिभुवन कारण * अतिअद्भुत मूरतिकिय धारण ॥
एक रूप ते सदा मुरारी * राजत रहे सुनिय त्रिपुरारी ॥

दो०-चारि रूपधरि आजु हरि, बिहरत श्रीपुर माहिं ।
यहि रहस्य जानन निमित, हम आये तुमपाहिं ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

सुनिमुनिवचन गिरिजारमण अतिमुदमगन तेहिक्षणभये ।
रोमाञ्च तनु प्रति अंग कम्पन प्रेम गदगद ह्वै गये ॥
अनवरत वक्ष विशाल ऊपर लागि लोचनि जलझरी ।
जनुजटा जूट विहाय उरपर लसीं पावन सुरसरी ॥
अथवा त्रिलोचन ते पतित जल देखि इमि मन भावई ।

१ टिप्पणी २ देखो ॥

शिव उर प्रयाग मझार मानहुँ त्रयसरित संगम भईं ॥
वर भालथित अर्द्धेन्दु पूरण ह्वै वदन पै छायऊ।
गलरुद्ध भक्तीरस सुधा ते देह सुधि विसरायऊ ॥
दो०-वाघचर्मकटि ते खस्यो, प्रेम मगन त्रिपुरारि।
अनुपम भावी हरि चरित, उरमधि रहे निहारि ॥
कछुक काल पै बिहँसि कै, आशु तोष गुणखानि।
कमलयोनि प्रतिमधुर स्वर, कहन लगे इमिवानि ॥
सो०-यावत विश्व मझार, व्यापि रह्यो नितशक्ति जेहि।
सोइ विभु करुणा गार, यही रूपते प्रकटि हैं ॥
अवहीं यहि अवतार मझारा ❋ अहै बिलम्ब सुनिय कर्तारा ॥
होई यक दुरन्त निशिचारी ❋ रावण नाम लंक अधिकारी ॥
सो द्विज देव मुनिन दुख देई ❋ सकल लोकनिज वशकरिलेई ॥
तेहिनिशिचरहिं सँहारनकारण ❋ मनुज रूप धरिहैं जगतारण ॥
अवध अधीश भानुकुल दीपा ❋ ह्वै हैं दशरथ नामि महीपा ॥
तिन त्रयरानि ते जगत अधारा ❋ अवतरिहैं धरि चारि अकारा ॥
रामभरत लक्ष्मण अघ हारण ❋ अरु शत्रुघ्न शत्रुमद दारण ॥
इन्दिराहु नृप जनक के धामा ❋ अवतरिहैं सीता लहि नामा ॥
जनकसुता सियकहँ जनरंजन ❋ वरिहैंमम अजगव करिभंजन ॥
बहु शिखप्रद चरित्र बिस्तरिहैं ❋ भूरिभीरि भवनिधिकर हरिहैं ॥
दो०-पितावचन पालन निमित, हरण धरणि करभार।
सीय लखण सह विपिन कह, जैहैं करुणा गार ॥
हरिहि जानकिहि रक्षपति, तेहि सवंश संहारि।
जनक सुताहि उधारि पुनि, अइहैं अवध मझारि ॥
लवकुश नाम सीय संताना ❋ ह्वै हैं बुधिबल तेज निधाना ॥
तिन्हैं राज्य दै जगत गोसाँई ❋ करिहैं गमन स्वपुर पुनराई ॥

भूरि भूति मुद मंगल दाई ❋ राम नाम सुरतरु की नाँई ॥
चारिहु वेदसार यह नामू ❋ दुरित दमन दायक हरिधामू ॥
जिमि प्रगाढ़तम तपन विदारत ❋ तिमिअघओघनामयहजारत ॥
यथा लौह कहँ पारस पाथर ❋ जिमिजगनरन रामदुइआखर॥
जपतप धरिय तुला यक अंगा ❋ तुलै न राम नाम के संगा ॥
शत सुमेरु सम सुवरण दाना ❋ शत रविपर्व गंग अस्नाना ॥
यागयज्ञ हुति संयम साधन ❋ भजन कीरतन योगअराधन ॥
व्रत उपवास न्यासवन निवसन ❋ मंत्र तंत्र सिध संत उपासन ॥

दो०—इते सकल यहि नाम के, कोटि अंशहू माहिं ।
कहहुँ सत्य मैं साखि दै, एक अंश भरि नाहिं ॥
होय अधम ते अधम हू, लेय नाम यकबार ।
गोपद जल इव अघ उदधि, तरत न लागै बार ॥
कृतिवासनिजनामहित, व्याकुल मनुज सदाय ।
त्रिविधतापहर नामकहँ, विसरि मोहि वश जाय ॥

तृतीय सर्ग ॥ ३ ॥

नारद, ब्रह्मा व दस्यु रत्नाकर सम्वाद ॥

सो०—सुनि पंचानन वानि, अति विस्मित भे ब्रह्म सुत ।
बहुरि शम्भु सुख दानि, विहँसि वचनलागेकहन ॥

यदि यहि माहिं करत सन्देहू ❋ तौ कहुँ जाय परीक्षा लेहू ॥
कह्यो विरंचि सुनिय भवभावन ❋ अहै कौन अस अघीअपावन ॥
जाहि विशुचि यह मंत्र सुनाई ❋ जानहुँ राम नाम प्रभुताई ॥
सुनिविधिवचनकहेहु त्रिपुरारी ❋ जाहु उभय नरलोक मझारी ॥

१ (नामकरण) सर्ग द्रष्टव्य ॥ २ टिप्पणी ३ देखो ॥

विप्र कुमार एक तुम काहीं * मिलिहै जात सघन वनमाहीं ॥
राम नाम मुद मंगल दाई * तेहिद्विज सुतहि सुनायहुजाई ॥
राम नाम उपदेशन तासू * अहै करन जगमुक्ति प्रकाशू ॥
यह सुनिविधि नारद मुनिराई * लै विदाय गमने हर्षाई ॥
दोउजन धारि यतीकर वेशा * मर्त्य लोक महँ कीन्ह प्रवेशा ॥
रह यक विप्र तनय रत्नाकर * करतदस्युकृति सोनिशिवासर ॥

दो०—रहतसोलुकिघन विपिनमधि, तेहि पथ जोकोइजाय ।
ताहि मारि हरिलेत तिन, भूषण वसन निकाय ॥
चतुरानन नारद उभय, जिन्हैं लेश भय नाहिं ।
दण्ड कमण्डलु करगहे, गये सोइ बन माहिं ॥

करि रत्नाकर पै विधि दाया * प्रकटकीन्हतेहिदिनअसमाया ॥
निकस्यो तेहिपथ सों कोइ नाहीं * लखिरह दस्यु चतुर्दिशिमाहीं ॥
तरुपै चढ़ि सो लखेहु वहोरी * आवत युगल यतीयहि ओरी ॥
तिन्हैं हेरि हिय हर्षि अपारा * उतरेहु तरुते करत बिचारा ॥
इन्हैं मारि पट लेब छिनाई * यह उरधरि द्रुत रहेहु लुकाई ॥
निमिष माहिं नारद कर्तारा * पहुँचे सोइ कुठाम मझारा ॥
मुद्गर कर रत्नाकर धावा * विधिहिबधनहित हाथ उठावा ॥
पर कर डिगत नेक नहिं भयऊ * उठो हाथ उपरहि रहि गयऊ ॥
रत्नाकर विस्मित ह्वै भारी * रह्यो हेरिविधिदिशि दृगफारी ॥
तब विरंचि अस वचन उचारा * अहहुकौन का नाम तुह्मारा ॥

दो०—कह्यो दस्यु का काजहै, परिचय लिहे हमारि ।
लैहौं वसन छिनायमैं, अबहीं दुहुन सँहारि ॥

कह विरंचि यक पापहि लहिहो * हमे मारि केतक धन पैहौ ॥
करन चहत जोइ कृति यहि बेरा * अन्त नाहिं तेहि पातक केरा ॥
कछु ममवचन सुनहु चित लाई * जो रुचि होय करहु पुनराई ॥

शतरिपु हने पाप जोइ होई * एक धेनु मारे अघ सोई ॥
जो पातक शत धेनु सँहारे * सो अघ होत एक तिय मारे ॥
शत तिय बधे होत यत पातक * तबअघलहत एकद्विजघातक ॥
शत ब्राह्मण मारे अघ जोई * ब्रह्मचारि यक वध ते होई ॥
ब्रह्मचारि बध है अघ राशी * पाप अपार हने संन्यासी ॥

दो०—जेहि पथते संन्यासिगण, कबहुँक करतपयान ।
पञ्च क्रोश लगि होतसो, वाराणसी समान ॥
यदि अनन्तअघ संचयन, करन काहिं रुचि होय ।
करहु निधन तबहम दुहुन, उर चिंतना न कोय ॥

सो०—कहद्विज सुत मुसकाय, काहभुलावत मोहिंवटुक ।
सन्यासी तव न्याय, अगणित मैं बधिडारेऊं ॥

सुनि कमलासन कह्यो बहोरी * यदि ऐसही अहै रुचि तोरी ॥
तौ लखि सुथल हतौ तुम मोहीं * जहां न कीट पिपीलक होहीं ॥
हेतु जबहिं बधिहौ हम काहीं * गिरी काय मम भूतल माहीं ॥
तब अस होय न चपि मम देहू * मरि कोइ जन्तु जाययम गेहू ॥
सम दम दया जीव सन प्रीती * अहै मुख्य सन्यासिन रीती ॥
हरिहि प्रीय तेहि सरिस न केहू * जाकर निखिल जीव परनेहू ॥
एक मर्म अब पूंछत तोहीं * दै तेहि उतर बधहु पुनि मोहीं ॥
नर बधि करत पाप तुम जोई * यहि अघ भागि अहै तवकोई ॥

दो०—विप्र सुवन कह हनि नरन, यत धन मैं लै जात ।
ताते प्रतिपालन करत, तीय तात अरु मात ॥
तेसबममकृतदुरितमधि, अंशि अंश अनुसार ।
सो सुनिकह इमिविधिविहँसि, यहतवमृषाविचार ॥

निज निज कर्म केर फल जोई * विधि नियोग भोगत सबकोई ॥
सुत पितु तीय प्राय यत हीके * उतरदायि निजनिजकरनीके ॥

यदि उर उपज शंक यहि माही * तौ पूंछहु निज परिजनपाहीं ॥
ते यदि पाप भागि तव होहीं * तौ पुनि आय बधहु द्रुतमोहीं ॥
बैठ रहब हम यहि तरु छाहीं * जाय पूंछि आवहु गृह माहीं ॥
सुनि विधिवदन ज्ञानमयबानी * रत्नाकर उर चिन्त समानी ॥
कछुक अतंक वदन पै छायो * पुनिविचारअसचितमधिलायो॥
अहहि यती यह चतुर अपारा * भागन हित यहयतन निकारा ॥
कहविधिलखि सचिंततेहिकाहीं * हम पराब यहि थलते नाहीं ॥
यदि विश्वास होत नहिं तोहीं * बांधि जाहु तरुसन तुम मोहीं ॥

दो०—सुनि रत्नाकर युक्ति यह, विधि नारद दोउ काहिं ।
दृढ़ बन्धन ते बाँधेऊ, यक विशाल तरु माहिं ॥
चल्यो भवनदिशि मुहुमुहु, घूमि लखत तिनओरि ।
उर चिन्तत वन्दी दोऊ, भजहि न बन्धन तोरि ॥

सो०—कह विस्मित कृतिवास, हरिहर कृपा अगम्य अति ।
केहि क्षण होय प्रकाश, को जानत केहि यतन ते ॥

चतुर्थ सर्ग ॥ ४ ॥

रत्नाकर[1] का मातापिता व स्त्री सेकथनोपकथन मूर्च्छावेशमें भीषण स्वप्न दर्शन, संसार वैराग्य तथातत्प्रति ब्रह्मा कर्तक रामनामोपदेश ॥

दो०—सर्व प्रथम निजजनकढिग, रत्नाकर द्रुत जाय ।
लग्यो कहन भाषहु पिता, सकल दुराव विहाय ॥
मनुजन बधि जोइ द्रव्यसमैं, लावत मन्दिर माहिं ।
होतपाप तेहि मधि तुमहु, भागी अहहु किनाहिं ॥

१—टिप्पणी ३ देखो ॥

सुनि सुतवचन विप्रकरि क्रोधा * लग्योकहनसुनु सुवनअबोधा ॥
कहँअसलिखितकौनअसकहही * सुतकृत पापभागि पितुअहही ॥
सुनरे कबहुँ पुत्रपितु होई * होत पुत्र कबहूं पितु सोई ॥
जबतै शिशुरह तब पितु रहेऊं * पालेहुँ तोहिं दुःख कत सहेऊं ॥
जो अघकिय तव पालन माहीं * अहसि तासु भागी तैं नाहीं ॥
भयहु वृद्ध अबशिशु अनुहारी * तैं पितु सममम पालन कारी ॥
करुचह जोइ जीविका उपाई * मम पालन तोहिं उचित सदाई ॥
धर्म अधर्म करत तैं जोई * तोहिंतजि उतरदायि नहिंकोई ॥
सबजननिजनिजकृतिअनुसारा * भोगत फल परलोक मझारा ॥
पालक कृति परिणाम मझारी * आश्रितजननभागअधिकारी ॥

दो०—सघन पल्लवित तरु सहत, वर्षा आतप वात ।
तरु छाया ग्राही नहीं, अंश भागि तेहि तात ॥
मोर तोर सम्बन्ध है, केवल यहि जग माहिं ।
लहनकर्मफलमधिकबहुँ, भागी हम तुम नाहिं ॥

को तोसन कह मनुज सँहारन * मोहिंअघभागिकरसिकेहिकारन
सुनि रत्नाकर उर भय छाई * कहइमिवचन जननिढिगजाई ॥
सुनिय मातु ममकृत अघमाहीं * तुम भागिनी अहहुकी नाहीं ॥
सुवनवचन इमिसुनि द्विजनारी * सह सनेह कह भरि दृगवारी ॥
सुनहुतातयहिविधि लिपिअहई * जगमधिसब स्वकर्मफल लहई ॥
मैं उत्पन्न कीन्ह तुम काहीं * परतव कर्म भागि हौं नाहीं ॥
यदिकोइ गहिकृपाण खरशाणा * बधै अदोषि मनुजकर प्राणा ॥
तौ तेहि नरघातकहि विहाई * जोअसिगढ्योसोदण्ड न पाई ॥

दो०—तेहि प्रकार जगजनन के, पाप कर्म कर तात ।
अपराधी कोइ भाँतितें, होत न तेहि पितु मात ॥
कर्मक्षेत्र जगजीव कर, अहै अवनि श्रुति गाव ।

जस बोवत तस फल लहत, चहै रंक चह राव ॥
उपजत अन्न क्षेत्र मधि जोई * कृषक केरि सम्पति है सोई ॥
रचन हार हल जगमधि काहू * क्षेत्रजशस्य किकरि सकलाहू ॥
जो तैं पालन करसि हमारी * करु विचार उर नयन उघारी ॥
रह्योतोर जेहिक्षण शिशु कालू * यतदुखसहिकियतोहिप्रतिपालू॥
तासु एक दिनकर ऋण शोधा * तैं नाहीं करि सकत अबोधा ॥
तोरे निमित मासदश ताता * हुत्यो आहुतीवत निजगाता ॥
धर्म कर्म सुख सकल विहाई * किहौ तोर मलमूत्र सदाई ॥
अब पालन करि कछुक हमारी * करनचहसिमोहिंअघअधिकारी
दो०—मोर तोर सम्बन्ध जोइ, यहि जग माहिं लखाय ।
सो कदापि रहिहै नहीं, भये अंत यह काय ॥
सो०—अहै हमार तुम्हार, शारीरिक सम्बन्ध यक ।
विश्व नियम अनुसार, कर्मसाथि कोउ करनकोउ ॥
ताते अब अघ कर्म विहाई * निज मंगल हित करहु उपाई ॥
कहति सत्य सुनु संशय त्यागी * मैं तव पापकेर नहिं भागी ॥
सुनिद्विजतनयजननिमुखवानी * गयहुसूखिमुखमतिचकरानी ॥
ह्वै हतबुद्धि त्रस्त पुनि राई * लगेहुकहननिजतियढिगजाई ॥
भाषहु प्रिये सत्य हम पाहीं * ममअघभागिनिअहहुकिनाहीं॥
कह्यो तीय सुनु प्राण पियारे * कहहु कहा अस बिना विचारे ॥
विधिकृत अटलनियम अनुसारी * है पतिकर अर्द्धांगिनि नारी ॥
किंतु कर्मफल भोगन माहीं * उभय साथि यकयक कर नाहीं ॥
पुनिकेहिविधउरलखियविचारी * होब पाप भागिनी तुम्हारी ॥
दूजे प्राणनाथ मनलाई * सुनियविनयममक्षमियढिठाई ॥
दो०—पाणि ग्रहण जेहि कालमहँ, कीन्ह्यों नाथ हमार ।
शपथ सहित तब किहो प्रण, पालन करब तुम्हार ॥

यहिहित तुमपै है सदा, मम पालन करभार ॥
मैं कदापि दायी नहीं, पोषणवृति मझार ॥

यदि तव अन्य पुण्य अघमाहीं * अधिकारिनि हमहोयसकाहीं ॥
पर जो अघ मम पोषण लागी * मैं ह्वै सकति तासु नहिं भागी ॥
मैं न कहेहुँ नर करन सँहारा * यहतुमकरत स्वरुचि अनुसारा॥
तुमहीं अहहु तासु फलभोगी * रुजिदुख बाँटि न लेत निरोगी॥
सुनि रत्नाकर तिय मुखबैना * भइगति मनहुँदेह असुहैना ॥
सम्मुख निजकृत पाप निहारा * अगम अपार विषम दुर्वारा ॥
लख्यो न निजअघते निस्तारा * लौहगदा निज शीश प्रहारा ॥
गिरयो विवश सो भूतल माहीं * देह गेह की सुधि कछु नाहीं ॥

दो०—घोर मूरछित दशा मधि, द्विजसुत मानवघाति।
निजकृत पाप समूह कर, लख्यो दृश्य यहिभांति ॥
सूचीभेद्य प्रगाढ़ तम, छादित चहुँदिशि माहिं।
सोइ भयंकर ठाम मधि, लखेहु पतित निजकाहिं ॥

पद्धटिका छन्द ।

चहुओर चितानल अति प्रघोर। धकधकधधकत नहिंजासुछोर ॥
उठ विकट लपट पर्वत प्रमाण। जनु करन चहत तेहिदहन प्राण॥
शतशत नृमुण्ड उत्कट प्रचण्ड। जिनदशन तीव्रजनुकालदण्ड ॥
अति विकृत वदन तेहि चहूंपास। करिरहे विषम तर अट्टहास ॥
बहु मुण्डधारि बड़ बड़ शृगाल। ध्वनि करत लोमहर्षण कराल ॥
अति कोपित वृक कुक्कुरन संग। करि रहे युद्ध दै दै उछंग ॥
कहुँ कोटि कोटि विषधर भुजंग। गिरिशृङ्ग सरिस जिनतुङ्गअंग ॥
उत्तोलि भयंकर फण विशाल। उदगरत अनर्गल ज्वालमाल ॥
कहुँ भूत प्रेत योगिनिन ठट्ट। नर रुधिर पियत धरि घट्ट घट्ट ॥

कहुँ कहुँ अमानुषिक चीतकार। कहुँ आर्तनाद कहुँ हुहुंकार ॥
गोमायु श्वान कर कोइ ओर। क्रन्दनध्वनिउत्थितअतिकठोर ॥
पैशाचहास कोइ ओर कीर्ण। सुनि रत्नाकर श्रुति होत दीर्ण ॥
चहुँओर ब्यापि पावक अपार। तेहिताप प्रविशि तेति चक्षुद्वार ॥
दृग दहन तासु लाग्यो महान। भा पूति गन्धते रुद्ध घ्रान ॥

रोला छन्द।

यहिप्रकार पुनि ताहि भयो अनुभव तेहिकाला।
विपुलकाय गजमुंडधारि यक गृद्ध कराला ॥
धारिशुण्ड सों ताहि उड़्यो लै गगन मझारी।
कछुक दूरि लैजाय दीन्ह सरिता मधि डारी ॥
वारिहीन सो सरित बहत शोणित की धारा।
पलल गलित नरदेह भास तेहि माहिं अपारा ॥
तहां अस्थिपल रहित नक्र सम जीव प्रचंडा।
चर चर चर्वन करत धारि कंकाल नृमुण्डा ॥
अतिआकुलचितत्राहित्राहि द्विजतनयपुकारी।
छूट पटाय दै लम्फ गिरयो जनु कूल मझारी ॥
तहँ न नेक रज रेणु लौह सूची रह खर तर।
गयो बोधि सब अंग भयो रत्नाकर जर्जर ॥
तीव्रगरल सनज्वलन उठत जेहिविध सबअंगन।
तिमि दारुण दुख सोहिं भूमिलुंठतद्विजनन्दन ॥
तेहिक्षण लख्यो बहोरि ज्वलत अंगार कि नाईं।
यक पिशाच धरि गदा बेगि आयो तेहि ठाईं ॥
लौह शलाका सरिस केश ताके विकराला।
अग्नि चक्र सम दोउघूरणित नयन विशाला ॥

लहलहात् तेहि रसा हुताशनशिखा समाना ।
अंग भीषणाकार नील भूधर परिमाना ॥
झपट्यो बदन पसारि घोर वासुकि अनुहारा ।
गदा प्रज्वलित तोलि चहेउ सो करन प्रहारा ॥
महा भयंकर रूप तासु द्विज सुवन निहारी ।
कीन्हेउ यक चिक्कार हृदय शंकित ह्वै भारी ॥
मोह नींद भइ भंग लख्यो सो नयन उघारी ।
तहां कतहुँ कोउ नाहिं बैठि तिय करत बयारी ॥
काल कूट सम ताहि नारि धन सम्पतिलाग्यो ।
उठि उन्मत्त समान निकरि मन्दिर ते भाग्यो ॥

दो०-भय विह्वल चितकँपत इमि, विप्र सुवन करकाय ।
जेहि विध मरुतझकोरते, कदलि पत्र थर्राय ॥
पुनिपुनिनिजदुष्कृतिसुमिरि, इमिउरकरतविचार ।
केहि विध पाप पयोधि ते, होई मोर उबार ॥

शोक निमग्न विकल उर भारी * क्रन्दतविलखिनयनबहवारी ॥
कछु क्षणमहँ पुनि हृदय मझारा * यहि प्रकार सो कीन्हविचारा ॥
जिन सत पुरुष दरश ते मोरा * संसृति मोहनश्यो अतिघोरा ॥
तिनकी शरण गहहुँ मैं जाई * करहिं जानि जनत्राणउपाई ॥
अस विचार उरमधि ठहरावा * द्रुतपद विधिनारद ढिगआवा ॥
तरुते छोरि सहित अनुरागा * गिरितिनपद न पलोटनलागा ॥
वहुरि रुदन अस बचन उचारा * हे प्रभु परम कृपालु उदारा ॥
यक यक सन पूँछेहु गृह माहीं * मम अघभागि अहैकोउनाहीं ॥
प्रभु दै दरश कृपा अस करेऊ * मोर विमोह नींद परि हरेऊ ॥
अब अनुताप अनलते घोरा * होत दग्ध प्रभु हृदय कठोरा ॥

दो०-शत सहस्त्र वृश्चिक विकट, दंशत मर्महमार ।

सकलजगतमोहिंलखिपरत, भीषण नरकाकार ॥
भवन लगत यम सदन सम, नारि प्रखर कर वाल ।
तरलगरल इव जग विभव, जानिपरतयहिकाल ॥
सो०—अब तव कृपा विहाय, नहिं सहाय दर्शाय कोउ ।
तुमहीं एक उपाय, अहो दीन दुख दरन महँ ॥
करि कृपालु कछु कृपा विकाशा * करिय दासकरत्रासविनाशा ॥
दीन बन्धु दोउ ज्ञान प्रभाकार * हृदय तुम्हार दयाकर सागर ॥
दै हौ एक विन्दु मोहिं जोई * कृपा सिन्धु तव शुष्क न होई ॥
यदि मम अहै उबार उपाई * तौ करि कृपा देहु बतराई ॥
सुनि द्विज तनय विनयकर्तारा * नेह सहित इमि वचन उचारा ॥
वहि सरवरमधिकरि असनाना * आउ करब यक मंत्र प्रदाना ॥
जेहि प्रभाव होई अघ नाशा * लहिहौसुगति बिनाहिप्रयासा ॥
सुनि रत्नाकर हर्षित भयऊ * तुरत तड़ाग तीर पै गयऊ ॥
दो०—तासु दृष्टि परतहि तुरत, गयो सूखि सर नीर ।
मीन मकर जलजन्तुयत, भये महान अधीर ॥
तबनिराशह्वै दुखित चित, फिरिविरंचि ढिगआय ।
कह्यो नाथ सरवारिसब, लखिमोहिंगयहुसुखाय ॥
तब विरंचि नारद सन कहेऊ * अतिकल्मषी अवशियहअहेऊ ॥
शंकर कथित नाम प्रभुताई * यहै परीक्षा योग लखाई ॥
बहुरि कमण्डल ते जललीन्हा * रत्नाकर शिर सिंचन कीन्हा ॥
पुनि तेहि निकट टेरि कर्तारा * महामंत्र श्रुति लागि उचारा ॥
राम राम कहुरे यक वारा * सुनतहिंभिजकतासुतनुसारा ॥
अघवश जड़ रसना ह्वै गयऊ * रामनाम मुख फुटत न भयऊ ॥
बार बार विधि ताहि सुनावा * रामनाम तेहि वदन न आवा ॥

१–टिप्पणी ४ देखो

तबविधिउर विस्मय अतिछावा ❋ पुनिविचार असचित ठहरावा ॥

दो०-करि मभ्कार आगे बहुरि, पाछे करहु रकार ।
तौ याके मुख निकरिहै, राम नाम श्रुति सार ॥

सो०-अस विचारि तरु माहिं, शाखा सूख निहारियक ।
पूँछेहु तुम यहि काहिं, कहा करत हो भाषहू ॥

देखि ताहि रत्नाकर कहेऊ ❋ मराकाठ तरु मधि यह अहेऊ ॥
तम मेराल[1] आसन जगनेता ❋ तेहि मराले[2] के तारण हेता ॥
मरा मरा पुनि पुनि कहवायो ❋ उलटिसो रामनाम मुखआयो ॥
पापपुंज ताकर नशि गयऊ ❋ औरहिभाँति तासुद्युति भयऊ ॥
सूखत विटप यथा लहि वारी ❋ होत मुंजरित दृग सुखकारी ॥
तिमि लहि रामनाम घन नीरा ❋ पुलक शरीर मिटी भवपीरा ॥
वारिद पटल मुक्त रवि नाई ❋ कांति महान तासु तनु छाई ॥
ग्रहच्युत चन्द्र कला सम तासू ❋ अंग अंग द्युति भयऊ प्रकाशू ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

जिमि प्रबल झंझानिल भयेगत शान्त ह्वै दिक आजहीं ।
तेहि भाँति अनुपम शांति ताके श्री वदन मधि राजहीं ॥
कर्पास राशि हुताश परसत होत भस्म यथा द्रुतै ।
तिमि छार विप्र कुमार अघ यक वार राम उचारतै ॥
तेहि मुख दुरितजित राम नामामृत फुरित ह्वै इमि छयो ।
जनुगंजि अघरुज पुंजनीरुज जगत जनकहँ करिदयो ॥

१ मूलग्रन्थ में इस स्थानपर कवि सत्तमन कईएक अपूर्व पदकहे हैं उनका अनुवाद असम्भव है । वंगभाषा में शवको मड़ा कहते हैं इस शब्द को अवलम्बन करके विचित्र रचना चातुर्य्य प्रकटित किया है । भाषान्तर करने से उसका भाव विवृत न होगा इस कारण से वे कोई पद अनुवाद करने में छोड़ दिये गये हैं (क. प्र. सिं.) ।

२-३ राजहंस द्वितीयार्थ खल ॥

द्विज सुवन तनुते भुवन मोहन महति द्युति इमि निर्गता।
जेहि अग्र सहित समग्र ग्रह सविता प्रभास परा जिता॥
दो०—ऋष्टि विगत तेहि दृष्टि करि, सृष्टिकार उर त्रास।
रामनाम प्रभुताथि किमि, बूझिसकत कृतिवास॥

पञ्चम सर्ग॥ ५॥

रत्नाकर का वाल्मीकि नाम प्राप्ति तथा रामायण सूचना॥

दो०—कह नारद सन मुदित मन, कमलासन इमि बानि।
भयो सफल अब शिव बचन, सकल सुमंगल दानि॥
महामंत्र रत्नाकरहि, करि यहि भाँति प्रदान।
अंतर्हित सुत सहित भे, चतुरानन भगवान॥
रत्नाकर तेहि विपिन मझारी * बैठ सकल वासना विसारी॥
भव प्रपञ्च भव विभव विहाई * राम नाम जपनिरत सदाई॥
क्षुधा तृषा दुख नेक न जाना * रसारामध्वनिविनुनहिंआना॥
निशिदिन नित्य निरञ्जननामू * बहु सम्वत्सर जप निष्कामू॥
सकल अंग कृमि कीटन खावा * लगि दीमक बल्मीक बनावा॥
इमि दीमकचहुँदिशि लगिगयऊ * यक मृत्तिका थूहसम भयऊ॥
पर तासन श्रुति प्राण लुभावन * निकसतरामनामध्वनिपावन॥
साठि सहस वत्सर इमि बीता * आयेविधि तहँ बहुरि सप्रीता॥
दो०—लखत चतुर्दिशि चतु मुख, कहुँ न मनुज दर्शाय।
केवल श्रवण पियूष इव, रही रामध्वनि छाय॥
यथा ताल लय युत ललित, यत संगीत निकाय।
वीण विनिर्गत राग के, अनुगत रहत सदाय॥

नरिन्द छन्द ॥

तिमि बिहंगध्वनि तरु पल्लवरव मधुकर पुञ्जन गुंजन ।
कन्दर कलित सरित कल्लोलन झरनि शब्द मनरंजन ॥
अरुयत मदुल कंठ जीवन रवमिलि मुनिवर ध्वनि माहीं ।
मनहुँ सबन स्वर एकतान ह्वै रह्यो मोहि जगकाहीं ॥
सरस सुखद सो ध्वनि विहाय कै नहिं कछु अपर सुनाई ।
तेहिक्षणविधिहुअंगचालन ध्वनिमिल सोइध्वनिमधिजाई ॥
लखत विधिहि यक वृहत मृत्तिका धूह दीन्ह दिखराई ।
रंगरंग के बहु कुरंग सउमंग बैठ चहुँघाँई ॥
फण विशाल विस्तारि भुजगगण मंत्रमुग्ध तेहि ठामू ।
दोलतफण गति बिगत मुदित चितसुनत ललित हरिनामू ॥
सो निनाद घननाद तुल्य इमि देत शिखिन आनन्दा ।
जाते द्वेष त्याजि भुजगन मधि नृत्य निरत स्वच्छन्दा ॥
यह अद्भुत कौतुक विलोकि कै सघन विपिन तेहिकाला ।
जानि परत यक अति आनँदप्रद सुन्दर उत्सव शाला ॥
गये विरंचि मोहि सो ध्वनि सुनि पुनि यह कीन्ह विचारा ।
यहि मृत्तिका पिंड मधि अहहीं मुनिवर विप्रकुमारा ॥

दो०—तब चतुरानन मगन मन, सहस लोचनहिं टेरि ।
कह्यो मृत्तिका धूह पै, बरसहु वारि घनेरि ॥

सुनि अमरेश वारि बरसावा * सकल मृत्तिका धोय बहावा ॥
तब देखेहु विधि मुनि तनुमाहीं * अस्थि बिहाय अपर कछुनाहीं ॥
ब्रह्ममंत्रते तबहि बिधाता * कीन्हेउ तासु पूर्ववत गाता ॥
रत्नाकर तब चेतन पाई * गिरयोविरंचि चरणमह धाई ॥
जोरिपाणि पुनि विनय समेता * बोल्यो हे प्रभु कृपा निकेता ॥
तुम बिन दीनबन्धु भगवाना * दीन हीन दुख दरै को आना ॥

राम नाम औषधि ते मोरा * किहौ दूरि प्रभु अघरुज घोरा ॥
तब कृपाय षटरिपु मे दाहू * लह्यों नाथ मैं जीवन लाहू ॥

दो० विषय वासना विषलता, मम मानस क्षिति सोहिं ।
भे उछिन्न यहिकाल अब, रहन क्षोभ कोइ मोहिं ॥
जो जग तममय लखत रह, अब द्युतिमय दर्शाय ।
ऊर्द्ध निम्न दशदिशा मोहिं, त्रिन्मय मात्र लखाय ॥

सो०—निष्कलंक यहि काल, हृदय कामना पंक ते ।
भयहुँ निशंक कृपाल, वंक कंक के शंक ते ॥

नाम वारुणी ते भगवंता * ह्वै प्रमत्त सुख लह्यों अनंता ॥
प्रापित भयो शांति सुख मोहीं * लखिनसकतषटरिपुममसोहीं ॥
योग वियोग दुखन मोहिं लेशू * सममोहिंजियन मरणसुखक्लेशू
विगत दशामधि देह हमारी * रह प्रभु नरक कीट अनुहारी ॥
नाथकृपा ते अब तनु सोई * देव समान ज्ञात मोहिं होई ॥
प्रभु कृपाय उघरे दृगहीके * ज्ञानखानि सूझत अबनीके ॥
मुँक्तिभेद श्रुति शास्त्र मझारा * है वर्णित प्रभु पञ्च प्रकारा ॥
यथा सार्ष्टि सायुज निर्वाना * सालोक्यहुसामिय भगवाना ॥
निर्वानहि इन सबन मझारी * बदतश्रेष्ठ ऋषिमुनिबुधझारी ॥
पर मैं कहत सत्य प्रभु सोहीं * सामीप्यही प्रीयतर मोहीं ॥

दो०-स्वयं शर्करा बनन ते, श्रेष्ठ शर्करा स्वाद ।
लह्यों परम आनन्द मैं, प्रभुकर पाय प्रसाद ॥
कोइ वस्तुकर लालसा, हृदय माहिं नहिं लेश ।
अब पदसेवी दासप्रति, प्रभुकर काह निदेश ॥

यहिविध सुनिमुनिबैन विधाता * लागे कहन प्रफुल्लित गाता ॥
अबलगि यहि संसार मझारा * रत्नाकर रह नाम तुम्हारा ॥

* टिप्पणी ५ देखो ।

नीकु मुक्त अब नाम तुम्हारा * ह्वै है वालमीकि संसारा ॥
जपि जोइ नाम मुक्त तुम भयऊ * जेहिप्रतापसबअघनशिगयऊ ॥
जगत मुक्तिहित सोइ शुचिनामू * करु प्रचार यहि भूतल धामू ॥
याते जबलगि सागर वारी * जबलगिजगमधि चन्द्रतमारी ॥
तबलगि रविचन्द्रहि अनुहारी * अछयकीर्तिमुनिरहीतुम्हारी ॥
राम चरित पयसिन्धु अपारा * मथहु ताहि मति मन्दर द्वारा ॥

सुगीती छन्द ॥

मथि रामचरित पयोधि पावन कामनाप्रद विघनहर ।
सुरतरु सरिस रामायणहि करु प्रकट मुनिवर अवनिपर ॥
तेहि वृक्षकर वर सप्तकाण्ड विशाल शाखा शुचि अमल ।
हैं क्षुद्र शाखा सर्गचय अरु श्लोक पुञ्ज सुचारु दल ॥
बहु अलंकार प्रसून राजी अर्थ तासु सुगन्धवर ।
तेहि पुष्पमधु सख दास्य शांत शृँगार करुणा रौद्रवर ॥
अरु वीर हास्य विभत्स अद्भुत भयानक अरु वातसल ।
फरि हैं प्रयत तहि दारु मधि धर्मार्थ काम विमोक्षफल ॥

दो०-अब वरणहु सब चिंततजि, रामचरित रस सार ।
महाग्रन्थ तव होइ है, भावी कविन अधार ॥

सुनिविधिमुख इमिवचनरसाला * कह रत्नाकर सुनिय कृपाला ॥
हरिगुणविशद विमलरसखानी * रचना कठिन बिनावर वानी ॥
अकथ अनन्त कथा प्रभु केरी * वरणिकिसकजेहि मतिअघघेरी
हित उपदेश कबहुँ नहि माना * होइमोहिंकेहि विधशुचिज्ञाना ॥
प्रीति सहित पितु मातु हमारे * नितप्रतिहितसिखवतमोहिंहारे॥
कुमति सुमति मधिसततविरोधा * चौरहि धर्म सीख दुर्वोधा ॥
तजि विद्या श्रुति शास्त्र पुराना * रह्योकुपन्थहिदिशिममध्याना ॥

१-वल्मीक; बँवडर

वैशेषिक भा विफल विशेषी * व्याकृति[1] रत व्याकरणहुद्वेषी ॥
सांख्य असंख्य शंक उपजाये * दर्शन शुभ मग नहिं दरशाये ॥
श्रुतिकठोरश्रुतिऋक यत फीकी * वधिरहिपिकध्वनिलागकिनीकी
चित्त विकल्प कल्पै सन छयऊ * निर्ऋर्थ[3]फलनिर्ऋति[4] मोहिं भयऊ
रूढ़[5]योग[6], [9]युग प्रकृति[8] अकारा * मूढ़ न करिसकतासुविचारा ॥
अष्ट विकृति विधि ज्ञान प्रसूती * भ्रम भञ्जन बुध जनन विभूती ॥
शिखा[10] जटा[11] घन[12] रथ[13] ध्वज[14] माला[15] * दण्ड[16] लेख[17] मोहिं प्रकट कराला ॥

दो०-भान विशद व्यवहार मम, पढ़ि बहुविध व्यवहार[18]।
[19]अभिसारहि मोहिं सारभा, छाँडि मंत्र अभिसार[20] ॥
शुभ मीमांसा किय न कछु, मीमांसा सिद्धांत।
भा असाध्य सब भाँति मोहिं, साध्यैं सिद्धि वेदान्त ॥

अलंकार अनकूल विरोधा * यमक आदि बहुकहे सुबोधा ॥
"छन्द मरन्द भावरस कंजा * पियतभयतपरिमल[22]अलिपुंजा ॥
पद्य पियूष पयोनिधि चारू * स्रोतविविधि शुचिसरलअपारू॥
क्रीडचक्र[23] रतिसायिनि[24] नारी[25] * वासन्ती[26] प्रिय[27] सुमुखि[28] कुमारी[29] ॥
कमल[30] मालती[31] कुसुम[32] विचित्रा * मधु[33] अशोकमंजरी[34] पवित्रा[35] ॥
चन्द्ररेख[36] चन्द्रिका[37] मनोहर * विपिनतिलक[38]माकन्द[39]सुकेशर[40] ॥
मतमयूर[41] संहार[42] भुजंगा[43] * चल[44] गजपति[45] दमनक[46] सारंगा[47]" ॥
मोमधि सविधि इनन्हकर ज्ञाना * रह यकसमय माहिं भगवाना ॥

१-व्याकृति=छल, प्रपञ्च ॥ २-वेदांग विशेष ॥ ३-सामवेद ॥ ४-अशुभ ॥ ५-६-७ ८-ऋक्संहिता पारायणभेद ॥ ९-ऋक्संहिता पारायण भेद विशेष ॥ १०-१७-जटामाला शिखा लेखा ध्वजो दण्डो रथोघनः । अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रम पूर्वा महर्षिभिः (टि० ६ देखो) ॥ १८-धर्म शास्त्र ॥ १९-नायक नायका की क्रिया विशेष ॥ २०-साधन ॥ २१-योग विशेष ॥ *टिप्पणी ७ देखो ॥ २२-पण्डित समूह ॥ २३-४७-छन्दों के नाम ॥

पर यहिदिशि चित लाग न ऐसे * रवि आलोक उलूकहि जैसे ॥
मशकहि सुमन सुगन्ध न भावत * गोमय गन्ध लहत सुखपावत ॥
उपज न उपलन पद्म परागा * चलहिंहंसगति कबहुँ किकागा ॥

दो०-प्रकटत मलजय गन्ध नहिं, विगलित आमिष माहिं ।
सरसीपिनि मधि कबहु प्रभु, उपजत मुक्ता नाहिं ॥
शुचि त्रिवर्ग प्रद हरिचरित, पारावार अपार ।
मो मधि अस सामर्थ्य कहँ, वर्णि ह्वै सकहु पार ॥

पर प्रभाव प्रभुकेर निहारी * प्रकटआश मम हृदय मझारी ॥
यदपि स्वयं मैं अधम मलीना * अकृतिअपावन सबविधहीना ॥
पर आपुहि जेहि केर सहाई * तेहिकेहि विषय माहिं कठिनाई ॥
लहहिं बड़न बलनीच उँचाई * क्षीरनीर यकभाव बिकाई ॥
वारिविन्दु क्षिति उपर कृपाला * परतहि सूखिजात ततकाला ॥
पर सोइ बूंद पयोनिधि माहीं * मिले कबहुँ सूखत प्रभुनाहीं ॥
ऊँचे चढ़त लतातरु संगा * होतअशुचिजलशुचिमिलिगंगा ॥
प्रभुकी चरण शरण मैं पाई * अब असाध्यहू सुलभ लखाई ॥
किहेहु निदेश दास प्रति जोई * प्रभुप्रसाद परिपूरण होई ॥
सुनिमुनिवदन शरलशुचिबानी * कहेहुविरंचि हृदयसुखमानी ॥

दो०-तात तुम्हारेहि योग्य यह, नवनि साधु व्यवहार ।
पाय बड़ाई नवत जे, सोइ सुविज्ञ संसार ॥
शठ मूरुखही निज गुणहि, बर्णत नाहिं अघाहिं ।
गुप्तभाव ते परसदा, बुध राखत निज काहिं ॥

सो०-तृणहि वारि उतराय, तरहि न माणिक नीर पै ।
छूंछे कलस के न्याय, ठन ठनाहिं अल्पज्ञ जे ॥

पर जे परम विज्ञ मतिमाना * ते जल पूरति कुंभ समाना ॥
कथैं नाहिं निजगुण कोइकाला * वृथा कबहुँ मारहिं नहिंगाला ॥

कितनहु ग्रीव फुलावहिं जोई ❋ भेक न पुण्डरीक सम होई ॥
कुकवि तथा बहु जल्पि असांची ❋ होहिं नाहिं पण्डित पदबाची ॥
तबलगि झलक कांच जस हीरा ❋ भेट न होत जबहिं लौं नीरा ॥
केहरि चर्म किहे परिधाना ❋ खर न होहिं मृगराज समाना ॥
यहिमधि तात मृषा कछु नाहीं ❋ ह्वै हैं विरल सुकवि जगमाहीं ॥
पर बहु काव्य चौर अभिमानी ❋ जिन्हैंस्वार्थप्रियलाजनग्लानी॥

दो०–धनीपदन पै लोभवश, भूखे श्वान समान।
लोटत बदन पसारिके, करिहैं तिनन बखान ॥
बाक वणिक विद्याध्वजी, चाटुकार छलकार।
जननी यौवनविपिनकहँ, हैं खर शाण कुठार ॥

सो०–जिमि करीर[१] तरु माहिं, सींचे पत्र न लागहीं।
विनयशील तिमि नाहिं, वाक जीविचातुरनमहँ ॥

सर्व शास्त्र दर्शीजन माहीं ❋ बिनयशील लज्जा यदि नाहीं ॥
तो जस सुमन सुगन्ध विहीना ❋ जलविनुजलदविटपफलहीना ॥
पुच्छ विहीन मयूर समाना ❋ जानिय ताहि सदामतिमाना ॥
जोइ कुपण्डित जगत मझारे ❋ कर्म खोट यश चाहन हारे ॥
ते जग महँ बिनु लूम बिषाना ❋ विचरहिं चिन्हितवृषभसमाना ॥
भखैं न तृण पर जीवित रहहीं ❋ यहै तिनन्हअद्भुत गतिअहही ॥
मधु गायन समान बुध ज्ञानी ❋ कहहिंसमयलहिशुचिमृदुवानी॥
परजे वायस सरिस धूर्तजन ❋ ररैं सर्व क्षण विनहिंप्रयोजन ॥
सफल जन्म तिनकर जगमाहीं ❋ जेकियविजय प्रथमनिजकाहीं॥
लखितव गुणप्रतीतिमोहिं ताता ❋ ह्वैहौ मुनिनशिरोमणिख्याता ॥

दो०–रामचरित गायन करहु, सब उर चिन्त विसारि।
काव्यजगतकहँप्रयतहित, उतपति भई तुम्हारि ॥

---

१ एक प्रकार कांटे का वृक्ष जिसमें पत्ते नहीं होते हैं।

लोकपावनी सुरधुनिहि, धराधाम मधि लाय।
भूप भगीरथ जगत महँ, भये धन्य द्विजराय॥
गंग पदोदक मात्र जेहि, तासु चरित तुम गाय।
भगीरथहु ते होइहौ, सुयशशालि अधिकाय॥
रामकथामृत तव रचित, पावन परम अनूप।
भव वैतरणी तरन कर, होई सेतु स्वरूप॥

सुनहु तात यह सुयश तुम्हारा ❋ रही अनन्त काल संसारा॥
निशा माहिं नहिंभानु प्रकाशत ❋ परतवयशरहिनिशिदिनभासत
श्रुति दर्शन उपनिषद निकायू ❋ भवनिधि तरन न सरलउपायू॥
पर विरचित शुचि ग्रंथ तुम्हारा ❋ सुधामयी करिकै संसारा॥
जगनर नारिन काहिं सदाई ❋ होई सकल पदारथ दाई॥
सुनहु तात तुम निज उर माहीं ❋ रचना चिन्त करहु कछुनाहीं॥

हरि गीतिका॥

यह चिन्त चिन्तामणि हरी अरु विश्व शक्ति सुरेश्वरी।
करि लीन्ह प्रथमहि निज हृदय जे दीन दुखदारुणदरी॥
गिरिजेश आयसु ते गिरा तव कंठ माहिं विभासि हैं।
मृदु मंजु सुन्दर छन्द तव मुखते स्वयं परकाशि हैं॥
हरि चरित दुरित विनाशकारी तात तुम रचिहौ जोई।
लै अवनि पै अवतार जगदाधार कृति करिहैं सोई॥
यहिविध बुझाय कै दिव्यदृष्टि विरंचि मुनिवर कहँ दये।
करि विमल ज्ञान विभूति ते भूषित बहुरि निजपुर गये॥
कृतिवास कह मुनि दिव्यदृष्टि जो पाव विधि भगवानते।
सो सुलभ मनुजन रामचरितामृत मधुर रस पान ते॥

षष्ठ सर्ग ॥ ६ ॥

रामायण अवतरणिका ॥

सो०—हिय दावाग्नि निवारि,विधि प्रसाद घन वारि ते।
मन वच काय सँभारि, ध्यानमगनपुनिमुनिभये ॥
पाद पाणि अरु शीश, बैठत कमठ समेटि जिमि।
तिमि ध्यानस्थ मुनीश, वाह्य इन्द्रियनयमनकरि ॥

एकदिवस शुचिज्ञान निधाना * मुनिवर वालमीकि भगवाना ॥
सरवर तट तरु छांह सुठामू * बैठे जपत रहे हरि नामू ॥
तेहि तरु क्रौंचि क्रौंच अँगराते * मुदित विहार निरत मदमाते ॥
तेहि क्षण अघी व्याध यकआवा * तरुपै उभय विहग लखिपावा ॥
धनुषतानि खर वान चढावा * ताकि क्रौंच कहँ मारिगिरावा ॥
शोणितगात विहग अकुलाई * गिरयो मुनीश क्रोडमहँ आई ॥
लखिखगदशादुखितमुनिनाथा * राम राम कह धरि श्रुतिहाथा ॥
पुनि सरोष मुनि नायक कहेऊ * बड़ पापी निषाद यह अहेऊ ॥
निरपराध मम सन्मुख माहीं * बधेसि दुष्ट बिहरत खगकाहीं ॥
पुनिक्रौंचिहिलखिशोकितगाता * दियवधिकहिइमिअभिसम्पाता॥

दो०-रे निषाद यहि समय तैं, बध कीन्हे यहि काहिं।
यहि अघते शठतैं कबहुँ, पाव प्रतिष्ठा नाहिं ॥
शाप वचन मुनि वदनते, फुरयो शोक वश जोय।
चतुष्पाद युत यक भयो, श्लोक अनुष्टप सोय ॥

शोकहि भयो हेतु तेहि श्लोका *विदितिसोमानिषादकहिलोका ॥

---

१ मानिषाद प्रतिष्ठात्वमगमः शाश्वतीः समाः । यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काम मोहितम् ॥ (वा. रा. वा. का. २ स. श्लोक १५) किन्तु पद्मपुराण पातालखण्ड अध्याय ६४ में यह श्लोक किञ्चित परिवर्तित हुआ है यथा; मानिषाद प्रतिष्ठान्त्व मगमः शाश्वतीः समाः । यत्क्रौञ्च पक्षिणोरेक मवधीः काम मोहितम् ॥

दै इमिशाप मुनीश प्रतापी * बहुरि हृदय चिन्ता असव्यापी ॥
जो विधि कृपा त्याग ह्वै गयऊ * पुनिसोइमोह हृदय कस छयऊ ॥
चकित चिंत उरशंक अपारा * निज आश्रमहि बहुरि पगुधारा॥
कुटिमधि भरद्वाज के संगा * लगे विचारन सोइ प्रसंगा ॥
तेहिक्षण विधि ऋषिनारदकाहीं * पठयहु बालमीकि मुनि पाहीं ॥
देखि तिन्हैं सशिष्य मुनिनाथा * करि आदर नायो पदमाथा ॥
प्रेम सहित शुचि आसन दीन्हा * अर्घपाद्य दै अर्चन कीन्हा ॥

दो०-देवऋषिहि मुनि निज वदन, फुरित श्लोक सुनाय ।
पूछेहु ममगन विकृति कर, हेतु काह ऋषिराय ॥
यहसुनि नारद मुनि विहँसि, बोले हिय हर्षाय ।
प्रकट भई तव गिरा मधि, देवि शारदा आय ॥

यही छन्दमहँ तुम मति माना * रामचरित शुचिकरहुबखाना ॥
सो हरि चरित श्रवण सुखदाई * देत तुमहिं संक्षेप सुनाई ॥
रविकुल जात मनुज कुलदीपा * ह्वैहैं यक इक्ष्वाकु महीपा ॥
तेहि कुल गुण संकुल यशराशी * अतुल अखंड प्रताप प्रकाशी ॥
दशरथ नाम नृपति नय नागर * ह्वै हैं प्रकट सत्यगुण सागर ॥
त्रयं हुताश इव दीप्ति प्रकाशिनि * ह्वैहैंतिनत्रय तियमृदुभासिनि॥
कौशिल्या कैकयी सुमित्रा * सती सतीसम परम पवित्रा ॥
तिनन गर्भ रावण बध कारण *कमलापतिजनविपतिविदारण॥

दो०-चारि अंशते प्रकटि हैं, नाम राम अभिराम ।
भरत लक्षमण शत्रुहन, तेजपुंज छविधाम ॥
विश्वपालिनी जलधिजा, सुरन करन निस्तार ।
अवतरिहैं सियरूप ते, शुचिनिमि वंश मझार ॥

सो०-जगमधि थापन हेतु, विमलकीर्ति सियराम कर ।

१-टिप्पणी ८ देखो ॥

जनकराज ऋषि केतु, करिहैं शिवधनु भंगपण ॥
आय अवध पुरमाहिं, गाधि सुवन ब्रह्मर्षि वर ।
राम लखण दोउ काहिं, मखरक्षण लै जाइहैं ॥
मगमहँमिलीएक निशिचारिनि * नामताड़कामुनिनिग्रहारिनि ॥
कौतुकही कर तासु विनासू * दैहैं सुगति शाप हरि तासू ॥
पुनिकौशिक आश्रमहिसिधारी * करिहैं प्रभु मखकी रखवारी ॥
सदल सुवाहु काहिं संहारी * हरिहैं ऋषिन शोक भयहारी ॥
एक विशिख मारीचहि मारी * ह्वैहैं सिन्धुपार तेहि डारी ॥
पुनिमुनि सँग रघुवंश किशोरा * करिहैं गमन जनकपुर ओरा ॥
गौतम तियकर विपिन मझारा * पदरज ते करि शाप उधारा ॥
जायजनकपुर रविकुल मण्डन * करिहैं शम्भुशरासन खण्डन ॥
सीयराम कर होइ विवाहू * जो प्रसंग मुदप्रद सब काहू ॥
भ्रातन सहित व्याहि रघुराजू * फिरिहैं तहँ ते सहित समाजू ॥
दो०—भार्गव सन निज अंशहरि, अवध पुरीमहँ आय ।
रहिहैं द्वादश वर्ष लौं, भवन माहिं रघुराय ॥
एक समय सुषुमा सदन, श्री रघुनन्दन काहिं ।
राजासन भूषित करन, परीभूप मन माहिं ॥
गिरा प्रवर्तित मन्थरा, मंत्र कैकयी मानि ।
पाछिल द्वै वर भूपते, मँगिहै बहु हठ ठानि ॥
रामहिं चौदहवर्ष वन, निज सुत भरतहि राज ।
सो सुनि मनिहैं रामसुख, जानि सुरन करकाज ॥
सीय लखणसह धरि मुनिवेशा * जैहैं वन उर क्लेश न लेशा ॥
तमसा तीर निवसि यक रैना * जाय गंगतट राजिव नैना ॥
सुरसरि उतरि वहुरि रघुराई * मिलिहैं भरद्वाज सन जाई ॥
चित्रकूट मधि पुनि सानन्दा * करिहैं वास भानुकुल चन्दा ॥

दशरथ भूप रामके शोका * प्राण त्यागि जैहैं सुर लोका ॥
भरत मातुलालय ते आई * मातुकर्म लखि अतिदुख पाई ॥
पुनि रघुनाथहि फेरन हेतू * जैहैं सब पुरजनन समेतू ॥
भ्रात नेह आदर्श स्वरूपा * होइ भरत कर चरित अनूपा ॥

दो०-रघुनाथहि फेरन निमित, श्री कैकयी कुमार ।
प्रेम सहित करपुर विनय, करिहैं विविध प्रकार ॥
पर पालन हित पितु वचन, दृढ़ प्रतिज्ञ रघुराय ।
फिरहिं न फेरहिं भरत कहँ, दै पादुका बुझाय ॥

भरत शीशधरि प्रभुपद त्राना * करिहैं वास उदासि समाना ॥
पुनि जयन्त कर दर्प अनन्ता * करिहैं अंत दुरंत निहंता ॥
बहुरि बड़न श्रद्धाशिख हेतू * जैहैंप्रभु ऋषि मुनिन निकेतू ॥
पुनि दण्डक घन कानन माहीं * रावण भगिनिसूर्पनखिकाहीं ॥
विधि निवन्ध प्रभुवन्धु सरोषा * करहिंविरूपिनिलखितेहिदोषा॥
यहि कृतिते दशकन्धर भ्राता * खरदूषण सुर मुनि दुखदाता ॥
सहस चतुर्दश सुभट समेतू * अइहै बल दर्पित रण हेतू ॥
क्रुद्ध केहरीवत प्रभु आशू * करिहैंतिनन्ह समरमधिनाशू ॥

दो०-पुनि मारीच सहाय ते, दशमुख हरि हरि नारि ।
मगमहँ जीति जटायु कहँ, राखिय लंक मझारि ॥
खोजत सीतहि विरह युत, लखण सहित श्रीराम ।
गृद्धराज मुख पाय सुधि, तेहि दैहैं निज धाम ॥

बहुरि कवन्धहि करि संहारा * करिहैं तासु शाप उद्धारा ॥
पुनि शबरिहि करिसद्गतिदाना * जैहैं ऋष्यमूक भगवाना ॥
तहँ सुग्रीव सूरसुत साथा * करि मिताइ श्रीपति रघुनाथा ॥
कपिबालिहिबधिहनियकशायक * करिहैं सखाकाहिं कपिनायक ॥
तदनु समीर सुवन हनुमाना * रुद्ररूप वरवीर प्रधाना ॥

भवनिधि तरि प्रभु पद प्रभुताई * सुमिरि अलंघ्य सिन्धु चकलाई ॥
करि लंघन दै एक फलंका * जाय लंकमधि हृदय अशंका ॥
अक्ष आदि बहुबीर सँहारी * वन उजारि रावणपुरि जारी ॥
सीय कुशल लै द्रुतपद अइहैं * समाचार रघुवरहि सुनैहैं ॥
बहुरि विभीषण लंक विहाई * मिलिहैं रघुनायक सन आई ॥

दो०–तदनु अपरिमित भालुकपि, सहित भानुकुल केतु ।
नल सहाय ते सिन्धु महँ, रचिहैं अद्भुत सेतु ॥
तरि पयोधि अवरोधिपुर, भीषण समर मझार ।
करि सुत भ्रात अमात्य युत, दशशीशहि संहार ॥

सो०–जनक सुताहि मँगाय, अनल परीक्षा करिप्रभू ।
बहुरि अवध पुरि आय, राजसिंहासन राजिहैं ॥
कुम्भज तपो निधान, रघुनन्दन ढिग आइकै ।
करिहैं सकल बखान, पूर्व कथा दशवदन कर ॥

रामगीती छन्द ।

बहु सहस सम्वत्सर सियायुत कोशलेश उदार ।
करिहैं विविध दाम्पत्यलीला जगप्रथा अनुसार ॥
पुनिलोक सिख हित लोकगुरु लोकेश सब गुणखानि ।
तजिहैं ससत्वा सियहि जग अपवाद कर भय मानि ॥
सियपाद पंकज रेणुते तव तपोवन सुविशाल ।
रहिहै सुहावन परम पावन मोदप्रद कछुकाल ॥
तव कुटीमधि श्रीराम औौर सजात लवकुश नाम ।
ह्वै हैं प्रकट तनुश्याम शोभाधाम लोक ललाम ॥
नववेद इत तव रचित रामायणहि दोउ कुमार ।
पढ़ि पारदर्शी होइहैं नर मण्डलीन मझार ॥

बहुवर्ष नृप आदर्श प्रभुदै सुख प्रजान महान।
पुनि ठानिहैं हयमेध मख करि देव द्विज सन्मान॥
तेहि यज्ञमहँ शिष्यन सहित तुम जाइहौ मतिमान।
तव रचित रामायण तहां सिय सुवन करिहैं गान॥
पुनि जनक नन्दिनि जानकी कहँ सभामाहिं बुलाय।
चहिहैं परीक्षा लेन दूजीवार कोशलराय॥
तब जानि लीला कालकर अवसान अवनि कुमारि।
सब जग जनन कहँ डारिकै अतिशोक सिन्धु मझारि॥
सब सभासद के लखत करि पाताल माहिं प्रवेश॥
निजधाम जाय विराजिहैं धरि दिव्य आपन वेश।
तिय वियोगादिक दुख वृथा तेहि सीख हेतु कृपाल।
दृढ़ नियम नीति समेत करिहैं राजकृति कछुकाल॥
दुष्टन दमन सन्मान सुजनन पांचकन कहँ दान।
जननीन ज्ञान प्रदान पालन प्रजन पुत्र समान॥
पुनि कालपुरुष विरंचि आयसु पाय प्रभु ढिग आय।
निज धामगमन निमित्त कहिहै विनय वैन सुनाय॥
तब भव भरण दै धरणि धारण लखण काहि विदाय।
अरु वंशधर गणकाहिं दै कै राज्यभार निकाय॥
इमि सहस एकादश वरष करि हैं चरित्र प्रकाश।
पुनि जाय निजपुर राजि हैं कमला सहित श्रीवास॥
यह हरि चरित यत दुरितहर संक्षेप ते मुनिराय।
लै जन्म ते निजपुर गमन लगि दीन्ह तुमहिं सुनाय॥

दो०—प्रत्यय सन्धि समास युत, छन्द वद्ध करि ताहि।
रचिगाथा अमरत्व पद, लहहु तिहूंपुर माहि॥
महा ग्रंथ सुन्दर सरस, तव विरचित मति मान।

पूजनीय होई जगत, ऋक यजु सामसमान ॥
कामुक विषयी पापरत, जीवत काहिं सदाय ।
सद्गति प्रद रामायणहि, होई सरल उपाय ॥
सारतत्व तव ग्रंथकर, जे जनिहैं जग माहिं ।
यक किंकर तिनकेनिकट, सन्तत जात डराहिं ॥

अष्टपदी छन्द ॥

हे मुनिवर यह गूढ़ मर्म श्रुति शास्त्र प्रकाशा ।
सुख आशा प्रति जीव माहिं सोइ धर्म पिपासा ॥
परजेहि विध लहि वारि तृषासों आतुर जोई ।
तजि शुचि अशुचि विचारपियत कैसहु जल होई ॥
तेहि प्रकार जे अज्ञ नित्यसुख यतन विहीना ।
ते असत्य सुख माहिं रहत निशिवासर लीना ॥
यदि त्रिपथगामिनी मोक्षदा सलिल सुलभही पाव नर ।
तौ बहुरि होय केहि लालसा वारि मलीन तड़ाग कर ॥
राम चरित्र पियूष सिन्धु मुनि रचित तुम्हारा ।
नर नारिन भृतु शंक दूरिकर जगत मझारा ॥
उत्कट षटरिपु गंजि भंजि भव बन्धन दुस्तर ।
दै है बिनहि प्रयास चारिफल त्रिविधताप हर ॥
पीड़ित जनकी पीर निरख निश्वास प्रखरतर ।
शोकातुर कर शोक चित्त भ्रम विपद जड़ित कर ॥
निरुपाय केर नैराश्य अरु बाधा भग्न मनोरथन ।
आतंक घोर असहाय कर क्षोभ ताप यत दुर्बलन ॥
दो०—अज्ञानिन घन मोह तम, घन शालिन अभिमान ।
छलिनछलन अरु मूरखन, वर्वरता अज्ञान ॥

अहंत दोष गर्वीन कर, तृष्णा लोलुपकेर ।
दुराचार रत नरन कर, असत प्रयास घनेर ॥
द्वेष ईरषा ईरषिन, आलसीन जड़ताय ।
मृषा तृषा कलि सखाकर, खलनकपट व्यवसाय ॥
भोग लालसी जनन कर, विषय आश अनिवार ।
हिंसाशी कर निठुरता, अबुधन रुचि अनुदार ॥
भय आतुर कर प्रबल भय, कामातुर कर मोह ।
स्वार्थिन वंचित होन दुख, गृहिन कुटुम्ब विछोह ॥
सो०—यह सब व्याधि महान, पठन श्रवण करि ग्रन्थतव ।
होई इमि निर्वान, जिमिरवि किरणते नशत तम ॥
विविध शस्य भुविमाहिं, जिमि उपजत घननीरते ।
तिमि सद्गुण प्रकटाहिं, जगमधि तवकृत ग्रंथते ॥
पद्धि प्रतापशाली रामायण ❋ ह्वै हैं जगमधि सत्य परायण ॥
कर्मठजन निज लहैं उछाहू ❋ होय गृहीन शीलशुचि लाहू ॥
असंकोच गुण पावहिं दाता ❋ प्रकटहिक्षमाबलिन मधिताता ॥
सतपथ गमनहिं यश अनुरागी ❋ होहिं उदार धनी बड़ भागी ॥
शिष्य लहैं गुरुभक्ति पुनीता ❋ होहिंसततवुध प्रकृत विनीता ॥
सेविन स्वार्थहीन सेवकाई ❋ धर्मनिष्ठ याजक समुदाई ॥
ज्ञानिन उर विवेक संचारु ❋ श्रद्धावन्त सिद्धि फल चारु ॥
साधु चिन्त नृपतिन उर छाई ❋ धीरज गुण वीरन प्रकटाई ॥
साधुन महँ समदृष्ट सुहाई ❋ प्रभुतावन्त न मधि सरलाई ॥
तत्वदर्शिगण कहें नित ज्ञाना ❋ भक्तन निष्कामना प्रदाना ॥
दो०—सहानुभूति कुटुम्बिनन्ह, कृतिवानन आचार ।
राजकर्मचारीन कहँ, सतत धर्म व्यवहार ॥
यहिविध विविध प्रकारफल, जगतमाहिं मुनिराज ।

पठन श्रवण तव ग्रंथकरि, लहिहैं मनुज समाज ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

मृदुता तितिक्षा दक्षता संतोष ह्री प्रियवादिता।
ऋजुता दया समदम सुभक्ति निवृत्ति शान्ति वदान्यता ॥
तप योग त्याग विराग आदिक कर रुचिर रघुवर कथा।
है चारुअनुपम चित्र पट जगमाहिं रहिहै सर्वथा ॥
तव प्रथम कर जोइ नाम रत्नाकर अहै तेहि सर्वदा।
रक्षिहै रत्नाकरहि सम तव रचित ग्रन्थहि रत्नदा ॥
जेहिविधह्रदनमधिपयोनिधिसरितान मधि शुचिसुरधुनी।
भूधरन माहिं सुमेरु सुररमणीन मधि गिरि नन्दिनी ॥
चौपदिन मधि जिमि धेनु मनुजन माहिं जेहिविधभूसुरा।
औषधिन माहिं पियूष जिमि योगीन मधि गंगाधरा ॥
जिमि देवगण मधि गरुड़गामी विष्णु तिमि निश्चय मुनी।
सबग्रंथ चयमधि होइहै तव रचित ग्रंथ शिरोमनी ॥
आचार जप तप नेम अर्चन आदि यत शुचि कर्म हैं।
ते सकल नर नारिन कहँ फलयुक्त कीर्ति निमित्त हैं ॥
पर प्रेमयुत विश्वास करि हरि चरित मधि चित रतकिये।
निष्काम भक्ति उदार निर्मल भाव शुचि उपजत हिये ॥
श्रुति शास्त्र सांगोपांग पढ़ि फल जोइ लहब दुस्तर अहैं।
तव सरल गाथा ते सोईफल जगतजन सहजहि लहैं ॥

दो०—अगम निगम श्रुति उपनिषद, सांगोपांग पुरान।
कृतिवास इन सबहु मधि, बिमुहरि कथा न आन ॥

सप्तम सर्ग ॥ ७ ॥

ब्रह्माकृत सनकादि मानस पुत्रोत्पत्ति, नारद प्रति अभिशाप, नारदको गन्धर्व योनिप्राप्ति व तत्पत्नी मालावती कर्तृक सतीत्व तेज प्रकाश ॥

सो०—इमि हरिचरित बुझाय, गे सिधाय नारद जबहि ।
वालमीकि पुनराय, भयेमग्न विभुध्यान महँ ॥
तब तिन मनस पवित्र, पटमधि रामचरित्र कर ।
छाया चित्र विचित्र, विशदरूप ते भासेऊ ॥
पुनि मुनिवर तेहिकाहिं, वाक वादिनी शक्तिते ।
किय प्रकाश जगमाहिं, महाकाव्य के रूपते ॥
रामायण तेहि नाम, ऋषिनविविधविधिगावजेहि ।
सो प्रभु कथा ललाम, वरणहुँ भाषाछन्दरचि ॥

दो०—सर्व प्रथम वरणन करहुँ, श्री नारद आख्यान ।
गुणातीत गुणगान महँ, जिनसमान नहिं आन ॥
भक्तिसुधा भव व्याधहर, ऋद्धि सिद्धि फलदाय ।
हैं तेहि ऋषिवरज्योतिधर, सुघर सुधाधर न्याय ॥
रमारमण करुणा अयन, सर्वेश्वर जगसार ।
तिन प्रभु नाभि सरोजते, प्रकटे विधि कर्तार ॥

लहि रमेश आयसु कर्तारा ❋ यहिविधि कीन्ह सृष्टि संसारा ॥
तुंग शृंगधर भूधर धरणी ❋ अनलअनिलमृगांकग्रहतरणी ॥
सप्त पयोनिधि सप्त पताला ❋ सप्तस्वर्ग नभचर उडुमाला ॥
तिथिदिन षटऋतु नदिनदनाना ❋ चारिवेद पूरति यत ज्ञाना ॥
तेज पुंज पुनि चारि कुमारा ❋ मनसों उपजाये. कर्तारा ॥

सनक सनन्द सनातन नामा * सनत्कुमारनिखिलगुणधामा ॥
तिनप्रतिविधिइमि वचनउचारा * सबमिलि करहु सृष्टि विस्तारा ॥
परतिनजगअनित्य जियजानी * भे तपरत पितु वचन न मानी ॥
निज तनुसों पुनि बहु संताना * कीन्हप्रकटइमिविधि भगवाना॥
वाम पार्श्व सों भृगु मति माना * दहिन अंगते दक्ष सुजाना ॥

दो०—प्रकटे दक्षिण करण ते, ऋषि पुलस्त्य विख्यात।
पुलहवामश्रुतिते जिनहिं, सुमिरत कलुष नशात ॥
अत्रि दहिन दृगते भये, वामते क्रतु गुणग्राम ॥
छायाते उप्पन्न भे, कर्दम मुनि तपधाम।

सो०—प्रकटे तपो निधान, नासाते अंगिरा ऋषि।
कन्धर ते मतिमान, भे मरीचि रुचि वदन ते ॥

अधर ओष्ठ ते भये प्रचेता * ब्रह्मज्ञान विद तपो निकेता ॥
रसनाते वशिष्ठ प्रकटाने * जगत इष्ट जेहि गुरुकरि माने ॥
कंठदेश ते ज्ञान विशारद * भये प्रकट योगीवर नारद ॥
तिन सबसन इमिकह चतुरानन * करहुसकल ममसृष्टि प्रसारन ॥
सुनिपितु वचन हृदय दुखमानी * कह नारद करपुट इमि वानी ॥
प्रभुकछु विनय मोरि सुनि लेहू * पुनि विचारि तस आयसु देहू ॥
सनकादिक मम अग्रज काहीं * दीन्हेउ विषम काज यह नाहीं ॥
तिनहिं सुपथ तप माहि लगायो * जाहि परमगति वेदन गायो ॥
विषय विषम विषकुण्ड मझारी * चाहत हमहिं तात कसडारी ॥
आमिष ग्रंथित वड़िश निहारी * होहिंलोभवशजिमिझषझारी ॥

दो०—दीपशिखा लखि कीटगण, गिरहिं गवांवहिं प्रान।
तिमिविनाशमुखविषयमहँ, लपटत जे अज्ञान ॥
हे पितु मंगलमय सुखद, भगवत भजन विसारि।
असत काम वासना मधि, किंचित रुचि न हमारि ॥

सुनि विरंचि नारद मुख वानी ❋ लागे कहन क्रोध उर आनी ॥
रे मतिमन्द ज्ञान अस तोरा ❋ मानत नहिं निदेश तैं मोरा ॥
यहि अघगातु गात तं धारी ❋ विषयमत्त रहु ज्ञान विसारी ॥
बहु युगतै पचास तिय संगा ❋ रहिहै निरत अनित रसरंगा ॥
गान वाद्य नर्तन शृंगारा ❋ होई अतिप्रिय काज तिहारा ॥
दासी गर्भ जन्म पुनि पाई ❋ करिहै साधु संत सेवकाई ॥
सतत तिनन्ह कर जूठन खाई ❋ लहिहै दिव्यज्ञान पुनराई ॥
सुनियहिभाँतिजनक मुखशापा ❋ कहनारद यहिविध सहदापा ॥
है पितु विना दोष हम काहीं ❋ दीन्हेउ शापउचित कृतिनाहीं ॥
यहि हित तीन कल्प संसारा ❋ कोइ न पूजन करी तुम्हारा[1] ॥

दो०—तव नारद पितु शाप वश, करि त्यागन सो गात ।
भये जाय गन्धर्व यक, उपवर्हण विख्यात ॥
रह्यो चित्ररथ गन्धरव, विदित जासु जगगान ।
रह पचास कुमारि तेहि, मन्मथ वाम समान ॥

उपवर्हणहि सो सकल कुमारी ❋ दीन्ह्यो ब्याहि सुपात्रनिहारी ॥
उपवर्हण लै तियन ललामा ❋ बस्यो गन्धमादन रचिधामा ॥
मालावतिनामिनि गजगामिनि ❋ रहीप्रधानसबनमधिभामिनि ॥
सकल तियनसह सहित हुलासा ❋ रह्यो करत सो भोग विलासा ॥
उपवर्हण विधि भवन मझारा ❋ गयो नृत्य देखन यकबारा ॥
रम्भावती सुमुखि स्वर नारा ❋ नर्तत रहितेहि समय मझारी ॥
उपवर्हण तेहि रूप निहारी ❋ गयो मोहि तनुदशा विसारी ॥
भयो मत्त सम रह्यो न धीरा ❋ यहलखिकहविधिकोपिगंभीरा॥
सुनरे शठतव अस जड़ताई ❋ मम समाज मधिकरसि ढिठाई ॥
जा विमूढ़ तैं यह तनु त्यागी ❋ शूद्रयोनि मधिजनमु अभागी ॥

१—टिप्पणी ६ देखो ॥

दो०-उपवर्हण विधि शापते, त्यागन कीन्ह शरीर।
मालावति पति मरण लखि, भई महान अधीर॥
भेटतपुनिपुनिस्वामिशव, विलपत वदन मलीन।
पुनिपतिकेजीवननिमित, सुरन विनय बहु कीन॥
जब न तासुपति जीवित भयऊ * तबतेहिहृदयक्रोध अतिछयऊ॥
नदी कौशिकी तट सो जाई * बैठी योग समाधि लगाई॥
चह्यो देन देवन सो शापा * यहलखिसुरनशंकअतिव्यापा॥
व्याकुल चित श्रीपति ढिगजाई * कीन्हविनयनिजविपतिसुनाई॥
सुरन अभय दै जगत गोसाँई * चले बटुक कर वेश वनाई॥
मालावति ढिग जाय रमेशा * लगे प्रबोधन दै उपदेशा॥
सोसुनि इमि मालावति कहेऊ * सुनहुबटुक बालक तुमअहेऊ॥
पति पदरता सतीकृति जोई * विदितनतुमहिंअवहिंकछुसोई॥
सतिहि एक शुचिगति पतिसेवा * पतिहिउपास्य पतिहियकदेवा॥
ज्ञान ध्यान अरु जप तप पूजा * सती काहिंपति सरिस न दूजा॥
दो०-हर्ता कर्ता चारिफल, दाता पति न हमार।
ज्ञान कथव मम सामुहे, जल्पन मात्र तुम्हार॥
अबहिं देखिहौ मोरपति, जियत न कस पुनराय।
सति रक्षितपतिकरहिंको, जगमधि सकत नसाय॥
सो०-लखेहु कबहुँ तुम नाहिं, सती तीय कर तेजगति।
सो तुम यहि क्षण माहिं, निजनयननअवलोकिहौ
जियहिंनयदिममपतिद्विजराजू * तो पतिव्रता तेज ते आजू॥
देव दनुज सह सब संसारा * करिहौं यक निमेषमहँ छारा॥
पति अनुराग देखि दृढ़ तासू * धन्य धन्य कह रमा निवासू॥
पुनि उपवर्हण कहँ भगवाना * करि जीवित भे अन्तर्द्धाना॥
मालावति अतिशय हर्षाई * सहितस्वामिनिजमन्दिरआई॥

उपवर्हण सतीय सहुलासा ❋ करत रह्यो बहुकाल बिलासा ॥
पुनिअघहारिनि सुरधुनितीरा ❋ कीन्हत्यागनिजअनित शरीरा॥
मालावति पतिसँग सतिभयऊ ❋ स्वामि भक्तिवशहरिपुरगयऊ ॥

दो०—स्वामि नारि सम्बन्ध नित, क्षीर नीर अनुहारि ।
होहिं न यक यकसोंपृथक, दोउदोउलोकमझारि ॥

अष्टम सर्ग ॥ ८ ॥

गोपराज द्रुमिल पत्नी कलावतीके गर्भ से नारद का जन्मसाधु सगं से भगवद्भक्ति प्राप्ति व विष्णुदर्शन ॥

सो०—वरणहुँ जौन प्रकार, नारद विधि मानस तनय ।
लीन्ह जाय अवतार, शूद्र योनिमहँ शाप वश ॥
विस्तृतविमलविशाल, कान्यकुब्ज वर नगर कर ।
विभवशालि महिपाल, द्रुमिल गोपकुल जात रह ॥
तेहिकामिनिकमनीय, सती कलावति गुणवती ।
रहि अपुत्र सो तीय, निज पतिके रुजदोष वश ॥

दो०—वंशलोप अवलोकिकै, यक दिन द्रुमिल नरेश ।
ब्रह्मवीज ते सुतलहन, दिय तिय काहिं निदेश ॥
पतिअनुमतिलहिकलावति, नरद आश्रमहिजाय ।
देख्यो चित संयम सहित, ध्यान मग्न मुनिराय ॥

मुनि सामुहे द्रुमिल नृपरानी ❋ ठाढ़ी रहीं जोरि युग पानी ॥
सुरनर्तकी मेनका नामिनि ❋ रूप अनूप छटा छविदामिनि ॥
एक दिवस तेहि विपिन मझारा ❋ आई रुचिर किये शृंगारा ॥
छूट ध्यान तेहिक्षण मुनिकेरा ❋ सन्मुख सुमुखिमेनकहि हेरा॥
हाव भाव मुनि तासु निहारी ❋ चित्त विकार प्रकट उर भारी ॥

धीर छूटि मुनिवर कर गयऊ * तुरतहि तेजखलिततिनभयऊ ॥
कलावती उठाय तेहि लयऊ * हर्षित हृदय पान करि गयऊ ॥
पुलकित चित ह्वै पूरण कामा * मुनिपदवन्दि आयनिजधामा ॥
सकल वृत्तनिज पतिहिसुनावा * सुनि नृप द्रुमिलहृदयमुदछावा ॥
बहुरि तीयप्रति कह इमिबानी * पुरयो विधिमम आशसयानी ॥
कोई द्विजभवन वसहु अबजाई * किहेहु तासु सेवन मन लाई ॥
विष्णुभक्त गुण ज्ञान निधाना * त्रिजग प्रथित लहिहौसंताना ॥

दो०—असकहिसबसम्पतिसहित, राज्य द्विजनकरिदान ।
जायवदरिकाश्रमहि सो, लागकरन हरि ध्यान ॥

सो०—पति निदेश अनुसार, सतीशिरोमणि कलावति ।
यकद्विज भवनमझार, किय निवासदृढ़ नेमयुत ॥

कछुक काल बीते सो नारी * यक सुत तप्तस्वर्ण अनुहारी ॥
ब्रह्म तेजमय रूप ललामा * प्रसवकीन्हतेहिद्विजवरधामा ॥
अनावृष्टि बहुदिन कर भूरी * जन्मत सुवन भयो द्रुतदूरी ॥
बरस्यो जल दुखभयोनिवारण * परयोनाम नारदयहिकारण ॥
दुजे प्रकट शिशु नरद के रेतू * परयो नाम नारद यहि हेतू ॥
एक समय बहु ऋषि तपधामा * कीन्हनिवास आयतेहिग्रामा ॥
तिनकहँ चतुर्मास व्रतधारी * गोपराज भामिनी निहारी ॥
निज जीवन निधिनारद काहीं * कियनियुक्त तिन सेवनमाहीं ॥

दो०—पाँचवर्ष नारद वयस, पर क्रीडादि विहाय ।
संतत मन वच कायते, करहिं साधु सेवकाय ॥
शिशु सेवाते साधुगण, होय प्रसन्न महान ।

१—अन वृष्ट्यव शेषे च काले बालेबभूवह । नारंददौ जन्मकाले तेनायंनारदाभिधः । वीर्य्येण नरदस्यैव वभूव बालको मुने । मुनीन्द्रस्य वरेणैव तेनायं नारदाभिधः ब्रह्मवैवर्त पु० ब्रह्मखराड २१अध्यायश्लोक ७=६ ॥ २—टिप्पणी १० देखो ॥

जूठ अशन दै ताहि नित, उपदेशहिं शुचिज्ञान ॥
साधु सेव संगति सों नारद * भयेप्रकृत हरिभक्ति विशारद ॥
अकस्मात यकदिन निशिमाहीं * डस्यो भुजंग कलावति काहीं ॥
तेहिक्षण सोअनित्य तनुत्याजी * नित्यधाम मधिजाय विराजी ॥
तब नारद उर प्रकट विरागा * बढ्योअधिकहरिपदअनुरागा ॥
गृहतजि ऋषिन संग स्वच्छन्दा * भ्रमन करन लागे सानन्दा ॥
ऋषिननारदहि विधिसुतजाना * दिय हरिमंत्र हृदय सुखमानी ॥
एक समय नारद वन माहीं * बैठि मुदित पीपर तरु छाहीं ॥
मग्न विष्णुपद पंकज ध्याना * हृदय प्रेम नहिं जाय बखाना ॥
गदगद कण्ठ नयन बह नीरा * उठत मुहुमुंह पुलकि शरीशा ॥
तेहिअवसर तिनहृदय मझारा * भासि रमेशरूप यकबारा ॥
पुनि तुरतहि सो गयऊ बिलाई * तब नारद अतिशय अकुलाई ॥
लागे करन रुदन विलखाई * भइ गति मत्त मनुज की नाई ॥

दो०—सोइरूप पुनि दरशहित, इतउत भ्रमत अधार ।
यहि प्रकार तेहि क्षणभई, गगन गिरा गम्भीर ॥
हे नारद केहि हेतु तुम, वृथा रह्यो अकुलाय ।
मम दर्शन यहि जन्ममहँ, पैहौ नहिं पुनराय ॥

सो०—भयो न छार विकार, जिन असिद्ध योगीनकर ।
ते नर दरश हमार, पावहिं नाहिं कदापिहू ॥

पर अनुपमम लखि प्रेम तुम्हारा * दीन्हेउँ दरश तुम्हें यकबारा ॥
अबदृढ़ नेम सहित मनलाई * करि सन्तन सतसंग सदाई ॥
करहु ध्यान निशिवासर मोरा * तब भवबन्ध नाश ह्वै तोरा ॥
धारि दिव्य तनु विगत विकारा * पैहो नितप्रति दरश हमारा ॥
यहिविधि गगन गिरा सुखदाई * सुनिनारदपुनि हियहुलसाई ॥
भगवत चरित गान महँ पागे * प्रमुदितफिरनविविधथललागे ॥

कछुक कालमहँ ज्ञान निधाना * तीरथ धाम माहि तजिप्राना ॥
शापमुक्त ह्वै दुख सुख हीना * ब्रह्म माहिं ह्वै गये विलीना ॥
सो०—वर्ण भेद कछुनाहिं, साधन हरिहर भजन मधि ।
तेजन प्रिय हरिकाहिं, जिनमनविभुगुणमननरत॥

नवम सर्ग ॥९॥

नारद प्रति दक्षकृत अभिशाप, नारदका स्त्रीत्व व उद्धार ॥

दो०—बहुरि कल्प आरंभ महँ, श्री नारद ऋषिराय ।
अंगिरादि ऋषिके सहित, भये प्रकट पुनराय ॥
एकसमय विचरण करत, नारद तपो निकेत ।
दक्ष प्रजापति सुतन सों, मिले सनेह समेत ॥
लखितिन सकल कुमारनकाहीं * तत्पर प्रजा सृष्टि कृति माहीं ॥
सांख्य शास्त्र तिन सबन पढ़ाई * जग अलीक सबभांति बुझाई ॥
तिन सबकहँ विरक्त करिदीन्हा * तबअतिरोष प्रजापति कीन्हा ॥
दिय नारदहि शाप यहि भाँती * तैं मम सृष्टि केर उतपाती ॥
याते भ्रमहु तिहूंपुर माहीं * पावहु वास कतहुँ तुम नाहीं ॥
सुनि नारदमुनिहियसुखमाना * विहँसत तहँ ते कीन्हपयाना ॥
एक समय श्री पति ढिग जाई * बोले चरण कमल शिर नाई ॥
प्रभु सुनियत अद्भुत तवमाया * दिखरावहुकछुमोहिंकरिदाया ॥
विहँसि तिन्हैं हरिसंग लिवाई * कहइमि कान्यकुब्जपुर जाई ॥
आवहु यहि सरमाहिं नहाई * मम माया देखहु पुनराई ॥
सो०—तेहि सरमधि अवगाह, करतहि तिय नारद भये ।

* टिप्पणी ११ देखो ।

तबद्भुत त्रिभुवन नाह, भे अन्तर्हित तहांते ॥
सोइ अवसर तेहि ठाम, नृपतितालध्वज आयऊ ।
सरतट सुन्दरि वाम, विचरतलखिगृहलैगयो ॥

दो०—करिपत्नी निज भवनमहँ, राखहु नृपति सहर्ष ।
प्रकट तुम्बि तिन गर्भ ते, बीते द्वादश वर्ष ॥

तासों सूर सरिस द्युति वाना ❋ भये पचास प्रकट संताना ॥
समय पाय ते सकल कुमारा ❋ भये कुशलसब कला मझारा ॥
विषय विषम विषरदन कि नाई ❋ तासु गांस महँ परि सब भाई ॥
कछुक कालमधि निधिमद पागे ❋ समर परस्पर करि तनु त्यागे ॥
तीय रूपि नारद मुनि राई ❋ पुत्र शोक ते अति अकुलाई ॥
तजिनिवास भे विपिन निवासी ❋ रुदत सतत चित छाव उदासी ॥
यह अवलोकि त्रिलोकि गुसाँई ❋ जरठ विप्रकर वेश बनाई ॥
जाय तहां पुनि नारद काहीं ❋ हनवाये सोइ सरवर माहीं ॥
पूर्व देह नारद पुनि लहेऊ ❋ ह्वै लज्जित हरिसों इमि कहेऊ ॥
भली मोहिं माया दिखरायो ❋ नारि योनिमहँ डारि फँसायो ॥
तब मुकुन्द माथा* गुण दोषा ❋ कहिवहुविधमुनिकहँपरितोषा ॥
बहुरि भयेहरि अन्तर्द्धाना ❋ किय तहँते नारदहु पयाना ॥

सो०—प्रभुकर रीति सदाय, विषय आश भक्तहि भये ।
तेहि मधि ताहि फँसाय, दै कलेश पुनि मोचहीं ॥

---

* टिप्पणी १२ देखो ॥

दशम सर्ग ॥ १० ॥

भगवती लक्ष्मीप्रति नारद का अभिसम्पात तथा नारद की संगीत शिक्षा ॥

दो०- एक समय निज भक्तवर, कौशिक[1] के मुदहेतु ।
कीन्ह एक उत्सव रुचिर, श्रीपति कृपा निकेतु ॥
सुर गायक कुलगुरु प्रथित, तुम्बुरु नाद निधान ।
करत रहे लय ताल युत, तेहि समाज मधिगान ॥
सो०—किय हरि प्रिया निदेश, नादविशारदजौननहिं।
सो कोइ भाँति प्रवेश, करनन पावैसभामधि ॥
कछु संगीत रीति सहुलासू * सीख्यो रह नारद विधिपासू ॥
सुनि हरिपुर उत्सव मुद दायक * आये तहँ नारद ऋषि नायक ॥
पर इन्दिरा चेरि तिन काहीं * जाय न दीन्ह सभा गृह माहीं ॥
तब नारदहि कोप अति व्यापा * विभुभामिनिहिदीन्हयहशापा॥
तव दासी राक्षसी समाना * कियहमार यहिथलअपमाना ॥
यहि हित राक्षसि गर्भ मझारी * होय अवशिउत्पत्ति तुम्हारी ॥
पुनि सो तुम्हैं करी परि त्याजू * असकहिफिरिआयेमुनिराजू ॥
सुनि जगमधियश तुम्बुरुकेरा * प्रकट्यो मुनिउर क्षोभघनेरा ॥
दो०-बहुरिविष्णु सोमंत्रकरि, अरु तिन आयसुपाय ।
लगेसिखनसंगीतमुनि[2], ऋषि उलूक[3] ढिग जाय ॥
अयुत भेदस्वर रागषट, अरु रागिनि छत्तीस ।
सीखि उलूकहि हर्षयुत, यह वर दीन्ह मुनीश ॥
सो०—गरुड़ नाम विहिगेश, अपर जन्म महँ होइहौ ।
सह सनेह कमलेश, सतत राखिहैंनिजनिकट ॥

१-टिप्पणी १३ देखो । २-टिप्पणी १४ देखो । ३-टिप्पणी १५ देखो । ४-टिप्पणी १६ देखो

असकहि तुम्बुरु काहिं, करन पराजित गान मधि ।
भरे गर्व मन माहिं, किय पयान तहँते तुरत ॥
तुम्बुरु भवन द्वार पै जाई * लखेहु विचित्र दृश्य मुनिराई ॥
विकृति अंग तहँ बहु नरनारी * रहे विचरि चितसबनदुखारी ॥
तिनमधि कोइकर कोइपदहीना * कोइलोचनकोइश्रुतिविनुदीना॥
कोइ नासिका विगत कोइ बाहू * कोईशिरछिन्नअंगुरिविनुकाहू ॥
विदरित हृदय लखेहु कोउकाहीं * कोइ के घाव सर्व तनु माहीं ॥
लखि मुनीश विस्मित ह्वै भारी * पूंछेहु तिन सबकाहिं हँकारी ॥
अहहु कौन को दया बिसारी * यहविध कियदुर्दशा तुम्हारी ॥
यहसुनियतिनन्ह उतरयहदयऊ * यह दुर्गती तुम्हहि ते भयऊ ॥
सुनहु मुनीश सत्य हम कहहीं * हम सब रागरागिनी अहहीं ॥
असम्पूर्ण जेहि समय मझारा * तुमअलाप मुनि करतहमारा ॥

दो०—तब तेहिक्षण हम सवन कर, अंगभंग ह्वै जात ।
पुनि तुम्बुरु आलाप ते, होत पूर्ववत गात ॥
तव उत्पात ते हम सबन, होत मरण मुनिराय ।
अरु तुम्बुरु के गान ते, रहै प्राण पुनराय ॥

सो सुनि नारद हृदय लजाने * निजहिअविज्ञजानिदुखमाने ॥
देत निजहि शतशत धिक्कारा * किय पयान उरखेद अपारा ॥
श्वेतद्वीप मधि मुनि पुनराई * गिरे रमेश चरण पै जाई ॥
मुनिहिदुखितलखिनिखिलगुसाँई*कहन लगे यहिभाँति बुझाई ॥
हे महर्षि जनि होहु दुखारी * होइ फलित लालसा तुम्हारी ॥
जब द्वापर युगमाहि हमारा * होई यदुकुल मधि अवतारा ॥
तब मैं स्वयं तुम्हैं मुनिराई * भलीभाँति संगीत सिखाई ॥
तुम्बुरु ते समधिक गुणवाना * करिदैहौं तुमकहँ मतिमाना ॥
अब गन्धर्वन सुरन सप्रीती * सिखरावहु संगीत कि रीती ॥

सुनि सानन्द चतुर्मुखनन्दन ❋ गमने करि मुकुन्द पद बन्दन ॥

दो०—द्वापर युगमहँ विष्णु जब, लीन्ह कृष्ण अवतार।
एक समय तब देव ऋषि, गे द्वारका मझार ॥
पूरुव सुरति कराय मुनि, बोले दोउकर जोरि।
हे प्रभु पूरण करहु अब, पुरा लालसा मोरि ॥

यहसुनिहँसि यदुपतिसुखदानी ❋ जाम्ववती प्रतिकह इमिबानी ॥
तुमनारद मुनि काहि पियारी ❋ करहु दक्ष संगीत मझारी ॥
जाम्ववती लहि स्वामि निदेशा ❋ लागी करन मुनिहि उपदेशा ॥
एक वर्ष लगि तहँ मुनिराई ❋ सीखत गान रहे चितलाई ॥
बहुरि सत्यभामा ढिग माहीं ❋ पठयेहरिसिखहित मुनिकाहीं ॥
लय स्वर भेद तान संगीता ❋ सीखत तहहुँ वर्ष यकबीता ॥
रमारूपिणी रुक्मिणि पासा ❋ बहुरि लाग सीखन सहुलासा ॥
यदपि अमित श्रमसतत कराहीं ❋ पर स्वरसिद्ध भये ऋषि नाहीं ॥

दो०—तब रुक्मिणि की चेरिगण, अरु वहु तिय दिन रैन।
करहिं हँसी ऋषि देवकर, यहि प्रकार कहिबैन ॥
येतेदिन शिक्षा करत, बीतिगये तुम काहिं।
पर अबलगि स्वर भेदहू, भयहु बोध कछुनाहिं ॥

केहिहितश्रमकरि समय गवाँवहु ❋ स्वगृहजाय ग्रहशांति करावहु ॥
इमिश्रम करन विफलतवअहही ❋ गायकहोन मूक जिमिचहही ॥
सुनत सतत इमि व्यंग महाना ❋ परनारद कछुकरत न ध्याना ॥
नारदकर दृढ़ नियल निहारी ❋ ह्वै प्रसन्न श्री रमण मुरारी ॥
सांगोपांग सकल संगीता ❋ सिखराये नारदहि सप्रीता ॥
भे नारद मुनि नाद प्रबीना ❋ भईं राग रागिनी अधीना ॥
अब जेहि समय स्ववीन वजाई ❋ राग अलाप करहिं मुनिराई ॥
सतिय सप्तस्वर तेहि क्षण माहीं ❋ ह्वै समूर्ति सन्मुख प्रकटाहीं ॥

यहि प्रकार नारद मुनि राजू ❋ वासुदेव सन ह्वै कृत काजू ॥
लहि निदेश करि दण्ड प्रणामा ❋ विचरण करन लगे तिहुँ धामा ॥
सो०—विविध विघ्न व्याघात, परेहु जोइ श्रमरत रहत ।
तेहि श्रम विफल न जात, वदतकालिकोइकालमहँ ॥

एकादश सर्ग ॥ ११ ॥

श्रीमती उपाख्यान तथा विष्णु भगवान प्रति ऋषि शाप ॥

दो०—होनराम अवतार मधि, कारण जिते प्रधान ।
मूल हेतु तिनमहँ कथित, नारद तपो निधान ॥
अब वरणहु इतिहास सोइ, अद्भुत[1] मत अनुसार ।
दीन्ह शाप कमलेश कहँ, नारद जौन प्रकार ॥

नृप इक्ष्वाकु विशद कुलजाता ❋ भे नृप अम्बरीष[2] विख्याता ॥
अवध अधीश ईश अनुरागी ❋ सुरद्विज सेवि विषयरसत्यागी ॥
तेहि नृप देव सुता अनुहारी ❋ रहि श्रीमती नाम सुकुमारी ॥
कहि न जाय तेहि सुन्दर ताई ❋ मानोविधि निजकरन बनाई ॥
मुख अकलंक मयंक स्वरूपा ❋ वर्ण स्वर्ण सम गठन अनूपा ॥
मृग मद मोचन लोचन चारू ❋ चितवन वंक मनहुँ शरमारू ॥
सुषुमा सार अधर अरुणारे ❋ मोहमुनिन मनचिबुकनिहारे ॥
वाहु रसाल मृणाल कि नाईं ❋ कटि विलोकि केहरी लजाईं ॥
दो०—गज गामिनि कामिनि रतन, जेहि समनहिं सुरनारि ।
सकल सुलक्षण भूषिता, अति पितुमातु पियारि ॥

१—अद्भुत रामायण २—यह अम्बरीष इक्ष्वाकुवंशीय मान्धाता के पुत्र हैं। एक अपर अम्बरीष मनुपुत्र नभगवंशीय हैं ४६सर्ग देखो ॥

एक दिवस देवर्षि वर, नारद ब्रह्म कुमार।
पर्वत मुनि सह किय गमन, अम्बरीष आगार॥
मुनिन देखि भूपति उठि धाये * करिप्रणाम मन्दिर मधिलाये॥
दै आसन सादर बैठाये * कुवँरि बोलि प्रणिपात कराये॥
भूप सुताकर रूप निहारी * मोहिउभय ऋषि दशाविसारी॥
तब नृपकहँ नारद मुनिराई * लागे कहन पृथक लै जाई॥
पुर वहु यह लालसा हमारी * देहुब्याहि मोहि राजकुमारी॥
पर्वत मुनिहु बहुरि नृप पाहीं * कह निज सुतादेहु हमकाहीं॥
सो सुनि कह नृप हे तपराशी * एक वस्तुकर द्वै जन आशा॥
केहि तेहि देहुँ छोट बड़ जानी * समसमानमोहिं तुमदोउज्ञानी॥
दो०—ताते सुता हमारि जेहि, पहिराई वरमाल।
करब कुमारिहि दानतेहि, आयहु काल्हि कृपाल॥
लै विदाय तब विष्णुपुर, चले दोउ मुनिराय।
प्रथमहि सुचतुर देवऋषि, पहुँचे हरि ढिग जाय॥
सो०—शीश नाय ऋषिराय, कहेउ सकल वृत्तांतकहि।
पर्वत मुख कपि न्याय, होइनाथममविनय यह॥
पर श्रीमतिहि भिन्न कोउ काहीं * विदित होय यह कौतुक नाही॥
विहँसि तथास्तु कहेहु भवाना * तबमुनिप्रमुदितकीन्हपयाना॥
पर्वत मुनिहु बहुरि तह आई * चरण वन्दि सब कथा सुनाई॥
कह ईमि नारद मुख कपि नाई * नृप कुमारि कहँ देय दिखाई॥
तिनहुन सन कह रमा निवासा * ह्वै है मुनि पूरण तव आशा॥
अपर दिवस दोउ ऋषिकुल दीपा * गये मुदितचितनृपति समीपा॥
ऋषिन देखि भूपति हर्षाने * दै आसन सादर सन्माने॥
नृप निदेश लहि सखी सयानी * श्रीमतिकाहिंसभा मधिआनी॥
दो०—मन्द मन्द गति नृप सुता, ऋषिन सामुहे आय।

बानरमुखलखि दुहुनकर, फिरी हृदयभय खाय ॥
पुनि पितु सों कह ये दोऊ, मनुज वानराकार ।
पर यक पुरुष दुहून मधि, लखियत सुषमासार ॥
अतसी कुसुम वर्ण छवि राशी ❋ वय किशोरमुखचन्द्रप्रकाशी ॥
अंग अंग इमि सुन्दरताई ❋ कोटि काम जेहि देखिलजाई ॥
सुनि सचकित कहदोउऋषिराई ❋ तासु किते भुज देत दिखाई ॥
कहेहु कुमारि मदन मद हारी ❋ यहवर पुरुष युगलभुजधारी ॥
यह सुनि पुनि पर्वतमुनि कहेऊ ❋ काह तासु उर भ्राजत अहेऊ ॥
गहे काह सो पाणि मझारी ❋ दीन्ह उत्तर पुनि भूप कुमारी ॥
उरमधि लसत रुचिर मणिमाला ❋ करधृत शायकधनुषविशाला ॥
यह सुनि जानि दोउ मुनिराजू ❋ यहकोइ कुहककारिकरकाजू ॥
दो०—पुनि श्रीमति तेहिपुरुषगल, करि प्रदान वरमाला ।
सकल सभासद के लखत, भइ अदृश्य ततकाल ॥
यह अद्भुत व्यापार लखि, खर भर मच्योसमाज ।
तब सचकित चित तहांते, भगे दोउ मुनिराज ॥
लै श्रीमतिहि भक्त हित कारी ❋ गे सिधारि निजलोकमझारी ॥
भरे रोष दोउ मुनि पुनराई ❋ लगे कहन श्रीपति ढिगजाई ॥
उचित तुम्हैं यह है न गुसांई ❋ किहेहु हमारेहु साथ खुटाई ॥
कहेहु बिहँसि तब शारंगपाणी ❋ मुनितजिरोषसुनियममवाणी ॥
यक एकहि तुम दोउ प्रवीना ❋ कपि मुखहोनकेररुचि कीना ॥
मैं किय दुहुन केर परितोषू ❋ यहि मधि अहे काह ममदोषू ॥
यह मम रीति विदितजगमाही ❋ भक्तहि मोहि अदेयकछुनाहीं ॥
सुनि हरि वचन नीतिरससाने ❋ दोउ मुनिवर उरमांहिलजाने ॥
दो०–पुनि पूँछेहु किमिलोपभइ, श्रीमति नृपति कुमारि ।
कह मुकुन्द मायाछलहि, है यहि विषय मझारि ॥

कह सरोष देवर्षि पुनि, वदत सत्य तुम नाथ।
यहशठतासोइनृपतिकर, किय छलना मम साथ॥
सो०—लै बिदाय शिर नाय, गमने दोउमुनि तहां ते।
अम्बरीष ढिग जाय, परुषवचन इमि उच्चरेउ॥
रे महीप अघचारि, करिमाया तैं मोहिं छले।
यहि कृति ते कुविचारि, तमसाछन्न सदाय रहु॥

रोला छन्द॥

परि है इमि अज्ञान घोर घन तामस माहीं।
निजहु काहि कोइकालजानि सकिहै तैंनाहीं॥
मुनिवर मुख इमि शापवचनफुरतहितत्काला।
प्रकटि विकट घनघोर गाढ़तम तिमिरकराला॥
अति सवेग नरपतिहि करन छादन सोचहेऊ।
पर भगवन्त कृपाय निरापद भूपति रहेऊ॥
हरि निदेश सन अतुल तेजधर चक्र सुदर्शन।
करत संततहि रह्यो भक्तवर नृपकर रक्षन॥
सहसा श्रीपति चक्र प्रकटि निजतेज पसारी।
कियपरास्तमुनिसृजिततिमिरकहँनिमिषमझारी
धूम्रपुञ्ज तब चक्र सोहिं त्रासित ह्वै भारी।
तजि भूपहि दोउ मुनिन ओर धायो हुंकारी॥
घोर गाढ़ तमपुञ्ज बहुरि तासन अधिकाई।
चक्र सोहिं आक्रमित होय दोऊ मुनि राई॥
ह्वै अति शंकाग्रस्त व्यस्तचित तहँते भागे।
तिमिर पुञ्ज हरि चक्र दुहुन के पाछे लागे॥
भजत अग्र दोउ ऋषी धाव तम तिनन्हपछारी।
तेहि पाछे अति वक्रचक्र अतुलित द्युतिधारी॥

भगत दोउ ऋषिराज, गये जेहि जेहि थलमाहीं ।
परतम अरु हरिचक्र, तिनन्ह कहँ घेरत जाहीं ॥
दो०—कतहुँ न हेरिउबार निज, तब दोऊ ऋषिराय ।
रमारमण चरणन शरण, लीन्ह आशुही जाय ॥
त्राहि त्राहि टेरत उभय, कह इमि आरतवाणि ।
रक्षहु तम अरु चक्रते, श्रीपति शारँग पाणि ॥
सो०—लखि मुनीन भय ग्रस्त, भयभंजन रंजन जनन ।
करितेहि तमहि निरस्त, कहदुहूनप्रतिइमिवचन ॥
भूपति अम्बरीष गुणग्रामा * है मम परम भक्त निष्कामा ॥
चक्र नृपति रक्षाहित जोई * कियअपराधक्षमियमुनिसोई ॥
यहसुनि दोउमुनि तपोनिधाना * असबिचारनिजनिजउरठाना ॥
यह छलछन्द इनहिं सबकीना * अम्बरीष है दोष विहीना ॥
इमिमनगुनिहरि प्रति पुनिकहेऊ * यह प्रपंच तुम्हरहि सब अहेऊ ॥
तुमही होय द्विभुज धनुधारी * किहौ हरण नरनाथ कुमारी ॥
यहि कृति वश तुम विनु सन्देहू * धरहु द्विभुज धनुधर नर देहू ॥
तुम्हरहि नियम रंक चह राऊ * भोग कर्मफल ते न बचाऊ ॥
दो०—तियहित यत दुख हमहिभा, सत तुमहू कमलेश ।
निशिचरकृतनिजतियहरण, भोगहु दुसहकलेश ॥
करि स्वीकृत अभिशाप यह, श्रीपति राजिव नैन ।
यहि प्रकार दोउ मुनिनप्रति, कह्योविहँसिमृदुवैन ॥
सो०—हरण धरणि करभार, अम्बरीष के वंश महँ ।
दशरथ भवन मझार, राम रूप ते प्रकटिहौ ॥
भरत शत्रुहन भ्रात, अवतरिहैं मम वाहु ते ।
शेष अंश मम ख्यात, लखण रूप ते प्रकटिहैं ॥
पुनि चक्रहि निवारि इमि वाणी * कहतम पुञ्ज ते शारंग पाणी ॥

रामरूप ते जबहि हमारा ❋ होई दशरथ गृह अवतारा ॥
तब आछन्न किहौ हमकाहीं ❋ तापितमुनिहि करहु अबनाहीं ॥
तव उत्पति भइ ऋषिन के द्वारा ❋ है सक विफल न तेज तिहारा ॥
यहिहित तोसन नर तनुमाहीं ❋ होइ आत्म विस्मृति हमकाहीं ॥
सियराम अवतार के कारन ❋ कथितविविधविधविविधपुराणन
अहैशक्ति अस केहिजन माहीं ❋ सकल हेतु जे वरणि सकाहीं ॥
मोसम अधम उधारन हेतू ❋ लिय अवतार जो रमानिकेतू ॥

दो०—तासु मूल मधि देवऋषि, है यक हेतु प्रधान।
यहिहिततिनऋषिकरचरित, सर्व प्रथम कियगान ॥
निजपियूष रस वर्षिणी, वीणा सों सकुपाय।
करियविशोधितविकृतिस्वर, मधुराकरऋषिराय ॥

द्वादश सर्ग ॥ १२ ॥

अरुन्धती का जन्म, वशिष्ठ के सहित विवाह तथा सरयू आदि सप्तनदी की उत्पत्ति ॥

सो०—वन्दौं शीश नवाय, मित्रा वरुणज पदकमल।
जेहि ध्यावत मनलाय, नशत आशु मानस कलुष॥
नमो अयोनिज देव, जोइ अयो निज रमणगुरु।
जेहि रविकुलकरिसेव, प्रकटचारिफलप्रदहिकिय ॥
मानस सरवर जात, जासु चारु आसन अहै।
तेहिमानस सुत ख्यात, मम मानसवसिकरहिंशुचि॥
किहौं प्रथम यह गान, जगत सजक विधि रसाते।
प्रकटे तपो निधान, ज्ञान विशिष्ट वशिष्ठमुनि ॥

मानस सुत सृजि अज पुनराई * यक कुमारि मनते उपजाई ॥
रूपराशि छविधाम ललामा * चन्द्रवदनि सन्ध्या जेहिनामा ॥
सो गिरि चन्द्रभाग पै जाई * करन लागि तपध्यान लगाई ॥
यहलखि पुलकित गात विधाता * कह वशिष्ठ सन सुनु प्रियताता ॥
सन्ध्या ढिग तुम वेगि सिधाई * करु दीक्षित हरि मंत्र सुनाई ॥
लहि वशिष्ठ इमि जनक निदेशा * धरयो ब्रह्मचारी कर वेशा ॥
तरुण अरुण इव रूप सुहावन * भालविशालतिलकमनपावन ॥
लोलित गलपट श्वेत अनूपा * स्वयं धर्म जनु धृत वटु रूपा ॥
चन्द्रभाग गिरिपै सानन्दा * गये विरंचि सुवन ऋषि चन्दा ॥
तेहि गिरिपै देखेहु तप धामा * लोहित सरवर विपुल ललामा ॥

दो०—निर्मल जल उत्पल ललित, प्रफुलित विविध प्रकार ।
चक्रवाक वक हंस गण, विहरत कूल मझार ॥
सो०—सोइ सरोवर तीर, कमलासन मानस सुता ।
तपो निरत धरि धीर, लखि वशिष्ठ तेहि ढिगगये ॥

अतुल तेजधर द्विजहि निहारी * विधि तनुजा विस्मित ह्वै भारी ॥
करि प्रणाम सादर बैठायहु * सविनयनिजवृत्तान्तसुनायहु ॥
तपरुचि रुचिर हेरि मुनि तासू * दीन्ह मंत्र शुभप्रद सहुलासू ॥
करि दीक्षित ऋषिकीन्ह पयाना * पुनि विधि सुताभई रत ध्याना ॥
वहुवत्सर जल अशन विहीना * सन्ध्या महाघोर तप कीना ॥
देखि तासु तपउग्र महाना * ह्वै प्रसन्न श्रीपति भगवाना ॥
गरुड़ारूढ़ तहां चलि आये * अनुपम सुन्दर वेश बनाये ॥
श्याम सरोज गात भुज चारी * शंखचक्र पद्मायुध धारी ॥
श्रुतिकुण्डल मणिरचितमनोहर * कीटकोटि शशि भानु भासहर ॥
शोभित वाहु कटक छवि धामा * भ्राजतगलवन माल ललामा ॥
तनु पट पीत प्रीति उपजावन * भृगुपद चिन्हलसत उरपावन ॥

पद अंकुश ध्वज कुलिश सुहाई * ध्येय जोइ ऋषिमुनिन सदाई ॥

दो०—रमारमण कर दरश लहि, विधि तनुजा सानन्द ।
वार वार शिर नाय पद, रहिलखि छविसुखकन्द ॥
कह इन्दिरा निवास हरि, तव तपकठिननिहारि ।
अति प्रसन्न मैं मांगु वर, जोरुचिहृदयमझारि ॥

सन्ध्या कह्यो जोरि दोउ हाथा * यहिविनुअपरनममरुचिनाथा॥
पतिपदरता सती तिय ख्याता * त्रिभुवन माहिं होहुजगत्राता ॥
जोइ पर पुरुष धर्म पथ छोरी * करै सकाम दृष्टि मम ओरी ॥
सो पुरुषत्व हीन ततकाला * होय विना सन्देह कृपाला ॥
सुनि इमि सरल वचनशुचितासू * कह अरविन्दनयनसहुलासू ॥
मम वर ते तुम विगत विदूषण * ह्वै हो ख्यात सतीतियभूषण ॥
पतिव्यतीत तव दिशि अरुकोई * लखन काहिं समरथ नहिंहोई ॥
श्रेष्ठ ब्रह्म ऋषि परम पुनीता * होहिं सुसुखितवपाणिग्रहीता ॥
अब यहि समय सुनहु ममबाना * मेधातिथि ऋषिवर विज्ञानी ॥
नदी चन्द्र भागा तट माहीं * द्वादश वर्षिय यज्ञ कराहीं ॥

दो०—तिनके यागहुताश महँ, यह शरीर करि छार ।
अपर देह धारण करहु, मम निदेश अनुसार ॥
असकहि प्रणतारत हरण, हरि भे अन्तर्द्धान ।
तब सन्ध्या मुनि यागकहँ, सानँद कीन्ह पयान ॥

सो०—विधितनयातहँ जायलखि, अवसर निर्भय हृदय ।
गइँ मखकुण्ड समाय, जानिन पायो कोउ जन ॥

जबहिं भयहु सो मख अवसाना * तब यक कन्या रमा समाना ॥
पावक कुण्ड सोंहि प्रकटाई * लखि मेधातिथि हिय हर्षाई ॥
वेगि धाय तेहि लीन्ह निकारी * करि अभिषिक्त यज्ञ घटवारी ॥
निज तनुजा समान तेहि जानी * बोले पुनि विचारि इमिबानी ॥

हे सुभगे कौनेहु क्षण माहीं * करिहौ रोध धर्म तुम नाहीं ॥
यहि कारण सो कुवँरि ललामा * भइजगकथित अरुन्धतिनामा ॥
सहित नेह कन्यहि ऋषिराई * पालत स्वर्णलता की नाई ॥
दिन दिन चन्द्रकला अनुहारी * वर्द्धनलागि सोसुमुखिकुमारी ॥

दो०-दुहितहि शिक्षायोग्य लखि, मेधातिथि ऋषिराय ।
किय चिन्ता तियधर्म सिख, तियढिगसरलउपाय ॥
अस विचारि निज संगलै, सुमुखिअरुन्धतिकाहिं ।
गमने ऋषि सावित्रि अरु, बहुला के ढिगमाहिं ॥

सो०-कमलासन आसीन, सावित्रीबहुलहिनिरखि ।
सौंपि तिनन्ह कर दीन, ऋषिसहर्षनिजसुताकहँ ॥
सप्तवर्ष मनलाय, नारिधर्मसिखिमुनिसुता ।
भई श्रेष्ठ अधिकाय, बहुला सावित्रीहु ते ॥

क्रमशः विकसत कुसुम कि नाई * तेहितनु झलक सुघरतरुणाई ॥
एकदिवस गिरिशिखर मझारी * मेधा तिथि ब्रह्मर्षि कुमारी ॥
इत उत विचरत फिरत अकेली * शोभा लखत विपिन तरुवेली ॥
सहसा अतुल ब्रह्म द्युति धारी * लखत जासुद्युतिलजततमारी ॥
मुनि वशिष्ठ विधि मानसजाये * भ्रमणकरतसोइथलमधिआये ॥
अरुन्धतिहि मुनिहि कुमारा * हेरि मोहि तनु दशा विसारी ॥
दोउ दुहुन दिशि निमिष निवारे * हेरत यक एकन मन हारे ॥
कछु क्षणमहँ मेधातिथि नन्दिनि * पावनहृदय जगततियवन्दनि ॥
चितविकार लखिहृदय लजानी * निन्दतनिजहिचलीदुखसानी ॥
हा विधि कहा आजु मैं कीन्हा * सकलअलीकसीखकरिदीन्हा ॥

दो०-सतीधर्म यह सूक्ष्मतर, नाल सूत्र अनुहार ।
होत भग्न क्षण काल महँ, लागत तनिक बयार ॥
चपलाहू ते चपल अति, चित तोहिं शत धिक्कार ।

तनिक दृष्टि तोसन टरे, करत कुटिल अपकार ॥

हाय दैव असमति भइ मोरी * किहीं दृष्टि परपुरुष कि ओरी ॥
कौन कुगति परलोक मझारी * होई यहि अघ हेतु हमारी ॥
परपति दिशि तिय हेरत जोई * निवसत नरक कल्पशत सोई ॥
इमि पछितात तजत दृगनीरा * गई बहुरि सावित्री तीरा ॥
हेरि तासु मुख मलिन महाना * सावित्री करि हियमधिध्याना ॥
जाना सकल मर्म सो ऐसे * दर्शत वस्तु कांचथित जैसे ॥
अरुन्धती शिर धरिनिज पाणी * बोली सह सनेह इमि बाणी ॥
सुनहु कुवँरि पूछहुँ सत भाऊ * कहहु सत्यजनि करिय दुराऊ ॥

दो०—छिन्नमूल रविकर ग्रसित, शुष्क जलज के न्याय ।
तव मुखमण्डल आजुकस, विवरण परत लखाय ॥
तरल चपल वारिद पटल, छादित शशि अनुहारि ।
तोर सुघर तनुद्युति विगत, केहिहित भयहु कुमारि ॥

सो०—वारि विमोचत नैन, अधोवदनरहिमुनिंसुता ।
कहि न सकी कछु वैन, जननिसरिससावित्रिसन

तब सावित्रि ताहि लै अंका * कह जनि करहुसुता कछुशंका ॥
ब्रह्म तेज धर जेहि ऋषि काहीं * हेरेहु भ्रमण करत गिरि माहीं ॥
सो वशिष्ठ मुनि परम पुनीता * अहै भावि तव पाणि गृहीता ॥
तिनदिशि डिग्यो चित्ततवजोई * यहि मधि पाप नाहिं कछुहोई ॥
तजहु शोक उर करहु न माखा * यहप्रथमहि विरंचि रचिराखा ॥
पुनितेहिरखिरवि भवनमझारी * सावित्री विधि लोक सिधारी ॥
जाय सती कर्तार अगारी * कियप्रणाम निज नाम उचारी ॥
दै आशिष विधि सानँद गाता * आसन दीन्ह पूँछि कुशलाता ॥
पूछेहु बहुरि सनेह समेतू * कहहुसुमुखि निजआवनहेतू ॥
सुनि विरंचिमुख वचन रसाला * सावित्री कह सुनिय कृपाला ॥

दो०–अरुन्धती अरु तव सुवन, मानस सरतट माहिं।
भये विमोहित परस्पर, हेरि एक यक काहिं॥
अब यहि मधि जोइ भावई, सो प्रभु करहु विचार।
मनरोचितअस वचनसुनि, भये मुदित कर्तार॥
सो०–पुनि सँगलै तेहि काहिं, मानस सरतट गये अज।
हरिहर तेहि क्षणमाहिं, रहेराजि तेहि ठाम महँ॥
विधिहि हेरि हरि हर हर्षाने ❋ कुशल पूंछि सादर सन्माने॥
चतुरानन सब कथा सुनाई ❋ करि विचार नारदहि बुलाई॥
कहेहु सुवन तुम वेगि सिधावहु ❋ मेधातिथिहि बोलि लैआवहु॥
पितु आयसु लहिकर धरिवीना ❋ प्रमुदित गमन देवऋषिकीना॥
इत इन्द्रादि देव गन्धर्वा ❋ सिद्ध साध्य चारणगण सर्वा॥
विद्यधर किन्नर मुनि वृन्दा ❋ आये मानस तट सानन्दा॥
सुरमुनि तिय औरहु बहु प्रानी ❋ आये तहां हृदय सुख मानी॥
सुन्दर इन्द्रसभा अनुहारी ❋ जुरी समाज भीरभइ भारी॥
तेहि अवसर नारद मुनिराई ❋ आये मेधातिथिहि लिवाई॥
विधि हरि हरहि शीशते नाये ❋ विधि सहर्ष निज ढिग बैठाये॥
दो०–मेधातिथि सों चतुर्मुख, कहेहु सहित सन्मान।
निजव्रत चारिणिसुताकहँ, करहु वशिष्ठहि दान॥
दम्पति वन्धन तिन दुहुन, प्रथमहि रचा हमार।
यहि कृति ते संसार मधि, होई सुयश तुम्हार॥
सुनि मेधातिथि हर्षित गाता ❋ बोले सुनिय लोक सुखदाता॥
जोइ निदेश नाथ कर होई ❋ मोहिं सतत मंगल प्रद सोई॥
याते अपर काह मोहिं लाहू ❋ तव सुत सनमम सुता विवाहू॥
असकहि आनि अरुन्धति काहीं ❋ सुरसमाज लै निजसँग माहीं॥
गये सोइ गिरि गुहा मझारा ❋ जेहिथल रहे विरंचि कुमारा॥

देखेहु मुनिहि मगन हरिध्याना * ज्योति नवोदित भानु समाना ॥
वयस किशोर ब्रह्म द्युतिधारी * प्रति अंगन शोभा मनहारी ॥
लखि मेधातिथि हियसुखमानी * इमि वशिष्ठ प्रति कह मृदुवानी ॥
सुनु प्रिय तात विरंचि कुमारा * यहकन्याश्रुतिविधिअनुसारा ॥
करत समर्पण तव पद माहीं * जानिय निज दासीवत याही ॥

दो०—जेहिजेहि शुभआश्रमनमधि, करहु वास मुनिराय ।
तहँ तहँ छायावत सुता, रहि अनुगता सदाय ॥
विधिहरिहर अरुसुरगणन, अभिमतसबननिहारि ।
भे सहमत अज आतमज, लखि हर्षे सुरझारि ॥

सो०—सती धर्म अनुसार, तब मेधातिथि नन्दिनी ।
पति पद पद्ममझार, कीन्ह दृष्टि थापन मुदित ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

तबब्याहविधिअनुसारजगदाधारहरिविधिसुरपती ।
गन्धर्वकिन्नरनिकरविद्याधर अमरऋषिमुनियती ॥
लागेकरन उत्सवविविधविध उमँगिउरआनँदरहा ।
सुरविश्वकर्मा मुदितमन मण्डपरच्यो मंजुल महा ॥
मणिजड़ितसुवरणथंमसुक्तन झहरिझूलतझालरी ।
फहरातकेतु विभात कंचनकलश मंगल साजरी ॥
बाजैं गगन घन दुन्दुभी मुनि वृन्द वेद उचारहीं ।
नर्ततमुदितचित अप्सराकलगान करतरिझावहीं ॥
इन्द्रादि देव वशिष्ठ कहँ लै गंगजल हनवायऊ ।
सुन्दर मनोहर देव भूषण वसन शुचिपहिरायऊ ॥
सावित्रि आदिक देवि मेधातिथि कुवँरि कहलैगईं ।
भरि भरि पुरट घट वारि गावतगीत हनवावतभईं ॥
पुनिसाजिसुभगशृँगार नानाभरणवसनसवाँरिकै ।

लाइँ सुमण्डपमाहिं पुलकितशुभघरीहि निहारिकै ॥
मुनि वृन्द वेद विधानवत सबकृत्य कियआनँदभरे ।
तब सुर सकल दम्पतीपै मखवारि लै सिंचन करे ॥

दो०-भाविवाह इमि सहित विधि, मेधातिथि हर्षाय ।
विविधरतनधनमणिवसन, दायज दिय अधिकाय॥
वायु वेग गामी रुचिर, प्रभाविभासि विमान ।
अरु जलपूरित कुण्डिका, कियविधि तनुजहिदान

सो०-कमला पति भगवान, मरीचादि ढिग ऊर्द्ध महँ ।
अति दुर्लभ सुस्थान, दीन्ह वशिष्ठहि वास हित ॥
ऋद्धि नन्दिनी कंत, शांत हृदय हर हरषि उर ।
सप्त कल्प पर्य्यंत, दीन्ह मुनिहि परमायु वर ॥

अदितियुगलकुण्डलविधिविरचित❋निजश्रुतितेउतारिप्रमुदितचित
मेधातिथि सुताहि पहिराये ❋ लखिसुरवृन्द सुमनभरिलाये ॥
सावित्री यह आशिष दीना ❋ होहु सुता पतिव्रता प्रवीना ॥
दिय वहुला वर हर्षित गाता ❋ होहुकुवँरिशतसुवन कि माता ॥
इन्द्रादिक यत सुर समुदाई ❋ दीन्हे विविध रत्न हर्षाई ॥
शांति वारि जोइ दम्पति शीशा ❋ कियसिंचनविधिहरिगौरीशा ॥
पर्वत गुहा प्रविशि जल सोई ❋ वहुरि सप्त शुचि धारा होई ॥
हिमगिरि कन्दर सानु विदारी ❋ गिरयोविविधसरथलनमझारी॥
तिन महँ वारि धार जोइ जाई ❋ गिरयोशिप्र सर मधिघहराई ॥
ताते शिप्रा नदी पुनीता ❋ भई प्रकट हारिनि यम भीता ॥

सो०-सहित वेग जोइ वारि, निपतित कौश प्रयातमधि ।
तासन मन शुचिकारि, सरित कौशिकी प्रकटभई ॥
जोइ प्रवल जलधार, महा काल सरमधिगिरयो ।
ताते धरणि मझार, कावेरी सरिता वहा ॥

१ कमण्डलु

हरिगीतिका छन्द ॥

जोइ जलपतित गोमत शिखर ताते प्रकट भइँ गोमती ।
जोइ इराह्रद मधि गिरयो ताते ख्यात सहित इरावती ॥
मैनाक जन्म स्थान पै जोइ गिरी धार सुहावनी ।
उत्पन्न ताते भई नदि देविका पाप नशावनी ॥
हंसावतार समीप कन्दर ते जोई धारा वही ।
ताते चतुष्फल दायिनी सरयू नदी प्रकटी मही ॥
मज्जन दरश अरु परस जे इन पुण्यदा सरितन करैं ।
मन कामना लहि कृत दुरित दरि पुनिन भव फन्दन परैं ॥

कालिका पुराण १९,तथा २२,२३ अध्याय ।

त्रयोदश सर्ग ॥ १३ ॥

नृसिंहावतार की सूचना, महर्षि वषिष्ठ कर्तृक कामाख्यातीर्थ तथा निमि प्रति अभिसम्पात ॥

दो०–पुनि वशिष्ठ पत्नीसहित, चढ़ि विमान सहुलास ।
हरि प्रदत्त शुचिधाममहँ, जाय कीन्ह शुभवास ॥

सर्व प्रथम दानव अधिकारी ❋ ख्यातहिरण्यकशिपुअमरारी ॥
बोलि वशिष्ठ ऋषिहि सहप्रीता ❋ किय याजकपदपूजिपुनीता ॥
सोइ समय त्वष्टा तनुजाता ❋ असुरन भागनेयजोइख्याता ॥
विश्वरूप नामक कोविदवर ❋ रहे पुरोहित अमरगणनकर ॥
रह्यो अपर त्रिशिरा तिन नामा ❋ सकलशास्त्रविदसबगुणधामा ॥
ते देवन हित करहिं निरंतर ❋ दानव अहित धारि उरअंतर ॥
यहविलोकिमिलि सकलसुरारी ❋ करिविचारयक समयमझारी ॥

विश्वरूप जननी ढिग जाई ❋ लागे कहन सबन बिलखाई ॥
सुरन पुरोहित है नव नन्दन ❋ करत सतत देवन बल वर्द्धन ॥
तप प्रभाव ते हम सब केरा ❋ करत सदाय अनिष्ट घनेरा ॥
दो०–करि उपाय यहि विपति ते, करहु वेगि उद्धार ।
जनक वंश रक्षा तुमहिं, समुचितसकलप्रकार ॥
यह सुनि विश्वरूप की माता ❋ सुतढिग जायकह्यो सुनुताता ॥
यह न काज तुमकाहिं सुहाई ❋ दनुजन अनभल सुरनभलाई ॥
अब यह शीख हृदय सुत धरहू ❋ देवन पक्ष आशु परिहरहू ॥
मातुवचन अलंघ्य जियजानी ❋ तजिसुरपक्ष त्रिशिर विज्ञानी ॥
मिल्यो हिरण्यकशिपुस न आई ❋ तब दानवपति हिय हुलसाई ॥
त्यागि वशिष्ठहि त्रिशिरा काहीं ❋ कीन्ह नियुक्त होतृ पद माहीं ॥
तव अतिकोप वशिष्ठहि व्यापा ❋ दियहिरण्यकशिपुहियहशापा॥
त्यागसिविनु विचार मोहिजोई ❋ यहिहित पूरन तव मख होई ॥
अरुयकजीवजीव भीषणाकारा ❋ करिहै दुष्ट तोर संहारा ॥
असकहि मुनिविधिमानसजाये ❋ कुपित वदन तहँते चलिआये ॥
दो०–ब्रह्मशाप बश रमापति, धरि नृसिंह अवतार ।
वधि हिरण्य कशिपुहि कियो, प्रह्लादहि उद्धार ॥
कामरूप महपीठ मधि, असयक समय सभार ।
श्री कामाख्या देविकर, प्रभुता प्रकट अपार ॥
जाते जोय जाय तेहि ठामा ❋ सो है अनघ लहै सुरधामा ॥
यमचर कामरूप थलमाहीं ❋ करिशिवशिवा शंकनहिंजाहीं॥
होय कृतांत नितांत दुखारे ❋ रमाकांत ढिग जाय पुकारे ॥
तेहि बुझाय निज संग लिवाई ❋ गये शंभु ढिग जगत गुसाँई ॥
भवभावन भव पतिहि निहारी ❋ दै पुनीत आसन सत्कारी ॥
पूछि कुशल इमि वचन उचारा ❋ केहिहित इत आगमनतुम्हारा ॥

कहहरि कामरूप पुरि पावनि * अतुलपुण्यप्रदकलुषनशावनि॥
कैसहु अघी जाय तिहि ठामा * लहत सो विनुप्रयासतवधामा ॥
पर यहि कृतिते यम अधिकारा * उठत जात पावत संसारा ॥
यदियम शासन नहिं रहिजाई * तौन देखियत लोक भलाई ॥
दो०—कंक शंक नर नारि पर, जाते रहे सदाय।
आशुतोष अब आशुही, कीजिय तासु उपाय ॥
कह गिरिजापति होइ तव, अभिमत फलित तुरंत।
तबविहाय लहिंकियगमन, भुवन भरण भगवंत ॥
बहुरिशम्भुनिज गणहि बुलावा * यहनिदेश तिन सबन सुनावा ॥
कामरूप वस यत नर नारी * देहु अबहि सबकाहिं निकारी ॥
शम्भु निदेश प्रथमगण पाई * कामरूप वासिन प्रतिधाई ॥
जहँ जेहि पाव दूरि तेहि करेऊ * खरभर नगर डगर महँपरेऊ ॥
हटकत गण सन्ध्याचल माहीं * देखेहु थित वशिष्ठमुनि काहीं ॥
तनुहेमभ द्युति इमि फवि छयऊ * सन्ध्याघन रंजितगिरिभयऊ ॥
प्रमथ प्रमत्त करत रव घोरा * हटकेहु मुनिहु घेरि चहुँओरा ॥
तबमुनि हृदय कोपअति भयऊ * लै जलपाणि शाप यह दयऊ ॥
यहि पुर कर महत्व गरुआई * जाय आजु ते सकल विलाई ॥
जिते तंत्र यहिधाम मझारा * रहैतिनन्हअति विरलप्रचारा ॥
दो० अनुचित उचित विचार तजि, शम्भु असभ्य समान ॥
मोहिं निकारन निज गणन, जोकिय आयसु दान ॥
याते शिव चर्म्मम्वरा, अस्थि धारि विनु गेह।
भूत प्रीय अवधूत सम, होहिं बिना सन्देह ॥
सो०—हर अनुचर गण मोहिं, म्लेच्छसरिसपीडितकियो।
ते सब आजु ते होहिं, कुत्सितकृतिरतम्लेच्छवत॥
गौरिहु जगत मझार, वामा भाव ते आजु सों।

श्रुति विरुद्ध उपचार, सोहिं होहिं जग पूजिता ॥
यहिविधिकरि मुनिशापप्रदाना ❋ भये तहां ते अन्तर्द्धाना ॥
शाप विवश श्रुति पंथ विसारी ❋ भये म्लेच्छव्रतशिवगण भारी ॥
भइँ वामा जग जननि भवानी ❋ भे पिशाच प्रिय अजगव पानी ॥
यंत्र तंत्र गति भई अति मन्दा ❋ उठि सुविचार छाव छलछन्दा ॥
तहँ के मनुज सत्यपथ त्यागी ❋ भये मद्य आमिष अनुरागी ॥
यदपि कामरूपहि यक काला ❋ शापमुक्त कियविष्णु कृपाला ॥
परमुनि वचन ते प्रथम किनाई ❋ भयहु न महापीठ फलदाई ॥
तहँ के पुण्य कुण्ड समुदाई ❋ ब्रह्मपुत्र[1] महँ गये समाई ॥
दो०-एक समयनिमि भूपमणि, करन चह्यो यक याग ।
तेहि मखहोत्रि वशिष्ठकहँ, कीन्हसहित अनुराग ॥
सो०-कह मुनि सुनिय भुवाल, प्रथम वरण मम इन्द्र किय ।
ताते अब कछु काल, आरम्भहु निज यज्ञ नहिं ॥
असकहि मुनिवर तपो निकेतू ❋ गे सुरलोक देव मखहेतू ॥
सुरमख सविधि समरपन माहीं ❋ लग्यो कालवहु ऋषिवरकाहीं ॥
इतनिमि मुनिकर विलंवनिहारी ❋ भे उद्विग्न हृदय मधि भारी ॥
तव गौतमहि बोलि नृप लीन्हा ❋ करियाचक मखपूरन कीन्हा ॥
उत सुर यज्ञपूर जब भयऊ ❋ मुनिवशिष्ठ पुनिनिमि पुरअयऊ
अन्तःपुर मधि निमि महिपाला ❋ निद्रा विवश रहे तेहि काला ॥
मख वृत्तान्त सकल मुनिराई ❋ पुर वासिन मुखते सुनंपाई ॥
सोसुनि मुनिहि कोप उर छयऊ ❋ इमिअभिशाप महीपहिदयऊ ॥
दो०-रे नृप प्रथमहिं मखनिमित, किहे वरण तै मोहिं ।
बहुरिनिदरिकियआनगुरु, उपज गर्व अस तोहिं ॥
यहि कृतिते मति मन्द तैं, ह्वै है देह विहीन ।

[1]-नदविशेष ।

जागिजबहिंऋषिमुखफुरित, शापश्रवणनृपकीन ॥
तब मन माखि वशिष्ठहिं बोली * कहनलगे तवमतिअस डोली ॥
बिना दोष दीन्हेउ मोहि शापा * उचितनऋषिनकरनअसदापा ॥
हमहूं तुम्हैं शाप यह दाना * होहु आजुते देह बिहीना ॥
दोउ दुहुन के शाप कराला * देह विहीन भये तत काला ॥
वायुरूप ह्वै तब मुनिराई * कह सविनय विरंचि ढिगजाई ॥
नृपनिमि मोहिं शाप असदीना * भयहुँ तातमैं देह विहीना ॥
हरहु वेग मम दुख करि दाया * करियप्रदानअपरमोहिंकाया ॥
देह विहीन जीव जग माहीं * करिसककबहुँ कोइकृतिनाहीं ॥
कह विरंचि सुनु मंत्र हमारा * मित्रावरुण के तेज मझारा ॥
प्रविशि धरहु तनु अपर सुहावन * रहि तव ज्ञान पूर्ववत पावन ॥

दो०—तब वशिष्ठ किय सोइ यतन, जनक वचन अनुसार ।
सह अगस्त्य मख कुंभते, लीन्ह बहुरि अवतार ॥
नृप इक्ष्वाकु वशिष्ठ कहँ, श्रुतिविद परम प्रवीन ।
हेरि मुदित निज पुरोहित, करि वहुआदर कीन ॥

चतुर्दश सर्ग ॥ १४ ॥

विश्वामित्र की उत्पत्ति ॥

दो०—यहित्रिभुवन मधि है न अस, दुस्तर कारज कोय ।
किहे यतन जग नरन कहँ, लाहु होय नहिजोय ॥
तेहि प्रमाण विधु कुलोद्भव, नृपति गाधि तनुजात ।
कठिन उग्र तप यतन ते, भये ब्रह्मऋषि ख्यात ॥

१ सर्ग १७ देखो ॥

अतुल प्रतापी साहसी, यशी ब्रह्म ऋषिराय ।
अमित प्रभाव प्रयत्नकर, दीन्ह जोय दर्शाय ॥
दिखरायहु जोइ भलीविध, ब्रह्म तेज जग माहिं ।
केवल विप्रन निमितही, अहैनियोजितनाहिं ॥
सो०–जिन कर तेज निहारि, रहतत्रस्तनितत्रिदिवगण ।
जोय उग्र द्युति धरि द्वितिय, सृष्टि कीन्ह्यो सृजन ॥
धर्म धीर जन काहिं, सत्य धर्म मधिकसिजोई ।
सुयश राशि जग माहिं, करिवर्द्धन कीन्ह्योअमर ॥
रहत ब्रती सब काल, रक्षण शरणागतहिजोइ ।
तिनकर चरित विशाल, करहुँगान कल्याणप्रद ॥
दो०–जगत प्रशंसित भरतकुल, मधि शुचि धर्मस्वरूप ।
दया शील दानी गुणी, आजमाढ भे भूप ॥
भये तासु सुत जह्नु जेहि, गाये गुण न सिरात ।
पतित पावनी सुरधुनी, जासु नन्दिनी ख्यात ॥
जह्नु कुमार धर्म नय नागर * सिन्धु द्वीप भे वंश उजागर ॥
तिनके कुवँर सकल गुण धामा * भये वलाकेश्वर जिन नामा ॥
तेहि नृप सुवन भुवन जनरंजन * वल्लभ नाम खलनदलगंजन ॥
तेहि कुलमधि सुर राज समाना * भये कुशिकभूपति मतिमाना ॥
कुशिकराजसुत सुयश प्रकाशी * गाधि अगाधबुद्धि वलराशी ॥
निस्सन्तति ह्वै गाधि भुवाला * तियसहरहत दुखितसबकाला ॥
पुत्र कामना करि पुनराई * भामिन सहित बसे वन जाई ॥
दैव कृपा ते विपिन मझारी * भइ नृपके यक सुमुखि कुमारी ॥
तेहि तनुजाहि नृपति गुणग्रामा * सानँद धरयो सत्यवति नामा ॥
नृपरानी दृग पुत्तलि नाईं * पालन करति सुताहि सदाई ॥
दो०–पाय समय मृग लोचनी, गाधिराज सुकुमारि ।

भई तरुण तनु तरल द्युति, त्रिदिव तीय तमहारि ॥
यकदिनऋषिवरच्यवनसुत, ऋषिऋचीक तपऐन ।
आय महीपति गाधि ढिग, यहि प्रकार कह वैन ॥
सो०—यह लालसा हमारि, महाराज पूरण करहु ।
निज गुणवती कुमारि, व्याहिमोहिजगयशलहहु॥
लखिअतिरंक मुनिहिं नरनाथा * कहइमिविहँसि जोरियुगहाथा ॥
उचितशुल्क करिसकहु जोदाना * तौनिज दुहितहि करबप्रदाना ॥
कह्यो मुनीश शुल्क जोइ चहहू * सो हमसन अविलंबहि कहहू ॥
यह सुनि वहुरि भूप मुसकाई * कह इमि बैन जाय द्विजराई ॥
श्याम कर्ण सितरंग तुरंगा * चारु चपल गति उन्नत अंगा ॥
एक सहस्र देहु मोहिं लाई * यहसुनि तब ऋचीक मुनिराई ॥
जाय वारिपति वरुण समीपा * हययाचनकिय मुनिकुलदीपा ॥
कह्यो वरुण तुम जब जेहिठामा * चहिहो सहस अश्व तप धामा ॥
तहहिं प्रकटि मिलिहैं तुम काहीं * यहिमधि अहै मृषा कछु नाहीं ॥
वरुणबैन सुनि हिय सुख माना * लहिविदायमुनिकीन्हपयाना ॥
दो०—कान्यकुब्ज वरनगर थित, शुचि सुरसरि तटआय ।
अश्व लहन की वासना, किय उर मधि ऋषिराय ॥
तबहि तुरतही गंग ते, धवल रंग तनु तुंग ।
श्यामकरण सुरमन हरण, प्रकटे सहस तुरंग ॥
सो०—जेहिथल ते छवि धाम, बाजि राजि प्रकटत भये ।
भयो ख्यात सो ठाम, अश्वतीर्थ के नाम सों ॥
लै मुनि बहुरि तुरंगम व्राता * गये गधि ढिग सानँद गाता ॥
लखिनृपअति विस्मितचितमाहीं * बहुसन्मानिबहुरि ऋषि काहीं ॥
रूपराशि विधु वदनि कुमारी * दीन्हव्याहिश्रुतिविधिअनुसारी
तब ऋचीक निज नारि समेतू * लै विदाय आये स्वनिकेतू ॥

सत्यवती सप्रेम मन लाई * पतिपद सेवन करत सदाई ॥
ह्वै प्रसन्न यकदिन ऋषिनाहू * यह वरतियहि दीन्हसउछाहू ॥
तुम यक सुवन अतुल द्युतिधारी * करिहौ प्रसव आशुसुनुप्यारी ॥
जोइ धर्मसर सरजित भानू * पुण्य सुधांशु अधर्म कृशानू ॥
मंगलरूप अमंगल वारू * तापस तिलकसदन गुणचारू ॥
सुनिपतिवचनपुलकिअतिभामिनि*मातुनिकटगमनी गजगामिनि
नतमुखसुमुखि निरखिमहतारी * वचन न फुरतलाज वशभारी ॥
शशिमुख घूंघुट ओट छिपाई * मन्द मन्द स्वरते सुनराई ॥

दो०-पति प्रदत्त वर मातु ते, कह्यो हृदय सकुचात ।
सुतावैन सुनि नृप रमणि, कहइमि प्रमुदित गात ॥
सुनहु सुतातवपति सुमति, समरथ विधि अनुसार ।
सोकृत करज जासुदिशि, हेरि देहिं यकवार ॥

ऋषिकर भूरि प्रभाव निहारी * तिनढिग यहलालसा हमारी ॥
तनय लहन वर दै ऋषिनाहू * हरैं मोर उरदारुण दाहू ॥
जननि वचन सुनि सो द्रुत जाई * पतिहिमातु अभिलाष सुनाई ॥
कह ऋचीक मोरे वरदाना * लहिहैं तव जननिहु संताना ॥
मंत्रयूत पुनि दुइचँरु पावन * दै पतिहि इमिलगे वुझावन ॥
सुनहु सुमुखि यहचरु तुमलेहू * अपरजायनिजजननिहिदेहू ॥
ऋतु असनान परे सह प्रीता * भेटेहु गूलर विटप पुनीता ॥
अरु तव जननि भेटि पीपर तरु*भखेहुबहुरिदोउजनिनिजनिजचरु
चरु चारु ते तुम दोउ आशू * लहिहौसुतकुल सुयशप्रकाशू ॥
यहि प्रभाव ते परम सुहावन * होइहैं दुहुन सुवन मनभावन ॥
लै पायस मुनितिय हर्षाई * कहपति वचन मातु ढिग जाई ॥

दो०-सो सुनि भूपति भामिनी, कह्यो सहित चतुराय ।

* टिप्पणी १८ देखो ।

सुनहु सुते पतिते अधिक, मैं तव पूज्य सदाय ॥
तातें मानहु बचन मम, इन दोउन चरु माहिं ।
सानुराग निजभाग तुम, देहु पुत्रि हमकाहिं ॥
सो०--यह प्रतीत उर होय, मुनिवर सुत अभिलाष ते ।
उत्तम चरु तरु जोय, तुमहि भखन भेटन कह्यो ॥
यहि हित यदि स्वभाग मोहिं देहू * तेहि प्रभाव सों विनु सन्देहू ॥
मम तनुजात तुम्हार सहोदर * होई सकल गुणन कर आकर ॥
तुमहु अनुज कर यश गुणदेखी * ह्वैहौ नितप्रतिमुदित विशेषी ॥
सत्यवती छल छन्द न जानी * सहजहिजननि वचनलियमानी
तव दोउ वदलि विटप चरुभागा * भेटेहु भखेहु सहित अनुरागा ॥
मौक्तिक युक्त शक्ति अनुहारी * कछु दिनपरे गर्भ दोउधारी ॥
तियकर गर्भ चिन्ह यक वासर * लखिऋचीक मुनि ज्ञान उजागर
ह्वै अति विस्मित हृदय मझारी * कह पत्नी प्रति सुनहु पियारी ॥
विनु सन्देह परत मोहिं जानी * वदले तुम चरु विटप सयानी ॥
यह भलकाज कीन्ह तुम नाहीं * कारण तासु सुनहु ममपाहीं ॥
दो०--लहन हेतु भूसरन मणि, भुवन नश्य संतान ।
थापेहुँ तव चरु चारु मधि, ब्रह्म तेज सविधान ॥
क्षात्रतेज मय चरु दिहौ, तवजननिहियहितु ।
लहै धरित्रिय क्षत्रि सुत, अमितवलीकुलकेतु ॥
सो०--परत मोहिं अब जान, बदले चरु तव मातुके ।
होइ विप्र संतान, ज्ञान खानि मानी गुणी ॥
अरु तव गर्भजात शिशु जोई * उग्र प्रताप क्षत्रि सोइ होई ॥
सुनि यहिभांतिस्वामिमुखवानी * छिन्नलतासमसुमुखिसुखानी ॥
पुनि कर जोरि तजत दृग वारी * विनय सहित इमिवैनउचारी ॥
क्षमहु प्राणपति चूक हमारी * क्षमायोग्य शिशु सेवक नारी ॥

यह वर देहु मोहि यहि कालू * होइ न मम सुत क्षत्रि कृपालू ॥
वरु मम पौत्र क्षात्र बल धारी * होइ अजित जगभट मदहारी ॥
सुनि तिय बिनय दया वशहोई * कह मुनि फलीआशतवजोई ॥
सत्यवतिहि बीते दश मासा * यक सुतजेहिरवि सरिस प्रकाशा
भयो प्रसव लखि सुर हर्षाये * दै दुन्दुभी सुमन झरि लाये ॥
तेहि सुतकर ऋचीक तपधामा * धरयो नामजमदग्नि ललामा ॥

दो०—तिन जमदग्नि महर्षिसुत, कमला कन्त अनंत ।
परशुराम हैप्रकटि जग, कीन्ह क्षात्रकुल अंत ॥
उतहि गाधि नृप रमणिके, हुतभुक वत द्युतिवान ।
भयहु सुवनयकनामजेहिं, विश्वामित्र बखान ॥
सो०—लहि सुत नृप गत शोक, वहुवत्सरहरिभजनकरि ।
गये बहुरि सुरलोक, तजिशरीरभामिनिसहित ॥

(महाभारत अनुशासनपर्व ४ अ०)

पञ्चदश सर्ग ॥ १५ ॥

विश्वामित्रकी तपस्या, त्रिशंकु विवरण, शुनःशेफ का उपाख्यान, शकुनन्तलाका जन्म, रम्भाप्रति अभिशाप तथा विश्वामित्रकी ब्राह्मणत्वप्राप्ति ॥

गाधि भूपमणि मरण पछारी * विश्वामित्र अतुल गुणधारी ॥
राजे कान्यकुब्ज राजासन * पालतप्रजनखलनकरिनाशन॥
एक समय वशिष्ठासन रारी * करि हतमान होय हिय हारी ॥
अतिशय तुच्छ क्षात्र बलजानी * ब्राह्मण वलहि मूल वल मानी ॥
ब्राह्मणत्व पद लहन के हेतू * वसे विपिनमधित्यागिनिकेतू ॥

जिमि कौशिक वशिष्ठ ऋषि संगा ❋ किय विवाद सो विषम प्रसंगा ॥
गाधि तनय तप वृत्त पछारी ❋ कहब पुराणन मत अनुसारी ॥
दृढ़ प्रतिज्ञ नृप गाधि किशोरा ❋ लगे सनेम करन तप घोरा ॥
एक समय दिनकर कुल जाता ❋ भूप त्रिशंकु जगत विख्याता ॥
कुल गुरु ऋषि वशिष्ठ ढिग जाई ❋ बोलेहु करपुट शीश नवाई ॥

दो०-हे मुनि नायक यज्ञ अस, करन चहत यहिकाल ।
जाते जाय सदेह मैं, हरिपुर वसहुँ कृपाल ॥
यहसुनिमुनिवरहृदयगुनि, बोले बैन रसाल ।
यहि असाध्य मखकेर रुचि, करहुनाहिंक्षितिपाल ॥

तब गुरु सुतन पाहि नृप गयऊ ❋ सोइ अभिलाष सुनावतभयऊ ॥
सुनि वशिष्ठ तनुजन नृप वानी ❋ कह सरोष सुनु रे अज्ञानी ॥
हरकेहु पिता जोइ कृति काहीं ❋ सो न मानिआयसि हमपाहीं ॥
यत नृप भे रवि वंश मझारे ❋ ते गुरु वचन कबहु नहिं टारे ॥
तेहि मूढ़ यहि विध अभिमाना ❋ करसिस्वकुल गुरुआनिनकाना
यहि अघ वश सुनु रे कुविचारी ❋ विचरुस्वपच ह्वै जगतमझारी ॥
मुनिवर सुतनके शाप कराला ❋ भयहु तुरत चण्डाल भुवाला ॥
तब त्रिशंकु कौशिक पहँ जाई ❋ सहित विनय निजविपति सुनाई
बोल्यो बहुरि दोउ कर जोरी ❋ हरहु नाथ यह आपद मोरी ॥
गाधि तनय कह धरु नृप धीरा ❋ पठउब तोहि सुरपुर सशरीरा ॥

दो०-असकहि मख उपकरणयत, संचित सविध कराय ।
ब्रह्मवादि ऋषि मुनिय तिन, पठये सबन बुलाय ॥
गाधिसुवन कर नाम सुनि, ऋषि महर्षि द्विजवृन्द ।
आये चारहुँ ओरते, मखथल महँ सानन्द ॥

यक द्विज देव महोदय नामा ❋ अरु वशिष्ठ सुतगण तपधामा ॥
आये तेन यज्ञ थल माहीं ❋ तबसकोप कौशिकतिनकाहीं ॥

दीन्ह शाप तुम सकल कुचाली * होहु नीच सतमारग घाली ॥
बहुरि गाधिसुत सह अनुरागा * ह्वै याचक आरँभ किय यागा ॥
वेदविहित मख विघ्न विहीना * करि वहु वर्ष पूर तिन कीना ॥
भाग ग्रहण पुनि सुरन बुलाये * परन अमरकोउ तेहिमखआये ॥
तब कौशिक सरोष तजि धीरा * श्रुक उठाय कह गिरा गँभीरा ॥
हे त्रिशंकु रविवंश किशोरा * लखहु आजु तुम तपवलमोरा ॥
मम निदेश ते विनु सन्देहा * जाहु स्वर्गपुर काहिं सदेहा ॥
सबन विलोकत तबहि त्रिशंकू * वेगि व्योम पथ चलेउ अशंकू ॥

दो०—आवत देखि त्रिशंकु कहँ, सुरन समेत सुरेश ।
रोकि कह्यो दिव वीथि ते, फिरुफिरु अधम नरेश ॥
यहिथलसुविमलपुण्यबल, बिनु न पाव कोउ वास ।
पतित पातिकी पामरहि, बिमल प्रवेश प्रयास ॥

सो०—भूतल मधि मतिमन्द, होहु पतन अधवदन द्रुत ।
गत अनन्द दुख फन्द, फँसु गुरु द्रोही वेगि तैं ॥

तब तर शीश ऊर्द्ध युग पादा * लग्योगिरन नृपकरन विषाद ॥
त्राहि त्राहि कौशिक कुल केतू * सुनि माभै कस तपो निकेतू ॥
पुनि कह ठहरु नृपति सोइ ठामा * अपर स्वर्ग मैं रचत ललामा ॥
अस कहि विश्वामित्र सुजाना * जासु प्रताप विरंचि समाना ॥
सहित सप्तऋषि यत नभ तारा * विरचे नूतन निमिष मझारा ॥
पुनि सरोष दृग घूर्णित घोरा * कह पुकारि इमि गिरा कठोरा ॥
कितौ अपर रचिहौं सुर राजू * नतु दिवि करबइन्द्र बिनुआजू ॥
अस कहि तब सुरगण निर्माना * करनलगे मुनि तपोनिधाना ॥
यहविलोकि शचिपति अकुलाई * सुरनसहित कौशिकढिगआई ॥
विनय समेत कह्यो इमि बैना * कस बिनु दोष रोष तप ऐना ॥

दो०-करि विचार उर देखहु, सतनु त्रिशंकु भुवाल।
सुरपुर मधि गुरुशाप युत, किमि सकजायकृपालु॥
कहकौशिकममप्रणनृपहि, पठवन सुरपुर माहिं।
सो यहिमधि कोइ भाँतिते, मृषा होइहै नाहिं॥

अब सशरीर कितौ महिपाला * त्रिदिव निवास करैसब काला॥
नतु मम रचित नखत मधि भूपा * रहैं विभासित तिन अनुरूपा॥
कह्यो अमर गण तव रुचि जोई * सो ऋषिराज मृषा नहिं होई॥
तव विरचित तारा समुदाई * ज्योतिष चक्र पछारि सदाई॥
तिनन्ह मध्यःतव शिष्य त्रिशंकू * रही अमर इव लसत अशंकू॥
सुनि यहिभाँति सुरन मुखवानी * सहमत भये गाधिसुत ज्ञानी॥
लै विदाय तब सुर मुनि वृन्दा * निजनिज धाम गये सानन्द॥
पुनि कौशिक सो थलहि बिहाई * ब्रह्मक्षेत्र पुष्कर मधि जाई॥
करि थिर चित्त उग्र तप ठाना * अनुक्षणलागब्रह्मदिशिध्याना॥
सोई समय अवधपुर भूपा * अम्बरीष शुचि धर्म स्वरूपा॥

दो०-करत रहे हयमेध मख, लखि सुरपति भयखाय।
यज्ञ तुरग हरि लै गये, छद्म वेश ते आय॥
मखयाजकहयलोपलखि, कह नृपसों इमि बैन।
यज्ञअश्व अपहृत भये, कुशल देखियत हैन॥

ताते खोजि वाजि नृप लावहु * नतुयकनर वलिदान करावहु॥
यह सुनि भूपति सैन्य समेतू * किय पयान हय खोजन हेतू॥
गिरि कानन पुर ग्राम अनेका * फिरे खोजि नृपकरि यकएका॥
पुनि भृगु तुङ्ग शृंग पै जाई * मुनिऋचीक सनकहशिरनाई॥
मम मख अश्व कोइ हरि लयऊ * विपद जलद मम ऊपर छयऊ॥
सुरभि एक लख हम सन लेहू * करि मुनि कृपा एक सुत देहू॥
तीन सुवन मुनिवर के रहेऊ * सुनिनृपवचन शोचिइमिकहेऊ॥

ज्येष्ठ तनय अतिशय प्रिय मोहीं * मैं दैसकत कदापि न ओही ॥
कह मुनीश तिय लघुसुत काहीं * दैहौं मैं कबहू नृप नाहीं ॥
माझिल शुनाशेफ जो रहेऊ * सुनिपितुमातुवचनइमिकहेऊ ॥
दो०-सुनहु भूप मातुहि लहुर, पितु प्रिय बड़ संतान ।
तातेकीजिय मोहि क्रय, करि लख धेनु प्रदान ॥
लक्ष धेनु तब मुनिहि दै, अम्बरीष मतिमान ।
शुनःशेफ कहँ संगलै, अवधहि कीन्ह पयान ।
सो०-भूपति कटक समेत, निकरयो पुष्कर क्षेत्र हैं ॥
जहांकुशिककुलकेत, तपो निरत दृढ नेम युत ।
निजमातुलहिचीन्हिमुनिनन्दन * वेगिधाय कीन्ह्यो पद वन्दन ॥
पदधरि कह सविनय इमि वैना * भ्रात मातुपितु कोउ मम हैना ॥
पाहि पाहि शरणागत जानी * करहु कृपा मातुल गुणखानी ॥
करिय आशु अस कोइ उपाऊ * पुरै भूप मख मोर बचाऊ ॥
लखिमुनिस्वसासुतहिअतिदीना * फेरि पाणि तनु धीरज दीना ॥
पुनि निज कुवँरन निकट बुलाई * लगे कहन यहिभाँति बुझाई ॥
सोइ सुपुत्र यहि जगत मझारी * पितुनिदेश जोइ पालनकारी ॥
जेहिहित लागिसुनहु प्रियताता * सुत कामन करत पितु माता ॥
अब सोइ काज परत सुत भयऊ * भगिनीसुवन शरणममलयऊ ॥
सबविध यहि अनाथ शिशु केरा * करन त्राण समुचित यहिबेरा ॥
दो०-यहिविनिमय महँएकजन, होहु याग पशुजाय ।
प्राण त्राण शिशुकर भये, तुमहिंसुयशअधिकाय ॥
यह सुनि कौशिक सुतन, कहँ तुम्हार पितु ज्ञान ।
हेतु पराये निज सुतहि, करन चहत बलिदान ॥
सो०-सुनिय पिता गुणराशि, यहकारज असजिमिकोऊ ।
पशु प्रति दया प्रकाशि, भखै मांस निज देहकर ॥

यहिविध सुनत सुतन मुखवानी ❋ कौशिक महाक्रोध उर आनी ॥
भृकुटि वङ्क लोचन अरुणारे ❋ कुँवर न प्रति कटु वचन उचारे ॥
लंघसि पितु आयसु तजि आनी ❋ यहिकृतिहोय श्वपच अघखानी
सहसवर्ष लगि धर्म विहाई ❋ भखहु श्वान पलपलित सदाई ॥
पर उपकार विमुख जन जोई ❋ काक शृगाल सरिस शठसोई ॥
मुनि अभिशप्त सुतन सों कामी ❋ भे बहु म्लेच्छ कुमारग गामी ॥
सुतन शाप दै मुनि तप ऐना ❋ शुनःशेफ प्रतिकह इमि बैना ॥
सुनहु तात भय करहु न लेशू ❋ मै युग मंत्र करत उपदेशू ॥
यज्ञ यूप मधि जब तुम काहीं ❋ वन्धन करहिं तौन क्षण माहीं ॥
पढ़ेहु मंत्र यह दोउ धरि ध्याना ❋ होई तेहि प्रभाव तव त्राना ॥

दो०-मुनिहिवन्दि निर्भयगयहु, शनःशेफ नृप पाहिं।
अम्बरीष मखथल गये, तेहि लिवाय संग माहिं॥
बलिहित जब ऋषिवरसुतहि, अरुण वसन पहिराय।
दर्भरज्जु ते बाँधेऊ, यज्ञ भूप मधि जाय॥

सो०-तब ऋषि सुवन सप्रीत, जोइकौशिक सिखरायऊ।
पढ़ि सोइ मंत्र पुनीत, किय नुति इन्द्र उपेन्द्रकी॥

तब श्रीपति हरि अरु सुरराई ❋ ह्वै प्रसन्न मखथल मधिआई ॥
अभय शुनःशेफहि करि दीन्हा ❋ अम्वरीष मख पूरण कीन्हा ॥
कौशिक तप प्रताप मुनि नन्दन ❋ गयहुअछततनुभवनमगनमन॥
पुनि पुष्कर थलगाधि किशोरा ❋ किय यकसहस वर्ष तप घोरा ॥
सुरन सहित तब अज तहँ आये ❋ कौशिकप्रति इमिवचनसुनाये ॥
मम वरदान सोहिं प्रिय ताता ❋ होहु आजु ते ऋषि तुम ख्याता ॥
अस कहिनिजपुर कीन्हपयाना ❋ विश्वामित्र वहुरि तप ठाना ॥
अटल नेम तप करत कराला ❋ गाधि सुतहि बीते बहु काला ॥
एक समय सुर राज पठाई ❋ सुमुखि मेनका तेहि थलआई ॥

सुभग शृँगार किये मन भावनि * दृगकटाक्ष मनमथ उपजावनि ॥
दो०-तेहिअकेलि वनबेलिमधि, करत केलि अवलोकि।
कौशिकउरजनुतानिधनु, मैन वाण दिय झोंकि ॥
ह्वै मोहित तेहिसाथमुनि, किय दशवर्ष विलास।
भई सुता यक मेनकहि, जेहिशशिसरिसप्रकाश ॥
फेंकि सो सुता मेनका दीन्हा * रक्षा तेहि शकुंतगण कीन्हा ॥
यहि हित तेहि शकुंतला नामू * पाल्यो जाहि कण्व तप धामू ॥
एक दिवस कौशिक ऋषिज्ञानी * चेति हृदय बड़ छाव गलानी ॥
इमि चिन्तत मम सँग सुर वृन्दा * तपोभंगहित किय छलछन्दा ॥
काम समान मनुज कर आना * शत्रुन यह श्रुतिशास्त्रवखाना ॥
जोइ यह महारिपुहिजय कीन्हा * पुरुष सोइत्रिभुवनजयलीन्हा ॥
हेरि चकित चिन्तितमुनि काहीं * भइ मेनका भीत मन माहीं ॥
अधोवदन मुख फुरत न वानी * सन्मुख ठाढ़ जोरि युग पानी ॥
यहविलोकि ऋषिकौशिककहेऊ * दोष तोर किंचित नहिअहेऊ ॥
यहि मधि केवल दोष हमारा * गमनहु अब जित होइविचारा ॥
दो०-असकहिकौशिकउतरदिशि, नदी कौशिकी तीर।
जाय वहुरि तप ठानेऊ, धारिसमाधि गभीर ॥
सहस वर्ष यहि भावते, भाकौशिकहिव्यतीत।
देखि उग्र तिनकेर तप, ह्वै सुरगणअतिभीत ॥
सो०-जाय ब्रह्मपुर माहिं, शीश नाय विधिसोकह्यो।
नाथ गाधिसुत काहिं, दै वर तपते वारहू ॥
सुनि विरंचि देवन समुझाई * पुनिकहगाधि सुवनढिगजाई ॥
सुनहु तात तुम बड़ तप कीन्हा * मैं महर्षिपद तुम कहँ दीन्हा ॥
यह सुनिकह कौशिक करजोरी * पुरयो प्रभुन जोइ रुचि मोरी ॥
यह निश्चय उर रह्यो बनाई * करिहौ मोहिं ब्रह्मर्षि गुसांई ॥

फली सोन आशा तेहि हेतू * जानि परतमोहिकृपानिकेतू ॥
इन्द्रिय दमन न अबलगि कीन्हा * ताते नाथ न सो वर दीन्हा ॥
कह्यो विरंचि सुनिय ऋषिराजू * साधन किये बनत सबकाजू ॥
करहु दूरि मन भूरि विकारा * होइ मनोरथ सफल तुम्हारा ॥
असकहि कमलयोनि भगवाना * भये तहांते अन्तर्द्धाना ॥
बहुरि गाधि नन्दन मतिमाना * करि दृढ़नेम घोर तप ठाना ॥

दो०-तोलि दोउ भुज ऊर्द्ध महँ, विनु अवलम्ब शरीर।
त्यागिअशन फलमूलजल, केवल भखत समीर ॥
वर्षा मधि रहि अनावृत, शीत काल जलवास।
ग्रीषम ऋतु महँ वारिकै, प्रवल अनलहुँचपास ॥

रोला छन्द ॥

यहि प्रकार है पञ्च तपा कौशिकहि सप्रीता।
सम्वतसर यक सहस भयहु निर्विघ्न व्यतीता ॥
लखि तिनकर तप उग्र व्यग्रचित है सुरराई।
तपोविघ्न हित बहुरि कीन्ह इमि छलन उपाई ॥
सुमुखि चारु हासिनी भुवन मोहिति मृगनैनी।
दृग कटाक्ष संयमिहु चित्त वेधिनि पिक बैनी ॥
रम्भा नामिनि अप्सराहि अरु ऋतुपति काहीं।
लै सँग गे तप निरत गाधि सुत जेहि वनमाहीं ॥
निज प्रभाव विस्तार कीन्ह माधव तेहि ठांई।
कुहु ध्वनि लागे करन इन्द्रपिक रूप बनाई ॥
ऋतु वसन्त पिकनाद सुमुखि रंभाहि निहारी।
इमिविचार किय गाधितनय निज हृदय मझारी ॥
यहसब छल चतुरता कुटिल सुरपति कर अहेऊ।
पुनि सरोष इमि वचन देव नर्तकि प्रति कहेऊ ॥

रे छल छन्दिनि मदन कदन आशी ऋषि काहीं।
मनोमुग्ध हित आइ शंक तजि यहि थल माहीं॥
यहि छलवश ह्वै उपल कुटिल कुविचारनि वामा।
सम्वत्सर दश सहस तपति परि रहु यहि ठामा॥
कोइ अतुल तपतेज धारि द्विज तोहिं उद्धारी।
तब ह्वै रम्भा शिला परी तेहि विपिन मझारी॥
यह अवलोकि वसंत त्रिदिव नायक भय खाई।
द्रुत पद तेहि थल सोहिं आशुही गयो पराई॥
गाधि तनय दै घोर शाप सुर नर्तकि काहीं।
यहि प्रकार अनुताप करन लागे मनमाहीं॥
अबलगि भयहु न दमन क्रोध इन्द्रीय हमारी।
करिहौं अब यहि काहिं विजय दृढ़ता चितधारी॥
अस विचारि तजि उतरदिशि पूरुब दिशि जाई।
मौनव्रती ह्वै करन लगे तप ध्यान लगाई॥
एक दिवस वहुकाल व्यापि व्रत करि अवसाना॥
अन्न भखन रुचि कीन्ह गाधिसुत तपो निधाना।
भयहु अन्नहू लाहु सोइ क्षण माहिं सुरेशा॥
पाँचेहु मुनिसन आय अन्नधरि द्विजकर वेशा।
दो०—सर्वअन्न तेहि द्विजहि दै, रहि अनशन पुनराय।
धारि मौनव्रत तपोरत, भे कौशिक ऋषिराय॥
प्राणवायु अव रोधि कै, कौशिक तपो निकेत।
सहस वर्ष अति उग्र तप, किय दृढ़ नेम समेत॥
तबतिन ब्रह्म रंध्रसन घोरा * ज्वालमाल जेहि ओरनछोरा॥
झरझर निकरि पसरि जगमाहीं * लग्यो दहन जगजीवन काहीं॥
इमिमुनि तेज चतुर्दिशि छयऊ * प्रभाहीन दिग मण्डल भयऊ॥

भूधर डिगे धरा थर्रानी ❋ दिक्करिचिकर हृदयभयमानी ॥
भयहु चतुर्दिशि रुद्ध समीरा ❋ उमड़ क्षुब्ध ह्वै अब्धि गँभीरा ॥
प्रभा विहीन प्रभाकर भयऊ ❋ हाहाकार जगत महँ छयऊ ॥
तब भयभीत सुरासुर भारी ❋ जायआशुविधिनिकटपुकारी ॥
प्रभुकौशिक ढिगवेगि सिधारहु ❋ दै अभीष्ट वर तपते वारहु ॥
नतु तिन तेज सोहिं कर्तारा ❋ होन चहत यह त्रिभुवनछारा ॥
चहहिं सुरेश यदहु मुनि जोई ❋ दिहौ जगत मंगल हित सोई ॥

दो०—यहसुनिसुरगणसहितअज, द्रुतकौशिक ढिगमाहिं ।
जाय कह्यो ब्रह्मर्षि पद, दिहौं वत्सतुम काहिं ॥
अरु दीरघ जीवनहु मैं, करत तोहिं प्रियतात ।
यहसुनिइमिकौशिककह्यो, करिविधिपदप्रणिपात ॥
वषटकार सह देहु मोहिं, यावत श्रुति अधिकार ।
अरु वशिष्ठ ऋषि मम करैं, ब्राह्मणत्व स्वीकार ॥
नतु कदापि ह्वै हौं नमैं, तप ते विरत कृपाल ।
तव वशिष्ठ कहँ चतुर्मुख, लीन्ह बोलि ततकाल ॥

सो०—ते ऋषि परम उदार, द्वेष विगत निर्मल हृदय ।
ब्राह्मणत्व स्वीकार, किय ऋषि विश्वामित्रकर ॥
तब यहिविध कर्तार, कौशिक ऋषिवर प्रतिकह्यो ।
फल्यो मनोर्थ तुम्हार, अब सुखते विचरण करहु ॥
यहि विध फल पाय, करन लगे महि पर्य्यटन ।
मथुरा बादि न जाय, जोश्रम कर दृढ़नेमयुत ॥

वाल्मीकी रामायण बालकांड ५७, ६५ सर्ग ॥

षोडश सर्ग ॥ १६ ॥

वशिष्ठ विश्वामित्र विरोध, म्लेच्छसैन्य उत्पत्ति, विश्वामित्र का पराभव, नृप कल्माषपाद प्रति वशिष्ठपुत्र शक्ति का अभिशाप, कल्माषपाद की राक्षसत्व प्राप्ति, तत्कर्तृक वशिष्ठ पुत्रगण का संहार, स्वप्राण विसर्जन हेतु वशिष्ठ का नाना उपाय अवलम्बन, परासर जन्म, विश्वामित्र कर्तृक नदी सरस्वती प्रति अभिसम्पात, वशिष्ठ विश्वामित्र का विहंग देह धारण पूर्वक घोर युद्ध, व पुनराय परस्पर प्रीति संस्थापन ॥

दो०—कमलासन मानस सुवन, गाधि तनय सुख कन्द ।
वन्दि दुहुन अरविन्द पद, पूजे जेहि रघु चन्द ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ सन, जेहि विध भयो विवाद ।
वरण बसो अद्भुत कथा, जेहि सुनि नसत विषाद ॥

भूप गाधि नन्दन नय नागर * धीर धुरीन प्रवीन उजागर ॥
कान्यकुब्जपुर कर अधिकारी * चतुर्वर्ण जहँ प्रजा सुखारी ॥
सम्पति जेहि नृप बिनु परिमाना * अतुल बली जेहि बहुसन्ताना ॥
बनै न वरणि अपरमित सैना * सेनप शूर सचिव वुधि ऐना ॥
नीति समेत राज कर काजू * करत सतत कौशिक महराजू ॥
एक समय नृपवर बल ऐना * लै सँग महँ चतुरंगिनि सैना ॥
मृगया हित वन कीन्ह पयाना * मारे वृक वराह मृग नाना ॥

भ्रमतविविध काननगिरिकन्दर ❋ तृषावंत अति भये भूप वर ॥

दो०—तबहि सेन सेनप सचिव, सहित कुशिक कुल केतु ।
गे वशिष्ठ ऋषि आश्रमहि, तृषा निवारण हेतु ॥
लखेहु मनोरम तपो वन, अनुपम विमल विशाल ।
नारिकेल कदली वकुल, फूले फले रसाल ॥

सो०—जहँ तहँ परत लखाय, तरु बेलिन सुन्दर गुफा ।
तहँ ऋषिमुनि समुदाय, करत योग जप यज्ञ तप ॥

कहुँकहुँ वटुक वयस जिन थोरी ❋ गावतश्रुति यकसँग स्वरजोरी ॥
इमिछवि लखत गाधिनृप नंदन ❋ जायकीन्हविधिसुतपदवन्दन ॥
भूपहि लखि वशिष्ठ मुनिराई ❋ दै आसन सादर बैठाई ॥
अर्घ्यपाद्य दै वहु सन्मानी ❋ पूछेहुकुशल बहुरिमुनिज्ञानी ॥
कह कौशिक करपुट शिरनाई ❋ तब कृपाय मम कुशल सदाई ॥
कहहु कुशल निजप्रभु तपराशी ❋ अरुयत शिष्य तपोवनवासी ॥
कहि सवविध मुनीश कुशलाता ❋ बोले बहुरि अफुल्लित गाता ॥
हे धर्मज्ञ भूप लखि तोहीं ❋ भयहु आजु बड़ आनँद मोहीं ॥

दो०—प्रेम वारता परे पुनि, कह ऋषि परम उदार ।
आजु भूप आतिथ्य मम, करहु सदल स्वीकार ॥
सुनि वशिष्ठ मुखबैनइमि, कह कौशिकशिरनाय ।
हे ऋषिवर तव दरश ते, मैं परि तृप्त बनाय ॥

किहौ जोइ फल मूल प्रदाना ❋ सोइ यथेष्ट मोर सन्माना ॥
अब विदाय आयसु मोहि देहू ❋ राखिय सदा दास पै नेहू ॥
कहेहु वशिष्ठ सुनिय महराजू ❋ कबहुँ न जानदेब हम आजू ॥
जब ऋषिवर कह बारहि बारा ❋ तबकौशिकनृपकियस्वीकारा ॥
कामधेनु शबलहि ऋषिराई ❋ बोलि तबहिं इमिकहेहु बुझाई ॥
मैं कौशिकहि आजु निज गेहू ❋ किहौं निमंत्रित सहित सनेहू ॥

सो दधि मधु पायस पकवाना ❋ मन रंजन वर व्यञ्जन नाना ॥
भूपहि सदल कराय अहारू ❋ सवन देव सुख देव सुचारू ॥

रामगीतिका छन्द ॥

ऋषिबैन सुनि शबलारच्यो सबबस्तुविविधप्रकार ।
पलमाहि झलमल करन लागे विमल बहु आगार ॥
द्युति जासु वासव वासभास हिरास होत निहारि ।
मणिगणचमकतोरणदमकलखिचकितहोइतमारि ॥
नगजड़ित विद्रुम देहरा अस फटिक सोह किवाँर ।
मन्दिरन सुन्दर ऊणपट शुचिविछे शोभा सार ॥
उपवन सघन वहु ठाम ठाम न लसत मुनिमनहारि ।
फूलेफले तरुशाख झुक मृदुध्वनि करत शुकसारि ॥
षट रस अशनसह यतन प्रस्तुत पाकशालन माहिं ।
शुचिचर्व्यचोष्यादिकजिननहिंस्वादवरणेजाहिं ॥
ससमाज कौशिकराज ह्वै वर आसनन आसीन ।
सुरतियनपरिवोषित अशनसबजननभोजनकीन ॥
दो०—कामसुरभिशबलहिबहुरि, हेरेहु नृप तेहि ठाम ।
कान्ति कृशानु समानतनु, अनुपम गठन ललाम ॥
स्वच्छ पुच्छ घनकेशयुत, मेरु दण्ड छवि सार ।
चारि पयोधर वर सुघर, सुधाधार अनुहार ॥
सुरुचिर कुक्षि ऊरु मन भावन ❋ अश्वकर्णदल कर्ण सुहावन ॥
लम्ब कण्ठ अति सुन्दर शीशा ❋ शृंग गठनजसअर्द्धनिशीशा ॥
असित चारु विपुलायत लाचन ❋ क्षरमंजुल अघपुंजविमोचन ॥
मृदुल लोमसित सर्व शरीरा ❋ दरश जासु हारकजनपीरा ॥
देखि नृपति शबला सुघराई ❋ मोहे हृदय लोभ अति छाई ॥
तब वशिष्ठ प्रति वचन रसाला ❋ कहनलगे यहिभांतिभुवाला ॥

धेनु कोटि दश हमसन लेहू * शवलहि मोहिं कृपाकरिदेहू ॥
अथवा लै समस्त मम राजू * पुरवहुमोरिआश ऋषिराजू ॥
सो सुनि ह्वै विस्मित मुनि कहेऊ * यह नरनाथ काहकहिरहेऊ ॥
कामधेनु शवलहि सबकाला * ममसत्कृतिनमूल महिपाला ॥
दो०-अग्निहोत्र बलि होम मख, देव पितर सत्कार।
याहि धेनुते होत मम, जिते धर्म आचार ॥
यह पयस्विनी सुरभिवर, है मम जीवन रूप।
मैं कदापि यहि धेनु कहँ, सकत नाहिं दै भूप ॥
यहसुनि विहँसि गाधिसुतकहेऊ * रत्न विशेष धेनु यह अहेऊ ॥
उत्तम रत्न भोग अधिकारा * केवलनृपहि नीति अनुसारा ॥
कामधेनु यह सकल प्रकारा * रहनयोग्य मम भवनमझारा ॥
यहि तजि मैं क्षत्री बलधारी * तुमयक अहौ विप्र तपकारी ॥
यहि सप्रीति देहु यहि काहीं * तौ स्वधर्म त्यागब हम नाहीं ॥
बल प्रकाशि लै जैहौं याही * ताते देहु कुशल यहि माहीं ॥
कह मुनि करु नृप जोय विचारा * केहिविधि देहुतपिनआधारा ॥
तब कौशिक उर क्रोध बढ़ाई * लिय बरवश शवलहिपकराई ॥
चल्यो नगर कहँ लै तेहि काहीं * तब कछु चिन्ति धेनु उरमाहीं ॥
बलकरि निजहि छुड़ाइ सिधाई * द्रुतपद भजि वशिष्ठ ढिगआई ॥
दो०-रुदन करत गिरि चरणपै, कहन लगी इमि बैन।
का अपराध निहारि मम, किहो त्याज तप ऐन ॥
कह वशिष्ठ हे नन्दिनी, मैं त्यागेहु तोहिं नाहिं।
बलप्रयोगि यह धरणिपति, लिये जात तुमकाहिं ॥
सो क्षत्री क्षितिपति बल राशी * मैं यक तपी तपोवनवासी ॥
हमते अधिक भूपबल घोरा * अबयहि माहिं काहवशमोरा ॥
सुनि शबला बोली इमि बानी * कहहुकाहयहिविधमुनिज्ञानी ॥

विदित ब्रह्मबल तेज अगारी * वाहुजबलकेहि गणनमझारी ॥
जो मुनीश कर आयसु पाऊँ * तौ क्षण महँ नृप दर्प नशाऊँ ॥
यत लखात यह कटक अपारा * होई अबहिं निमिष महँ छारा ॥
यह सुनि उतर दियो ऋषिराजू * जोइकरिसकतिकरुनसोइकाजू॥

हरिगीतिका छन्द ॥

ऋषिराज आयसु पाय शवला धाय नृप सन्मुख गई ।
अतिकोपि लूम उठाय भाषण करत हम्बा रव भई ॥
तेहि शब्दते अति विकट पह्लव वीर बहु प्रकटत भये ।
धरु पकरु मारु पुकारि ते सब घेरि कौशिक दल लये ॥
लखितिन्है कौशिकराज गाजि प्रकोपि धनुषचढ़ायऊ ।
निजबाण जाल कराल ते पलमाहिं मारि गिरायऊ ॥
तबपीत बर्ण असंख्य पट्टिश धारि सैन्य भयाविनी ।
उत्पन्न कीन्ह बहोरि शबला काम धेनु पयस्विना ॥
पर तिनहुँकहँ संग्राम कुशली कुशिककुल भूषणबली ।
अनिवार अस्त्र प्रहारि शमनागार भेजहु दलमली ॥
यह लखि महर्षि वशिष्ठ शवला सनकह्यो हे नन्दिनी ।
पुनरपि प्रकटकरु योगवल ते प्रबलदल खलगंजनी ॥
यहसुनि सुरभि क्रोधान्ध ह्वै निजमूर्ति प्रकटिभयंकरा ।
हम्वा ध्वनी इमि कीन्ह जाते कँपन लागि वसुन्धरा ॥
हुंकारही मुखतोलि पुनिपुनि खुरन खोदति मेदिनी ।
अंगार वर्षत लूमते दाहति नृपति सेना घनी ॥
अतिशय भयावनि जग नशावनि सरिसतहँशबलाभई ।
मध्याह्न भानु समान अति दुदर्श तेहि क्षण ह्वै गई ॥
तेहि लूमते पुनि प्रकट भे पह्लव निकर कर धृत असी ।

१–टिप्पणी १६ देखो ।

थनते बली शंक वृन्द अरु द्राविड़ विपुल बलसाहसी ॥
दो०–प्रकट भये तेहि शकृतते, सुभट कांचि समुदाय।
पार्श्व देश ते शंवर गण, वरणनीलगिरिन्याय ॥
फेन पुंजते पौंड्र किराता ❋ खस वर पुलिन्द जगख्याता ॥
चीन हूण गण यवन विजाती ❋ केरल आदि म्लेच्छ बहुभाँती ॥
प्रकटि अस्त्र धृत विविध प्रकारा ❋ करन लगे नृप कटक सँहारा ॥
यतपदाति रथ द्विरद तुरंगा ❋ रह्यो गाधिसुत भूपति संगा ॥
शवला सृजित सुभट तिनकाहीं ❋ कालकवलकिय यकपलमाहीं ॥
यहलखि शतसुत कौशिक जाये ❋ रोषित हनन वशिष्ठहि धाये ॥
तब सरोष ऋषि किय हुंकारा ❋ भये समस्त कुवँर जरिछारा ॥
डसे उरग विष भखे उवारा ❋ ब्रह्मरोष ते नहिं निस्तारा ॥
दो०–सुतनसहितनिजविपुलदल, लखिक्षण माहिंसँहार।
गाधिसुवननिज हृदयमधि, चिन्तत भये अपार ॥
राहुग्रस्त जिमि दिवस पति, जिमि बिनुपक्षविहंग।
बिनु तरंग जिमि पयो निधि, जिमि रदहीनभुजंग ॥
सो०–तेहि क्षण सोइ प्रकार, भई गाधि सुतकी दशा।
उर निर्वेद अपार, प्रकटलाज अरुक्षोभ ते ॥
तब नृप एक सुतहि दै राजू ❋ आपु गये हिमगिरि तपकाजू ॥
मारि मनहिं गहि नियम कठोरा ❋ लागे करन शंभु तप घोरा ॥
सहि घन हिम आतप जलधारा ❋ बहु वत्सर तप कीन्ह भुवारा ॥
कौशिक तपलखि शिवमनभाये ❋ बलीवर्द चढ़ि तेहि थल आये ॥
कह्यो भूप सन जोइ रुचि होई ❋ मैं प्रसन्न वर माँगहु सोई ॥

१–टि. २० देखो। २–टि. २१ देखो। ३–टि. २२ देखो। ४–टि. २३ देखो। ५–टि. २४ देखो। ६–टि. २५ देखो। ७–टि. २६ देखो। ८–टि. २७ देखो। ९–टि. २८ देखो। १०–टि. २९ देखो। ११–टि. ३० देखो। १२–टि. ३१ देखो। १३–टि. ३२ देखो।

शिवपद वन्दि गाधि सुत कहेऊ ❋ यहअभिलाष मोरि प्रभुअहेऊ ॥
अस्त्र शस्त्र यत जगत मझारे ❋ देहु समंत्र नाथ मोहि सारे ॥
कहि तथास्तु शिवकीन्ह पयाना ❋ तबनृपकौशिकसहअभिमाना ॥
वेगि वशिष्ठ आश्रमहि आये ❋ अस्त्रपुंज चहुँ दिशि वर्षाये ॥
मुनि तप वन अतिरम्य विशाला ❋ दहन लाग नृपकेशर जाला ॥

दो०–आश्रम वासी ऋषि मुनी, गये महा अकुलाय ।
पशुपक्षी गण विकल उर, चहुँदिशि चले पराय ॥
ब्रह्मतेज धर ऋषि प्रवर, श्री वशिष्ठ तप ऐन ।
तोषि सबन पुनिरोषवश, भये रक्त युग नैन ॥

सो०–ब्रह्म दण्ड बलपुञ्ज, कंजयोनि सुत पाणि गहि ।
भूप भूरि मद गंज, तिष्ठ तिष्ठ कहि धायऊ ॥
तेजोराशि प्रचण्ड, उत्थित प्रति पद गमनते ।
दीप्तिमानगिरिखण्ड, जनु झपटेहुजग दहनहित ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

ललकारिकै इमि वचन ऋषिवर रोषि कौशिक सन कहे ।
तैं प्रेत पुरहि पयान हित पुनि आय मम आश्रम दहे ॥
महिपाल कोपि कराल कह वाचाल गाल न मारुरे ।
यहि काल कालहु केर नाहि उबारु मम सम्मुख परे ॥
असकहि तपत मार्तण्ड इव को दण्ड चण्ड सवांरिके ।
ब्रह्मर्षि पै सामर्ष वर्षत अस्त्र विविध प्रकारके ॥
अति विषम सन्तापन[१] विलापन[२] ऐन्द्र[३] क्रौंच[४] भयंकरा ।
वृतमान[५] जम्भन[६] पाशुपत[७] जेहि बेगते कम्पत धरा ॥
मानव[८] विमोहन[९] रौद्र[१०] वारुण[११] अस्त्र जोइ दारुण महा ।
कापाल[१२] अरु कंकाल[१३] ध्वनि सुनि भुवन शंकित ह्वै रहा ॥

१–१३ अस्त्रविशेष ।

इमि अस्त्र यत नृप हन्यो तेहि द्विज दण्डते इमि ऋषिवरै।
वारहिं निहारहि मिहिर जिमि खर करन ते दारन करै॥

रामगीती छन्द॥

अतिशय भयंकर रोष वश ऋषि मूर्ति भइ तेहिकाल।
झरझर निकर प्रतिरोम कूपन ज्वाल माल कराल॥
धृतपाणि दण्ड प्रचण्ड धक धक प्रलय पावक न्याय।
प्रज्वलित लखि शंकित चराचर सहित सुरसमुदाय॥
भयभीत चित ऋषिमुनि तबहिं ब्रह्मर्षिके ढिग आय।
लागे कहन सब घेरिकै बहु विनय बैन सुनाय॥
हे तपोधन गुणगण सदन अस जनन जगत मझार।
सहि सकहि जोइ रविकरहु ते अति प्रखर तेज तुम्हार॥
अब ब्रह्मदण्डहि करिय प्रशमित अमित करुणागार।
तव रोषते नतु होइहै संसार क्षण महँ छार॥
मुनिगण विनय सुनि शांतभे ऋषिराज रोषनिवारि।
ह्वैअतिलजित चित भगे कौशिक देखिकै निजहारि॥
शीतल तजत निश्वास इमि लागे कहन मन माहिं।
क्षत्रिय वलहि धिकधिक शतोधिक तुच्छनृपमदकाहिं॥
है ब्रह्मबल ही परम बल नहिं शक्ति जेहि सम आन।
अब ब्राह्मणत्वहि लहब नतु तजि देइहौं निज प्रान॥
अस ठानि उर सगलानि नृपवर सघन कानन जाय।
बहु वर्ष करि दुर्द्धर्ष तप ब्रह्मर्षिवर पद पाय॥
लहि देवपति सँग सोमरसके पान कर अधिकार।
भे गाधि नन्दन वन्दनीय सुरादि वृन्द मझार॥
ऋषिवर वशिष्ठहु संगपुनि भइ मित्रताइ पुनीत।
इमि प्रीति युत निवसत दुहुन बहुकालभयहु व्यतीत॥

कल्माषपाद के याग याजक हानहित पुनराय।
बाढ्यो विरोध वशिष्ठ विश्वामित्र मधि अधिकाय॥
यक समय नृप कल्माषपाद अहेर करि रहे आय।
इतते वशिष्ठ कुमार जेठे शक्ति ऋषि रहे जाय॥
सांकर रह्यो सो पथ तबहिं ऋषिसो कह्यो नरनाहु।
मोहि देहु प्रथमहिजानदलयुत ठहरि यकदिशिजाहु॥
दो०—कह ऋषिवर कस कहहुअस, चलिआई यह रीति।
प्रथमहिभूपति ब्राह्मणहि, देहिं पंथ सह प्रीति॥
इमिविवाददोउमधिवढ्यो, तब नृप कोपि अपार।
साभिमान ऋषिराज पै, कीन्ह्यों कशा प्रहार॥
कह्यो शक्ति तब कोपि अपारा * शठतव कृति राक्षस अनुहारा॥
होहु मन्दमति राक्षस जाई * विचरुविपिन गिरिगुहासदाई॥
भयहु बहुरि यक समय मझारा * भूपहि ब्रह्मशाप अनिवारा॥
तब नृप भे कराल निशिचारी * काय कालचर सम भयकारी॥
नर आमिष प्रिय प्रकृति कठोरा * फिरनलाग वनमधिचहुँओरा॥
सायकदिन शक्तिहि लखिपयऊ * पशुवतहनि भक्षण करिगयऊ॥
यह विलोकि कौशिक हरषाये * इमि राक्षसहि बुलाय बुझाये॥
अहैं जितेक वशिष्ठ कुमारा * पकरिपकरिकरुतिनन्हअहारा॥
दो०—तब वशिष्ठ के नव नवति, रहे शेष सुत जोय।
यक यक करि भख डारेऊ, रक्षरूपि नृप सोय॥
सुतननिधनकुलक्षयनिरखि, ऋषिवशिष्ठमतिमान।
प्रवल शोकवश तेहिसमय, भये अधीर महान॥
सो०—पर प्रतिहिंसा काज, तजिनिज प्राणहि त्याग हित।
भे तत्पर मुनिराज, आश्रम तजि निकरे तबहिं॥

१—सर्ग देखो॥

चढिगिरिपै यकदिवश मुनीशा * गिरे सवेग निम्न करि शीशा ॥
सो अतितुंग रह्यो गिरि शृंगा * पर न आव कछुक्षतऋषिअंगा ॥
तूलसेज सम क्षिति ह्वै गयऊ * तापरपतित मनहुँ मुनिभयऊ ॥
द्वितिय वार वन मधि पुनराई * सूखकाठ चुनि चिता बनाई ॥
अनल लगाय प्रज्वलित करेऊ * तेहि मधि कूदि ब्रह्मसुत परेऊ ॥
पर परसवहि मुनीश शरीरा * भयहु शीत,पावक जस नीरा ॥
बहुरिखुवन शोकितविधिनन्दन * विपुलउपलगल मधिकरिवन्धन
गिरे अगाध पयोधि मझारी * पर तरंग तट पै दिय डारी ॥
जब न लखेहु निजमृतु मुनिराई * तब निराश चित ह्वै पुनराई ॥
मलिन वदन आश्रम फिरिआये * पर सुत सून देखि अकुलाये ॥

दो०—द्विगुण शोक ऋषिराज के, पकरयो हृदय मझार ।
भवन लग्यो यम सदनसम, चतुर्दिशा अंधियार ॥
तब धरणीधर धरणि कहँ, धारत जौन प्रकार ।
तिमि दारुण सुतशोक उर, धारि विरंचि कुमार ॥
लक्षहीन सरिता पतित, भासमान तृण न्याय ।
विचरण लागे इत उतहि, देह दशा विसराय ॥

अष्टपदी छन्द ॥

एक समय ऋषिराज एक सरिता तट गयऊ ।
वर्षा जलते बढ़त तासु गति इमि लखि पयऊ ॥
तटथित यकतरु काहिं रही क्रमशाहि नशाई ।
लखि मुनिवर यहिभाँति कीन्ह तनु तजन उपाई ॥
अति दृढ़ पाश बनाय बद्ध सब अंगन करेऊ ।
लुढ़कि वेग ते जाय प्रवल सरिता मधि गिरेऊ ॥
पर छेदि रज्जु नदि लहरिते फेंकेहु मुनिकहँ तीरपर ।

तेहिपाशमुक्त तेधरयोमुनिनामबिपाशासरितकर ॥
पुनि विचरण मुनि करत शोक संतप्त शरीरा ।
एक समय महँ गये हैमवति सरिता तीरा ॥
बहु हिंसक जलजन्तुनु पूरतेहि नदिहि निहारा ।
भीषण तुंग तरंग प्रबल बह जाकर धारा ॥
तब तनु त्यागन हेतु ब्रह्मकुल कमल तमारी ।
करि यक लम्फ प्रदान गिरे तेहि स्रोत मझारी ॥
ऋषि अंगअनलइवपरसिकैजल२अथाहतेहिनदीकर
द्रुतविदरिसरितशतधावहीयहिहित नामशतद्रुपर ॥

सो०-इमि बहु भाँति उपाय, करि थाके ऋषिराय तब ।
फिरे भवन पुनराय, ह्वै निराश असु नाशते ॥

ऋषि वशिष्ठ चिन्ताकुल घोरा * जात रहे निज आश्रम ओरा ॥
तेहिक्षणतिनसुतशक्ति किभामिनि*रुदतश्वशुरकेभइँअनुगामिनि॥
सोइ समय षडंग श्रुति गाना * सहसा परयो ब्रह्मसुत काना ॥
तब सचकित पाछे मुख फेरी * पूँछेहु अदृश्यन्ति कहँहेरी ॥
यह श्रुति ध्वनी शक्तिमुख नाई * अबहिं कहांते दीन्ह सुनाई ॥
अदृश्यन्ति बोली शिर नाई * मैं सुत वधू तुम्हारि गोसाँई ॥
स्वामि शक्तिऋषि औरस जाता * शिशुमम गर्भमांहि थिततात ॥
सुनेहु तात तुम श्रुति ध्वनिजोई * तेहिबालक मुखनिस्सृत सोई ॥
कुल अवशिष्ट जानि मुनिराई * हर्षि मरण कामना विहाई ॥
आय आश्रमहि बधू समेता * कियनिवास गुणपुञ्ज निकेता ॥

दो०-अदृश्यन्ति कछु कालमहँ, द्वितिय शक्ति अनुहार ।
तेजपुंज पावक सरिस, किय यक प्रसव कुमार ॥

१-पञ्जाब प्रदेस्थ व्यासनदी । २-पंजाबस्थित शतरंजनदी । ३-टिप्पणं ३३ देखो । ४-शक्ति की स्त्री का नाम ।

जात कर्म करि पौत्र कर, ऋषि वशिष्ठ भगवान ।
हृदय हर्ष छायो बहुरि, होय शोक अवसान ॥
जब सो सुत रह जठर मझारा ❋ तब वशिष्ठ मुनि ज्ञान अधारा ॥
रहे पराशु होन महँ तत्पर ❋ गतजीवनजेहि वदकोविदवर ॥
यहिहिततेहि शिशुकरजगधामा ❋ परयो पराशर ऋषिवरनामा ॥
गाधि तनय वशिष्ठ दोउ माहीं ❋ घटयो शत्रुता किंचित नाहीं ॥
थांनु[1] तीर्थ तर पूरुब ओरा ❋ रहेवसतविधि मनसकिशोरा ॥
पश्चिम दिशि कौशिक गुणग्रामा ❋ रहत रहे रचि कुटी ललामा ॥
ऋषि कौशिक वशिष्ठ मुनिकेरा ❋ तेज प्रभाव विलोकि घनेरा ॥
रहत हृदय मधि दुखित सदाई ❋ यकदिन नदिसरस्वतिहि बुलाई
कहेहु बुझाय आशु तुम जावहु ❋ अबहिबहाय वशिष्ठहि लावहु ॥
मैं तेहि कर आजु बधि प्राना ❋ करब दूर उर क्षोभ महाना ॥
दो०—सुनि स्रोतस्वति सरस्वति, उभय ऋषिन भय मानि ।
कह वशिष्ठ सन जाय सोइ, कँपति जोरि युग पानि ॥
सुनि वशिष्ठ तासन कह्यो, करहु शंक तुमनाहिं ।
लैचलु मोहिं निश्चिंतचित, गाधि तनय ढिग माहिं ॥
नतुकौशिक जेहि प्रकृत कठोरा ❋ दैहै अवशि शाप तोहिंघोरा ॥
सुनि निष्काम सरल ऋषिबानी ❋ मोहि सरस्वति उरदुख मानी ॥
तबजेहि क्षण कौशिक ऋषिराई ❋ करत रहे जप ध्यान लगाई ॥
ऋषि वशिष्ठ कहँ सोइक्षण माहीं ❋ लै गइसरित गाधिसुत पाहीं ॥
लखिऋषिवरहि कुशिककुलकेतू ❋ उठि न सके जपविघ्न के हेतू ॥
सरस्वती भल अवसर पाई ❋ लाई वशिष्ठहि बहुरि फिराई ॥
जप समाप्ति कर गाधि कुमारा ❋ जानिसरितछल कोपिअपारा ॥
दिय सरस्वतिहि शाप यहघोरा ❋ होइ नीर शोणित मय तोरा ॥

१-शुद्ध शब्द "स्थाणु" है ।

दो०—सरस्वती यक वर्ष लौं, बहीं रुधिर की धार।
पुनि यक ऋषिके दरशते, भयो शाप उद्धार॥
भानु वंश जलजात रवि, हरिश्चन्द नृप काहिं।
कियकौशिकजबराज्यच्युत, बांधि सत्यपणनाहिं॥
सो०—सो मुनि तपोनिधान, ऋषि वशिष्ठ अति रोषिकै।
करि अभिशापप्रदान, करिदीन्ह्योंवककौशिकहि॥
ऋषि वशिष्ठहू काहिं, विश्वामित्रहु शाप दै।
करदियसोइक्षण माहिं, विहगशरालि विशालतनु।

सुगीती छन्द॥

खग योनिहू मधि द्वेषभाव न विगत भा तिन मनसकर।
लागे करन कोपित कलेवर घोर संगर परस्पर॥
युग सहस योजन लगविशाल शरालि तनु विकराल तर।
त्रयसहस योजन वक भयानक चंचु पदनख अति प्रखर॥
तिन दुहुन के अनिवार पक्ष प्रहार ते भूधर निकर।
क्षितिसों उपरिउड़ि गगनपै पुनि गिरत घहरत भूमि पर॥
अति प्रबल प्रलयानिल विताडित वोधि द्रुम के पत्रवत।
थरथर कँपित वसुमती अरुदिनपति भयेअतिद्युति विगत॥
भूकम्प वश वारीश वारी ह्वै अलोडित ऊर्द्ध गत।
पाताल गमोन्मुख धरणि तेहिक्षण भई यकओर नत॥
व्यतिव्यस्त चिंता ग्रस्त त्रस्त समस्त सुर मुनि चराचर।
घनघोर हाहाकार आरत नाद सो आकाश भर॥
विध्वस्त जगतहि होतलखि अतिव्यस्तचित विधिआयतहँ।
खगयोनि सोकरि मुक्तदोउ ऋषीन प्रति इमि वचन कह॥
हे तात यह नहिं उचित तुमकहँ शांत ह्वै त्यागहु समर।
तामस स्वभावहि मूल है जग माहिं सर्व विनाश कर॥

दो०—हे बशिष्ठ प्रिय तात सुनु, कौशिक परम उदार।
हरिश्चन्द्र तव शिष्य कर, कीन्हन कछु अपकार॥
वरुतिन भूपतिकाहिंकसि, सत्य धर्म पथ माहिं।
यशबढ़ाय करदिय अमर, यहिमधि संशय नाहिं॥
सो०—करि अमर्ष परिहार, अवदोउ ऋिषमित्रता करि।
मुनिन उचिततपसार, शांति भाव धारण करहु॥
सुनिविधिवचनसनीति, ह्वैलज्जित चितउभयऋषि।
कीन्ह दोउ दृढ़ प्रीति, वैर भाव बिसराय कै॥
बहुरि उभय तप ऐन, निजनिज आश्रम कहँगये।
वदत कालि शुभहैन, भये क्रोध वश हेतु विनु॥

सप्तदश सर्ग॥ १७॥

महर्षि अगस्त्य का जन्म व लोपामुद्रा के सहित विवाह॥

सो०—कुन्द इन्दु द्युति हीन, जासु तेज अरु सुयशते।
मन्द ताप छबि छीन, मलिननलिननायकसदा॥
जिनतनुकांतिनिहारि, अजहु रहत चपलाचपल।
ज्वलतअनलअनुहारि, तप अभाव भासित वपुष॥
दो०—जोचतुर्थ यागाग्नि सम, पञ्चम श्रुति अनुहार।
जंगम तीरथ वहुरिजनु, धरे धर्म आकार॥
कीन्ह वेदजेहिऋषि वरहि, मान नाम ते गान।
चरित सुधातिनकररुचिर, करिय सुजनगण पान॥
रहे राजि मित्रावरुण, आदित यज्ञ मझार।
आई तेहिथल उर्वसी, कीन्हे शुभग शृंगार॥

लखि अनुपमछविसंयुता, सुरवरांगना काहिं ।
मित्र वरुण करतेजखसि, परयो यज्ञ घट माहिं ॥
सोकछु तेज कलश पै गिरेऊ * कछुकसलिलकछुथलमहँपरेऊ ॥
भूतल पतित रेत ते ज्ञानी * प्रकटे ऋषि वशिष्ठगुणखानी ॥
घरते मुनि अगस्त्य तपधामू * जलतेप्रकट मत्स्य ऋषिनामू ॥
कुम्भहि यक विशेष परिमाना * कहकोविदश्रुतिशास्त्रनिधाना॥
यहि हित ऋषि अगस्त्यघटजाये * मान नाम ते प्रथम कहाये ॥
जब कुंभज विन्ध्याचल केरा * कीन्ह हननअभिमान घनेरा ॥
तब ते ऋषि अगस्त्य तिन नामा * परि विख्यात भयोतिहुँधामा ॥
तेहि मुनि केर चरित अतिपावन * करहुँ गान सुन्दर मनभावन ॥

रोला छन्द ॥

भये अगस्त्य समस्त वेद विद्यादि निधाना ।
ब्रह्मवादि जन अग्र गराय सुर मन्य महाना ॥
ब्रह्मतेज तनु झलक प्रखर रविकर अनुहारी ।
तप श्री वदन विभात लखत जेहि तरतअघारी ॥
उर आराम ललाम माहिं सम दम धृति दाया ।
प्रणव क्षमा औदार्य्य रूपि वर कुसुम निकाया ॥
विकसि सुमन्द सुगन्ध फैल यावत संसारा ।
भे मुनीन्द्र जग माहिं ख्यात उपकार अधारा ॥
यक दिन मुनियहि भांतिपितरगण काहिंनिहारा ।
परे अधोमुख लम्बमान यक गर्त मझारा ॥
हाहाध्वनि तिन वदन कुलिश घोषण की नाईं ।
सुनि बहोरि मुनिराज जानि तेहि कारण पाईं ॥
सुत उत्पादन चिन्त घोर घन घटा समाना ।
छायो हृदय अकाश तवहिं मुनिज्ञान निधाना ॥

पाणिग्रहण हित नारि फिरे खोजत जग माहीं।
पर सदृशी तिय कतहुँ मिली ऋषिनाथहि नाहीं॥
दो०—तब अति उत्तम अंगजे, सुरनर आदि मझारि।
तेहि आदर्शते कल्पना, कियहियमधियकनारि॥
सन्ततिहितसन्ततदुखित, सुमति विदर्भ भुवाल।
करत रहे संतान हित, तप कठोर तेहि काल॥

ऋषिवर सोइ स्वकल्पिता नारी ❋ कान्हनिहितनृपहृदयमझारी॥
सो लावण्यलता विधु वदनी ❋ दामिन दाम दमकमददमनी॥
शरद इन्दु इव कीन्ह प्रकाशा ❋ नृप विदर्भपतिभवनअकाशा॥
सुता रतन लहि नृप हर्षाये ❋ सादर गणकद्विजनबुलवाये॥
कह नृप करि धन मणि बहुदाना ❋ कहियकुवँरिलक्षणमतिमाना॥
द्विजन लगन गनिकह्योबिचारी ❋ अतिसुलक्षणा यह सुकमारी॥
नारि धर्म आदर्श स्वरूपा ❋ होई जगत माहिं यह भूपा॥
पुनि लोपामुद्रा तेहि नामू ❋ धरिद्विजगणगमनेनिजधामू॥

दो०—कुवँरि कोक नद नालवत, नृप गृह सरित मझारि।
दिनदिनवर्द्धितहोनलगि, अतिपितु मातुपियारि॥
सो०—खिलत सुमन अनुहार, झलक तरुणता कुवँरितनु।
चिन्तित हृदय मझार, नृपलखिब्याहनयोग्यतेहि॥

नृपति सुताहि घटज यश खानी ❋ परिणययोग्यहृदयअनुमानी॥
आये भूप भवन तेहि काला ❋ ऋषिहि हेरि उठि तुरतभुवाला॥
करिप्रणाम शुचिआसन दीन्हा ❋ सहित प्रेम पदपूजन कीन्हा॥
पुनि करपुट कहवचन रसाला ❋ आजु मोरि बड़भाग्य कृपाला॥
जेहि गृह परहि नाथ पद धूरी ❋ सो पुनीत गत पातक भूरी॥
विनय मोरि यह कृपा निकेतू ❋ जानन चहत आगमन हेतू॥
नृप मुख रुचिरअमिय मयवानी ❋ सुनिबोले कुम्भज ऋषिज्ञानी॥

संतति हित नृप विधि अनुसारी ❋ नारिग्रहण अभिलाष हमारी ॥

दो०—निजनन्दिनिशुभगुणसदनि, काजियमोहिंप्रदान।
सुनि भूपति उर मुनि वचन, लागे कुलिश समान ॥
अर्पहुँ कुवँरि कि ताप सहि, जाहुँ कि मैं नहकारि।
बनै न कछु भूपहि कहत, फँसिद्वैविपतिमझारि॥

सो०—पुनि मुनि नायक काहिं, राखि सभा महँ भूपवर।
निज अंतः पुरि माहि, जायसुनायहुरानिकहँ ॥

रामगीती छन्द ॥

सुनि रानि दारुण वाणि वारण दलित नीलसमान।
नृप अंग महँ भइँ पतित मानहु भयहु तनु विनु प्रान ॥
कछुकाल मधि पुनिचेति विलपनलगीं अति अकुलाय।
हा दया हीन विरंचि तोर प्रपंच जानि न जाय ॥
चिर दुःखिनी के नयन पुत्तलि इव कुवँरि के भाल।
निर्दय दयी लिख दई का भिक्षुकी दुख विकराल ॥
हे स्वामि सतपथगामि तुम धरि निठुरता उरमाहिं।
वन वासिनी कस करत हो मम कनक कुमुदिति काहिं ॥
जोइ अंगरागहु ते कँपत सुकुमार सुन्दर गात।
केहि भाँति सो करिहै सहन घन विपिन आतप बात ॥
रेविधि सुधाधर इन्द्र कहँ तैं राहु कर करिग्रास।
तबहू न तोहिं संतोष विरचत सतत आपद पाश ॥
तोहिं काह निज विपरीत रीति प्रकाश हित कोइ ठाम।
ममप्राणप्रतिमहितजिअपरनहि मिल्यो महि तिहुँधाम ॥
शत तडित वत द्युतिधर सुघर कल धौत पुत्तलि जोय।
वनवासि क्रीडा वस्तु हा विधि होन कहँ चलि सोय ॥

जोइममकुँवरि शिरकेशचिक्कणरुचिर अलिगण न्याय।
तेहि अरुण पंकज चरण परशन करत रहत सदाय॥
अब सोइ सरसित प्राय शिरसिज मधुपकहँ सब काल।
बेधिहैं शलाका सरिस मुनिके जटाजूट कराल॥
हा दैव गजमुक्तन लजावन कुवँरि दशनन काहिं।
परिहास करिहैं हिलत जोइ रद वायु परसन माहिं॥
सुरमन हरण आभरण पट भूषिता मम सुकुमारि।
अब होइहै मुनि सहचरी जोइ जटा वलकल धारि॥
नृप गृह विहारिनि नित रुचिर षटरस अहारिनिजोय।
विनु वसन वनफलअशनअब क्षितिशयनकरिहैंसोय॥
जननी जनक जीवन स्वरूपिनि नन्दिनी कहँ हाय।
अविरत विपत महँ पतित देखत सुनत रहब सदाय॥
हे जीवनेश नरेश यह सुकमारि त्याग कलेश।
होई सहन नहिं बरु तजब तनु करि हुताश प्रवेश॥
मुनिशाप ओघ अमोघते सर्वस्व वरु नशिजाय
पर प्राण प्यारि कुमारिकहँ भिखियारि कीन्हनजाय॥

दो०—तेहि क्षण अपर प्रकोष्ट ते, जननि रुदन सुनिपाय।
लोपामुद्रा आइ तहँ, नव सो दामिनि न्याय॥
शोकातुर पितु मातु कहँ, लखि तेहिकारणजानि।
लगीं कहन विहँसत वदन, कुवँरि जोरियुगपानि॥

भो हित करिय शोकजनिमाता * मुनिहिमोर पतिकीन्हविधाता॥
सोइ मम जगमधि जपतपध्याना * मुक्ति तृप्ति सुखसम्पद नाना॥
बड़ भागिनी अहै तिय सोई * है ऋषि नारि सेवपद जोई॥
तुमहि विपति भावना वृथाई * को प्रतापशाली मुनि नाई॥
विगत चिन्त है पितु मतिमाना * मोहिकुंभजऋषिकरकरिदाना॥

विपुल सुयशा शालिनिहमकाहीं ❋ करिय तातयहित्रिभुवनमाहीं॥
यहि कृति ते तव कीरति तावत ❋ रहिहै उदित धरामह यावत ॥
सुमुखि सुतामुख सुनिइमिवानी ❋ ह्वै सम्मत भूपति सह रानी ॥
ऋषि कुंभजहि भवन महँ आनी ❋ विविधभांति सादरसन्मानी ॥
श्रुतिविधिवत निजकन्यहि दाना ❋ कीन्हमुनिहिनृप नीतिनिधाना

दो०—लोपामुद्रा ते तबहिं, कह अगस्त्य ऋषिराय ।
पहिरहु वल्कल चीर अब, भूषण वसन विहाय ॥

पति निदेश सुनि सती सयानी ❋ तेहिक्षणनिजहिधन्यकरिजानी
तजि मणिभूषण वसनसुहावन ❋ वल्कलचीर पहिरि मनपावन॥
परम पावनी शांति स्वरूपा ❋ धरयो ब्रह्मचारणि कर रूपा ॥
सोहि मनहुँ तिय वेश वनाई ❋ प्रकटी विशुचि पुण्य श्रीआई ॥
लै विदाय पुनि तपोनिधाना ❋ किन्हेहु नारि समेत पयाना ॥
गंगद्वार तीरथ महँ जाई ❋ साधेहु तप कठोर मुनिराई ॥
भूप सुता सप्रीति मन लाई ❋ करत सतत मुनिवर सेवकाई ॥
तिय कर अटल भक्ति ऋषिराई ❋ हेरि सनेह न हृदय समाई ॥

दो०—पति सेवा पति प्रेमरत, पति अनुगत मति नेह ।
जेहिगृहवसअसभामिनी, धन्य धन्य सो गेह ॥

अष्टादश सर्ग ॥ १८ ॥

इल्वल दैत्य का दौरात्म्य तथा अगस्त कृत वातापी संहार ॥

दो०—इल्वल नामक रह्यो यक, दानव शमन समान ।
वसत नगर मणिवता महँ, जेहिसमधनीनआन ॥

पापी पर सन्तापि बड़, बातापी जेहि नाम ॥
रह्योअनुज तेहि दनुजकर, मायावी बल धाम ।
एक समय इल्वल बलधारी * यकतापसद्विजनिकटसिधारा ॥
शीशनाय कह सहित सनेहू * मोहि यक सुवन शक्र समदेहू ॥
क्रूर स्वभाव असुर कर जानी * सहमत भये नाहिं द्विजज्ञानी ॥
तबतेहि हृदय क्रोधअति छयऊ * विमुखमनोरथगृहफिरिअयऊ॥
यहप्रण कीन्ह असुर मनमाहीं * करिहौं ध्वंस विप्रकुल काहीं ॥
तब अनुजहि सो छाग बनाई * तेहिद्विज काहिनिमंत्रि बुलाई ॥
हनि छागहि रंधन करवायहु * सरलहृदयद्विजकाहिंजिवाँयहु॥
करि भोजन भूसुर तपधामा * जाय सेज पै किय विश्रामा ॥
दो०—इल्वल महँ यह शक्ति रहि, जेहिमत प्राणी काहिं ।
टेरहि सोय सजीव ह्वै, द्रुतआवत तेहि पाहिं ॥
सो०—विप्रहि सुप्त निहारि, बातापी कर नाम लै ।
इल्वल कुटिल द्विजारि, ऊँचे स्वर ते टेरऊ ॥
सुनत तुरत बातापि सुरारी * ह्वै सजीव द्विज उदर विदारी ॥
विहँसत वदन भ्रातढिग अयऊ * विप्र तुरंत कालवश भयऊ ॥
तेहि दिन ते यहि भाँति सदाई * द्विजनकपट अजदशनकराई ॥
आगत अतिथि विप्र वध करही * मूढ़ न विप्रघात सों डरही ॥
यक दिन घटज तपो बलधारी * निजतिय कहँऋतु शुद्धनिहारी
नेह सहित विधुमुख रहे हेरी * तबलोपामुद्रा तेहि बेरी ॥
अधो वदन सलाज करजोरी * बोली सुनिय विनय यहमोरी ॥
सुतहि लाहु हित प्रभु तप राशी * किहेहु मोहि पदपंकज दासी ॥
सकल भाँति मैं नाथ अधीना * पतिहि तीय गतिवदत प्रवीना ॥
आश भरोस नारि कर जोई * निर्भर करत पतिहि पै सोई ॥
दो०—ताते करत ढिठाइ यक, तेहि क्षमि नाथ कृपाल ।

दासीकर यह प्रार्थना, करिय श्रवण यहिकाल ॥
जस पट भूषण सज्जिता, रहित रह्यू पितु गेह ।
तसप्रभुवासकसाजमोहिं, करिय दान करि नेह ॥
मन रोचित पट भूषण धारी ❋ सेवहुँ प्रभु पदकमल सुखारी ॥
तुमहुँ नाथ तजि वल्कल पावन ❋ पहिरहुदिव्य वसनमन भावन ॥
गृही मुनिन मधिलखिय निरंतर ❋ परिधानादि माहि बड़ अंतर ॥
तापस उचित चीरपट काहीं ❋ दूषित करन उचित कृतिनाहीं ॥
सुनि तियमुख सयुक्ति इमिवानी ❋ हृदयहर्षिकह मुनिगुणखानी ॥
जनक तुम्हार नृपति सुनु प्यारी ❋ भूरि विभूतिभूमिअधिकारी ॥
कहँते सोय विभव सुखकारी ❋ मिलीमोहिंउरलखहु विचारी ॥
सुनि मुनि नारि विहँसि कह बैना ❋ कोइ वस्तु अस जगमधि है ना ॥
तप बलते जोइ प्रभुहि न लाहू ❋ नाथ प्रभाव जान सब काहू ॥
कह कुंभज यह किहे उपाई ❋ तपक्षयहोत न सुमुखि भलाई ॥
सो०—पुनि उर मधि ऋषिराय, यहिप्रकारकियचिंतवन ।
पितु ऋण शोध उपाय, पुत्रलाहुविनुआननहिं ॥
अस विचारि उर कह इमि वानी ❋ होइ पूर तव आश सयानी ॥
बहुरि तीय रुचि साधन हेतू ❋ गये श्रुतर्वा नृपति निकेतू ॥
मुनिहि देखि नृप करि सत्कारा ❋ जोरि पाणि इमिवचन उचारा ॥
आजु नाथ बड़ि भाग्य हमारी ❋ भयहुँ धन्य पदकमलनिहारी ॥
कहिय कृपालु कृपा करि लेशू ❋ काह दास प्रति नाथ निदेशू ॥
कह मुनि कछु धन याँचन काहीं ❋ मैं आयहुँ भूपति तव पाहीं ॥
सो नृप अपर केर जेहि माहीं ❋ कोइ प्रकार होय क्षति नाहीं ॥
यह विचार करिके मति माना ❋ यथाशक्ति धन करहु प्रदाना ॥
दो०—तब नृप सब निज आय व्यय, मुनि नायकहि बताय ।
कह्योद्रव्यचाहियजितक, लै जाइय ऋषि राय ॥

सो०—सुनिमुनि कीन्ह विचार, भूप आय व्यय अहै सम।
अपर जनन अपकार, होई धन इन ते लये॥
तब तापस कुलदीप, नृपति श्रुतर्वहि संग लै।
नृप व्रध्नश्व समीप, कीन्हगमन धनलाहु हित॥

लीलावत छन्द॥

सोउ नृप दशा श्रुतर्वा सम लखि तिनहुँन कहँनिज संगलिवाई।
गये भूपपुरु कुत्सजात नृपवर त्रसदस्यु निकट मुनि राई॥
कुम्भयोनि त्रसदस्युहु कांहीं अर्थाभाव सो दुखित निहारी।
बहुरिनृपति त्रययक विचारकरि मुनिवर प्रतिइमिवचनउचारा॥
सुनिय मुनीश प्रचुर धनशाली है इक दानव इल्वल नामा।
तासु समीय गये ऋषिवर कर पूरण अवशि होइ मनकामा॥
यह सुनि दनुजपुरी कहँ कुंभज तिहूं भूप सह कीन्ह पयाना।
मुनिआगमनअसुरपतिइल्वल लखिकरिविविधभाँतिसन्माना॥
वहुरिअतिथिभोजनहिततुरतहिंछागरूपिनिजअनुजहिमारयो।
पाककराय नृपनयुत ऋषिकहँ सादर अशननिमित्त हँकारयो॥
देखि असुर आमिष तिहुँ भूपति अतिभयभीत भये मनमाहीं।
कुम्भयोनि तवबैन सैन ते कह्यो करिय शंका कछु नाहीं॥
भखि वातापि पलल पलमाहीं खलहि पचाय हरव द्विज त्रासा।
असकहि वैठि गयेभोजन हित परसन लग्यो दनुज सहुलासा॥
यकक्षण माहिं कुम्भ सम्भव सब दनुजामिष भक्षणकरिडारयो।
तब लै नाम अनुजकर इल्वल ऊचे ध्वनि ते वेगि पुकारयो॥

दो०—टेरतही मुनि उदर ते, भय प्रद महा गभीर।
गर्जत वारिद पटल सम, निकरयो प्रवल समीर॥
इत विलम्व लखि अनुजकर, दनुज वारही वार।
निकरु निकरु वातापिद्रुत, रह्यो सचिंत पुकार॥

तेहिक्षणविहँसि कह्योऋषिनाथा * अव कहँ भेट अनुजके साथा ॥
सो मम उदर माहिं पचि गयऊ * सुनिअतिचकितदनुजपतिभयऊ
सभय जोरि कर वचन उचारा * क्षमिय नाथ अपराध हमारा ॥
करिय निदेश दास कहँ जोई * शिर धरि करहुँ आशु मैं सोई ॥
कह कुंभज तुव सम जगमाहीं * सम्पति शालिअपरकोउनाहीं ॥
यह तीनहु भूपति मतिमाना * धन अभावते दुखितमहाना ॥
हमहूं काहि दनुज यहि वेरा * अहै प्रयोजन कछु धन केरा ॥
सो विचारि जेहि मधि लवलेशा * होइ नअपरजननक्षतिक्लेशा ॥
यथा शक्ति धन हम सब काहीं * करि प्रदानयशलहु जगमाहीं ॥
पुनि सहर्ष तेहि काल सुरारी * वहुधन पट भूषण मनहारी ॥
वृहत हेमरथ माहिं भरावा * अश्व विराव सुराव जुरावा ॥
नृपन सहित रथ मुनिहि चढ़ाई * विदा कीन्ह सादर शिरनाई ॥

दो०—घटज नृपन धन भागदै, अरु तिन भवन उतारि ।
आये एक निमेष महँ, निज शुचिधाम मझारि ॥
लोपामुद्रहि अभिलषित, भूषण वसन ललाम ।
सहितनेह अर्पण कियो, कुम्भ योनि तप धाम ॥

सो०—रहत सुजन कर ध्यान, निजहितते वर परहितहि ।
यहि सिख कीन्ह प्रदान, यहिप्रसंगमधिघटजऋषि॥
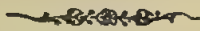
* जो कथा इस सर्ग में वर्णित हुई है वह अविकल महाभारतान्तरगत वनपर्व के ६४–६६ अध्याय के अनुयायिक है । परन्तु वाल्मीकीय रामायण में इल्वल वातापि का उपाख्यान भिन्न प्रकार सेवर्णित हुआ है (वा. रा. आरण्य का. देखो)

ऊनविंश सर्ग ॥ १६ ॥

अगस्त्य पुत्र इध्मवाह का जन्म ॥

दो०—मुनि पत्नी आभरण पट, पहिरि हिये हुलसाय ।
आय स्वामि अरविन्दपद, वन्दि ठाढ़ि शिरनाय ॥
कुंभयोनि तिय पाणिगहि, निज समीप बैठारि ।
सह सनेह कह अब कहा, उर लालसा तुम्हारि ॥

लज्जित वदन जोरि दोउ हाथा * कह्यो सुमुखि हे जीवननाथा ॥
जेहि प्रति कृपा स्वामि कर रहई * काह अलभ्य ताहि जगअहई ॥
जोइ आश प्रभु मम उर माहीं * नाथ निकटअविदितसोनाहीं ॥
तियहि विपति अनपत्य समाना * अहै न आनसकलजगजाना ॥
सुनि तिय वदन वैन मुनि नाहू * हीय हर्षि हँसि कहस उछाहू ॥
उर विचारि यह कहहु पियारी * सहस सुवनकी आशतुम्हारी ॥
कै गुणज्ञ सुधि सरल स्वभाऊ * यकसुतलहनकितवचितचाऊ ॥
सुनि पतिवचन सती मुनिघरनी * शुचिबुधिसदनिधर्मद्युतिधरनी॥

दो०—करि विचार उरमधि क्षणक, कह प्रभु हमरे जान ।
बहु असाधु सुत ते भलो, यकसुत सुहृदसुजान ॥
शेष शक्ति शत शत सहस, शक्ति वर आधार ।
अग नग क्षिति यतचराचर, जाहि सुमन समभार ॥

सो०—यक नय विज्ञ भुवाल, अगणित प्राणिन पालहीं ।
यक धर्मही कृपाल, धारण किये असीम जग ॥

यक समीर ही कृपा निधाना * अहै समस्त जीव कर प्राना ॥
बसत जीव यत सिन्धु मझारी * जीवन रूप तिनन्ह यकवारी ॥
सोइ सुत जोइ सुपूत गुसांई * अरु कुपूत जननी मल नांई ॥
दुरि इन्दुर दृग ओट सदाई * करहि हानि जब अवसर पाई ॥

पर कुपुत्र कुल गौरव आशू * करत प्रकाश भाव ते नाशू ॥
सून गोष्ट बरु संतत रहई * परभल दुष्ट धेनु नहि अहई ॥
तिमि कुपुत्र ते बिनु संताना * रहन सहसगुणभलभगवाना ॥
केवल सुत लहिं लाहुन कोई * जासु सुपुत्र पाव सुत सोई ॥
सुकृत सुशील एक सुत जासू * मंगल मोद खानि गृह तासू ॥
अरु बहु सुतते यक सुतकाहीं * सीख देन बड़ दुस्तर नाहीं ॥

दो०–पुनि यक सुत यासों भलो, यदि कुचालि सो होय ।
तो यत अघवहुसुतकरहिं, तत करि सकी न सोय ॥
बहु कुपुत्रते कुल सुयश, इमि बेगिहो बिलात ।
बहुरुजग्रसितशरीरजिमि, आशु नाश ह्वै जात ॥

सो०–बहुरि मातु पितु केर, बहु सन्तति उत्पत्ति ते ।
होत अनिष्ट घनेर, शारीरिक अरुमानसिक ॥

ताते यक सुवन गुणवाना * चाहति मैं प्रभु कृपा निधाना ॥
धर्म अमिय रस संयुत वानी * सुनि सहर्ष कुंभज तपखानी ॥
परम सनेह सहित इमि कहेऊ * होई पूर प्रिये जोइ चहेऊ ॥
ऋषिवर ते कछु काल मझारी * भई गर्भवति नृपति कुमारी ॥
बीते जब सम्वत्सर साता * जन्मे तब दृढ़स्य विख्याता ॥
होहि ज्ञान तेहि शिशुहि निहारे * यकयक अँग जनुप्रभासोंढारे ॥
वदन कांति मन रुचिर अनूपा * प्रकट शांति रस जनुधरिरूपा ॥
मुखचालन लखि होत प्रतीती * मनहुँ षडंग पढ़त सह प्रीती ॥

दो०–मुनि पुंगव कलशोदभव, भव दुर्लभ सुत पाय ।
सहित प्रीति पालत सतत, मख पावक की न्याय ॥
वाल वयस महँ इध्मनित, लावत सो सुकुमार ।
इध्मवाह यहि हित परयो, नाम तासु संसार ॥

सो०-सुम समान सुत भाव, यक सुरभित यकगंध गत।
जेहि सौरभ जगछाव, सोइ सुत वाँछित मातु पितु॥
(महा भा. वन प. ९९ अ.)

विंश सर्ग ॥ २० ॥

नहुष की इन्द्रत्व प्राप्ति, अगस्त्य प्रति पादप्रहार व भृगु शापसे तत्पतन

दो०-बधि त्रिशिरा[१] वृत्रासुरहि[२], जबहि त्रिदशपुरराय।
द्विज वध पातक लिप्त ह्वै, छिपे सलिल मधिजाय॥
विनुशासकतबजगतमहँ, छयो आपदा घोर।
धर्महानि अधरम प्रवल, बढ़े क्रूर खल चोर॥

निजनिज धर्म त्याजि सबप्रानी * करहि कर्म कुत्सित मनमाना॥
उठि जप तप मख नेम अचारा * भा प्रपंच वंचकन प्रसारा॥
मानहिं मातु पिता गुरु नाहीं * वैर विरोध परस्पर माहीं॥
रहहिं सशंकित सुर मुनि वृन्दा * क्षुभितप्रजागणविगतअनन्दा॥
पाप ताप वश जगत मझारा * संकट छाव अनेक प्रकारा॥
सूखे वन लखाहिं चहुँ ओरा * दहत धधकि दावानल घोरा॥
सकल जलाशय सलिलविहीना * यत जलजन्तु वारिविनुदीना॥
सरिसन प्रवल स्रोत रह नाहीं * जहँतहँ जल डावर दरसाहीं॥
अनावृष्टि कहुँ कहुँ जलप्लावन * गिरतघरहि कहुँकुधरभयावन॥
विनुघनपतनअशनिअनिवारित* उवत मंदअरविन्द वन्धुनित॥

१-टिप्पणी ३४ देखो। २-टि. ३५ देखो।

दो०—करहि अशिव रव शिवाशिव, भव भैरव भय छाव ।
हाहा ध्वनि दिन रैन घन, आनँदकेर न नाँव ॥
तबऋषिमुनिसुरपितरगण, जगहित शोचि उपाय ।
सुयशि मनीषी नहुष ढिग, कह्योसकलमिलिजाय ॥

सो०—जिमिविनुनाविकनाव, पतिविनुतियरुजिअगदविनु
तिमि पुरजन विनुराव, संकट उत्कट प्रकट नित ॥
विनु नायकतिहुँ लोक, खिन्न विपन्न विषाद मय ।
मेटहु जग जन शोक, राजि विशुचि सुरराजपद ॥

सुनि इमि नहुष नीतिमयवानी * कहअसवचनविनयरससानी ॥
यहि पद योग्य न शक्ति हमारी * मूष कि सकहि शेष भर धारी ॥
त्रिदशराज्य सोइजन सकपाली * जोअतिनिपुणअमितबलशाली
तुम सब केर अधिप केहि भांती * है हौं मैं निर्बल नर जाती ॥
कितनहु दीप प्रकाशहि जोई * तबहु न तरणि तेज सम होई ॥
सिन्धु तरंग गोसपद माहीं * कबहूं उठत लखा कोउ नाहीं ॥
तुंग सुमेर शृंग कर भारा * बहिसक मसक न कोइ प्रकारा ॥
निजबल लंघि करन कोइ काजू * निन्दनीय कह सूरि समाजू ॥

दो०—मान प्रतिष्ठा लोभ वश, स्वबलहि लखत न जोय ।
तिनन्हकेरपरिणामयक, अवसि हासकर होय ॥
पद हित तोषा मोद अरु, छल प्रपञ्च उत्कोच ।
यह उपाय सोइ साधहीं, जेहि न लाज संकोच ॥

सो०—मैं शुचि नृप कुलजात, नीचवृत्तिमधि रुचि न मम ।
केहरि कबहुँ न खात, पर अहेर कृत आमिषहि ॥
रहहु रंक की राज, मम विचार महँ दोउ सम ।
पर न लेब यह काज, जो मम बलते है परे ॥

सुनि नृपमुख इमि वचन पुनीता * कहऋषिमुनिसुरपितरसप्रीता ॥
करिय न बल अभाव सन्देहू * तप प्रभाव हम सब कर लेहू ॥
अहैं लोक यत लोक मझारी * यक्ष रक्ष सुर ऋषि मुनि झारी ॥
करिहौ जेहि दिशि दृष्टि भुवाला * सोहत तेज होइ तत्काला ॥
लहि अस अतुल प्रताप प्रभाऊ * जगत प्रजन प्रतिपालियराऊ ॥
लखि न वचाव देव दृढ़ प्रणते * भेसहमतनृपविधिलिपिवशते ॥
राजि नृपति सुरपति वर आसन * हियमधिलग्योरजोगुणभासन
यक दिन नृपसुर विपिन मझारी * इन्द्ररमणिशचिकाहिंनिहारी॥

दो०—ह्वै कामातुर मोह वश, कीन्ह तासु अभिलाष।
तब स्वधर्म रक्षा निमित, गइ शचि सुर गुरु पास ॥
जानि नहुष[१] वृत्तान्त यह, कोपि कृतांत के न्याय।
दियनिदेशभृत्यनशचिहि, वरवस लावहु जाय ॥

सो०—तब सुर मुनि समुदाय, बोले सविनय वैन इमि।
सुनिय भूप सुरराय, क्रोधउचितनहिंआपुकहँ ॥
सुजन सुमति जनजोय, तेन क्रोध वश होहिंकभु।
तुम सन अहै न गोय, क्रोध समाननअपरअरि ॥

क्रोध व्याधि तिष्ठति जेहि माहीं * चाहिय अपर शत्रुतेहिनाहीं ॥
जिमि दावानल विपिन अराती * मनुजन शत्रु क्रोधतेहिभांती ॥
जेहिविध रुजशरीर बल नाशी * तिमिअमर्ष नाशत यशराशी ॥
जेहि प्रकार झटिका पलमाहीं * करत धराशायी तरुकाहीं ॥
तिमि उर होत क्रोध संचारा * करत नाश पुरुषारथ सारा ॥
गात व्याधि इव वदत सुवोधा * मानस विकट व्याधि हैक्रोधा ॥
यहि व्याधिहि संतत तुमकाहीं * आवन निकट देन चहि नाहीं ॥
मानस व्याध दमन हित राजू * अहै न अपर वैद्य कर काजू ॥

दो०—मनुजन अहै अधीन नहिं, जड़ शरीर यह जोय।

भये रुग्न तेहि वैद्य अरु, अगद प्रयोजन होय ॥
पर नृप मानस पीर कर, अपर न कोइ उपाय ।
तेहि कर औषधि रहत है, निजकर माहिं सदाय ॥
यहि शरीर मधि अहै यक, मनहि अराति प्रधान ।
ताहि दमन जोइ जनकरत, सोइ परम मतिमान ॥
सो०—शुचि चित नदि अनुहारि, पुण्यतीर्थ इन्द्रियदमन ।
सत्य शौचता वारि, सुकृति लहरि अरु शीलतट ॥
सानुराग जन जोय, अभिषेकहि यहि सरित महँ ।
महाभाग है सोय, बढ़ महत्व तेहि नित्यप्रति ॥
मनही यक इन्द्रियन अधीशा ❋ सो आतम सो भिन्न महीशा ॥
आतम सर्व विकार विहीना ❋ तेहि न जान जड़बुद्धिमलीना ॥
सोइ इन्द्रियन कर्म लखि नाना ❋ करत आतमहि कारक ज्ञाना ॥
वारिदपट लहि लखिजिमिधावत ❋ चन्द्रहिचलतअबुझहियभावत ॥
पुनिगगनहि विलोकिभ्रमशीला ❋ कहत अकाश केर रँग नीला ॥
जिमि असत्य यह सकल सुरेशा ❋ तिमि आतम विषयाशिनलेशा ॥
जबलौं इन्द्रिय दमन न होई ❋ आतमहि तबलौं जानन कोई ॥
जिमि अतिशयमलीनजलमाहीं ❋ भानुविम्व प्रतिभासत नाहीं ॥
दो०—तिमि आनँदमय आतमा, शुद्ध बुद्ध अविकार ।
मलिन इन्द्रियन मधि नहीं, भासत कोइ प्रकार ॥
स्वच्छ वस्तु मुकुरादि मधि, जिमिप्रतिविम्बविभास।
प्रयत बुद्धि मधि होत तिमि, आतम केर विकास ॥
सो०—ताते सुनिय नरेश, आत्मवोध तुम कह उचित ।
खलइन्द्रियवशलेश, होन चही नहिं आपु कहँ ॥
अहै शची पर नारि, परकामिनि की करन रुचि ।
देखिय हृदय विचारि, मातृ गमन कर भेद इव ॥

शुचिचितजननिजतियहिविहाई * लखहिंअपरतियजननिकिनाई॥
तियहि गृहाश्रम केर अधारा * तेहि अपमान ते पाप अपारा ॥
करत अनादर तियकर जोई * प्रकृति केर अपमानक सोई ॥
जहँ अबलान अनादर नाहीं * श्री सदाय बस तेहि गृह माहीं ॥
तिय रक्षा सब विध सुरराई * उचित कर्म मानवन सदाई ॥
जे लम्पट कामुक कुविचारी * ते कुदृष्टि ते लख पर नारी ॥
पर सज्जन गण जौन प्रकारा * रक्षतजननिभगिनिनिजदारा॥
अपर नारिहू कर तेहि नाई * करहि धर्मरक्षाहि सदाई ॥

दो०—भूमिपतित जलविन्दुजिमि, रविके ताप विलात ।
तिमि सम दम तप शौचश्री, परतिय लोभतेजात ॥
फूटे घट मधि अधिक क्षण, जिमिठहरतनहिंवारि ।
शील सुकृतियश रहत नहिं, तिमिलम्पटनमझारि ॥

सो०—यह विचारि उर माहिं, चित्त शुद्ध राखिय सदा ।
धरिय भूलिहू नाहिं, पद अधर्म पथ महँ कबहुँ ॥
अमियसरिससुखानि, विभव विमोहित नहुष कहँ ।
यहिविध नाहिंसुहानि, ज्वरग्रासितकहँअन्नजिमि ॥

कह ऐश्वर्य काहिं बुधिवाना * विपद जालकर वीज समाना ॥
ज्ञान केर आवरण स्वरूपा * मुक्तिमार्ग कर अर्गल भूपा ॥
केवल विषकहँविष नहिं मानिय * विषयकाहिंदारुणविषजानिय॥
विष यक मात्र जीव संहारत * विषय जन्मजन्मांत विगारत ॥
भुजग गरलहू से अधिकाई * अहै विषयविष अतिदुखदाई ॥
अहिविष डसेबिनु न कछु करही * पर देखतहि विषयविषचढ़ही ॥
जोय विभव मदते जगमाहीं * भयो अंध सूझत कछु नाहीं ॥
तासु विलोचन दोष विभंजन * अहै दरिद्रताहि यक अंजन ॥
हेतु रंक निज दशा निहारी * निजहिक्षद्रगनजननमझारी ॥

कोइ विध सतत दीनजन केरे * आवत गर्व आदि नहिं नेरे ॥
करहिं रंक जोइ संकट भोगा * सोइ तिनकेर अहै तप योगा ॥
विषय विहीन दीन जन जोई * तेहि षट रिपुसन शंक नकोई ॥
दो०-काम क्रोध मद ईरषा, आदि हुताशन केर ।
केवल यक ऐश्वर्य्यही, इन्धन अहे घनेर ॥
प्रभुता मद उनमत नहुष, हित उपदेश विहाय ।
कह्यो सुरन सों काह बहु, कथत मोहि भटकाय ॥
सो०-जबहि पूर्व सुर राज, हरयो धर्म मुनि नारिकर ।
अखहुकिहिसकुकाज, तब तेहि कबहुँ न वारेऊ ॥
बतबनाव यह सकल विहाई * लावहु शची काहिं द्रुत जाई ॥
नतु मैं सत्य कहत तुम पाहीं * कुशल अहै तुम सबकरनाहीं ॥
सतत अपर जन दोष ते दुर्जन * निज दुष्कर्महि करत समर्थन ॥
पुनि पश्चात जबहि दुखदाई * विषमय फल ताते प्रकटाई ॥
ह्वै निरुपाय तबहिं दिनराती * सहहिं दुसह संकट बहु भांती ॥
सुर गुरु देखि नहुष हठ भारी * हृदयचिन्तिशचिकाहिंहकारी॥
बोले सुनिय देवि अब आशू * होइ सकल संकट तव नाशू ॥
यहै रीति जग महँ चलि आई * जो वहु वरत सो शीघ्र बुताई ॥
तव पतिव्रता धर्म यहि वेरा * करी त्रान सब देवन केरा ॥
यहि क्षण यह तुम करहु उपाई * लेहु समय कछु शठसनजाई ॥
दो०-चित चेती नहिहोतनित, समय न यक सम जात ।
सदारहत उजियार नहिं, सदा रहत नहि रात ॥
समयविघ्नकरविघ्नहर, समय पावहूं जोय ।
तौखलकेरुचिमहँविघन, परी कोइ नहिं कोय ॥
सुमुखि पुलोमा नन्दिनी, सुनि सुरगुरु मुखबैन ।
जाय नहुषसन कह्यो इमि, लाज विवशनत नैन ॥

सो०-कछुक समय हम काहिं, मांगन दीजियकृपाकरि।
विदितअबहिंमोहिंनाहिं, हैं ममपति केहिदशा महँ॥

रोलाछन्द॥

करब खोज कछु काल स्वामि कर इत उत जाई।
यदि न मिले तौ अवशि होब तव वश सुरराई॥
सुनियहिविधशचि वानिमानितेहि नरपतिलीन्हा।
कछुदिन कोवदिअवधिविदा प्रमुदित तेहिकीन्हा॥
तब इन्द्राणि सहाय देवि उपश्रुति की पाई।
निजपति इन्द्रहि खोजि कह्यो निज दुखविलखाई॥
सुनि महेन्द्र कछुकाल चिन्ति निज हृदयमझारी।
बोले शठ सन जाय कहौ यहि विध तुम प्यारी॥
ऋषिन यान महँ जोरि तासुपै चढ़ि सहुलासा।
आवहु मम ढिग तबहिं पूर्ण होई तव आशा॥
सुनि सुरेश उपदेश आशु तहँते इन्द्रानी।
त्रिदश सभा मधि जाय नहुष प्रतिकह इमि वानी॥
सुनहु भूप जो समय बदेउँ सो भयो व्यतीता।
अब निज पति मैं तुमहिं करन सहमत सहप्रीता॥
पर प्रताप तव देखि एक अभिलाष हमारी।
करन परी सो पूर सुनिय सुरपुर अधिकारी॥
मम पति के बहु रहे वाजि गज यान विमाना।
पर तुम तिनते अधिक सहस गुण तेज निधाना॥
तिनकर अथवा विष्णु रुद्र आदिक सुर नर कर।
करन तुमहिं अनुकरण काज लज्जाकर नृप वर॥
उचित आपुकहँ अहै करिय अस वाहन कोई।
यक्ष रक्ष गन्धर्व सुरन जोइ सुलभ न होई॥

दो०-मम विचार महँ यान तव, वहन करहि मुनि वृन्द ।
बढ़ै वहल मर्य्याद तव, महूं लहहुँ आनन्द ॥
जेहि प्रकार वृश्चिकी कहँ, करत गर्भ निष्प्रान ।
होतदलित तिमिदंभिजन, उपजत मन अभिमान ॥
सुनि मदमत्त नहुष शचिवानी * कह्यो वचन तब सत्य सयानी ॥
कीन्ह विचार देवि तुम जोई * है अपूर्व वर वाहन सोई ॥
करन ऋषिन वाहन जगमाहीं * अल्पतेज धरकर कृति नाहीं ॥
यह सामर्थ जान सब काहू * केवल महीं कीन्ह यकलाहू ॥
देव दनुज किन्नर गन्धर्वा * मम सामुहे अहैं सब खर्वा ॥
अस सामर्थ कोउ कर नाहीं * मम निदेश जो लंघि सकाहीं ॥
सुमुखि तुम्हारि मनोरथ जोई * पूरन करव वेग हम सोई ॥
अवशि यान मम जिते मुनीशा * वहिहैं मम आयसु धरिशीशा ॥
दो०-लखिहौ तुम अति शीघ्रही, विपुल प्रताप हमार ।
यहिक्षण अब निश्चिंतचित, जाहु स्वधाम मझार ॥
कछुदिन मैं सब जगत कहँ, निजप्रभावदिखराय ।
पुनि पटरानी तुमहि करि, लहब मोद अधिकाय ॥
सुनियहिभाँति नहुषमुखवाणी * लै विदाय गमनी इन्द्राणी ॥
तब मदान्ध नृप ऋषिन बुलावा * यह निदेश सबकाहिं सुनावा ॥
बांधि सकलतुम निजनिजपारी * करहु वहन शिविकाहि हमारी॥
सुनिऋषिगण यह दारुणवानी * सहमत भये सुरन वर जानी ॥
पारी सहित तबहिं ऋषिनाना * बहन लगे शठ नृपकर याना ॥
यदपि क्लेश बहु ऋषिगण पावहिं * परभयवश नहिं रसाडुलावहिं ॥
इमि कछु दिवस गये पुनराई * पारी ऋषि अगस्त्य कर आई ॥
तब भृगु अतुल तपोवल धारी * आये कुम्भज धाम मझारी ॥
दो०-भृगहि घटज सन्मानि पुनि, पूँछेहु आवन हेत ।

कह भृगु तुम हम सन कहा, पूंछत तपो निकेत ॥
नहुष जोइ शठता करत, सो अब सहो न जाय ।
ताहि निवारण हेतु मुनि, कीजिय कोइ उपाय ॥
सो०–सुनि यहि विध भृगुबैन, कहन लगे घटयोनि इमि ।
कोउ कर कछु वश हैन, शठ अभिमानी नहुषसन ॥
लहिसुरवर तेहिअस अभिमाना * गनत सबन तृणपुञ्ज समाना ॥
बल प्रचण्ड तेहि दीन्ह विधाता * कोतेहिखण्डिदण्डिसकभ्राता ॥
कृष्णसर्प के सन्मुख माहीं * ठहरत दीप ज्योति जिमिनाहीं ॥
तिमि दुरातमा नहुष अगारी * होहिं तेजहत सुर मुनि भारी ॥
जोइ कुकृति खल क्रूर कुचाली * कुटिलकुशीलकपटिअघशाली ॥
तेसिसन रारि अमंगल नाना * दुर्जन रारि सदाभय माना ॥
यह सुनि भृगु अस वचन उचारा * लखिय देवकरि हृदयविचारा ॥
हैन काज अस जग मधि कोई * किये यतन जोइ सिद्ध न होई ॥
मूंदि नयन मोहि देहु निदेशू * हमकरि तव जटि माहिप्रवेशू ॥
ह्वै अदृश्य करि शठहि विनाशा * टारव त्रिदश ताप त्रय त्रासा ॥
नहुष मोहि यह किहे उपाई * देखि न सको कबहुँ मुनिराई ॥
पाइ न जब शठ लखि हम काहीं * तब हरि सकी तेज मम नाहीं ॥
दो०–सुनि तथास्तु तब घटज कहि, किय मुद्रित दोउनैन ।
तेहि अवसर मुनि जटामहँ, प्रविशे भृगु तप ऐन ॥
सो०–भृगवध हित मृगराज, सघन भारिमहँ दुरतजिमि ।
तिमिजटि महँ भृगु भ्राज, दलन प्रवल खल गर्व घन ॥
तब अगस्त्य मुनिवर कुलदीपा * यान वहन गे नहुष समीपा ॥
सानँद घट योनिहि महि पाला * जोरेहु यान माहिं ततकाला ॥
छिपे जटामधि भृगु ऋषि राजू * देखत सकल नहुष करकाजू ॥
जोरि यान महँ मुनिहि भुवारा * कशा प्रहारत वारहिं वारा ॥

पर मुनिवर कुम्भंज उर माहीं ❋ आयहु क्रोध लेशहू नाहीं ॥
पुनि सरोष मुनि शीश मझारा ❋ वाम चरण कसि नहुष प्रहारा ॥
रहे जटा मधि भृगु तप ऐना ❋ लागत चरण अरुण करि नैना ॥
बोले गिरा गभीर सक्रोधा ❋ सुनरे अधम नृपति निर्बोधा ॥
तैं अगस्त्य ऋषि शीश मझारी ❋ कीन्हे पद प्रहार कुविचारी ॥
यहि अघ वश ह्वै भुजग कराला ❋ गिरु शठ भूतल महँ यहि काला ॥

दो०-भृगुमुख निकरत शाप यह, नहुष सर्प तनु धारि ।
भूतल महँ निपतित भयो, हर्षे सुर मुनि झारि ॥

सो०-पुनि सुर मुनि समुदाय, त्रिदश राज्य शासन निमित ।
पाक शासनहि लाय, सिंहासन आसीन किय ॥
व्यापत चित्त मझार, अर्थ गर्व ते अन्धता ।
निश्चित तासु सँहार, जेहि ग्रासत उपव्याधि यह ॥

महा भा. उद्योग पर्व ९-१४ अ.

एकविंश सर्ग ॥ २१ ॥

विन्ध्याचल वृद्धि व तन्निवारण हेतु देवता तथा ऋषिगण का महर्षि अगस्त्य के शरणापन्न होना ।

दो०-भ्रान्ति रहित भगवत भजी, भ्रमण शील निष्काम ।
नाद विशारद सुहृदवर, नारद मुनि तप धाम ॥
एक समय विचरण करत, निज इच्छा अनुसार ।
तुंग शृंगधर विन्ध्यगिरि, गे देवर्षि उदार ॥

रामगीती छन्द ॥

मुदप्रद सदा नर्मदा जलसों धौत भूधर काहिं ।
लखिचकित मुनिजेहि अतुल शोभावनत वर्णत नाहिं ॥

बहुरंग के तरु निकर सों शोभित अचल वर सोय।
जेहि देखि यक नवरंग भूमि समान अनुभव होय॥
कम्पत लतादल अनिल ते सो रुचिर नर्तकि न्याय।
जनु दर्शकन मन हरि रहे वहु हावभाव दिखाय॥
कलकण्ठ कूजन श्रवण रंजन होत सुनि इमि ज्ञान।
जनु सप्तस्वर करि अतिक्रम वजि रह्यो वीन सतान॥
मधुमत्त मधुकर निकर गुञ्जन यहि प्रकार सुहाय।
मानहु रसिकदल रागरागिनि रहे सानँद गाय॥
हिन्ताल ताल तमाल शाल विशाल पाँतिन पाँति।
इमि सोह मानहुँ नृत्यगृहके खंभनचय वहुभाँति॥
कर्पूर कदली वेत्र-भित्ति कहुँ लसत कुंजाकार।
मानहुँ श्रमित अभिनेतृ के विश्राम हित आगार॥
नानालता तरु पुहुप कीर्णित तुंग शृंग निहारि।
सो वदलि परजनु करत वर्द्धन दृश्य सुख मनहारि॥
शुचि शुभ्र निर्भरणी विमल जनु रजत सूत्रन न्याय।
पट क्षेप उद्धारन निमित इत उत परत दर्शाय॥
यहिभाँति गिरिशोभा निरखि ऋषिराज ज्ञाननिधान।
लागे करन सौंदर्य स्रष्टा विश्वपति कर ध्यान॥
लखि परत यत संसार मधि यह प्रकृति शोभा जोय।
प्रणयी जनन कहँ नित विरह वेदना वर्द्धक सोय॥
सो दृश्य सुख केवलहि तासु अदृश्य प्रणयिनि केर।
विच्छेद सुरति कराय तेहि क्षण देत क्लेश घनेर॥
ज्ञानी सतत सुविवेक तरि सौंदर्य्य सागर माहिं।
संचालि बहु विध द्वीपलंघि अभीष्ट थलकहँ जाहिं॥
पर अज्ञजन तेहि घेर मधिपरि ताहि माहिं सदाय।

भरमत बहुरि आनन्द मानत अनित सुखकहँ पाय ॥
निर्बोध जन सामान्य सुख लहि मानही तेहि सार ।
पर मूढ़ मन चञ्चल तनिक तैं करसि नाहिं विचार ॥
सुखकर प्रवर्तक अहै को अरु कौन तोहि अज्ञान ।
प्राकृतिक सुख संभोग की यह कीन्ह शक्ति प्रदान ॥
आनन्द कोइ प्रकार कर लहि प्रकृत प्रेमी जोय ।
आनन्द मय गोविन्द कहँ सानन्द सुमिरहिं सोय ॥
पर मूढ़गण लहि अचिर सुखतेहि माँहि फँसि सबकाल ।
पुनिपुनि जनमअरु मरणकर भोगहिं कलेश कराल ॥
है चक्रसम तिनकी दशा सो यहि प्रकार लखाय ।
भ्रम परिधि तृष्णा केन्द्र स्वारथ व्यास रेखा न्याय ॥
पर सरल व प्रकृती साधु की गति सरल रेख समान ।
तजि कुटिल पथ सन्तत करत सतमार्ग माँहि पयान ॥

दो०-विन्ध्याचल देवर्षि कहँ, आवत लखि हर्षाय ।
लेन हेतु आगे बढ्यो, हृदय न प्रेम समाय ॥
ऋषिवर के तपतेज ते, गिरि कन्दर तम भूरि ।
सहगिरिवरमानसतिमिर, भयहु आशुही दूरि ॥

शैलराज कर शील निहारी * भये देव ऋषि हर्षित भारी ॥
प्रकृत साधु संतत यह रीती * केवल करहिं प्रेमसों प्रीती ॥
गृह आगत अतिथिहि जनजोई * आदर करहिं नम्र अति होई ॥
ते नर सज्जन देव समाना * होततिहूँपुर तिनन्ह बखाना ॥
जग दिखाव हित लहन बड़ाई * जेजन करहिंअतिथिपहुँनाई ॥
ते नर धूरि धूह धरणी के * देखत ऊँच नीच करणी के ॥
विन्ध्याचल साञ्जलि शिर नाई * सविनय मुनिहिभवनमहँलाई ॥
दिव्य सुआसन दै वैठारेउ * करिअर्चन इमि वचनउचारेउ ॥

पाय तुम्हार दरश ऋषिराजू * भयहुँ मान्यगिरिकुलमहँआजू ॥
भो सम धन्य न अन्य लखाई * दिहौ दरश जेहि गृहप्रभुआई ॥
भूधर मुखसुनि यहि विधवैना * तासु परीक्षा हित तप ऐना ॥
तेहिदिशिलखितजिशीतउसासू * भये मौन जनु प्रकृत उदासू ॥
दो०—यहलखिअहमितविन्ध्यगिरि, कह्यो दोउकरजोरि ।
प्रभु पावन पद पाल महँ, अहै विनययहमोरि ॥
मम वैभव मधि काह अस, लघुतालख्यो कृपाल ।
तज्यो शीत निश्वास तुम, जेहिनिमित्त यहिकाल
सो०—पूर्वजगण मतिमान, मेरु आदि प्रर्वतन कहँ ।
कुधर उपाधि प्रदान, कियेतेहि भागीसकलगिरि ॥
असबल ममतनुमाहि, जाते मही अकेल प्रभु ।
यहिसमस्तक्षितिकाहिं, विनु श्रमधारणकरिसकहुँ ॥
जोइ हिमिगिरिकर सुन्योवड़ाई * हेतु तासु मैं कहहुँ बुझाई ॥
सो शिवश्वसुर शिवापितुअहेऊ * यहिहितजगतमानबहु लहेऊ ॥
नतु यत शैल अहैं जग माहीं * हिमगिरिसोहिन्यूनकोउनाहीं॥
अरुलखियत असकुधर न कोई * जेहि मधि कछुकदोषनहिहोई ॥
अहै नीलमय नील धराधर * मन्दर मन्दप्रभा निशिवासर ॥
मलय माहिं वश अहि समुदाई * रैवत सम्पद रहित सदाई ॥
को भल कह त्रिकूट गिरि काहीं * मिलितकूट जेहि नामहुँमाहीं ॥
किष्किन्धादि अपरगिरि जोई * धरणि धरण बलराख न कोई ॥
कहिय नाथ का इन सब माहीं * हौं मैं श्रेष्ठ धराधर नाहीं ॥
कौने विषय माहिं मतिमाना * मैं नहिं अहौं सुमेरु समाना ॥
दो०—कहिय सदय ह्वै यहिसमय, हृदय ताप कस व्याप ।
काह चखन चाहत लखन, सेवक केर प्रताप ॥
अतुल विपुल बलअहै को, सकल कुलाचल माहिं ।

सो अनुमतिकरतहि तुरत, विदितकरहुँ प्रभुपाहिं ॥

सो०—शन स्वभाव अनुहार, है कुटुम्ब द्वेषिन प्रकृति ।
यहि संसार मझार, नराकार कुक्कुर सोई ॥

शील मान धन प्राण बड़ाई ❋ गृह विच्छेद ते सकल विलाई ॥
गृह बादही सोहिं ह्वै दीना ❋ पुनितनुतजहिंसहायविहीना ॥
काठ राशि जिमि दारि कृशानू ❋ तेहि सँग होत स्वयं निर्वानू ॥
तिमि कुटुम्ब द्वेषी जगमाहीं ❋ दलमलि स्वजन बन्धुगणकाहीं
अंतमाहिं लहि अपयश घोरा ❋ होहिं नष्ट दुखकेर न छोरा ॥
ज्वर रोगहि भाषत बुधिवाना ❋ है कृतांत कर अस्त्र प्रधाना ॥
यदि सो प्रकट लघु कारण द्वारा ❋ पर तेहि वेग विषम दुर्वारा ॥
जन्म जोई तनुते ज्वर पावत ❋ तेहिनाशनमधि भटकनलावत॥

दो०—तेहि प्रकार गौरव विभव, अहै गर्व कर मूल ।
उपजत जाते ताहि के, होत बहुरि प्रतिकूल ॥
यदपि दोउ कर एक सम, मूल असार लखाय ।
पर ज्वर ते अभिमान मद, अनरथकरअधिकाय ॥

नरिन्द छन्द ॥

षट दिन व्यापी ज्वरहि जीर्ण ज्वर वुधगण करतबखाना ।
पर नित नूतन भाव ते प्रकटत विषम शत्रु अभिमाना ॥
उपजत रोग ताहि नाशन हित यदि नहि करहि उपाई ।
बढ़ि क्रमशः यकदिवस अवशि सोजिमितनुकाहिं नशाई ॥
तेहि प्रकार मानस विकार संचार होतही काला ।
द्रुत उपशम विनु किये बृद्धि ह्वै करत अनिष्ट कराला ॥
धनते श्लाघा श्लाघा ते मद मदते जड़ता होई ।
जड़ता अंधता प्रकटि के नरहि अंत महँ सोई ॥

अलख कूप मधि पातित करकै तेहि कुपंथ गति रोकी ।
तासन पीडित जन समूह कहँ करत निशंक विशोकी ॥
परद्वेषी न दमन हित कोई यतन प्रयोजन नाहीं ।
सो नदि कूल जात पादप इव निपतन शील लखाहीं ॥
दो०–गिरि मुख गर्वित वचन सुनि, किय विचार मुनिराय ।
यहि शठकर मद नाश हित, चाहिय करन उपाय ॥
विहँसि मनहि मन देव ऋषि, कह्यो बहुरि इमि बैन ।
गिरिवर जोइ विचार तव, मृषा तनिकहू है न ॥
सो०–जगमधि कुधर जितेक, सब तुम कहँ बड़ मानहीं ।
पर सुमेरुही एक, जानततुमकहँ तुच्छअति ॥
यहिहितहमनिश्वास कियत्याजू * अबजस रुचै करहु तस काजू ॥
असकहि मुनिवर परम प्रवीना * माँगिविदाय गमनपुनिकीना ॥
तब विन्ध्याचल हृदय मझारा * करनलाग यहिभाँतिविचारा ॥
धिकधिक निरुद्यमिहिजग माहीं * शतधिक ज्ञात पराजितकाहीं ॥
होत पराभव रिपुघ्न जोई * जगमधि जियत मृतकसमसोई ॥
द्रोहि दाव दाहत उर जाही * सूखकाठ सम जानिय ताही ॥
केहि प्रकार ते मैं यहि काला * हरहुँ मेरुकर गर्व विशाला ॥
सुरपति अस विपक्ष मम भयऊ * जाते मोहि विपक्ष करि दयऊ ॥
दो०–नतु अबहीं यक लंफदै, उड़ि सुमेरु कहँ जाय ।
करि विदलित पलमात्र महँ, रजमधिदेतमिलाय ॥
हम सन केहि हित ईरषा, करत मेरु अज्ञान ।
काह प्रदक्षिण करत रवि, यहि हित तेहि अभिमान ॥
परयहि विषय माहिं हम काहीं * चिन्ता करन उचित है नाहीं ॥
लघुतरि निबल भवँर मधिपरहीं * सबल पयोधि पोत सम तरहीं ॥
बढ़त रोग रिपु रोक न जोई * तेहि सम अज्ञ न जगजन कोई ॥

शक्तिमान कर मान न तावत * करहिंप्रकाशशक्तिनहिंयावत ॥
वाल भानु सन्मुख सब जाहीं * भये प्रखर कर बहुरि पराहीं ॥
जब लगि रह कणरूप हुताशू * भखचकोर तेहिबिनहिंप्रयासू ॥
पर प्रज्वलित भये तेहि काहीं * कोउ नाहि परसिहू सकाहीं ॥
आजुहि मेरु गर्व गरु आई * करब खर्व सब जगहि दिखाई ॥

दो०—कलह द्रोह अनुचित सतत, यह जानत सब कोय ।
पर विवादही त्यागि जब, स्वार्थसिद्धिनहि होय ॥
तव विरोध यहि भाँति ते, साधत जे बुधिवान ।
जासन कोइ विध अंत महँ, परै नाहिं पछितान ॥

मेरु गर्व इतनहि लखि परही * जो रवि तासु प्रदक्षिण करही ॥
मैं यहि गर्व काहिं परि हरिहौं * भानु केर पथ रोधन करिहौं ॥
करियहि भाँति विचार अपावन * निज शरीर सो लाग बढ़ावन ॥
इमि गिरि अंग तुङ्ग नर भयऊ * परस गगन रविपथरुधिगयऊ ॥
मग प्रतिबन्धक ताहि निहारी * भयेचकित चित अचलतमारी ॥
रविगति रोधन ते चहुँ ओरा * छायो अन्धकार घन घोरा ॥
तिमिर प्रगाढ़ अभेद्य भयंकर * भयेविकललखिसकलचराचर ॥
तब सुर मुनि जग मंगल हेतू * गये दुखितचित द्रुहिणनिकेतू ॥
जोरि पाणि विधिकहँ शिरनाई * कहन लगे इमि सुर समुदाई ॥
तमसावृत सब जगत लखाई * यहि वारणहित करिय उपाई ॥

दो०—यह सुनि पंकज योनि कह, दै सब काहि प्रबोध ।
विन्ध्याचल मूढ़ता वश, किहिसभानुपथरोध ॥
बहुरि हृदय करि चिन्तवन, कह इमि सुरन बुझाय ।
कहहु सकल यह आपदा, ऋषिअगस्त्यढिगजाय ॥

सो०—कुम्भयोनि ऋषिराय, अतुलित तेज प्रताप धर ।
करिकोइउचितउपाय, हरि हैं गिरि कर भूरि मद ॥

नारिन्द छन्द ।

सुनियहिभाँति वचन सुरमुनिगण शीशनाय विधिकाहीं ।
हर्षित चित महर्षि कुम्भज के पहुँचि तपोवन माहीं ॥
वेद्गान रत ऋषिगण परिवृत हव्य गन्धयुत पावन ।
पर्णकुटी ऋषिकर अवलोकेहु जग अघ ओघ नशावन ॥
देख्यो तहँ कुरंग शावक गण दर्भ मुखन मधिधारी ।
मन्द मन्द गति गमनत प्रमुदित मुनि तनुजान पछारी ॥
कहुँ वल्कल कौपीन आर्द्र तरु शाखन माहि पसारे ।
प्रकटत विषयिहु उर विराग अति जिन पट काहिं निहारे ॥
वृकन वृष्ठ पै कतहुँ शशकगण क्रीड़त सहित उमंगा ।
कहुँ गोवत्स व्याघ्र शावक वहु करत केलि यक संगा ॥
कहुँ सारसी कण्ठ पै सारस धरि गल राजत अहेऊ ।
मनहुँ मूँदि लोचन भवमोचन केर ध्यान करि रहेऊ ॥
कहुँ अनुधावित कामुक हंसहि हंसिचञ्चु ते वारत ।
मनहुँ कहत यहि थलहु कामिता लाज न कछु उरधारत ॥
कतहुँ कपोती कहँ मृदुध्वनि ते रह्यो कपोत लुभाई ।
पर कपोति ऋषि ध्यान विघ्नहित इत उत भजत लुकाई ॥
ऋषि कुम्भज के ध्यान भंग भय करि मयूर समुदाई ।
केकी रव तजि निरव भाव ते विचरत हिय हुलसाई ॥
कहुँ कोकिल कोमल ध्वनिते जनु यह घोषण दै रहेऊ ।
यहि असार संसार सिन्धु कर पार कारि हरि अहेऊ ॥
वृत्त झरित सुविचित्र पुष्पचय देखि हृदय यह भावत ।
मनहुँ रूप यौवन कर जग महँ क्षण थायी दर्शावत ॥
स्वच्छ सरोवर सलिल माहिं कहुँ अमल कमल इमि भासत ।
जिमि अति निर्मल साधु हृदय महँ भक्ति प्रेम परकासत ॥

झुके वृक्षफल भारन ते इमि मनहुँ धनिन बुध काहीं।
शिक्षा देत नम्र ह्वै रहिये सन्तत यहि जग माहीं॥
मलय अनिल रव मिलित मधुपदल ध्वनि इमि देत सुनाई।
मनहुँ सहित स्वर साम गान तहँ रहे बटुकगण गाई॥
यहि प्रकार अनुपम सुघराई सुर मुनि वृन्द निहारी।
गये विमोहि भये उर गदगद नयन प्रेम वह वारी॥
तदनु पर्णशाला प्राङ्गन मधि जाय घटज ऋषि तीके।
हेरि प्रयत पदचिह्न प्रणति किय भक्तिभाव भरि नीके॥
मन प्रसन्न कर पुण्यछाप इव सो पद चिह्न सुहाई।
बहुरि दूरिते इमि अगस्त्य कहँ लखेहु विवुध समुदाई॥
ज्वलत अनल सम अंग अंग सब उज्वल वर्णि वनै ना।
ज्योति प्रचण्ड मारतण्डहु लखि मूँदि लेहि निज नैना॥
तेजपुंज ऋषि वरहि देखि इमि उरमधि होत विचारा।
मानहु तपोनिरत बड़वानल धरि महर्षि आकारा॥
लखि आगमन देव मुनिगण कर कुंभज तपो निधाना।
दै आसन सबकहँ बैठारे करि बहु विध सन्माना॥

दो०-पुनि सुरमुनि सन नेह युत, कुम्भज तपो निकेतु।
पूँछेहु अति प्रिय वचन ते, कहिय आगमन हेतु॥
कुम्भयोनि मुख वचनसुनि, सकल देव मुनिवृन्द।
सुराचार्य्य दिशि उतर हित, दृष्टि कीन्ह सानन्द॥

सो०-सतत श्रेष्ठ सँग माहिं, श्रेष्ठहि कर भाषन विधी।
अर्चिय सुरसरिकाहिं, सुरधुनिही के सलिल सों॥

द्वाविंशसर्ग ॥ २२ ॥

पातिव्रत्य धर्म प्रशंसा तथा विन्ध्याचल का दर्प चूर्ण ॥

दो०—इल्वलारि प्रति इज्य तब, कहन लगे इमि वैन ।
हे ऋषिनायक तव सरिस, धन्य अन्य कोउ है न ॥
किमिवरणहुतवतपोधन, महिमा अतुल अनूप ।
तप साधन रत जनन के, हो आदर्श स्वरूप ॥

यदपि विपिनगिरि गुहनमभारी * राजहिंवहुऋषिमुनिगुणधारी ॥
पह तुम्हारि मर्य्याद सदाई * है स्वतंत्र सब विध ऋषिराई ॥
जिनके वचन मात्र सों मुनिवर * होत पुण्य संचय प्राणिनकर ॥
सो लोपामुद्रा वर नारी * तिय तुम्हारिछायाअनुहारी ॥
अरुन्धती सावित्रि अहिल्या * शत रूपा सुनीति शांडिल्या ॥
स्वाहा आदि जासु गुण गाई * मानहिं निज कहँ धन्यसदाई ॥
करहिं सोइ नित तव पद पूजा * तुम सम भागशालि को दूजा ॥
अहैं सती तिय यत जग माहीं * लोपामुद्रा सम कोउ नाहीं ॥

दो०—सो तव उपवेशन परे, वैठहिं शीश नवाय ।
करहिंअशनजबआपुकहँ, प्रथमहिं लेहिं जिवाँय ॥
तुमते पाछे रैन महँ, शयन करहिं मुनिराय ।
पुनि प्रभातमधि जागहीं, तुमते प्रथम सदाय ॥

रोला छन्द ॥

सधवोचित शृंगार विना कवनेहु क्षण माहीं ।
तव भामिनि पतिव्रता परहितव सन्मुखनाहीं ॥
जब तुम रहत प्रवास माहिं तबसकल प्रकारा ।
अंगराग आभरण करहिं सो सति परिहारा ॥

जौन समय मधि सतीरुष्ट तुमकाहिं निहारैं।
रहै मौन तेहि काल नाहि कोइ वचन उचारैं॥
भये रुग्न तेहि हेरि होय तुमकाहिं नाहि दुख।
यहि हित तव सामुहे रहें तेहि क्षण प्रसन्नमुख॥
जब कोइ कृति हित तिन्हैं देहु अनुमति मुनिराजू।
तब सविनय इमि कहहिं पूर्ण जानिय सोइ काजू॥
असकहि तेहिकृति काहिं पूर्णकरितुरतदिखावहिं।
तव सेवा मधि कबहुँ अलस चित माहिं न लावहिं॥
जब टेरहु तिनकाहिं सुतनही तव मुख वानी।
गृह कारज तजि वेगि आय जोरे युग पानी॥
मृदु स्वर ते इमि कहहिं दासि प्रति काह निदेशा।
जो आयसु तुम देत करत तेहि विलँब न लेशा॥
बहु क्षण लगि कोइ काल रहें द्वारे पर नाहीं।
अनुमति विनु कोइ वस्तु देहिं नहिं कोउ जन काहीं॥
तव उच्छिष्ट फलादि काहिं सो सती सयानी।
महा प्रसाद समान भखैं उर आनँद मानी॥
गोभिक्षक गण काहिं अन्ननित प्रति विनु दीन्हे।
देव पितर गुरुजनन केर विनु अर्चन कीन्हे॥
आगत अतिथिहि सतत विना कीन्हे सन्माना।
तिय भूषण तव तीय करहिं कबहु न जलपाना॥
गृह अरु सब उपकरण स्वच्छ सन्तत सो राखैं।
करहिं अधिक व्यय नाहिं कबहुँ बहु वचन न भाखैं॥
करहिं न व्रत उपवास विना तव लहे निदेशू।
उत्सव सभा विनोद लखन रुचि तिन्हैं न लेशू॥
जब तुम निद्रित रहत ध्यान कै जप आसीना।

अथवा कोइ कृतिमाहिं लखहिं तुम कहँ लवलीना ॥
वहु प्रयोजनहु होय तबहुँ तुम्हरे ढिग माहीं ।
कबहूं तव प्रिय नारि आवहीं तेहि क्षण नाहीं ॥
जब तुम कोइ थल काहिं जाहु तब ते प्रति वासर ।
प्रथम करहिं तव ध्यान करहिं पुनि दरश दिवाकर ॥

दो०-पति चिरायु कामिनि सती, कज्जल अरुणपराग ।
कचवन्धन शुभआभरण, करहिंकबहुँ नहिं त्याग ॥
धर्म विरुद्धाचारिणी, पति द्वेषिनि जे नारि ।
तिन सँग कबहूं वारता, करहिं न तीय तुम्हारि ॥

विनु अनुमति अकेलि कोइ ठामा * जाहिंनाहिंतव रमणि ललामा ॥
जोय वस्तु भावत तुम काहीं * तेहितजिभाव अपरतेहिनाहीं ॥
नारि काहिं पति वचन सदाई * माननीय श्रुति वचन कि नाईं ॥
जोइ रमणि पति आयसु टारैं * सो निज कर परलोक विगारैं ॥
पति सेवा तजि अवलन दूजा * अहै नाहिं जव तप व्रत पूजा ॥
अन्ध वधिर अतिदीन मलीना * क्लीव कुरूप रुजी धन हीना ॥
कुब्ज आदि कैसहु पति होई * नारिन अर्चनीय नित सोई ॥
साध्वी तिय जानिय तेहि काहीं *जोइसुखिदुखिपतिसुखदुखमाहीं

दो०-पतिके सम्पति विपतिमहँ, सम भागिनि तियजोय ।
पितरश्वसुरकुलतारिणी, सती सुहागिनि सोय ॥
सबप्रपञ्च तजि जगतमधि, पतिही एक सदाय ।
पूजनीय कामिनी कहँ, हरि हर ते अधिकाय ॥

सो०-पति अनुमति विनुजोय, करहिं तीय उपवास व्रत[1] ।
कुलंगारिनी सोय, हरहिं आयु निजस्वामिकर॥

१-काशीखण्ड चतुर्थ अध्याय ।

बहुरि शरीर त्याजि सो नारी * बसहिं कल्पशत नरक मझारी ॥
जोइतियसुनिपति मुखकटुबानी * ठानहि उतर रोष उर ठानी ॥
सो तिय पतित अधम अनुहारी * लखहिंनमुखताकरसतिनारी ॥
विनु आयसु अकेलि जोइ नारी * गमन करहिं पर भवन मझारी ॥
जो तिय नहिं बड़ छोट निहारैं * मुख अश्लील वचन उच्चारैं ॥
जोइ गुरु जनन रहत भटकै ना * बोलहिं अति ऊँचे स्वर वैना ॥
जोइ कोउ कहँ अपवाद लगावहिं * कलहप्रपञ्च जाहि अतिभावहिं ॥
करत पतिहि तजि जोइ विलासा * करत जोइ पर पुरुषते हासा ॥
जोइ स्वामिकृत ताडित होई * करहिं पतिहु ताड़न रुचि सोई ॥
पतिते प्रथम अशन जोइ करहीं * पति वारण पै जोइ हठ धरहीं ॥
जोइ भाषत पतिसन रिरिआई * विचरत जोइ तिय लाजविहाई ॥
यहि प्रकार की हैं यत भामिनि * ते पापिनी नरक पुर गामिनि ॥

दो०—कोटिकल्प शत नरक वसि, बहुरि तीय तनु पाय ।
तरुण वयस वैधव्य लहि, भोगहिविपति सदाय ॥
वदत वेद अबलन उचित, तनु मनते पतिसेव ।
पतिही केवल नारिकर, धर्म तीर्थ गुरु देव ॥

तनु अनुगामि रहतजिमिछाया * चन्द्रहिज्योतिईश जिमिमाया ॥
जिमिदामिनिवारिदअनुगामिनि * पतिअनुगमनिरहैतिमिभामिनि
परिमित सुखद सुवन पितु भ्राता * परयकस्वामिअमितसुखदाता ॥
तियहि सतीत्व धर्म फलदाई * हयमेधहु मखते अधिकाई ॥
अहितुण्डक विलते अहि काहीं * जिमिधरि खैंचलेत पल माहीं ॥
यम भयते सति तीन प्रकारा * तीनहु कुलहि करत उद्धारा ॥
जेहि गृह होय सती कर वासा * तहँनजाहिं यमचरकरि त्रासा ॥
सती तीय के तेज अगारी * होहिं तपनहू तापित भारी ॥

दो–दग्ध होय दहनहु वहुरि, यत यहि त्रिभुवन माहिं।
तेज पदारथ ते सकल, मन्द प्रभा ह्वै जाहिं॥
सतीकुवँरिजेहिभवनमधि, धन्य तासु पितु मात।
जेहि पुर महँ सो गृहीवस, तहँ यमदूत न जात॥

परत सती पद जेहि जेहि ठामा * तहँतहँकी क्षितिविशुचिललामा
सलिल सती वपु परसन काहीं * राखत आश सदा मनमाहीं॥
परस सती तनु कहहिं जलेशू * रह्योआजुजलजाड्य न लेशू॥
अब मम सकल न्यूनता गयऊ * औरनविशुचिकरनबलभयऊ॥
सुन्दर तिय घर घरन मझारी * पर दुर्लभ संतत सति नारी॥
विनु हरि कृपा सती तिय लाहू * त्रिभुवनमाहिं होत नहिं काहू॥
सती नारि जेहि जन कर अहई * चतुर्वर्ग फल तेहि कर रहई॥
सुर द्विज पितर अतिथि सत्कारा * सधै न तिय विनु कोइ प्रकारा॥
धर्म कर्म सुख सम्पति नाना * सबनमूलतियलिखितपुराना॥
जो फल किये गंग असनाना * जो फल किहे कोटि गोदाना॥

दो०–सो फल सती सुदृष्टिते, लहहिं देव नर वृन्द।
सतिसहाय ते उभयपुर, विजय होहिं विनु द्वन्द॥
लोपामुद्रा प्रति बहुरि, सुर गुरु सब गुण ऐन।
लगे कहनगदगदगिरा, सुधासिक्त इमि वैन॥

हरिगीतिका छन्द॥

हे स्वामि पद पंकज निरत सति परम पावन भामिनी।
हे जगत तिय शिख देन हारिनि पतिव्रतान शिरोमनी॥
हे जननि मंगल करनि लहि तव दरश कृत पातक दहे।
अरु सुरसरी अभिषेक कर फल आजु सुर मुनिगण लहे॥
पुनि तपसि पुंगव कुम्भसम्भव प्रति कह्यो इमि सह विनै।
हे महतया त्रयताप हारि प्रताप तव इमि बुध भनै॥

तव रमणि श्रुति तुम प्रणव पुनि तुम धर्म तव सति हैं क्षमा ।
सो सत क्रिया तुम तासु फल सो ज्योति तुम हो अर्य्यमा ॥
तुम देह सो छाया अहैं तुम शम्भु तव तिय शंकरी ।
तुम ब्रह्म तेज प्रचण्ड सो पतिव्रता तेज शुभंकरी ॥
पुनि मिलित दम्पति तेज मधि शुचि तपोवल सर्वोपरा ।
यहि हितनअसकोइकाज जेहिकरिसकहुनाहिंमुनीश्वरा ॥

दो०-आजु जगत संकट ग्रसित, सो तेहि मङ्गल हेतु ।
सुरऋषिमुनिगणतवशरण, आये कृपा निकेतु ॥
रोधेहु रविपथ विन्ध्यगिरि, करि अभिमानअपार ।
सो मुनि ताकर गर्व हरि, करियजगत उपकार ॥

सुनि गुरु वैन विनय गुण साने ❋ कुंभयोनि उर मधि सकुचाने ॥
पुनि कछुक्षणनिजहृदयमझारा ❋ करिविचारअस वचनउचारा ॥
सुनिय देवकछु करिय न चिन्ता ❋ जग संकट हारक भगवन्ता ॥
जाहु सकल मिलि शंक विहाई ❋ करव आशु हम कोइ उपाई ॥
असकहि विदा सबन कहँ कीना ❋ भय वहोर ध्यान मधि लीना ॥
हम उघारि पुनि कछु क्षण माहीं ❋ कहनलगे यहिबिधतियपाहीं ॥
प्रिये विन्ध्यगिरि करि खलताई ❋ रह्यो त्रास जगकाहिंदिखाई ॥
लखियत खल स्वभाव संसारा ❋ विनुस्वारथहु करहिंअपकारा॥

दो०-खलन कनोरथ कुतरु मधि, फरै विषम फल जोय ।
सो विहाय नहिंअपरफल, लाहु तिनन्ह कहँहोय ॥
करि हिंसा जे अपर की, करहिं वृद्धि की आश ।
तिनकर संचित सुयशहू, होत बेगही नाश ॥

सो०-खलन मनोरथ जोय, कबहूं सिद्धि न होत सो ।
यदपि सिद्धिहू होय, तौ तेहिविलतविलम्बनहिं ॥
उर मधि जात विलाय, यथा वाल विधवा उरज ।

खल मनोर्थ तेहि न्याय, उरहि माहिं प्रकटत नशत ॥
क्षुद्र नदी बढ़ि जौन प्रकारा * करत सतत निज तटहि सँहारा ॥
खलन समृद्धि सदा तेहि भाँती * नाशत द्रुत निजकुलअरुज्ञाती ॥
जोइ विमूढ़ परबल नहिं जानत * भिरत मोहवश भटक नमानत ॥
होत दशा तेहि शठकर जोई * सोइ परिणाम विन्ध्यकर होई ॥
असकहि तियसह ऋषिकुल केतू * कीन्ह गमन गिरिदमन केहेतू ॥
नभरोधी गिरि ढिग ऋषिराई * पहुँचे एक निमेष महँ जाई ॥
इल्वलारि ऋषि वरहि निहारी * विन्ध्याचल कम्पित ह्वै भारी ॥
भयो खर्व अति मनहुँ सभीता * धसन पताल काहिं मनचीता ॥
जोरिपाणिमुनिकहँ शिर नावा * सहितविनयइमिवचनसुनावा ॥
जानि मोहिं निजपद अनुगामी * करियनिदेशहोय जोइस्वामी ॥
कह कुम्भजहम फिरहिं न यावत * रहहुखर्व यहिविध तुम तावत ॥
अस कहि तीय सहित मुनिराई * दक्षिणदिशि कहँगये सिधाई ॥

दो०—भये खर्व गिरि विन्धय के, भयो स्वच्छ आकाश ।
कीन्ह गमन तब दिवाकर, चहुँदिशि छावप्रकाश ॥
तेहिदिशितेघटयोनिमुनि, पुनरागमन न कीन ।
रह्योखर्व तब ते कुधर, ह्वै अभिमान विहीन ॥

सो०—पढ़ै सुनै नर जोय, यह अद्भुत ऋषिकर चरित ।
विदिततिन्हकहँहोय, विषमय फल अभिमान कर ॥

त्रयोविंश सर्ग ॥ २३ ॥

महर्षि अगस्त्यकृत समुद्र पान प्रसङ्ग ॥

दो०—देवासुर संग्राम मधि, वृत्र महा बलवान ।
वज्रपाणि के पाणि सों, भयो जबहिं निष्प्रान ॥

तब दानवगण सुरन सन, ह्वै परास्त भय पाय।
लखिवत्रावनहिंभुवनमधि, छिपे उदधि मधि जाय॥
सो०—ते दुरन्त दनुजात, छली कौशली अतुल बल।
रहे जगत महँ ख्यात, कालकेय के नाम सों॥
सुरन विनाश हेतु पुनराई * सिन्धु मझार असुर समुदाई॥
लगे करन बहु भाँति विचारा * केहिविध होय वेद विधि छारा॥
सबजननिजनिजमतिअनुसारा * कहे उपाय अनेक प्रकारा॥
अंत माहिं खल धर्म विहीना * यहविचारसबमिलिथिरकीना॥
जपी तपी द्विज यत जग माहीं * प्रथम विनाश करी तिनकाहीं॥
कारण जप तप धर्म अचारा * दिव थिति केर मूल आधारा॥
तिन्है किहे क्षय विनहिं प्रयासू * फली हमार आशु मन आसू॥
यह विचार दृढ़ करि अमरारी * रहैं दिवस मधि उदधिमझारी॥
सायुध निकरि घोर निशि माहीं * हतिद्विज मुनिनप्रातभजिजाहीं
इमिनिशि माहिं असुर समुदाई * करन लगे बध मुनिन सदाई॥
दो०—ऋषि वशिष्ठ के पुण्यतम, आश्रम विशुचि मझार।
यकसौ उन्नासी द्विजन, असुर कीन्ह सँहार॥
च्यमनाश्रमते एक शत, वलकल धारि प्रवीन।
ऋषिनकालकवलितविकट, कालकेय गण कीन॥
सो०—विशंति वायु अहारि, ऋषिवर दनुजन हाथ ते।
गे यम सदन सिधारि, भरद्वाज आश्रमहु ते॥
इमि ऋषिवंश नाश नित होई * कारण जानि न पावहिं कोई॥
करहि असुर निशि महँ उतपाता * उदधिछिपत भजिहोतप्रभाता॥
लखिय प्रातजेहि आश्रम ओरा * तहँ लखात अति दुर्घट घोरा॥
शोणित रंजित कोइ मखशाला * जहँतहँपतितऋषिनशवमाला॥
राशि राशि कहुँ तपसि उलंगा * परे भूमि मधि अंग विभंगा॥

द्विज मुनि अस्थि पुंज कोइ ठाई * लखि पर शंख राशिकी नाई ॥
भग्न कलश श्रुव कहुँ जप माला * कतहूं परे छिन्न मृगछाला ॥
मुंज मेखला जटि पट वल्कल * परे सकल थल सने रुधिर पल ॥
दग्ध कोइ आश्रम तिन माहीं * पूरित छार अपर कछु नाहीं ॥
इमि यत आश्रम भूमि मझारे * असुरन वहुल नष्ट करि डारे ॥

दो०-वेदपाठ जप यज्ञ तप, धर्म कर्म आचार।
खल दनुजन उत्पात ते, भयो लोप संसार ॥
ह्वैव्याकुलअति मनुजगण, निजगृह नगर विहाय।
रक्षा हित भजि भजि लुके, विपिन कन्दरन जाय ॥

अगणित वीर युरुष वलवाना * धरिधरि अस्त्रशस्त्र खरसाना ॥
खोजहिं रिपुन जहां तहँ जाई * परन भेद पावहिं कोइ ठाई ॥
जगतहि नसत हेरि सुर वृन्दा * करहिंचिन्तवनविगतअनन्दा ॥
देवन पुनि विचार यह ठाना * सबमिलिचलियशरणभगवाना
सतत जनन भय हरण रमेशू * हरिहैं पलमधि जगतकलेशू ॥
अस विचारि सब सुरन समेतू * गे सुरेश भुवनेश निकेतू ॥
हरिहि दिव्य आसन आसीना * हेरि प्रणाम देवगण कीना ॥
गद गद गिरा सप्रेम बहोरी * अस्तुतिकरनलगे करजोरी ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

हे भुवन भावन भव भरण शरणापदा हारण विभो।
कर्ता सँहरता विश्वभर्ता तुमहि सुर पालक प्रभो ॥
यत जीव खेचर भूमिचर जलचर अचर जगमधि अहैं।
प्रकटे तुमहिं ते सकल आधार पुनि तुम्हरहि रहैं ॥
अवतार परम उदार वारहिं वार लै विश्वम्भरा।
संकट हरत वधि विकट दुष्टन करत निष्कण्टक धरा ॥

मख विघ्नकारी दम्भि जम्भहि तुम्हहिं प्रभु संहारेऊ ।
करि निहत तुम मधुकैटभहि कमलासनहि निस्तारेऊ ॥
तारैक समर महँ कालनेमिहि मारि तुम करुणा लये ।
करि निरापद अमरावती आनन्द देवन कहँ दये ॥
तुम श्वेत द्वीप मझार सुर अरि महा सुर मुरै मारेऊ ।
अरु दण्डपाणिहि करि निशंक मुरारि नामहि धारेऊ ॥
दनुजेश वृँक कहँ हनि तुमहिं गिरिजेश की रक्षा करयो ।
तुम हिरणकशिपुहि मर्दिकै प्रह्लाद की आपद हरयो ॥
तुम दीन आरत हरत संतत दुरित दारुण दारहू ।
सुर गणन शरण स्थान तुम क्षिति भूरिभार निवारहू ॥
यहि काल अति विकराल आपद जाल भूतल मधि छये ।
तेहि विकट संकट हारि तुम्हहीं कैटभारि कृपामये ॥
हवि कव्यते संतत चतुर्विध प्रजा तुम्हरहि कृपाते ।
वर्द्धित करहिं सुरगणन वल दिवलोकमधि निवसतजिते ॥
यहि विध परस्पर के सहाय ते स्वर्ग मर्त्य उभय प्रभो ।
है वर्तमान वहोरि तिनके तुम्हहिं यक रक्षक विभो ॥
हे नाथ जानि न जाय प्रतिनिशि मधिकौन शठ आयकै ।
भजिजात होत प्रभात द्विज ऋषि मुनिन प्राण नशायकै ॥

दो०—मेधावी सत्क्रियारत, पुरुष न यदि रहि जाहिं ।
तौभूलोक के ध्वंस महँ, विलँब लागिहै नाहिं ॥
क्षिति लयते सुरलोककर, अहै नाहिं कल्यान ।
प्रभुविनुयह दारुणविपति, हरणहारि नहिं आन ॥

सुरन वैन सुनि जगत अधारा * दै धीरज इमि वचन उचारा ॥
निशि मधि कालकेय समुदाई * यह उत्पात मचावत आई ॥

१–३६ टिप्पणी देखो । २–३७ टिप्पणी देखो । ३–३८ टिप्पणी देखो । ४–३९ टिप्पणी देखो

दिवस माहिं ते शठ अपकारी * रहत लुकाय पयोधि मझारी ॥
सागर वास करहि खल यावत * तिनकचपरसि न सककोइतावत
यहिहित करहु सकलमिलि जाई * सागर शोषण केर उपाई ॥
कुम्भ योनि ऋषि वरहि विहाई * शोखि न सिन्धु अपर ते जाई ॥
अबसबमिलिऋषिनिकटसिधावहु* निजकारजहितविनयसुनावहु॥
सुनि हरि वचन देव समुदाई * गमने पद पंकज शिर नाई ॥
कुंभ योनि ऋषिराज सकाशू * गये सचिंत त्रिदश गणआशू ॥
विशुचि तपोवन प्रभा निहारी * मोहित भये अदितसुत भारी ॥

दो०—यहिविधऋषिमण्डलीमधि, रहे घटज ऋषि आज ।
सुरगण वेष्टित चतुर्मुख, मानहुँ रहे विराज ॥
सुरन हेरि सन्मानि मुनि, पूँछेहु आवन हेतु ।
तब सुरगण लागे कहन, यहि विधविनयसमेतु ॥

हम सब अति विपन्न यहि काला * चहुँदिशिछादितआपदजाला ॥
करि छलछन्द सतत दनु जाता * करहिं रैनमहँ मुनिननिपाता ॥
जो तुम उदधि शुष्क करि देहू * तौ तिन हतब विना सन्देहू ॥
ब्रह्मघात सुनि ऋषि तपखानी * कोप कम्प तनु शान्ति परानी ॥
जवा सुमन सम दृग अरुणारे * घन गर्जन इव वचन उचारे ॥
करिय न शंक देव समुदाई * खलन केर अंतक खलताई ॥
करि परहानि जाहि शुभ आशू * तासु विनाश जानहू आशू ॥
असकहि कुम्भ योनि भगवाना * द्वितिय दैव इव समरथवाना ॥
जाय अगाध पयोनिधि तीरा * ब्रह्म तेज प्रकटाय गँभीरा ॥
सुरन लखत सब सागर वारी * गयेपान करि निमिष मझारी ॥
जलनिधि शुष्क देखि सुरवृन्दा * कीन्हजयतिध्वनिसहितअनन्दा
दुन्दुभि भेरि मृदंग बजाई * करहिं गान किन्नर समुदाई ॥

दो०—विधुवदनी सुर रमणिगण, चढ़िचढ़िसुघरविमान।
ऋषिवर पै वर्षहिं सुमन, हृदय प्रमोद महान॥
शुष्क सिन्धु के निम्न थल, माहिं असुर समुदाय।
वारिद छादित नखत इव, परे सुरन दर्शाय॥
सो०—निज निज आयुध धारि, अमर निकर सामर्ष तव।
असुरन कहँ ललकारि, उतरेद्रुतपद उदधि मधि॥

झूलना छन्द ॥

देखिघनघोर सम्भारविनु देवदल वीर वलवन्त दनुजात भारी।
वेगही कोटि कोटिन मातंग हय स्यन्दनै साजि ह्वै क्रुद्ध भारी॥
भल्लधनुवाण खरशाणकिरपाण क्षुरपट्टिशै शेल असिप्रासधारी।
डंकदै शंकको त्यागि कै गाजिकै धावरणहेतु सब देवतारी॥
दानवी सैव अवलोकि सुरवृन्द सों देवपति इन्द्रकह कोपि वैना।
मारियो धारियो विप्रसंघातकनभाजि वचिजांयनहिंशत्रुसैना॥
सुनिघोर हुंकारि कै आशुही धाव सुरवृन्द वलपुंज ऐना।
वीरदोउ ओरकें युद्ध आरंभकिय योद्ध पदरेणु उडि छावरैना॥

रामगीती छन्द ॥

आयुध विविध खरशाण वाण वितान विनु परिमान।
अतिवेग सों वर्षन लगे दोउ ओर के वलवान॥
तहँ उभय दल के शंख भेरी धनुष के टंकार।
क्षिति दिग नभोमण्डल कँपत जग करत हाहाकार॥
झटलम्फि झम्पि प्रचण्ड विक्रम वल करहिं परकाश।
खरशरन प्रहरण पुंजते भा समाछन्न अकाश॥
पुनि प्रलय काल के गगन धरणी घोर घर्षण न्याय।
भइ मिलित सुर आसुरी सेना दोउ दिशिते धाय॥

जिमि वर्षि सम्वर्तक जलद प्लावित करत संसार।
तिमि अस्त्रवृष्टि ते भई प्लावित उभय सैन्य अपार॥
सुरवृन्द प्रेरित अस्त्र दानव रूपि मेघ मझार।
दर्शात शत शत सहस अस्थिर दामिनी अनुहार॥
जेहिदिशि लखिय कहुँवायुवत गमनत सुयानविशाल।
जिन घरघरान महान ध्वनिते कँपत भूधर माल॥
कोइ ओर तरल तुरंग राही भट समर मत होय।
धावत घटत मारत पछारत परत सन्मुख जोय॥
कोइ दिशि विकर्षित धनुषते छूटे शरन समुदाय।
फुफकत विषम विषधर सरिस अति वेगते रहे धाय॥
कहुं गगन गामी गदा मुदगर लरि विथरि तिन खण्ड।
वर्षत समर थलमाहिं ज्वलित अँगार सरिस प्रचण्ड॥
कोइ दिशि पदाति पदाति सों रथि सों रथी बलवान।
भिरिभिरिविविधकरिकलाकौशल करतरणघमसान॥
यक एक पल महँ अमर गण सामर्ष दै हुंकार।
द्रत झपटि दनुजन झटकिकोटिन पटकि करत सँहार॥
यहि भांति आहत निहत तनुशोणित स्रवत विकराल।
घटयोनि शोषित सिन्धु जाते पूरि चल तेहि काल॥
अभिमान अनुनय वहुरि धर्माधर्म घर्षण न्याय।
लखि विषम देवासुर समर चौदह भुवन थर्राय॥
है जर्जित तनु असुर गण सुर शरन तेरण माहिं।
कछुकाल तबहूं समर ते भे विरत कोइ भट नाहिं॥
पर तेजपुञ्ज ऋषीन वध अघते दनुज समुदाय।
है गये प्रथमहि ते रहे वलक्षीण दग्धित काय॥
सुर वृन्द के रण कलाते क्रमशः पयोधि मझार।

सकल जीव के दृगपलकन मधि बसिय आजुते अतनु सदाई।
तदवधि ते उन्मेष निमेषन लागे करन जीव समुदाई॥
भूपति हीन राज्य कहँ देखी करि विचार सुर मुनि मतिधीरा।
राजकुमार लाहु हित मन्थन लगे अरणि सों नृपति शरीरा॥

दो०—प्रकट्यो ताते यक कुँवर, अनुपमेय अभिराम।
मृत शरीर ते जन्म वश, परयो जनक तेहिनाम॥
पितु विदेह तिनके भये, यहि हित सोइ कुमार।
नृप विदेहहू नाम तिन, भयो ख्यात संसार॥

मन्थन द्वार जन्म तिन भयऊ * यहिहित मिथिहु नाम जगछयऊ
सोइनृपति मिथि सुमतिसुजाना * मिथिलापुरी कीन्ह निर्माना॥
मिथिके सुवन सकल गुणधामा * भये नन्दिवर्द्धन जिन नामा॥
तासु वंशधर भये सुकेतू * तासुत देवरात कुलकेतू॥
भूपति देवरात के नन्दन * भे बृहदुक्थ विपक्ष निकन्दन॥
नृप बृहदुक्थ जात सुकमारा * महावीर्य्य भे बली अपारा॥
महावीर्य्य नृप के संताना * भये सत्यधृति परम सुजाना॥
भूप सत्यधृत औरस जाता * धृष्टकेतु त्रिभुवन विख्याता॥
धृष्टकेतु के तनय सुवीरा * भे हर्य्यश्व नाम रणधीरा॥
तिन हर्यश्व कुवँर मरु नामू * तासुत प्रतिवन्धक गुणधामू॥
तासुत कृतरथ तासु तनय कृति * तासुतविबुधविबुधसुतमहधृति[1]॥
नृपति महाधृतिसुत कृतिराता * तासु महारोमा विख्याता॥

दो०—तासुत सुवरणरोम[2] भे, ह्रस्वरोम[3] सुत तासु।
तासुत सीरध्वज भये, छाव अतुल यश जासु॥
मखहित क्षितिकर्षत रहे, सीरध्वज महिपाल।
तिन सुवरण सीराग्र ते, अकस्मात तेहि काल॥

---

१ महाधृति। २ सुवर्णरोमा। ३ ह्रस्वरोमा।

गृह श्री दिवि श्री राजश्री, वाणिज श्री हरिप्रीय।
विश्वमयी परमा प्रकृति, रूपराशि कमनीय॥
जगतजननिजन तारिणी, शक्ति सनातनि जोय।
प्रकटि कीन्ह पावनअवनि, वरणिनसकतेहिकोय॥
सारहि नृपके कीर्ति कर, ध्वजा भयो अभिराम।
यहि निमित्त तिनकर, परयोसीरध्वजवरनाम॥

षटपद छन्द॥

सीरध्वज के भ्रात ख्यात कुशध्वज वर नामा।
कीन्ह जोय अधिकार नगर संकाश[1] ललामा॥
सीरध्वज सुत भानुमान तिनके सुकुमारा।
शतद्युम्न ता तनय भये शुचि परम उदारा॥
शुचिकुँवर ऊर्जवह तासुसुत सत्यध्वज तासुवन कुनि।
कुनितनयनृपति अंजन भयेतासुत ऋतुजित वंशमनि॥
ऋतु जित सुवन अरिष्ट नेमि तासुत मति माना।
भे श्रुतायु ता पुत्र भये सूर्य्याश्व सुजाना॥
नृप सूर्य्याश्व कुमार भये भूपति वर संजय।
संजय सुत क्षेमारि सकल विद्या सद्गुणमय॥
ता तनय अनेना तासुसुत भये मीनरथ नृपतिवर।
तासुवन सत्यरथ ताकुँवर भये सत्यरथि सत्यधर॥
सत्यरथी सुत उपगु तासु श्रुत तासुत शाश्वत।
भये सुधन्वा तासु तनय शुचि कर्म धर्मरत॥
तिनके भये सुभास तासु नन्दन नृप सुश्रुत।
सुश्रुत सुत जय तासु विजय तिनके सुतभे ऋतु॥

१—सांकाश्य (आधुनिक मैनपुरी)।

तेहितनय सुनय तेहि वीतहेवि[1] तासुत संजय तासुधृति।
धृतिकुवँर भूप वहुलाश्व भे तिनके सुतभे नृपति कृति॥
दो०—इनही नृप कृति ते भयो, जनक वंश अवसान।
यहि कुल के सब नृप भये, आतम ज्ञानि सुजानै॥

पञ्चविंश सर्ग॥ २५॥

सोमवंश वर्णनं॥

दो०—परम पुरुष हरि नाभते, अमल कमल प्रकटान।
ताते जन्मे जग जनक, जलजासन भगवान॥
कमल योनि ते अत्रि भे, पितु सम गुण सम्पन्न।
तिन मुनि दृगते सुधाधर, भये सोम उत्पन्न॥

नरिन्द छन्द॥

चतुरानन तिन सोम देव कहँ देखि सुशील प्रवीना।
भूमिदेव औषधि उडुगणकर अधिनायक करि दीना॥
सोम सुवन बुध भये परम बुध बुद्धिराशि अभिरामा।
इला गर्भ ते बुध के प्रकटे कुवँर पुरुवा नामा॥
भये पुरुवा के षट नन्दन अतुलित तेज निधाना।
नाम श्रुतायु आयु सत्यायू रय[?]जय विजय सुजाना॥

१—वीतहव्य। २—यह सर्ग विष्णु पुराणके चतुर्थांशके पञ्चम अध्यायके अनुयायिक है। परंतु इसमें और श्रीमद्भागवतके नवम स्कन्धके त्रयोदश अध्यायमें किंचित् विभिन्नता दृष्ट होता है। भगवतानुसार "जनकके पुत्र उदावसु व उदावसुके पुत्र नन्दिवर्द्धन" "मरुके पुत्र प्रतीय" इत्यादि॥ आधुनिक इतिहास तत्वविद्गणको स्मरण रखना चाहिये कि इस प्रकारके प्रभेदादि पृथिवीके समग्र प्राच्य पुस्तकावलीमें वर्तमान हैं। खृष्टीय धर्म तुस्तक इंजील भी इस व्यतिक्रमसे विमुक्त नहीं है (का. प्र. सि.)। ३—यह सर्ग श्रीमद्भागवतके नवमस्कन्ध १४-१८-२०-२४ अध्याय से संकलित हुआ है। जिन २ नामोंमें पाठान्तर देखा गया है उनका पाठ भेद यथा स्थानपर पृष्ठ के निम्नमें दे दिया गया है।

रयके सुवन एक जयके सुत अमित अमित बलवाना।
विजय आतमज भीम जासु सम सुभट न जगमधि आना॥
भीमकुवँर काञ्चन काञ्चन सुत होत्रक ज्ञान निधाना।
होत्रकके सुत जह्नु जोय किय गंग सलिल सब पाना॥
भये जह्नु सुत पुरु पुरुके सुत भये वलाक भुवाला।
तिनवलाकसुत अजक अजकसुत कुश विक्रमी विशाला॥
वसु कुशाम्बु कुशनाभ तनय यह भे कुशके सुतचारी।
नृह कुशाम्बु आतमज गाधि भे जे अगाधि वलधारी॥
भये महीप गाधि सुत विश्वामित्र नाम नर नाहू।
जोइ ब्रह्म ऋषि अति दुर्लभ पद तपबल ते कियलाहू॥
नृप पुरुरवा ज्येष्ठ सुत आयु के भये पाँच संताना।
नहुष अनेना क्षत्रवृद्ध रजिराभे महा गुणवाना॥
क्षत्रवृद्ध के सुत सुहोत्र भे तिनके भे त्रय नन्दन।
नाम तिनन्ह गृत्समत काश्य कुश विपुल वली खल सूदन॥
प्रजन सुखद गृत्समद सुवनभे शुनक नाम नय नागर।
शुनक कुमार भये शौनक जे अमित बुद्धिवल सागर॥
भये काश्य सुत काशि तासुसुत राष्ट दुष्टगण नाशी।
राष्ट्र तनय भे दीर्घतमा तेहि धन्वंतरि वुधिराशी॥
रमानाम हरि अंशते प्रकटे धन्वंतरि भगवाना।
आयुर्वेद खेद संहारी इनहिं कीन्ह निर्माना॥
धन्वंतरि के केतुमान भे तासु भीमरथ नामा।
तिनके दिवोदास तिनके सुत भे द्युमान गुणधामा॥
भे द्युमान के ख्यात वंशधर भूप अलर्क प्रवीना।
षष्टि सहस्र षष्टि शत वत्सर राज्य भोग जोइ कीना॥

१-मूर्तय। २-रंभ। ३-टिप्पणी ४ देखो।

तिन अलर्क सुत सन्तति सन्ततिके सुनीथ गुणखानी।
तिनके तनुज नितेर्तन[1] तासुत धर्मकेतु विज्ञानी॥
धर्मकेतु सुत सत्यकेतु जेहि विदित सुयश संसारा।
सत्यकेतु सुत धृष्टकेतु नृप तिनके सुत सुकुमारा॥
नृप सुकुमार के वीतिहोत्र जेहि कीर्ति न जाय बखानी।
वीतिहोत्र सुत भर्ग भर्गसुत भार्गभूमि वड़दानी॥
क्षत्रवृद्ध के जोइ पौत्र कुश तासुत प्रति मतिमाना।
प्रतिकुमार सञ्जय सञ्जयसुत जय गुणज्ञान निधाना॥
जयसुत कृत तातनय हर्यवैल[2] तेहि सहदेव प्रवीना।
तिनके सुवन दीन प्रतिपालक प्रथित नाम जेहि हीना॥
हीन तनय जयसेन तासुसुत संकृति शील प्रकाशी।
संकृति के सुकुमार नाम जिन जय सुचारु यशराशी॥
नृपति पुरुरवा पौत्र राभ के तनय रभस जिन नामा।
रभस तनुज गम्भीर धीरधर वीर ख्यात तिहुँ धामा॥
महामना गम्भार वंशधर अक्रिय सत्क्रिय कारी।
तिन अक्रिय कुलजात ब्रह्मवित भये विप्र गुणधारी॥
अपर पौत्र पुरुवा नृपति जोय अनेना नामी।
तिनके शुद्ध शुद्ध के सुत शुचि सतत धर्मपथ गामी॥
शुचि सुत चित्रंकु[3] नाम जोय भे धर्म सारथी ख्याता।
चित्रकु के सुत शांतरँजा[4] भे धर्मवंत वड़दाता॥
नृपति पुरुरवा तृतिय पौत्र रज़ि के शर शत संताना।
भयेराज नीतज्ञ धर्मधर समर चतुर बलवाना॥
एक समय रजि सुरन विनय ते वधि दनुजन रणमाहीं।
स्वर्गपुरी उद्धारि अभय किय बहुरि अमरपति काहीं॥

१–सुकेतन। २–हर्यवन। ३–चिकलुत। ४–शातरया।

तब सुरेश नृप रजि कहँ दीन्हा देवलोक कर राजू।
वहु वत्सर सुरपुरी भोगि जब किय भूपति तनु त्याजू॥
तब नृपवर रजि तनय वृन्द सों कह्यो इन्द्र इमि वैना।
देहु राज्य मम तुमहिं स्वर्गपुरि भोग उचित विधि हैना॥
पर पैतृक धन जानि कुवँवरगण फेरि न सुरपुरि दयऊ।
तब अभिचार याग सो सुरपति सबन नशावत भयऊ॥
आयु ज्येष्ठ सुत नहुष भूपके भे षट सुत बलधामा।
यति ययाति सर्य्याति वियति कृति आयति नामललामा॥
तिन षट कुवँर माहिं राजासन भा ययाति कहँ लाहू।
हेतु तासु यहि विध पुराण मधि कथित जान सब काहू॥
ऋषिन शापवश स्वर्ग पतितलखि पितु कहँ यतिबुधिराशी।
जानि असार राज सुख सम्पति त्याजि भये बनवासी॥
भये पञ्च संतति ययातिके संत सेवि कुल केतू।
यदु तुर्वसु अनुद्रुह्य सबन लघु पुरु नृप धर्म निकेतू॥
कौरव अरु पाण्डव गण के रहे पूर्व पुरुष पुरु भूपा।
तिन पुरु तनय भये जनमेजय धर्म धुरीण अनूपा॥
जन्मे जय सुत प्रचीन्वान भे तासुत ख्यात प्रवीरा।
तिनके तनुज मनस्यु[1] तासु सुत भूप चारुपद वीरा॥
नृपति चारुपद तनय सुद्यु भे तासुत वहुगव नामू।
वहुगव सुत संजाति तासु सुत अहंयाति वलधामू॥
तासु तनय रौद्राश्व भूप भे तिनसों दुष्ट निकन्दन।
सुर नर्तकी घृताचि गर्भ ते प्रकट भये दशनन्दन॥
तिनमधि नृपति ऋतेयु वंशधर रन्तिनाभ[2] अभिरामा।
तिनके त्रय सुत नाम सुमति ध्रुव अप्रतिरथ गुण धामा॥

१–नमस्यु। २–रन्तिभार।

अप्रतिरथ सुत कराव करावसुत मेधातिथि ऋषि राई।
तिनते भये प्रकट प्रस्कन्नादिक महिसुर समुदाई॥

दो०—नृपति सुमतिसुत अमितवल, भये रेभि महिपाल।
रेभि तनय गुण पुंजमय, भे दुष्यन्त भुवाल॥

रोला छन्द॥

सति शकुन्तला गर्भ सोहिं दुष्यन्त के नन्दन।
भये भरत नर नाथ सुजन रंजन खल खंजन॥
वहु वत्सर करि राज्य भूप दुष्यंत सुधीरा।
परमधाम कियलाहु जबहिं तजि अनित शरीरा॥
तब अतुल्य वल शालि भरत राजा सन सोहे।
राज काज लखि जासु सकल सुर नर मुनि मोहे॥
विष्णु अंशते प्रकट भये नृप भरत सुजाना।
सप्तद्वीप[1] नवखण्ड[2] ख्यात जेहि सुयश महाना॥
अश्वमेध वर यज्ञ सोइ भूपति मति माना।
कीन्ह पञ्च पञ्चास गंगतट सहित विधाना॥
यमुनातट महँ अश्वमेध अठहत्तर कीन्हा।
यक यक वंद्व[3] सुधेनु एक यक द्विज कहँ दीन्हा॥
यहि विहाय धर्मज्ञ भूप कोइ कोइ मख माहीं।
द्विरद चतुर्दश नियुत[4] दीन्ह महि देवन काहीं॥
रिपुमर्दन गुणसदन अमित वल भरत प्रवीरा।
निकरे जब दिग्‌विजय हेतु लै सेन गभीरा॥
कीन्ह्यो विजय भुवाल पौंड्र खश कंक किराता।
हूण यवन शक जोय प्रजा पीडक विख्याता॥

१, २—लंकाकाण्ड, सर्ग ११ टिप्पणी २ देखो। ३—१३०८४ (चतुरशीत्यधिकै स्त्रयोदशसहस्त्रै रेकं वद्वं भवतिर-श्रीधर स्वामी)। ४—१००००।

अरु अनार्य्य वंशीय नृपतिगण म्लेच्छ समेतू ।
जीतेहु समर हँकारि भरत वलपुंज निकेतू ॥
विकट रसातल वासि असुर वृन्दन संहारी ।
उद्धारेहु सुर रमणि रही यत वन्दि मझारी ॥

रहीं भरत नृप के त्रय भामिनि * सतीचन्द्रवदनीगज गामिनि ॥
तिन मधि यक तिय परमसुहावन * कीन्हप्रसवयकसुतमनभावन ॥
सपरिहास तब नृप इमि कहेऊ * यह सुतमम अनुरूप न अहेऊ ॥
तबते यत रानिन भयऊ * यहभयमानिसवनतजिदयऊ ॥
अस न होय कहुँ नृप मन माहीं * कुलटा समुझितजहिंहमकाहीं ॥
यहि विधवितथ भरतकुल भयऊ * भूपतिहृदय शोकअतिछयऊ ॥
भराद्वज कहँ तब सुर वृन्दा * लाय महीप निकट सानन्दा ॥
सूनु स्वरूप भूप कहँ दीन्हा * गमनवहोरि अमरगणकीन्हा ॥

दो०—वर्ष सप्तविशंति सहस, कीन्हेउ राज्य नरेश ।
रहे प्रवतित दशहुँ दिशि, यक तिनकेर निदेश ॥
बहुरि राजसुख धन विभव, करिअलीक नृपज्ञान ।
त्यागेहु इमिजेहिविधतजत, बुधममता अभिमान ॥
परम धाम किय लाहु जब, भूप भरत तजि काय ।
लगे करन तब राज्यकृति, भरद्वाज मन लाय ॥
वितथ भये नृप भरत कुल, भरद्वाज गुणग्राम ।
भे अर्पित यहि हेतु तिन, पर्यो वितथहू नाम ॥

भरतद्वाज सुत मन्यु सुजाना * तिनके भये पांच संताना ॥
वृहत्क्षत्र जय महावीर्य नर * गर्ग सर्ब सुत सब गुणसागर ॥
नर वर नर के कुवँर ललामा * संकृति नाम भये बलधामा ॥
तिन संकृति के युग सुकुमारा * रन्तिदेव गुरु परम उदारा ॥
रन्तिदेव सम दानि दयालू * भयोनजगमधि अपरभुवालू ॥

जोइ धर्मज्ञ भूप मति माना * निजसर्वस करि डारेहुदाना ॥
तब यहि विध भे रंक भुवारा * रहत अन्नविनु सहपरिवारा ॥
पर यहि दशहु माहिं नर नाहू * अशन होतयदिकतहुँते लाहू ॥
सोउ अहार सहित सन्माना * अतिथहि करहिं सहर्षप्रदाना ॥
एक समय भोजन नृप काहीं * अरतालिसदिनलगिमिलनाहीं

छप्पै ॥

ऊंचसये दिन एक सुजन भूपति ढिग अयऊ ।
घृतपायस घटपूर वारि नृपवर कहँ दयऊ ॥
सपरिवार जब अशन करन चाह्यो महिपाला ।
भयो भूपकर अतिथ आय यक द्विजतेहिकाला ॥
नृप रन्तिदेव सन्मान करि सो पायस विप्रहि दये ।
करिअशनविप्ररुचिभरिजबहिंलैविदायगमनतभये॥

दो०–शेष पायसहि भूप तब, भाग समान लगाय ।
परिवारहि दै अशन जब, करन चह्यो पुनराय ॥
तबहि क्षुधातुर शुद्र यक, भयहु अतिथ तहँ आय ।
ताहू कहँ निज भागते, दिय नृप अशन कराय ॥

सो०–जब कियशूद्र पयान, अमरअतिथि यकतेहिसमय ।
लिये संग बहु श्वान, सविनय नृप सों आय कह ॥

सुनिय भूपवर दया निधाना * मैं कुकुर युत क्षुधित महाना ॥
करि करुणा कछु भोजन देहू * सुनि महीप द्रुत सहित सनेहू ॥
शेष अन्न तेहि कीन्ह प्रदाना * गयो सो करत भूपगुण गाना ॥
अब केवल जल नृप ढिग रहेऊ * करनपानतेहिजेहिक्षणचहेऊ ॥
तबहिं एक पुक्कस तहँ अयऊ * जोरिपाणि इमि भाषत भयऊ ॥
हे नृपवर मैं तृषित महाना * कछुकसलिल दैराखियप्राना ॥

लखिअधमहि अतिश्रांतभुवाला * ह्वै दयार्द कह वचन रसाला ॥
मैं अनन्त त्रिभुवन पति पाहीं * चाहत भुक्ति मुक्ति कछु नाहीं ॥

दो०-केवल मम रुचि होहुँ मैं, सब जीवन दुख भागि।
संतत पर उपकार हित, सकहुँ प्राणहू त्यागि ॥
असकहि तृष्णातुरनृपति, रन्तिदेव धृतिमान।
सह सनेह सो सजल घट, किय तेहि काहिंप्रदान ॥

रामगीती छन्द ॥

नृप रन्तिदेव के याग मधि सानन्द पशु समुदाय।
करि स्वर्गलाहु कि लालसा बलि होहिं आपुहि आय ॥
तेहि भूपके मख महँ भये एते पशू बलिदान।
जिन चर्म्मरस ते प्रकटि चर्मन्वती[1] सरित प्रधान ॥
सुधि भरद्वाज के पौत्र जे रहे गर्ग ज्ञान निधान।
तिनके सुवन भे निशि अवनिमधि ख्यात निष्ठावान ॥
शिनिके तनय भे गार्ग्य सब गुण माहिं परम प्रवीन।
निज उग्र तपबल सोहिं लाह द्विजत्वपद जोइ कीन ॥
जोइ भरद्वाज के पौत्र तीसर महावीर्य्य सुजान।
ता सुत दुरितक्षय दुरितक्षय के भये त्रय संतान ॥
पुष्करारुणि त्रय्यारुणि कवि तिनहुँ सहित उछाहु।
करि घोर तप बहुकाल किय महिदेव पदवी लाहु ॥
नृप वृहत्क्षत्र कुमार हस्ती नाम नीति निधान।
अति विपुल सुन्दर हस्तिनापुर कीन्ह जोइ निर्मान ॥
तिन हस्तिके त्रयसुत भये अजमीढ़ द्वितिय द्विमीढ़।
तीसर विपुल बलशालि सुयशी नाम जेहि पुरुमीढ़ ॥

१-वर्तमान नाम चम्बल।

अजमीढ़ कुलते भये प्रिय मेधादि द्विज उत्पन्न।
जे विप्रगण शुचि तप परायण शास्त्रचय सम्पन्न॥
अजमीढ़ के यक अपर सुत वृहदिषु रह्यो जिन नाम।
ता सुत वृहद्धनु वृहद्धनुसुत वृहत्काय ललाम॥
तिन वृहत्कायके जयद्रथ तिनके विषद सुकुमार।
तिन विषदके सुत स्येनजित तिनके तनय भे चार॥
रुचिराश्व दृढ़हनु काश्य वत्स सुविज्ञ चारहु भ्रात।
रुचिराश्वनन्दन पार तेहि पृथुसेन भे जग ख्यात॥
नृप पार के यक अपर सुत रहे राज ऋषिवर नीप।
नाभागसून भनन्दहि जोइ नीप पुरुकुल दीप॥
करि अस्त्रविद्या मधि सुशिक्षित[1] पुनि भनन्दन काहिं।
कीन्ह्यो सहाय समस्त पृथिवीके विजय कृति माहिं॥
शुक सुता कृत्वी गर्भते तिन नीपके सुकुमार।
भे महा योगी ब्रह्मदत्त दयालु परम उदार॥
तिन ब्रह्मदत्त कुमार विष्वकसेन नाम प्रवीन।
निज बुद्धिवलते योग शास्त्रहि जोय रचना कीय॥
बुधिराशि विष्वकसेनके भे उ[2]क्सेन कुमार।
तिनके भये भ[3]लाट नामक सकल गुण आगार॥
नृप हस्तिके मध्यम कुमार द्विमीढ़के संतान।
भे यवीनर तिनके तनय कृतिमान ज्ञान निधान॥
कृतिमानके सुत सत्यधृति तिनके सुवन दृढ़नेमि।
तासुत सुपार्श्व सुपार्श्व सुत भे सुमति हरिपद प्रेमि॥
तिन सुमतिके सुत भये सन्नतिमान परम सुजान।
तिनके तनुज कृति नाम धर कोविद प्रवर धृतिमान॥

१–२६ सर्ग देखो। २–उदक्खन। ३–भह्लाद।

षट भाग महँ करि प्राच्य सामहि जोइ कृति मतिमान ।
रहे करत संतत मुदितमन द्विजगणन शिक्षा दान ॥
कृति सून उग्रायुध भये तेहि क्षेम्य तासु सुवीर ।
तेहि सुत रिपुञ्जय रिपुञ्जयके तनय वहुरथ वीर ॥
दो०—नृप अजमीढ़ कि द्वितिय तिय, नलनी लोक ललाम ।
कीन्ह प्रसव सुकुमार यक, परयो नील जेहि नाम ॥
नील कुमार शांति जिन नामा * तिनकेसुतसुशांति अभिरामा ॥
नृप सुशांतिके पुरुज भूपवर * तासुत अर्क अर्कसमद्युतिधर ॥
अर्क तनत भर्म्याश्व भुवारा * तिनके भये पाँच सुकुमारा ॥
वृहद्विश्व[1] काम्पिल्ल यवीनर * सञ्जय मुद्‍गल सकल गुणागर॥
सभामध्य भर्म्याश्व भुवालू * यहिविध वचनकह्योयककालू ॥
मम पाँचहु सुत वुद्धि विचक्षण * पञ्च विषय करिसक भलरक्षण ॥
यहि निमित्त ते पाँचहु भ्राता * भे पाँचल नाम सो ख्याता ॥
मुद्‍गल सोहिं मौदगल गोत्रिय * भे उत्पन्न विप्रगण श्रोत्रिय ॥
दो०—मुद्‍गल ते प्रकटे अपर, संतति यमज ललाम ।
दिवोदास सुत सुताकर, परयो अहल्या नाम ॥
सोइ अहल्या गर्भ ते, गौतम औरस जात ।
शतानन्द प्रकटे जोई, जनक पुरोहित ख्यात ॥
सो०—शतानन्द सन्तान, भये सत्यधृति वुध प्रवर ।
जोइ प्रवीण महान, धनुर्वेद मधि हैं निदित ॥
सुमति सत्य धृति के सुकुमारा * शरद्वान भे तपी अपारा ॥
ते बन मधि यक समय मझारी * सुमुखि उर्वसी काहिं निहारी ॥
इमि मोहे नहिं रही देह सुधि * परयोतेजखसिशरस्तम्भमधि ॥
ताते यक सुत यक सुकुमारी * प्रकटे यमज लखत मनहारी ॥

१—वृहदिषु ।

शान्तनु नाम एक क्षितिपाला ❋ मृगया हेतु गये तेहि काला ॥
तहँ लखिपरे युगल संताना ❋ ह्वै दयार्द तब नृप मतिमाना ॥
दुहुन उठाय नेह युत लयऊ ❋ सानँद बहुरि भवन कहँ अयऊ ॥
धरयो भूप सुत कर कृपनामा ❋ अरु दुहिताकर कृपी ललामा ॥

दो०—तेहिकृपिकहँनृपशिरोमणि, शांतनु सहित विधान ।
द्रोणाचार्यहि दान किय, धन्विन जेहि सम आन ॥

लीलावती छन्द ॥

दिवोदास के सुत मित्रायू तिनके सुवन च्यवन कुलदीपा ।
च्यवन कुमार सुदास तासुसुतभये सुमति सहदेव महीपा ॥
नृप सहदेव सूनु सोमक नृप तिनके भे यकशत संताना ।
तिनमधिज्येष्ठजन्तुअरुलघुसुतपृषतनामगुणज्ञाननिधाना ॥
नृपति पृषतसुत द्रुपद महीपति धीर धुरीण बली गंभीरा ।
इनहि द्रुपद की सुता द्रौपदी सुतवर धृष्टद्युम्न रणधीरा ॥
धृष्टद्युम्न के धृष्टकेतु भे यहि शाखाके सकल भुवाला ।
प्रथित अहैं संसार माहिं नृपवर भर्म्याश्ववंशि पंचाला ॥
अपर तनय अजमीढ़ भूपके ऋक्ष नाम जे रहे सुजाना ।
तिनके सुत सम्वरण तासु सुत कुरुक्षेत्रपति कुरु मतिमाना ॥
अनुके त्रयसुत भये नाम तिन चक्षु परेक्षु[1] सभानर भूपा ।
नृपति सभानर कुँवर कालनर तासुत सञ्जय धर्म स्वरूपा ॥
सञ्जय तनय भये जन्मेजय तिनके महाशाल[2] वलशाली ।
महाशाल के तनुज महावल महामना नामक खलघाली ॥
महामना के सूनु उशीनर अरु तितिक्ष दोउ वली घनेरे ।
शिखि वर[3] कृमि[4] अरुदक्ष चारि सुत भये महीप उशीनर केरे ॥

१–परेक्षु । २–महाशील । ३–वन । ४–शमि ।

अतुल प्रतापी नृपवर शिविके भये चारि सुकुमार सुधीरा ।
नाम तिनन कर वृषादर्भ अरु भूपति केकय[1] मद्र सुवीरा ॥
नृप तितिक्षके तनय रुषद्रथ तासुत होम[2] सोम कुलदीपा ।
भूप होम नन्दन सुतपा नृप तासुत बलि विख्यात महीपा ॥
इनहीं बलि नरनाथ क्षेत्र सों दीर्घतमा के औरस जाता ।
अंग वंग कलिंग[3] शुह्म अरु पुण्ड्र उड्र[4] उपजे नृप ख्याता ॥
निजनिजनामते पूर्वदिशामधि महाबली इन छइउभुवाला ।
अतिसुरम्यसुरमुनिनमनोरमकियथापनषटनगरविशाला ॥
अंगतनय खलुपान[5] तासुसुत दिविरथ क्षितिपतिधर्मधुरीना ।
दिविरथ सूनु धर्मरथ तिनके भये चित्ररथ परम प्रवीना ॥
रोमपाद के नाम सों जगमधि सुविदित येइ चित्ररथ भूपा ।
जिनहिभूपदशरथनिज तनुजाशांताकहँदियसुतास्वरूपा ॥

दो०—सो विधुवदनी शांतही, रोमपाद नर नाहु ।
ऋष्य शृंग हरणी सुतहि, दिय विवाहिसउछाहु ॥
रोमपाद के वंशधर, नृप चतुरंग सुजान ।
तिनके सुत पृथुलाक्ष जोइ, इन्द्र सरिस द्युति वान ॥

रामगीती छन्द ॥

पृथुलाक्ष भूपति के भये त्रय तनय सब गुणधाम ।
नृप वृहद्रथ अरु वृहत्कर्मा वृहद्भानु सुनाम ॥
नृप वृहद्रथ सुत धर्मशाली वृहन्मना कुलदीप ।
तासुत जयद्रथ जयद्रथ सुत बिजय ख्यात महीप ॥
नृपविजयसुत धृति नृपतिधृतसुत धृतव्रत मतिमान ।
ता तनय सत्कर्मा महीपति धर्म नीति निधान ॥

१-कैकेय । २-हेम । ३-कलिंग । ४-अंध्र । ५-खलपान ।

नरनाथ सत्कर्मा तनय अधिरथ जगत विख्यात ।
जोइ सती कुन्ती सुत कर्णके अहैं पालक तात ॥
नृप द्ह्युके सुत वभ्रु तासुत सेतु परम उदार ।
तिन सेतु आरद्ध तिन के तनय नृप गान्धार ॥
गान्धार नन्दन धर्म तिनके धृत सुकीर्ति स्वरूप ।
धृत तनय दुर्मद नृपति दुर्मद सुत प्रचेता भूप ॥
भूपति प्रचेताके भये शत सुत सुभट दुर्वार ।
ते म्लेच्छ अधिपति ह्वै कियोउत्तरदिशा अधिकार ॥
तुर्वसु नृपति सुत बह्नि ता सुत भर्ग वीर प्रधान ।
तेहि भानुमान कुमार तासु त्रिभानु भानु समान ॥
भूपति त्रिभानुके सुत करन्धम भूप परम सुजान ।
तासुत मरुत तिन मरुतके नहि भयो कोइ संतान ॥

दो०—नृप ययाति के ज्येष्ठ सुत, यदु कर पावन वंश ।
करन हार नर नारि कर, पाप पुञ्ज विध्वंस ॥
द्वापर मधि यहि वंश महँ, श्रीपति जगदाधार ।
वासुदेव के नाम सों, प्रकटि हरयो भवभार ॥

षड्विंशसर्ग ॥ २६ ॥

(सूर्य्य वंश कथारम्भ)

महाराज सुद्युम्न की कथा ॥

दो०—नित्य निरञ्जन चिदानंद, कारण रहित अनूप ।
यहि असार संसार कर, सार अधार स्वरूप ॥

१—दुर्मना । २—यह मरुत्त सूर्य्य वंशीय मरुत्त से पृथक हैं ।

तेहि अनन्त भगवन्त कर, चरित पुनीत अनंत।
पाव अन्त अनन्त हू, वदत शास्त्र श्रुति संत॥
तासु सत्य कछु जानिकै, अल्पबुद्धि नर जाति।
करहिं परस्पर मोह वश, वृथा वाद वहु भाँति॥
पर कृपालु विभुकी कृपा, विमलअनिल अनुहार।
सब प्राणिन पै एक सम, व्यापित जगत मझार॥
रक्षत दृढ़ प्राचीर जिमि, पुरी काहिं सब काल।
निखिलविश्वतिमिरक्षही, भगवत भूति विशाल॥

सो०—सर्व श्रेय तिन रूप, त्रिगुणातीत प्रज्योतिमय।
सो कैवल्य स्वरूप, योगीशन कर परमधन॥
तिनकर मूर्ति द्वितीय, विश्व सृष्टि कर राजसी।
अरु तिन मूर्ति तृतीय, भुवन भरण सतगुणमयी॥

चौथ मूर्ति तिन जग लयकारी * तामसमयी भयंकर भारी॥
तृतिय रूप सतगुणमयि जोई * जब जब हानि धर्मकी होई॥
तब तब रुचिर धारि अवतारा * करि खलगणन सदल संहार॥
रक्षहिं धर्म अधर्म विनाशैं * सिखप्रदविविधचरित्रप्रकाशैं॥
द्वितिय मूर्ति हरि नाभिते पावन * प्रकट्योकनककमलमनभावन॥
तेहि नल सोहिं रजोगुण धारी * प्रकटेविधिजग सिरजनकारी॥
तिन विरंचि मनते तप धामा * जन्मे ऋषिमरीचि जिननामा॥
ऋषि नायक मरीचि सन्ताना * भे कश्यप तपतेज निधाना॥
कश्यप तनय सकल जगवन्दन * भयेभानुभव तिमिरनिकन्दन॥
भानु कुमार ज्ञान गुणसागर * श्राद्धदेव मनु परम उजागर॥

दो०—भे मनुके दशावंशधर, नाम तिनन्ह यहि भाँति।
नृप इक्ष्वाकु पृषध्र कवि, दिष्ट धृष्ट शर्याति॥

नरिष्यन्त नृग करुष अरु, नभग दशहु संतान ।
धीर वीर गम्भीर मति, सुहृद सुशील महान ॥

इन दश सुतन के पूरुब माहीं * रह मनु के कोइ संतति नाहीं ॥
ऋषि वशिष्ठसन मनु यकबारा * जोरिपाणि इमिवचन उचारा ॥
करिय नाथ अस कोइ उपाई * जाते तनय लहहुँ मुनिराई ॥
सुनिमुनिविनय बैन मुनिकहेऊ * पुरीआशु जोइ रुचिउर अहेऊ ॥
मित्रावरुण याग सविधाना * करहु अवशि होई सन्ताना ॥
असकहिद्विजन निमंत्रि बुलाये * सविधि याग आरम्भ कराये ॥
तब श्रद्धा नामिनि मनुरानी * कहहोताप्रति यहिविधिवानी ॥
सुता लहहुँ जाते ऋषिराई * ह्वै कृपालु सोइ करिय उपाई ॥
कह होता तुम्हारि रुचि जोई * धरहु धीर पूरण सो होई ॥
असकहि तैसहि याग करावा * जानि न कोउ मर्म यह पावा ॥

दो०-भये पूर्ण मख यक सुता, कनक लता अनुहारि ।
इला नाम प्रकटति भई, भे मनु चकित निहारि ॥
तबवशिष्ठप्रतिदुखितचित, कह मनु यहि विध वैन ।
पुत्र लाहु हित यज्ञ यह, भयहु तपोवल ऐन ॥

सो०-वेद विहित जोइ काज, मृषा न कबहूं होत सो ।
कहहु हेतु ऋषिराज, भई सुता उत्पन्न कस ॥

ब्रह्म-तत्वविद तुम ऋषिराजू * कस विपरीत भयो मम काजू ॥
वादि वेद मंत्रहु ह्वै जाहीं * असमुनिदीखकबहुँहमनाहीं ॥
यह सुनि मुनि वशिष्ट तपखानी * होता कर्म ध्यान ते जानी ॥
मनुहिं सकल वृत्तांत सुनाई * दै धीरज इमि कह पुनराई ॥
तप वलते तुम कहँ यहि काला * पुत्रवान करिहौं महिपाला ॥

१-विष्णु पुराणमें कवि के स्थान प्रांशु दष्टके स्थान नेदिष्ट और नभगके स्थान में नाभाग लिखाहै (वि. पु. ४ अंश १ अ. देखो)

असकहि मुनिवर परम प्रवीना * तेहिदुहिताहि पुरुषकरिदीना ॥
पुनि सुद्युम्न नाम तेहि धरेऊ * मनुमन प्रकट क्षोभ सब हेरऊ ॥
एक समय मधि मृगया हेतू * गे सुद्युम्न अमात्य समेतू ॥

दो०–यकसुरुचिर वनमधिकुवँर, प्रविशे करन अहेर ।
सो वन रह्यो विहार थल, गौरि गौरिपति केर ॥
प्रविसततेहिबनमधिबहुरि, भये नारि नरपाल ।
अश्व अश्विनी सँगिहू, भये रमणि ततकाल ॥

सो०–लिखित पुराणन माहिं, यहि रहस्य कर हेतु इमि ।
गे शिव दर्शन काहिं, सुव्रतऋषिगणयकसमय ॥

यहि वन महँ तेहि समय मझारी * रहीं विवसना शैलकुमारी ॥
ऋषिन देखि गिरि सुता लजाई * द्रुतपद तहँ ते गईं पराई ॥
लखिअसमयऋषिगणमतिमाना * वेगि तहां ते कीन्ह पयाना ॥
तब मनोज मर्दन सुखदानी * प्रियहिबुझाय कह्यो इमिवानी ॥
यहि वन माहिं आजु ते जोई * प्रविशिहि पुरुष नारि सो होई ॥
तबते तेहि सुरम्य वन माहीं * पुरुषजाति प्रविशत रह नाहीं ॥
ह्वै भूपति अमात्य सह नारी * भ्रमतविपिनयकदिवसमझारी ॥
सहसा बुध आश्रम कहँ गयऊ * दोउदुहुनलखि मोहित भयऊ ॥

दो०–किय गन्धर्व विवाह बुध, तेहि तिय सँग सानंद ।
जन्मे ताते पुरुरवा, जेहिद्युति लखिविधुमन्द ॥
सोई पुरुरवा ते भयो, चन्द्रवंश विस्तार ।
जेहिकुल के विख्यात नृप, ज्ञानी गुणी उदार ॥

नारि रूपि सुद्युम्न भुवाला * बुधके भवन रहे बहु काला ॥
बहुरि दुखित ह्वै अति मनमाहीं * कियसुमिरण वशिष्ठ मुनिकाहीं
सुमिरतही मुनिवर तहँ आये * लखि नृप दशा खेद उर छाये ॥
तब मनु सुतहि उधारन हेतू * जाय तुरत वृषकेतु निकेतू ॥

शिवपद वन्दि कह्यो कर जोरी * प्रभुपद माहिं विनय यह मोरी ॥
मनु कुमार पै कृपा करीजै * तियते बहुरि पुरुष करि दीजै ॥
सुनिमुनि वदनविनययुत वानी * कियग्रहनियमशंभुसुखदानी ॥
एक मास तिय रहिहैं भूपा * एक मास पुनि पुरुष स्वरूपा ॥
करि यहि भाँति पुरुषता लाहू * आये नगर माहिं नर नाहू ॥
विधि अनुसार प्रजन प्रतिपाला * करन लगे सुद्युम्न भुवाला ॥
दो०—एक मास बीते जबहिं, नृपति नारि ह्वै जाहिं।
तीय वेश वश मास भरि, गृह ते निकरहिं नाहिं ॥
तब लगि दुखित रहत सब कोई * राजकाज मधि बहु त्रुटि होई ॥
भये भूपके तीन कुँवर वर * उत्कलगयअरुविमलनामधर ॥
ते तीनहु सुत बली अपारा * दक्षिणदेश कीन्ह अधिकारा ॥
राज करत वहु वत्सर भयऊ * नृप सुद्युम्न चौथपन अयऊ ॥
तब निज तनुज पुरुरवा काहीं * सौंपि राज्य गमने वन माहीं ॥
जब सुद्युम्न गमन वन कीना * तब मनु भूपति परम प्रवीना ॥
सुत हित विष्णुध्यान उर धारी * वहु वत्सर कीन्ह्यो तप भारी ॥
अरु बहु यज्ञ कीन्ह सविधाना * कीन्हद्विजन अगणितधनदाना
दो०—तेहि प्रभावते दश तनय, भे मनुके विख्यात।
द्विज मथुरा शुभकर्मफल, कबहुँ वादि नहिंजात ॥
श्री मद्भागवत ९ स्कन्ध प्रथम अध्याय ॥

सप्तविंश सर्ग ॥ २७ ॥

मनुकुमार पृषध्र का उपाख्यान ॥

दो०—मनुके अष्टम वंशधर, जो पृषध्र महिपाल।
सोमृगयाहित विपिन मधि, कीन्हगमनयककाल ॥

भये श्रमित विचरत बन माहीं * पर अहेर पायो नृप नाहीं ॥
यक ऋत्विक द्विजकुटी समीपा * पहुँचे भ्रमत बहोरि महीपा ॥
होम धेनु तेहि द्विजवर केरी * चरत रही बहुदूर हरेरी ॥
ताहि देखि भ्रम भूपहि भयऊ * गवयजानिशरतकिहनिदयऊ॥
तेहिद्विजसुत लखि धेनु निपाता * आय नृपतिढिग कोपित गाता ॥
शाप देन जब भूपहि चहेऊ * तबमनुसुतद्विजसनइमिकहेऊ ॥
विप्र तनय तुम बहुरि सुबोधा * शूद्र समान करत कस क्रोधा ॥
करहिं दोष जाने बिनु जोई * क्षमा योग्य संतत जन सोई ॥
ताते क्षमिय मोर अपराधू * करहिं न क्रोध हेतु बिनुसाधू ॥
भूप वचन सुनि विप्र कुमारा * दुगुण कोपि इमि वचन उचारा॥
रे शठ तोहि गर्व अस अहई * धेनु संहारि शूद्र मोहि कहई ॥
होहु शूद्र यहि अघते जाई * करु त्रयवरण केर सेवकाई ॥

दो०-बिसरि जाय तोहिं आजुते, पढ़े जोइ श्रुति गाथ ।
शाप देन हित नृपहु तब, लीन्हसलिलनिजहाथ ॥
नृपहिं विनाशन चह्यो तब, विप्र तनय झुँझलाय ।
तेहि क्षण आये धेनुपति, क्षमाशील द्विजराय ॥

सुतहि निषेधि कहेहु द्विजराजू * सुनुहु तात अस करहु न काजू ॥
लिखित वेद अरु वदत सुबोधा * परम शत्रु जीवनकर क्रोधा ॥
साम धर्म द्विज गणन सदाई * उभयलोक मधि शुभगति दाई ॥
कोप सतत तपबल बुधि हरही * ज्ञानकिहानि आयुक्षयकरही ॥
क्रोधवंत जन जगत मझारी * कबहू नाहिं धर्म अधिकारी ॥
कीन्ह्यो विजय क्रोध रिपु जोई * तासु शत्रु जग माहिं न कोई ॥
नृप अजान महँ धेनु सँहारा * तिनपै क्रोध वृथाहि तुम्हारा ॥
जानिहु करत यदपि यह काजू * तदपि न शाप योग्य महराजू ॥
धर्मशील यह अहैं नरेशा * इनके हृदय पाप नहिं लेशा ॥

करहिं अजान माहिं अघ जोई ❋ श्रुति वद दण्डनीय नहिं सोई ॥
दो०–जे अजान कृत पाप पै, देहि दण्ड बुध होय ।
सहस गुणा तिनते भले, अहैं अकोविद जोय ॥
कर्म दोषवश धेनु यह, कीन्ह प्राण परिहार ।
भूपहि देहु न शाप अब, त्यागहु क्रोध कुमार ॥
द्विजकुमार प्रति तब इमिवाणी ❋ कह्यो पृषध्र जोरि युगपाणी ॥
गवय जानि मैं धेनु सँहारा ❋ क्षमिय विप्र अपराध हमारा ॥
कह द्विज सुत मम वचन भुवालू ❋ नहिं ह्वै सकत वृथा कोइ कालू ॥
देत शाप मैं जोइ जेहि काहीं ❋ तेहि मेटन मोहि समरथ नाहीं ॥
पर जो अपर देन चह शापू ❋ सो न देब उर करिय न तापू ॥
पुनि द्विज कह इमिवचनरसाला ❋ सुतकृति ते मैं लजित भुवाला ॥
दैव घटनपै तुम सम ज्ञानी ❋ क्षभितनहोहिं धीर उर आनी ॥
असकहि विदा महीपहि करेऊ ❋ द्विजहुसहितसुतनिजगृहफिरेऊ ॥
करि शूद्रता लाहु महराजू ❋ कीन्ह्यो राजपाट सुख त्याजू ॥
देश विदेश फिरन नृप लागे ❋ हरिगुण गानमाहि अनुरागे ॥
दो१–कछुक कालमहँ यकविपिन, माहिं जाय नर नाहु ।
दावानल मधि प्राण तजि, परमधाम किय लाहु ॥
(मार्कण्डेय पु. ११२ अ.)

अष्टविंश सर्ग ॥ २८ ॥

मनु पुत्र करुषादि की वंशावली ॥

दो०–मनुके सबन कनिष्ट सुत, कवि नामकहु सुवीन ।
वयस किशोरहि माहिंसो, लाहु मोक्षपद कीन ॥

छठे वंशधर करुष ते, कारुष क्षत्रिय जाति।
प्रकटे जेहि कुल के नृपति, समृधि शालिविख्यात॥

नरिन्द छन्द॥

मनु के पञ्चम तनय महामति धृष्ट नाम जो रहेऊ।
तेहि सुवंश के सकल वंशधर ब्राह्मणत्व पद लहेऊ॥
मनुके द्वितिय तनय नृगके सुत भये सुमति जिन नामू।
नृपति सुमति सुत भूत ज्योति भे तासुत वसु वलधामू॥
वसुके सुत प्रतीक तिनके सुत ओघवान नय नागर।
तिनके कुँवरहु केर नाम भा ओघवान गुण सागर॥
दुहितहु भइ यक ओघवानके ओघवती शुचिरूपा।
पाणि ग्रहण जेहि कुवँरकेर किय ख्यात सुदर्शन भूपा॥
मनुसुत सप्तम नरिष्यन्तके चित्रसेन सन्ताना।
चित्रसेन सुत दक्ष दक्षसुत नीति दक्ष मीढ्वाना॥
माढ्वान सुत पूर्ण पूर्णके इन्द्रसेन सुकुमारा।
इन्द्रसेन सुत वीतिहोत्र जेहि ख्यात सुयश संसारा॥
वीति होत्र सुत सत्यश्रवा ता सुत उरुश्रवा सुजाना।
उरुश्रवाके तनुज मनुजवर देवदत्त मति माना॥
तिन कोविदवर देवदत्तके जगत पूज्य संताना।
अग्निवेश्यके नामते प्रकटे अग्निदेव भगवाना॥
तिनते प्रकट अग्निवेश्यायन विप्रवंश जग माहीं।
जातु कर्ण कानीनहु कहवुध अग्निवेश्य ऋषि काहीं॥
मनुसुत चौथ दिष्ट के नन्दन भे नाभाग सुजाना।
लह्यो जाय वैशत्व करहुँ अब सोइ इतिहास वखाना॥

(श्री माद्भा. ९ स्कन्ध २ अ.)

१—कूर्च। २—यह नाभाग, नभगपुत्र नाभाग से पृथक हैं।

एकोनत्रिंश सर्ग ॥ २९ ॥

नाभाग की वैश्यत्व प्राप्ति ॥

दो०—नव यौवन महँ यक दिवस, राज कुवँर नाभाग ।
विचरत पुर शोभा लखत, इत उत सह अनुराग ॥
अकस्मात यक निरुपमा, वणिकसुताहि निहारि ।
ह्वै मोहित कह नृप तनय, तेहिपितु काहिंहँकारि ॥
सुनहुवणिकनिजसुमुखिकुमारी ❋ व्याहिदेहुमोहिंविधिअनुसारी ॥
भूप कुँवर मुख सुनि इमि बैना ❋ कह्यो वणिकसमुचितयहहै ना ॥
तुम क्षत्रिय पुनि राजकुमारा ❋ सोह कि मम सँग यह व्यहारा ॥
नृपति तनय कह सहित सनेहू ❋ धर्मशास्त्र कर सम्मत येहू ॥
द्विजतजि तीन वर्णकी नारी ❋ व्याहनकाहिं क्षत्रि अधिकारी॥
कह्यो वणिक हे कुवँर प्रवीना ❋ हमतुमदोउ नर नाथ अधीना ॥
राज निदेश बिना यह काजू ❋ मैं करि सकत नाहि युवराजू ॥
यहि हित नृप मत लेहु अगारी ❋ तब हम व्याहि देब स्वकुमारी ॥
नृप कुमार कह मैं पितु पाहीं ❋ कछुकहिसकत लाजवशनाहीं ॥
तब कह वणिक भवन तुम जाहू ❋ हमहिं करव नृप आयसु लाहू ॥
दो०—अस कहि कुँवँरहि करि विदा, राजसभा महँ जाय ।
नृपहि सुनायहु सबकथा, करपुट शीश नवाय ॥
बणिक वदन इमि वचन सुनि, भूपति हृष्ट सुजान ।
ऋचीकादिमुनिद्विजन कहँ, वोलिसहितसन्मान ॥
सो०—सुनेहु वणिक सन जोय, सो सुनाय मुनियन नृपति ।
कह्यो उचित जस होय, सम्मत करहु प्रदान तस ॥
विप्रवृन्द कह सुनिय नरेशा ❋ धर्म शास्त्र यह देत निदेशा ॥
नृप सुत प्रथम व्याहि क्षत्राणी ❋ गहै वैश्यजा कर पुनि पाणी ॥

बहुरि द्विजन नृपसुतहि बुझावा * पर नाभागहि नेक न भावा ॥
सदु उपदेश लाग तेहि ऐसे * अस्त्र प्रहार वायु प्रति जैसे ॥
डसै भुजङ्ग करै विष पाना * ताकर मंत्र औषधी नाना ॥
पर कामिनी कटाक्षहत जोई * तेहिकर अगद उपाय न कोई ॥
शूर सोय दृढ़ अंग महाना * जेहिउरधसतन तियदृगवाना ॥
का बहु समर किये जपलाहू * अवला जासु हृदय कर दाहू ॥

दो०—निकरि सभाते नृप तनय, तुरत नगर महँ जाय।
वणिककुमारिहि हरिण करि, बोल्यो खड्ग उठाय ॥
राक्षस व्याह विधान ते, हरण याहि मैंकीन।
अब सामर्थी होय जो, आयलेय सो छीन ॥

सुता हरण लखि देत दुहाई * कह्यो वणिक भूपतिसन जाई ॥
सुनि सुतकर्म क्रोध करि भारी * कह नरेश सेनपहि हँकारी ॥
वेगि विपुल दल सहित सिधारहु * कुलकलंकि कुवँरहि संहारहु ॥
राज निदेश सेनपति पाई * विकटी घनी वाहिनी सजाई ॥
जाय तुरत नृपसुत कहँ घेरा * होन लाग संग्राम घनेरा ॥
चहुँदिशि ते नृप सैनिक वीरा * वर्षहिं अस्त्र शस्त्र गम्भीरा ॥
पर रणनिपुण महीप कुंमारा * पलमहँवहुदलदलिमलिडारा ॥
यह लखि दूत भूप ढिग गयऊ * रण वृत्तांत कहत सब भयऊ ॥
सुनि सकोप भूपति उठि धाये * रथचढ़ि समरभूमि महँ आये ॥
धनु चढ़ाय सुत पितु बलधामा * करन लगे भीषण संग्रामा ॥

सो०—अकस्मात तेहिकाल, आयकह्यो ऋषिमुनिन इमि।
तवसुतकाहिं भुवाल, भयो प्राप्ति वैश्यत्व अब ॥
तुमहिं वैश्य के साथ, उचित नाहिं संगर करन।
यह सुनिकै नरनाथ, गये भवन कहँ समर तजि ॥

एक सुताहि व्याहि नाभागा * पितुढिगजायसहितअनुरागा ॥

वन्दि चरण बोल्यो कर जोरी * प्रभुपद माहिं विनय यह मोरी ॥
क्षमिय सकल अपराध हमारा * विधिलिपि कोउ नमेटनहारा ॥
अब निदेश दासहि जोइ होई * शीश धारि प्रतिपालहु सोई ॥
सचिवन धर्म शास्त्र अनुसारा * नृपसुतप्रति इमिवचन उचारा ॥
कृषि पशुपाल वणिज व्यवहारा * अब सनीति यह धर्म तुम्हारा ॥
इमि नाभाग रजायसु पाई * भयहु विदा जनकहि शिरनाई ॥
सन्तत पितु निदेश अनुसारा * धर्म समेत वणिक वृति धारा ॥

दो०—कछुक काल महँ यक तनय, वीर भनन्दन[1] नाम ।
कीन्ह प्रसव नाभाग तिय, भयहुजोअतिबलधाम॥
एक दिवस निज तनुजप्रति, कह्यो भनन्दन मात ।
होहु तात गोपाल[2] तुम, सकलजगतविख्यात॥

सो०—मातु निदेशहि पाय, जाय राज ऋषि नीप[3] ढिग ।
किय शिक्षा मनलाय, धनुर्वेद प्रक्रिया यत ॥

याते प्रथम दिष्ट महराजू * मोक्षलाहुकिय करितनुत्याजू ॥
तब तिन भ्रात पौत्र बलधामा * वसुरातादि ख्यातजिननामा ॥
दिष्ट राज्य पै सकल प्रकारा * करलियनिजथापनअधिकारा॥
धनुर्वेद रणकला मझारा * होय निपुण नाभाग कुमारा ॥
स्वगुरु नीप अनुशासन पाई * कह पितृव्य सुतगणसन जाई ॥
पैतृक राज्य धर्म अनुसारा * देहु अर्द्ध तुम बांटि हमारा ॥
यह सुनि तिनन्ह व्यंगयुत कहेऊ * तुमकृषिकारिवणिकसुतअहेऊ॥
करिहौ राज्य कौन मुख लाई * वन वन पशुन चरावहु जाई ॥
कह नाभाग तनय बलधामा * देहु राज्य नतु करु संग्रामा ॥
तब सगर्व तिन कटक सजाई * पहुँचे समर भूमि सब जाई ॥

१–श्रीमद्भागवतानुसार भलन्दन (६ स्क. २ अ. २३ श्लो.) । २–गोप, व अपरार्थ भूपाल । ३–२५ सर्ग देखो ।

दो०-सुभट भनन्दन सन तिनन्ह, होन लाग संग्राम।
शैल शूल पट्टिश परिघ, हनतवीरअविराम॥
धर्म युद्ध ते धनुर्द्धर, भट नाभाग कुमार।
जीति रिपुन सब राज्य मधि, करिआपनअधिकार॥

सो०-जाय स्वजनक समीप, जोरि पाणियुग कह्योइमि।
है पितु आपु महीप, करहुराज्य ममविनययह॥
सुनि सुत मुख इमि वैन, विहँसि कह्यो नाभाग तब।
तव पूर्वज गुण ऐन, रहे स्वामि यहि राज्यके॥

रोला छन्द॥

अब तुमहीं यह राज्य जाय भोगहु सुकुमारा।
पितु निदेश सब काल अहै प्रति पाल्य हमारा॥
मैं कायरता वश न राजपद ते च्युत भयऊं।
वणिक सुता तव मातु ताहि मैं व्याहि जो लयऊं॥
यहि निमित्त हम काहिं नीतिवत जनक प्रवीना।
वणिक वर्ण करि बहुरि राज्यते वंचित कीना॥
करहुँ राज्य यदि तात जनक कर आयसु टारी।
तौ शत कल्पहु माहिं होइ नहिं मुक्ति हमारी॥
बहुरि श्रेष्ठ कुलमाहि भयो है जन्म हमारा।
तव उपारजित राज्य करहुँ मैं कौन प्रकारा॥
याते तुम जोइ राज्य बाहुबल ते किय लाहू।
भोगहु तुमहीं ताहि जाय सुत सहित उछाहू॥
अथवा फेरि वहोरि देहु निज वन्धुन काहीं।
जनक वचन उलंघि राज्य करिहौं मैं नाहीं॥
राजविभव सुख भोग करन ते सुनु प्रिय लालन।

अहै सहस गुण श्रेष्ठ जनक कर आयसु पालन ॥
सुनि पति मुखइमिवचनभनन्दनजननिजोरिकर ।
कहन लगीं हँसि सुनिय प्राणपति दृढ़प्रतिज्ञ धर ॥
भयहु वैश्य तुम नाहिं मैं न हौं वणिक कुमारी ।
श्रेष्ठ क्षत्रिकुल माहिं भई उत्पत्ति हमारी ॥
दो०—मैं महराज सुदेव की, अहौं सुता मतिमान ।
मम पूरुव इतिहास अब, सुनिय नाथ धरि ध्यान ॥
(मार्क. पु. ११३–११४ अ.)

त्रिंश सर्ग ॥ ३० ॥

सुदेव व कृपावती का उपाख्यान ॥

दो०—यक सुदेव नामक नृपति, रहे सकल गुण धाम ।
तिननृप कर यक सखा रह, प्रथित जासु नल नाम ॥
सो०–सहित सखा यक काल, वनविहार हित गये नृप ।
इत उत भ्रमत भुवाल, गे यकऋषि आश्रमनिकट ॥
तहाँ च्यवन सुत प्रमति किनारी * राजति रहिं कुटिद्वार मझारी ॥
तेहि निरुपम वर रूप निहारी * होइ कामवश नल अघचारी ॥
नृपके लखत धाय तेहि धरेऊ * मदवश नहिं अधर्म ते डरेऊ ॥
तब अति शंकित ह्वै ऋषिनारी * चितकारेहु पतिनाम उचारी ॥
तियकर आरत स्वर सुनि पाई * आये प्रमति तहँद्रुत धाई ॥
खल नल केरि हेरि खलताई * कह सुदेव नृप प्रति द्विजराई ॥
रक्षा करहु महीप हमारी * खलन सतत नृप ताडन कारी ॥
यहि लम्पटहि नृपति द्रुत वारहु * रक्षि स्वधर्म कर्म तस सारहु ॥
नलप्रति नृपति प्रीति अति रहेऊ * यहिहितवादिवचनइमिकहेऊ ॥

भयहु विप्रवर भ्रम तुम काहीं * हौं मैं वणिक क्षत्रि हौं नाहीं ॥

दो०—भूप वचन सुनि च्यवन सुत, कहँ सरोष इमि बैन।
तै यथार्थही वणिक हसि, क्षत्री तैं शठ हैं न ॥
जो क्षत ते रक्षा करहिं, सोइ क्षत्री क्षितिपाल।
दुचितकार वारणहि हित, गहैं क्षत्रि करवाल ॥

यह सब लक्षण नहिं तुव माहीं * कहसि सो सत्य मृषा कछु नाहीं ॥
तैं शठ क्षत्रिवंश यश घाली * अवशि होइहै वणिक कुचाली ॥
असकहि ऋषिवर कोपि अपारा * नयना नलते नल किय छारा ॥
लखि ऋषिकर यहिभाँति प्रभाऊ * ह्वै शंकित नृप छाँडि दुराऊ ॥
जोरि पाणि इमि वचन उचारा * क्षमिय नाथ अपराध हमारा ॥
यह बुधिहरा सुरा कर दोषू * साधुन करहिं मत्त पै रोषू ॥
भूप विनय सुनि मुनि विज्ञानी * कछुक शांत ह्वै कह इमि वानी ॥
वचन अमोघ मोर नृप जानहु * ह्वै हौ वैश्य सत्य करि मानहु ॥
पर कछु काल गये यह शापू * होइ दूर उर करिय न तापू ॥
तव दुहितहि यक समय मझारा * हरण करी यक राजकुमारा ॥

दो०—तब तुम्हार वणिकत्व यह, होइ दूर नर नाहु।
मम पितु कहँ वैश्यत्वप्रभु, यहि प्रकार भा लाहु ॥
अबनिजउत्पतिकीकथा, तुम सों करति बखान।
रहे सुरथ राजर्षि यक, धर्म धुरीण सुजान ॥

कुधर गन्ध मादन पै सोई * करत रहे तप दृढ़व्रत होई ॥
एक समय यक सुघर विहंगा * श्येन विदारित अंग विभंगा ॥
छटपटात तिन नृपति अगारी * गिरेहु तासु वड़ कष्ट निहारी ॥
छाव दया अस नृपमन माहीं * गिरे मूर्छि रहि तनु सुधि नाहीं ॥
मोह विगत जब भे नर नाहू * भातिन तनुते जन्म मोहिलाहू ॥
लखिमोहि नृपहि नेह उर छयऊ * हर्षित चित उठाय मोहि लयऊ ॥

पुनि मन गुनि अवनीश दयालू * कहयहिभाँति वचनतेहिकालू ॥
करुणा दशा माहिं यह कन्या * जन्मत भई सुमुखि जग धन्या ॥

सो०–कृपावतो यहि हेत, धरयों नाम यहि सुताकर ।
वहुरि सनेह समेत, विधिवत ममपालनकियो ॥
नवल वयस महँ नाथ, एक समय मनमोद हित ।
विचरत सखियन साथ, रहिउँमनोरमविपिनमधि ॥

दो०–सोइ समय घट योनि के, सोदर तपो निकेतु ।
आये तेहि घन गहन मधि, सुमन चयनके हेतु ॥

तोमर छन्द ॥

मुनिकेर वेश निहारि । मम सखिन मद मतवारि ॥
परिहास तिनके संग । लागीं करन सह व्यंग ॥
कोइ कह्यो मम अनुमान । यह विप्र भंड महान ॥
कोइ कह लखिय वहि ओरि । कतवन सुमन रह तारि ॥
यहि हित हृदय अस होय । यह सुमवणिक है काय ॥
पुनि पुनि सखिन मुनि काहिं । जब वणिक कह हँसि माहि ॥
तन कोपि मुनि तप ऐन । हमसन कह्यो इमि वैन ॥
मोहि वणिक कह तैं जोय । यहि हित वणिकजा होय ॥
रहु वैश्य के गृह जाय । सुनि मैं हृदय अकुलाय ॥
सविनय कह्यों कर जोरि । नहिं नाथ है मम खोरि ॥
परिहास सखि गण कीन । पर शाप मोहिं कस दीन ॥
कह ऋषि खलन संग माहिं । सुजनहु कुटिल ह्वै जाहि ॥

दो०–एक विन्दु मद ते अशुचि, पञ्चगव्य जिमि होय ।
तिमि कुसंग ते विगरहीं, सरल सुशीलहु जोय ॥
परतुम निज निर्दोषता, कहि प्रसन्न कियमोहिं ।
यहि हित शाप उधारकर, समय बतावत तोहिं ॥

तुम लै जन्म वैश्य गृह माहीं * जब निज कुवँर वीरवर काहीं ॥
राज्य ग्रहण हित आयसु देहौ * तब पतिसहित क्षत्रिपुनि ह्वैहौ ॥
नाथ जनक अरु हम इमि दोऊ * क्षत्री अहैं वणिक नहिं कोऊ ॥
जस तुम नाथ महीप किशोरा * तैसहि अहैं क्षत्रि पितु मोरा ॥
मोहि व्याहि तुम कोइ प्रकारा * पतित न भयहु नीतिअनुसारा ॥
सुनि नाभाग तीय मुखबानी * सुत प्रति कहेउ हर्ष उरआनी ॥
सुनु पितुभक्त कुवँर यह राजू * मैं किय पितु निदेश ते त्याजू ॥
विषय लोभि पामर नर जोई * त्यक्त वस्तु पुनरपि गहसोई ॥

दो०-विज्ञ प्रतिज्ञ सुधर्म रत, अहैं जिते जग माहिं।
ते सतपथ पद कबहुँ, धरहिं पछारी नाहिं ॥

सो०-मुखमल करिपरित्याग, भखै न मानुष बहुरि तेहि।
श्वानहि यह अनुराग, अकछिताहि पुनि भक्षही ॥
मैं निज रुचि अनुसार, नृप पद ते वञ्चित भयहुँ।
अब मोहिं कौन प्रकार, सोहराज अधिकार यह ॥

वैश्य जानि तब जननी काहीं * व्याहेहु सबनविदितजगमाहीं ॥
वणिकसुतापति नृपति न होई * लिखितनीतिबुधवदत न गोई ॥
होहिं न करदायी कर ग्राही * जेहिजसउचितकरनतसचाही ॥
करहु जाय तुम राज्य सुजाना * करब वैश्यवत हम करदाना ॥
जनक निदेश भनन्दन पाई * लीन्ह्यों राज्यभार तब जाई ॥
ह्वै कृतदार धर्म अनुसारा * भये सुखी नृप सकल प्रकारा ॥
यथा पिता पालत निज नन्दन * पालत तथा प्रजा न भनन्दन ॥
दया दान कीरति नृप केरा * छायो सब जग माहिं घनेरा ॥

दो०-कछुक काल महँ एकसुत, अति द्युतिवंत ललाम।
भयहु भनन्दन नृपति के, सुभग वत्सप्री नाम ॥

(मा. पु. ११४-११६ अ.)

एकत्रिंश सर्ग ॥ ३१ ॥

महाराज वत्सप्री की कथा ॥

दो०-रहे विदूरथ नाम यक, भूपति नीति निधान।
तिनके सुमति सुनीति युग, तनय रहे गुणवान ॥
अरु यक अनुपम रूपवति, मुदावतीसुकुमारि।
जासुरूप लावण्यलखि, लजति सुमुखि सुरनारि ॥

एक दिवस नृप मृगया हेतू * गमने सेनप सचिव समेतू ॥
विचरत भूपति विपिन मझारी * एकगर्त क्षिति मुख अनुहारी ॥
लखि उरमधि ह्वै चकित अपारा * लगे करन यहिभाँति विचारा ॥
यह अति विस्तृत गर्त कराला * अवशि होइहै विवर पताला ॥
अथवा अद्भुत कौतुक कोई * यहिसुविशाल विवरमधिहोई ॥
इमि चिन्तत उरमाहिं भुवालू * सुव्रतनाम ऋषिवर तेहिकालू ॥
सहसा नर नायक ढिग आये * मुनिहि देखि नृप शीश नवाये ॥
जोरि पाणि पूँछेहु पुन राई * तुम त्रिकालदर्शी ऋषिराई ॥
मैं यह विवर कबहुँ नहि हेरा * सब वृत्तान्त कहिये यहि केरा ॥
नृपतिवचनसुनिविहँसिमुनीशा * लागे कहन सुनिय अवनीशा ॥

दो०-जगत माहिं देवाधिपति, सहस नयन के न्याय।
सर्वदृष्टि भय क्षितिपतिन, चाहिय होन सदाय ॥
जिमि व्यापक पावक अनिल, यावत जगत मझार।
होय सर्वमय राज्य मधि, भूपति तौन प्रकार ॥

जेतक विषय राज्य मधि होई * तिन्हैं जानिसक नृपति न जोई ॥
तेहि सामान्य मनुज बुध कहहीं * नृपपदवाचि कबहुँनहिंअहहीं ॥
यह भयदायक विवर महीपा * है थित तव रजधानि समीपा ॥

तबहुँ आजुलौं तुम यहि काहीं * जान्यो कोइ प्रकार ते नाहीं ॥
निपुण राजकृतिमधितुमख्याता * सुनि तव वचन चकित मैंताता ॥
सुनिय रहस यहि केर भुवाला * शठकुजृम्भदानव यक काला ॥
यहिथलमधिकसिमुषल प्रहारयो * इततेंक्षितिपताल लगिदारयो ॥
सो दुरन्त दानव दुख दाई * वसत रसातल माहिं सदाई ॥

दो०-यक सुनन्द नामक मुषल, उत्कट काल समान ।
देव विश्वकर्म्मा कियो, एक समय निर्मान ॥
खल कुजृम्भ छल छन्द सों, हरि तेहि मूषल काहिं ।
तेहि प्रभाव ते काहु सन, होत पराजित नाहिं ॥

सो०-क्षिति पताल लगि दारि, सोइ मूषलाघात सों ।
देव द्विजन अपकारि, दनुजनपथरचिदीन्हशठ ॥
तबसों असुर निकाय, नितप्रति निकरिपतालते ।
करहिं विध्वँस सदाय, जपतपादियतधर्मकृति ॥

तेहि दनुजहि विनु किहे सँहारा * तुम निचिंत नृप कौन प्रकारा ॥
जौन राज्य मधि प्रजा दुखारी * वसन धर्म तेहि देश मझारी ॥
यहिहिततुम्हहिं उचित सबभाँता * रक्षहु धर्म अराति निपाती ॥
अब यक रहस कहत तुम पाहीं * जानत जोय कुजृम्भहु नाहीं ॥
जेहि मूषल वलते त्रिदशारी * अपराजित तिहुँलोक मझारी ॥
परसि लेइ तिय जेहि दिन ताही * तेज हीन तेहि दिन ह्वै जाही ॥
अब जस रुचै करहु तस काजू * असकहिगमनकीन्हऋषिराजू ॥
भूपति चित्त चिन्त अति छयऊ * निरानन्द निजमन्दिरअयऊ ॥

दो०-क्रूर असुर वलसुमिरिनृप, अति विषाद उर छाव ।
शोक दाव दाहत हृदय, सूझत कछु न उपाव ॥
वहुविचार करियकदिवस, मंत्रिनकाहिं बुलाय ।
दनुज मुषल करयत रहस, कह्यो भूप समुझाय ॥

तीय परस ते तेज हत, होत सो मुषल कराल ।
सभा सदनसन जेहिसमय, वर्णत रहे भुवाल ॥
सो०-तेहि क्षण नृपति कुमार, अपरकोष्टतेदुरिसुमुखि।
ध्यान धारि श्रुति पारि, सुनेहुमर्मतेहिअस्त्रकर ॥
यक दिन सखिन समेत, मुदावती भूपति सुता ।
मन प्रमोद के हेत, गई एक उद्यान मधि ॥
तेहि वन माहिं कुजृम्भहु अयऊ * मुदावतिहि शठ हरि लै गयऊ ॥
सुताहरण भूपति सुनि पाई * कोपि दोउ निज सुतन बुलाई ॥
कहेउ सदल तुम वेगि सिधारहु * वधिदनुजहि निजस्वसाउधारहु
पितु आयसु लहिकरि रणवेशा * दोउपताल मधि कीन्ह प्रवेशा ॥
दनुज राज नृप कटक निहारी * आव समर हित घोर हुँकारी ॥
असुर अतुल वल छली अपारा * पल महँ भूप सेन वधि डारा ॥
करि कुँवरन वन्दा पुनराई * डारेहु वन्दि भवन महँ जाई ॥
सुनि नरनाथ समर सम्वादा * प्रकट हृदयमधिविषमविषादा ॥
बहुरि भूप करि विविधि विचारा * नगर माहिं यह कीन्ह प्रचारा ॥
सहित कुमारन सुता हमारी * शठ दनुजहि वधिजोई उधारी ॥
दो०-तेहि मृग शावक लोचना, मनरोचनी कुमारि ।
करब दान बहु विभव सह, विविध भांति सत्कारि ॥
यह घोषण सुनि कान, समर विलासी वत्सप्री ।
अस्त्र शस्त्र खर शान, साजिविदूरथढिगगये ॥
दनुज निधन हित राजनिजेशा * लै पताल मधि कीन्ह प्रवेशा ॥
असुर कोट ढिग भूप कुमारा * जाय वज्र इव धनु टंकारा ॥
सुनि को दण्ड चण्ड ध्वनि घोरा * धाव दनुज पति कोपि कठोरा ॥
करि केहरि ध्वनि दोउ बल धामा * लागे करन तुमुल संग्रामा ॥
अविरल आयुध विविध प्रकारा * अविरत हनत देत ललकारा ॥

लरहिं करिणि हित युगकरि जैसे * असुर वत्सप्री रणरत तैसे ॥
त्रयनिशि दिवस दोउ रणधीरा * करत रहे संग्राम गभीरा ॥
पुनि नृप सुतके शरन सुरारी * जर्जर तनु व्याकुल है भारी ॥
मुषल लेन हित करि चतुराई * गढ मधि गयो वेगते धाई ॥
सो सुनन्द मूषल भयकारी * रह थित अन्तःपुरी मझारी ॥

दो०-गुप्त रहस तेहि मुषलकर, असुरहु जान न जोय ।
वन्दिनिनृपनन्दिनिसुमुखि, भलजानतिरहिंसोय॥
यहि निमित्त जेहि दिवसते, मच्योसमरभयकारि ।
तेहि दिनते प्रतिदिन मुषल, परसतिनृपतिकुमारि॥

सो०-दनुजराज तहँ जाय, कालदण्ड सम मूषलहि ।
धारि धाय पुनराय, गयो हुंकरत समर थल ॥
कोपि कुजृम्भ कराल, हन्यो मुषल नृप तनय पै ।
पर सो शस्त्र विशाल, भयो व्यर्थ तियपरस वश ॥

मुषल व्यर्थ अवलोकि सुरारी * खर करवाल ढालकर धारी ॥
करिध्वनि प्रलय पयोद समाना * गिरयो भूपसुतसन बलवाना ॥
लपकि झपकि वहुकरिछलछंदा * करत कुजृम्भ भयंकर द्वन्दा ॥
तब रणशूर भनन्दन नन्दन * करिवन्दनहरि दुष्टनिकन्दन ॥
प्रखर हुताशन शायक घोरा * लै तुणीर ते धनुपै जोरा ॥
श्रुतिलगि धनुषतानि तकि मारा * भयो दनुजपति क्षतजरिछारा ॥
असुर मरण लखि सुरगण हर्षे * दै दुन्दुभि नभ ते सुम वर्षे ॥
सकल पताल वासि हर्षाने * भूप सुतहि बहु विध सन्माने ॥

दो०-निरान्द दायी मुषल, जेहि सुनन्द रह नाम ।
तासु तेज हरि मुदावति, दियआनँद तिहुँ धाम ॥

सो०-मुदावती कर नाम, तब अनन्त है अतिमुदित ।
सुन्दर सुभग ललाम, धरयो सुनन्दानन्ददा ॥

बहुरि वत्सप्री अति वलधारी * भूप विदूरथ सुतन उधारी ॥
लै नृप दुहितहि सहित हुलासा * आये भूप विदूरथ पासा ॥
लखि भूपति अतिशय हर्षाये * वत्सप्रीहि निज हृदय लगाये ॥
पुनिनिजदुहितहिसहितविधाना * कीन्ह भनन्दनसुतहिप्रदाना ॥
दै बहु धन मणि माणिक माला * सहित नेहकिय विदा भुवाला ॥
सतिय वत्सप्री गृह मधि आये * जननिजनकउरअतिमुदछाये॥
नृपति भनन्दन रविकुल चन्दा * करि वहु वर्ष राज सानन्दा ॥
वहुरि वत्सप्री कहँ दै राजू * गये सतीय विपिन तप काजू ॥
भूप वत्सप्री सब गुण खानी * राजिराजआसन सुखदानी ॥
पालहि प्रजन सनीति सनेहू * जहँ न व्याप स्वप्नेहु दुख केहू ॥

दो०—सती सुनन्दा गर्भ ते, नृपके अति वलवान ।
भये ख्यात द्वादश तनय, द्वादश भानु समान ॥

नाम तिनन्ह यह प्रांशु प्रवीरा * शूर सुचक्र वली रणधीरा ॥
क्रम विक्रम अरु चण्ड प्रचण्डा * वलवलाकजिनतेजअखण्डा ॥
सुमति सुविक्रम विक्रम धामा * अरुलघुसुतस्वरूपजिननामा ॥
तिन मधि सबन ज्येष्ठ सुकुमारा * प्रांशु नाम गुण शील उदारा ॥
जबहिं वत्सप्री नृप यशराशी * राज काज तजि भे वनवासी ॥
तब शुचि राज सिंहासन सोहे * प्रजपुंज जिन गुण लखि मोहे ॥
प्रांशु अवनिपति के संताना * भये प्रजाति ख्यात मतिमाना ॥
अगणितमख प्रजातिनृप कीन्हा * दानभूरि भू देवन दीन्हा ॥
शतक्रतु सहित देव समुदाई * जेहिशुचियाग भागलियआई ॥
अमर अराति अमित वलधारी * जम्भदनुजप्रतिजगअपकारी ॥
ताहि नव नवति असुर समेतू * मारि प्रजाति भानु कुलकेतू ॥
करि प्रमुदित सब त्रिभुवन काहीं * भये सुयश भाजन जग माहीं ॥

१-श्रीमद्भागवतानुसार "प्रमिति" विष्णुपुराण व मार्कण्डेय पु० अनुसार "प्रजाति" ।

दो०—पाँच तनय तिनके भये, महरथ[1] शौरि खणित्र।
सुनय उदावसु सवनकर, चरित विचित्र पवित्र॥
तिनमहँसबगुणगणनिपुण, भे खणित्र महिपाल।
अबवरणहु तिननृपतिकर, कीरति विमल विशाल॥
(मा. पु. ११६–११७ अ.)

द्वात्रिंश सर्ग॥ ३२॥

महाराज खणित्र का चरित्र॥

सो०—नृप खणित्र वलसींव, शूर सूरि सतपथ निरत।
पर उपकारि अतीव, विनयशीलनिजप्रजनप्रिय॥
तिन भूपतिहि सदाय, यहिविध रुचि उरमधिरहत।
यावत प्रजा निकाय, रहैं शोक शंका विगत॥

आधिव्याधि अरुमनस विकारा * होय न काहुहि राज्य मझारा॥
द्वेष ईरषा कपट दुराऊ * इनकर पुरमधि रहै न नाऊ॥
प्रीति प्रतीति नीति आचारा * होहिप्रजनमधिअधिकप्रचारा॥
विविध विभव धन मान बड़ाई * करहिं लाहु सव लोक सदाई॥
मधुर वचन ते सतत नरेशा * देहिं प्रजन इमि सत उपदेशा॥
सर्व भूत मधि सुमति तुम्हारी * रहै यहै अभिलाष हमारी॥
जिमिनिज तनुअरु तनुजनकेरा * चहत सतत तुम कुशल घनेरा॥
तिमि सव प्राणिनकर मतिमाना * करहुशक्तिभरिकुशलविधाना॥
भूलि न करिय काहुकर हानी * परक्षति कहँआपुनक्षतिजानी॥
पर सुख देखि जोइ हर्षाहीं * ते नर अमर सरिस जगमाहीं॥

१—महारथ।

दो०—जेहि विध निज प्रति अपरते, तुम चाहत व्यावहार ।
तिनहुन प्रति व्यवहार तुम, करहू सोइ प्रकार ॥
निज स्वारथहित परअहित, साधत जोइ कुचालि ।
तेहि भोगन परिता सुफल, चाहै आजु कि कालि ॥
सो०—अपर करन जे कोय, परअनरथकर स्वयं दुरि ।
ताहु केर फल जोय, भोगन परितेहि प्रेरकहि ॥
हेतु तासु धीमान, कोविदगण इमि भाषहीं ।
कारक भिन्न न आन, कार्य्यकेर फल भोगहीं ॥
जिमि उपकारक केरि सदाई * चाहत तुम चित सोहिं भलाई ॥
द्वेष कारिहू कर तेहि भाँती * उचित चहन मंगल दिन राती ॥
यह सब जग यक देह समाना * प्राण तासु श्रीपति भगवाना ॥
अँगुरिहु कटे पीर जिमि प्रानहि * होत याहि सबहीजन जानहि ॥
तिमि कोउ काहिं देहि दुख जोई * जगत पिताहि व्यथितकरसोई ॥
एकहु ईंट जासु खसि जाई * तेहि गृह केर न भावि भलाई ॥
पर अति अधिक बाहु ते जानी * कोइ जनकेर किहे कछु हानी ॥
एकहु जनकर किहे अकाजू * होत निवल तेहि सोहि समाजू ॥
पुनि सजाज के हानि मझारी * तेहिक्षतिकारिहुकरक्षतिभारी ॥
जोइ समाज केर अपकारी * सो निज मूलहु छेदन कारी ॥
दो०—स्वार्थ हीनता ते स्वयं, सकल काज सिधि होय ।
जगमधिस्वारथरहितसम, पाव न आदर कोय ॥
क्षुद्र दीपकहु भासजिमि, तिमिर राशि करि नाश ।
निजप्रकाशतेसवनकहँ, देत महान हुलाश ॥

रोला छन्द ॥

तिमि पवित्र सुचरित्र मनुज सामान्यहु जोई ।
तेहि शुभप्रद व्यवहार सोहिं जगकर शुभ होई ॥

यहि विध हित उपदेश देहिं महिपाल सदाई।
पालहि प्रीति समेत प्रजन निज सुवन कि नाई॥
निज चारहु लघु बन्धुकाहिं नृप नीति निधाना।
पृथक पृथक यक एक नगर करि विधिवत दाना॥
क्षिति ससागरा आपु लगे भोगन नर नाहू।
वसत प्रजा जेहि राज्य माहिं नित सहित उछाहू॥
नृप खणित्र के भ्रात शौरि नृपसन यक काला।
विश्ववेदि तिन सचिव जोइ दुर्बुद्धि विशाला॥
लग्यो कहन हे नृपति भूपपद वाचक सोई।
क्षिति मण्डल कर राज जोइ जनके वश होई॥
तिनहिके पुत्र पौत्र होहिं यत वंश मझारा।
होय राज राजेश करहिं सुख विविध प्रकारा॥
नृपके सोदर अपर स्वल्प क्षिति पावहिं जोई।
तिन वंशावलि माहिं भाग सो क्रमशः होई॥
यहि विध होत विभाग तौन कुलके संताना।
अंत माहिं ह्वै जाहिं क्षुद्र कृषिकारि समाना॥
जब सहोदरहि प्रति न करत नृप नेह सदाई।
तब भ्रातन सुत माहिं रही किमि बहुरि मिताई॥
दो०–सुनहु भूप यहिविषयमहँ, तुम कहँ सकल प्रकार।
पूर्वापर फल शोचि उर, चाही करन विचार॥
सो०–यहि यह कहहु भुवाल, त्यागि राजतृष्णा अधिक।
संतोषहिसब काल, करन उचित महिपाल कहँ॥
तौ राखिबो सचिव गण काहीं * भूपहि कोइ प्रयोजन नाहीं॥
याते करि विचार नर नाहू * करियसकलक्षितिमण्डललाहू॥
यदि संतोषहि प्रति तव नेहू * यहहु राज्य कहँ तौ तजिदेहू॥

स्वल्प भूमिकर अधिपति जोई ❋ भूपति नाम योग्य नहिं सोई ॥
यहसुनि नृपति शौरि इमि कहेऊ ❋ मोहिं भुलाय कहा तुम रहेऊ ॥
ज्येष्ठहि भ्रात नीति अनुसारी ❋ होत सदाय राज्यअधिकारी ॥
अहहिं भूपके हम लघु भाई ❋ हमहि अल्पसुख भोग सोहाई ॥
पांच भ्रात हम यह क्षिति एका ❋ यहिहितक्षितिपतिसहितविवेका
पृथक पृथक विभाग करि ताही ❋ दीन्ह्यो सबन जाहिजसचाही ॥
सार्व भौम हम पांचहु भाई ❋ किमिह्वै सकहिंसोकहहुबुझाई ॥

दो०—विश्ववेदि कह क्षिति यदपि, अहै एक मतिमान।
तुमहिं ताहि कस वश न करि, भोगहु ज्येष्ठ समान ॥
सब भ्रातन मधि तुमहि कस, होहु न सर्व प्रधान।
पराधीनता सरिस दुख, नृपतिसुतहिनहिंआन ॥

सो०-मैं तत्पर दिन रैन, तव हित साधन हेतु जिमि।
शिथिलतौनविध हैन, तव सहोदरन सचिवहू ॥

कह्यो शौरि हम सबन सदाई ❋ पालत नृपनिज तनुज किनाई ॥
तजिविधिकेहिविधविधिनयटारी❋ होबवन्धुकरनिधि अधिकारी ॥
विश्ववेदि खल वन्धु विभेदी ❋ कह्यो वचन शुचि नीतिउछेदी ॥
मण्डलीश ह्वै तुमहि सनेहू ❋ सुख अखण्ड किन भ्रातनदेहू ॥
भूपति पद आशी मन माहीं ❋ भेद ज्येष्ठ लघु मधि कछु नाहीं ॥
क्षिति समस्त जेहि करतल होई ❋ अहै ज्येष्ठ सव विधते सोई ॥
जोइ वुधिबल अरु साहस राखत ❋ ताहिज्येष्ठ कोविदगणभाखत ॥
प्रबल [कुमंत्र यंत्र जग माहीं ❋ तेहिमधिफसिउवरेहुकोउनाहीं ॥
पर सुनिजे विचार पुनि करहीं ❋ ते नहिं विपद जाल महं परहीं ॥
सुधि वुधिवंत मंत्रणहि तेहीं ❋ परखि अमित्र मित्र द्रुत लेहीं ॥

दो०—मंत्रि मंत्रण जाल मधि, काल भटकि महिपाल।
निज सोदर के द्रोहि महँ, भे सम्मत तेहि काल ॥

विश्ववेदि तब शौरि के, अपर जोय तिहुँभाय।
तिनहुनकहँनिजवशकियो, राजप्रलोभदिखाय॥

द्रव्य लोभ दै सो पुनराई ❋ राज याजकन काहिं बुलाई॥
नृपति खणित्रहि करन सँहारा ❋ किय आरंभ याग अभिचारा॥
पूरण भयो यज्ञ जेहि काला ❋ तबहि चारि कृत्या विकराला॥
गलनर मुण्ड शूर कर धारी ❋ मखते प्रकटि घोर हुंकारी॥
व्यादित वदन मृत्यु की नाई ❋ नृपति खणित्रहि नाशन धाई॥
पर खणित्र नृप धर्म धुरीना ❋ रहे समस्त दोष ते हीना॥
तासु पुण्य बल ते भय पाई ❋ कृत्या भागि यागथल आई॥
विश्ववेदि शठ सचिवहि आशू ❋ सहितयाजकनकीन्हविनाशू॥

दो०—धर्म परायण गुण अयन, नृप खणित्र मतिमान।
समाचार यह पाय कै, शोकित भये महान॥
दै धिकार शत शत निजहि, अश्रु विमोचन नैन।
ऋषिवशिष्ट सनविलखिकै, कहन लगे इमि बैन॥

आह दैव मम अति प्रतिकूला ❋ अर्थहि यहि अनर्थ कर मूला॥
जेहि हित बन्धु सचिव द्विज देवा ❋ भये लोभ वश काल कलेवा॥
मो समान यहि त्रिभुवन माहीं ❋ खोजेहुमिली अघीकोउनाहीं॥
जो अनर्थ कारक यह राजू ❋ तासों अब न मोर कछु काजू॥
असकहि लै नृप गुरु अनुशासन ❋ दैनिजतनय क्षुपेहि राजासन॥
तियन सहित वन कीन्ह पयाना ❋ करन लगेतप धरि हरिध्याना॥
वन मधि नित नृपतिहुँकी रानी ❋ करहिं स्वामि सेवा सुखमानी॥
वर्ष त्रिशत पचास नर नाहू ❋ करितप कीन्हदिव्यगति लाहू॥

दो०—पति वियोग ते नृपति की, त्रय रानिहु तजि काय।

१-लंकाकाण्डके परिशिष्टमे नवम सर्ग की टिप्पणी ६ देखो। २-श्रीमद्भागवतानुसार "चाक्षुष" विष्णु पु. व मार्कण्डेय पु. के अनुसार "क्षुप"।

निजपतिसनपरलोकमधि, मिली जाँय हर्षाय ॥
सो०—नृपति खणित्र चरित्र, अति विचित्र नय धर्ममय ।
होत धरित्र पवित्र, यत्र नाम तेहि लेहिं जन ॥
(मा. पु. ११७-११८ अ.)

त्रयत्रिंश सर्ग ॥ ३३ ॥

महाराज खणिनेत्र विवरण ॥

दो०—नृप खणित्र सुत महामति, क्षुपके लोक ललाम ।
भये वँशधर वीरवर, वीर नाम वल धाम ॥
वीर कुमार विवंश भे, जो रणप्रिय वलवान ।
राज काज वहुकाल करि, तजेहु समर महँ प्रान ॥
नृप विवंश के वंश उजागर * भे खणिनेत्र नृपति नयनागर ॥
ते नर नाथ सहित अनुरागा * सहविधानकिय अगणितयागा॥
एक समय नृप परम सुजाना * द्विजनसमस्तराज्यकरिदाना ॥
पुनि संचय करि धन तपद्वारा * कीन्ह्यो निज राजहि उद्धारा ॥
यज्ञ भूरि दक्षिण नर नाहू * कीन्हअसख्य सविध सउछाहू ॥
अतुलित वित्त द्विजन सन्मानी * दै यहिभाँति नृपतियशखानी ॥
जासन अपर भूपगण माहीं * रह याचन रुचि विप्रन नाहीं ॥
धन सम्पति निहारि नृप केरा * मान तुच्छ निज कोष कुवेरा ॥
सबविधि निधि रह नृपकर माहीं * पर गृह दीप तनय रह नाहीं ॥
यह चिन्ता तिन हृदय मझारी * धधकत दावानल अनुहारी ॥
दो०-एक समय सुतलाहु हित, लै द्विज मुनिन निदेश ।
पितरयागशुचिकरनकहँ, कीन्ह विचार नरेश ॥

१-श्रीमद्भागवत व विष्णु पु. के अनुसार यह क्षुपके पुत्र हैं ।

मांस आनयन हेतु तब, चढ़ि नृप तरल तुरंग।
गये एक घन गहन मधि, लीन्ह न काहुहि संग॥
सो०—नृप शर चाप चढ़ाय, इत उत भ्रमत कुरङ्ग हित।
सहसा यक मृग आय, कहन लग्यो इमि भूप सन॥
केहि हित वादि भ्रमत महराजू * मोहिं वधिकरहु सिद्ध निज काजू
सुनि मृग वचन महीप उदारा * ह्वै विस्मित इमि वचन उचारा॥
अपर कुरंग देखि हम काहीं * भूरि भीति वश दूरि पराहीं॥
तुम केहि हेतु देत निज प्राना * कह मृग सुनिय महीप सुजाना॥
हौं अपुत्र यहि हेतु हमारा * अहे मरण भल सकल प्रकारा॥
जीवन वाद मोर महिपाला * दहत चिंत मम उर सक काला॥
अपर एक मृग सोइ क्षण माहीं * लाग्यो कहन आय नृप पाहीं॥
सुनिय भूप यहि मृगहि सँहारी * मन कामना न पूरि तुम्हारी॥
याते मोहिं वधे महराजू * होई सफल जोइ तव काजू॥
मोरहु सकल कठिन उर पीरा * होइ नाश यह तजे शरीरा॥
दो०—पुत्र हेतु मख कर्म हित, चही मांस तुम काहिं।
सो अपुत्र मृग पलल ते, पूरि मनोरथ नाहिं॥
होय काज जस तैसही, आनिय वस्तु सदाय।
कबहुं नहिं दुर्गन्ध नृप, सक सुगन्ध फैलाय॥
सो०—कह नृप यहि मृग काहिं, भा विराग अनपत्य हित।
तुम केहि हित हम पाहिं, प्राणतजनहितकरतहठ॥
कह्यो कुरङ्ग सुनिय मतिमाना * हैं मोरे अनेक संताना॥
ममता जाल दाव अनुहारी * दाहत संतत काय हमारी॥
सिंह व्याघ्र वृक मनुजन केरा * रहत मोहिं नित शंक घनेरा॥
सन्तति पोषण हित सब कालू * इमि कुचिंत मोहिं होत भुवालू॥
अपर जिते तृणपुञ्ज अहारी * ते ह्वै जाहिं निहत यकवारी॥

मम सन्तान विचरि स्वच्छन्दा * भखैंहरिततृण सहितअनन्दा ॥
पुनि नृप यहि अघ चिंत विहाई * जवहिं हमार तनय समुदाई ॥
गृहते निकरि दूरि चलि चाहीं * तब यह शंक होत मन माहीं ॥
अस न होय कोउ तनय हमारा * होहिं निधन हिंसक पशु द्वारा ॥
तिनमधियक फिरि आवतजोई * तव उरचिंत अपर की होई ॥

दो०—बहुरिदिवसअवसानलगि, जब यकत्र सब होहिं ।
तबनिशिकीकुशलताहित, व्यापत चिंता मोहिं ॥
यहि प्रकार ममअहर्निशि, रहत दशा महिपाल ।
जगमधि ममता पाश यह, अहै महान कराल ॥

सो०—फँसि तेहिममता पाश, लौकिकस्वर्गिक उभयसुख ।
है विनाश पुनि वास, होत नरक मधि निरवधी ॥

ममतहि विगत होन कर नामा * अहै मुक्तिवद वुधवुधिधामा ॥
हे नृप यहि असार तनु माहीं * थोरहि महँ सुख दुख प्रकटाहीं ॥
शोक मूल यहि काम समाना * अहै न हीन पदारथ आना ॥
वहुरि तासु तिथि सदा अनिश्चित * करियचहैनितयतनअपरमित ॥
वरु विश्वास योग्य नभ खण्डन * ग्रन्थि तरंग समीरन वन्धन ॥
पर न आयु थिरता कोइ काला * है विश्वास योग्य महिपाला ॥
मोहि शरीर ही हित दिनराती * संकट विकट प्रकट वहु भांती ॥
यहि दुखते छुटकार उपाई * विनुतनुत्याग न अपर लखाई ॥
करन आत्महत्या नर नाहू * है बड़ पाप जान सब काहू ॥
पर मख हित जोइ पशु हत होई * लहत सतत उच्छ्रिखपद सोई ॥

दो०—सोइ परमपद कृपा युत, करि हम काहिं प्रदान ।
कहहु लाहु करि पितर मख, कुल भूषण संतान ॥
यह सुनि बोल्यो प्रथम मृग, नृप यह मृग सुतवान ।
वधनयोग्य नहिं यहिसरिस, सुकृतिवाननहिंआन॥

मैं सुतहीन दुखी अति राजन * सब प्रकारते हौं दुख भाजन ॥
यहसुनिवहुरि द्वितिय मृगकहेऊ * सुनु प्रियवन्धु धन्यतुमअहेऊ ॥
यक तनु जनित शोक तब भाई * हमते तुम न दुखी अधिकाई ॥
हम वहु जन यहि हेतु हमारा * दुख असंख्य दुर्वार अपारा ॥
रह्यों अकेल प्रथम मैं जवहीं * यहि शरीर ममता वश तबहीं ॥
केवल एक मात्र दुख मोहीं * रह्यो सत्य भाषत तव सोहीं ॥
जबहिं किहौं तिय लाहु लुभाई * तब दुख दून भयो मम भाई ॥
पुनि जब भे क्रमशः संताना * तिनन्हसाथमम दुखअधिकाना
भोगत दुख यहि लोक मझारी * दीन्ह विताय आयु यह सारी ॥
कुकृति कुचिंत कुफल हमकाहीं * भोगन परि परलोकहु माहीं ॥

दो०—हेतु तासु यहि जन्म मधि, नित्य तत्व तजिभ्रात ।
असत अपत्यन चिन्त महँ, किहौं सतत दिनपात ॥
यहि असार संसार सुख, करहिं सार जोइ जान ।
पाव न सुखयहिलोकमधि, अन्तहु शोक महान ॥

सो०—सुनि सयुक्ति इमि वानि, उभय कुरंगन मुखन नृप ।
उर इमि चिन्त समानि, इनमधिसतकाकरकथन ॥
पुनि नृप धर्म निकेत, कह्योमृगन प्रतिवचनइमि ।
अब कदापि सुत हेत, वधव न कोई जीव कहँ ॥

अष्टपदी छन्द ॥

अस कहि नृप खणिनेत्र गोमती क्षेत्रहि जाई ।
निराहार व्रतधारि इन्द्रतप किय मनलाई ॥
ह्वै प्रसन्न वृत्रघ्न सूनुवर भूपहि दयऊ ।
तब नृप निज पुर आय राजकृतिकर मधिलयऊ ॥
इन्द्र कृपा सों इन्द्र सरिस नृप लह्यो कुमारा ।

तासु सहर्ष वलाश्व नाम शुभ धरयो भुवारा ॥
जब धर्मवंत खणिनेत्र कर भा देहांत कृतांत वश ।
तब वलाश्व क्षितिपति भयेछावजासु चहुँओरयश ॥
(मा. पु. ११९-१२१ अ.)

चतुस्त्रिंश सर्ग ॥ ३४ ॥

महाराज वलाश्व का करन्धम नाम प्राप्ति व राजकुमार अवीक्षित का जन्म ॥

दो०-निजबल तेज प्रताप सों, भूप बलाश्व प्रवीन ।
क्षिति मण्डल के नृपन कहँ, निजअधीनकरिलीन
सकल नृपन सों लेत कर, नृप खणिनेत्र कुमार ।
संतत पालत प्रजन कहँ, निजसंतितअनुसार ॥

इमि वहु वर्ष सहर्ष सप्रीता * करत राज राजेशहि वीता ॥
बहुरि करद भूपति समुदाई * तेसब मिलि कुमंत्र चितलाई ॥
छल चतुरता सहित चहुँ ओरा * किय आरंभ द्रोह अति घोरा ॥
सबन देन कर वँद करि दीना * जे अधीन ते भे स्वाधीना ॥
तब क्रमशः वलाश्व महिपाला * ह्वै अतीव निर्वल तेहि काला ॥
मंत्रिन युत उर चिन्तित भारी * निवसहिंनिज रजधानिमझारी
पुनि ते द्रोहि नृपति समुदाई * सेन सहित चहुँ दिशिते धाई ॥
घेरि राजधानी सब लीन्हा * पुरिमधिनृपहिरुद्धकरिदीन्हा ॥

दो०-मन मलीन धनहीन गति, दण्ड क्षीन महिपाल ।
विषम शत्रु उत्पात ते, ह्वै व्याकुल तेहि काल ॥
निज निस्तार उपाय सों, ह्वै उर माहिं निराश ।
धरि मुखपै निज कर युगल, तजन लगेनिश्वास ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

तेहि क्षण नृपति मुख वायु सों उत्कट प्रकटि घन वाहिनी ।
झरझर निकरि नृपकर विवर सों घोर करि केहर ध्वनी ॥
धरु मारु पकरु पुकारि चारहु ओर ते धावत भये ।
पल माहिं दलमलि महाबल निर्मूल रिपु कुल करि दये ॥
द्रुत राज्य रूपी गगन कर विद्रोह तम सब नशि गयो ।
अरु शांतिरूपी किरण सोहिं प्रकाश चारिहु दिशि छयो ॥
सब नगर घर घर डगर डगरन जनन सुख संचारिनी ।
मंगलाचार सुगन्ध मिश्रित वह समीर सुहाविनी ॥
जय ध्वनी दुन्दुभि नाद सुन्दर चतुर्दिशि इमि सुनि परै ।
हल स्वर वरण मिलि अर्थमय जिमि शब्द उर हर्षित करै ॥
इमि नृप वलाश्व निदेश रश्मि वहोरि चारहुँ दिशि छये ।
विस्तारही रवि किरण जिमि उन्मुक्त वारिद सों भये ॥

दो०—नर नायक के पाणि सों, प्रकट्यो दल बल धाम ।
यहिहित तबते नृपति कर, परयो करन्धम नाम ॥
वीरचन्द्र नृपकी सुता, वीरा सों नर नाह ।
कीन्ह्यो वेद विधान युत, पुलकित चित उद्वाह ॥

सो०—तेहि तिय सों छवि धाम, यक कुमार उतपति भयो ।
जासु अवीक्षित नाम, भक्तमातुपितुनीतिविद ॥

रोला छन्द ॥

वाल वयसही माहिं अवीक्षित बुद्धि निधाना ।
सकल वेद वेदांग माहिं है विज्ञ महाना ॥
धनुर्वेद सिखि सविध कण्व मुनि नन्दन पाहीं ।
अतुलनाय भे धनुर्धारि धन्वी गण माहीं ॥

कुवँर अवीक्षित केर देखि अनुपम सुघराई।
लजत हृदय सुरभिषक अश्विनी सुत दोउ भाई॥
सुर गुरु इव बुधि माहिं भूप नन्दन मति माना।
कांति माहिं शशि सरिस तेज महँ भानु समाना॥
धीरज माहि पयोधि क्षमा महँ क्षिति अनुहारी।
खलन दलन महँ काल सुजन गणकर भयहारी॥
भूप कुवँर कर विमल विनय गुण शील निहारी।
देतअमित आशीस रहत पुर प्रजा सुखारी॥
(मा. पु. १२१--१२२ अ.)

पञ्चत्रिंश सर्ग॥ ३५॥

अवीक्षित का वन्दित्व व उद्धार॥

अवीक्षित कृत विशाल राजकुमारी हरण, युद्ध में वन्दीत्व प्राप्ति, पित्रकृत उद्धार उद्वाह सी बीतराग व तन्निबन्धन राजकुमारी का तपोवृत्ति अवलम्बन॥

दो०—जगतख्यातविदिशाधिपति, नृप विशाल यक काल।
कीन्ह स्वयंवर सुता कर, बोलि सकल महिपाल॥
सो०—समाचार यह पाय, कुँवर अवीक्षित वीर वर।
द्रुतगति विद्युत न्याय, गये स्वयंवर सभा मधि॥
कुवँर अवीक्षित तेहि थल माहीं ❋ हेरिसुमुखि नृपनन्दिनिकाहीं॥
ह्वै मोहित धसि सभा मझारी ❋ कियपयान हरि राजकुमारी॥
तव सब नृपति लजाय अपारा ❋ करन लगेयहि भाँति विचारा॥

१—टिप्पणी ४२ देखो॥

यह नृप तनय दुष्ट बहु बेरा * किय अपमानित हमहिंघनेरा ॥
अबहम सबमिलि यहिक्षणमाहीं * जीतिकरिय बन्दीयहिं काहीं ॥
यह विचारि भूपति समुदाई * निज निज घनीसेन सजवाई ॥
चारिहु दिशि ते धावत भयऊ * पथ महँ घेरि कुवँर कहँ लयऊ ॥
वीर अवीक्षित कहँ ललकारी * शर वर्षन लागे नृप भारी ॥
भूप करन्धम सुत बलधामा * करत अकेल घोर संग्रामा ॥
सकल नृपन शर शरन निवारत * बहुरि असंख्य सेन संहारत ॥

दो०—कुवँरअवीक्षित निमिषमहँ, शर अजस्र वर्षाय ।
विपुल घनी रिपु वाहिनो, दियोसकल विड़राय ॥
धर्म युद्ध तजि तब नृपन, कोपि एकही वार ।
भिरे वीरवर कुँवर सन, तजत अस्त्र अनिवार ॥

कोउ तिनकर धनुछेदन कीन्हा * कवच काटि कोई नृप दीन्हा ॥
कोउ रथके वरवाजि सँहारेउ * कोउ ध्वजदण्ड खण्डि महिडारेउ
शेल शूल असि प्रास कृपाना * हनत कुवँर तनु बहुबलवाना ॥
तब करवाल ढाल कर धारी * रथते कूदि कुवँर ललकारी ॥
रिपुदल माहिं धस्यो टभ ऐसे * करिदल महँप्रविसत हरि जैसे ॥
पर तिनकर असि चर्म कराला * कियशतधामिलिबहुमहिपाला ॥
बहुरि कुमार गदा यक धारयो * सोउरिपुवृन्दखण्डिद्रुतडारयो ॥
पुनि चहुँदिशिते विनु परिमाना * हनहिं कुँवरपै आयुध नाना ॥
नीति अनीति न कोइ विचारत * निजनिजरुचिवतअस्त्रप्रहारत ॥
शोणिताङ्ग सुधि वुधि विसराई * भये कुवँर तब भूतल साई ॥

दो०—विवश दशा महँ तिन्है तब, बांधि भूप समुदाय ।
वैदिश नृप ढिग लै गये, हृदय प्रमोद बढ़ाय ॥
नृप विशाल तब सुताप्रति, कह्यो वारही वार ।
इन कुँवरन महँ वरहु तेहि, जेहिरुचि होइ तुम्हार ॥

पर दृगकोरते काहु कि ओरी * हेरेहु नाहिं विशाल किशोरी ॥
ह्वै निराश तब भूपति सारे * दुखितचित्त निजपुरनसिधारे ॥
नृपति विशाल अवीक्षित काहीं * दीन्हे डारि वन्दिगृह माहीं ॥
भूप करन्धम यह सुधि पाई * निजअधीन सबनृपन बुलाई ॥
सुतकृति वरणि वहुरिइमिकहेऊ * देहु मंत्र समुचित जोइ अहेऊ ॥
यहसुनि कोइ इमि वचन उचारा * यह विचार नर नाथ हमारा ॥
करिअनीति रण कुवँरहि जोई * कीन्हेसि वन्दि दण्डनियसोई ॥
कोउ कह्यो यहि विषय मझारा * सब विध दोषि महीप कुमारा ॥
गिनेहु नकाहुहि करि अभिमाना * राजकुवँरि हरिकीन्हपयाना ॥
यहिहित तुमहिं उचित नहिं रोषा * पावकुँवर फलजस किय दोषा ॥

दो०—वीर प्रसूता वीर तिय, वीरा सुनि इमि बैन।
कहनलगींनिजस्वामिसन, दोष कुवँर कर हैन ॥
धन्य धन्य संतान मम, किय वीरोचित कर्म।
बल प्रकाशि ललना रतन, हरण क्षत्रिकर धर्म ॥

रोला छन्द ॥

प्राण शंक तजि सिंह सरिश मम सुत बलधामा।
किय अकेल वहु शत्रु संग दुस्तर संग्रामा ॥
सुनहु स्वामि क्षत्राणि गर्भ धारहि जेहि हेतू।
सोइ कृति किय मम तनय वीर बलपुञ्ज निकेतू ॥
समर भीरु कापुरुष तनुज उपजावत जोई।
जगत मध्य रासभी सरिस क्षत्रिय तिय सोई ॥
असि सहस्त रक्ताक्त अंग मम वीर कुमारा।
सन्मुख रण भा वन्दि मान यहि माहिं तुम्हारा ॥
करहिं याचना नीच क्षत्रि नहिं हाथ प्रसारत।
शूर सामुहे सदा रतन असिवल सो हारत ॥

पुष्ट वंश नहिं नवहि भग्न चाहे ह्वै जाई।
सिंह सांकिरिहु बँधे कबहुँ नहिं रोष विहाई॥
अनल लपट उठ ऊर्द्ध निम्न गति कबँहु न होई।
तिमि न नवत कोइ भाँति प्रकृत क्षत्रीसुत जोई॥
सफल न केवल कुँवर कीन्ह मम दुग्धहि आजू।
बरु तव औरस सुयश वृद्धि किय सो महराजू॥
उचित तुमहिं अब नाथ वेगि निज सुतहि उधारहु।
प्रखर खड्ग कर धारि शत्रु कर गर्व विदारहु॥
सुनहु मंत्रि सामंत समर मधि जौन प्रकारा।
गाज सरिस शर राजि सह्यो युवराज तुम्हारा॥
तिमि अजस्र सहि शस्त्र ध्वस्त करि अरि समुदाई।
विजय क्रीट शिरधारि फिरहु सुतवधुहि लिवाई॥
रानि वचन सुनि सकल भये उत्तेजित ऐसे।
विषधर होत सक्रुध दण्ड ते परसत जैसे॥

दो०—तबहिं करन्धम वीर मणि, घनि अनिकनी समेत।
गमने केहरि सरिस द्रुत, रिपुमद मर्दन हेत॥

सो०—उत क्षितिपाल विशाल, निजअधीनभूपतिनयुत।
सजि वाहिनी विशाल, गमने मत्त मतंगवत॥

समर अमर भयप्रद दुर्वारा * रह त्रयदिवस रैन अनिवारा॥
दोउ ओर के वहु बलवाना * लहे वीरगति तजिप्रिय प्राना॥
बहुरि करन्धम भट नरनाहू * रिपुन दर्प हनि कियजयलाहू॥
विषरद गत विषधर गति जैसे * ह्वै विशाल नृप रण महँ तैसे॥
करि करन्धमहि बहु सत्कारा * लै आये निज भवन मझारा॥
कुँवरहि मोचि सहित स्वकुमारी * आय करन्धम नृपति अगारी॥
कह्यो कुँवरसन क्षमि मम खोरी * करियग्रहणमम विशुचिकिशोरी

तब नृप तनय जोरि युग पाणी * पितुसनकह सविनयइमिवाणी॥
दो०-यहिरमणिहि अथवा अपर, कोइ कामिनी काहिं।
दृढ़प्रण करि सत वदत हौं, व्याहब कबहूं नाहिं॥
प्राणिग्रहण यहि रमणिकर, करै राजसुत सोय।
मो सम जेहि यश शत्रुकृत, मर्दित भवा न होय॥
सो०-अबला सम हमकाहिं, कीन्ह पराजित शत्रुगण।
रह्यो भेद अब नाहिं, मोमधिअरुयहितरुणिमधि॥
जेहि सामुहे हमारि, भई हारि रणभूमि महँ।
तेहिकसलाजविसारि, पुनिमुखदिखराउबउचित॥
नृपविशाल सुनियहिविध वानी * कह्यो सुता प्रतिसुनहु सयानी॥
वरि हैं तुम्हहि न राज कुमारा * उचिततोहिंअब सकलप्रकारा॥
अपर कुँवर सन करहु विवाहू * सुनिकहकुवँरिसुनियनरनाहू॥
यहि नृप तनय सरिस वलवाना * जगमधि लखा सुनानहिं आना
समर माहिं अति दुस्तर काजू * कियमम लखतकुँवरमहराजू॥
पर अधर्म रण ते रिपु व्राता * कीन्हे इन्हैं पराजित ताता॥
तबहुँ अकेल सिंह अनुहारी * रहे कुवँर थित समर मझारी॥
अरु तिन सकल रिपुन बहुबारा * कीन्हविजययह राजकुमारा॥
दो०-इनकर बल विक्रम अतुल, जानत वीर समाज।
अधरम रण महँ हारिबो, नाहि लाज कर काज॥
केवल इनकर रूप लखि, मोहित भयूं न भूप।
हरयो मोर मन कुवँरकर, बल वीरता अनूप॥
हे पितुपण मैं कीन्ह विचारी * वरब इन्हैं नतु रहब कुमारी॥
बहुरि विशाल कुवँर सन कहेऊ * कहत जो सुता सत्य सोअहेउ॥
यहि हित व्याहि कुमारि सप्रीता * करहु तात मम वंश पुनीता॥
कह्यो अवीक्षित हे नर नाहू * हम न करबकोइ भांतिविवाहू॥

बहुरि करन्धम नृप गुण ऐना * कह्योतनुजप्रतियहिविधवैना ॥
सुनहु सुवन यहि सुन्दरि केरा * तुम्हरे प्रति अनुराग घनेरा ॥
राखु वचन मम करु हठ नाहीं * व्याहहुयहिनृपनन्दिनिकाहीं ॥
यह सुनि करपुट भूप कुमारा * विनयसहितइमिवचनउचारा ॥
अबलौं कबहुँ तुम्हार निदेशा * मैं लंघन नहिं कीन्ह नरेशा ॥
यहि हित सोइ आयसु मोहिं देहू * सकहु पालि जेहि विनुसन्देहू ॥

दो०—देखि कठिन पण कुवँरकर, नृप विशाल पुनराय।
तनया सन लागे कहन, वहु प्रकार समुझाय ॥
व्याहत तुम्हैं न नृप तनय, कहि हारे सब कोय।
वरहु अपर वर कुवँरि अब, जेहि तव उर रुचिहोय ॥

कह कुमारि हे पितु मतिमाना * मैंकरिचुकिनिजहृदयप्रदाना ॥
तापै अब न मोर अधिकारा * वरहुँ अपर कहँ कौनप्रकारा ॥
यदि यशस्वि यह राजकिशोरा * करिहैं पाणि ग्रहण न मोरा ॥
तौ तप तजि यहि जन्म मझारा * होइ अपर नहिं स्वामि हमारा ॥
बहुरि करन्धम रविकुल केतू * नृप विशाल सनप्रीति समेतू ॥
लहि विदाय कुवँरहि लै संगा * गमने निजपुर विगत उमंगा ॥
उत नृपसुता विपिन मधि जाई * करन लगी तप ध्यानलगाई ॥
तीन मास इमि बीतत भयऊ * विनुजलअशनसूखितनुगयऊ ॥

दो०—लखि तत्पर तनु तजन महँ, राजनन्दिनी काहिं।
देवदूत इमि वचन कह, वेगिआय तेहि पाहिं ॥
सुनहु सुमुखि वैशालिनी, करहु न आतमघात।
चक्रवर्ति नृप की जननि, ह्वैहौ तुम विख्यात ॥

सो०—तव कुमार वलराशि, होइ सप्त द्वीपाधिपति।
अमर अरातिन नाशि, कर हैं सो षट सहस मख ॥

देवदूत मुख सुनि इमि बानी * कह्यो कुमारिजोरि युगपानी ॥

होत न मृषा वदत सुर जोई * पर विनुपति संततिकिमिहोई ॥
यकअवीक्षितिहितजिमतिमाना * जगतमाहिंममस्वानिनआना ॥
सो हमकाहिं कीन्ह परिहारा * होइ सत्यकिमिवचन तुम्हारा ॥
त्रिदिव दूत कह मोहि तुम पाहीं * अधिककहन करकारजनाहीं ॥
विनु सन्देह सुपुत्र तुम्हारे * होई मातु सत बचन हमारे ॥
धरि धीरज कछु काल कुमारी * करहु वासयहिविपिनमभारी ॥
तप प्रभाव ते तव रुचि जोई * पूरण अवशि भामिनी होई ॥

दो०-इमि प्रवोधि नृप सुता कहँ, किय सुर दूत पयान ।
बहुरि कुवँरि भइँ तपोरत, हृदय धारि दृढ़ ध्यान ॥

(मा. पु. १२२-१२४ अ.)

षट्त्रिंशसर्ग ॥ ३६ ॥

अवीक्षित का दार परिग्रह स्वीकार ॥

दो०-एक समय कह नृप रमणि, कुवँर अवीक्षितसोहिं ।
प्रयत किमिच्छक महाव्रत, करनकाहिंरुचिमोहिं ॥
तव पितु यह व्रत करन कहँ, दिय निदेशहमकाहिं ।
राज कोषते अर्द्ध धन, व्ययहोई यहि माहिं ॥

सो०-परतुम्हरहु अधिकार, है पितु धन मधि सर्वथा ।
अब यहि विषयमभार, अहै काह तव सम्मती ॥

रामगीती छन्द ॥

सुनि जननि मुख इमि बचन सविनय कह्यो राजकुमार ।
सो सकल सम्पति जनक कर तेहि मधि न मम अधिकार ॥
यह गातही मम मातु तासों अवशि सर्व प्रकार ।
करिहौं सुसाध्य असाध्य कृति तव कामना अनुसार ॥

सुनि अमियमय निज तनय वाणीरानि मुद उर आनि।
किय व्रत अरम्भन मगनमन निज याजकन सन्मानि॥
तब पाय अवसर चतुर मंत्री निकर निर्जन माहिं।
लागे कहन यहि भाँति नर नायक करन्धम पाहिं॥
हे भूपवर तव कुवँर एकहि करत सोउ न व्याह।
याते तुम्हार उदार वंश विध्वंस ह्वै नर नाह॥
रहि हैं विमुख जल पिण्डसों तव पितरवृन्द सदाय।
यहि हित करहु नृप स्वकुल रक्षण केर वेगि उपाय॥
तेहि समय यहि विध घोषकन घोषण सुनेहु महराज।
श्री राजमहिषी व्रत किमिच्छक कीन्ह आरंभ आज॥
जेहि वस्तु की जेहि लालसा सो देइ हैं महरानि।
अरु जननि व्रत महँ कीन्ह यह पण नृप सुतहु गुणखानि॥
जेहि केर मोरे देह द्वारा ह्वै सकत उपकार।
हम करब तत्क्षण सुलभ दुर्लभ केर त्याजि विचार॥
इमि सत्यबद्ध कुमार कहँ सुनि नृपति अति हर्षाय।
निज आश पूरण हेतु आशुहि कह्यो सुतसन जाय॥

दो०–करतकिमिच्छक दानतुम, सुनियहकीर्त्ति तुम्हारि।
महूं याचकी तव निकट, पुरवहु आश हमारि॥
कह्यो कुवँर आयसु करहु, साध्य दुसाध्यहु जोय।
अथवा होय असाध्यहू, करब तात द्रुत सोय॥

सो०–कह नृप सुनहु कुमार, करत केलि मम कोड़ महँ।
वंश प्रकाशनहार, दिखरावहु मोहिं पौत्र मुख॥
यहसुनिसचकितगात, कह्यो अवीक्षित विनययुत।
पुरउब यह किमितात, अकृतदार आजन्म रहि॥

कह नृप पण करि टारत जोई * तेहि समानजग अघी न कोई॥

भयहु न कोइअस ममकुलमाहीं * वचनहारिकीन्हेसिपुनिनाहीं ॥
सत्य उलंघि मातुकृति नाशी * संचितकरहु न अपयश राशी ॥
सुनि पितु उक्ति सयुक्ति बहोरी * कह्योअवोक्षित दोउकरजोरी ॥
यह पण किहौं पूर्ब तव सन्मुख * लखिहौंकबहुँनाहिंरमणीमुख॥
आयसु अपर देहु मोहि जोई * प्राणहु गये करब हम सोई ॥
विधिकृत चिर कौमार्य्य हमारा * भंजनकस पितुकरहु विचारा ॥
कह नरेश तेहि विफल विरागा * जोकरिसत्य बहुरितेहित्यागा ॥
ज्ञान ध्यान व्रत दान अराधन * सत्यसमान आननहिं साधन ॥
तत्यो सत्य नर तनु धरि जोई * निजकरतज्योपरमनिधिसोई ॥

दो०—भूमि तजे तरुमूल जिमि, तरु तुरंत नशि जात ।
सत्यतजे तिमि नरन कर, होत पतन द्रुत तात ॥
सो०—निजपथकरिपरिहार, विचरहिंजिमिनहिंग्रहनिकर।
डिगहिं न तौनप्रकार, सत्य वचन सन सत्पुरुष ॥

धर्म धुरीण धरणिपति नन्दन * पुनिकहजनक चरणकरिवन्दन
करुणासिन्धु इन्दु तुम ताता * नितममन कुमुदहिमुददाता ॥
यहिक्षण तपन तेज करिधारण * पीड़तनिजतनुजहिकेहिकारण॥
मथि विचार सागर नयनागर * तजतअमृतकसगहतप्रखरगर ॥
करि भुवाल अनुचित चतुराई * पूरुब सत्य हमार छुड़ाई ॥
अपर सत्य महँ अब मोहिंफांसी * करततातमाहिंनिजपणनाशी॥
निजकृत प्रथमसत्य जोइ घालत * तेहि विपरीत सत्य प्रतिपालत ॥
सो इमि एकवटुहु जिमि नाशी * सेयि अपर वटु चह फलराशी ॥
अहै अलंघ्य अग्र पण मोरा * पाले पण द्वितीय अघ घोरा ॥
पर यह पाप परसि मोहि नाहीं * वधपातक न लगतअसिकाहीं ॥

दो०—देखिय बहुरि विचारि उर, करहुँ यदपि मैं व्याह ।
तदपि काह निश्चय अहै, होई सुत नर नाह ॥

पर तुम पितु दूजे नृपति, सकतनअनुमतिटारि।
तवचितप्रमुदितनिमितपितु, ग्रहणकरतअबनारि॥
सो०—करि आपन पण भंग, पालन करब निदेश तव।
परनिशिदिन ममअंग, करा दहन अनुताप यह॥
(मा. पु. १२५-अ.)

सप्तत्रिंश सर्ग॥ ३७॥

विशालराजकुमारी के सहित अवीक्षित का विवाह व मरुत्त का जन्म॥

सो०—मृगया हित गुणराजि, राजतनय युवराज वर।
साजि अस्त्र चढ़ि वाजि, गमने सखा समाज युत॥
यकवन विपिन मझारि, प्रविशिसिंह वृकखड्गिमृग।
आयुध विविध प्रहारि, कीन्हकालकवलितकुवँर॥

नरिन्द छन्द॥

करत अहेर नरेश कुमारहि सहसा पर्यो सुनाई।
कोइ तिय कहि त्राहि त्राहि अति चित्कारत बिलखाई॥
तिय क्रन्दन जेहि ओर वीरवर नृप नन्दन सुनि पायो।
कशाप्रहारि आशु तेहि दिशिकह रिसिभरिअश्वबढ़ायो॥
कछुक दूरि पै जाय कुवँर कहँ पुनि इमि दीन्ह सुनाई।
हाय सनाथा अहहुँ तबहुँ मोहिं दनुज हरे लिये जाई॥
ख्यात अरिन्दम नृपति करन्धम जासम वली न कोई।
तिनके जियत तासु सुतवधुकी यह रहि दुर्गति होई॥
यक्ष रक्ष गन्धर्व सर्व नृप खर्व गर्व जेहि आगे।
सोइ अवीक्षित तीय काहिं अब हर्यो दुष्ट भय त्यागे॥

तपन ताप सम जेहि प्रताप खल दलन दाप अपहारी।
सो रणधीर वीर वीरासुत कहँ यहि समय मझारी॥
यह सुनि सुविदित सुभट अवीक्षित भे इमि चिंतित भारी।
यहि अति सघन भयावन काननमहँ कस नारि हमारी॥
यह खल प्रकृति राक्षसी माया तजि न अपर कछु अहई।
पर अवश्य यहि विषम रहस कर भेद लेन मोहि चहई॥
अस उर चिन्ति तुरंत तुरंगहि द्रुतपद कुवँर बढ़ाई।
लख्यो एक छवि सदनि रमणि कहँ दनुज हरे लियेजाई॥
असुर असित दृढ़ कक्ष माहिं इमि सो भामिनि दर्शाई।
नील अम्बु मधि पूर्णचन्द्र कर जनु प्रतिविम्ब लखाई॥

दो०—दनुज अंगपर सो तिया, छटपटाति यहि भाँति।
मनहु नील घन पटल महँ, सौदामिनि ससाँति॥
अश्रुपूर लोचन युगल, यहि प्रकार दर्शाय।
तप्त सरसि महँ मनहु युग, रह सफरी अकुलाय॥

सो०—इमि तियमुखछबिसार, दुरत प्रकट बिखरे कचन।
जनु घन पटल मझार, छिपत चन्द्र उघरत वहुरि॥
पतन आभरण होहिं, तिय तनुते छुइ दनुजतनु।
चकमक पाथर सोहिं, झरतज्वलतजनुअनलकण॥

यह लखि कुवँर कोपि धनुतानी * दुष्ट दनुज सन कह इमि वानी॥
सुनरे अधम अमर कुल द्रोही * काह प्राणकर शंक न तोहीं॥
नृपति करन्धम राज्य मझारा * खलन केर नहिं कतहुँ उवारा॥
यदि चाहसि शठ तैं कुशलाई * भागु वेग यहि तियहि विहाई॥
सुनि दानव धृत दण्ड अखण्डा * धावकुवँरदिशिकोपिप्रचण्डा॥
लखि नृप तनय मारि यक बाना * खण्डेहु दण्ड अरण्ड समाना॥
बहुरिअसुर शर निकर भयंकर * वर्षन लगो सरोष निरंतर॥

पर नृप कुवँर तासु शर सारे * पल महँ काटि कौतुकहि डारे ॥
है निरस्त्र तब दानवराई * रोषते होय मत्त की नाई ॥
धरिधरिकुधरशिखर अविरामा * त्यागन लग्यो वेगि बलधामा ॥

दो०—सोउ नासि निज शरन सों, नृपसुत समर प्रवीन ।
मारि एक शर असुरशिर, पृथक ग्रीव ते कीन ॥
दनुज मरण लखि देवगण, आय प्रफुल्लित गात ।
कह्यो कुवँर सन माँगहू, रुचै जौन वर तात ॥

सो०—सुनि सुर वचन कुमार, जोरिपाणि सविनयकह्यो ।
पितु कामनानुसार, होय हमारे तनय यक ॥

कह्यो सुरन तुम जोइ कुमारी * उद्धारेहु यहि दनुजहि मारी ॥
तासो महि मण्डलाधिकारी * होई एक तनय गुणधारी ॥
यहि हित यहि अबलहि सउछाहू * करि स्वधर्म पत्नी गृह जाहू ॥
कह कुमार पितु रुचि अनुहारी * अहै पुत्र कामना हमारी ॥
नतु दृढ़प्रण यह रह्यो हमारा * करब न ग्रहण कबहुँ हम दारा ॥
यहि प्रण वश मैं जौन प्रकारा * वैशालिनिहि किहौं परिहारा ॥
तेहि विध सोउ सर्व सुख त्यागी * भइंविपिनवासिनि ममलागी ॥
यहिहित तेहिसति काहिंविसारी * व्याहे अपर नारि अघ भारी ॥
यह सुनि कह्यो देव समुदाई * रहत तुमहिं जेहि चिन्तसदाई ॥
यह सोइ नृपति विशाल कुमारी * रहितप करत तुमहि उरधारी ॥

दो०—लहिहौ यहि तिय गर्भसों, सार्व भौम संतान ।
असकहि दै आशिष बहुरि, सुरगण कीन्हपयान ॥
तब कुमारि निज तप कथा, अरु सुरदूत के वैन ।
वरणि बहुरि लागीं कहन, नेह नीर भरि नैन ॥

सो०—मैं अवगाहन गंग, यकदिन गयउँ प्रभात क्षण ।
तहँ यक आय भुजंग, मोहि धरि अहिपुर लै गयो ॥

छप्पै ॥

वृन्द वृन्द अरविन्द वदनि तहँ नाग कुमारी।
करि मम बहु सन्मान कह्यो यह विनय हमारी ॥
मम सुत द्वै हैं दोषि अमित वल तव सुत पाहीं।
तिनकी रक्षा करन सुमुखि परि है तुम काहीं ॥
सुनि नाग रमणि मुखवचन यह मैं सहर्ष स्वीकार किय।
तब मोहिं रुचिर भूषण वसन दै यहि थल पहुँचाय दिय ॥
तिनके वर सों भई पूर्ववत कांति हमारी।
लखि मम अनुपमरूप मोहि यह हरयो सुरारी ॥
पर प्रियतम तुम आय अधम यहि दनुजहि मारी।
उद्धारेहु निज नारि दरश दै किहौ सुखारी ॥
यदि अजहुँ दूरि होई न प्रभु मोरि भूरि विच्छेद दुख।
तौ लखत सुखदतव मुखअबहिं तनुतजि लहिहौं परमसुख ॥
यह सुनि राजकुमार कह्यो इमि सह अनुरागा।
समर पराजित होय प्रिये हम तुम कहँ त्यागा ॥
पर तुम कहँ मम हृदय तज्यो यक निमिषहु नाहीं।
तव अनुपम छवि छटा जगत रह मम उर माहीं ॥
रह यहि वियोग दुख केर यक दैवहि कारण सर्वदा।
सो तजहु शोक मम हृदय मधि सुमुखि वास करिहौ सदा ॥
सुर नर्तकि गन्धर्व वृन्द युत तेहि क्षण माहीं।
तुणय नाम गन्धर्व आय नृप नन्दन पाहीं ॥
कह्यो सनेह समेत सुनि सुत सब गुणधारी।
यह भामिनि नामिनी अहै नन्दिनी हमारी ॥
मुनि कुम्भयोनिके शापते जन्मी नृपति विशाल घर।
तुमयहि कुमारि सन जगप्रथित मण्डलेश लहिहौ कुवँर ॥

दो०–पुनि विवाह कृति उभय कर, सविधि उछाह समेत।
करवायहु गंधर्व गुरु, तुम्वरु वुद्धि निकेत ॥
वहुरि तुणय नव दम्पतिहि, सादर यान चढ़ाय।
नेह सहित राखत भयो, निजनिकेतलैजाय ॥
तीय सहित तहँ राजकुमारा * रहे मुदित चित करतविहारा ॥
यहि विधकछुककालचलिगयऊ * यक सुत सुघर कुवँरके भयऊ ॥
राजचिह्न तेहि शिशु तनु भ्राजै * द्युति नवउदित भानुसम राजै ॥
तेहि शिशु के जन्मत सुर हर्षे * दै दुन्दुभि नभते सुम वर्षे ॥
छाव तिहूं पुर भूरि अनन्दा * नर्तहिं सुमुखि अप्सरा वृन्दा ॥
वीन मृदङ्ग सरंगि वजाई * करहि गान किन्नर समुदाई ॥
तेहि शिशुके जन्मोत्सव माहीं * नेवतेहु तुणयसकल सुरकाहीं ॥
देव यक्ष ऋषि मुनि द्विज व्राता * आये तहां प्रफुल्लित गाता ॥
दो०–शेष वासुकी तक्षकहु, वहु पन्नगन समेत।
आये पुरी पताल ते, प्रमुदित तुणय निकेत ॥
मरुतगणहुकियआगमन, तेहि शुचि उत्सव माहिं।
हर्षितचितसविनयतुणय, सन्मानेहु सब काहिं ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

नवजात शिशुकर जात कर्म विधानयुत तुम्वुरु करचो।
मख कुम्भजलशिशु शीश सिंचत स्वस्तयन इमि उच्चरचो ॥
तुम होहु सुत जग मधि महावल दलन खलु खलदलकरौ।
करिअतिप्रयतकृतिअमितयशसों सुवन तुमत्रिभुवनभरौ ॥
भोगहु विविध सुखभोग होहु अखण्ड महिमण्डल पती।
सुर असुर किन्नर नाग नर नहिं रोधिसक कोइ तवगती ॥
पूरुब मरुत तव मंगलायत हित सतत वाहित रहैं।
दक्षिण मरुत तव ह्वै सपक्ष विपक्ष कहँ संतत दहैं ॥

पश्चिम मरुत तुमकाहिं उत्तम वीर्य दान सदा करैं।
उत्तर मरुत करि वृद्धि तव वल सकल विघ्नन कहँ हरैं॥
इमि स्वस्तयन उच्चारि अर्चन कृति समापन गुरु कियो।
धनमणिवसन वहु मगन मन याचकन काहिंतुणय दियो॥
दो०-तेहि अवसर अशरीरणी, वाणी कह इमि वैन।
सुनिय तुणय तव कुलगुरु, तुम्बुरु सब गुण ऐन॥
स्वस्ति वचन महँ उच्चरेउ, मरुत शब्द वहुवार।
यहि हित नाम कुमार कर, होइ मरुत्त भुवार॥
(मा. पु. १२६-१२७ अ.)

अष्टत्रिंश सर्ग॥ ३८॥

मरुत्तको राज्य प्राप्ति॥

दो०-रहेअविक्षितकछुककाललग, प्रमुदिततुणयनिकेत।
बहुरि विदालै किय गमन, पुत्र कलत्र समेत॥
आय स्वपुर मधि तीय सह, पितुपद वन्दनकीन्ह।
हर्षि करन्धम सुतहि लखि, शतशतआशिषदीन्ह॥

मरहट्ठा छन्द॥

पुनि कुवँर अवीक्षित निज तनुजहि दै नृपके कोड़ मझारि।
युग जोरि पाणि इमि वचन उचारेहु पितु यह विनय हमारि॥
निज मातु हेतु मैं कीन्ह जोइ पण अब ताके अनुसार।
यह लेहु पौत्र मुख लखहु करहु मोहिं निज ऋणते उद्धार॥
प्रिय पौत्र चन्द्र मुख निरखि नृपति उर चाव प्रमोद अपार।
दृग ढुरत नेह जल शिशुमुख चुम्वत हुलसत वारहिं वार॥

सब नगर माहिं अति आनँद छायो उत्सव विविध प्रकार।
नृत गीत बाद्यते उठ्यो गूँजि पुर सज्जित सकल अगार॥
नर नाथ याचकन कीन्ह अयाचक करि अगणित धनदान।
दिय विविध रतन उपहार सेनपन सचिवन करि सन्मान॥
इमि कुवँर विवर्द्धित होन लाग जिमि शुक्लपक्ष महँ चन्द।
नित रहत भूप मन्दिर महँ सुन्दर सुखप्रद नव आनन्द॥
दो०—बाल वयसही महँ मरुत, वेद शास्त्र समुदाय।
पूजनीय कुल गुरूसन, पठन कीन्ह मनलाय॥
धनुर्वेद महँ बहुरि जब, भये प्रवीन महान।
तब महर्षि भार्गव तिन्हैं, कीन्ह महास्त्र प्रदान॥
नृपति करन्धम सब गुणखानी * सुतसनयकदिनकहइमिवानी॥
सुनहु कुवँर हरि कृपा ते सारी * फली हृदय लालसा हमारी॥
अब रहि शेष आश उर एका * लखनतुम्हारराज्यअभिषेका॥
बहुरि जाय वन प्रमुदित गाता * करहुँ चौथपन पावन ताता॥
यहि हित राज्यभार तुम लेहू * भजन हेतु मोहिं अवसर देहू॥
सुनि सनेह साने पितु वाणी * कह्यो कुमार जोरि युगपाणी॥
यहि क्षण हमहिं जो नाथ निदेशा * तेहि पालन बलमोहिं न लेशा॥
होई सुरति आपुही जाई * लायहु वन्दि ते मोहिं छुड़ाई॥
मम उरते अब लगि सो लाजू * भयहु न दूरि सुनिय महराजू॥
निजहि उबारि सकेहुँ जब नाहीं * तौ पुरुषार्थ कहा हम माहीं॥
दो०—क्षितिशासनरुचिकरनइमि, अवलकाहिं सब काल।
जिमिअवलावशकरनचह, क्लाव मनुज महिपाल॥
निजहिंरक्षिजबसकेहुँनहिं, तब पितु कौन प्रकार।
लेहिं वृहतपुर केर हम, परिपालन कर भार॥
ताते अपर काहिं क्षिति पाला * अर्पणकरहुस्वराज्यविशाला॥

सुनि सुत वचन करन्धम कहेऊ ❋ परम सुबोध कुवँर तुम अहेऊ ॥
बुधजनवदतलिखित श्रुति माहीं ❋ पितुते पृथक कबहुँ सुत नाहीं ॥
अपर न कोइ तव बन्ध उधारा ❋ मोचेहुतोहिं पितुस्वयं तुम्हारा ॥
यहि मधि करत लाज तुम जोई ❋ तौ तव सरिस अबुधनहिंकोई ॥
कह्यो अवीक्षित कोइ प्रकारा ❋ फेरे फिरत न हृदय हमारा ॥
तुम मोहिं किहौं बन्ध ते त्राना ❋ यहिहितमोसमनिलज न आना
पितु संचित धन भोगत जोई ❋ पितुकृत दुख विमुक्त जोइ होई ॥

दो०—जोय जनक के नामते, जाने जगमधि जाहिं।
असनरपशुमोहिंतजिअपर, होय न तव कुल माहिं॥
स्वतः अर्थ संग्रही जो, होहिं स्वतः जोइ ख्यात।
होहिं स्वतः दुखमुक्तजो, पुरुष बाजि सोइ तात ॥

जब नृप बारहिं बार बुझावा ❋ परअवीक्षितहिमनहिनभावा ॥
तब स्वपौत्र मरुतहि दै राजू ❋ कियवनगमन सतियमहराजू ॥
सब बासना बिसारि भुवाला ❋ करन लगे तप महा कराला ॥
वर्ष सहस तप करि नरनाहू ❋ तनुतजि कीन्हअमरपुर लाहू ॥
तब पति पादरता महरानी ❋ विधिगतिजानिधीरउरआनी॥
पति सलोकता करि उर कामू ❋ जाय महर्षि और्व के धामू ॥

दो०—निवसिप्रयतमुनितियनसह, नित फलमूल अहार।
करन लगीं भगवत भजन, जोइ जीवनफलसार ॥

(मा. पु. १२८-अ.)

एकोनचत्वारिंश सर्ग ॥ ३९ ॥

भुजंग पीडित ऋषियों के रक्षा हेतु वीराकृत मरुत्त प्रति उपदेश, मरुत्त का सर्पकुल ध्वंसोद्योग व तन्निवारणार्थ अवीक्षित का आगमन ॥

सो०—नारायण अनुरूप, न्यायपरायण नृपति जोइ ।
जिमिहरिजगतस्वरूप, राज्यरूप तिमि भूपहू ॥
मात तात सुत दार, जिमि न विश्व आधार के ।
भूपहि तौन प्रकार, अपरकुटुम्बिनप्रजनविनु ॥
जेहिविध पृथकन होय, ज्योतिनलिनि पतिसोंकबहु
तिमि वर भूपति जोय, च्युत न होहिं नृप धर्म ते ॥
नर कलङ्क उपभूप, धरेशीश मणिमय मुकुट ।
सोइमिकालस्वरूप, समणिफणा जिमिअसुहरण ॥

दो०-लहि राजासन प्रजन इमि, पालत मरुत भुवाल ।
जिमि रक्षत जगजननकहँ, विमलमरुत सबकाल ॥
गज मधि रण कुशलीबली, कोउनमरुत अनुहार ।
सप्तद्वीप मधि नृप न अस, तिन रथ रोधनहार ॥

तिन अनुशासित कोइ थलमाहीं * इमिकरिसकखलताखलनाहीं ॥
जिमि बड़वा रहि सिन्धुमझारा * परतेहिसलिल न करिसकछारा
दुरत मरुत द्युति लखि अरिकैसे * तपन ताप तम भागत जैसे ॥
पर न भानु तिन सम यहि हेतू * कबहुँ कबहुँ ग्रासत तेहि केतू ॥
पूरण इन्दु जगत मुद कारी * यहिहितसोउ न मरुतअनुहारी
षोड़श[1] कलाधारि[2] रजनीशा * ता चौगुनकलधर अवनीशा ॥

१, २–टिप्पणी ४२ देखो ।

सहस नयन सुरराज स्वरूपा * रहे सर्व दर्शी वर भूपा ॥
गगन पताल पयोनिधि माहीं * विनुप्रयासनृप विचरिसकोहीं ॥

दो०—चक्रवर्ति भूपति मरुत, जग जन रंजन कारि।
मुञ्जवान गिरिकरसुधर, कर्बुर शिखर विदारि ॥
कनक कोट तासों रचेहु, मधिमधिमणिचयसाजि।
मनहुँ गगनतजिअवनिमहँ, उदिततारकाराजि ॥

मरुत समान आज यजमाना * त्रिभुवनमाहि नाहिंप्रकटाना ॥
करिवहुशतमख सहित विधाना * भये भूप सुरराज समाना ॥
तिनके दान ते सब पुर माहीं * भे सब धनी रंक रह नाहीं ॥
नृपति मरुत पालित क्षितिभागा * देखि गर्व सुर पुर कर भागा ॥
एक दिवस तिन सभा मझारी * आय एक तापस जटि धारी ॥
कह तव पिता मही मनुजेशा * पठयहु मोहिं यह देन संदेशा ॥
हौं मैं रहति औौर्व कुटि माहीं * सो भलविदिततात तुमकाहीं ॥
मुनिन काहिं विषरदन सदाई * पीड़ित करत आश्रमन आई ॥

दो०—यह दुर्घटना देखि कै, मोहिं परत यह जान।
राजकाज मधिअवशितुम, हौ असमर्थ महान ॥
तव पूर्वजन के समय महँ, कबहूं सुना न जोय।
तुम्हरे शासन काल महँ, निज प्रति ह्वैरहसोय ॥

सो०—तुम सुख सम्पति माहिं, जानि परतआसक्तअति।
यहि निमित्त तुमकाहिं, प्रजनहिताहित विदितनहिं

चारचक्षु बुध कह नृप काहीं * तेहि पदयोग्यअहहुतुमनाहीं ॥
जेहि पुर होत मुनीन कलेशू * धर्मवंत तहँ कर न नरेशू ॥

१—सुवर्णो मुञ्जवान् नाम पर्वतः सुर सेवितः। यह मुञ्जवान् सुमेरुका अंश तो नहीं है ?। २—यस्मात्पश्यन्ति दूरस्थाः सर्वानर्थान्नराधिपः। चारेण तस्मादुच्यन्ते राजानश्चारचक्षुषः॥ अर्थात् राजगण चार वा चर द्वाराही दूरस्थ समस्त विषय पर दृष्टि करते हैं; इस लिये उनको चारचक्ष कहते हैं ॥

मदमत कुटिल उरग समुदाई * नितप्रतियहितपवनमधिआई ॥
स्वेद पुरीष मूत्र करि त्यागा * करतअशुचिहविकुटीतड़ागा ॥
सप्त सुषुप्त ऋषिन सुत काहीं * दंशनकीन्हखलननिशिमाहीं॥
तप बलते ऋषि निमिष मझारा * सकहिंभुजंगकुलहिकरिछारा ॥
पर तिनकेर अहिंसा धर्मा * खलन दलनयह नृपकर कर्मा ॥
नर नरपति दोउ मनुज समाना * पर विभेद जिमि मेरु पषाना ॥

दो०—तबलौं है सुख भोगकर, नृपति तनय अधिकारि ।
जबलौं परतन शीशपर, अभिषिंचन कर वारि ॥
राज मुकुट जबशीशपर, धारत राज कुमार ।
धरणिभार तब शीशपर, होत शेष अनुहार ॥

यह जानै नृप सकल प्रकारा * को ममरिपु को शत्रु हमारा ॥
रिपुता केर अर्थ का अहई * को हम काह करन मोहि चहई ॥
कौन पुरुष मंत्रीपद योगू * रह विरक्त हमसन कत लोगू ॥
कहँ लगि बल रिपु रहा बढ़ाई * सो सयत्न नृप लखै सदाई ॥
कौन प्रजा सुधर्म पथ गामी * कौन क्रूर कपटी खल कामी ॥
देय दण्ड केहि पालिय काहीं * करन दया केहि जनपै चाही ॥
देशकाल लखि सकल प्रकारा * सर्व विषय कर करै विचारा ॥
सम दम दण्ड भेद नरनाहू * करै कौन विधते निर्वाहू ॥
इन सब कर चिन्ता सब भाती * करन चही भूपहि दिनराती ॥
केवल करहिं जोय सुख भोगा * सो नहिं नपति कहन के योग ॥

दो०—यहिनिमित्तविधिकियसृजन,अवनिमाहि महिपाल ।
यतनिजदुखसुखकरिअलख,करहिंप्रजनप्रतिपाल॥
राजधर्म पालननिमित, सह यत दुख नृप जोय ।
तासु शतोधिक लहत, स्वर्गधाम मधि सोय ॥

रोला छन्द ॥

यहिहित तजि सुख भोग तात निज धर्म विचारहु ।
हनि खल उरगन गर्व मुनिन कर शोक निवारहु ॥
पालन सुजनन काहि खलन कह दण्ड प्रदाना ।
धर्म नीतिअनुसार यही तव कर्म प्रधाना ॥
तव अधिकार मझार होइ यदि अघ विस्तारा ।
तौ ताकर फलभोग करन तोहि परी कुमारा ॥
पितामही मैं तोरि आव मम बुधि महँ जोई ।
दिहौं तोहिं समुझाय करहु अब जस रुचि होई ॥
यह सुनि लाज अमर्ष भूपवर मरुतहि छयऊ ।
गहि प्रचण्ड को दण्ड और्वके आश्रम गयऊ ॥
पितमही पद वन्दि बहुरि नृप तेहि थल माहीं ।
अहि दंशित मृत सप्त देखि ऋषितनुजन काहीं ॥
निजहि निन्दि बहुवार कह्यो इमि कोपि कराला ।
भुजगहीन यह त्रिजग अवशि करिहौं यहिकाला ॥
अस कहि गह्यो भुवाल अस्त्र सम्वर्तक घोरा ।
जासु तेजते विकट धधक पावक चहुँ ओरा ॥
तेहि महास्त्र कर तेज पहुँचि अहिलोक मझारा ।
सकल नागकुल काहिं करन लाग्यो सो छारा ॥
दग्ध पुच्छ फण उदर अमित नागन कर भयऊ ।
हाहाकार अपार उरग रमणिन मधि छयऊ ॥
दहत भुजंगन अंग अस्थि जरि छार उड़ाई ।
चट चट तनुते मांस फूटि विथरै चहुँघाई ॥
दग्धित गर दुर्गन्ध अनल गर्जन विकराला ।
विकट फणिन फुफकार सकल मिलि पूर पताला ॥

अहिनशीश सोंचिटकिगिरहि इमिमणिअनिवारा।
खसत टूटि अनगणन नील नभ सों जनुकारा॥
लखि भुजंग कुलनाश रुदतनिज शिरउर ताड़त।
भगी नाग अंगना अंगना वसन सँभारत॥
दो०—मरुत मातुढिग ते सुमुखि, गईं दृग ढुर जलधार।
जनु वहु पूरण चन्द्र सों, वर्षत अमित तुषार॥
भूमि लोटि शिरनाय सब, कहन लगीं इमि वानि।
पूर्ववचननिज सुरतिकरि, हरहु विपद महरानि॥
देवि वेगि निज सुतहि निवारहु * नशत भुजंग कुलहि उद्धारहु॥
सो सुनि मरुत मातु तिन काहीं * दै धीरज इमि कहँ पति पाहीं॥
प्रथमहिं कहा रहे हम जोई * सो भल सुरति नाथ कहँ होई॥
विपति ग्रसित उरगण अकुलाई * यहिक्षणलीन्हशरणममआई॥
संतत धर्म आचरण माहीं * हम तुम मधि अंतर कछुनाहीं॥
जोमम शरण सो सकल प्रकारा * रक्षणीय महराज तुम्हारा॥
अबआशुहिनिजसुतहि निवारी * हरिभुजगनदुखकरहुसुखारी॥
सुनितिय वचन अवीक्षित कहेऊ * मरुतहि वारण सहज न अहेऊ॥
कीन्ह उरग गण गुरुतर दोषा * यहिहित वढ्यो मरुतकररोषा॥
सो मम तनय कहहु यह जोई * वारणताहि कठिन नहिं कोई॥
दो०-सो विचार तव व्यर्थ लखु, तड़ित प्रकट घन माहिं।
परप्रसमिततेहिकरिसकत, कोइविध वारिदनाहिं॥
सुजननपालनखलदलन, अहै नृपन कर कर्म।
विघ्नकरेयहिमधिसुमुखि, होत महान अधर्म॥
तब नागनिन जोरि युग हाथा * कह हम तव शरणागत नाथा॥
तव कुल मधि अस भयो न कोई * आये शरण न राखा जोई॥

१–२०६ पृष्ठ देखो।

आरत विपति दारनहि हेतू * गहत शस्त्र क्षत्रीकुल केतू ॥
हरहिं न आर्त क्षत्रि सो ऐसे * अस्त्र शस्त्र भूषित तिय जैसे ॥
यह सद युक्ति मरुत पितु मानी * कहनिजभामिनि प्रतिइमिवानी
अवहिं प्रिये हम तव सुत काहीं * जाय बुझाउब तपवन माहीं ॥
करि बड़दोष शरण जोई गहई * तजन ताहुकहँ उचितनअहई ॥
मान्यो यदि न मरुत मम वानी * तौ निश्चय यह जानु सयानी ॥

दो०-जिमि प्रचण्ड दावानलहि, करअति वृष्टि विनाश ।
तिमि अमोघ निजअस्त्रसों, करब कुवँर वलह्रास ॥
सो०-असकहि गहि धनुवान, रोहियान भामिनि सहित ।
आशुहि कीन्ह पयान, और्वआश्रमहिमरुतजहँ ॥
(मा. पु. १२९--१३० अ.)

चत्वारिंश सर्ग ॥ ४० ॥

पिता पुत्र का वादानुवाद व नागकुलकी रक्षा ॥

सो०-लख्यो अवीक्षित जाय, कुपित मरुत निज धनुषपै ।
प्रलयानल के न्याय, जोरि अस्त्र ठाढ़े तहाँ ॥
अविरल अनल कराल, तेहिमहास्त्रमुखसोनिकरि ।
दशदिक गगन पताल, व्यापदुसहअतितापजेहि ॥
कह्यो अवीक्षित मरुतप्रति, दृग तरेरि इमि बैन ।
दो०-तब नृप भृकुटि चढ़ाय इमि, मरुत्त प्रति बैन ॥
वारु अस्त्र द्रुत क्रोध वश, होन उचित तोहिं हैन ॥
लखि पितुकाहिं मरुत बलधामा * कीन्ह भक्तियुत दण्ड प्रणामा ॥
पुनिसविनय कहशठ अहित्राता * किय ममराज्य माहिं उत्पाता ॥

अब यहि समय धर्म अनुसारा * प्रजन शुभाशुभ मम शिरभारा ॥
खल अहमित भुजंज समुदाई * राज्य दण्ड कर शंक विहाई ॥
तजि मलमूत्र तपोवन माहीं * देहिंदुसहदुखऋषिमुनिकाहीं ॥
यहि तजि क्रूर धर्म पथध्वंसी * हने सप्तऋषि तनु जन दंशी ॥
मोरे रहत राज्य मधि ताता * कीन्हकुटिलउरगनद्विजघाता ॥
यहि हित सुनिय तात हम काहीं * नाशत शठन्ह निवारहु नाहीं ॥

दो०–कह्यो अवीक्षितद्विजतनय, निरप गामिहू होहिं[1] ।
तदपि हमारे वचन यह, राखन परिहै तोहिं ॥
कह्योमरुतयदिलखनकहँ, देब दण्ड हम नाहिं ।
जान परी तौ हमहिं कहँ, अवशि नरकपुरि माहिं ॥

मरुत जनक कह अहि समुदाई * लिय मम शरण महा भय पाई ॥
यहिनिमित्त क्षमि तिनकर रोषा * राखु स्वपितु गौरव तजु रोषा ॥
कह्यो मरुत अहि अति उतपाती * क्षमब न इनहिं तात कोइ भाँती ॥
राज धर्म तजि कौन प्रकारा * पालहिं हमपितुवचन तुम्हारा ॥
सोइ नृप जोइ न्याय कृति माहीं * अपन परार विचारत नाहीं ॥
देव न दण्ड इनहिं हम जोई * तौ नहि सुगति लाहुमोहिहोई ॥
तनुज वचन सुनि धनुष चढ़ाई * कह्यो अवीक्षित रोष बढ़ाई ॥
जोइ सभीत लिय शरण हमारी * नाशत तिन्हैं वचन ममटारी ॥
राखसि जोइ घमंड उर घोरा * लखब आजु पुरुषारथ तोरा ॥
क्षितिमहँतुमहिं न अस्त्रनिधाना * समरकला हमरहु कछु जाना ॥

दो०–अस कहि लीन्ह्यो तूण ते, काल अस्त्र ततकाल ।
कान प्रमान अमर्षयुत, कर्षेहु धनुष विशाल ॥
तेहि अमोघ कालास्त्र सों, ज्वाल मालविकराल ।
प्रकट लपट ध्वनिते डिगे, धरणिकुधरदिकपाल ॥

१–यदेभिर्निहिता विप्रा यास्यन्ति नरकं मृताः ।

सो०-रह जग विकल महान, मरुत अस्त्र सों प्रथम ते।
द्विगुन विश्व अकुलान, उभय अस्त्र के ताप सों ॥
यहविलोकि पितु प्रति इमिवानी * कह्योपुकारिमरुत गुणखानी ॥
खलजन दलन हित मैं धनु ताना * तुम पै पितु न मोर सन्धाना ॥
तब केहि हित मम करननिपाता * रोषि अस्त्र कर धारेहु ताता ॥
भा तव तेजते जन्म हमारा * तजी न सतपथतनयतुम्हारा ॥
प्रजापुंज पालन मम काजू * है कि नाहिं शोचियमहराजू ॥
कह्यो अवीक्षित मोरहु दृढ़पण * शरणागतदुखकरबनिवारण ॥
पोषत शशि मृगांक कहँ जैसे * शरणागत रक्षब हम तैसे ॥
हम तुम मधि देखब को आजू * रक्षि स्वधर्म होत कृतकाजू ॥
कितौ आजु मो कहँ सुत शोका * लखीकितौपितु विनुतोहिंलोका
निज निज कर्म करत सब कोई * यहिमधि कछुअधर्मनहिंहोई ॥
दो०-कह्यो मरुत माता पिता, मित्र चहै गुरु होय।
राज नीति बाधक जोई, माननीय नहिं सोय ॥
यहि हित अर्पब तवपदन, शस्त्राजंलि सप्रणाम।
तवआशिषते अवशिमम, पूर्ण होई मन काम ॥
सो०-पितु यह दोष हमार, क्षमेहु रोष तुम पर न मम।
पर हम कोइ प्रकार, सहब प्रजन अपकारनहिं ॥
पितापुत्र दोउ काहिं, देखि परस्पर निधनरत।
आय सोय क्षणमाहिं, भार्गवादि मुनि कह्योइमि ॥
सुनिय मरुत पितुप्रति तुमकाहीं * त्यागबअस्त्रउचित कृतिनाहीं ॥
बहुरि अवीक्षित सनइमि कहेऊ * यह तव सुत सतपथरथअहेऊ ॥
वधत ताहि उर काह विचारी * होहु शांत अब अस्त्र निवारी ॥
सविनय कह्यो मरुत शिर नाई * सुनिय महामतिऋषिसमुदाई ॥
खलनदलनसुजनन प्रतिपालन * यहिनृपधर्मवदतश्रुति बुधगन ॥

तेहि पालन मधि करियविचारा * अहै काह अपराध हमारा ॥
भरुतजनक कह जोलियशरणा * मोरहु धर्मतिनन्ह दुखहरणा ॥
मम शरणार्थिन करत सँहारा * यहिहितसुतअपराधि हमारा ॥
दो०-कह्यो मुनिन सविनय वदत, यह भुजंग समुदाय ।
हमयहि क्षण मृतमुनिसुतन, पुनरपि देवजियाय ॥
तजिविवाद यहिहितमिलहु, सुतपितु हर्षित गात ।
पालेहु निज निज धर्मतुम, होइसुयशयहख्यात ॥
सो०-तब विषरदन निकाय, दिव्य अगद सों तुरत ही ।
दियमुनिसुतनजियाय, लखिहर्षेऋषिमुनिसकल ॥
भरुत धनुषतजि प्रफुलित गाता * कीन्हसप्रेम पितुहिप्रणिपाता ॥
तिनहुँ सहर्ष सुतहि उरलाई * बोले हृदय सनेह बढ़ाई ॥
संतत पुत्र पौत्र समेतू * करहु विविधसुखममकुलकेतू ॥
इमि तव शत्रु रहैं द्युति हीना * रविसन्मुखजिमिउडुगमलीना॥
वहुरि सप्रेम भरुत अवनीशा * जननि पादरज धारेहुशीशा ॥
भरुत मातु यह दीन्ह अशीशा * जेहि विधनिधिअधारवारीशा॥
लंघत कबहुँ न निज तट काहीं * तिमि तुम तजहु धर्मपथ नाहीं ॥
जेहि विध प्रभारत्न मधि भ्राजत * तिमि तव रहै राजश्री राजत ॥
वहुरि अवीक्षित तीय समेतू * प्रमुदितचित्त गमने स्वनिकेतू ॥
पितामही चरणन शिर नाई * भरुतहु गये स्वपुर हुलसाई ॥
पतिलोकाभिलाषिनी वीरा * वहुवत्सर तपकरि मति धीरा ॥
बहुरि योगवल ते तजि प्राना * स्वामिलोककहँ कीन्ह पयाना ॥
भरुत भूप के वंश उजागर * अष्टादश सुत भये गुणागर ॥
सप्तति सहस वर्ष नरनाहू * राजभोग करि सहित उछाहू ॥
दो०-नरिष्यन्त जेठे सुतहि, राजासन करि दान ।
प्रमुदितभगवतभजनहित, कियनृप विपिनपयान ॥

तप कठोर वहुकाल करि, सुमति मरुत नरनाहु ।
छोड़िअछययशजगतमहँ, अछयलोक कियलाहु ॥
(मा. पु. १३१--१३२ अ.)

एक चत्वारश सर्ग ॥ ४१ ॥

नरिष्यन्त चरित्र, दम का जन्म व दशार्णाधिपति सुता सुमना का स्वयम्बर वृत्तान्त ॥

सो०-नरिष्यन्त गुणवंत, ह्वै ससागराधराधिप ।
यह समान उर चिंत, भये जिते मम पूरबज ॥
ते सब अति धीमान, अतुलित वल संगर जयी ।
द्विजनअमितधनदान, दीन्हअसंख्यन कीन्हमख ॥

पालेहु धरणि धर्म अनुसारा ❋ कोइ कृतितेमुख कबहुँ न टारा ॥
तिनके सुचरित कहँ जग माहीं ❋ कोइनकरि अनुकरण सकाहीं ॥
कीन्ह सुकृत्य तिनन्ह नहि जोई ❋ सोइ करन मम उर रुचि होई ॥
पर लखात असकृति जगनाहीं ❋ ममपूर्वजन नकियजेहिकाहीं ॥
पालन धर्म नीति नृप जोई ❋ यहिमझार अचरज नहिं कोई ॥
सो कर्तव्य कर्म तिन केरा ❋ जेहिविगरे अघ अयश घनेरा ॥
अव अस कर्मकाह नव अहई ❋ जेहिपथविचरि तृप्ति मनलहई ॥
वहु चिंता करि हृदय मझारा ❋ यह महीप थिरकीन्ह विचारा ॥
मैं निष्काम दान व्रत यागा ❋ संतत करब सहित अनुरागा ॥
वहुरि पूरवज गण मतिमाना ❋ कीन्हस्वयं वहुमख सविधाना ॥
दो०-पर औरन ते कोइ नृप, करवायहु मख नाहिं ।
सोहमसकल द्विजातिसों, करवाउब क्षितिमाहिं ॥

यहविचारिअसबृहतमख, आरँभ नृपवर कीन्ह ।
जेहिमधि वहुधनप्रथमही, दान याचकन दीन्ह ॥
सो०—याग समय पुनरात, क्षिति मण्डल के द्विजनकहँ ।
धनमणिधेनुनिकाय, दै कुवेर सम सबन किय ॥
पुनरपि जोय समय नरनाहू * करन चह्यो मख सहितउछाहू ॥
तब कोइ विप्र कतहुँ जगमाहीं * याजकहितनमिल्योनृपकाहीं ॥
याजक करन जाहि नृप चहेऊ * सोइ इमि वचन नेहयुतकहेऊ ॥
हे मम वरण अपर मख माहीं * वोलहु कोइ अपर द्विजकाहीं ॥
यत द्विजाति तिन राज्यमझारी * भे तेहिकाल सकल मखकारी ॥
तेहि अवसर मेदिनी विशाला * भइ यक मनहु मंजुमखशाला ॥
नृप के दान प्रजन गृह ऐसे * वसि चंचला अचल ह्वै जैसे ॥
इमि न घटत धन वहु व्ययकीन्हे * घटन कवहुँ विद्याजिमिदीन्हे ॥
सवपुर मधि देखिय जेहि ठांई * होत याग व्रत तहँहिं लखांई ॥
निरखि महीप प्रजन सुख भूरी * हर्षे हेरि आश निज पूरी ॥
कह अव अवनि माहिं चहु घाई * रंक न कोइ प्रजा दर्शाई ॥
मो सम भाग्यवान को आजू * यागशील जेहिप्रजा समाजू ॥
दो०—नरिष्यंत के राज्य महँ, भा अस यज्ञ प्रचार ।
भये अठारह कोटि मख, प्राचीदिशा मझार ॥
सप्तकोटि पश्चिम दिशा, उत्तर कोटि पचास ।
कोटिचतुर्दशदखिनदिशि, वासि कीन्ह सहुलास ॥
सो०—यह सब यज्ञ विशाल, भये एकही काल महँ ।
लखियहसुकृति भुवाल, भये मग्न मुद उदधिमधि ॥

रोलाछन्द ॥

नृपति वभ्रु की सुता इन्द्रसेना नृपरानी ।
तासु गर्भ सों भयो एक सुत सब गुण खानी ॥

जननि जठर महँ वास वर्षनव सो सुत करेऊ।
दम विशेषता अवधि करन नृपरानिहि परेऊ॥
यहि हित परम प्रवीन नृपति प्रोहित बुधि धामा।
तेहि अनुपम सुत केर धरयो दम नाम ललामा॥
यथा समय महँ नृपति तनय दम सहित प्रयासा।
धनुर्वेद सिख कीन्ह भूप वृषपर्वा पासा॥
बहुरि दनुज दुन्दुभी निकट मनलाय कुमारा।
सिख्यो सकल दिव्यास्त्र तजन अरु उपसंहारा॥
सकल वेद वेदांग पढ्यो ऋषि शक्ति समीपा।
आर्ष्णिसेन ढिग सिख्यो योग दिनकर कुलदीपा॥
ख्यात दशार्णाधीश चारुकर्म्मा महिपाला।
स्वसुता सुमना केरि स्वयम्वर किय यक काला॥
वहु देशन के गुणी बली बहु राज कुमारा।
करि नृप सुता कि आश सोह तेहि सभा मझारा॥
नरिष्यन्त सुत दमहि देखि सो राजकुमारा।
ह्वै मोहित गल माहि दीन्ह वरमाला डारी॥
पर विदर्भ के कुवँर और महनँद बलराशी।
वपुष्मान यह तिहूं रहे तेहि कुवँर के आशी॥

दो०—तिन तीनहुँ अस मंत्रकिय, यहिनृपनन्दिनिकाहिं।
बल प्रकाशि हरिलैचलिय, यहिक्षण निजपुरमाहिं
पुनि हम तीनहुँ माहिंजेहि, वरण करी सुकुमारि।
विनुविवाद विधुवदनि यह, होइतासु प्रिय नारि॥

१–श्रीमद्भागवतानुसार दम मरुत्तके पुत्र हैं परंतु मार्कण्डेय पु. व विष्णु पु. के मतसे मरुत्तके पुत्र नरिष्यंत और नरिष्यन्तके पुत्र दम हैं। २–राजर्षि विशेष। ३–टिप्पणी ४१ देखो।

यदि हम तिहूँ माहिं कोउ काहीं * यह वर वरणिग्रहणकरिनाहीं ॥
तौ रण मधि जोइ दमहिं सँहारी * होई अवशि तासु प्रिय नारी ॥
अस विचारि तीनहुँ जन धाई * घेरेहु राज नन्दिहि जाई ॥
तबहिं स्वयंवर सभा मझारी * चहुँदिशिमच्यो कुलाहलभारी ॥
सभा सदन प्रति तब इमि बैना * कह दमअरुण वरण करिनैना ॥
यहि स्वयम्वरहि स्वजन समाजू * संतत वदत धर्म कर काजू ॥
इन सदर्प तुम सबन अगारी * हरण चहत यह राजकुमारी ॥
यदि यह धर्मविहित कृति होई * तौन काज ममकुवँरि सों कोई ॥
यदि अधर्म कारज यहजानिय * तौ मम वचन सत्यकरिमानिय ॥
करहुनअबहिं इनन्ह मदवारण * तौ धिक मम शरासनहिधारण ॥

दो०–चारु वदनि यहि रमणि कहँ, मम करते यहिकाल ।
हरण करनइमिहरणचह, व्यालमणिहिजिमिवाल ॥
यहसुनि कोउ कह सुनिय दम, धर्म नीति अनुसारि ।
नृप नन्दिनि यह ह्वै चुकी, सह धर्मिणी तुम्हारि ॥

कोउ कह राक्षस व्याह सदाई * असि जीवी क्षत्रियन सुहाई ॥
यहिति जासु प्रवल कर वाला * होई तासु तिय यह नृप वाला ॥
कह्यो अपर जन राक्षस व्याहू * क्षत्रिहि विहित जान सब काहू ॥
पर वरमाल दमहि यह दयऊ * यहिहितनहिं कुमारि रहिगयऊ ॥
अबयह कुवँरि नीति अनुसारा * ह्वै चुकि भूपतनय दम दारा ॥
यहिरुचिअपर जोइ जनकरहीं * सो कृति जस कोइपरतियहरहीं ॥
यह सुनि महानन्द हठकारी * खड्ग तोलि इमि कहेऊ हुँकारी ॥
कहहु जोइ भावै जेहि काहीं * यहिकामिनिहि तजबहमनाहीं ॥
तब दम काल भुजग अनुहारा * कोपि घोर इमि गिरा उचारा ॥
होय जो क्षत्रि तनय वलधारी * हरण करै अब नारि हमारी ॥
अस कहि धनु गुण तुरत चढ़ाई * किय टंकार वज्र की नाई ॥

तब विपक्षि नृप गण असिधारी * भिरे सगर्व दमहि ललकारी ॥
होन लाग संगर भय कारी * खर भर परयो समाज मझारी ॥
शक्ति शूलअसि शर खर धारा * चलैं दोउदिशि ते अनिवारा ॥

दो०—पालमहँ दम रिपुदल दल्यो, वर्षि प्रखर शर चण्ड ।
काट्यो वेतसपत्र सों, महानन्द कर मुण्ड ॥
वपुष्मान यह देखिकै, इमि झपट्यो ततकाल ।
जिमि मृगेश रद भग्न हित, करै प्रयास शृगाल ॥

धरि असि वपुष्मान सह क्रोधा * लाग्योकरन विषमरण योधा ॥
करि अनेक छलबल बलधामा * करै घात दम पै अविरामा ॥
अनुपम समर निपुण दम वीरा * हन्यो अमित शरशत्रु शरीरा ॥
वपुष्मान तब ह्वै हत ज्ञाना * भक्षिति पतितमनहुँ विनुप्राना ॥
राज कुवँर दम नीति प्रवीना * विवसजानितेहिवधनहिंकीना॥
शशिमुखि सुमना कहँ लै आशू * गे दम दशार्णेश के पासू ॥
भूप चारुकर्मा मतिमाना * निजकुमारि कहँ यथाविधाना॥
अर्प्यो राजकुवँर दम काहीं * मच्यो महा उत्सव पुर माहीं ॥

दो०—दै बहुधनमणि वाजिगज, दास दारिका वृन्द ।
सहितकुवँरिदमकहँनृपति, विदा कीन्ह सानन्द ॥

(मा. पु. १३३ अ.)

द्विचत्वारिंश सर्ग ॥ ४२ ॥

दम को राज्य प्राप्ति व नरिष्यन्त का वनगमन व अपमृत्यु ॥

सो०—आये दम जेहि काल, सहित बधू पितु भवन महँ ।
नरिष्यंत महिपाल, कीन्ह हर्षि उत्सव सुभग ॥

बहुरि भूप सहुलास, सौंपिराज्य निजसुत दमहि ।
जाय कीन्ह वनवास, स्वतिय इन्द्रसेना सहित ॥

धारि मौनव्रत नृपति सुजाना * लगेकरन भगवत पदध्याना ॥
सती इन्द्रसेना मनलाई * करहिं अहर्निशिपतिसेवकाई ॥
एक समय संक्रन्दन नंदन * दुर्मद वपुष्मान चढ़ि स्यन्दन ॥
तेहि कानन मधि मृगया हेतू * गमनेहु कछु सैनिकन समेतू ॥
तहां तपोरत नृपहि निहारा * जाय निकट इमिगिराउचारा ॥
चारि वर्ण मधि को तुम अहहू * सो बुझाय हमसन द्रुत कहहू ॥
मौनव्रती नृप सुनि यह वानी * उतरन दीन्ह जानिव्रतहानी ॥
पर नृपरानी सहज सुभाये * ताहि सकल वृत्तांत सुनाये ॥
सो सुनि वपुष्मान अभिमानी * भूपहिनिजरिपुकरपितुजानी ॥
कह्यो सरोष अधिक दिन माहीं * मिल्यो आजु औसरहमकाहीं ॥

दो०-असकहि धरि नृपकर जटा, काढ्यो कठिन कृपान ।
यह लखि नृपरानी कियो, हाहाकार महान ॥
वपुष्मान कह जीति मोहि, कियसुमनाहि जोऽयाह ।
तासु पितुहि वधि जाइहै, मम उरकी वड़ि डाह ॥

सो०-अस कहि तानि कृपान, काटि तपोरत भूपशिर ।
शंकित श्वान समान, कियपयाननिज पुरहि द्रुत ॥

यहि लखि रानि महाविलखाई * एक शूद्र तापसहि बुलाई ॥
कह मम सुत दम ढिग द्रुत जाई * यह सँदेश मम कह्यो बुझाई ॥
तपो निरत तवपितुहि कुमारा * वपुष्मान दुर्वृत्त लवारा ॥
तुम्हरे रहत अनाथ कि नाई * वध्यो धारि कचरोष बढ़ाई ॥
तव पितु वृद्ध दुजे निर्दोषा * मौनव्रती तनु लेश न रोषा ॥
तिन्है जोइ यहि दशा मझारी *कीन्हेसिनिधनकुटिलअघकारी॥

दो०–तुम्है उचित सब भाँति ते, करन तासु प्रतिकार।
मैं तपस्विनी है न मोहिं, अधिककथनअधिकार॥
सहै न क्षत्री वंश मधि, जब कोउ कर अपमान।
तौपितुहन्तक दोषकिमि, सहै क्षत्रि संतान॥

सो०–सो रिपु अस्त्र कुमार, परयो न तव पितु शीश पै।
तुमहि पै भयो प्रहार, तुमहिंनिहत तवजनकन्हिं॥
अहै कठिनकछुनाहिं, वन वासिन कहँ करन वध।
तुम हौ नृप तुम काहिं, वधे मनहुँ वहु जन वधे॥

यहिहित अबतोहिं उचितकुमारा ❋ करिसचिवन सँगउचितविचारा
वयुष्मान प्रति समुचित जोई ❋ करहु पुत्र आशुहि कृति सोई॥
असकहि शूद्र तापसहि रानी ❋ पठय काठ वनते वहु आनी॥
चिता वनाय पतिव्रता भामिनि ❋ भईतुरतजरिपतिअनुगामिनि॥
इतहि शूद्र तापस द्रुतचारी ❋ जाय नृपतिं दमसभा मझारी॥
रानी कथित सर्व सम्वादा ❋ कह्यो भूप सों सहित विषादा॥
सुनिपितुमृतु दमरिपु दमकारी ❋ कोपि घृताहुत वसु अनुहारी॥
पीसि रदन मींजत युग पानी ❋ कह्यो अश्रु मोचत इमि वानी॥

दो०–वपुष्मान कायर कुटिल, शठ मम जीवत माहिं।
कीन्हेसिनिधनअनाथवत, लोकनाथ पितु काहिं॥
हा पितु कहि विल्पब वृथा, यह पण करत पुकारि।
पितु तर्पण रिपु रुधिर सों, करिहौं शठहिं सँहारि॥

सो०–अरुतेहि आमिष आजु, देवभोज द्विजगणनहकेह।
करहुँ न यदि असकाजु, प्रविसिअनलतौतजबतनु॥

१–मांसेन सम्यग्द्विज भोजनंच (मा. पु. १३५ श्लोक ६) यहां द्विजका तातपर्य्य ब्रह्म राक्षस से है इस सर्ग का उपसंहार देखो।

हरिगीतिका छन्द ॥

प्रकुपितवदन रिपुदमन दम घनि वाहिनो सजवाय कै ।
कियगमन सेनप सचिव सहरणभेरि घोर वजाय कै ॥
जेते विपक्षी शत्रु सीमापाल पथ बाधक भये ।
तिन सबन जीतत हनत धर्षत घेरि द्रुत रिपुपुर लये ॥
उमड़त प्रलयपाथोधिसमअतिविषम नृपदमअनिकिनी ।
लखि आव सन्मुख तानिकार्मुकवपुष्मान सवाहिनी ॥
दोउ ओर के सैनिक सुभट केहरि सरिस हुंकारि कै ।
लागे करन अति घोर रण धरु पकरु मारुपुकारिकै ॥
रथ सों रथी गज सों गजस्थ हयस्थ हयरोही भिरे ।
विकराल अस्त्रन जाल सों तेहि काल दिविनायकदुरे ॥
रिपुगर्व खर्वी ऊर्विपति दम चतुर्दिशि द्रुत धाय कै ।
सामर्ष कर्षत धनुष वर्षत प्रखर अविरत शाय कै ॥
दमके अशनिसम शरन सोंरिपुकुलसकलअकुलायऊ ।
भय आनि उरअभिमान तजि नृपवपुष्मान पलायऊ ॥
सो लखि कह्यो दम रे अधम तैं नीति धर्म विहायकै ।
वधि अस्त्र त्यागी ममपितुहिअबजातकितहिपरायकै ॥

रामगीती छन्द ॥

यदि अहसि क्षत्रि धरित्रिपति तौ भजु न श्वान समान ।
यह सुनि कटक युत कुण्डिनाधिप फिरयो कोपि महान ॥
धनु धरि प्रखर शर निकर झर झर वरसिकै अनिवार ।
शर जाल सों क्षिति गगन लौ करि दियो एकाकार ॥
पर वारि तासु समस्त शायक नरिष्यन्त कुमार ।

१–टिप्पणी ४२ देखो ।

रिपुके अनुज अरु सब सुतन क्रमशः किये संहार ॥
तब वपुष्मान महान कोपि स्वप्राणपणहि लगाय ।
उन्मत्त सम रण करन लाग्यो देह सुधि विसराय ॥
दोउ महाबल अविरल तरलतर अस्त्र करहिं प्रहार ।
धमकत झरत अनवरत अस्त्रन सो ज्वलत अंगार ॥
अनुपम धनुर्धर वीर वर दम मारि शर उद्दण्ड ।
कुंडिनाधिपके चण्ड को दण्डहि कियो युग खण्ड ॥
तब वपुष्मा महान रुषि तजि यान तानि कृपान ।
दम सन करन लग रोमहर्षण द्वन्द्वरण घमघान ॥
पुनिरण निपुण दम वपुष्मानहि गह्यो अवसर पाय ।
धरि केश क्षिति पै पटकि बैठ्यो उचकि उर पै जाय ॥

दो०—चापि पदन सो तासु शिर, यहिविध कह्यो पुकारि ।
मैं फारत यहि अधम उर, लखैं सुरासर झारि ॥
असकहिदारयो तेहिहृदय, क्रोध ते नृपहि न ज्ञान ।
भरि अंजुलि रिपुरुधिरसों, करन चह्यो असनान ॥

सो०—यहकृति सुरननिहारि, कियनिषेधअसउचितनहिं ।
तबनिजपणअनुसारि, पितु दर्पण किय रुधिरसों ॥
बहुरि महीप बुलाय, राक्षस वंशज द्विजन कहँ ।
रिपु पल असन कराय, इमिपितुऋणपरिशोधिकै ॥
सदलस्वपुर मधिजाय, राज काज बहुकाल करि ।
राखिसुयश तजिकाय, कीन्ह लाहु कैवल्यपद ॥

(मा. पु. १३४-१३६ अ.)

तृचत्वारिंश सर्ग ॥ ४३ ॥

दिष्ट प्रमुख शाखा का अवसान ॥

नृप दम के कुमार गुणसागर * भये राज्यवर्द्धन नय नागर ॥
भूप राज्यवर्द्धन के नन्दन * भयेसुधृति खलवृन्दनिकन्दन ॥
सुधृतितनय नर सुकृति प्रकाशी * नरसुत केवलबुधि बलराशी ॥
भूपति केवल के संताना * बन्धुमान सब कला निधाना ॥
तिन सुत वेगवान मतिमाना * वेगवान सुत बुंध बुधिवाना ॥
बुध कुमार तृणविन्दु भूपवर * हैं यहि मातामह कुवेर कर ॥

रूपमाला छन्द ॥

तीन सुत तृणविन्दु नृप के सबन ज्येष्ठ विशाल।
शून्यवन्धु द्वितीय लघुसुत धूम्रकेतु भुवाल ॥
लह्यो तिन मधि राज्यभार विशाल नीति निधान।
सोय क्षितिपति कीन्ह वैशाली पुरी निर्मान ॥
भूमिपाल विशाल के सुत हेमचन्द्र प्रवीर।
तासु सुत धूम्राक्ष जोई जगप्रथित रणधीर ॥
नृपतिवर धूम्राक्ष सुत संयम परम मतिमान।
भूप संयम के तनय देवल कृशाश्व सुजान ॥
ख्यात भूप कृशाश्व के सुत सोमदत्त महीप।
सोमदत्त के तनय नृपवर सुमति रविकुल दीप ॥

१-पाठान्तर वन्धु परंतु विष्णु पुराणके चतुर्थ अंशके १ अ. में वेगवानका पुत्र बुध लिखा है। २-उत्तर काण्ड द्रष्टव्य। ३-गण्डक नदीके पूर्वस्थित "विसार" इस स्थानपर एक प्रचीन दुर्गका ध्वंसावशेष अबभी वर्तमान है जिसको लोग राजा विशालका गढ़" कहते हैं।

सुमति के सुत भये जन्मेजय जगज्जय कारि।
भये सब यहि वंश के भूपति सकल गुणधारि॥
(श्रीमद्भागवत ९ स्क. २ अ.)

चतुश्चत्वारिंश सर्ग॥ ४४॥

मनु पुत्र शर्य्याति दुहिता के साहित महर्षि च्यवन परिणय॥

दो०—भानु सूनु मनुजमणि, हिम भूधर अनुहार।
प्रयत सरित इव जासुते, प्रकटे दशहु कुमार॥
तिनमधि बहुसरितानमहँ, करि मज्जन सउछाह।
अब शर्य्याति स्रवंति महँ, करन चहत अवगाह॥
सो०—करत कर्म नर जोय, गुप्त प्रकट यहि जगत महँ।
अविदित रहत नसोय, धर्मराज सों जौन विध॥
सब प्रकार तेहि भाँति, गुप्त प्रकट वेदार्थ यत।
ख्यात नृपति शर्य्याति, रहे ज्ञात यहि अवनि महँ॥

रामगीती छन्द॥

यकदिवस भूपति लै स्वकन्या प्रिय सुकन्या काहिं।
किय गमन ऋषिवर च्यंवन के पावन तपोवन माहिं॥
तेहि विपिन मधि निज सखिन सँग विचरत महीप कुमारि।
वल्मीक मधि खद्योतवत युग ज्वलत ज्योति निहारि॥
शिशुतायि वश यक काँटते सो ज्योति वेधन कीन।
तेहि गुफा मधि रहे च्यवन मुनि हरिभजनमहँलवलीन॥

१—टिप्पणी ४४ देखो।

वह रुधिर तिनके दृगन सों तब भये मुनि अति क्रुद्ध।
जासों सअनुचर भूपकर भा मूत्र मल अवरुद्ध ॥
पूँछेहु सबन सन तब महीपति हृदय अति अकुलाय।
कोउ कीन्ह तौ नहिं दोष मुनिकर कहहु मोहिं बुझाय ॥
यह सुनि सुकन्या स्वकृत दोषहि सभय कहँ पितु पाहिं।
तब निज विनयते करि प्रसन्न महीप मुनिवर काहिं ॥
विधुवदनि निज तनुजाहि तिन कहँ अर्पि सहित विधान।
सानन्द सचिवन सहित निजपुर काहिं कीन पयान ॥
कोपन स्वभाव महानुभव मुनिच्यवन की सेवकाय।
नृप नन्दिनी आनन्द सह संतत करत मन लाय ॥
जेहि भांति पावन प्रणव सों गायत्रि होत न भिन्न।
जेहि भांति कबहूँ दिवस सो आलोक होत न छिन्न ॥
तिमि पतिव्रता पतिपदरता नृपसुता छाय न्याय।
जानै अपर नहिं धर्म कर्महि स्वामि सेव विहाय ॥

दो०—यक दिन मुनिवर च्यवन के, पावन भवन मझार।
कीन्ह अगमन सुरभिषक, दोउअश्विनीकुमार ॥
कहतिनसन मुनिवरच्यवन, करिबहुविधसन्मान।
तरुणिअभिलषिततरुणवय[1], यदिमोहिं करहुप्रदान

सो०—तौ जगमधि मख माहिं, रुचिर सोमरस पानके ॥
अधिकारी तुम काहिं, अवशि देबकरि आजुते।
सुनि अश्विनी कुमार, जराजीर्णतनुमुनिहिलै ॥
यक शुचि कुण्ड मझार, किय प्रवेश आनन्दयुत।

तेहि सरते कछु काल मझारी * निकरे तीन पुरुष द्युतिधारी ॥
यक सम तिनहु रूप अभिरामा * तरुणवयसजिन सरिसनकामा

१—लंकाकांड परिशिष्टमें ३२ सर्गकी टिप्पणी १ देखो।

तिनन्हदेखिसतिच्यवनकिनारी * चीन्हन स्वपति विकलभइँभारी
पति विरहिन सति दशा सदाई * अहै वृतच्युत सुमन कि नाई ॥
तासु अटल पति भक्ति निहारी * ह्वै उरमधि सुरभिषकसुखारी ॥
मुनिहिंचिन्हायविदा लहिआशू * कीन्ह गमन वर्णतयशतासू ॥
करि मुनि च्यवन तरुणतालाहू * भोग विलास निरत सउछाहू ॥
यक समय शर्य्याति भुवारा * उरमधिकरिमखकरनविचारा ॥
याजक हितमुनिच्यवन समीपा * गमने सचिव समेत महीपा ॥
जाय नरेश तपोवन माहीं * इमि देखहुनिज तनुजाकाहीं ॥

दो०—यक किशोर बय पुरुष के, बैठी पार्श्व मझार ।
तनु शोभित कौशेय पट, भूषण विविधप्रकार ॥
सहसालखि आवत पितुहि, भूप कुमारि लजाय ।
उठि आगेबढ़ि जनक पद, वन्देहु शीशनवाय ॥

पर आशिष न महीपति दयऊ * कुपितगात भाषत इमि भयऊ ॥
रे पापिनि तोहि शत धिक्कारा * किहे कलंकित वंश हमारा ॥
निज पति अतुल तपोवल धारी * जोय पूज्यतिहुँलोक मझारी ॥
जराग्रस्त लखि तेहि करि त्याजू * भयसि जारवशतै तजि लाजू ॥
उपपतिरता अहैं जे नारी * तेकुटिला कुक्कुरि अनुहारी ॥
असति तीय मुख हेरत जोई * कोविद वदत नरकतेहि होई ॥
पंगु जरठ कटु वाचि मलीना * अंध वधिर निर्द्धन गुणहीना ॥
ऐसहु पति सति तीय सदाई * पूजहि इष्ट देव की नाई ॥
जिमिनर चूसि इक्षु रसलेहीं * तेहिअसार अंशहिं तजिदेहीं ॥
यौवन विगततियहितिमिजारा * घृणा समेत करहिं परिहारा ॥

दो०—मनुजन जूठे पात्र महँ, अशन जात वचि जोय ।
सो वायस कुक्कुरन कर, जेहि प्रकार भख होय ॥

तिमि कुलटा नारिन कर, जबयौवन खसिजाहि ।
कुत्सित नरन कि भोगिनी, तबसोहोहिजग माहिं ॥
सो०—पितु पति कुल यश नाश, कीन्हें तै दुर्भागिनी ।
यहिअघ नरक निवास, यहिकामुकसह होइ तोहिं ॥
सुनिपितुमुखइमिबानि,नृपत सुताकह हे जनक ।
यहि भृगुसुतगुणखानि, ममप्रियपतिजामातृ तव ॥
पुनिजेहिभाँति च्यवन ऋषिराई * कीन्ह लाहु सुन्दर तरुणाई ॥
सो वृत्तांत महीप कुमारी * कह्योसकलनिजजनकअगारी ॥
तव सहर्ष नृप दै अशीशा * चुम्बन कीन्ह सुता कर शीशा ॥
नृप सन बहुरि च्यवनमुनि राई * विशुचि सोम मखसविध कराई ॥
तहां सोमरस मुनि मति माना * किय अश्विनीकुमारहि दाना ॥
लखिसुरपतिहि क्रोधअतिछावा *मुनिहिनिधनहितकुलिशउठावा॥
पर सुरराज पाणि सकु लीशा * कीन्हअचलजड़सरिसमुनीशा ॥
गर्व हीन ह्वै तब सुरराई * मांगेहु क्षमा मुनिहि शिरनाई ॥
पूरण भयो नृपति कर यागा * गमने सुरलहिलहिनिजभागा ॥
तेहि मखते अश्विनी कुमारा * सोम पान कर लह अधिकारा ॥
दो०—भे त्रय सुत शर्य्यातिके, आनर्तादि प्रवींण ।
तिन्हन माहिं आनर्त सुत, रेवत धर्म धुरीण ॥
जिन रेवत विरच्यो नगर, कुशस्थलीअभिराम ।
सोइ कुशस्थलि ख्यात अब, द्वारावैति के नाम ॥
सो०— भे यक शत संतान, सुयशी रेवत नृपति के ।
तिन मधि गुणी महान, नाम कुकुद्मी ज्येष्ठ सुत ॥

१—द्वरका तीर्थ-गुजरात प्रदेश केदक्षिण पश्चिम दिकस्थित ।

भइ रेवती[1] कुमारि, सुसुति कुकुद्मी नृपति के।
अतिपितुमातुपियारि, जेहिसुमिरणअघअोघहर ॥
(श्रीमद्भा.९ स्कन्द ३ अ.व विष्णु पु.४ अंश १ अ.)

पञ्चचत्वारिंश सर्ग ॥ ४५ ॥

नभग चरित्र ॥

सो०–मनुके अपर कुमार, नभग नामधर रहे जोइ।
सोगुरु भवन मझार, किय निवास बहुकाल लौं ॥
तबतिनभ्रातनिकाय, जानि विरागी नभग कहँ।
पितुसम्पति समुदाय, लीन्ह अंश करि परस्पर ॥

दो०–गुरु गृहते कछु काल महँ, आय नभग मतिमान।
कह भ्रातन सों करहु मोहिं, भाग हमार प्रदान ॥
यह सुनि नभग सहोदरन, कह विचारि इमि बैन।
अहैं तुम्हारे भाग महँ, जनकअमितबुधिऐन॥

तब मनुनयनिधान गुण खानी ❋ कह्योनभगप्रतियहिविधवानी ॥
तव भ्रातन ह्वै स्वार्थ अधीना ❋ तुम्हरे भाग माहिं मोहिंकीना ॥
यहि हित तव जीविका उपाई ❋ कहत अहौं सुनु ध्यान लगाई ॥
यकशुचिमख यहिसमयमझारी ❋ करतआंगिरसऋषिगणभारी ॥
ते अष्टम दिन कर कृति जोई ❋ सविध पूर्ण करि सकतनसोई ॥
सोकृति पूर्ण करावहु जाई ❋ ह्वै प्रसन्न तब ऋषि समुदाई ॥
भये पूर्ण मख धन तोहिं दैहैं ❋ बहुरिसकल ऋषिदिवपुरजैहैं ॥
यह सुनि नभग तहां द्रुत जाई ❋ ऋषिन यागदिय पूर्ण कराई ॥

१–यही रेवती भगवान बलराम की पत्नी हैं।

तब मख वचत द्रव्य सानन्दा * मनुनन्दनहि अर्पिऋषिवृन्दा ॥
चढ़ि रविकर द्युतिहर सुरयाना * स्वर्गलोक कहँ कीन्हपयाना ॥

दो०-लेन चह्यो सो धन जबहिं, मनु कुमार गुण ऐन ।
मनुजरूप धरि रुद्र तब, आय कह्यो इमि वैन ॥
मख महँ जोइ वचिजात धन, सो मम होत सदाय ।
नहिं प्रतीति तौ नीति विद ,पितुसों पूँछहु जाय ॥

सो०-सोसुनि पितुढिग जाय, शांति शीलमनु सुतनभग ।
हाथ जोरि शिरनाय, वरण्यो रुद्र विवाद सब ॥
कह मनु हैं शिव सोय, अहै नियम यह शास्त्रमत ।
मख समाप्ति मधि जोय, वचत द्रव्य सो रुद्र कर ॥

रामगीतिक छन्द॥

तब नभग शिव ढिग जाय शीशनवाय पितु कृतन्याय ॥
कर पुट कह्यो सो सुनि भवापति हृदय मधि हर्षाय ।
सो सकल धन मनु नन्दनहि दै भये अन्तर्द्धान ॥
वुध जन भनत जग थिती कर नीतिहा हेतु प्रधन ।
जप तप दया साधन अराधन याग पर उपकार ॥
यह सकल कृति जोनय रहित सो सतत होत असार ।
जिमिनिज सुगन्धि समीर विनु नहिसकतसुमफैलाय ॥
तिमिन्याय विनुदोउ लोक कीकृतिहोत नहिंफलदाय ।
जिमिजलदजल सम्मिलित सरिताकबहुँनाहिंसुखात ॥
तिमिन्याय वत जो कृत्य सो कोइ काल व्यर्थ नजात ।
जोइ नयविवर्जित कृत्यकरि पुनि चहैसो सुख्याति ॥
सो इमिविना पति तनय कीरुचि करै तियजेहि भाँति ।
आलोक विनु जिमि नयन तेनहिं रैनमाहिं लखात ॥
तिमि धर्म कर्महु न्याय विनु कोइ काल नाहिं विभात ।

यशखानि धर्म निधान मनु के तनय नभग सुजान ॥
भे प्रथित सब संसार मधि नीतज्ञ स्वपितु समान ।
दो०—नभग महामति के तनय, महाभाग नाभाग ॥
धर्म नीति हरि भजन महँ, जासु अतुल अनुराग ।
तिननृपवर नाभाग के, तनय सकल गुणधाम ।
परम भागवत विष्णु प्रिय, अम्बरीष जेहि नाम ॥
(श्रीमद्भा . ९स्क. ४अ.)

षट्चत्वारिंश सर्ग ॥ ४६ ॥

अम्बरीषोपाख्यान ॥

सो०—अम्बरीष अवनीश, हरि अनीश के कृपा ते ।
भे नगद्वीपअधीश, सम्पति जासु शचीशसम ॥
परतेहि सबहि भुवाल, स्वप्न विभव इवज्ञान करि ।
रहत मगन सबकाल, चिदानन्द हरि प्रेम महँ ॥
मनमलिन्द तिनकेर सदाई * हरि पदाब्ज महँ रहत लुभाई ॥
सफल दारु वत सतत महीपा * रह अवनत शिर साधु समीपा ॥
देवमूर्ति शशि दर्शन माहीं * दृग चकोर नृप के हुल साहीं ॥
हरि हर कथा सरित यत परई * तबहुँ न नृप श्रुति वारिध भरई ॥
वाणि वीण ते सुख प्रदजोई * अनुछनशुचिहरिगुणध्वनिहोई ॥
कर उदार किमि जाय वखाना * दान माहिं सुरदारु समाना ॥
उच्च वक्ष उदया चल नाईं * भक्ति भानु विकसत जेहि ठाईं ॥
सूक्ष्म कठिन धर्महिं श्रुति गावा * सो नृप के कटिमाहिं सुहावा ॥
दो०—विशदविशुचि यागाग्नि सम, नृपति कांति दर्शात ।
जोय भ्रान्ति हरशान्ति प्रद, लखिअघतिमिरविलात॥

ग्रहण करन भक्तन उचित, विभुप्रसाद सबकाल।
विभव विषय त्यागेहु नहीं, यहि निमित्त महिपाल ॥
सो०—परतेहि जानि असार, चितहि विरत इमि राखहीं।
सरसिज पत्र मझार, बारि बिन्दु जिमि पृथकरह ॥
करत सुकृति नृप जोय, तेहि फल अर्पत श्रीपतिहि।
उर कामना नकोय, निस्कामहि व्रत तासुप्रिय ॥

अम्बरीष के राज्य मझारी * सकल प्रजाइमिरहत सुखारी ॥
जाते स्वर्गपुरिहु की वासा * भूलिहुकरत नाहिकोउआसा ॥
अटल भक्ति नृप केरि निहारी * ह्वै प्रसन्न गोलोक बिहारी ॥
स्वायुध चक्र सुदर्शन काहीं * कीन्ह नियत तिनरक्षा माहीं ॥
एक समय एक व्रतसविधाना * करिसमाप्तिनर नाथसुजाना ॥
भोजन द्विजन कराय रसाला * करन चह्यो पारणजेहिकाला ॥
सोय समय तप तेज निधाना * आये दुर्वासा भगवाना ॥
मुनिहि देखि नृपवर हर्षाये * सबिनय उठि पद शीशनवाये ॥
दै आसन बोले कर जोरी * प्रभुपद माहिं विनय यहमोरी ॥
निज उच्छिष्ट अन्न दै आजू * दासहिप्रयत करियऋषिराजू ॥

दो०—सुनि प्रसन्न ह्वै अत्रिसुत, नित्य कृत्य के हेतु।
शुभ दायिनि कालिन्दितट, गमने शिष्य समेतु ॥
ब्रह्म ध्यान महँ मुनिवरहि, भयो तहां अतिकाल।
यह चिंता उर माहिं तब, लागे करन भुवाल ॥

सो०—अब मम पारण माहिं, अर्द्ध महूरत शेष रह।
भाविलम्ब मुनि काहिं, केहि प्रकार पारण करहुँ ॥
यदि द्वादशी मझार, अब पारण नहि करत मैं।
तौ अघ होत अपार, काहकरनअबउचितमोहिं ॥

पुनिनृप कीन्ह विचार, सलिल पान केवल किये।
अनाहार आहार, होत दोउ यह श्रुति वदत ॥
असविचारिकरि हरिपद ध्याना * कीन्ह्यो अम्बरीष जलपाना ॥
कछु क्षणमाहिंआय ऋषिज्ञानी * नृपहिंग्रहणजलध्यानतेजानी ॥
ह्वै क्रोधान्ध अरुण करि नैना * भूपति प्रति बोले इमि वैना ॥
रे मतिमन्द मूढ़ अज्ञाना * असतव हृदय धर्मअभिमाना ॥
मोंहिकरिअतिथिअशनविनुदीन्हे * तजिश्रुतिविधिभोजनतैंकीन्हें ॥
जानेसिकाह तापसहि मोहीं * देत अबहिं याकर फल तोहीं ॥
अस कहि तुरतहि अत्रि कुमारा * निज शिरते यक जटाउपारा ॥
तासन यक कृत्या भयकारिनि * प्रकटीकालनिशाअनुहारिनि ॥
खड्ग हस्त भ्रूवंक कराला * धाई नृपहि हनन ततकाला ॥
पर हरिभक्त नृपति चित माहीं * विचलित भये लेशहू नाहीं ॥
दो०—तब जिमि क्रुद्ध भुजंगमहिं, करत दाव द्रुत छार।
तेहि प्रकार हरि चक्रकरि, कृत्या कहँ संहार ॥
झपट्यो ऋषि दिशि वेगते, प्रलय कालके न्याय।
यह लखि भागे वायुगति, दुर्वासा अकुलाय ॥
सो०—धनप्रति जौन प्रकार, होत प्रधावित लोभ मति।
विष्णु चक्र दुर्वार, दुर्वासा प्रति धाव तिमि ॥
द्रुतगति ऋषिवर धाय, दशदिशि तिहुँपुरगिरिगुहन
भगत छिपत भयपाय, पर न चक्र पीछा तज्यो ॥
तब विधि निकट जाय मुनिराई * मांगेहुशरण चरण शिरनाई ॥
कह्यो विरंचि उबार तुम्हारा * मैं करिसकत न कोइ प्रकारा ॥
जोइ भ्रूभंगि ते मोहि समेता * भूचर खचर चराचर जेता ॥
सकहिं ध्वंसि तेहि भक्तहि जोई * पीड़त तेहि न राखि सककोई ॥
हम प्रजेश अमरेश पुरारी * सकहिंजासु आयसुनहिंटारी ॥

तासु रोष कहँ वारन हारा * है न भवान होइ संसारा ॥
यह सुनि ह्वै हताश दुर्वासा * जाय कृपालु कपालिकेपासा ॥
विह्वल चित इमि वचन उचारा * करहु चक्रते त्रान हमारा ॥
आशुतोष कह हे ऋषि राई * विभुपै चलिन मोरि प्रभुताई ॥
जासु रचित ब्रह्माण्ड मझारी * हौं मैं भ्रमत चक्र अनुहारी ॥

दो०—कोटि कोटि ब्रह्माण्ड अस, जेहि विभु सों प्रकटाय।
वहुरिहोतलयतिनहिं महँ, जिनगतिजानिनजाय ॥
तेहि अनंत भगवंत कर, अति दुरंत यह चक्र।
याहिन वारन करि सकहिं, हम कमला सनशक्र ॥

सो०—यहि हितममशिख मानि, जहुउनहिं हरिके शरण।
ते कृपालु सुखदानि, गये शरण करिहैं अभय ॥

सुनि वृषकेतु वचन दुर्वासा * जाय आशु श्रीवास सकासा ॥
गिरि पद पंकज महँ इमि बैना * बोले तजत वारि दोउ नैना ॥
हे प्रभु कृपा पयोधि अगाधू * भयो नाथ मोसन अपराधू ॥
प्रभु प्रभाव जानेहु मैं नाहीं * किहौंदुखिततवप्रियजनकाहीं ॥
कितनहु अघी नारकिहु होई * शरणागत गत आपद सोई ॥
क्षमिय क्षमानिधि दोष हमारा * करिय चक्र सों मोर उवारा ॥
चक्रपाणि कह हे मुनिराई * मै हौं भक्ताधीन सदाई ॥
जानिय पराधीन मुनि मोहीं * सुनिय हेतु सत भाषत तोहीं ॥
साधुभक्त गण हृदय हमारा * कीन्ह भक्ति वलते अधिकारा ॥
उनहिं त्याजि सन्तत हमकाही * निज आतमा श्रीहु प्रिय नाहीं ॥

दो०—सुखसम्पतितियसुतस्वजन, त्याजि भजतमोहिंजोय।
तेहि समान यहि जगत महँ, मोहि प्रीय नहिं कोय ॥
जिमिसति तिय निज सेवते, पतिहि करहिं वशमाहिं।
तिमि स्वप्रेम तेस्वाधु गण, करहि स्वबश हमकाहिं ॥

सो०—करहि न भक्त निकाय, मुक्ति चतुष्ठय केरि रुचि।
ते परि तृप्त सदाय, मम सेवा अरु भजन महँ ॥
भक्त हृदय जस मोर निवासू * तस मम हृदय भक्त कर वासू ॥
अपर काहिं जिमि मोहि विहाई * जानहिं नाहि भक्त समुदाई ॥
तेहि प्रकार जानत मैं नाहीं * भक्तव्यतीत अपर कोउकाहीं ॥
पीड़त मम भक्तन कह जोई * तेहि मधि हानिताहि करहोई ॥
अहै सत्य यह सब विधमुनिवर * तप विद्याभूसुरन मुक्तिकर ॥
परजे दुर्विनीत अविचारी * ता कहँ सोअनभलफलकारी ॥
यहि हित तहहिं जाहुमुनिराई * जहँते यह अति आपद छाई ॥
नृपति अम्बरीषहि मतिमाना * करिहैं तुमहिं बिपति ते त्राना ॥
सुनि इमि रमानाथ मुख वानी * भक्त प्रभाव ज्ञानरस सानी ॥
चक्रताप तापित दुर्वासा * गमने अम्बरीष के पासा ॥
दो०—उत जेहिक्षणतेविकलचित, भ्रमत फिरतमुनिराय।
तबते नृप सोइथल खड़े, भोजन वारि विहाय ॥
आय अत्रिसुत नृपति के, गिरे चरणपर धाय।
हांहांकहिधरिलियमुनिहि, नृप उरमाहिं लजाय ॥
सो०—जो भगवत पद लीन, सुरनमाहि गणनातिनन्ह।
जिमि विभुवर्णविहीन, तिमिहरिभक्तहुपूज्यजग ॥
पुनि हरि चक्रहि नृपति प्रवीना * निजमृदुविनयतेवारणकीना ॥
पाय चक्र सों ऋषि छुट कारा * भूपति प्रति इमिवचन उचारा ॥
हरि भक्तन अद्भुत प्रभुताई * लखेहुँ आजु नृप तव ढिगआई ॥
मो सम दोषि केर अपराधू * किह्यो क्षमा कोतुमसम साधू ॥
जोसभक्ति किय वश हरिकाहीं * दुष्कर कर्म ताहिकछु नाहीं ॥
सुनिमुनिवदनविनयअवनीशा * नृपतिधरयोमुनिवरपदशीशा ॥
सादर भवन माहिं लै गयऊ * भोजन रूचिर करावत भयऊ ॥

बहुरि नृपति कहँ देत अशीसा ※ लै विदाय कियगमन मुनीसा ॥

दो०—और्व नन्दिनिहि कन्दलिहि, दुर्वासा सविधान।
करि विवाह पुनि छार तेहि, कियकरि शाप प्रदान
सुताशोकवशऔर्वऋषि, दिय जामातहि शाप।
रे तिय हंतक होइहै, आशु नाश तव दाप॥
अम्बरीष नरनाथढिग, सोइ शाप के हेत।
भये दर्पहत अत्रिसुत, ऋषिवर तपो निकेत॥

सो०—त्रय सुत सुघरअनूप, अम्बरीष नृप के भये।
जेठे तनय विरूप, केतुमान पुनि शंभु लघु॥
अम्बरीष महिपाल, धर्म धुरन्धर भक्त वर।
प्रजनपाल बहुकाल, सहित नेह नय धर्म युत॥

रामगीती छन्द॥

पुनि दै विरूपहि राज्यभार महीप वनमधि जाय।
लागे करन भगवत भजन सब वासना विसराय॥
भूपति विरूप के तनय नृप पृषदश्व परम सुजान।
पृषदश्व के सुत रथीतर तिन क्षेत्र ते धीमान॥
प्रकटे रथीतर गोत्रि शुचि क्षेत्रज महीसुर व्रात।
अंगिरा तेज उपज यहि हित आंगिरसहू ख्यात॥
यहसुभगमनु नवसुतनकरकुलकीर्तिकिहेहुँबखान।
जेहि पठन पाठन श्रवणते नर लहैं बहु विध ज्ञान॥

(श्रीमद्भा.४-५-६अ. व ब्र. वै.पु. श्रीकृष्णजन्म खंड
२४-२५ अ.)

सप्तचत्वारिंश सर्ग ॥ ४७ ॥

(इक्ष्वाकु वंशारम्भ)

मान्धाता का जन्म ॥

सो०—वन्दौं अम्ब समेत, हेरम्बहि अवलम्ब जग ।
शम्भु सून शुभ केत, विघन निसूदनयक रदन ॥
धन्य धन्य अति तुङ्ग, शृंगधारि हिमगिरि विशद ।
प्रकटीं जहँतेगङ्ग, जेहि तरङ्ग अघभंग कर ॥
धन्य पयोधि अपार, रत्न प्रसवकारी जोई ।
सुविदित जगत मझार, रत्नाकरके नाम सों ॥
धन्य वसुमती मात, ख्यात अन्न उपजावनी ।
धन्य वनसपतिव्रात, जेहि कुल मधि मलयज उपज॥
धन्य धन्य शत धन्य, विमल विशदइक्ष्वाककुल ।
सर्व शरण्य अनन्य, जेहि कुल महँ उत्पन्न भे ॥

दो०—प्रकट भये मनुघ्राण ते, नृप इक्ष्वाकु सुजान ।
जिन महीप इक्ष्वाकु के, भे यक शत संतान ॥

तिनमधि यक विकुक्षिजेहिनामा ❋ परम प्रवीण महावल धामा ॥
नृप इक्ष्वाकु सुमति यक वारा ❋ श्राद्धकरनकर कीन्ह विचारा ॥
आमिष हित तब अवध नरेशा ❋ दीन्ह विकुक्षिहि यह आदेशा ॥
सुनहु तात तुम विपिन सिधावहु ❋ बधिमृग शशक वेगिलैआवहु ॥
पितु आयसु विकुक्षि शिरधारी ❋ जाय एक घनगहन मझारी ॥
श्राद्ध योग्य वधिशशक कुरंगा ❋ फिरेनगरदिशि प्रमुदितअंगा ॥
भेपथमधि अतिक्षुधित कुमारा ❋ तबयकशशकहिकीन्हअहारा ॥
शेष मांस लै पितु ढिग जाई ❋ अर्पण कीन्ह चरणशिरनाई ॥

१-महाराज इक्ष्वाकुके शतपुत्रों का विवरण २४ सर्ग द्रष्टव्य ।

लहि आमिष महीप मतिमाना * बैठे श्राद्ध करन सविधाना ॥
तब कुलगुरु वशिष्ठ मुनिज्ञानी * देखि मांस बोले इमि वानी ॥

दो०—सुनिय महीपति यह पलल, श्राद्ध योग्य है नाहिं ।
तव सुत याहि उच्छिष्ठकिय, होय क्षधित पथ माहिं ॥
कुलगुरुके इमि वचन सुनि, ह्वै अतिकुपितभुवाल ।
गृहतेकुवँर विकुक्षि कहँ, दिय निकारि तत्काल ॥

नरिन्द छन्द ॥

धर्म धुरीण धीर धरणीपति मनुनन्दन गुणगेहू ।
नृपकुलके आदर्शरूप ह्वै पालत प्रजन सनेहू ॥
जिमि घन सन प्राणिन भयदायक अशनिघोर प्रकटाई ।
वहुरि ताहि सन वर्षत जीवन जीवनं जीवनदाई ॥
खलनदलनमहँ तिमिभुवालघनकुलिशसरिसभयकारी ।
सुजन जनन पालन मधि संतत सुधावारि अनुहारी ॥
जिमिब्यापक अकाश सबवस्तुसोंप्रथकरहत सबकाला ।
तिमि भव सम्भव विभवविषय सों रहि निर्लिप्त भुवाला ॥
तत्वज्ञान शास्त्रन चर्चामधि ऋषि वशिष्ठ के संगा ।
करहिं व्यतीत सदाय समय कहँ नृपवर सहित उमंगा ॥
करहि सतत सन्मान गुणिन कर दैं तिन वांछित दाना ।
पर तिन केर योग साधनकृति रह नित कर्म प्रधाना ॥
मनुज देह धारण कर जोइ फल करि करतल सोई ।
बहुरि जौनविध क्षुद्र ज्योतिलय महा ज्योति मधिहोई ॥
तिमि नश्वर निजकाय काहिं नृप त्यागि योग वलद्वारा ।
लह्यो अनन्य मुक्ति निर्वाणहि राखि सुयश संसारा ॥

१—जल ।

दो०-जब इक्ष्वाकु महीपवर, परम धाम किय लाहु।
तब शशाद के नाम ते, भे विकुक्षि नर नाहु॥

जिनके शासन काल मझारी * अवधप्रजावश सदा सुखारी॥
नृप विकुक्षि के ख्यात कुमारा * भये पुरंजय बली अपारा॥
इन्द्रवाह ककुस्थै जग माहीं * वदतलोक यहिहित तिनकाहीं॥
देवासुर रणमधि यक काला * हारे सुरन सहित सुरपाला॥
तब करि मंत्र विवुध समुदाई * कह्यो पुरंजय [illegible] जाई॥
हैं हमार सेनप अवधेशा * हरहु रिपुन वधि त्रिदश कलेशा॥
सुनि सुर विनय भूप वलवाना * अस्त्र शस्त्र सजि कीन्ह पयाना॥
तेहि रण हरि निदेश अनुसारा * व्रषभ रूप सुर नायक धारा॥
चढ़ि तापै नृप करि संग्रामा * बधि दनुजन पठये यमधामा॥
जो व्रष ककुद महीप सुहाये * नाम ककुस्थ पुराणन गाये॥

दो०-भये पुरञ्जय भूपके, तनय अनेना नाम।
तिनके सुत पृथु पृथ तनुज, विश्वगन्धि वलधाम॥

रोलाछन्द॥

विश्वगन्धि सुत चन्द्र चन्द्र सम कुल मधि भयऊ।
तासु तनय युवनाश्व विश्वमधि जेहियश छयऊ॥
तिनके सुत श्रावस्त वीर गुण ज्ञान निधाना।
जोइ प्रशस्त श्रावेस्ति पुरी कीन्ह्यो निर्म्माना॥
नृप श्रावस्त कुमार भये वृहदश्व भुवाला।
तासु वंशधर कुवलयाश्व जोइ नृप यक काला॥
धुन्धु दनुजपति काहिं समर मधि कीन्ह निपाता।
धुन्धुमार यहि हेतु नाम तिनकर भा ख्याता॥

१-ककुत्स्थ। २-टिप्पणी ४६ देखो।

महावीर तिन धुन्धुमार नृप के कुलदीपा।
नृप दृढ़ाश्व ता तनय भये हर्यश्व महीपा॥
तिनके तनय निकुम्भ तासु वहुलाश्व भूपवर।
ता सुत भये कृशाश्व वीरवर धर्म धुरन्धर॥
नृप कृशाश्व के सुवन सेनजित वंश प्रकाशी।
तासु तनय युवनाश्व जोइ भूपति तपराशी॥
राजसिंहासन राजि वहुरि तिन सहित उछाहू।
कन्दक नृपकी सुमुखि सुता सन कीन्ह विवाहू॥

दो०—पर विवाह करि भूपवर, रहे इमि तप महँ लीन।
जाते एकहु दिवसहू, तियमुख दरश न कीन॥
तबयकदिननृपभामिनी, निज पितु के ढिग जाय।
पतिकर सब वृत्तांत कह, लाज त्याजि शिरनाय॥

यहसुनिनृपहिकोप अति ब्यापा * जामातहि दीन्ह्यो यह शापा॥
करि परिणयसो कुटिल मलीना * गृह धर्मीन रीति तजिदीना॥
भा तप निरत सृष्टिविधि टारी * यहिहित स्वयं गर्भ सोइधारी॥
अति कठोर तप करि वहुकाला * आयभुवन युवनाश्व भुवाला॥
द्विजगणप्रति इमि वचन उचारा * रक्षहु कुल क्षय होत हमारा॥
सदय होय अस यतन कराहू * जाते होय तनय मोंहि लाहू॥
कह्यो द्विजन हे नृपति प्रवीना * तिय सहवास त्याग तुमकीना॥
किमि सम्भव संतान तुम्हारे * बहुरि चिन्ति इमिवचनउचारे॥
ऐन्द्रयाग कीजिय सविधाना * ता प्रभाव लहिहौ संताना॥
तब युवनाश्व सहित अनुरागा * बोलिऋषिनअरँभ किययागा॥

१—वर्हणाश्व (पाठभेद)। २—अकृत्वातु सुतोत्पत्तिं वैरागी यस्त्य जेत प्रियां। स्र वेत्तपस्तत्पुरायंश्च चालन्याञ्चयथा जलम्॥ अर्थात् सन्तानोत्पन्न न करके पत्नीपरित्याग पूर्वक जो मनुष्य वैराग्य आश्रम करता है उसका समस्त धर्म कर्म (ब्रह्म वै. पु. प्र. ख. ४६ अ. ५६.) चलनी में जल भरने के न्याय विफल होता है।

एक दिवस निशिकाल मझारी * है अतितृषितअवधअधिकारी ॥
खोजेहु सलिल कतहुँ नहिपाये * तबहिं याग मण्डप महँ आये ॥
तह पुंसवन बारि रह जोई * भ्रमते गये पान करि होई ॥
भये प्रात ऋषिगण तप धारी * बोले भयहु काह सो बारी ॥

दो०-तब सुधिकरि भूपति कह्यो, सुनिय विप्र समुदाय ।
भ्रमते हम जलपान किय, तृषा सोंहिं अकुलाय ॥
कहद्विजगणअभिशापजोइ, दियतवश्वशुरसुजान ।
सो न टरी तव उदर ते, होइ अवसि संतान ॥

अद्भुत विधिगति जाय न जाना * नृपहि गर्भ लक्षण प्रकटाना ॥
गये मास दश अतिद्युति धारी * भा यकसुत नृप कुक्षिविदारी ॥
तेहिशिशुकरविधि अतिअभिरामा * धरयो मानधाता नृपनामा ॥
लहि किशोर वय नृप मान्धाता * राजि राज आसन मुददाता ॥
निज भुज बलते बली अपारा * सप्तद्वीपक्षितिकियअधिकारा ॥
निशिचर असुर दस्यु समुदाई * तेहि नृप सोंभय करहिं सदाई ॥
यहि हित इन्द्र भूप कर नामा * धरत भये त्रसदस्यु ललामा ॥
नृपशशविन्दुसुता गजगामिनि * इन्दुमतीनामिनिवर भामिनि ॥

दो०-तासु गर्भते भूपके, भये तीन संतान ।
अम्बरीष पुरुकुत्सभट, अरुमुचुकुन्द सुजान ॥
अरुविधुवदनीछविसदनि, प्रकटीं कुवँरि पचास ।
ऋषिसौभरि व्याह्योजिन्हें, वर्णत कवि कृतवास ॥

१-यह सर्ग श्री भद्भागवत के नवम स्कन्ध षष्ट अध्याय के अनुसार है केवल यहनिश्चित नहीं होता कि युव नाश्य का स्त्री संसर्ग परि त्याग करना और श्वसुर कृत अभिशाप होना यह कथा कविवर कृत्ति वास जीने किस पुराण से लिया है । का. प्र. सि.

अष्टचत्वारिंश सर्ग ॥ ४८ ॥

महर्षि सौभरि चरित्र ॥

सो०—यमुना सलिल मझार, ऋषि सौभरि निवसतरहे ।
उपज्यो मनस विकार, निरखि मीन क्रीड़ातहां ॥
तब ऋषिवर ततकाल, जाय मानधाता निकट ।
बोले सुनिय भुवाल, अर्पहुमोहिंयकनिजसुता ॥
सुनि मुनिवचनजोरियुग हाथा * कह्योमहीप सुनियमुनिनाथा ॥
तुमहिं स्वयम्बर सभा मझारी * वरण करै मम जोइ कुमारी ॥
ताहि विवाहि देव तुम काहीं * सुनिमुनिकियविचारमनमाहीं ॥
मोहि तापस द्विज वृद्ध निहारी * वरिहै कबहुँ न कोइ कुमारी ॥
तब निज तपबल ते मुनि पावन * कियधारण अस रूपसुहावन ॥
जासु मनोहर रूप निहारी * मोहित होहिं नाग सुर नारी ॥
बहुरि भूप अनुचर मुनि काहीं * गे लिवाय अंतः पुरि माहीं ॥
लखि मुनिरूप मार मदहारी * नृपकी पञ्चाशतहु कुमारी ॥
ह्वै मोहित सबहिन तत्काला * पहिराये मुनि कहँ वरमाला ॥
तब सब सुमुखि सुता नर नाहू * अर्पहु मुनिराजहि सउछाहू ॥
दो०—जाय स्वथल मधि तियनयुत, सौभरितपोनिधान ।
तपबल ते प्रति नारिहित, किय बहु गृह निर्मान ॥
दास दासि धनमणि वसन, सों शोभित सब धाम ।
सजलज सरशोभितरुचिर, उपवनअतिअभिराम ॥
सो०—अमरराज अनुहार, लखि ऋषिवरसौभरि विभव ।
विस्मित भइं अपार, जितीं मानधातासुता ॥
सुर वांछित सुख भोग विलासा * करतयदपि सौभरि सहुलासा ॥
तदपि न तृप्त होहिं ऋषिराई * तिन उर नवरुचि प्रकट सदाई ॥

भे मुनके अतिशय गुणवाना * यकशत पञ्चाशत संताना ॥
ऋषि उरशिशुन वढ़न के संगा * वढ़त नेह इमि उठत तरंगा ॥
कब असदिन विधिमोहिदिखाई * चलिहैं पदन सुवन गण धाई ॥
कब कोमल तनु प्राण पियारे * ह्वै हैं तरुण सकल मम वारे ॥
सो अति सुखद कौन दिनहोई * भरी भवन सुत वधुन ते जोई ॥
कबहुँ होइ अस भाग्य हमारी * लखबपौत्रशशिमुखसुखकारी ॥

दो०—मुनि मनोर्थ यक एक करि, पूर होन जबलाग ।
तब तेहि साथहि हृदय मधि, अपर लालसा जाग ॥
इमि नित नूतन बढ़त रुचि, लखिसौभरि यकवार ।
ह्वै चिन्तित निज हृदय मधि, लागे करन विचार ॥

सो०—अति अद्भुत दर्शाय, शक्ति मोहनी मोहकी ।
नरन मनोर्थ निकाय, पुरैन कोटिहु वर्ष महँ ॥
मायामय जगमाहिं, यक मनोर्थ पूरण भये ।
द्रुतहि अपर प्रकटाहिं, कवहुँ न मनुजनमनभरत ॥

चलन लगे मम तनय घनेरे * वहुरि विवाह भये तिन केरे ॥
पुनि तिनके देखेहुँ संताना * तबहुँन भइ मम रुचिअवसाना ॥
अब प्रपौत्र मुख देखन काहीं * उदित लालसा मम उर माहीं ॥
यहू आश पूरै मम जोई * तौ निश्चय अरु रुचि उर होई ॥
जिमिअसीम नभउदधि अपारा * तेहि विध नर मनोर्थ संसारा ॥
जिमि जितनहिं घृत पावक पाई * तितनहि होत वृद्ध अधिकाई ॥
तिमि यत पूर नरन रुचि होई * तित नहि वढ़त जान सब कोई ॥
प्रवल मनोर्थ जासु उर माहीं * तेहि परमार्थ लाहु कभु नाहीं ॥
यहि जगमाहिं करनतनुधारण * है यक महा दुःख कर कारण ॥
पुनि फँस कुटुवँ नेह महँ जोई * तेहि भव फंद नाश नहिं होई ॥

दो०—मैं तापस रह यक समय, करत सलिल मधि वास ।
जलचर सँग ते तपोबल, भयो सकल मम नाश ॥
निस्संगत ही यतिन कहँ, मुक्ति केर सदुपाय ।
कारण तासु कुसंग सों, विविध दोष प्रकटाय ॥

अष्टपदी छन्द ॥

यहिहित प्रकृत मुमुक्षु जनहि यह उचित सदाई ।
विषयिन जन कर संग तजै विष वारुणि नाई ॥
करै यतन जेहि माहिं इन्द्रि गणविचलहिं नाहीं ।
सदा लगावहिं मनहि अखिलपति प्रभुपद माहीं ॥
यदि कबहूँ सतसंग करन कर होय प्रयोजन ।
तौ साधुन सँग करैं जोइ विभु भक्त विमल मन ॥
असचिंति हृदयतजिगृहकटुँबजायविपिनसौभरिसुमति ।
बहुकाल उग्रतपकरि लह्योत्यागि अनिततनु परमगति ॥
सो०—तब जिमि जात विलाय शिखा अनल निर्वाण ते ।
तिमि मुनि तिय समुदाय भइँ पति की अनु गामिनी ॥
(श्री मद्भा.९स्क.६अ.व वि.पु.४अ.२अ.)

एकोनपंचाशत सर्ग ॥ ४९ ॥

हरिश्चन्द्रो पाख्यान ॥

दो०—मान्धाता के ज्येष्ठसुत, जोइ पुरु कुत्स सुजान ।
तिनके सुत नय धर्ममय, त्रसदस्यु मतिमान ॥
त्रसदस्यु के वंशधर, ख्यात भूप अनरण्य ।
तासुत नृप हर्य्यश्व जोइ, महावीर जगमन्य ॥

नृप आरुण[1] हर्यश्व के नन्दन ❋ आरुण केसुत नृपति त्रिवन्धन ॥
तासुत सत्यव्रत वलधामा ❋ जोइजगख्याततृशंकुकेनामा ॥
तिन त्रिशुंकु[2] के सुत कुल दीपा ❋ हरिश्चन्द्र यशराशि महीपा ॥
हरिश्चन्द्र ह्वै अवध भुवाला ❋ करहिंसनीति प्रजनप्रतिपाला ॥
सोमदत्तजा सत्या नामिनि ❋ मृगशावकलोचनिवरभामिनि ॥
पाणिग्रहण तासु सउछाहू ❋ कीन्हेउ हरिश्चन्द्र नरनाहू ॥
तासु गर्भ ते लोक ललामा ❋ भयो एक सुत रोहित नामा ॥
हरिश्चन्द्र अधिकार मझारी ❋ सकल प्रजा वस सदासुखारी ॥
सकलराज्य मधि सबऋतुमाहीं ❋ काहुहि आधिव्याधिदुखनाहीं ॥
होय अकाल मृत्यु नहि काऊ ❋ कहुँ न अधर्म कर्म कर नाऊ ॥

दो०—दान सुयश अवधेश कर, व्याप सकल संसार।
यहि अवसर भा यकघटन[3], अमरावती मझार ॥
पञ्च अप्सरा विधु वदनि, नवयौवनि छविसारि।
एक दिवस नर्तत रहीं, तृदशअधीशअगारि ॥

सो०—अंग भंग दिखराय, सुर वरांगना रंगिनी।
रहिं सब सुरन रिझाय, नाचहिं विविध उमंग सों ॥

भरीं सुमुखि ते तरुण तरंगा ❋ नचत नचतकिय तालविभंगा ॥
यहलखि इन्द्र क्रोध अति कीन्हा ❋ यह अभिशाप अप्सरनदीन्हा ॥
रे तुम सब अस मद मतवारी ❋ किय रसभंग शंक मम टारी ॥
यहि अघते सुर पुरी विहाई ❋ रहहु गाधि सुत तपवन जाई ॥
सुनत शाप ते सब अकुलानी ❋ रुदत इन्द्रप्रति कह इमि वानी ॥
यह करि कृपा कहिय वृत्रारी ❋ शाप मुक्ति कव होइ हमारी ॥

१—पा. मे (अरुण) २—त्रिशंकु का विस्तृ तविवरण १५ सर्ग में देखो। ३—यह अप्सरा प्रसङ्ग मार्कण्डेय पुराण में नहीं है। यह विदित नहीं होता कि कविवर ने यह प्रसंग किस पुराण के अवलम्ब से लिखा है। इस सर्ग का समुदय अपरांश मार्कण्डेय पुराण से मिलता है।

कह हरि हरिश्चन्द्र भूपति कर * पै हौ तुम दर्शन जेहि बासर ॥
शाप विगत ह्वै तब पुनराई * करिहौ बास अमर पुर आई ॥
दो०–दुखित अप्सरागण तबहिं, शुचि सुर पुरी विहाय ।
गाधि तनय के तपोवन, मधिनिवासकियजाय ॥
तहँ कौशिक सुभ वाटिका, रहि सुर वन अनुहार ।
ताहि पांचहू अप्सरा, नितप्रति करहिं उजार ॥
विविध भांति के सुमन विभंजै * पादप पत्र शाख धरि गंजै ॥
यकदिन ऋषिवर गाधि कुमारा * गये सोइ वाटिका मझारा ॥
विपिनदशा निजदृगननिहारी * कह कौशिक अमर्षकरिभारी ॥
नित प्रति जोइकुटिल अपकारी * करत नाश वाटिका हमारी ॥
सो अस कर्म करी पुनि आई * तौ तरु लता माहिं बँधिजाई ॥
दूजे दिन वाटिका मझारी * सुम तोरन जब लगीं कुमारी ॥
लता माहिं तिनके कर पादा * भे बन्धित तिनप्रकट विषादा ॥
पुनि मुनिवर कौशिक तहँआई * देखितिन्है उर क्रोध वढ़ाई ॥
बहु कटु वचन कहे रिस साने * पुनि भिटकतआश्रमहिपयाने ॥
सोइ क्षण हरि श्चन्द्र गुणग्रामा * करत अहेर आयतेहि ठामा ॥
दो०–सहसा सुनि अबला रुदन, तिन ढिग गे नृपधाय ।
भूपहि लखि ते मुक्त ह्वै, सुरपुर गईं सिधाय ॥
यह लखि निज धामहिगये, भूपति विस्मित गात ।
उत आये वाटिका मधि, विश्वामित्र प्रभात ॥
सो०–तहँ पांचहू कुमारि, लखिन परी ऋषि कौशिकहि ।
तब निज हृदयमझारि, लगेकहनअतिक्रोधकरि ॥
केहिजन केर सुरति ममकीन्हा * ममवन्दिनिन छोरिजोदीन्हा ॥
जान्यो ध्यान ते पुनिमुनिराजू * यह नृप हरिश्चन्द्र कर काजू ॥
महा क्रोध करि तब ऋषिराई * पहुँचे अवध पुरी मधि जाई ॥

गाधिसुतहि लखिउठि नरनाथा ❋ भूमि लोटि नायो पद माथा ॥
वहुरि मुनिहिं वर आसन दयऊ ❋ करि अर्चन इमि भाषत भयऊ ॥
लहि कृपालु शुचिदरशतुम्हारा ❋ सफल आजु भा जन्म हमारा ॥
जेहि हित प्रयत किह्यौ मम गेहू ❋ सो निदेश निज दासहि देहू ॥
भूप वचन सुनि रोषित गाता ❋ बोलेगर्जि कुशिककुल जाता ॥
जिन दुष्टिनिन वन्दि मैं कीन्हा ❋ केहिहित तिन्हैं मोचितैंदीन्हा ॥
देखि मुनिहि रोषित नर नाथा ❋ सविनयकह्यो जोरिदोउहाथा ॥

दो०—आरत जनकर हरणदुख, राज धर्म ऋषि राय ।
प्रभुहि स्वधर्मी पर कृपा, चाही करन सदाय ॥
धर्म धुरीण महीप जे, ते कबहूं जगमाहिं ।
दान प्रजनरक्षा समर, सों मुख फेरहिं नाहिं ॥

कहमुनि यदि अधर्मभयतोहीं ❋ तौ यहिक्षण बताउ यह मोहीं ॥
देय दान केहि रक्षिय काही ❋ कासों करन समर हठि चाही ॥
कहनृपजोइद्विज शास्त्रनिधाना ❋ अथवा दीनउचित तेहिदाना ॥
रक्षा उचित भयातुर केरी ❋ समर उचित प्रतिद्वन्दिहिघेरी ॥
यहसुनि गाधितनय इमि कहेऊ ❋ तोहिवड़ दानपुण्य मदअहेऊ ॥
देखहुँ दान शीलता तोरी ❋ कछु अभिलाष पूरकरु मोरी ॥
कहनृप सफल जन्म मम होई ❋ हम सन दान लेहु मुनि जोई ॥
मागहु जोइ रुचि होय मुनीशा ❋ करब न आनि अर्पतहु शीशा ॥
कह मुनि प्रथम सत्य करि लेहू ❋ तेहि पश्चात दान मोहि देहू ॥
कह्यो भूप सतकरि मै कहहूं ❋ लंघहुवचन तौ सुगतिनलहहूं ॥

दो०—सत्य वद्ध यहिविध भये, हरिश्चन्द्र महिपाल ।
जिमिअजान मृगधायकै, फँसत व्याधके जाल ॥
भूप शपथ सुनि विहँसि उर, कह मुनि हे नरनाहु ।
राज्यदान करिमोहिं तुम, करहुअमितयशलाहु ॥

सो०-यह सुनि नृपति सुजान, लै मृतिका त्रय भरीभर।
कोन्ह राज्य सब दान, स्वस्ति वचन मुनि उच्चरेहु ॥
कह्यो बहोरि मुनीश, दान योग्य दक्षिणामोहिं।
देन चही अवनीश, सोउ आनिमोहिं देहुद्रत ॥

रामगीती छन्द ॥

सुनि मुनि वचन इमि कह्यो भूपति जोरिकै दोउहाथ।
मैं सप्तकोटि सुवर्ण मुद्रा देत हौं मुनि नाथ ॥
अस कहि नरेश निदेश दिय भण्डारि काहिं बुलाय।
मुनि वरहि मुद्रा करहु अर्पण कोष ते द्रुत लाय ॥
सुनि भूप आयसु व्यंगयुत इमि कह्यो गाधि कुमार।
भण्डारि पै अब काह है नर नाथ तव अधिकार ॥
तुम अबहिं राज्य समस्त दीन्ह्यो दान करि हमकाहिं।
केहि केर धन यह लाय दै है शोचहू उर माहिं ॥
यहसुनि चकित ह्वै कह महीपति खींचि शीतल श्वास।
निज पाणि सो हम कीन्ह आपन आजु सर्वश नाश ॥
पुनि कह्यो कौशिक दानगर्वी रह न तो सम कोय।
अब वेगि मम मेदिनी तजि चलजाहु जितरुचि होय ॥
यहसुनि सचिव गण कह्यो सविनय जोरिकै दोउहाथ।
यक ग्राम करहु प्रदान भूपहि कृपाकरि मुनि नाथ ॥
मुनिराज कह सूच्यग्रसम क्षिति देब नहिं यहि काहिं।
सचिवन कह्यो तब नृपति निवसैं जाय केहि थलमाहिं ॥

दो०-कह मुनिमहि ते है प्रथक, वाराणसी सदाय।
नारि पुत्र सह नृप तहाँ, रहै आशुही जाय ॥
यह सुनि पुत्र कलत्र युत, हरिश्चन्द्र मतिमान।
पदव्रज वाराणसी दिशि, कीन्ह्यों तुरत पयान ॥

शचि समान सुख भोगिनि जोई * दीख न जाहि सुरासुर कोई ॥
पदब्रज तेहि मग चलत निहारी * भे अतिविकलसकलनरनारी ॥
रुदत प्रजागण ह्वै नत शीशा * कह्यो सुनियप्रभु अवधअधीशा
हम सब काहिं त्याजि केहि हेतू * किह्यो मगनकित कृपा निकेतू ॥
प्रजा नेहि ह्वै हम सब काहीं * करनअनाथ उचितप्रभु नाहीं ॥
विनय हमारि मानि नरनाहू * यक क्षणमात्र ठहरि प्रभुजाहू ॥
तव वदनार विन्द मकरन्दा * लेहिंपानकरि नयन मलिन्दा ॥
हा जेहि गमनत नृप समुदाई * चलत अगारि पछारि सदाई ॥
सो तिय सुत सहदीन कि नाई * विनु वाहन पदब्रज रहे जाई ॥
हे प्रभु फिरहु तजिय जनि नेहू * नतुहम सबन काहिं सग लेहू ॥

दो०-भवन भामिनी विभव सुत, करब अवहिं परिहार ।
रहब तुम्हारे साथ नित, हम छाया अनुहार ॥
जहँतुम निबसहु सोइनगर, तहँ सुख स्वर्ग समान ।
तजत जोइ पुरिसो हमहिं, लागत घोर मसान ॥

सो०-विलपत प्रजन निहारि, ह्वै अति शोकित नृपतिवर ।
परत न चरण अगारि, तब कौशिक कहकुपितह्वै ॥

रे नृप अति लोलुप तैंआहई * राजदान करि फेरन चहई ॥
परुष वचन सुनि नृप गुणखानी * कम्पित तनुउरमानि गलानी ॥
धरि महरानि पाणि पुनराई * कीन्हगमन निजनगरविहाई ॥
नृपरानीकृशाङ्ग सुकुमारी * चलि कछुदूर श्रांत भइभारी ॥
सुन्दर अंग भयो द्युति हीना *मुखजिमिकुमुदिनिदिवसमलीना
भइ गति रोध विकट दुख पागीं * ठिठुकिस्वामिमुखनिरखनलागीं
यहलखि कौशिक कोपिअपारा * कीन्ह रानि पै दण्ड प्रहारा ॥
परकछु रोष कीन्ह नृप नाहीं * केवल दुखित भये मनमाहीं ॥
तव मुनि प्रति इमि कह अवनीशा * लिये जात मैं इनहिं मुनीशा ॥

असकहिविवशतियहिमहिपाला * करि सचेत गमने ततकाला ॥

दो०–तब नृपसन कौशिक कह्यो, कहँ दक्षिणा हमारि ।
प्रथम स्वर्ण दै जाहु मुनि, जितरुचिहोयतुम्हारि ॥
यहसुनिअनुनय सहितनृप, कह्यो जोरि दोउपानि ।
सप्त दिवस महँ स्वर्ण हम, देव कतहुँ ते आनि ॥

सो०–अस कहि सत्य निकेत, नरनायक नग दिवसमह ।
रानी तनय समेत, पहुँचे शुचि शिवपुरीमहँ ॥

पर प्रवेश पुर किय जेहि काला * गाधिसुतहि तहँ लखेहु भुवाला ॥
मुनिहि हेरि भूपति भय पागे * गदगदकण्ठ कहन इमिलागे ॥
अब तिय तनय और मम प्राना * अहै शेष प्रभु तपो निधाना ॥
सो इन माहि जासु रुचि होई * लेहु कृपाकरि मुनिवर सोई ॥
अथवा यदि कोइ किये उपाई * होहुँ उऋण सो कहहु गुसाँई ॥
मैं प्रभु आयसु पालन माहीं * ह्वै हौं विमुख कोइ विधनाहीं ॥
कहमुनिअवधि वदतजोइभयऊ * सो नृप आजु पूर्ण ह्वै गयऊ ॥
चाहत यदि तैं कुशल विधाना * तौ आशुहि करु स्वर्ण प्रदाना ॥
यह सुनि कछुक सोचि नृपकहेऊ * अवहीं शेष अर्द्धदिन अहेऊ ॥
सन्ध्यालगि करि कोइ उपाई * देब सुवर्ण तुमहिं मुनिराई ॥

दो०–भूप वचन सुनि गाधिसुत, पुनरपि कीन्ह पयान ।
तब महीप निज हृदय महँ, चिन्तित भये महान ॥
लखिरानी चिन्तितनृपहि, कह्यो जोरि दोउ हाथ ।
अबनिज सतपालन यतन, करहुचिन्त तजिनाथ ॥

सो०–अहैं समान मसान, तजन योग्य सत विमुख नर ।
जे मतिमान सुजान, ते न तजहिं सत तजहिंतनु ॥

सत पालन सम धर्म न आना * भवपयोधि सत सेतु समाना ॥
संतत सत्यवान नर काहीं * कबहुँ नरेश लेश भय नाहीं ॥

परखिय स्वर्ण अनल महँ जैसे * आपदकाल माहिं सत तैसे ॥
यहि हित सत पालहु प्रभु आशू * कहति अहौं उपाय मैं तासू ॥
अब हमसों प्रभु सत्य निधाना * भयहु वंश रक्षक संताना ॥
अस कहि रुदन लगीं महरानी * मुखते अपर फुरघोनहिंवानी ॥
सोलखि नृप अस वचन उचारा * अहैनिकट प्रियतनयतुम्हारा ॥
पुनि केहि हित तुम प्राणपियारी * रुदनलगिउ कछुवचन उचारी ॥
कुसमय जानि शोक विसराई * कहन चहिउ सो कहहु बुझाई ॥
यहसुनि कठिन हृदय करि रानी * नयन नीरभरि कहइमिवानी ॥

दो०--तनय हेतुही तिय ग्रहण, सुपुरुष करत सदाय ।
सो मनोर्थ पूरण भयो, प्रभुकर दैव कृपाय ॥
अब मम प्रभुहि विशेष कछु, रह्योप्रयोजन नाहिं ।
यहिहित करि विक्रयहमहिं, देहुस्वर्ण ऋषिकाहिं ॥

हरि गीतिका छन्द ॥

यह वचन जनु कोइ नृप हृदय मधि वेधिगर शायक दये ।
ह्वै अति विवश यशराशि भूपति पतित वसुमति पै भये ॥
पुनि चेति क्षिति पति रानि प्रति विलपति वचन उच्चारेऊ ।
हे प्रिये पवि सम वचन यह मम कठिन हृदय विदारेऊ ॥
ढूढ़ं न मिलिहै यदपि मोसम अघी त्रिभुवन मधि कहूं ।
परविधि प्रदत्त सनेह कर हौं वशीभूत प्रिये महूं ॥
तव प्रेम पूरन छवि सदन शशि वदन विनु देखे प्रिये ।
केहि भांति रहिहैं प्राण मम यह शोचहू भामिनि हिये ॥
किमि पुर्व प्रेम सनेह भूरि विसूरि सुन्दरि शोभने ।
तव मुख सुधाकर सों निकर अस वचन खरतरगर सने ॥

जेहि कृत्य की चिन्ता करत मोहि मृत्युवत लागत अहै।
सो काज करि मम प्राण करत पयान विलँब न लाइहै॥
हा दैव सदैव देव सुख भोगेहु जोई राजेश्वरी।
तेहि रूपसिहि अघराशि यह पुर वासि की दासी करी॥
यहि भांति विलपत अवधपति अति शोकते अकुलायके।
पुनि होय मूर्छित गिरे छिति पै देह सुधि बिसरायके॥

रामगीती छन्द॥

यहलखि विलखि विलपन लगीं महरानि हिय अकुलाय।
रे दैव दैव निर्दय हृदय तव करतूति जानि न जाय॥
जेहि मृदुल रांकव सेज पै रहि नींद आवत नाहिं।
यहि मन्द भागिनि पापते सो लोटहीं क्षिति माहिं॥
हा कोटि कोटि सुधेनु हय गज स्वर्ण किय जोइ दान।
रजधूसरित सोइ परे महिपर दीन हीन समान॥
हे दैव मम प्राणेश ऐसो दोष तव का कीन्ह।
जेहि हेतु शुभ कृति करत हू दारुण विपति तैं दीन्ह॥
यहि भांति भूपति भामिनी विलपति महा विलखाय।
पुनि पतित भइँ पति पदन मह निज देह सुधि विसराय॥
लखि मातु पितु कहँ पतित नृप सुत अबुझशिशुसुकुमार।
धरि जननि अंचल कहन लाग्यो रुदत बारहिं बार॥
हे मातु अतिशय क्षुधा सों बहिरात मेरो प्रान।
द्रुत उठहु कछु भोजन जननि हमकाहिं करहुँ प्रदान॥
पुनि पितु करांगुलि धारि कर्षत कह्यो तोतरि बैन।
दै अशन पितु मोंहिं क्रोड़ महँले करहु पुनरपि सैन॥
तेहि समय कौशिक आयतिय सह नृपहि विवशनिहारि।
सिंचन कियो दम्पती ऊपर शुचि कमंडलु बारि॥

शीतल सलिल के परस सों महिपाल चेति वहोरि ।
ऋषि सामुहे ठाढ़े भये ह्वै अधोमुख कर जोरि ॥
लखि स्वस्थ भूपहि कह्यो मुनिवर दक्षिणा कहँ मोर ।
भल जानि अब मोहिं परयो तैं शठ हसि प्रवंचक घोर ॥
तोसन सिधाई सन कहे इमि काज नहिं सिधि होय ।
बालुका राशि पै सेतु बन्धन करन चह जिमि कोय ॥
यदि आजु सन्ध्या लगि न दै हैं दक्षिणा तैं मोहिं ।
तो अवशि शाप हुताश मधि मैं भस्म करिहौं तोहिं ॥
असकहि बहुरि मुनि किय गमन तब भूप अतिभय पाय ।
लागे करन बहुचिंत पर न लखात कोइ उपाय ॥

दो०—तब पतिकर धरि रानि इमि, कहन लगीं पुनराय ।
कह्यों जोइ तेहि त्याजि प्रभु, अहै न अपर उपाय ॥
शापानल महँ तनु तजन, उचितपुरुषकहँनाहिं ।
यहिहित शापते अहै भल, अबबेंचन हमकाहिं ॥

कह्यो रानि जब इमि बहु बारा ❋ तब महीप अस बचन उचारा ॥
सुनहु प्राण प्रिय अब हम माहीं ❋ लज्जा घृणा लेशरह नाहीं ॥
निर्दय निलज मनुजहू होई ❋ प्राण रहतकरि सकत न जोई ॥
घृणितजगत निन्दित सोइकाजू ❋ करबकठिनउर करितजिलाजू ॥
पर प्यारी यदि रसा हमारी ❋ सकितिय बेंचन वचन उचारी ॥
तौ तुम काहिं बेंचि महरानी ❋ ऋण परिशोधि कहाउब दानी ॥
असकहि तिय सरोज करधारी ❋ जाय भूपवर नगर मझारी ॥
तजत दृगन अविरल जलधारा ❋ यहिविधवचन पुकारिउचारा ॥
सुनहु समस्त नगर के लोगू ❋ मम परिचय नहिं पूँछन योगू ॥
अहौं एक मैं दया विहीना ❋ नराकार पशु निपट मलीना ॥

दो०—जानहु मोहिं राक्षसहु ते, अधमाधम अघ धाम ।
नतुबंचनहितप्रियतियहि, कस लावत यहि ठाम ॥
मम प्राणहु ते प्रीय यहि, सतीकाहिं जोइ कोय ।
लेन चहै दासी निमित, करै आय क्रय सोय ॥
सो०—नृपति बैन सुनि पाय, धनशालीयक वृद्धद्विज ।
कह भूपति सन आय, मोंहिप्रयोजनदासिकर ॥
कोमलांगि अति नारि हमारी * करि न सकतगृहकाज सँभारी ॥
तवतिय केर वयस तरुणाई * गृहकारज महँनिपुण लखाई ॥
कहहु मूल्य का माँगत अहेऊ * सुनि दृढ़उर करि भूपति कहेऊ ॥
मै इनकेर मूल्य द्विजराई * कहत सत्य नहिं सकत बताई ॥
पर श्रुति कोटि स्वर्ण यदि देहू * तौ यह दासि बिप्र वर लेहू ॥
यह सुनि नृपहि सोबिप्र प्रवीना * चारिकोटि सुवरण गनिदीना ॥
रानि पाणि धरि जबहि वहोरी * गमनेहुद्विजनिजभवनकिओरी
सोलखिअबुझअवधपतिनन्दन * धारि मातु पट लागेहु क्रन्दन ॥
सुत सनेह वशतब नृप रानी * रुदत बिप्र प्रति कहइमि बानी ॥
यहमम विनयसुनियद्विज राया * ठहरिजाहुक्षणभरिकरिदाया ॥
दो०—देखि लेहुँचित भरि सुघर, सुवन वदन सुखदाय ।
सुतमुख लखि पैहै न अब, यह पापिनि पुनराय ॥
सो०—अस कहि होय अधीर, धायअंक धरितनय कहँ ।
कहेउ तजत दृगनीर, रे अंचलनिधिअधिनिके ॥

रोला छन्द ॥

भइ दासि तुव मातु अहसि तैं राजकुमारा ।
अब तोहिं परसन योग्य रहियुँ नहिं कोइ प्रकारा ॥
परतुव परस सदाय मोहिं अतिशय सुख दाई ।
अस कहि र फुफकि तनय कह हृदय लगाई ॥

शिशुहि दोउ करसोहिं मातु गल जकरि बनाई।
लग्यो रुदन जेहि हेरि धीर धीरज कर जाई॥
यह लखि द्विज करिक्रोध शिशुहि यकपाद प्रहारा।
पर छोड़यो नहि जननि वसन सो राजकुमारा॥
मातु मातु कहि रुदत फुकरि शिशु चित भयमानी।
तब सांज्जलि कहरानि विप्रसन सविनय बानी॥
अब हौ तुम मम नाथ विनय यह तव पद माहीं।
जो निदेश तव होय चलहुँ लै तनुजहु काहीं॥
यहि ममछौन विछोह माहिं हमसो द्विजराजू।
भली भाँति बनपरी नाहिं तुम्हरो कोइ काजू॥
विना मूल्य यहिहेतु चलिय लै यहि शिशु काहीं।
धे किहे क्रयनुवत्स जात तेहि संगहि माहीं॥

दो०—रानि वाणि सुनि बिप्र सो, बोल्यो कोपि महान।
यहि तोरे शिशु काहिं हम, करबन अशनप्रदान॥
यह सुनि करपुटरानि कह, दै हौ जोइ हम काहिं।
करब उदर पोषण सतत, सहितसुवनतेहिमाहिं॥

सो०—कह द्विज देब न तोहिं, अन्न सेर भरते अधिक।
होत विलँब अति मोहिं, चलुशिशुलै तजिचलुचहै॥

यहसुनि रानि क्रोड़शिशु धारी ❋ चली बौरि इव बिप्र पछारी॥
सो लखि नृप है महा अधीरा ❋ कहन लगे दृग मोचत नीरा॥
हाविधिरविशशितजिजेहिकाहीं ❋ दीख न अपर कबहुँपरछाहीं॥
राजभोग नित भोगत जोई ❋ भई दासिपुर प्रजा कि सोई॥
हासुत रोहित प्राण अधारा ❋ भानुवंश महँ जन्म तुम्हारा॥
सो तोहिं रंक तनय सम आजू ❋ बेंचेसि तोर पिता तजि लाजू॥

हा प्रिय पुत्र हाय प्रिय नारी * लखियहिविध दुर्दशातुम्हारी ॥
तबहुँ मोर यह पापी प्राना * देहत्याजि नहिं कीन्हपयाना ॥
परतनु त्याजि प्राण कस जाहीं * मृत्युहु करत घृणा हमकाहीं ॥
इमि विलाप करि रहे भुवाला * आये गाधितनय तेहि काला ॥

दो०-देखिमुनिहिद्विजदत्तधन, क्रिय नृप तिनहि प्रदान ।
ताहिअल्प अवलोकिकह, कौशिक कोपि महान ॥
रे विमूढ़ जानेसि कहा, तुच्छ बिप्र हम काहिं ।
सातकोटि ते सात रति, लेब न्यून हम नाहिं ॥

सो०-विदित काह तोहिं नाहिं, हौं अमित्र मैं विश्वकर ।
कुशल तोरि यहि माहिं, शेषकोटि त्रय दे अबहिं ॥

कह्यो नरेश जोरि दोउ हाथा * कछुक्षणक्षमाकरियमुनिनाथा ॥
सोउ शेष धन अवसि मुनीशा * अर्पण करब नाय पदशीशा ॥
सुनि कौशिक इमि भाषतभयऊ * चौथभाग दिनअब रहिगयऊ ॥
सूर्य्य अस्तलगि जो नहिं दै है * तौ निज शठता कर फलपै है ॥
असकहि मुनि पुनि गये सिधाई * तब नृप काशि हाट महँ जाई ॥
कह पुकारि हे पुरवासी जन * जाहिंदास कर होय प्रयोजन ॥
तीनिकोटि सुवरण करिदाना * करहि हमहिंक्रय सोधनवाना ॥
श्वपच वेश धरि घोर कराला * प्रकटे धर्मराज तेहिकाला ॥

दो०-विकृताकार निहारि तेहि, हृदय होत भयमान ।
मनहुँ विकट वीभत्स रस, देह धारि प्रकटान ॥

पद्धटिका छन्द ॥

घन कृष्ण बर्ण सब रुक्ष काय । तनु लोमावलि कटंक के न्याय ॥
मुखविकृत अधर रँगनीलपीन । रदलम्ब विरल मलभरे क्षीन ॥
युग नयन गोल जनु यान चक्र । उत्थित घन कचयुत भू अवक्र ॥

शिर वदन केश घन ताम्रवर्ण । तरुशाल पर्ण इव उभय कर्ण ॥
भुज खर्व अँगुरिन व्रण महान । लघुवक्ष उदर अति लम्बमान ॥
करलौह बलयगल अस्थिमाल । धृतपाणि सुरा पूरित कपाल ॥
दुर्गन्ध भूरि वहिरात गात । चहुँओरमक्षिका भिनभिनात ॥
खर दशनश्वान बहुलिहे संग । तेलेहत तेहि तनुसह उमंग ॥
मग चलत झूमत मद मत्तवार । बोलत मुखते कढ़ थुत्थकार ॥
कछुगुनगुनात निजमुखवनाय । इमिकहनलाग नृपनिकटआय ॥
हम दास हेतु क्रय करब तोहिं । निजमूल्य बतावहु आशुमोहिं ॥
लखि तासु घृणित वीभत्सरूप । तुमअहहु कौन इमि कह्योभूप ॥

दो०—कह्यो कंक मोहि जानही, रंक राव संसार ।
हौं शासक मैं अधम कर, कालू नाम हमार ॥
आपु अंत आदेश जेहि, तिनन्हसँहारनकाज ।
मृतक वसन धन लेत मैं, है मसान मम राज ॥

सो०—कह नृप कोइ प्रकार, होब अधम कर दास नहिं ।
करैं मोहि बरु छार, शाप अनल महँ गाधिसुत ॥

आय गाधिनन्दन तेहि काला * कह्यो भूपसन कोपि कराला ॥
देत प्रचुर धन यह तुम काहीं * विक्रयनिजहि करतकसनाहीं ॥
जोरि पाणि नर नायक कहेऊ * परसअयोग्य अधमयहअहेऊ ॥
जनमि भानु कुलमधि मुनिराई * केहिविध करबश्वपचसेवकाई ॥
कह मुनि होय अधम कर दासू * देहु हमार शेष धन आसू ॥
यह सुनि नृप अकुलाय अपारा * मुनि पदगहिइमिवचनउचारा ॥
मोहिनिजदास जानिमुनिराया * करिय अधम दासकरिदाया ॥
कह मुनि यदि तैं दास हमारा * तौ तोपै मम है अधिकारा ॥

दो०—याहि अधम के हाथ महँ, मैं विक्रय किय तोहिं ।
पुनि कह श्वपचतेआशुदे, स्वर्ण कोटि त्रयमोहिं ॥

सो०–यह सुनि हर्षित गात, सो सुवर्ण दै मुनिवरहि।
करत दण्ड आघात, नृपहि भवन कहँ लै चल्यो॥

रामगाती छन्द॥

निज भवन महँ लै जाय भूपहि कह अधम इमि बैन।
रखवारि मम शूकरन की तैं जाय करु दिन रैन॥
रहुरे मसान मझार तहँ शव लावही जोइ कोय।
तिन सों उगाह्यो शव वसन अरु तहाँ कर कर जोय॥
तेहि माहिं पँचये भाग ते मिलि है तिहरवाँ तोहिं।
कीन्हेसि भलीविध काज जासों होय नहिं क्षति मोहिं॥
कह भूप यह सब करब हम पर यक विनय तव पाहिं।
निज अन्न भोजन करन कबहूं कह्यो जनि हम काहिं॥
अस कहि महीप वराह दल ढिग जाय कह इमि बानि।
जिन पांणि सों हम दान दिय बिप्रन सदा सन्मानि॥
अरु धर्म कर्म अनेक किय तिन करन कोइ प्रकार।
है उचित नाहि पुरीष मूत्रहि परिष्करन तुम्हार॥
यहि हित कृपाकरि मूत्रमल त्यागेहु विपिन महँ जाय।
सुनि कीन्ह यह स्वीकार शूकर निकर उर हर्षाय॥
तब भूप निज प्रभु अधमराज के अनुमती अनुसार।
द्रुत जाय कीन्ह निवास विकट मसान भूमि मझार॥

दो०–तेहि मसान की विहड़ता, वर्णन किये न जाय।
सूख सरे अधजरे शव, परे चारिहूं धाय॥

भुजङ्गप्रयात छन्द॥

वसामेद मज्जा परो चारि ओरा। चिताछार दुर्गन्धछायो प्रघोरा॥
चतुर्दिक्टीले घने वृक्ष लागे। रहैंकाक शाखान पै शंकत्यागे॥
शिवावक्र लंगूर गोमापु वृन्दा। करालध्वनीसों करैंलम्फिद्धन्दा॥

गहैं मांस खंडै यकै श्वान जाई। धरैंधाय सो अन्य भागै छिनाई ॥
करैं गृद्ध युद्धै कोइ ओर माहीं। कहूंकाक अंत्रावली लै उड़ाहीं ॥
कहूं भूतिनी प्रेतनी मुक्त केशा। उलङ्गी महाभीषणा कारवेशा ॥
नृमुण्डै गहैं पाणि अट्टट्ट हासैं। करैंनृत्य वीभत्सलीला प्रकासैं ॥
कहूंडाकिनीदार निष्प्राणकाया। पचामास भक्षैंकरैं भूरिमाया ॥
धधक्कैं चिता पाव कै ठाम ठामैं। लसैंकृष्णकायाविनिर्जीवतामैं ॥
जरैं दन्त काढ़ेमानो शीख देहीं। लखोदेह की हैदशा शेषयेहीं ॥

रोला छन्द ॥

इमि मृतकन के वन्धु करहिं क्रन्दन चहुँ धाई।
हाय मित्र हा पुत्र हाय मम प्रियतम भाई ॥
कतहँ हाय पितु मातु कतहुँ हा पौत्र पियारे।
कतहु हाय पति मोहिं त्याजि तुम कहां सिधारे ॥
कतहुँहाय ममभगिनि कतहुँ तियहितकोइ व्याकुल।
कतहुँ हाय कहँगयो त्यागि हमकहँ प्रिय मातुल ॥
वायु वेग सों चिता ज्वाल धधकत अति घोरा।
फूटि विथर शबमांस मेद मज्जा चहुँ ओरा ॥
अनल चटचटा शब्द मृतक वन्धुन कर रोदन।
धावत ध्वनि श्वापदन खगन करछदरव सनसन ॥
अधमन ध्वनि किल किला भूत प्रेतन हुंकारा।
सब मिलि प्रलय समान शब्द तहँ छाव अपारा ॥
राशिराशि पशु अस्थि परयो तहँ बहु थल माहीं।
भूरि धूर शव छार धूह इत उत दरसाहीं ॥
क्षिप्त चतुर्दिशि छिन्न माल कुश कलस प्रदीपा।
अस थल विचरहिं हरिश्चन्द्र दिन कर कुल दीपा ॥

सजलद निशिमहँ जस प्रगाढ़ तामस प्रकटाई।
तेहि अवयव उरमाहिं लखहिं नर नाथ सदाई॥
शीत श्वास तजि कहैं हाय विधि तवगति न्यारी।
कहां रह्यों मैं भूप कहां अस दशा हमारी॥
कहां गये मम भृत्य कहां मम सुविपुल राजू।
कहां वाजि गज विभव कहां मम सचिव समाजू॥
हा सव्या प्रिय रानि हाय सुत प्राण अधारा।
यहि कुभागि की दशा आय देखहु यकवारा॥
यहि विध करत विलाप चतुर्दिशि विचरहिं भूपा।
राजचिह्न भे लोप भयो अति कुत्सित रूपा॥
तनु मलीन द्युति हीन क्षीण अति रुक्ष शरीरा।
अँग ते अँग ते दुर्गन्ध भूरि बहिरात गभीरा॥
सूप सरिसनख प्रखर पाणि पदकर वढ़ि गयऊ।
शीश चिबुक मुख कुटिल केशासों व्यापित भयऊ॥
उदर वाहु कर छार धूरि धुसरित सब काला।
कटि परिधन कौपीन पाणि महँ दण्ड कराला॥
यहि विध काल समान रूप ह्वै गयो भूप कर।
हो हा कारहि एक भयो तिनकर नित सहचर॥
शव उत्सर्गिक द्रव्य संचयन आठहु यामू।
यहि विहाय कोइ अपर नाहिं भूपति कर कामू॥
दो०-तनय सहित सव्या इतहि, निवसीं द्विज गृहमाहिं।
देत नित्य प्रति सेर भर, अन्न बिप्र तिन काहिं॥
सोइ अविंजन अन्न महँ, रोहित राजकुमार।
तीन भाग त्रयबार महँ, हिरिफिरिकरहिंअहार॥
सो०-शेष भागही माहिं, रानी दुर्दिन काटहीं।

अतिकृश लखि तिनकाहिं, कहनलग्योयकदिवसद्विज
दिन पै दिन अधिकाय, होय रहिउ कृशकाय तुम ।
यहि हित एक उपाय, कहतअहौं यदिहोयरुचि ॥
अर्चन हित तवसुत नित जाई * देय हमहिं वन ते सुमलाई ॥
तौ कछु अधिक अन्न तुम काहीं * दै हौं मृषा वदत मैं नाहीं ॥
सुनि यहिभाँति बिप्रमुख वानी * शीशनाय सहमति भइरानी ॥
तेहि दिनसो नित भूप कुमारा * जायगाधिसुतविपिनमझारा ॥
बहुविध के प्रसून बहु तोरी * अर्पतआय द्विजहिभरिझोरी ॥
एक दिवस कौशिक मुनिराई * इमि उपवनहि विलोकेहु जाई ॥
सुम विहीन तरु भंजित शाखा * तबअसशाप दीन्हकरिमाखा ॥
जोइ कुटिल मम शंक विसारी * जात नितहि बाटिका उजारी ॥
सो बहोरि यदि यहि थल आई * तोतेहि कालभुजग डसिखाई ॥
सोइ निशिमाहिं होतभिनसारा * सव्या यह दुस्स्वप्न निहारा ॥
दो०-सुम तोरत वाटिका महँ, डस्यो सर्प सुत काहिं ।
विगत प्राण ह्वै मम कुँवर, पर्यो धरातल माहिं ॥
सुमनचयन हितप्रातक्षण, जब रोहित चह जान ।
तबतेहिकर धरिरानिकह, सुनु मम जीवन प्रान ॥
सो०-आजु तपोबन माहिं, सुमन चयन हित जाहु जनि ।
जानिपरतहमकाहिं, होइ अशुभ घटना कोई ॥
मातु वचन सुनि रोहित कहेऊ *निठुरद्विजहिभलजानतअहेऊ ॥
तेहि निदेश पालब यदि नहीं * तौन अन्न देई हम काहीं ॥
तव भागही माहिं पुनराई * करनपरी मोहिं अशन सदाई ॥
सुनिय जननिसोइ सुतबड़भागी * जोइ पितु मातु सेव अनुरागी ॥
निवसहिदुखित मातु पितु जासू * सो कुपुत्र तेहि नरक निवासू ॥
नितविनुअशन तुमहिंलखिमाई * केहि प्रकार हमसर्न रहिजाई ॥

असकहि जननि चरणशिरनाई * जाय तपोवन मधि द्रुत धाई ॥
सुमन सुगन्धित विविध प्रकारा * तोरि झोरि भरि भूप कुमारा ॥
जस श्रीफल तरुवर तर गयऊ * पत्र चयन हित हाथ उठयऊ ॥
तस यक भुजग धाय फुफकारी * डस्यो कुवँर के वक्ष मझारी ॥

दो०—नृपसुत खरगर ज्वाल सों, फेरि पुंज उद्गारि ।
विगत प्राण महि पै गिरयो, छिन्नविटप अनुहारि ॥
इतहि दिवस द्वै प्रहर जब, वीति गयो तेहि काल ।
सन्यासन लाग्यो कहन, द्विजवरकोपिकराल ॥

सो०—सुमन आनयन काहिं, गयो सुवन तव प्रातक्षण ।
अबलगि आयहु नाहिं, मैं अर्चन करिहौं कबहिं ॥

रामगीती छन्द ॥

द्विजराज मुख इमि बचन सुनि सन्या कह्यो शिरनाय ।
प्रभु आशुही तव दास कहँ मैं ढूंढ़ि लावत जाय ॥
अस कहि तपोवन जाय इत उत करत अनुसन्धान ।
देखहु पतित यक तरुतरे निज तनुज कहँ विनु प्रान ॥
लखतहि सुतहि अति वेगते हा हाय शब्द उचारि ।
छेदित कदलि सम विवश निपतित भई भूमि मझारि ॥
पुनि चेति कछुक्षण महँ तनय शव क्रोड़ माहिं उठाय ।
इमि करन लागिं विलाप शिर उर धुनत धीर विहाय ॥
रे जननि जीवन धन सुवन यहि मातृ भक्ति तुम्हारि ।
हनि शोक शेल अभागनिहि केहि लोक गयसि सिधारि ॥
अनशन दशा यासों रह्योभल सहस गुण अधिकाय ।
उठु सुवन लै चलु सुमन नतु ह्वै है कुपित द्विजराय ॥
हे प्राणपति भूपति महामति सत्य पारावार ।

लखिलेहु अब द्रुत आय के निज तनुज मुख यकबार ॥
हे नृप शिरोमणि तव चरण सेविनि अभागिनि आज ।
करि छार तनु दारुण विपति सों छूटिहै महराज ॥
यहि यहि समय ह्वै सदय दै हौ दरस मोहि यकबार ।
तौ काह ह्वैहै विघ्न प्रभु तव विशद धर्म मझार ॥
हे सुवन मम दुख हरण कारण सुन्यो वारण नाहिं ।
अब कस न उठि समझावहू विलपति स्वजननी काहिं ॥

दो०-उतरानी के फिरन महँ, लखि विलम्ब द्विजराय ।
इमि चिन्तत छल करि कहा, दासी गई पराय ॥
सोइ क्षण सव्या तनय शव, लीन्हे क्रोड़ मझार ।
बिलखि बिलखि रोदन करति, आई विप्र अगारि ॥

सो लखि कह्यो बिप्र अस बैना * रोदन ते अब कछु फल हैना ॥
यही जीव की गति संसारा * जन्मत मरत बारही बारा ॥
अब धरि धीर मसानहि जाहू * फिरहु आशु सुत शव करिदाहू ॥
द्विजआयसु लहिलैशव रानी * गमनी दशा न जाय वखानी ॥
रजधुसरितकचमुखद्युतिहीना * परिधन जीरन वसन मलीना ॥
अतिकृश कायसर्व अँग माहीं * शिरा अस्थि यक यक दरसाहीं ॥
करत विलाप तजत दृगवारी * पहुँची विकट मसान माझरी ॥
हरिश्चन्द्र सुनि रोदन तासू * आये कर उगहन तेहि पासू ॥
विकृत रूप वश तेहि क्षणमाहीं * सके चीन्हि यक एकहि नाहीं ॥
राजचिह्न शिशु अंग निहारी * इमि चिन्तित नृप हृदय मझारी ॥

दो०-यह बालक जनमेउ रहै, कोइ नृप भवन मझार ।
यहि विलोकि सुधिहोत मोहिं, रोहित पुत्र हमार ॥
यहि अति क्रूर कृतांत तेहि, जीवित राखेसि होय ।

तौ इतनहि बड़ होइ है, अब ममप्रियसुत सोय ॥
बहुरि रानि सन कहनर नाहू * करदै हमहिं करहुशव दाहू ॥
यदि दै सकति वृत्ति तुम नाहीं * तौ लै जाहु अपर थल माहीं ॥
कह सव्या सविनयइमि वानी * मैं दरिद्र दासी दुख सानी ॥
शपथ समेत वदति सत वैना * मम ढिग यककपर्द कहु हैना ॥
अहै यही यक जीरन सारी * कहहु तो देहुँअर्द्ध मैं फारी ॥
यह सुनि दण्ड बोलि नरनाहू * कहेहु न करनदेब शव दाहू ॥
मोहिं निदेश विनुकरकोउ काहीं * दीन्हेउदहन करन शव नाहीं ॥
सो प्रभु अयसु सकत न टारी * लै शव अशुहि जाहु सिधारी ॥
सुनि रानी रोईं चित कारी * पुनि पुनिपतिकरनाम उचरी ॥
हा पति हरिश्चन्द्र महिपाला * अहहुनाथ कहँतुमयहिकाला ॥

सो०—जासु सुवेषित वेश, होत रह्यो लखि मुदित अति ।
ताखु दशा अवधेश, आय लखहु एकवार अब ॥
हा रोहित सुकुमार, केहि अघसों हतभागिनिहि ।
दारुण शोकमभार, डारि काल कवलित भयो ॥

रोला छन्द ॥

हाय महीपति हरिश्चन्द्र अतुलित गुण धारी ।
शोक सिन्धु महँ पतित नाथ यह दासि तुम्हारी ॥
है दयालु केहि हेतु दया हम पै बिसराई ।
निज दासी कहँनाथ कसन समुझावत आई ॥
सुनि पुनि पुनि निज नाम रानि मुखतेमहिपाला ।
पूरुब सुधि भइ तियहि चीन्हि बोले तत्काला ॥
हरिश्चन्द्र हौं मही लखहु मम ओरि पियारी ।
यहसुनि कह चितकारि रानि निजशीश प्रहारी ॥

अहहु कहां तुम नाथ अतुल बल खल दलनाशी।
तव तिय सन परिहास करत यह अधम दुराशी॥
एक समय मधि हाय रही जो अवध अधीश्वरि।
अब तासों यक कुटिल डोम परिहास रह्यो करि॥
हाय दैव मख हव्य चहत वायस अपहारन।
काल भुजंगिनि शीश मूष चह पाद प्रहारन॥
जातु दुष्ट सति तेज दाव पावक अनुहारी।
तो सम नर पशुकाहिं क्षणक महँ दाहन कारी॥
वदति वचन सामर्ष तजति इमि दृग जल धारा।
तप्त तैल गिर दीप शिखा सों जौन प्रकारा॥
यहलखि ह्वै अतिदुखित नृपतिधरि तियकरपाणी।
निज कर सों तिन अश्रुवारि बोले इमि बाणी॥
सुनु प्रिय प्राणेश्वरी तुमहिं यहि निर्दय काहीं।
भूलि जायबो अहै कोइ विध अचरज नाहीं॥
निजविधु बदन उठाय लखहु ममदिशि यकबारा।
महीं नराधम हरिश्चन्द्र हौं स्वामि तुम्हारा॥
दो०—हे दुख संगिनि प्रियतमा, सति नारिनि आधार।
यही मन्दभागी किहिसि, पाणिग्रहण तुम्हार॥
सुततिय बेचन हार खल, अतिनिर्लज्जअघखानि।
अहौंजनकयहिसुवनकर, सत्य मानु महरानि॥
सो०—असकहि द्रुत नृप धाय, क्रोड़ माहिं लै निज सुतहि।
वार वार अकुलाय, लागे करन बिलाप अति॥

दिकपाल छन्द॥

हा हा अभागि के सुत जीवन अधार प्यारे।
दै शोक जननि जनकहि केहिलोक कहँ सिधारे॥

शोभा सदन बदन शुठि लखि आजु मलिन तोरा ।
अब लगि पयान तनुते कसकिय न प्राण मोरा ॥
हा मोहिं मधुर ध्वनि सों कोतात कहि पुकारी ।
कोकिल कि धाय चढ़िहैं मम अंक कंठ धारी ॥
को जानु रजसों करिहैं धुसरित शरीर मोरा ।
उठु सुत बिलोकु बिलपत पितु ह्वै अधीर तोरा ॥
हे सुत निलज्ज तवपितु सम आन ना लखाई ।
बेचेसि जो तोरि जननिहि यक तुच्छ वस्तु नाई ॥
रे क्रूर कर्म्मि विधि तव हम दोष काह कीन्हा ।
जेहि रोषते हमारो सर्बस नसाय दीन्हा ॥
याहू पै तव हृदय मधि सन्तोष आव नाहीं ।
धरि सर्परूप दंसे मम प्राण पुत्र काहीं ॥
हा बत्स बत्स कहिके मैं काहि क्रोड़ लैहौं ।
काको विलोकि शशि मुख निज शोक मैं गवैहौं ॥
अस कहि सुतहि लगावन जस हृदय माहिं चहेऊ ।
तसगिरे मूर्छि महि पै सुधि देह की न रहेऊ ॥

दो०—अकस्मात ब्यापार यह, लखि इमि चिन्तित रानि ।
काह सुजन रंजन यही, हरिश्चन्द्र गुण खानि ॥
स्वर इनकर उनहीं के सम, अरु तैसहि आकार ।
वदन रदन नासानयन, उनहीं के अनुहारि ॥
हाय नाथ केहि हेतु ते, किय मसान मधिवास ।
असविचारिसुतशोकतजि, गई नृपति के पास ।
राजदण्ड करचिह्न लखि, नृपके भाल मझार ॥
चीह्निपतिहि क्षिति पैगिरीं, करि अति हाहाकार ।

हरिगीतिका छन्द ॥

साकेत पतितिय कछुक क्षण हतचेत रहिं क्षितिपै परी ।
पुनि पाय चेतन दृगन जल मोचत बचन अस उच्चरी ॥
रे रे बिरंचि प्रपंचि तोरे सरिस नहिं बंचक कहीं ।
नतु देव तुल्य भुवाल कहँ चंडाल भृत करतेसि नहीं ॥
सब राजपाट नसाय सुहृद छुड़ाय तिय बिक्रहु किहे ।
रे निठुर निर्दय दैव तबहूं तोष आव न तव हिये ॥
अवशेष माहिं नरेश काहिं चण्डाल दास बनाय कै ।
कीन्हे पतित पातिकी सम यहि घृणित थल महँ लायकै ॥
सुतशोकिनीनिज भामिनीकहँ हेरिप्रभुक्षितिशायिनी ।
केहि हेतु रविकुल केतु धीरज देत नहिं कहि मृदुध्वनी ॥
हा नाथ कहँ तव क्षत्र चापर सुघर ब्यजन सुहावने ।
कहँ राज्य कहँ राजाभरण जेतरणि किरण जलावने ॥
हा दैव जिनके चलत शतशत नृपति भृत्य समानहीं ।
निज वसन सो पथ धूरि झारत करहिं अग्र पयानहीं ॥
हा आजु सोइ ममप्राण जीवन सकल गुणगण आगरे ।
हत ज्ञान दीन समान अशुचि मसान मधि लोटत परे ॥
हे नाथ जो मैं लखत सो है स्वप्न अथवा सत्य है ।
यदि सत्य यह ब्यापार तो नहिं धर्म मधि कछु सत्व है ॥
द्विज देव पूजन तप अराधन अहैं शुचि साधन जिते ।
मोहिं जान परहीं आजुते यहि जगत महँ निष्फलतिते ॥
यदि धर्म कर्म मझार होतै सत्यता एकौ रती ।
तौ धर्मधर नृपवर कि यहि विध होत कबहुँ नदुर्गती ॥
यहिभाँति करति विलाप भूपति भामिनी अकुलाय कै ।
तिनके रुदन ध्वनि सों भये मूर्छा विगत नरनाय कै ॥

दो०–शोकातुर महरानि कह, भूपति धर्म धुरीन।
अंक माहिं बैठाय कै, बहुविध धीरज दीन॥
पुनिजिमिअधमकेदासहै, दियधनकौशिक काहिं।
सो समस्त वृत्तांत नृप, वरणेहु रानी पाहिं॥

नरिन्द छन्द॥

रानिहु जिमि कुमार कहँ बिषधर दस्यो विपिन मझारी।
सो सब वर्णन कीन्ह भूपसन तजत दृगन सों बारी॥
सो सुनि नृप अतिशय शोकित ह्वै कहन लगे इमि बैना।
सुनहु प्रिये यह कर्म दोष फल लाग दैव कर हैना॥
कोइ काल मधि सरित धार जिमि होत उर्द्धगत नाहीं।
तेहिविध कबहुँ कर्मफल की गति रोधिन विधिहु सकाहीं॥
अटल अमेट भालपट लिपिवत बुद्धि दोष अनुसारा।
निज करसों निज पदन माहिं मैं किहौं कुठार प्रहारा॥
विभव ते गर्भ गर्व सो मद मद सों दुर्बुधि प्रकटाई।
सो दुर्बद्धि काल के मुख मधि पतित करत लै जाई॥
सुत वियोग दुख सरिस जगत महँ अहै अपर दुख नाहीं।
अब सुत सहित छार तनु करिहौं प्रविसि चितानल माहीं॥
भवा होय अपराध जो हमसों यदि कोइ समय मझारी।
तो कुभागि पै दया दृष्टि करि कान्हेउ क्षमा पियारी॥
यही शेष प्रार्थना हमारी प्राणेश्वरि तव पाहीं।
अब विलम्ब जनि करहु आशुही जाहु बिप्र गृह माहीं॥
यज्ञ दान सुर गुरु द्विज पूजन कीन्ह होय हम जोई।
तो परलोक माहिं तुमसों सुत सहित भेट पुनि होई॥
जानि निजहि नृप रानि गर्ववश तुमकोइ समय मझारी।

निज पालक द्विज के निदेश महँ त्रुटि जनि किहौ पियारी ॥
निज देवता सरिस द्विज सेवा किहौ सदा मनलाई ।
अहै धर्म की गति अति सूक्षम नाल सूत्र की नाँई ॥
विपति काल धीरज जनि त्याजेहु दैवहि दिहौ न दोषा ।
अटल कर्मफल भोगन माहीं करन चही सन्तोषा ॥

दो०–भूप वचन सुनि रानितब, कहेहु जोरि दोउ हाथ ।
तव निदेश पालन करन, यही धर्म मम नाथ ॥
पर यह दारुण दुख प्रभू, सहन होत अब नाहिं ।
पुत्र शोक नासब हमहुँ, जरि तुम्हरे सँग माहिं ॥

सो०–तब सशोक महिपाल, शुष्क काष्ठ संचयन करि ।
एक चिता ततकाल, रचितापै सुतशव धरयो ॥

बहुरि रानि सहनृप मति माना * करि सच्चिदानन्द पद ध्याना ॥
सुवन सरामधियक दिशिमाहीं * करिशापित निजभामिनिकाहीं
बैठि अपर दिशि आपु भुवाला * अनल देनचाह्यो जेहिकाला ॥
प्रकटि धर्मतेहि क्षण इमि वाणी * कह्यो सनेह धारि नृप पाणी ॥
यह संकल्प तजहु नर नाहू * सत्य धर्मभल किहौ निबाहू ॥
रोहि बिमान तहां तेहि काला * आये सुरन सहित सुरपाला ॥
कह्यो सुरन हे रविकुल केतू * हौ तुम सत्य धर्मकर सेतू ॥
अविचल धर्म निहारि तुम्हारा * लखहु स्वयं आयें कर्तारा ॥

दो०–सिद्ध साध्य गन्धर्व गण, मरुत रुद्रगण नाग ।
कीन्ह आगमन देखितव, अटल धर्म अनुराग ॥
विश्वामित्रहु विश्व जेहि, मित्र सके करि नाहिं ।
सोउ तव सँग मित्रता हित, आये नृप तव पाहिं ॥

धर्मराज तब सहित सनेहा * फेरि पाणि मृत कुवँर के देहा ॥
करि सजीव इमि वचन रसाला * कहनृप सन हे अवध भुवाला ॥

अब तिय तनय सहित पुरजाई * करहु राज्य सब शोक विहाई ॥
कह नृप अधम श्वपचकर माहीं * मैं विक्रय कीन्ह्यों निज काहीं ॥
तेहि निदेश विनु कोइ प्रकारा * हमनजाबनिज नगर मझारा ॥
सुनि नृपवचन विहँसि इमिबानी * कह्यो धर्म हे नृप यश खानी ॥
हमहि परीक्षा हेतु नरेशा * धारयो श्वपच्च राज कर वेशा ॥
दास वृत्तिते अब तुम काहीं * किहौं विमुक्त जाहुपुर माहीं ॥
सोई समय वृद्ध द्विज अयऊ * भूपति सन इमि भाषत भयऊ ॥
रानि काहिं हे नृपति प्रवीना * महूं दास्य ते मोचन कीना ॥

दो०—वहुरि गाधि नन्दनकह्यो, हे नृप सत्य निधान ।
देखि धर्म धीरता तव, विस्मित भयों महान ॥
मोहिं तुम्हारे राज्यते, अथवा त्रिभुवन राज ।
अहै प्रयोजन लेश नहिं, वदत सत्य महराज ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

मैं तव अखण्ड सुकीर्ति थापन हित किहौं यह चपलता ।
भइ आजु सों नृप तव अमर अविचल विमल यश कीलता ॥
हे धर्म सेतु समेत तिय सुत स्वपुर काहिं सिधारहू ।
तव विरह ते शोकित प्रजा दै दरस तिन दुख टारहू ॥
धर्मानुसार भुवाल सानँद राज्य तुम पुनरपि करौ ।
करि विविध याग स्ववंश कीर्ति पसारि यशते जग भरौ ॥
यहि विध वचन जब गाधि नन्दन वदन ते निकरत भये ।
तब आशुही शुचि दिव्य श्री तिय सहित भूपति तनुछये ॥
सुत सहित नृपति सप्रीति तब करि देव मुनि पद वन्दना ।
गमने पुरहि लखि गगन ते वर्षहिं सुमन सुर अंगना ॥
लहि भूपवर कर दरस पुर नर नारि अति आनँद भरे ।

सजि सजिमनोहर भवननिजनिज विविधशुभ उत्सवकरे ॥
जब सों अवध कर राज्यभार वहोरि नर नायक लयो।
तबसोंद्वितिय सुरपुर सरिस शुचि अवध पुर शोभित भयो ॥
कछुकाल लगि निज प्रजन पालन नीतियुत भूपति कियो।
करिविविध मखधनमणि वसन वहुधेनु महि देवन दियो ॥

दो०—पुनि निज सुत रोहितहि दै, राज्य भार ससनेह।
सहित रानि सुर यान चढ़ि, गे हरि पुरी सदेह ॥
कृत्तिवास इतिहास यह, गाव सकल संसार।
महत चरित शुचि ज्ञान प्रद, नाशतमनस विकार ॥

(मार्क. पु. ७-८ अ.)

पञ्चाशत सर्ग ॥ ५० ॥

सगर का जन्म व एकाधिकषाष्टि सहस्र पुत्र लाभ ॥

दो०—सहित नीति रोहित नृपति, करत अवध कर राज।
पुलकित चितनिवसतसतत, सुखते प्रजा समाज ॥
तिन रोहित के सुत हरित, तासुत चम्प सुजान।
जोइ महीपति किय रुचिर, चम्पा¹पुरि निर्म्मान ॥

चम्प कुमार सुदेव भुवाला * तिनकेसुवनविजयमहिपाला ॥
विजय तनय नृप भरुक प्रवीना * भरुक तनुज वृकधर्म धुरीना ॥
नृप वृक सुत सब गुण गण धामा * भये भूपवर वाहुक नामा ॥
रिपुगण सो वाहुक महि पाला * समर पराजित ह्वै यक काला ॥
राज्य गवाँय संगलै नारी * वसे जाय घन गहन मझारी ॥

१—टिप्पणी ४५ देखो ॥

तहँहि अनित तनुतजि नरनाहू * कीन्हे सुखद परमगति लाहू ॥
तब धरि धीर दैव गति मानी * सती होन चाह्यो पट रानी ॥
तेहि कामिनिहि गर्भवति जानी * वारण कीन्ह और्व ऋषिज्ञानी ॥
नृप वाहुक के सुमुखि सयाना * रहीं अनेक औरहू रानी ॥
ते प्रधान नृप भामिनि काहीं * हेरि गुर्विणी डाह कराहीं ॥
तिन अवसर लखिकै यकबारा * दियमहरानिहि सविषअहारा ॥
पर विरंचि जेहि राखन हारा * विषहुनकरिसकतेहिअपकारा ॥

दो०—यथा काल महँ रानिके, भयो एक संतान।
विष छादित तेहि सर्वतनु, अतिसुन्दर द्युतिमान ॥
जन्मेहु बालक सहितगर, यहि हित सोइ कुमार।
सगर नाम सो ख्यात भे, नृप मण्डलो मझार ॥

सो०—बुधिवल तेज निधान, सगर वाल कालही महँ।
भये प्रवीण महान, धनुर्वेद श्रुति शास्त्र सिखि ॥

रोला छन्द ॥

निज भुजबल सों पितर राज्य करिकै उद्धारा।
कीन्ह लाहु सम्राट पदवि महिपाल कुमारा ॥
प्रथित धनुर्धर नृपति सगर सब कला विशारद।
पितु रिपु हैहय तालजंघ पह्लव शक पारद ॥
विकट वीर काम्वोज कपटमति यवनन काहीं।
करि परास्त घन घोर लोमहर्षण रण माहीं ॥
यवनन मुडित केश अर्द्ध मुण्डित शकवृन्दहि।
रुक्ष सघन अति लम्व केशयुत कीन्ह पारदहि ॥
पह्लव कहँ अश्मश्रु धारि तेहि दिन ते कीना।
औरन कहँ किय वषट कार स्वाध्याय विहीना ॥

ते सब विप्रन त्यक्त होय भे मेल्च्छ अघारी।
श्रुति प्रतिपादित कर्म केर नहि रहे अधिकारी॥
वहुरि अतुल द्युति धारि सगर ह्वै ख्यात भुवाला।
सप्तद्वीप क्षिति सनय करन लागे प्रतिपाला॥
रहि नृप के द्वै रानि सुमति केशिनी नामिनी।
सती सुलोचनि सुमुखि मत्त मातंग गामिनी॥
सव प्रकार नृप सुखी पर न रह कोइ संताना।
यहि हित तिन उर दहत शोक संताप महाना॥
अहै अपुत्रक केर द्रष्टि इमि अशुभ विकासू।
जासन प्रातष्काल लखत मुख कोइन तासू॥
तनयलाहु हित बहुरि भूप कानन मधि जाई।
किय शिवतप बहुकाल नेमयुत ध्यान लगाई॥
आशुतोष तब आशु आय भूपति सन कहेऊ।
मैं प्रसन्न वर माँगु जोय चित मधि रुचि अहेऊ॥
हेरि सगर हर काहिं हर्षि पद वन्दि बहोरी।
प्रेम मगन इमि वचन विनय सह कह करजोरी॥
हे प्रभु सर्व शरण्य भक्त कृत कारज कारी।
वहुसुत लाहु कि नाथ अहै लालसा हमारी॥
यह सुनि कह व्रषकेतु सुनिय शुचिमति नरनाहू।
तुम एकाधिक साठ सहस सुत करिहौ लाहू॥
अस कहि अंतर्द्धान भये तहँ ते गिरिजेशा।
आये प्रमुदित वदन स्वपुर महँ सगर नरेशा॥
दो०–सुमति केशिनी नामिनी, जोइ नृप के युगनारि।
दोउ गर्भ धारण कियो, शिव वर के अनुहारि॥

१–वि. पु. ४ अंश ३ अध्याय।

कछुककाल महँ केशिनी, एक सुवन अभिराम।
कीन्ह प्रसव असमंजजेहि, धरयो महीपति नाम॥
सो०—सोई समय मझारि, गर्भ वेदना सों विकल।
भई सुमति नृप नारि, पर तेहि गर्भ ते आशुही॥
चर्म अलाबु एक प्रकटाना * सोलखिनृप ह्वै चकितमहाना॥
कह सरोष भंगर शिवशंकर * जोइमोहिं दिययहि प्रकारवर॥
पुनि तेहि तुम्बि काहि ततकाला * करिडारेहु शतखण्ड भुवाला॥
तब तेहि तुम्बि सोहिं तिलनाई * षष्टि सहस्र जीव प्रकटाई॥
लागे कुलबुलान सो हेरी * ह्वै विस्मित महीप तेहि वेरी॥
षष्टि सहस पय कलश मँगाई * यकयकमधि तिन्हदीन्हधराई॥
दुग्ध पानकरि मनुजा कारा * ते सब भे कछु समय मझारा॥
दिनदिनवर्द्धित तिनन्ह निहारी * हेरि सगर नृप हर्षित भारी॥
यथा समय महँ सहित उछाहू * सबन विवाह कीन्ह नरनाहू॥
सकल सुतन सुत वधुन समेतू * सानँद रहत भानुकुल केतू॥
दो०—सगर तनय असमंज के, भयो एक सुकुमार।
अंशुमान के नाम सों, प्रथित जो जगत मझार॥
सकल शास्त्र धनुवेदमहँ, अंशुमान भे ख्यात।
ते स्वपितामहँ प्रीतिहित, करत यतन दिन रात॥
पर असमंज निजहि उतपाती * करनप्रमाणितहितदिनराती॥
तैसहि कृति मधि तिन चित रहई * यहिप्रकार तेहि कारण अहई॥
पूर्व जन्म महँ चित्त नियोगी * रहे असमंज ख्यात यकयोगी॥
पर ह्वै योगभ्रष्ट तिन काहीं * जन्मनपरयोबहुरिक्षितिमाहीं॥
विगत जन्म कर विवरण जोई * रह्योसुरति तिन्हकहँ भलसोई॥
यहिहित असतजगत कहँजानी * ब्रह्महि नित्य सत्य सुखमानी॥
जगत जनन सँग त्यागन केरा * संतत करत प्रयत्न घनेरा॥

नित प्रति पुर प्रजान अपकारा ❋ लागे करन अनेक प्रकारा ॥
क्रीड़ा निरत बालकन काहीं ❋ धरि बोरहि सरयूनहिमाहीं ॥
पुर नारिन घट पूरति बारी ❋ फोरहिं आयस वर्तुल मारी ॥
देहिं काहु गृह अनल लगाई ❋ ताड़ि काहु कहँ जाहिं पराई ॥
असकृतिकरिनिज हृदयमझारा ❋ यहविचार कियसगर कुमारा ॥
मम कृत सुनि पुर प्रजन कलेशू ❋ होय रुष्ट अति अवध नरेशू ॥
दै हैं पुरते हमहिं निकारी ❋ करबभजनतबविपिनमझारी ॥

दो०—आशु आश तिनकी फली, सगर वारही वार।
सुनि पीड़ित पुर प्रजन मुख, सुतकृत अत्याचार ॥
ह्वै त्रासित तब भूपवर, दीन्ह सुतहि वनवास।
तब असमंजस विपिनदिशि, कीन्ह गमन सुहुलास ॥
प्रविशि एक घन गहन महँ, कह नृप सुत सानन्द।
पुरयो विभु वासना मम, कटेहु विकट भवफन्द ॥

सो०—असमंजसहि निकार, रहत दुखित चितनृप सगर।
पर धीरज उर धारि, राज धर्म प्रति पालेहीं ॥

एकपञ्चाशत सर्ग ॥ ५१ ॥

नरपति सगर के प्रश्नानुसार अरिष्ट नेमि कृत मोक्षो पाय वर्णन ॥

सो०—सुयश सुकीर्ति विशिष्ट, नृपति सगर यक समय महँ।
कश्यप तनय अरिष्ट, नेमि सोहिं यह प्रश्नकिय ॥
कौन यतन ते लोक, विविध क्लेशभयजगतमहँ।
होय विगत यत शोक, लहहिंअनंतअखण्डसुख ॥

१–इस सर्ग व ५२ सर्ग की मूल कथा श्रीमद्भा. ६ स्क. ८ अ. व वि. पु. ४ अं. ४ अ. के अनुकूल दृष्टि होती है।

यह सुनि कह ऋषि राय, सुनिय भूपवर धर्मवित।
निर्लिप्ताहि उपाय, है याकर श्रुतिशास्त्र वद॥

परभव विभव नेहि जन काहीं * यहिपथचलब सुलभनृपनाहीं॥
विषय कुहक ग्रासित नर जोई * है सक शोक मुक्त नहिं सोई॥
यह बुध वचन वेद अनुकूला * अहै वासना दुखकर मूला॥
शब्दस्पर्श गन्ध रस रूपा * भोग्य विषय यह पाँचहु भूपा॥
इनहिं ते प्रथम बालवय माहीं * उर वासना बीज प्रकटाहीं॥
तिन आसक्ति वयस के साथा * बढ़तजात नित प्रति नरनाथा॥
इमि ह्वै जीव काम मतवारा * रहत न तेहिहित अहितविचारा
ता प्रभाव ते नर उर माहीं * लोभ मोह नित बाढ़त जाहीं॥
स्वारथ सेवि क्रमश इमि होई * विविध प्रपंच रचत नित सोई॥
निज हित हेतु अपर की हानी * करतहृदय कछु लावनग्लानी॥

दो०—इमिदिन दिन हिंसा कपट, राग द्वेष बढ़ जाहिं।
होत कठिन उर उपल इव, रहत धर्म भय नाहिं॥
तब स्वारथ साधन निमित, तजिसतअसत विचार।
उर न अटक कछु सृजतहू, कपट धर्म आचार॥

बिनु श्रम छल प्रपञ्च सन जोई * मनरुचि फलित लोलुपनहोई॥
तब तेहि पतन होत इमि जाई * उच्चते निम्न नीर जिमि धाई॥
सुहृद बन्धु तिन कुकृति निहारी * जब बुझाव तेहिहितउरधारी॥
तब सो शठ मन गढ़ित प्रमाना * दै दर्शाय चातुरी नाना॥
निज कुकाज कहँसकल प्रकारा * पोषत सकुच न करत भुवारा॥
इमि मन बचन काय के द्वारा * पापनिरत रहिजगत मझारा॥
सुजन विवर्जित ह्वै पुन राई * विचरहिंतिनसँगजे निजनाई॥
अस दुर्जनन कबहुं नरनाहू * उभय लोक सुख होत न लाहू॥

दो०—विषय कामि कपटीन कर, यहि जीवन कर सार।
घोर गहिर भव भवँर मह, भ्रमत बारहीं बार॥
अशन संचयन रत सतत, कीट पिपीलक न्याय।
तिन विषयाशिन कीदशा, जगत माहिं दर्शाय॥
तन्तु कीट जिमि कोषरचि, फँसितेहिमधिमरिजाय।
तिमिफँसिस्वरचितफन्दमहँ, विषयिहुजरतविलाय॥

सो०—यहिहित सुनिय भुवाल, होत जोइ नहिं विषय वश।
सोइ सुखी सब काल, विगत सतत भव भीति ते॥
जिमि तरिचढ़िनदिपार, जान माहिं है तबहिं शुभ।
जो जल तरणि मझार, भरहिं ताहि उलचहिं द्रुतहिं॥
हे नृप सोइ प्रकार, भव पयोधि जो तरन चह।
सो यत विषय विकार, करहिं दूर द्रुत हृदय सों॥

मम मृतु पै मम परिजन काहीं * को प्रतिपाल करी जगमाहीं॥
ज्ञानि जनन असबादि विचारा * होत नाहि कोइ काल भुवारा॥
यहि विधि रचितनियम संसारा * स्वयं जनमजनजगत मझारा॥
स्वयं दुःख सुख भोगन करहीं * स्वयं बहोरि कालमुख परहीं॥
जरठ युवा शिशु यत नर नारी * सब जन पूर्व कर्म अनुसारी॥
निज उपारजित वा पर संचित *भोगहिलहहिंविभवनितनियमित
मूल अर्थवत जौन प्रकारा * वणिक उठाव लाहु संसारा॥
तिमि जस जासु कर्म नृप होई * तस फल सतत लहत जनसोई॥

दो०—स्वजनन पोषण चिन्तवन, यहि हित वृथा भुवाल।
पुनि प्रमाण याकर मनुज, अवलोकत सबकाल॥
करत यतन दिन रैन जब, परिजन पालन माहिं।
तबहुँसकल तिनमधिबचत, काल कवलते नाहिं॥

जब प्रति पालन प्रिय परिवारा * भये समाप्ति विनाहि भुवारा ॥
काय विहाय बीचही माहीं * अंतक सदन काहिंचलिजाहीं ॥
तजितनुनिज परिजन मधिकोई * जब परलोक गामि नृप होई ॥
सो दुख सुख जोइ नहि थलपावत * सोन भाव नहुमधिजबआवत ॥
पुनिनिज स्वजन धरातल माहीं * चाहे होहिं चहै कोउ नाहीं ॥
सबन विधातृ नियम अनुरूपा * भोगन परि स्वकर्म फल भूपा ॥
तब असार भव मोह मझारा * फँसब वादिही सकल प्रकारा ॥
यहि मधि तजि दुख ताप कलेशू * अहै न कोइ काल सुख लेशू ॥

दो०—चिर सम्बन्धिन कोउ जन, तिय सुतादि यत लोग ।
क्रयी विक्रयी सम अहैं, इनकर योग वियोग ॥

सो०—यह जग रीति लखाय, कोइ मनुज के मरण पै ।
तेहि परिजन समुदाय, कछुककालरोदन करहिं ॥
पुनिनिजनिजकृतिमाहिं, होहिं निरत यंत्रांग सम ।
बहुरि विसरि तेहि जाहिं, बहुदिन दर्शितस्वप्नइव ॥

यहिहितसुनिय सुमतिनरनायक * संतोषही परम सुख दायक ॥
त्रिभुवन विभव जासु कर माहीं * सोउसंतोषिसरिस सुखिनाहीं ॥
कमठ समेटि पाणि पद शीशा * जिमि थिर ह्वैबैठत अवनीशा ॥
तिमि इन्द्रियन रोधिजब सज्जन * स्वारथत्याजिकरहिंपावनमन ॥
तबहिं यथारथ नित सुख दाई * आत्मज्योति उर मधिप्रकटाई ॥
तिमिर पुंजखर किरण दिवाकर * जिमिनउभययकयककरसहचर
तिमि न रहतयकसँग कोइकालू * आतम बोध अभाव भुवालू ॥

दो०—जेहि बिध उत्पाटित भये, जलसों पंकज नाल ।
पंक सोहिं सम्पर्क पुनि, रहतनाहिं कोइ काल ॥
आत्मज्ञान सम्पन्न जन, तेहिविधयहिजगमाहिं ।

कलुषित विषय बिकारसों, द्रुत बिमुक्त ह्वै जाहिं ॥
पर न काम जब लौंतजत, उर न बिराग विकास ।
तबलो ज्ञान न लाहु सों, कितहुँ करिय प्रयास ॥

सो०–जेहि विध सरित मझार, बँधे सेतु दृढ़ रूप सों ।
होत प्रबल जलधार, तेहि सरिता कर अवसिही ॥
तेहि विध जब प्रकटात, मनुजन उर निर्वासना ।
तब नित बाढ़त जात, तिनमनप्रकृतविरागनृप॥

क्षुधा तृषा कामादि अराती * करतजोयजन वशसब भांती ॥
जियनमरण दुखकाय कलेशा * ज्ञात जोय जग माहिं नरेशा ॥
वहुतक धान्य शकट कोइ काहीं * होयलाहु यदि कोइथलमाहीं ॥
पर सो लेत उतनहि नर नाहू * जितने महँ जीविका निवाहू ॥
मंच सुचारु मन्दिरहि जोई * यक सम ज्ञान भेद नहिंकोई ॥
सुमन रोज अरु भूतल सैना * जेहि जनके ढिग अंतर हैना ॥
पट्ट वसन वल्कल परिधाना * उभयमाहिं जे सुखी समाना ॥
षटरस अशन शाक भखमाहीं * होति तृप्तियकसम जेहिकाहीं ॥

दो०–जाहि मान अपमान अरु, सुख दुख बैर मिताय ।
विजय पराजय लाहुक्षति, सम समान दर्शाय ॥
जान जोय यहि काय कहँ, विबिध दोष आकार ।
रक्त मूत्र मल त्यागि कै, यहिमधि अपर न सार ॥

सो०–जानत जोइ यह भूप, क्षणभंगुर यह तुच्छतनु ।
है आधार स्वरूप, आधिव्याधि आपदन कर ॥
सुर गणहू कोइ काल, काल कवल ते मुक्त नहिं ।
असविचारि भवजाल, छेदन महँ तत्पर जोई ॥

हेरत जोइ यह सहित विवेका * अतुल प्रतापि महीप अनेक ॥

तजि भू भूरि भूति भव माहीं * अंतक सदन निरंतर जाहीं ॥
दुर्लभ अर्थ सुलभ दुख अहई * यहलखिसतत विरतजोइरहई ॥
गनि असार भव सम्पति काहीं * जग प्रपञ्च रुचि रंचक नाहीं ॥
जिमिजनदलिपदसोंअहिशीशा * फेंकहि दूरि ताहि अवनीशा ॥
जगत पदार्थहि तेहि सम जानी * करिचितसोहिं दूरिजोइज्ञानी ॥
परमारथ खोजहिं दिनराती * सोइ पुरुष जगमधि सब भाँती ॥
होय मुक्त सुख अतुल अनँता * भोगहिं अमित कल्प पर्य्यंता ॥

सो०—पश्चिम पहुँच न कोय, जोय प्राचिदिशिगमनेयथा ।
मोक्ष लाहु नहि होय, चलेकाम दिशि चित तथा ॥

दो०—चित्तकाहिं निज वशकरन, तजि ममता अभिमान ।
मोक्ष धर्मकर अहै नृप, यही प्रथम सोपान ॥
रवि तेजहि रविकांत मणि, जिमि कर्षत महिपाल ।
चित यकाग्रत कर्षतिमि, योग वलहि सबकाल ॥

सुमन सुगन्धित जौन प्रकारा * मेले तैल माहिं बहुवारा ॥
तासु सुगन्ध मनोहर ताई * क्रमशः बढ़त होत सुखदाई ॥
साधु संगते तिमि उर अंतर * प्रकटि सत्वगुण वढ़त निरंतर ॥
उदधि पार ह्वै जेहि विध कोई * तेहिनफिरनरुचियदिपुनिहोई॥
सिन्धु पतित तेहि होन भुवाला * जेहिविधनहिंसम्भवकोइकाला॥
तत्व ज्ञान ते सोइ प्रकारा * ह्वै भवमुक्त मनुज यकवारा ॥
पुनि वासना शक्ति तेहि काहीं * करिसकस्ववशकोइविधनाहीं ॥
छूटि सकल संकट सन सोई * चिदानन्द सुखतेहि नितहोई ॥

दो०—मातसर्य्य निन्दा कुकृति, शोक काम मद मोह ।
कृपा असूया ईरषा, प्रति हिंसा भय कोह ॥
विषम शत्रु जग नरनके, यह त्रयदशहु नरेश ।

रहि मनुजन मधि देहिंनित, दारुण दुसह कलेश ॥

सो०—इनकर जगत मझार, उत्पतिथिति लय होतजिमि ।
सो सब भली प्रकार, जानत जोइ विवेकि सोइ ॥

काम मनोरथ सों प्रकटाई * बढ़त तासु कीन्हे सेवकाई ॥
निवृत होन तासन जोइ चहई * तासु उपाय विरतहीं अहई ॥
प्रकृत विरत ते काम सदाई * विनुश्रम इमि प्रशमित ह्वैजाई ॥
क्षीर नीरतर माहिं भुवारा * रज दवान रह जौन प्रकारा ॥
उपजत क्रोध लखे परदोषू * तेहि चर्चा ते बढ़त सोइ रोषू ॥
तासु निवारण केर उपाई * अहै क्षमा वद वुध समुदाई ॥
क्षमावंत ढिग क्रोध भुवाला * यहिविधनहिठहरतकोइकाला ॥
जिमिकृमि कीटशीत ऋतुमाहीं * तेज विहीन होय दुरि जाहीं ॥
जड़ता सोहि मोह संचारा * पोषक तासु असार विचारा ॥
सो सत्संग ते इमि नशि जाई * तपन ताप जिमि जाड़ विलाई ॥
विभव अज्ञता कुल गरुताई * इन तिहून ते मद उपजाई ॥
चाटु वचन ते सो इमि वढ़ई * जिमिमल कीच वारिभरगढ़ई ॥

दो०—पर सम्पति कुल मानयश, होहिं मृषा जब ज्ञान ।
तब न रहतमद जिमिजगे, होत स्वप्न अवसान ॥
सत्या भाव कुसंग वश, मत्सर उपज सदाय ।
पुनि ता मधि प्रभुता मिले, सो नित वाढ़त जाय ॥

सो०—पर मत्सर कर पात, इमि रंकता ते होत है ।
जिमि अंकुश के घात, दुष्ट मत्त गज सुधरहीं ॥
काम सोहिं उर माहिं, प्रकट ईरषानल प्रवल ।
ताहि बढ़ावन काहिं, है समीर इव पर विभव ॥

पर सन्तोष सलिल सन आशू * होत नाश ईरषा हुताशू ॥

भये विछोह वन्धु सुत नारी * प्रकट शोक नरउरन मझारी ॥
अरु तिन सुमिरन बारहि बारा * है तेहि दुखहि बढ़ावन हारा ॥
पर जब हृदय ज्ञान अस होई * जग अनित्य कोउकेर न कोई ॥
वृथा शोक तब ठहर न ऐसे * अनल योग पारद गति जैसे ॥
लोभ ते कुकृति प्रवृति प्रकटाई * बढ़े विभव सोउ बाढ़त जाई ॥
पर सो दब इमि भये विरागा * जिमि निस्तेज मंत्रबल नागा ॥
लोभ राष पर दोष निहारे * उपज असूया हृदय मझारे ॥
बढ़त अहंते संतत सोई * पर समदृष्टि भाव जब होई ॥
तब इमि नसत असूया उरते * नसकुहेलिजिमिरविखरकरते ॥

दो०—अनाचार कृतिलखिवहुरि, सुनि अप्रियकटुभास ।
मनुजन उर निन्दा प्रवृति, प्रथमहि होत विकास ॥
सो इमि कुरुचि कुसंगमधि, परे वाढ़तहि जाय ।
कीच परे जिमि कामरी, दिनपै दिनगरु आय ॥

सो०—पर कुत्सा रुचिजाय, इमि निज दोषन दिशि लखे ।
जिमि दृग दोष विलाय, वर अंजन रंजन किहे ॥

हेरि जगत मधि दुखिन कलेशू * विकस कृपा उर माहिं नरेशू ॥
पूर्व कर्म फल लहन मझारी * अविश्वास तेहि वर्द्धन कारी ॥
पर जब दिव्यदृष्टि हिय होई * तब दुख सुख मधि भेदन कोई ॥
तबहिं कृपा ममता मुद माहीं * फँसिसकइमिविवेकिजननाहीं ॥
जेहि विध गोपद पंक मझारा * फँसत मतङ्ग न कोइ प्रकारा ॥
अज्ञानता हेतु संसारा * होत जनन हिय भय संचारा ॥
कुविश्वास तेहि देत बढ़ाई * पर जब ज्ञान भास उर छाई ॥
तब भय आशु नाश इमि होई * जिमि रसजराविकारहिखोई ॥
रिपु प्रति कार साधि नहिंजाई * तब उर प्रतिहिंसा प्रकटाई ॥

अरु रिपु सुयश बढ़े रुचि सोई * दिन दिनअधिकप्रवलतरहोई ॥
पर प्रकटे उर सात्विक भाऊ * तेहि रुचिकरइमि रहतननाऊ ॥
यथा शरद ऋतु के आगमनू * होत जलददुरि निर्मल गगनू ॥
सो०-सुनिय महीप उदार, वुधन विवेचित यह वचन ।
सब साधन करसार, अहै शान्तिगुण केवलहि ॥
रहत न काम विकार, इमि उर विकसे शान्तिरस ।
वरसे वारिद धार, जिमि मरीचिकाजातदुरि ॥
दो०-शान्ति उदय ते सत्वगुण, वढ़त जात नर नाहु ।
जेहिअवलम्वते नरन कहँ, होत देव पद लाहु ॥
जेहि प्रकार धीवर निकर, निज विचार अनुसार ।
वारि मग्न पोतहि करत, रज्जु सोहिं उद्धार ॥
तेहि विध भववारिधमगन, जीव काहिं सबकाल ।
तत्वज्ञान सम्पन्न मन, उद्धारहीं भुवाल ॥
परी फन्द झष जाल विदारी * प्रविसहिंपुनिजिमिसरितमझारी
पाश भंजि जेहि भांति कुरंगा * होहिं निरापद लहहिं उमंगा ॥
मोह जनित तेहि विध भवपाशा * ज्ञानिछिन्नकरिविनहिप्रयासा ॥
मंगल जनक अमंगल हारू * करतल करहिं मोक्षपद चारू ॥
बिषय स्रोत विषयी जन काहीं * डारत विषय अतलद माहीं ॥
पर मतंग कहँ जौन प्रकारा * विचलितकरिनसकतखरधारा॥
तिमि मुमुक्षु कहँ विषय विकारा * चंचल नहिंकरिसकत भुवारा ॥
पद्म दलस्थ सलिल के नाई * ते संसृत सों पृथक सदाई ॥
दो०-दारुडार आधार जिमि, जनु कर सकल प्रकार ।
अज्ञजनहिमधिरहततिमि, यावत विषय विकार ॥
हे नृप यह संसार यक, अहै उदधि अनुहारि ।
चिन्ता तेहि गम्भीर हृद, भव सम्भव दुखवारि ॥

व्याधि मृत्यु उत्तुङ्ग तरंगा * आश मत्स्य अरुरोष भुजंगा ॥
मत्सर कमठ विषय रुचि क्षारा * जरा भवँर हिंसा खर धारा ॥
जगत अनित सुख रतन अनूपा * गर्व पयोनिधि गर्जन रूपा ॥
पंक नेह अरु शोक समीरा * सत्य धर्म ताके युग तीरा ॥
यहि भवनिधि कर तरन उपाई * निर्लिप्साहि अहै तरि नाई ॥
जोइ यहि लोक माहिं नरनारी * रहत लिप्तसुख भोग मझारी ॥
ते परलोक केर सुख लाहू * करिनसकतकोइ विधनरनाहू ॥
जो यहिजगकेविषय सुखमाहीं * रहहिं निरत कबहूं नृप नाहीं ॥
सोय नित्य सुख रुचिर अनूपा * भोगहि जासु अवधि नहिं भूपा ॥
जोइ शरीर काहिं गृह जानी * पुण्य तीर्थ उर शौचहि मानी ॥

दो०—बुद्धि मार्ग अवलम्ब करि, करहिं तासु मधि वास ।
उभय लोक सुख लाहुसों, रहहिं नसोइ निराश ॥
किरण जाल दिननाथसों, पृथकरहहिं जिमिनाहिं ।
तिमिनसिद्धित्यागतकबहुं, निष्कामी जन काहिं ॥
ताड़क हिंसक आक्रमक, कहै जोइ कटु वैन ।
तिनके प्रति व्यवहारतस, कबहुँ मुमुक्षु करैन ॥
जिमि गौके चहुँथनन सों, करत वत्स्य पय पान ।
सत्य क्षमा दय ज्ञान तिमि, गहत मुमुक्षु सुजान ॥

सो०—हे नृप येहि उपाय, अहैं नित्य सुख लाहु के ।
चिन्ता शील सदाय, करहिं याहि पथ अनुगमन ॥
जिमि मुक्तहि मणिकार, वेधि सूत्र वर देत करि ।
नृप मन सोइ प्रकार, भा संयत ऋषि शाखते ॥

(महा. भा. शां. प. मो. धर्म १८९ अ.)

द्विपञ्चशात सर्ग ॥ ५२ ॥

सगर का अश्वमेध यज्ञ तथा उनके षष्टि सहस्त्र पुत्रों का ध्वंस ॥

दो०—विषय विरत इमि राज कृति, करहिं सगर अवधेश ।
अनासक्त ह्वै जिमि करहिं, दैनिक कृत्य निदेश ॥
जिमिहिंसक जल जन्तुभय, रहत उदधि तटमाहिं ।
विविधरतनपुनिजलधिते, मिलतमनुजगणकाहिं ॥
यहिहित तेहितट जानमहँ, मनुज शंकहू खात ।
वहुरि रतन लालसा सों, जातहु मनुज लखात ॥
तेहिविध अतुल प्रतापधर, सगर सोहिं सब काल ।
करहिं शंक महि खण्डके, याव तीय महिपाल ॥
परतिन कर लखि अमितगुण, शीलनेह नयदान ।
सब नृप सेवा रत रहत, संतत सुहृद समान ॥
जिमि सुनि पुर सारथी सों, पाछिल रथके चक्र ।
अग्र चक्र कीरेख तजि, होन न पावत वक्र ॥
तिमि गुण सागर नृप सगर, नगर नारि नरकाहिं ।
सदा चार सद्धर्म पथ, देहिं उलंघन नाहिं ॥
सो०—इमि बीते बहु काल, अश्व मेध मख करन कहँ ।
कियविचारमहिपाल, बोलि वेदविद द्विज मुनिन ॥

रचि सुन्दर विशाल मखशाला * किय आरंभ यज्ञ क्षितिपाला ॥
विधिवत यज्ञ अश्व सजवाये * षष्टि सहस निजसुतन बुलाये ॥
तिनसों कह्यो भूप इमि वैना * जाहु बाजि सँगलै घनि सैना ॥
यहि मख माहि अवसि सुरराई * रचिहै वहुविध विघ्न उपाई ॥

तासन सावधान दिन राती * रह्यो तात तुम सब सबभांती ॥
रक्षत पलक नयन कहँ जैसे * हय रक्षा कीन्ह्यो तुम तैसे ॥
पितु आयसु लहि सकलकुमारा * तुरग संग सउमंग सिधारा ॥
आगे द्रुत गति धाव तुरंगा * पाछे विपुल कटक चतुरंगा ॥
जात अश्व जेहि नगरमझारी * आगेमिलि तेहिपुरअधिकारी ॥
विजय पत्र दै विनय समेतू * जाहिं अवध मख देखन हेतू ॥

दो०—सहित वाजि निर्भय हृदय, सगर तनय वलधाम ।
महि मण्डल विचरणलगे, लहत विजय सबठाम ॥
तिनकरवलविक्रमनिरखि, शचिपतिअतिभयपाय ।
छाय तिमिर घनजलदसों, हय लै गयो चुराय ॥

सो०—ताहि पताल मझारि, जहां कपिल ऋषि तपकरत ।
वांधि तुरत वृत्रारि, अन्तर्हित तहँते भये ॥

इतकछु समय माहिं जेहि काला * विदरजलदतम नस्योकराला ॥
देखि न तुरगहि सगर कुमारा * भयेहृदय मधि चकितअपारा ॥
पुन करिदृढ़ चित सब वलवाना * लगे करन हय अनु संधाना ॥
नगर ग्राम कानन गिरि खोहा * भलीभांतियक यक करिजोहा ॥
इमि महिखण्ड ढूंढ़ि सब डारा * जबनकतहुँ मखवाजिनिहारा ॥
तब पताल प्रविशन उर ठानी * लगेखनन क्षिति ते भटमानी ॥
कठिनअशिनिसम प्रखरकुदारा * गहेखनत महि सकलकुमारा ॥
तिनके प्रति आघात कराला * ठनकतकमठ पीठि सुविशाला ॥
चारि दण्ड महँ बली अपारा * क्षितिके चारिहु भाग मझारा ॥
चारि खात विस्तृत खनि डारा * ख्यातजोचारिसिन्धु संसारा ॥

दो०—तेहि पथ सों प्रविशे सकल, शुचिपताल पुरि माहिं ।
तहँ तरुमधिवन्धितलख्यो, यज्ञ तुरंगम काहिं ॥

१—सगरश्चक्रवर्त्यासीत्सागरो यत्सुतैः कृतः (श्रीमद्भा. ९ स्क. ८ अ. ५ श्लोक)

रामगीती छन्द ॥

तेहि निकट यक आश्रम मनो रम सोह अति अभिराम ।
देखहु मनहुँ शुचि शान्ति कर विश्राम धाम ललाम ॥
राजत तहां कोविद कला निधि कपिल कल्मष नाशि ।
जिन तेजते अध ऊर्द्ध दशदिशि निशि दिवस रह भासि ॥
सुरराज माया सोहिं है मति भ्रष्ट सकल कुमार ।
लागे कहन इमि वचन गर्जत कुपित होय अपार ॥
धावहु धरहु यहि अश्वचोरहि जान पावहि नाहिं ।
हरि वाजि भजि वक ध्यान धरि अब बैठ यहि थलमाहिं ॥
अस कहि कपिल मुनि ओर इमि धाये कुदाल उठाय ।
प्रज्वलितपावक शिखा दिशिजेहि विध शलभ समुदाय ॥
कलरव सुनत ऋषि खोलिदृग तिनदिशि लख्योयकवार ।
कृतिवास सगर कुमार सारे भये द्रुत जरि छार ॥

त्रिपञ्चाशत सर्ग ॥ ५३ ॥

अंशुमान कपिल संम्बाद व कपिल देव कृत गंगोत्पत्ति वर्णन ॥

दो०--यज्ञ करत यक वर्षभरि, बीति गयो नृप काहिं ।
मख तुरंग लै कुवँर गण, फिरे सगर ढिग नाहिं ॥

१-स्वशरीराग्निना तावन्महेन्द्र हृत चेतसः । महद्व्यातिक्रमहता भस्मसाद भवन्क्षणात ॥ न साधु वादो मुनि कोप भर्जिता नृपेन्द्रपुत्रा इति सत्त्वधामनि । कथं तमोरोष मयं विभाव्यते जगत्पवित्रात्मनि खे रजोभुवाः ॥ अर्थात महत व्यक्ति के अपमान् जनित उनके निज निज देहस्थित् अनल होने उनको क्षण में भस्मसात् कर दिया । कोई कोई कहते हैं कि सगर तनयगण कपिल कोप से दग्धहुये थे, किन्तु यह अपवाद अमूलक है इसलिये कि भगवान कपिल शुद्ध-सत्व और उनकी आत्मा त्रिलोक पावन है उनमें तमोगुण कदापि सम्भव नहीं हो सकता जैसे आकाश में पार्थिव धूलि अवास्थिति नहीं कर सकती (श्रीमद्भा. ९ स्क. ८ अ. १२-१३ श्लो.)

तब असमंजस के तनय, अंशुमान गुणऐन।
सह सनेह तेहि टेरि नृप, कहन लगे इमि वैन॥

सुनहु तात तुम वेगि सिधावहु * हयसहखोजिपितृव्यनलावहु॥
नृप निदेश इमि पाय कुमारा * रथा रूढ़ ह्वै तुरत सिधारा॥
पर्वत गुफा नगर वन सारे * यकयक खोजिसकलथलडारे॥
पुनि नृप सगर सुतन बलधारी * खननखातजोइकियरहचारी॥
तेहि पथ सो असमंज कुमारा * पहुँचे पुरी पताल मझारा॥
तहँ पूरुब दिशि विपुलाकारा * नीलवर्ण यक द्विरदनिहारा॥
सुमन समान मेदिनी काहीं * धारिठाढ़निज दशनन माहीं॥
तेहिलखिजोरि पाणिशिरनावा * सहितविनयनिज काजसुनावा
तब दिखाय पथ कह गजराजू * जाहु अवसि ह्वै हौ कृतकाजू॥
पर हयचोर सों सकल प्रकारा * सावधान तुम रह्यो कुमारा॥

दो०—वहुरि जाय तहँते कुवँर, लख्यो उतरदिशि माहिं।
अपर श्वेत गज दशनपै, धरे ठाढ़ क्षिति काहिं॥
करि प्रणाम पुनि ताहुसन, पूंछि पंथ सवि नीत।
चलि तहँते पश्चिम दिशा, माहिं भये उपनीत॥

रक्त वर्ण तहँ तृतिय मतंगा * देखेहु जेहि सुमेरु सम अंगा॥
भीम काय सो दिक सिन्धुर वर * धारे धरा ठाढ़ रद ऊपर॥
यह सबगज जबशीश डुलावत * तब भूकम्प जगत महँ आवत॥
यहि विधि अंशुमान गुणराजी * भ्रमत चतुर्दिशिखोजतवाजी॥
पुनि पूर्वोत्तिर कोण मझारा * जाय तहाँ असमंज कुमारा॥
सुविपुल भस्म राशि ढिग माहीं * वन्धित लख्यो यज्ञहय काहीं॥
ताके निकट कपिल भगवाना * रहे राजि धारे दृढ़ ध्याना॥
तिनहिंविलोकि कुवँर गुणग्रामा * भूमिलोटि कियदण्डप्रणामा॥

दो०–बहुरि जोरि युग कर कुवँर, शोक वारि भरि नैन ।
लगे करन नुति प्रणत ह्वै, जय जय करुणा ऐन ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

जय जयति करुणा ऐन राजिव नयन भव भय भंजनं ।
जय योग धर्म बिराग कल्पद्रुम नौमि जन रंजनं ॥
हे प्रभो तुम मन ज्ञान गुण गो तीत सब जगते परे ।
यह मन्दमति भवफन्द वन्धित चिन्त तब केहि विधि करे ॥
प्रभु यदपि तुम सब प्राणि गण मधि व्याप्त एक समानही ।
पर तदपि ते तव गुण त्रयहु कोइ भाँति सकत न जानही ॥
तेहि हेतु यह भव विभव मोहित जिते जग प्राणी अहैं ।
तिन केर रुचि अरु दृष्टि सदैव वहिर्दिकही मधि रहैं ॥
गिरि जेश शेष दिनेश शशि अमरेश अज यतसुरवरा ।
ते सकल माया मात्र तव तुम निर्विकल्प परात्परा ॥
तुम तरण तारण नित्य कारण रहित भव कारण विभो ।
अज्ञान घन नाशन समीरण ज्ञान भानु सदा प्रभो ॥
तव दया ते जेहि केर भेदा भेद सब प्रशमित भये ।
तेहि भिन्न अन्य न जान सक तुमकहँ अनन्य कृपा भये ॥
ज्ञानोय देश निमित्त करुणा यतन तुम तनु धारहू ।
श्रुति पंथ वंचित कर्म टारि सुधर्म प्रभु विस्तारहू ॥
विषयाशि वैभव दास जे कामादि मदउर मधि भरे ।
तिन चिन्तते भगवन्त कमलाकंत तुम संतत परे ॥
तव गुण सुचारु अपार पारावार कहि श्रुति गावहीं ।
तेहि वरणि यह लघुतर पिपीलक पार किमि प्रभु पावहीं ॥

१–श्रीमद्भागवतानुसार कपिल देव विष्णु भगवान के पञ्चमावतार हैं (१ स्कन्ध ३ अ. देखो)

दो०-परनिज पावन दरश दै, मोहि किय नाथ सनाथ।
ममसमर्थ यहितव पदन, पुनि पुनि नावहुँ माथ॥
अंशुमान नुतिश्रवण करि, कपिल तपोवल खानि।
ह्वै प्रसन्न उन्मीलि दृग, कहन लगे इमि वानि॥
तव पितृव्य गण सुनिय कुमारा * भये स्वकर्म दोष ते छारा॥
अब लै वाजि भवन तुम जाहू * भूप सगर मख पूर्ण कराहू॥
यह सुनि ह्वै अतिदुखितकुमारा * गिरिमुनिपद इमिवचनउचारा॥
कहिय कृपा करि कृपा अगारा * किमि होई नृपसुतन उधारा॥
जगत विदित यह वदत सुवोधा * रहतनपलभरिद्विजकरक्रोधा॥
यहसुनिकपिल ज्ञान गुणखानी * ह्वै दयार्दकह यहि विधवानी॥
जबहिं भूरि भव पातक हरणी * हरिअंघ्रिजालोकशुचिकरणी॥
आवहिं यदि यहि ठाम मझारा * सगर सुतन तब होय उधारा॥
दो०-कह्यो कुवँर किमि विष्णुपदि, भई प्रकट भगवान।
अहैं कहां करि कै कृपा, करिय सोसकल वखान॥
कह मुनिनायक यकसमय, शुचि गोलोक मझार।
रमा सहित राजत रहे, श्रीपति जगदाधार॥
सो०-तिन हरि सन्मुख माहिं, पञ्च वदन ते मदन अरि।
प्रेम ते तनु सुधि नाहिं, करत गानरहे भक्तियुत॥
राम नाम सुख सार, तिनके शृंग ते होत ध्वनि।
डमरु ते वारहि वार, हरिहरि निकरतमधुरस्वर॥
शिव मुख सुमधुर गान सताना * सुनिद्रव भये विष्णु भगवाना॥
तनु रोमांच गति वरणि बनैना * ढुरे नीर नीलाम्बुज नैना॥
सो जल रोपि कमण्डलु माहीं * राख्योविधिसयतननिजपाहीं॥
यदिसोइसलिलजगतशुचिकारी * लायसकहुयहिअवनिमझारी॥
सगर वंश तब होइ उधारा * अबहय लैद्रुत जाहु कुमारा॥

मम वरते कोइ तब कुल माहीं * लाई क्षिति मधिसोइजलकाहीं ॥
तब हय लै असमंजस नन्दन * कीन्हगमनकरिऋषिपदवन्दन॥
चलिनिशिदिनतजिपथविश्रामा * पहुँचिकुवँरमख शालललामा ॥
सो०—हाथ जोरि शिर नाय, जाय पितामह ढिगकुवँर ।
सब वृत्तांत सुनाय, सौंप्यो मखहय भूप कहँ ॥

चतुःपञ्चाशत सर्ग ॥ ५४ ॥

भगीरथ का जन्म ॥

दो०—सुतन निधन सुनि सगर नृप, शोकित भये महान ।
शुचि सुरसरि आनन हित, उर मधि चिंत समान ॥
करि समाप्त मख राज्य नृप, अंशुमान कहँ दीन्ह ।
चितसंयम सहतप निमित, गमन सघन वनकीन्ह ॥

वनमधि जाय सगर मतिमाना * सुर धुनि हेत उग्र तप ठाना ॥
वहु वत्सर तप करि नर नाहू * तनुतजि कीन्ह परम गतिलाहू ॥
अंशुमान नृप के संताना * भे दिलीप द्युतिभानु समाना ॥
अति सुशील सो भयो कुमारू * वीर धीर मति प्रकृति उदारू ॥
अंशुमान नृप निज सुत काहीं * निपुण विलोकिसर्व गुणमाहीं ॥
तिन्हैं राज्य दै भे वनवासी * कियबहुतप ह्वैसुरसुरि आसी ॥
अभुत वर्ष तप किय नर नाहू * पर नहिं भई सुरसरी लाहू ॥
सोउतनुतजिजगरखि यशराशी * भये पुनीत ब्रह्मपुर वाशी ॥

दो०—गंग आनयन कृत्य महँ, पूर्व पूरुष गण काहि ।
देखि विफल श्रम अतिदुखित, नृपदिलीपउरमांहिं ॥
सतत चिंतवश तिनहृदय, छायो प्रबल विराग ।
सोउ गये वन तप निमित, राज पाट करि त्याग ॥

सो०—बहु वत्सर महराज, उग्र नियम सह कीन्ह तप।
पर न भये कृतकाज, लह्यो परमगति त्याजितन ॥
भूपति निस्सन्तान, तज्यो काय तब राज्य मधि।
विल्पव घोर महान, नायक विनु चहुँदिशि छयो ॥
बढ़े सकल थल माहिं, छली प्रपञ्ची चोर ठग।
गनै न कोउ कोउ काहिं, रीति नीति मर्य्याद उठ ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

बढ़े दस्यु हिंसा करैं ठाम ठामा। पुरै लूटहीं दाहही ग्राम धामा ॥
कहूं वाल नारी न संहार होई। न मानैकतौंधर्मकी आनिकोई ॥
कहूं भ्रूण हत्या बलात्कार भारी। हरैं धूर्तताके कोइ पौर नारी ॥
सती कामिनी वंश मर्य्यादटारी। भईस्वैरिणीस्वामिसेवाविसारी॥
कुलंगारनी अंगना लाज त्यागी। सदा घूमहीं जारके संग लागी ॥
करैंवंचकी कृत्य जे तीर्थ वासी। पुजावैं छलीवेश धारे उदासी ॥
भयोविज्ञ ज्ञानीन को मानऊना। प्रपंची असाधून सन्मान दूना ॥
भये मधपायी गृही त्याजि बीड़ा। असत्कर्म ठानैं करैं धूत क्रीड़ा ॥
रह्यो राजको काज जाहस्त माहीं। भये ते सबै दस्यु उत्कोच ग्राही ॥
लखे सो मनो धूर्तता मूर्ति धारी। रह्योशाशिसाकेतशंकाविसारी॥
महा आपदा चारिहू ओर छाई। रहे पौर वासी सबै आकुलाई ॥
प्रजा खिन्न आपन्न भे छिन्न वासा। प्रभाहीन भे हट्टपल्ली निवासा ॥
कहूं छाव दुर्भिक्ष प्राणांत कारी। मच्योत्राहिकोईथलैव्यापिभारी॥
रहीं वाटिका जेमनो मुग्धकारी। लजैं देव आराय शोभा निहारी ॥
भईं सूखि ते छिन्नभा तौन ठामा। शिवाश्वानक्रीड़ाकरैंअष्टयामा ॥
लता वृक्ष हेमन्त के अंत माहीं। हतश्री यथा सूखिकै होमजाहीं ॥
तथा चारु साकेत श्री चित्तहारी। विना भूपके ह्वै गई नाशसारी ॥

जितै कर्ण कीजै सुनी सोइधाँई । महाघोर हाहा ध्वनीही सुनाई ॥

दो०–नीति रीति मानत न कोइ, अवध माहि विनु राव ।
नित नूतन संकट प्रकट, आनँद केर न नाव ॥

भानु वंश निर्वंश निहारी * इमिउरमधिचिन्तितसुरझारी ॥
यहिकुल माहि हरण महिभारा * रमा रमण लेइहैं अवतारा ॥
भानु वंश रहिहै नहिं जोई * तौशिववचन सफलकिमिहोई ॥
असचिंता करि द्रुत सुर व्राता * गये शंभु पहँ आतुर गाता ॥
हेरि सुरन शिव करि सन्माना * पूँछिकुशल करिआसनदाना ॥
पूँछेहु वहुरि आगमन हेतू * तबकह सुरन सुनिय ब्रषकेतू ॥
रविकुल नसत न राखहु जोई * तौ न आश हिय पूरण होई ॥
आशु तोष सो मर्महि जानो * आशुहि जायअवध रजधानी ॥

दो०–नृप दिलीप युग तियहि लखि, दिययहिविध वरदान ।
तुम दोउन मधि एक के, होय सुघर संतान ॥
मदन कदनकेवचन सुनि, उभय रमणि धुनि माथ ।
बोलीं यह कस वर दियो, हम विधवन कहँ नाथ ॥

प्रभु तव वचन मृषा नहिं होहीं * भये पुत्र जग अपयश मोहीं ॥
यह सुनि कह्यो शम्भु इमिवानी * होइ कलंक न तुमहिं सयानी ॥
तुम दोउन सम्मिलन ते चारू * होई एकतिय सोहिं कुमारू ॥
अस कहि चन्द्रचूड़ भगवाना * वृषारूढ़ ह्वै कीन्ह पयाना ॥
शिववर ते तिन दुहुन मझारी * भई गर्भवति यक नृप नारी ॥
क्रमशः बीति मास दश गयऊ * जेहिक्षणप्रसवकालतेहिभयऊ ॥
पललपिंड यक अस्थि विहीना * प्रसवसोइनृप भामिनि कीना ॥
तेहिलखि उभय महीपति रानी * रुदन करत बोलीं इमि बानी ॥
हा विध काह दोष हम कीन्हा * जोअसतनयहमहिंशिवदीन्हा ॥

अस्थि हीन यह पिंड निहारा * हँसिहैं हमहिं जगत नरनारी ॥

दो०—पुनि तेहि शिशुहि काण्ड मधि, धारि उभय नृपनारि ।
चलीं वहावन गुप्त पथ, सरयू सरिस मझारि ॥
मारग मधि तिनकहँ मिले, गुरु वशिष्ठ तपखानि ।
जानि मर्म सब ध्यान ते, बोले यहि बिध बानि ॥

सुनियसुमुखियहि बालककाहीं * धरि पथमाहिं जाहु गृहमाहीं ॥
कृपादृष्टि ते कोइ मुनि ज्ञानी * करिहैं पूर्ण अंग यहि रानी ॥
मम विचार महँ यह संताना * होई अतुल प्रताप निधाना ॥
यहसुनि सुत धरि वीथि मझारी * गमनी भवन रुदत दोउ नारी ॥
उत तेहि पथ सो उये दिवाकर * अष्टावक्र तपोबल सागर ॥
सरयू सरित करन असनाना * निकरे करत विष्णु गुणगाना ॥
आठहु अंग वक्रहित मुनिकर * कम्पत रहे चलत महँ थरथर ॥
शिशुहि सोइ विध पंथ मझारी * कुलबुलात मुनिराज निहारी ॥

दो०—इमि उर मधि सन्देह किय, यह कोई निशिचारि ।
खलता वश शिशु रूप धरि, करि रह व्यंग हमारि ॥

सो०—यदि मम सत अनुमान, तौ द्रुत यह कपटी कुटिल ।
यमपुर करै पयान, होय भस्म मम शापते ॥
यदि स्वभाव वशकाय, काँपि रह्यो यहि कुवँरकर ।
तौ अवहीं ह्वै जाय, ममवर ते अति सुघर तनु ॥

अष्टपदी छन्द ॥

मुनिवर के इमि कहत भयो सो राज कुमारा ।
अति ललाम छविधाम काम मद नाशन हारा ॥
बहुरि ध्यान करि मर्म जान लिय मुनि तपराशी ।
यह दिलीप सुत अहै होइ रवि वंश प्रकाशी ॥

तब दोउ भूपति तियन बोलि कुवँरहि मुनि दयऊ।
तनय रूप लखि दुहुन हृदय आनन्द अति छयऊ॥
मुनिचरणवन्दिभूपतिरमणिनिजगृहगमनीमगनमन।
लखिराजकुमारहि भेटदैकिय उत्सवपुरवासिगन॥

दो०—राजसिंहासन अवध कर, रह्यो सून विनुराव।
सो तेहि शिशु ते पूर्णलखि, हर्ष प्रजन मधिछाव॥

सो०—विना पुरुष सहवास, भयहु तनय तिय अंग ते।
यहिहित कह कृतिवास, परयो भगीरथ नाम तेहि॥

पञ्चःपञ्चाशत सर्ग॥ ५५॥

भगीरथ कृत वैराग्य वर्णन

दो०—नृप दिलीप सुत भगीरथ, पञ्चम वत्सर माहि।
पठन हेतु पठये गये, गुरु वशिष्ठ के पाहिं॥
गुरु गृह मधि भूपति कुवँर, अपर बालकन संग।
नित प्रति चित्त लगाय कै, पढ़न लगे सउमंग॥

तिन बालकन संग यक वारा * रहे केल रत भूप कुमारा॥
तहँ यक शिशु सन भयो विवादा * सो कह विदित जो तवमर्य्यादा॥
है जारज मम सन्मुख माहीं * मारहु गाल कुवँर तुम नाहीं॥
यह सुनि कुवँर उतर नहिं दयऊ * रुदनकरत निजधामहिगयऊ॥
विनाविदित कीन्हे कोउ काहीं * सोये जाय शयन गृह माहीं॥
जब युग प्रहर दिवस चढ़ि गयऊ * निजतनुजहिनरानिलखिपयऊ
तब दोउ रानि हृदय अकुलाई * विरहित वत्स धेनु की नाई॥
जाय वशिष्ठ निकट शिर नाई * पूँछेहु कहँ मम तनय गुसाँई॥
यहसुनि मुनिअस-वचनउचारा * शयनभवन महँतनयतुम्हारा॥

अहैं सकल विध कुशल कुमारा * जाहुरुदन तजिभवन मझारा ॥

दो०—तबदोउ भामिनि आशुही, लख्यो शुतहि इमिजाय।
परे सेज पै मलिन मुख, रुदन करत विलखाय ॥
लखतहि सुतहिसनेहवश, अंक माहिं लै रानि।
निज अंचलसों पोंछिदृग, बोली यहि विध वानि ॥

अहह अभागिनि के जीवनधन * केहिहितकरतविलखितैंकन्दन॥
काहि क्रर ग्रह ग्रासत भयऊ * जो तजिशंक तोहिंदुखदयऊ ॥
कहु केहि करहुँ धनदअनुहारी * केहि दरिद्र करिदेहुँ निकारी ॥
यदि वन्दीशाला लखि तोहीं * भा दुख तौ बताउ द्रुत मोहीं ॥
यत वन्दीं कारागृह माहीं * करिहौं मुक्त चिंत करु नाहीं ॥
यदि तनु रुजित तौ वैद्य बुलाई * करहुँ तात मैं अगद उपाई ॥
हेरि मलीन चन्द्रमुख तोरा * हिय युग टूक होत है मोरा ॥
यह सुनि कह्यो भगीरथ बैना * मातुमोहिं यह कोइ दुखहै ना ॥
पर अपमान हुताशन घोरा * कियो दाह मम हृदय कठोरा ॥
यक बालक सँग आजु हमारा * भयहुकलह गुरु भवनमझारा ॥

दो०—सो कलंक तव शुचि चरित, माहिं लगायो मात।
तेहि ववॅर कर वचन सुनि, दाह होत मम गात ॥
कहहुजननिअबममजनम, भयो कौन कुल माहिं।
को मम पितु सों अहैं कहँ, दीख कबहुँ मैं नाहिं ॥

सो०—सुनिकुमारमुखवानि, व्यथितहृदय दृग तजतजल।
किय वर्णनसबरानि, सगर वंश जिमि ध्वंस भा ॥
अरु कुल तरनउपाय, कह्यो जोइ मुनिवर कपिल।
सोउसबसुतहिसुनाय, कहन लगीं पुनराय इमि ॥

तव पूर्वज सगरादि भुवाला * सुरसरिहिततपकरिबहुकाला ॥

विफल मनोरथ ते तजि प्राना * देवलोक कहँ कीन्ह पयाना ॥
तात जबहि शुचि सुरसरिधारा * आवहिस्वर्गते अवनिमझारा ॥
तब जिमि प्राण लहे पुनराई * होहिं सजग इन्द्रिय समुदाई ॥
तिमि तव कुलकर अपयश भूरी * होइ दूरि यश दशदिशिपूरी ॥
मोहि पुत्रवर शंकर दयऊ * ताते बिना पुरुष तुम भयऊ ॥
यहसुनि नृपति दिलीप कुमारा * बिहँसिवचनयहिभाँतिउचारा ॥
रवि कुल जात जिते महिपाला * सुरधुनिहिततपकियबहुकाला ॥
बुधि श्रम वशते सब नर नाहू * करिश्रम कियनसफलतालाहू ॥
प्रथमहि करि सुखभोगबिलासा * बहुरि गंग हित कीन्ह प्रयासा ॥

दो०—अल्पमात्र परमायु ते, श्रम तप माहि उठाय ।
सुरतरंगिणी अघ हरणि, कबहुँकसक कोइलाय ॥
कुल कलंक यदि मैं नहीं, हौं तनुजात तुम्हार ।
तौ सुरसरि कहँ लायकै, करहुँ वंश उद्धार ॥

मोहिं मातु अब सहित सनेहू * तप साधन हित आयसु देहू ॥
यह सुनि दुखितहृदय महरानी * नयननीर भरिकह इमिवानी ॥
कहसि काह मम प्राण अधारा * अवहिं न तैं तप योग्यकुमारा ॥
अति कोमल तव सुभगशरीरा * सहि न सकत तप कष्ट गँभीरा ॥
अवहीं कछुक काल रहि गेहू * करहु राज्य मातहि सुख देहू ॥
बहुरि स्ववंश रीति अनुसारा * जाहु करन तपविपिनमझारा ॥
यह सुनि कर पुट कह्यो कुमारा * लखियमातुकरिहृदयविचारा ॥
सतकृति काज काहिं जगमाहीं * नियत विशेष काल कोइनाहीं ॥
मृत्यु केर यह रीति सदाई * समय वाट नहिं जोहत माई ॥
को जानत यह हम केहिकाला * परव कराल काल के गाला ॥

दो०—यहि हित करिय न भूलिहू, काल केर विश्वास ।

उचित धर्म कृति सब समय, जोइनाशकभवत्रास ॥
एक मात्र योगहि अहै, मनुजन त्राण उपाय ।
जेहि साधन तै लहत नर, परमानन्द सदाय ॥

बिषय विमुक्त ब्रह्मपद माहीं * करनलीनसबविधनिजकाहीं ॥
येही परम योग शुभ दाई * याकर समय नियत नहिंमाई ॥
जन्म पाय प्राणि समुदाई * निवसहिं मृत्यु अधीन सदाई ॥
पर शरीर पै मृतु अधिकारा * आतम अविनाशी अविकारा ॥
काठ वियोग योग ते हुताशा * जिमिविनसतअरुहोतप्रकाशा ॥
तिमि तनु लहि आतमा सदाई * होत प्रतीत जात मृतु नाई ॥
सलिल कँपे तट थित तरु पाँती * कम्पत जानि परत जेहिभाँती ॥
घूर्णित द्रग सों जौन प्रकारा * भ्रमत जानि पर सब संसारा ॥
तेहि विध अमर जीवकर भाई * जन्म मरण भ्रममात्र सदाई ॥
फूटे घट घट थित आकाशा * जिमिनहोतकोईकालविनाशा॥

दो०–तेहि प्रकार नाशित भये, यह क्षण भंगुर गात ।
कोइ काल जीवातमा, नाश होत नहिं मात ॥
जठर प्रवेश विवर्द्धन, जन्म वाल्य कौमार ।
युवा मध्य वय जरा पुनि, होन काल आहार ॥
यह नव दशा शरीर की, भोगत गातहि सोय ।
ब्रह्म अंश जीवातमहि, जन्म मरण नहिं होय ॥

रामगीती छन्द ॥

बासुरी रंध प्रवेश ते जेहि विध अनिल कर नाम ।
सब कहत भैरव ऋषभ श्री गान्धार आदि ललाम ॥
एकहि महा आकाश कर गुण है समीरण सोय ।
तेहि केरइन रागादि मधि है प्रकृत नाम न कोय ॥

तेहि भाँति जीवातमा जगमहँ धारिबहु विधकाय ।
ह्वै वहु उपाधि विशिष्ठ पर यक वस्तु रहत सदाय ॥
जेहिभाँति परिचायक अहै दीपक तिमिरकर भात ।
अरु स्वयं दीपक तम विवर्जित सर्वदा दर्शात ॥
तिमि देहथित इन्द्रियानिचय के क्रिय मात्रहि केर ।
है जीव साक्षी अपर तेहि सम्बन्ध कोइ न घनेर ॥
बहुयतन ते निजकण्ठ शोधन करहिं गायक जोय ।
परकंठ करसेवा करन तिन अभिप्राय न कोय ॥
निजअभिलषितयतराग रागिनितानलयसमुदाय ।
केवलहि इनकर लाहुहित तिनकेर यतन सदाय ॥
जिमि उपाहि थित गृह गमन हेतु उपाय है सोपान ।
तिमि गलहि गायक जानही केवलहि यंत्रसमान ॥
ऐसहि जननि यकयंत्र सम जानहू यहि तनुकाहिं ।
अरु रजस्तम सात्विक सुरत्रय तासुमधि प्रकटाहिं ॥

दो० -वाद्यकार निज यंत्र कहँ, जेहि विध सहित उमङ्ग ।
सयतन परिचालन करत, उत्तम स्वर के सङ्ग ॥
तेहि प्रकार मनुजन उचित, यंत्र रूपि तनुकाहिं ।
करहि नित्य सुख लाहुके, उप भोगी जग माहिं ॥

मोह विवश कुबुद्धि नर जोई ❋ मानत सुहृद काय कहँ सोई ॥
पर जब यह जल बुद बुद गाता ❋ आपन नाहिं वदत बुध व्राता ॥
तब सुख भोग सोय तनु द्वारा ❋ ह्वै सक आपन कौन प्रकारा ॥
संतत यहि महि मण्डल माहीं ❋ कीरतित्याजिअमरकछुनाहीं ॥
क्षणस्थायि सुख भोग विलासू ❋ करनकाहि नहिं ममउरआसू ॥
करि कठोर मैं तप आरधन ❋ करब जगत करमंगल साधन ॥
मोहि तप हेतु मातु हर्षाई ❋ आयसु देहु चिन्त विसराई ॥

सुनियहि भाँतितनय मुखवानी * ह्वै प्रसन्न बोलीं इमि रानी ॥
दो०—जाहु तात अभिलषित, फललहि त्रैलोक मझार।
अक्षय कीरति थंभ तुम, थापन करहु कुमार ॥
कृत्तिवास कह जेहि निमित, किहो कुमार पयान।
तासों तरिनृप सगर कुल, होई जग कर त्रान ॥

षट्पञ्चाशत सर्ग ॥ ५६ ॥

भगीरथ की तपस्या तथा गंगा की प्रति ॥

दो०—वन्दि मातु पद प्रेमयुत, भूप दिलीप कुमार।
गुरु वशिष्ठ सनमंत्र लै, गमने विपिन मझार ॥
तह यकांत यक सुथल महँ, राजि महीप किशोर।
सर्व प्रथम सुरराज कर, लगे करन तप घोर ॥

तजिजलअशन कुवँर गुणधामा * जयत सततसुरपति करनामा ॥
वर्ष अनेक तहाँ सह प्रीता * जब तप करत कुवँरकहँबीता ॥
तब ह्वै अति प्रसन्न अमरेशा * चले देनवर कृतवर वेशा ॥
वाहन विपुल काय गजराजू * मणिमुक्तान जटितजेहिसाजू ॥
सुन्दर मेघ क्षत्र शिर भ्राजत * अमरनिकरप्रमुदितसंगराजत॥
चमर व्यजन अप्सरा डुलावहिं * मन्दमन्द सुमधुरध्वनि गावहिं॥
जाय भगीरथ ढिग वृत्रारी * बोले वचन अमिय अनुहारी ॥
तव तप ते मै मुदित महाना * जोजिय भाव माँगु वरदाना ॥
दो०—लखि सुरराजहि भगीरथ, करि सप्रेम प्रणिपात।
लगे करन नुतिभक्ति युत, करपुट गद्गद गात ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

जय पाक शासन नमुचि नाशन अशनि पाणि पुरन्दरं ।
मखहव्य भखसुर प्रमुख सेव्य नमामि जिष्णु शचीश्वरं ॥
जय गोत्रभित वास्तोसपति[1] हरि वलाराति दिवस्पती ।
जय जम्भ घालक पूतक्रतु पालक अमर अमरावती ॥
जय उरण कन्दन दुश्च्यवन भूधरन छद छेदन प्रभो ।
जय जयति संक्रन्दन जलद वाहन अदिति नन्दन विभो ॥
तुमनाथ सुवरण कशाधर तुम समन जगमधि कोइरथी ।
संसार प्राण अधार वायू अहैं प्रभु तव सारथी ॥
तुम शुष्ण पणि शम्बर प्रभृति प्रख्यात दनुजन मारेऊ ।
निर्भीत करि सुर निकर कहँ अमरावती उद्धारेऊ ॥
प्रभुपदन महँमम विनययह जिमि कुधर छद छेदनकरयो ।
अरु विषम शंकाग्रस्त जगकर आपदा पल महँ हरयो ॥
तिमि कृपा करि दै जगत तारिणि पूत पावनि सुरधुनी ।
मुनि कपिल दाहित मम कुलहि तारहू देव शिरोमनी ॥
जप तप अराधन मंत्र साधन माहिं नाथ न मम गती ।
केवल विमल तव पद कमल आश्रित अहौं प्रभु शचिपती ॥

दो०—सुनिनुतिबोले त्रिदिवपति, सुनिय सुमति नरनाहु ।
ममद्वारा शुचि सुरसरी, ह्वै सकिहै नहिं लाहु ॥
पर भगवान भवानि पति, सों तुम्हारि यह आश ।
होइ पूर ध्यावहु तिनहिं, जाहु विशुचि कैलास ॥

जो कछु गंग आनयन माहीं * परा विपति भूपति तुमकाहीं ॥
तेहि मधि अवसि सहाय तुम्हारी * करब जहाँलगि शक्ति हमारी ॥

१—वास्तोस्पति ।

यह सुनि भूप भगीरथ आशू * वन्दि इन्द्रपद गे कैलासू ॥
सहज कृपालु शंभु शुभधामू * यहिहित आशुतोष तिननामू ॥
शिवपद भजि अस रहा न कोई * मन वांछित फल पावन जोई ॥
रूस वसुक शुचि सुम धतूरफल * धौतधवलतण्डुल श्रीफलदल ॥
इन उपकरण ते प्रेम समेतू * शिवअर्चहिं नित नृपकुलकेतू ॥
जब वहुवर्ष शिवहि यहि भाँती * गये वीति ध्यावत दिन राती ॥

दो०—तब प्रसन्न ह्वै नृप निकट, आये प्रभु शशिभाल ।
कहिनजाय अर्द्धांगछबि, सुन्दर रूप विशाल ॥

रूपमाला छन्द ॥

वरणि जाय न शम्भु गिरिजा छबिललाम अनूप ।
सोह एकहि काय महँ युग जगत अर्चित रूप ॥
स्वेत पीत पुनीत वर्ण सुप्रीति भाजन जोय ।
उभय पद पंकज निरखि मुनि मन प्रलोभितहोय ॥
अर्द्ध तनु महँ अति बिपुल शार्दूल छाल सुहात ।
अर्द्ध सुन्दर अंग महँ कौशेय वस्त्र विभात ॥
अर्द्ध कटि महँ लसत कर्द्धन भुजगराज कराल ।
अर्द्ध कटि महँ किंकिणी रुनझुन वजत सुरसाल ॥
अर्द्ध उरपै दोलही भीशण कपालन माल ।
अर्द्ध उर वर हार शोभित गुथित मणिगन जाल ॥
अर्द्ध गल मधि सोहही खर गरल नोलाकार ।
अर्द्ध कम्वुक कण्ठ महँ राजत सुधा सुख सार ॥
एक कर महँ समणि भीषण फणिन भूषणराज ।
एक स्वर्ण मृणाल कर महँ मणिन कंकण भ्राज ॥
अधर अर्द्ध धतूर भंग सों शुष्क अति दर्शात ।

अर्द्ध सुन्दर अधर मधि ताम्बूल छवि सर्सात ॥
भंग वेग सों एक दृग उघरत झपत अलसात ।
खंज गंजन एक दृग अंजन की रेख विभात ॥
अर्द्ध भाल विशाल माहिं त्रिपुण्ड इन्दु विराज ।
अर्द्ध भाल सचारु सिन्दुर विन्दु सुन्दर भ्राज ॥
अर्द्ध शिर महँ लसत हेमभ जटा जूट ललाम ।
अर्द्ध शिर मधि गुथित कबरी रुचिर शोभाधाम ॥
शंभु गौरि स्वरूप इमि लखि भगीरथ गुण ग्राम ।
भूमि लोटि सप्रेम शतशत कीन्ह दण्ड प्रणाम ॥

दो०—पुनि सप्रीति नुतिकरि नृपति, बोले गदगद बैन ।
मोर मनोरथ सकल विध, प्रभुहि अगोचर हैन ॥
ह्वै प्रसन्न वृष केतु कहँ, सुनिय सुमति नरनाहु ।
मम वरते तुम कहँ अवशि, होइ सुरसरी लाहु ॥

पर अब जाय परमहित साधन * करहुत्रिजगपतिहरिआराधन ॥
यहसुनिनृपति शिवहिशिरनाई * पुनि तप करन लगे मनलाई ॥
प्रति वासर मुद प्रद हरि नामू * जपत कोटि यकनृपगुणधामू ॥
ग्रीषम माहिं दिलीप किशोरा * करहिं सहन रविआतप घोरा ॥
वर्षा माहिं अछाह मझारी * करहिं सहन घन नीरदवारी ॥
शीतकाल मधि करिजल वासू * जपत निरंतर रमा निवासू ॥
इमि कठोर तप करत सप्रीता * वहु वत्सर ह्वै गयो व्यतीता ॥
तब प्रसन्न ह्वै हरि अखिलेशा * आये नृप ढिग धृत वर वेशा ॥

रामगीती छन्द ॥

प्रभु इन्दरालय चक्र पाणि कि छबि वरणि नहिजाय ।
मरकत महीधर सरिस सुन्दर तनु प्रभा सर्साय ॥

सन्ध्या जलद सम पीट पट कटि देश माहिं सुहाय।
शिर सोह रत्न किरीट चामीकर शिखर के न्याय॥
लोलित सुगण्ड स्थलन मधि कुण्डल युगल छविसार।
भुज मणिन अंगद वलय गलमहँ वैजयन्ती हार॥
श्रीवत्स शोभित वक्ष गोरोचन तिलक वर भाल।
भुज चारि आयुध कम्बु अम्बुज गदाचक्र विशाल॥

दो०—इमि अद्भुत हरिरूप लखि, नृपभगिरथशिरनाय।
लगे करन नुति जोरिकर, हृदय न प्रेम समाय॥

शिखरणी छन्द॥

नमो गोलो केशं अज विभु परेशं सुरवरं।
महातं श्री कान्तं भव भव भयांतं नयकरं॥
शतावर्ती पद्मी जन विपदहा भक्त वरदः।
विधाता त्वंत्राता त्वमपि लय कर्त्ता शिवसदा॥
गदी शंखीत्रक्री दिति तनुज हन्ताब्ज नयनः।
फणीन्द्राख्ये तल्ये शुचि रुचिर क्षीराब्धि शयनः॥
घानभे ते गात्रे परिलसति पीताम्बर वरं।
स्वचापल्यं त्यक्त्वा स्फुरति जनुविद्युति द्युतिपरम्॥
दधौ कण्ठे हारं उरसि वनमालां भृगुलताम्।
नशक्ता वक्तङ्गी गणय भुजगेशाः शुभगताम्॥
निवासो वैकुण्ठे उदधि तनया सेवित पदम्।
स्वभक्तानां स्वामिन्तप हरतु चित्त भ्रम गदम्॥
नतोहं गोविन्दं शरणगत आर्तध्वनि हरम्।
जगज्जालं कालं निविड़ तम हारं दिनकरं॥
कृपापारावारं श्रुति निचय सारं भवपते।

महेन्द्राद्यारा ध्यक्षिति भरण कारी भव जय तुते ॥
अनाद्यन्तं त्वांतु श्रुति वदति ब्रह्म स्तुतिपराराः ।
तवच्छाया तुल्या शिव विधि सुरेशादि अमराः ॥
अशेषं ब्रह्माण्डं त्वद वयव संजात सततं ।
भजामस्तं नाथं अकथ गुणगाथं अविरतं ॥
प्रभो त्वां संस्तोतुं प्रभवति न गौरीपतिगिरा ।
न ब्रह्मा देवर्षि र्दशशत मुखो द्वादशकरः ॥
गुणाब्धेः पारंते जड़कुटिल कामी किमिप्रभो ।
अहं यास्या मीश स्खलित गृह कूपे बितविभो ॥

दो०—तुम सर्वात्मक दास रुचि, प्रभुहि अगोचर नाहिं ।
मुनिदाहितकुलतरनहित, दीजिय सुरधुनिकाहिं ॥
सुनिनुतिप्रमुदितचितकह्यो, सह रहस्य भगवान ।
सुनिय तात सुरसरी कहँ, मैन करि सकत दान ॥

कलमष हरणि गंग प्रभुताई * मम बुधिते है परे सदाई ॥
असन शक्ति मम उनलगि जोई * पहुँच हमारि कोइ विधहोई ॥
ताते अपर जोइ वर चाहू * लै प्रसन्नचित गृह मधिजाहू ॥
कह भगिरथ प्रभुयदि हमकाहीं * दै हौ विशुचि सुरसरी नाहीं ॥
तौ श्री पदन माहिं भगवाना * परिहरिहौंयहिक्षणनिजप्राना॥
पतित पावनी गंग विहाई * मै न चहत त्रिभुवन प्रभुताई ॥
भगिरथ कर दृढ़ भक्ति निहारी * दै धीरज इमि कह्यो मुरारी ॥
तात अहैं विधि पुरमधि गंगा * पुरिहैं आश चलहु मम संगा ॥
असकहि नृपति सहित भगवाना * ब्रह्मलोक कहँ कीन्ह पयाना ॥
उत विधिपुर मधि रह यतवारी * हरयो हरी माया विस्तारी ॥

१—बृहस्पति ।

दो०–जोइशुचिहरिलोचनझरित, भव भय मोचन वारि।
सोय शेष केवल रह्यो, विधि कुंडिका मझारि॥
भूपसहित विधिसदन मधि, गये इन्दिरा नाथ।
लखिहरिकहँविधिअग्रवढ़ि, करपुट नायहु माथ॥
दै आसन पुनि विष्णु के, पाद प्रक्षालन काहिं।
खोज्यो जल परविन्दुभरि, पायोपुरि मधिनाहिं॥

सो०–तब विरंचि कर धारि, हरि नेत्रज जल कुंडिते।
हरिपदजलज पखारि, कियसप्रेम अर्चन सविधि॥
भयो ख्यात सोइ वारि, विशुचि अंघ्रिजा नाम सों।
तबसोइ सलिलमुरारि, दै भूपहि इमि कह वचन॥

रोला छन्द॥

यही पतित पावनी अहैं सुरसरि नरनाहू।
निज कुल तारण हेतु आशु निज सँग लै जाहू॥
यह शुचि सलिल कुशाग्र मात्र सो परसी जोई।
तेहि द्विज गुरु गोघात पाप लय ततक्षण होई॥
जोइ करिहैं अवगाह सुरसरी मधि मनलाई।
तिनकर कथा स्वतंत्र पुण्य तेहि वरणि न जाई॥
बहुरि गंग सों कह्यो देवि नृप संग सिधारहु।
साठ सहस नृप सगर सुतन कहँ आशु उधारहु॥
यहसुनि सुरधुनि नयनवारि भरि कह इमिवानी।
मर्त्यलोक महँ वसत मनुज अगणित अघखानी॥
ते सब ह्वै हैं मुक्त पाप मम जलमधि धोई।
पर हमारि शुद्धता नाथ केहिविध ते होई॥
सुनि सुरसरि के वचन कह्यो कमलेश बुझाई।

मम प्रियवर क्षिति माहिं बसत वैष्णव समुदाई ॥
ते करिहैं तव बारि माहिं असनान सप्रीता ।
रहिहौ तिनके दरस परसते सदा पुनीता ॥
इमि सुरसरिहि बुझाय बहुरि हरि राजिव नैना ।
भगीरथहि यक शंख दान करि कह इमि बैना ॥
आगे करहु पयान भूप तुम करत शंख ध्वनि ।
करि हैं तव अनुगमन पतित पावनी देव धुनि ॥
पुनि पद्मासन कह्यो भगीरथ सों इमि बैना ।
तात तुम्हारे सरिस धन्य कोउ जगमधि है ना ॥
तुम असहन श्रम विषम उग्र तप माहिं उंठाई ।
करि दीन्ह्यों तिहु लोककेर परित्राण उपाई ॥
अब मम यहि रथ माहिंरोहि निज लोकसिधारहु ।
सुरसरिबारि सो तारि स्वकुल जगयशविस्तारहु ॥
तब विरंचि हरि पाद वन्दि भगिरथ मति माना ।
विधि रथपै चढ़ि करत शंख ध्वनि कीन्ह पयाना ॥
नृप पछारि बहि चली वेग सों सुरसरि धारा ।
स्वर्ग वासि अवगाहि गंग इमि वचन उचारा ॥
धन्य धन्य नर नाथ भगीरथ सब गुण धामा ।
कर दीन्ह्यों उन्मुक्त मुक्तिकर द्वार ललामा ॥

दो०—स्वर्ग लोक मधि जोइ रह्यो, सुरसरि अंश विशुद्ध ।
कृतिवास मन्दाकिनी, नाम ते सोइ प्रसिद्ध ॥

सप्तपञ्चाशत सर्ग ॥ ५७ ॥

गंगा ऐरावत प्रसंग ॥

दो०—चलि विधिलोकते गंगयुत, नृपति दिलीप कुमार ।
पहुँचे सुविपुल मनोरम, शिखरि सुमेरुमझार ॥
चौरासी योजन प्रथित, तासु उच्च आकार ।
अरु तेहिचौंसठकोशलगि, मूल केर विस्तार ॥

षोड़श योजन क्षितिहु मझारी * अहै विपोथित सो गिर भारी ॥
कहि न जात तेहि गिरिसुघराई * शोभित कर्णिकार की नाई ॥
सुन्दर शिखर अनल अनुहारी * परसतगगन लखतसुखकारी ॥
सोह चतुर्दिशि बेलि विताना * यकयक कन्दर नगर समाना ॥
तिनमधियकअतिआयतकन्दर * रह पतालमुख सरिस भयंकर ॥
गिरतेहि गर्तमाहिं शुचिसुरसरि * पथनमिल्योरहिंभ्रमत वर्षभरि ॥
तब ह्वै दुखित जोरि युग हाथा * सुरधुनिसनइमिकहनरनाथा ॥
रत्नसानु यदि प्रिय अधिकाई * तव कसतरी वंश मम माई ॥
कह्यो गंग सुनु भूप किशोरा * पथनहिंमिलतमोहिंकोइओरा ॥
अति विशाल दृढ़ पर्वत माला * घेरे अहैं मोहिं यहि काला ॥

दो०—नागमल्ल ऐरावतहि, सकहु भूप यदि लाय ।
परिस्कार पथ करै सो, रद ते कुधर ढहाय ॥
तबहिं तात यहि गर्त सों, होई मम निस्तार ।
यह सुनिद्रुत पदगयेनृप, सहस नयन आगार ॥

करिसुरपतिहि प्रणति नरनाथा * लागे कहन जोरि दोउ हाथा ॥
सुनियनाथ यहि समय मझारा * होत सकलश्रम विफलहमारा ॥
भव तारिणि सुरधुनी विशुद्धा * अहै सुमेरु माहिं अवरुद्धा ॥

१—टिप्पणी ४६ देखो ।

यदि है सदय गयंद तुम्हारा * करैं गंगकर पथ उद्धारा ॥
तबहि गंग मम संग सिधाई * तारहि मम वंशहिं सुरराई ॥
सुनिसुरपतिनिजगजहिबुलावा * तेहि बुझाय तिन संग पठावा ॥
प्रभु निदेश शिर धारि मतंगा * गयो मेरु ढिग भगिरथ संगा ॥
पर ऐरावत उर तेहिकाला * छायो बल अभिमान कराला ॥
सो भगिरथ कहँ निकट बुलाई * कहन लाग यहि भांति बुझाई ॥
यदि सुरसरि मृग शावकनैनी * यकदिनहितममहोहिप्रणयिनी ॥

दो०–तौपविसमनिजदशनसों, गिरि विदारि यहिकाल ।
करि देइहौं सुरसरी मग, सुगम सुभग महिपाल ॥
घृणित वचन सुनि भगीरथ, अधोवदन करिलीन ।
छाया ग्रस्त निशीश सम, वदन भयोद्युतिहीन ॥

सो०–तजत विलोचन बारि, गये सुरसरी निकट द्रुत ।
तिन्हैं मलीन निहारि, पूछेहु गंग दयार्द्र ह्वै ॥

सुनहु तात दिनकर कुलकेतू * तव असदशा भई केहि हेतू ॥
केहि हित विकल तजत दृगवारी * काह नदिय निजगज वृत्रारी ॥
कह कर जोरि नृपति हे माई * हम पै सदय अहैं सुरराई ॥
पर तिनकर मदकलअभिमानी * हमसनकह्योघृणितजोइ बानी ॥
जननी सन मैं है सन्ताना * ताहि करहुँकेहिभांतिवखाना ॥
सुनि सो वचन मर्म सबजानी * बोली विहँसि गंग इमि बानी ॥
राजभोग लहि इन्द्र गयन्दा * भयो प्रमत्त कुटिल मतिमन्दा ॥
सुनहु तात तुम शोक बिहाई * यह मम वचन कहहु तेहिजाई ॥

दो०–मम तरंग कर घात यदि, सहै सार्द्ध युग सोय ।
तव अवश्य पूरण करब, तासु लालसा जोय ॥

सो०–तबहि भूप द्रुत जाय, कह गजसन सुरधुनि वचन ।
सुनि मतंग हर्षाय, शुण्ड तोलि गिरिढिगगयो ॥

रोला छन्द ॥

अशनि सरिसनिज दशनसोहिं गजकरि बलताई।
चारि थलन कन्दरा केर दिय शिखर ढहाई॥
तब सुरसरि कर होय चारि धारा शुभदाई।
चारि ओरि वहि चलीं वेग जेहि वरणि न जाई॥
भद्रा श्वेता वसू अलकनन्दा के नामा।
भयो ख्यात जग माहिं सकल दायिनि हरिधामा॥
वसु पूरुब दिशि माहिं उतर दिशि भद्रा गयऊ।
श्वेता पश्चिम ओर वेगते वाहित भयऊ॥
दक्षिणदिशि बहिविशुचिअलकनन्दाअघहारिनि।
आईं भारत वर्ष माहिं जन शोक विदारिनि॥
ह्वै गिरि गुहा विमुक्त सुरसरी कर ततकाला।
ऐरावत पर परयो एक हिलोल कराला॥
तासो नासा कर्ण तासु जल ते भरि गयऊ।
ह्वै निश्वास प्रश्वास हीन अति व्याकुल भयऊ॥
पुनिरपि अपर तरंग परत गजराज के गाता।
होय कण्ठगत प्राण पुकारेहु रक्षहु माता॥
मातु शब्द सुनि दया आई सुरधुनि उर माहीं।
शेष अर्द्धहिलोल तज्यो गज ऊपर नाहीं॥
यहि प्रकार निस्तार पाय गजराज लजाई।
करत हृदय अनुताप तहां ते गयो पराई॥

दो०—कृत्तिवास पुनि दिवाकर, कुल भूषण नृप संग।
कीन्हगमनअतिमगनमन, जगत पावनी गंग॥

अष्टपञ्चाशतसर्ग ॥ ५८ ॥

शिवकृत पाताल गमनोन्मुखी गंगा धारण ॥

दो०—चलि सुमेरु ते सुरसरी, भूप भगीरथ संग ॥
पहुँची गिरि कैलास पै, लहरत तुंग तरंग ॥
रजत धरणिधर शृंगते, प्रबल गंग की धार ।
भेदि भूमि प्रविशन लगी, वेग पताल मझार ॥

तिनके पतन वेग के भारा * कँपनलग्यो क्षितिगिरिवनसारा
लखि पताल दिशि गंग पयाना * नृपनन्दन ह्वै विकल महाना ॥
तजत नयनजल दोउ करजोरी * कह्योमातु गमनत केहिओरी ॥
तुमतो रहिउ रसातल जाई * तरिहै मोर वंश किमि माई ॥
कह सुरधुनि सुनु राजकुमारा * सहि न सकत क्षितिवेगहमारा ॥
यदि शिव सदन मदन मदहारी * आयआशु यहिसमयमझारी ॥
मोहि विपरीत रीत ते धारहिं * तबतवकुलहिं आशुहमतारहिं ॥
यहसुनिनृप भगिरथ मतिमाना * लागे करन शंभु कर ध्याना ॥

दो०—भक्ति प्रेम दृढ़ नेम लखि, भूपति कर शशिभाल ।
बली वर्द्धथित तिननिकर, भये प्रकट ततकाल ॥
शंभु दरशलहि भगीरथ, करि प्रणाम करजोरि ।
लगेकरननुति विनययुत, चितपुलकितमतिभोरि ॥

भुजंगप्रयात छन्द ॥

समीडेशिवं शम्भु मीशान मीशं । हरं शङ्करम्पार्वतीशं गिरीशं ॥
भवम्भैरवम्विभुवभ्योम केशं । महेशम्परे शम्भु जङ्गेश वेशं ॥
परब्रह्म मेकत्रिलोकैक त्राता । भजेहं सदा भुक्ति मुक्तिप्रदाता ॥
प्रसन्नान नत्वम्विपन्नार्ति हारिन् । प्रसीदेश शूलंसमूलं विदारिन् ॥

भवद्भव्य भूताधिपम्भूतनाथं। दहन्तं कटाक्षेन भक्तप्रमाथं॥
अनन्त अजंअन्तकस्यांतकारी। चिदानन्द कन्दर्प दर्पापहारी॥
नमोसिद्धसाध्यादि आराध्यसारं। अपारं निराधार भूभार हारं॥
नुमस्तं जगत्कारणं कारुणीकं। पिनाकीवटी धूर्जटीकुण्डलीकं॥
उलंगं दिगाकाश वस्त्रंदधानं। दिवानाथ कोटिप्रभादीप्यमानं॥
गले संलुलन्नाग चर्म्मोत्तरीयं। करालं महाशूल पाणिं तुरीयं॥
धगद्ध ग्धगद्धग्ज्वलद्वह्निभाले। प्रभाशालिबालेन्दुभासत्कपाले॥
लसत् शुभ्र गात्रे चिताभूतिछारं। उरस्सर्पहारं श्मशाने विहारं॥
सदाकेलि आवास कैलासशृंगे। तुषारद्रिजाराजतेवाम अंगे॥
गवेन्द्राधिरूढं सुरानीक केतुं। नमो विश्वसर्गस्थितित्रासहेतुं॥
त्वमेकः प्रभुः सर्व भूताधि वासी। त्वमेकोहिलोकस्य ज्ञानप्रकाशी॥
त्वमेव प्रभो देवतानां महेन्द्रः। नगानां सुमेरूखगानांखगेन्द्रः॥
मुनीशो मुनीनां श्रुतीनातुसाम। यतीनांयती शोसित्वंपूर्णकाम॥
यदेतन्त्रिलोक्यांहिदृश्येतिकिंचित्।तदास्तेत्वदाभासमात्रंहिसच्चित्॥
त्रिनेत्रैस्सदा त्र्यम्बकत्वंजनानां। विधाता प्रपाताहिकर्तालयानां॥
सदादित्य नेत्रं त्वदीयन्तु भर्गा। सृजैसुख्यबीजाद्धिचित्रंहिसर्गा॥
नवाक्षीन्दुरूपी सुधाधार वृष्ट्या। प्रजाप्राणरक्षा करै प्रेम दृष्ट्या॥
तथांते ज्वलद्धव्यभुक्च सुरुद्रं। करै पञ्चतासम्प्रपञ्चं समग्रं॥
शिवांघ्रिस्तुभूर्मध्यभागो भुवस्ते। शिरोयस्यस्वर्लोकरूपिन्नमस्ते॥
जोसत्वात्म कोविश्व पातापितेव। रजोरूपि,जन्मप्रदोऽनो वदेव॥
तमोत्माऽविनाशीविनाशीनितातं। गुणत्रैः युतंतं नुतोहं महांतं॥
न भूतो न भावी भवन्नैव पस्तु। त्रिकालीकपालीशिवार्थंसमेस्तु॥
प्रभोथर्व सामर्ग्यजुः सर्व वेदा। परेजे पुराणेति हासादि भेदा॥
त्वदीयास्य पञ्चोद्भवा यैस्तु लोका। लभन्तेहिसर्वत्रसिद्धिविशोका॥
वपुर्देव भूतोद्भवं तापराशिन्। हरौ हेहरा सु प्रकाश प्रकाशिन्॥

नमो दीनबन्धो दयासिन्धु रूपं । जगत्पावन द्वैतहीन स्वरूपं ॥
प्रज्योतिर्मयं निर्गुणं अद्वितीयं । सुरेशाज्वयोन्यादिभिवन्दनीयं ॥
गुणातीत रूपंहरं दर्पकारे । विजानामिमूढ़ोस्मित्वांकिम्प्रकारे
नमस्ते कलातीत कल्पांत कारिन् । नमोअर्द्धनारीश सर्वाधिकारिन्
भजेहं सदा दीन चिन्तापहारी । शरण्यं वरेण्यं प्रभुंमन्म थारी ॥

दो०–नरपति नुति ते ह्वै सदय, सदय हृदय व्रषकेतु ।
कहेहु वत्स पुनराय मोहिं, अवसु मरहु केहि हेतु ॥
जोरि पाणितब वन्दिपद, सहस विनय नरनाहु ।
प्रभु रमेश के कृपा ते, भई सुरसरी लाहु ॥

पर सुरसरि कर वेग अपारा * सहिनसकतिक्षितिकोइप्रकारा ॥
सो पताल कहँरहिं अब जाई * यहिहितयहमम विनय गोसांई ॥
हेरि दासदिशि यदि यहिकाला * धारहु सुरसरि वेग कृपाला ॥
तौ भव भावनि क्षितिथिति होई * करहिंपूर्ण ममअभि रुचिजोई ॥
सुनिअस वचनश्रवण-सुखदानी * होयमगन मन अजगव पानी ॥
डमरु वजाय प्रेमरस पागे * नर्तन लगे देह सुधि त्यागे ॥
पुनि नृप प्रति इमि वचन उचारा * तुमधनि धन्य दिलीप कुमारा ॥
तव श्रम सों मन भावनि साथा * होई दरस परस नर नाथा ॥
असकहिपुलकितचितशशिभाला * गिरिके निकट गये ततकाला ॥
सघन हेम प्रभ जटा पसारी * भयेठाढ़ गज़ तोलि पुरारी ॥

दो०–शंभु जटा मधि वेग सों, प्रविशी सुरसरि जाय ।
प्रमथ नाथ तबमुदित चित, बैठ समाधि लगाय ॥
चन्द्र चूड़ के घन गहन, जटा जटिल मधि गंग ।
ह्वै जड़वत लागीं भ्रमण, लहरत तुंग तरंग ॥

इमि यकवर्ष देवसरि काहीं * भयोव्यतीत भ्रमत तेहि माहीं ॥

तबकर जोरि दिलीप कुमारा * सुरधुनि सनइमि वचनउचारा ॥
मातुहि जटा वास मन भाई * पुरि हे दास आश किमि भाई ॥
अहे जननि कर काह विचारा * काह न मम कुल होइ उधारा ॥
कह्यो गंग हे राज किशोरा * हरजटि जाल जटिलघनघोरा ॥
मैं करि थकिउँ अनेक उपाई * निकरन पंथ न देत दिखाई ॥
यह सुनि भूप तनय कर जोरी * कियसचिंत शिवविनयबहोरी ॥
तब समाधि तजि शंभु उदारा * शिरसों यकवड़ जटा उपारा ॥

दो०—तेहि पथ सों अति वेगते, बही गंग की धार ।
सोइ शुचि थल कर जगतमधि, परयोनामहरिद्धार ॥
कृत्तिवास हरिद्धार कर, दरश परस किय जोय ।
शमन पाशते त्रास तजि, हरि पुर गमनत सोय ॥
सो०—शिवअस्तुति मनलाय, करिहैं नितप्रपि पाठ जोइ ।
तिन लालसा सदाय, पुरिहै पुनिलहिहैं सुगति ॥

एकोनषाष्टितम सर्ग ॥ ५९ ॥

हरिद्वार माहात्म्य ॥

दो०—कोटि सहसदश तीर्थ हैं, यहि संसार मझार ।
तिनमधि सब कामनाप्रद, शुचि वर गंगा द्वार ॥
सिद्ध साध्य वसु मरुद्गण, सुर गन्धर्व निकाय ।
गुप्त भाव सों निवसहीं, यहिथल माहिं सदाय ॥

करत जोय यहिथल अवगाहू * ताहि कोटि तीरथ फल लाहू ॥
बिनहि प्रयास तासु कुल सारा * सकल वन्ध सो होय उधारा ॥
बसत रैनभरि यहि थल जोई * तेहि शत धेनु दान फल होई ॥
कनखल मज्जि तहां करि वासा * करतजोय त्रिदिवस उपवासा ॥

अश्वमेध मख फल लहि सोनर * तजितनुहरिपुर वसतनिरंतर ॥
कपिला घाट रुचिर अति पावन * सबकामद अघओघ नशावन ॥
तहँ उप वास एक दिन कीन्हे * फलजसद्विजहिसहसगोदीन्हे ॥
हरिद्वार यहि जगत मझारा * है प्रत्यक्ष स्वर्ग कर द्वारा ॥
यकमणि अपर सोंजौन प्रकारा * गृंथित रहत सूत्र के द्वारा ॥
तिमि यहिथल क्षिति ते दिवतांई * सुरसरि सूत्र ते गुथित सदाई ॥

दो०-नितअवगाहहिं स्वरसरित, हरिद्वार महँ जोय ।
विगत पाप ह्वै निवस हीं, विष्णुपुरीमधि सोय ॥
पिण्डदान यहि थल किये, यत कण अन्न मझार ।
पितर वृन्द तत वर्ष लौं, लहहिं स्वर्ग सत्कार ॥

करि हरिद्वार दरस जेइ कोई * तेहिमृतु यदपि कतहुँ पै होई ॥
तदपि सोइ फल बिनु सन्देहा * जस त्याजे सुरसरि तट देहा ॥
हरिद्वार महँ जोइ तनु त्यागा * पाव परम पदसो बड़ भागा ॥
पशु पक्षिहु यदि यहिथल मारहीं * सोउ मुक्त पुनि देह न धरहीं ॥
गंगाद्वार प्रयाग मझारी * शिरमुण्डन जेकरहिंनरनारी ॥
ते ह्वै अनघ रोहि सुर याना * विष्णुलोककहँकरहिं पयाना ॥
गंग दरश अन्यत्र सदाई * हैअतिसुलभ न कोइ कठिनाई ॥
पर हरिद्वार प्रयाग सुहावन * अरु सागर संगम अतिपावन ॥
गंग दरश इन तिहुँ थल माहीं * श्रुतिवदसुलभ सबनकहँनाहीं ॥
विनुवहु पुण्य दरश हरिद्वारा * पावत नहिंकोइ जगत मझारा ॥

षटपद छन्द ॥

सत युग महँ सब तीर्थ फलद त्रेता मह पुष्कर ।
द्वापर महँ कुरुक्षेत्र पुण्यप्रद पतित प्रयत कर ॥
पर कलियुग महँ विशुचि अलकनन्दा कर धारा ।
अभिमत फल दातार करत कलि कल्मष छारा ॥

सोइ रमारमण कमलांघ्रिजा प्रकटभईं हरिद्वार महँ।
कृतिवासवदतअधमहूजनलहसमुक्तिअवगाहितहँ॥

षष्टितम सर्ग॥ ६०॥

प्रयाग माहात्म्य॥

दो०—गइ पताल पुरि माहिं यक, रुद्र शेखरा धार।
भोगवती के नाम ते, विदित सो जगत मझार॥
पुण्य तरंगिनि अघहरनि, मुक्ति दायिनी गंग।
क्षिति शुचि करत सवेग पुनि, चलीं भगी रथसंग॥

रवि नन्दिनी सरस्वति संगा * मिली जाय जहँ गंग तरंगा॥
सो पवित्र संगम सुस्थाना * नाम त्रिवेणि प्रयाग वखाना॥
श्रेय तीर्थ कुरुक्षेत्र सुहावन * श्रेय नैमिषारण मन पावन॥
पर यह तीरथ राज प्रयागा * अहै श्रेयतम जस हरियागा॥
याग ते अधिक श्रेय यह धामू * यहि कारण प्रयाग तेहिनामू॥
ग्रहपति के जिमिअधि पति भानू * वसुनअधिपजेहिभाँतिकृशानू॥
जिमिअक्षरनके अधिपअकारा * ज्ञानअधिप जिमिब्रह्मविचारा॥
रुद्रन के अधिपति जिमिशंकर * तारागण मधिजथा निशाकर॥
यक्षन के जिमि अधिप कुवेरा * भूधर मधि जेहि भाँति सुमेरा॥
गजन माहिं जिमि इन्द्र मतंगा * स्रोतस्वती मधि जेहि विधगंगा॥

दो०—मासन महँजिमि मार्गशिर, षटऋतु माहिं वसन्त।
इन्द्रिय गण मधि मन यथा, नागन माहिं अनंत॥
याजक गण महँ देव गुरु, यज्ञ अधिप जपयाग।
तिमि सब तीरथ के अधिप, तीरथ राज प्रयाग॥

रोला छन्द ॥

पुरिअवन्तिका ख्यात अयोध्या कलुष विनाशिनि ।
माया मथुरा कांचि काशि पुरि मुक्ति विकाशिनि ॥
द्वारावति यह सप्त तीर्थपति की हैं नारी ।
तिन मधि रानि प्रधान काशिपुरि अधिक पियारी ॥
तीरथराज प्रभाव अकथ को करि सक गाना ।
चतुवर्ग फलदायि जाहि श्रुतिशास्त्र बखाना ॥
दुखि दरिद्रजन काहिं तीर्थपति सुरतरु नाई ।
निर वलम्ब शोकार्त जनन कहँ आश्रय दाई ॥
भव पयोधि मधि पतित जनन कहँ सागर याना ।
जड़ता धन जन काहिं दृष्टिप्रद भानु समाना ॥
परमौषधी स्वरूप विषय अहिदंशित काहीं ।
कठिन कुलीश समान कलुषगिरि दारण माहीं ॥
जो अघ होत न दूरि किये जप तप व्रतदाना ।
सो अघ कँपत प्रयाग ओरि कहँ किहे पयाना ॥
तीर्थराजके अर्द्ध पंथ पै पहुँचत जो जन ।
तब तेहि कृत अघ लगत भगनहित कोइथल खोजन॥
जबहिं भाग्य वश सोय मनुज पहुँचत तहँ जाई ।
तीरथराज प्रयाग दूरते देत दिखाई ॥
तब जिमि रवि के उदय तिमिर सब जात विलाई ।
तिमि नर तनुते जात पाप भय पाप पराई ॥

दो०—अशुतायि सर्वाङ्ग कर, रहत केश मधि छाय ।
तेहिथलशिर मुण्डनकिहे, शुद्ध होत सबकाय ॥
जो नहाहिं करि कामना, यहि शुचि संगम माहिं ।

सो सुर वांछित भोगलहि, अन्त स्वर्ग पुर जाहिं ॥
पर निष्काम यात्रिवर जोई * बिनु सन्देह मोक्ष तेहि होई ॥
ब्रह्मा इन्द्र विष्णु भगवाना * अरु जितेकहैं देव प्रधाना ॥
मुनि सिद्धर्षि देव ऋषि भारी * निवसहिं सदा प्रयाग मझारी ॥
निखिल वेद वेदांग सुयागा * राजहि शुचि तनुधारिप्रयागा ॥
जो अर्चना नाम संकीर्तन * करत त्रिवेणि मृत्तिका लेपन ॥
सोजन विपुल पुण्य करि लाहू * गमनत हरिपुर सहित उछाहू ॥
जो जनकरित्रिवेणि असनाना * करहिं अल्प मात्रहुतहँ दाना ॥
भोगिस्वर्ग सुख पुनि धरि देहा * होहिं सोय नृप विनु सन्देहा ॥
संगम तट अक्षय वट तीरा * जोयसुकृतिजनतजहिंशरीरा ॥
विष्णु पारषद तेहि जन काहीं * रथ चढ़ाय हरिपुर लै जाहीं ॥

दो०–सुरसरि रवि नन्दिनीकर, प्रयत मध्य सुस्थान ।
अहै जघन मेदिनी कर, करत पुराण बखान ॥
अहै प्रजापति कर रुचिर, वेदी तीरथ राज ।
तासु दरस के लालसो, संतत देव समाज ॥

रम्य उर्वसी पुलिन सुहावन * सन्ध्यावट मानस मन भावन ॥
कोटि तीर्थ भवतारण कारी * गंगा यमुन शमन भयहारी ॥
अश्वमेध तीरथ सुखराशी * शुचिवासरकनरक दुखनाशी ॥
परम प्रयत यह तीर्थ सदाई * भुक्ति मुक्तिअभिमत फलदाई ॥
राजसूय मख कर फल लाहू * होत त्रिवेणि किहे अवगाहू ॥
हैं त्रिवेणि तट तीरथ जेते * पावन कुरु क्षेत्र सम तेते ॥

दो०–षष्टि कोटि अरु दशसहस, फलप्रद तीरथ भारि ।
अहैं सम्मिलित पुण्य तम, तीरथराज मझारि ॥
यहि निमित्तयहिधाममहँ, प्रकृत साधु गणजोय ।

चहैं मरण जाते वहुरि, आवागमन न होय ॥
कहकृत्तिवास जो माघमहँ, तीरथराज नहाहिं ।
तेहि जनकर शुचि पुण्यकी, सीमाजगमधिनाहिं॥

एकषष्टितम सर्ग ॥ ६१ ॥

वाराणसी माहात्म्य ॥

दो०—तीरथ राज प्रयाग ते, भूप दिलीप किशोर ।
हरि प्रदत्त शंख ध्वनी, करत चले घनघोर ॥
तिन पाछे अति वेग सों, चलीं शंभु प्रिय गंग ।
जहँजहँह्वैनिकरहिंसोथल, होतविशुचि अघभंग ॥

जहँ नर्मदा दिवाकर नन्दिनि ❋ सरस्वतिभवभीतिनिकन्दिनि ॥
मिलित परस्पर ह्वै सुख राशी ❋ निजनिज रहींतरंग विकासी ॥
तेहिथल मिली सुरसरिहु जाई ❋ भई जासु शोभा अधिकाई ॥
सो पिलपिला तीर्थ के नामू ❋ लिपि पुराणवद बुधगुणधामू ॥
शुचि नर्मदा सरस्वति यमुना ❋ यहतीनहुनदित्रिजगशोभना ॥
देव त्रिपिष्ट पलिंगहि नित नित ❋ अवगाहनहितभईंयहिथलथित॥
विशुचि पिलपिला तीर्थसुरोचन ❋ कह जेहि कोइ २ घाट त्रिलोचन
यहि थल मधि अवगाहत जोई ❋ ताहि कोटि तीरथ फल होई ॥
वाराणसि कर यहि सुस्थाना ❋ आदि भूमिवुध संत वखाना ॥
वाराणसि कहँ निखिल पुराना ❋ कीन्हे विविध नाम सों गाना ॥

दो०—आनँद कानन स्वर्गपुरि, काशी महा मसान ।
तीर्थरानि अविमुक्त यह, तिनमधि प्रथितमहान ॥
होय कर्म क्षय जीव गण, लहत मुक्ति यहि ठाम ।
यहि हित यहि थल करपरयो, काशीपुरिशुभनाम ॥

१—काशीखण्ड । २—कर्मणा कर्षणात्सावै काशीति परिकथ्यते । (ज्ञानसहिता४ ६।४६)

यह सुर वाञ्छित पुरी विशाला * नहिंविमुक्त शिवसन कोइ काला
यहि हित यह तीरथ जग धामू * है प्रसिद्ध अविमुक्त के नामू ॥
किरण जाल ते जिमि दिवसेशा * पृथकनरहहिं कबहुँक्षणलेशा ॥
तिमि उमेश वाराणसि काहीं * त्यागनकरहिं पलहु भरिनाहीं ॥
यह फलप्रद शुचि क्षेत्र सदाई * मर्त्य लोक ते पृथक सुहाई ॥
पर परि लिप्त विषय रस जोई * गुप्त विषय यह जानन सोई ॥
केवल भव विमुक्त सुधि साधू * ज्ञान धर्मगुण उदधि अगाधू ॥
ते निर्मल मानस दृग द्वारा * ज्ञात रहस यह सकल प्रकारा ॥
प्रकटी अव्यय पुरुष के चरणा * वाम ते असि दक्षिण ते वरणा ॥
दोउ नदि मध्य मुक्ति की दाता * राजहिं वाराणसि विख्याता ॥

दो०–सतयुग महँ नर मोक्षदा, काशी रक्षण काहिं ।
सरित वरा वरणा असी, प्रकट भईं क्षिति माहिं ॥
वरणा नदि पिंगला इव, असि नदि इड़ा स्वरूप ।
दोउ मधि थित अविमुक्तपुरि, अहै सुषुम्ना रूप ॥

रोला छन्द ॥

इन तिहूंन नाड़ी न जोययहि थल थित अहहीं ।
कवि को विद समुदाय ताहि वाराणसि कहहीं ॥

१–विमुक्तन्नमया यस्मान् मोच्यते वाकदाचन । गमक्षेत्रमिदं तस्माद विमुक्त मिति स्मृतम् (लिंगपु. ९२ । ४५) अपरंच–यत्र सन्निहतो नित्य मवि मुक्ते निरंतरम् । तत्क्षे त्रन्नमया मुक्त मवि मुक्तन्ततः स्मृतम् (मत्स्य पु. १८१ । १५) । २–भूर्लोके नैव संलग्न मन्तरीक्षे ममालयम् । अविमुक्ता न पश्यन्ति मुक्तापश्यन्ति चेतसा (कूर्म पुराण) । ३–चरणाद्दक्षिणात्तस्यविनिर्गता सरिद्वरा । विश्रुता वरणेत्येव सर्वपाप हराशुभा ॥ सव्या-दन्या द्वितीयाच्च असिरित्येव विश्रुता । ते उभेचसरिच्छ्रेष्ठे लोक पूज्ये बभूवभुः ॥ तयोर्म-ध्येतु यो देशस्तं क्षेत्रं योग शायिनः । त्रैलोक्य प्रवरं तीर्थं सर्वपाप प्रमोचनम् । न तादृशंहि गगने न भूम्यां न रसातले । तत्रास्ति नगरी पुण्या ख्याता वाराणसी शुभा (बामन पु.) ४–असिश्च वरणा यत्रक्षेत्र रक्षा कृतौ कृते । वाराणसीति विख्याता तदारम्य महामुने ॥ असेश्च वरणा याश्च संगमं प्राप्य काशिका (काशी खण्ड) । ५–सहो वाचेति जावालि वरुणोऽसिरिड़ामता । वरणापिंगला नाड़ी तदन्तस्त्व वियुक्तकम् ॥ सासुषुम्ना परा नाड़ी त्रयं वाराणसी त्वसौ । दतत्रोत्क्रमणे सर्वजन्तु नाहिं श्रुतौहरः (काशी खण्ड) ।

यथा धर्मकर सारसत्य श्रुति सम्मत संतत।
यथा मोक्ष कर रहस शांति इमि वदत संत यत ॥
तेहि प्रकार अत अहैं पुण्यमयि पुरी सुहावनि।
अहैं सबन मधिसार काशिपुरि कलुष नशावनि ॥
पञ्च कोस परिमाण काशि पुरि की क्षिति सारी।
निज त्रिशूल के उपरि कीन्ह थापन त्रिपुरारी ॥
प्रलय काल विकराल माहि सागर कर नीरा।
जेहि परिमाण ते बढ़त त्यागि करिकै निजतीरा ॥
तेहि परिमाण ते अधिक पुण्यतम यहिथल काहीं।
करि महेश उन्नमित थापही ऊँचे माँहीं ॥
काम्य विवर्जित अहैं जिते तीरथ समुदाई।
जिनकी महिमा गान करहिं सुर बृन्द सदाई ॥
तिन मधि है अतिश्रेष्ठ मुक्तिफल दायिनि काशी।
यहि हित यहिथलमाहिं सतत निवसत बुधिराशी ॥
यहि थलमहँ जग जनन काहिं मृतुसमय मझारी।
पावन तारक ब्रह्म नाम सिख देहिं पुरारी ॥
यासों यत कृत कर्म जीव गण कर क्षय होई।
करहिं मोक्ष पदलाहु देव दुर्लभ पद जोई ॥
मृत्य लोक महँ पापि गणन अघ नाशन हेतू।
विशुचि काशि पुरि काहिं कीन्हथापन व्रष केतू ॥

१–धर्मस्योप निषत्सत्यं मोक्षस्यो पनिषच्छमः क्षेत्रतीर्थोपनिषद्मविमुक्त विदुर्बुधाः (मत्स्यपुराण)। २–ब्रह्माण्ड मध्येन भवेत्पञ्चक्रोश प्रमाणतः। यथा यथाहि वर्द्धंत जलमेकार्णवस्पच ॥ तथातथोन्नये दीशस्तत्क्षेत्रं प्रलयादपि। क्षेत्रमेत त्रिशूलाग्रे शूलिनस्तिष्ठतिद्विज (काशीकाण्ड)। ३–यानि काम्य विमुक्तानि देवै रुक्ता नित्यशः। पुरीवाराणसी तेभ्यः स्थानेभ्योप्यधिका शुभा ॥ यत्र साक्षान्महादेवो देहांतेस्वयमीश्वरः। व्याचष्टे तारकं ब्रह्मतथैवह्य विमुक्तकम् (काशीखण्ड)। ४–पापिना पाप स्कोरनाय स्वयंहरः। मृत्यलोके शुभं क्षेत्रं समस्थायस्थितःसदा (शिव पु.)।

जोय अकाम सकाम धर्मि अपकर्मी कोई ।
अथवा तिर्य्यग योनि जात पशु पक्षिहु होई ॥
प्रयत शिव पुरी माहिं भूलिहू त्यागहिं देहा ।
पूज्य होहिं शिव लोक माहिं ते विनु सन्देहा ॥
दो०–अब मत काशीपुरी मधि, मुख्य मुख्य सुस्थान ।
जिन दर्शन ते नसत अघ, तिनकर करहुँ वखान ॥

नरिन्द छन्द ॥

प्रभु वाराणसीश मन्दिर ढिग अति सुन्दर मन भावन ।
सोह तीर्थ त्रय ताप पाप हर ज्ञान वापि जग पावन ॥
जासु विमल जल दरश परस आचमन ते ह्वै अघदाहू ।
राजसूय हयमेध यज्ञफल लाहु होय सब काहू ॥
अपर नाम यहि वापि केर यह वद कोविद समुदाई ।
शिव तीरथ ज्ञानोद तीर्थ अरु तारक शुभगति दाई ॥
सुभ्रम विभ्रम उभय गणन युत यहि वापी कर वारी ।
करहिं दण्ड नायक खल घालक निशि वासर रखवारी ॥
सोह शनैश्चर लिंग एक दिशि जिन अर्चन कर जोई ।
अंतकाल तेहि सुकृति मनुज कहँ लाहु स्वर्गपुरि होई ॥
देवि अन्न पूरणा अन्नदा राजहिं यक दिशि माहीं ।
जासुकृपासन असन कोइ जनअशन मिलत जेहिनाहीं ॥
अघनाशी सुखराशि विकासी काशीपुरी मझारी ।
यक दिशि सोह कालभैरव जोइ खल दुर्वृत्त संहारी ॥
इन विधि केर छेदि पञ्चम शिर तेहिथल महँअति पावन ।
किय कपाल मोचन सुभतीरथ थापन परम सुहावन ॥

१–अकामोवा सकामोवा ह्यपितिर्य्यगातोऽपिवा । अविमुक्ते त्यजन् प्राणान् ममलोके महीयते (शि. पु. ज्ञान सं.) ।

यक दिशि राजहिं दण्डपाणि प्रभु काशि नासि कहँ जोई।
ज्ञान मोक्ष प्रद अहैं कलुष क्षय जासु दरस ते होई॥
यक दिशि सोह नवग्रह मूरति यकदिशि महँ रत्नेश्वर।
जासु दरश करि कोटि कल्पभरि तजत न स्वर्गपुरी नर॥
मणिकर्णिका सोह यकदिशि महँ विदित जोय त्रय धामू।
प्रथमहि यहि पावन तम ह्रद कर रह्यो चक्रसर नामू॥
मणिकर्णिका नाम श्रुति भूषण शिवकर यहिथल गिरेऊ।
तब सों मणिकर्णिका नाम यहि शुचि सरवर कर परेऊ[1]॥
सुरसरि समनहिं अपर तीर्थ कोइ तहँ विशेष करि काशी।
तहँ विशेष मणिकर्ण घाट यह चारि पदार्थ विकाशी[2]॥
यक दिशि सिंहवाहिनी देवी राजैं काशि मझारी।
जासु दरसते सतत रुचिर फल लहत सकल नर नारी॥
सोह एक दिशि विशुचि तीर्थ वर दशाश्वमेध ललाम।
रह्यो पूर्व महँ यहि तीरथ कर रुद्र सरोवर नामा॥
पर जब सो यहि प्रयत ठाम महँ मख पद्मासन करेऊ।
नाम दशाश्वमेध तेहि क्षण सों यहि तीरथ कर परेऊ[3]॥
विपुल पुण्य प्रद यहि तीरथ महँ अवगाहत जन जोई।
रुज वर्जित ह्वै तेहि जन कहँ दशाश्वमेध फल[4] होई॥

१–चक्रंपुष्करिणी तीर्थं पुराख्यातामिदं शुभं। त्वयाचक्रेश खननाच्छङ्ख चक्रगदाधर। मम कर्णात्पयातेयं यदा च मणिकर्णिका। तदा प्रभृति लोकेऽत्र ख्यातास्तु मणिकर्णिका॥ (काशीखण्ड)। २–नास्ति गंगा समं तीर्थं वाराणस्या विशेषतः। तत्रापिमणि कर्णख्यं तीर्थं विश्वेश्वर प्रियम् (सौर पुराण)। ३–सहाय्यं प्राप्य राजर्षेदियोदासस्य पद्मभूः। इयज दशभिः कस्या मश्वमेधैः महामखैः॥ तीर्थं दशाश्वमेधाख्यं प्रथितं जगतीतले। पुरो रुद्रसरो नामत त्तीर्थं कलशोद्भव। दशाश्वमेधिकं पश्चाज्जातं विधिपरिग्रहात् (काशीखण्ड)। ४–तत्रस्नाता महाभागे भवन्ति निरुजानराः। दशाश्वमेधानां फलंतत्र प्राप्नोति मानवाः॥ (मत्स्य पुराण)।

ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा दशहरा माहिं जोइ नर नारी।
सहित भक्ति अवगाहन करहीं दशाश्वमेध मझारी॥
अरु तेहि थल थित ब्रह्मेश्वर कहँ अर्चें सहित उछाहू।
तेहिं दश जन्म केर अघक्षय ह्वै होत ब्रह्मपुर लाहू॥
शुचि पिशाचमोचन वर तीरथ सोह एक दिशि माहीं।
गया यात्रि जेहि प्रथम दरश करि बहुरि गया कहँ जाहीं॥
यहि तीरथ की उत्पति यहि विध लिपि पुराण यक काला।
आयो प्रयत काशि पुरि माहीं एक पिशाच कराला॥
तेहि गति सकन रोधि सुरगण तब करधृत दण्ड प्रचण्डा।
आय काल भैरव पिशाच शिर काटि कीन्ह युगखण्डा॥
बहुरि काल भैरव पिशाच शिर शंकर ढिग लै गयऊ।
सो तनुहीन पिशाच शंभुनुति करत भक्ति युत भयऊ॥
तब व्रषकेतु ताहि यह वर दिय जोइ गया कहँ जाहीं।
विनु तव दरश किये तिनकर कृति सफल होइ है नाहीं॥
तब सों यहि पिशाच के दर्शन प्रथम मनुज कर लेहीं।
बहुरि जाय निज पितर तरण हित पिंड गया मधि देहीं॥
सोहत यक दिशि कलुष विखण्डन सूर्य्यकुण्ड सुख दाई।
तेहि उत्पति यहि भाँति वदत सुधि साधु संत समुदाई॥
यक समय रुक्मिणी रमण प्रभु शाप साम्ब[१] कहँ दयऊ।
तासों जाम्वती नन्दन के कुष्टरोग तनु छयऊ॥
तब काशी मधि आय साम्व यक कुण्ड विनिर्मित कीना।
करि सभक्ति आदित्य अराधन भे अभिशाप विहीना॥
साम्ब प्रतिष्ठित सांवादित के करहिं दरश तिय जोई।
होय तिया सो स्वामि प्रिया अति विधवा कबहुँ न होई॥

१–जाम्ववती गर्भ सम्भूत श्रीकृष्ण के पुत्र।

यक दिशि सोह ध्रुवेश्वर मन्दिर सतत रुचिर फल दाई।
यहि लिंगहि थापन कियध्रुव जेहि अतुल भक्ति जगछाई॥
यक दिशि सोह पञ्च गंगा जहँ मिलीपञ्च स्रोत स्वति।
नाम धूत पापा कालिन्दी किरणा गंग सरस्वति॥
पञ्च गंग अवगाहि विन्दुमाधव दर्शन जे करहीं।
विषम गर्भ यंत्रणा सहन तेहि मनुज काहिं नहिं परहीं॥
कामेश्वर कर सुन्दर मन्दिर यक दिशि माहिं सुहाई।
जे सुर तरु सम साधु कामना पूरण करहिं सदाई॥
कामेश्वर के लिंग माहिं भे लीन स्वयं भगवाना।
यहि निमित्त स्वर्लीनहु तिनकहँ गायन करहिं पुराना॥
यक दिशि सोह केदारेश्वर शुचि तीर्थ स्वर्ग सुखदानी।
अवगाहन जेहि कुण्ड माहिं किय भव भाविनी भवानी॥
यहि निमित्त यहि तीरथ कर है गौरी कुण्डहु नामा।
याकर अपर नाम वद कोविद मानस तीर्थ ललामा॥

दो०—इमि अगणित तीरथ अहैं, शुभप्रद काशी माहिं।
जिनकर अतुलप्रभावगुण, वर्णन किहे न जाहिं॥
स्वयं भूत भावन विभू, भवानीश त्रिपुरारि।
जगमंगल हित अमृतमय, कहअस वचनपुकारि॥

मंत्रामृत युग अक्षर काशी * करहिंपान जे जगत निवासी॥
यह युग वर्ण मुक्ति फलदाई * जे सभक्ति उच्चरत सदाई॥
जे युग वरण श्रवण नितकरहीं * जे यह बीज मंत्र उर धरहीं॥
ते है कर्म वीज सों हीना * शम्भुमाहिं है जाहिं विलीना॥
विश्वेश्वर अर्चन मन लाई * करहिं सुकृति जनजोयसदाई॥
सकल कलुष तेहि है संहारा * मुक्तितीय सँग करहिं विहारा॥
यदपि सकल संसार मझारा * द्विजअभिशाप अटलअनिवारा

पर अघहारि काशि पुरि माहीं * फलत ब्रह्म अभिशापहु नाहीं ॥

सो०-शंभुधाम मणिमान, जेहि सम पुरिन त्रिलोकमहँ ।
जिमिनभथलमणिमान, जम्बुद्वीप महँ राजहीं ॥
शिवपुरि महँ तनुत्याग, किहेमनुजशिवगतिलहत ।
पर विनु भये बड़ भाग, कृत्तिवास सो गतिकठिन ॥

दो०-अपर ठाम कर पाप यत, काशी करहिं सँहार ।
पर काशी महँ अघकिहे, कबहुँ नाहिं निस्तार ॥
वाराणसि मधि अघनिरत, अघी नराधम जोय ।
कोटि कल्प दुख भोगहीं, घोर नरक परि सोय ॥

द्विषष्टितम सर्ग ॥ ६२ ॥

महर्षि जह्नु कृत सुरसरि पान ॥

दो०-भवतारिणि भव भामिनी, त्रिपथ गामिनी गंग ।
काशी ते आगे बढ़ीं, भूप भगीरथ संग ॥
कहुँ विस्तृत कहुँ संकुचित, कहुँ द्रुतगति कहुँ धीर ।
कहुँ वक्रगति गमनहीं, हरत जगत जन पीर ॥

सो०-मीन मकर शिशुमार, कमठ आदि जलजंतु यत ।
पाप हारि शुचिधार, माहिं भास रहे त्रासविनु ॥

यहि विध तुङ्ग तरंग विकासति * दर्शीजननत्रिताप विनाशति ॥
जहँ तपपुंज जह्नु ऋषि राई * राजत रहे समाधि लगाई ॥
प्रवल प्रवाह सहित तेहि ठांई * पहुँचि रमेश अंघ्रिजा जांई ॥
मुनिकर मख उपकरण समेतू * चलि बहाय लै पर्ण निकेतू ॥
ह्वै तेहिकाल सजग मुनिराजू * दृगउघारिलखिसुरसरिकाजू ॥

यक गंडुष महँ तपो निधाना ❋ करलिय सर्व गंगजल पाना ॥
चलि कछु दूरि दिलीप कुमारा ❋ बदन फेरि पश्चात निहारा ॥
सुरसरि चिह्नन तहँ लखि पाई ❋ होयचकित हियमधिअकुलाई ॥
पुनिपुनिचहुँदिशि नयनपसारी ❋ लखत चित्त इमिचिंतितभारी ॥
हाय आय को यहि थल माहीं ❋ हरिलै गयो देवधुनि काहीं ॥

दो०—सहसा नृपकर दृष्टिपरि, यक वटतरु तर जाय ।
ध्यान मगन द्युतितपनवत, राजतयक ऋषिराय ॥
मुनिहि देखि द्रुत जायढिग, नरनायक गुणऐन ।
वन्दि चरण कर जोरि युग, कह्यो सकातर बैन ॥

मोहि मुनीश जानि निज दासू ❋ देहु बताय कृपा करि आशू ॥
को मम जनिन देवधुनि काहीं ❋ हरणकीन्हयहिशुचिथलमाहीं ॥
यह सुनि कह सरोष मुनिराजू ❋ तैं भल कीन्ह नृपनजसकाजू ॥
गंग गमन हित का जग माहीं ❋ यहिमग त्यागिअपररहनाहीं ॥
तैं अहमित इत गंगहि लाई ❋ पर्ण कुटी मम दिहे बहाई ॥
मैं सुरसरिहि पान करि डारा ❋ अहैं सोअबमम जठर मझारा ॥
कहु विरंचि सन अब तैं जाई ❋ अथवा मम ढिग लाउलिवाई ॥
अथवा करु जोरुचै अब तोहीं ❋ अहै काहु सन शंक न मोहीं ॥
सुनि इमि जह्नु वचन महिपाला ❋ भयते कँपन लगे तेहि काला ॥
पुनि धरि धीर जोरि युगपाणी ❋ करिमुनिविनय कह्योइमिवाणी ॥

दो०—हे मुनिवर तप पुंज धर, महिमा अतुल तुम्हारि ।
ताहि कीरतन करनमहँ, गिरा असक्त हमारि ॥
नीच काक कलकंठ सम, निज ध्वनिते कोइकाल ।
नहिं प्रसन्न करि सकतहै, ऋतु पति काहिं कृपाल ॥

सो०—वदत सत्य मुनिराय, मैं यक दीन मलीन जन ।
प्रभुपद शरणविहाय, अपर नाहिं कोइ मोरिगति ॥

होइविदित प्रभुकाहिं, साठ सहस नृप सगर सुत।
भये छार क्षण माहिं, कपिल देव के रोषते॥
तिन अपमरण तरण सदुपाई * है सुरसरि यक मात्र गोसांई॥
पर यदि तिन प्रकटन प्रभुताई * प्रभुके उदरमधि जाइ विलाई॥
तौ कुल तरण आश मम जोई * मृग तृष्णावत निष्फल होई॥
विद्युताग्नि नव जलद मझारा * प्रकटि नशतद्रुत जौनप्रकारा॥
तेहि विध साधु विमल उरमाहीं * रहतअमर्ष अधिक क्षणनाहीं॥
सुनि नृप वदन सकातर वानी * ह्वै दयार्द कहमुनि तप खानी॥
सुनिय कुमार विनय गुण धारी * करतव्यथित मोहिंव्यथातुम्हारी
यदि मुखते शुचिसुर धुनिकाहीं * करहुँविनिर्गतयहिक्षणमाहीं॥
दो०–तौ उच्छिष्ट यहि सृष्टि कर, ऋष्टि हरणि ह्वै जाहिं।
अब उपाय उत्कृष्ट कोइ, दृष्टि परत है नाहिं॥
पुनिकछुक्षणकरिचिन्तवन, दक्षिण जानु विदारि।
कीन्ह विनिर्गत सुरसरिहि, जह्नु तपोवल धारि॥
सो०–परयो जाह्नवी नाम, यहि हित देवापगा कर।
होत लाहुहरि धाम, कृत्तिवास जिन दरशते॥

त्रिषष्टितम सर्ग॥ ६३॥

महा पातकी काण्डर की गङ्गा स्पर्श से मुक्ति॥

दो०–पुनि सवेग सुरसरि चलीं, नृप भगिरथ सँग माहिं।
जितवाहिततहँकीअवनि, तीर्थ सरिस ह्वै जाहिं॥

१–पद्म पुराण में लिखा है कि "विभेद जठरंविप्र कुशाग्रेण तपोनिधिः। निर्गता तेन मार्गेण जाह्नवीति परिश्रुता (पद्मपु. १६ अ.) महर्षि वाल्मीक ने लिखा है कि जह्नु ने कर्ण पथ से गंगा को वहिर्गत किया (वा. वालक. ४३ सर्ग)

सो०—ताहि समय कांडार, नामक रहयक द्विज अधम ।
तेहिसम त्रिजगमभ्कार, रह्यो अपर नहिं पापिनर ॥
सो निज कर्म विहाय, वार वधूरत रहत नित ।
बहुसतितियन भुलाय, करिदीन्हेसिगणिकानवश॥

द्यूत क्रीड़ छल मदिरा पाना ❋ तजियहव्यसन सोअपरनजाना
सो खल नरक कीट की नाई ❋ गणिका गृहमधि रहत सदाई ॥
इंधन चयन हेतु यक बारा ❋ गयोसो यकघन गहनमभ्कारा ॥
व्याघ्र एक तेहि कानन माहीं ❋ भखिडारेहुहनि तेहिशठकाहीं ॥
मुदगर पाश धारि तेहि काला ❋ आय कंक के दूत कराला ॥
कर्म शरीर बाँधि दृढ़ तासू ❋ तेहि लै चले धर्म पति पासू ॥
भख्यो व्याघ्रद्विज आमिषकाहीं ❋ अस्थि परीरहिं कानन माहीं ॥
सोइथल मधियक वायस अयऊ ❋ गहियकअस्थि उड़तद्रुतभयऊ ॥
सो जहँबह शुचि सुरसरि धारा ❋ पहुँचि जान चाह्यो वहिपारा ॥
सहसा तेहि लखि यक संचाना ❋ भपट्यो भगो काक लै प्राना ॥

दो०—पर न भाजि वायस सक्यो, धरयो श्येन तेहि काहिं ।
विप्र अस्थिभक्क भोर महँ, गिरी सुरसरी माहिं ॥
तासुअस्थिसुरसरिसलिल, परसतहीं सो विप्र ।
अघ विहीन ह्वै धारेऊ, रूप चतुर्भुज क्षिप्र ॥

तेहि क्षण तहँ हरिके गण आये ❋ यमकिंकरहि प्रहारि भगाये ॥
काण्डारहि चढ़ाय सुर याना ❋ विष्णुलोक कहँकीन्ह पयाना ॥
इतहि कंक किंकर अकुलाई ❋ धर्म राज ढिग द्रुतपद जाई ॥
मुदगर पाश फेंकि तिन आगे ❋ दृगभरि वारि कहन इमिलागे ॥
प्रभु हम सन तुम्हारि सेवकाई ❋ होइ न जहँ अनीति असछाई ॥
हरि दूतन हमारि गति आजू ❋ जोकिय कहत सो आवतलाजू ॥
वृथा न यह अनुमान हमारा ❋ उठ्यो आजुते तव अधिकारा ॥

शठ काण्डार कुटिल अपकारी * ख्यातअघीजो अवनिमझारी ॥
तेहि हमसों हरिदूत छिनाई * लै गे हरिपुर यान चढ़ाई ॥
तपन तनय सुनि दूतन वानी * उठे तुरत विस्मय उर आनी ॥

दो०—जाय इन्दिरा रमण ढिग, वन्दि चरण सुखदानि ।
जोरि पाणि दृग वारि भरि, कहन लगे इमि वानि ॥
लेहु स्वयं प्रभु आजु ते, निज प्रदत्त अधिकार ।
अब कछु शासन अघिनपर, रहिनहिंगयोहमार ॥

खल कांडार सरिस जगमाहीं * पापी अपर देखियत नाहीं ॥
का गुण देखि ताहि भगवाना * निजपुर करकियवासप्रदाना ॥
धर्मराज मुख सुनि इमि वानी * कहेहुविहँसि प्रभुशारँगपानी ॥
सुनिय तपन नन्दन मनलाई * वुधिअतीत मम चरितसदाई ॥
भव तारण हित संतत पावन * करहिं अनेक यतन उद्भावन ॥
मम विभूति कर विमल अनूपा * विमलोदका निदर्शन रूपा ॥
तेहिसम मनुज हृदय जेहिकालू * होइ विमलतजि कपटकुचालू ॥
तव ताकर सब अघ है नाशा * करहिंआयममनिकटनिवासा ॥

दो०—मनुजन हित चिंतना करि, स्वर्नदि महिमा हेत ।
काण्डरहि करि अनघ मैं, पिदियनिजसुभगनिकेत
सुरसरिपरसि समीरशुचि, जितक दूरि लगिजाय ।
तहँलगिधरहिं न पदकबहुँ, तव किंकर समुदाय ॥

रोला छन्द ॥

शापित तापित पापि मनुज कैसहु जोइ होई ।
मृतक भये तेहि अस्थि परै सुरसरि मधि जोई ॥
जलबुदबुद सम ताहु केर कल्मष है नाशा ।
धारि चतुर्भुज रूप आय निवसहि मम पासा ॥

करहिं गंग जल पान सदा बसि जाइ तट माहीं।
जानि विमलतादर्श पावनी सुरधुनि काहीं॥
करहिंविमलनिज चित्तराखि तिन केदिशिध्याना।
मोरे सम तिनकाहिं सतत कीन्ह्यो तुम ज्ञाना॥
यह निषेध करि दिह्यौ जाय निज दूतन काहीं।
तिन सुकृती जन निकट भूलि कबहूं जनिजाहीं॥
दो०–महिमा हरि अंघ्रिजाकर, सुनत कंक उर त्रास।
गंग प्रसंग पुनीत यह, वरण्यो कवि कृतिवास॥

चतुःषष्टितम सर्ग॥ ६४॥

सगर वंश उद्धार॥

दो०–अर्घीद्विजहि करिकै अनघ, दुरित दारिणी गंग।
गौड़ प्रांत पहुँचत भई, नृपति भगीरथ संग॥
पद्म नाम तहँ यक द्विजहि, देख्यो अग्र प्रयात।
जानि गंग तेहि भगीरथ, चलीं तासु पश्चात॥

हेरि पूर्व दिशि गंग प्रयाना * है भगिरथ भयभीत महाना॥
कह्यो पुकारि दोउ करजोरी * मातुगमन कीन्हेउ केहिओरी॥
कीन्हे गमन पूर्व की ओरा * होइ न सिद्ध मनोरथ मोरा॥
सुनि नृप वचन फिरी द्रुत गंगा * चलीं वहोरि भगीरथ संगा॥
पर जोइ स्रोत पद्म सँग गयऊ * सो पुनराय फिरतनहि भयऊ॥
तेहि सरिता कर पद्मा नामू * भयो ख्यात वदवुधगुणधामू॥
गंग शापते ताकर वारी * मुक्तिदायिनहिंजगतमझारी॥
अघनाशिनि सुरधुनि पुनराई * मिलीं अजय नदसों द्रुतजाई॥

१–टिप्पणी ४७ देखो। २–यह नद वंग प्रांतके बीरभूम वर्द्धमान ज़िला के मध्य में प्रवाहित है।

यह अवलोकि महा हर्षाई * कीन्ह शंखध्वनि सुरसमुदाई ॥
यहिहित थापन भा तेहि ठामा * घाट शंखध्वनि परम ललामा ॥

दो०—जे यहि पावन घाट महँ, अवगाहहिं नर नारि।
अयुत वर्ष सो हर्षयुत, निवसहिं स्वर्ग मझारि ॥
बहुरिजाह्नवीजगजननि, आगे कीन्ह पयान।
तहँयकथलमहँआयकिय, देवराज असनान ॥

सो०—यहि कारण तेहि ठाम, इन्द्रेश्वर तीरथ भयो।
लहत मनुज सुरधाम, जे यहिथल अवगाहहीं ॥

बहुरि गंग नृप संग सिधाई * पहुँची मेड़तैला मधि जाई ॥
तहँ ते नवद्वीप अभिरामा * जायकीन्हयकनिशिविश्रामा ॥
पुनि रमेश सरजिज पद जाता * पहुँची सप्तग्राम विख्याता ॥
यह शुचि तीर्थ प्रयाग कि नाई * संतति भुक्ति मुक्ति फलदाई ॥
पुनि आकना तदनु माहेशा * गई हरत दर्शीन कलेशा ॥
जब विहरद घाट पै गंगा * गई विकासन तुंग तरंगा ॥
तब भगिरथ प्रति वचन उचारा * है कहँ सगर सुतनकर छारा ॥
भ्रमण करत तव संग सप्रीता * भयो मोहि बहुकाल व्यतीता ॥
अब कत दूर जान मोहि होई * कहहु बुझाय पुत्र द्रुत सोई ॥
कह्यो भगीरथ प्रफुलित गाता * यहमैं सुन्यो जननिमुखमाता ॥

दो०—पूरुब दखिन के कोन महँ, जहां कपिल भगवान।
तिन आश्रम ढिग छार भे, भूप सगर संतान ॥
यह सुनि द्रुत शतधार ह्वै, बहीं गंग तेहि ठाम।
तिनमधिप्रविशिपतालमधि, एक स्रोत अभिराम ॥

१–टिप्पणी ४८ देखो। २–टिप्पणी ४६ देखो। ३–टिप्पणी ५० देखो। ४–नदिया जिला। ५–टिप्पणी ५१ देखो। ६–टिप्पणी ५२ देखो। ७–टिप्पणी ५३ देखो। ८–टिप्पणी ५३ देखो। ९–टिप्पणी ५४ देखो।

सो०—सगर सुतन की छार, जाय द्रवित किय धार सों।
ते सब है उद्धार, धारि चतुर्भुज रूपवर॥

चढ़ि चढ़ि सुन्दर देव विमाना * स्वर्ग लोक कहँ कीन्ह पयाना॥
तब भुजतोलि सुधारस सानी * कहसुरसरिभगिरथप्रतिवानी॥
लखहु सुवन तव पूर्वज वृन्दा * जात दिव्य दिवपुर सानन्दा॥
केवल यक्ष इन सबन मझारी * रह्योरीति वतजल अधिकारी॥
अपर सकल शुचि हरिपुर माहीं * करिहैं वास अंत जेहि नाहीं॥
देखि निजहि कृतकार्य्य भुवालू * मुदते है विभोर तेहिकालू॥
गिरिसुरसरि पद करिप्रणिपाता * प्रेम मगन रोमांचित गाता॥
महानन्द ते सुधि न शरीरा * नचन लगे दृग मोचत नीरा॥
तेहिक्षण नृपढिग आय विधाता * कहइमि वचन प्रफुलित गाता॥
सुनु कुलदीप दिलीप कुमारा * यशीन तो सम जगत मझारा॥

दो०—कीर्तिवान जन भये यत, यहि संसार मझारि।
तिनसब मधिभइआजसों, गणना प्रथम तुम्हारि॥
जगपावनि सुरधुनी कहँ, अवनि माहिं तुमलाय।
किहौ मुक्त सब जीवकर, मुक्ति द्वार सुखदाय॥

यहि हित नाम तुम्हार भुवाला * रहिप्रसिद्धजगमधिसबकाला॥
विष्णु अंघ्रिजा गंग तुम्हारी * भई आजुते ज्येष्ठ कुमारी॥
तिनकर शुचि भागीरथि नामा * होई प्रथित सकल जगधामा॥
असकहि कमल योनि भगवाना * कीन्हमुदितनिजलोकपयाना॥
नृपति भगीरथ सों तेहि काला * कहसुरसरि इमिवचनरसाला॥
भयो तात सफलित तव काजू * सानँद करिय जायअवराजू॥
मइूं मिलन सागर मधि जाई * असकहितेहिदिशिवेगसिधाई॥
मिलीं सिन्धु सो लखि सुरव्रता * कहजय जयतिसुरसरीमाता॥

हरिगीतिक छन्द ॥

जय त्रिदिव तारणि तापत्रय वारिणि सुमङ्गल कारिणी।
कलिकलुष हारिणि धरणिपावनि ईश शीश विहारिणी ॥
जय भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी दुरितोघ मर्दनि त्रिपथगा।
जय जह्नु नन्दिनि शुभ सदनि भवभयकदनि देवापगा ॥
जय भगवती भागीरथी परमार्थ पंथ प्रदर्शनी।
अघग्रंथि मोचनि नित त्रिलोचन चारु चित आकर्षनी ॥
जो जन निवसि शत योजनहु पै नाम तव सुमिरन करै।
सो ह्वै नितांत कृतांत भयते शांत पुनि नहिं तनुधरै ॥
सउमंग गंगे तव तरंगे विहग अंगहु गाहरीं।
तेहि संग तुंग तुरंग मातंगय नृपन तुलना नहीं ॥
सुर तृषिका तव मृत्तिका शुचि भालपट लेपन करे।
अघ ओघ सो इमि वारही जिमि मिहिर निहारहि हरे ॥
त्वयि मज्जि दुर्जन सुजन गति इमि दुहुन वेद वखानही।
ह्वै यक समान विमान चढ़ि गीर्वान पुरहि पयानही ॥
यत तीर्थ हरिकृत गया मथुरा प्रयागदिक पुण्यदा।
तिन मध्यसार स्वरूपिणी भव वन्दिनी सुरधुनि सदा ॥
सातंक कंक के वंक किंकर होहि नित जेहि नामते।
जेहि दिशि प्रयात परात पातक पुंज मनुज शरीर ते ॥
कृत्तिवास जेहि सहवास के अभिलाष वश निज शिरधरे।
सब आश तजि कृत्तिवास तेहि पद दास ध्यावत मुदभरे ॥
पत दुरित विदलित कारि यह सुरसरि चरित जे गाइहैं।
ते सतत अभिमत प्रयत फल लहि विष्णुधाम सिधाइहैं ॥
अघ भंग गंग प्रसंग कालि पुराण मत उलथा किये।
द्विज दीन मथुरा ताहि छन्दोवद्ध किय प्रमुदित हिये ॥

पञ्चषष्टितम सर्ग ॥ ६५ ॥

गंगामाहात्म्यप्रसङ्गमैंनृपसौदासकाउपाख्यान ॥

दो०—कुल उधारि नृप भगीरथ, अवधपुरी महँ आय ।
राजकाज लागे करन, वर्तत नीति सदाय ॥
भगिरथ के कछुकालमहँ, भयो एक संतान ।
नामजासुश्रुत अमितबल, गुण महँजनक समान ॥

सो०—सुतहि समर्थ निहारि, दै राजा सन भगीरथ ।
सब वासना बिसारि, किय निवास सुरसरीतट ॥

परम प्रयत भगवत पद ध्याना * करि बहु कालभूप मतिमाना ॥
बहुरि शरीर त्याजि नर नाहू * कीन्ह्यो सुभग मुक्तिपदलाहू ॥
अवधाधिप नृप श्रुतके नन्दन * भयेनामखल वृन्द निकन्दन ॥
ता सुत सिन्धु द्वीप कुल दीपा * तिनके सुतअयुताश्य महीपा ॥
नृप अयुताश्य तनय विख्याता * भे ऋतुपर्ण सर्व गुणज्ञाता ॥
यहि ऋतुपर्ण महीप प्रवीना * नलहि अक्षविद्या सिखदीना ॥
अरु तिनसों अति नेह बढ़ाई * सीखेहु हय विद्या मनलाई ॥
नृप ऋतुपर्ण के तनय ललामा * प्रकटे सर्वकाम जिन नामा ॥
सर्वकाम सुत नृपति सुदासा * तिनके तनय भूप सौदासा ॥
मृगयाहित सौदास भुवाला * गयेसघन वनमधि यककाला ॥

दो०—तहँयकनिशिचर निशिचरी, धारि व्याघ्र कररूप ।
क्रीड़त मदमाते मुदित, देखहु तिनकहँ भूप ॥
प्रकृत व्याघ्र तेहि जानि कै, तानि चाप खरबाण ।
मारेहु श्रुति लगि कर्षिधनु, भयहुव्याघ्रगतप्राण ॥

तब निशिचरी विकल ह्वै भारी * कह नृप सों स्वरूप निजधारी ॥

कस विनु दोष किहे रतिकाला * मारेहु मम प्रियपतिहि भुवाला ॥
यहि कल्मष ते कछु दिन माहीं * होई ब्रह्म शाप तुम काहीं ॥
इमि निशिचरी नृपहि दै शापा * गईवनमधिदुरि करतविलापा ॥
तब उदास चित विगत उछाहू * आये फिरि निजगृहनरनाहू ॥
निशिचरिवचनकुलिशध्वनिनाई * कर्ण कुहर मधि ठनक सदाई ॥
यक दिन सभा माहिं महराजू * बोलिसुहृदजन जोरि समाजू ॥
निजकुल गुरुवशिष्ठ मुनि आगे * वरणिविपिन घटना दुखपागे ॥
पुनिकह करिय यतन असकोई * जासों शाप फलै नहिं सोई ॥
कह मुनि अश्वमेध मख करहू * होइ शाप क्षय धीरज धरहू ॥

दो॰—गुरुनिदेश अवधेशलहि, ऋषिमुनि द्विजनबुलाय ।
क्रियआरँभ हयमेधमख, सविध उछाह बढ़ाय ॥

सो॰—इत यहकीन्ह विचार, पति वियोगिनी निशिचरी ।
निष्फल शाप हमार, होत बहुरियह युक्ति किय ॥
धरि वशिष्ठ कररूप, जाय कह्यो सौदास सों ।
आज करावहु भूप, सामिषान्न भोजन हमहिं ॥

गुरु आयसु लहि कह्यो नरेशा * शिरोधार्य प्रभुकेर निदेशा ॥
सन्ध्यादिक कृति करि निर्वाहू * आवहु द्रुत सकृपा ऋषिनाहू ॥
प्रभु अभिलषित अन्न मैं जाई * अबहीं रँधन देत कराई ॥
सुनि नृप वचन हृदय हुलसाई * निशिचरि तहँते तुरतसिधाई ॥
वहुरि सोय माया विनिभारी * तुरतहि वेष सूद कर धारी ॥
करि प्रवेश रंधन गृह माहीं * रींधि नरामिष कह नृपपाहीं ॥
मुनिवशिष्ठ हित अशन रसाला * अहै सकल प्रस्तुत महिपाला ॥
लखत रहे मुनिवाट भुवाला * देखेहु जबहिंभयो अतिकाला ॥
तब मुनिवर कहँ बोलि पठायहु * सहितविनयअस वचनसुनायहु ॥
प्रभुहित प्रस्तुत अहै अहारा * चलिय अशनगृह कृपाउदारा ॥

दो०—नर नायक कर प्रेम लखि, ह्वै सहमत मुनिराय ।
भोजनगृहमधि कियगमन, भूपहि संग लिवाय ॥
छल वेशिनी निशिचरी, दै आसन मुनि काहिं ।
नर आमिष कर थार ले, धरिदियसन्मुखमाहिं ॥

मनुज मांस लखि मुनि तपऐना * कह सरोष नृपप्रति इमिवैना ॥
रे नृपकुल कलंक अघखानी * अस मतितोरि भईअभिमानी ॥
मोहि निज भवन माहिं बुलवाई * किय उपहास काह मनलाई ॥
यहि अघते नर पलभखकारी * होउ ब्रह्म राक्षस कुविचारी ॥
सुनि विनुदोष निदारुण शापा * भूपहु हृदय क्रोधअतिव्यापा ॥
गुरुहि शापहित लै जल हाथा * मुनिवरप्रतिइमिकहनरनाथा ॥
मै न तुम्हारि कीन्ह कछु दोषा * दिहो शाप सहसा करि रोषा ॥
महूं शाप दै यहि क्षण माहीं * करिहौं भस्म राशि तुम काहीं ॥
नर नाथहि अभिशप्त निहारी * ह्वै अतिमुदित निशाचरनारी ॥
गृहते निकरि लोप ह्वै गयऊ * तबमुनिउरविस्मयअतिछयऊ ॥

दो०—ध्यान योगते वहुरिमुनि, जानि मर्म सब लीन्ह ।
यह प्रपञ्च सोइनिशिचरी, नृपहि शापहित कीन्ह ॥
तेहि अवसर आई तहां, मदयंती नृपरानि ।
भूप पाणि धरि विनययुत, कहनलगीं इमिवानि ॥

सो०—करत काह यह काज, महाराज अस उचितनहिं ।
गुरु वशिष्ठ मुनिराज, पूज्य हमारे आपुके ॥

गुरु सदाय देवता समाना * तिन्हैंशापजनिकरियप्रदाना ॥
यह दुखजानि भाग्य कर दोषा * होहुशांत प्रभु त्यागिय रोषा ॥
सुनि इमि भूप रानि मुख बानी * त्यगेहु क्रोध दैव गति जानी ॥
वहुरि अवधपति हृदय मझारा * करनलगे यहि भांतिविचारा ॥
मैं अब यहि अमोघ जल काहीं * निक्षेपहुँ कौने थल माहीं ॥

यदि डारहुँ जल गगन मझारा * तौ ह्वै जाहिं देवगण छारा ॥
पुरि पताल मधि फेंकहुँ जोई * तौ क्षय नागवंश सब होई ॥
यदि धरणी मधि देहुँ बहाई * तौ सब शस्यध्वंस ह्वै जाई ॥
अस चिन्ता करि नृपति प्रवीना * सोजल डारिस्वपद पै लीना ॥
तेहिजल सों दोउ चरण भुवाला * भे कल्माष वर्ण तत्काला ॥
तब ते ख्यात भयो तिहुँ धामा * नृप कल्माष पाद तिननामा ॥
तब मुनिवर उरमाहिं लजाई * कह नृपसों अस वचनवुझाई ॥

दो०—हे नरनायक वचन मम, मृषा होइहै नाहिं ।
ह्वै निशिचर द्वादश वरष, विचरहु कानन माहिं ॥
ह्वै हौ शाप विमुक्त पुनि, परसि सुरसरी वारि ।
धरहु धीर उरमाहिं नृप, विधिगतिअटलविचारि ॥

पद्धटिका छन्द ॥

मुनिराज वचन ते तुरत भूप । धारयो अति भाषण रक्षरूप ॥
तनु वर्ण नील अंजन समान । मुखविवर भयंकर अति प्रमान ॥
रदपांति विरल तीक्षण मलीन । अधरोष्ठ जम्वुफल सरिस पीन ॥
प्रज्वलितहुताशन शिखान्याय । अति विकट लोल रसनालखाय ॥
दृग नील पीत जिमि चक्रि चक्र । मल पूरित नत नासिका वक्र ॥
मुख शीश केश घन ताम्र वर्ण । हय कर्ण पर्ण इव उभय कर्ण ॥
गलअति प्रकांड जनु विटपकांड । दुर्गठन जठर जस वृहत भांड ॥
युग जंघ थूल पद लम्वमान । करक्षुद्र प्रखरनख असि समान ॥
अति पुष्ट रज्जु सम शिराकांय । उभरेतनु मधि यकयक लखांय ॥
इमि घोर रूप नृप कर निहारि । लहिशंक भगे भृतसचिवझारि ॥

दो०—भूपहु मुनिदिशि फारिदृग, हेरि घोर हुंकारि ।
राजभवन तजिकियगमन, प्रविशे गहन मझारि ॥

निजप्रति अगणित मनुजपशु, बधिभूपति सौदास ।
द्वादश वत्सर माहिं किय, बहुपुर बनहि विनाश ॥

सो०-निशिचर रुपि भुवाल, यहिविधविचरत नगरवन ।
भ्रमण करत यककाल, पहुँचे जाय प्रभास तट ॥

तहँत्रयदिवस न मिल्यो अहारा * तब भूपति ह्वै विकल अपारा ॥
तक विशाल तरुवर तर जाई * बैठ क्षुधातुर शीश नवाई ॥
तेहि तरुपै यक विकट दुरंता * निवसत ब्रह्म दैत्य वलवंता ॥
सो लखि नृपहिकहत इमिभयऊ * तुमकिततेयहिथलमधिअयऊ ॥
यह सदाब कर मोर निवासू * जाहु भागि यहिथलसों आसू ॥
तासु शब्द सुनि शीश उठाई * लखिदनुजहि कहनृपहुलसाई ॥
विनहिं प्रयास आजु कर्तारा * अकस्मात मोहिदीन्हअहारा ॥
असकहि पाणि पसारिविशाला * चाह्यो ताहि धरन महिपाला ॥
तब सों दनुजउर कीन्ह विचारा * विनायुद्धअब नहिं निस्तारा ॥
अस उर चिंति कूदि द्रुत परेऊ * गर्जत उभय महावल भिरेऊ ॥

दो०-पूर्वकाल महँ जौन विध, दनुज सुन्द उपसुन्द ।
किय तिलोत्तमाखुमुखिहित, महा भयंकर द्वन्द ॥
तेहि विध नृपति सुदासखुत, ब्रह्म दैत्य भट दोउ ।
मल्लयुद्ध लागे करन, तिनमधि न्यून न कोउ ॥

सो०-इमि दोऊन मझार, होत युद्ध रह मास षट ।
भइ न काहु की हार, रहे समान नित दोउ भट ॥

उभय वीर तब युद्ध विहाई * कीन्ह परस्पर गूढ़ मिताई ॥
पुनिजेहि भांतिशाप नृप लहेऊ * सो सब ब्रह्म दैत्य सन कहेऊ ॥
तब दैत्यहु कह सुनिय नरेशा * रह्यो महूं यक श्रेष्ठ द्विजेशा ॥
रह वरदत्त ख्यात मम नामा * पठन हेतु निवसत गुरु धामा ॥

१-टिप्पणी ५५ देखो ।

गुरु बहुकाल माहिं मन लाई * सकल शास्त्र श्रुति मोहिं पढ़ाई ॥
कह दक्षिणा तात मोहिं देहू * लहिआशिष गमनहुनिजगेहू ॥
सुनि यह वचन दैव आधीना * मैं उपहास गुरू कर कीना ॥
तब गुरु हृदय रोष अति छयऊ * लै जल तुरत शाप यह दयऊ ॥
ब्रह्म दैत्य ह्वै तैं कुविचारी * निबसुजाय घनगहनमझारी ॥
जबहि परसि है सुरसरि वारी * ह्वै है तेहि क्षण मुक्तिविहारी ॥

दो०—इमि सुनाय निजनिजकथा, व्यथानिवारणकारि ।
यथा तथा सोचन लगे, शुचि त्रिपथा कर वारि ॥
इत उत विचरतयकदिवस, लख्यो एक थल जाय ।
सुरसरि जल घट करगहे, रहे भारगव आय ॥

तिनमुनिनिकटउभयजन गयऊ * रोकि पंथ इमि भाषत भयऊ ॥
यक यक विन्दु सुरसरी वारी * दै वारिय मुनि व्यथा हमारी ॥
यहसुनिऋषि भार्गव इमिकहेऊ * अग्रभाग शिवकर यह अहेऊ ॥
सो प्रथमहितुम दोउजन काहीं * मैं दै सकत कोइ विध नाहीं ॥
यह सुनिकह्यो उभय इमिबैना * तुममधि लेश ज्ञान मुनिहैना ॥
यहि जल केर अग्र पश्चाता * दोउसम तुल्य वदत बुधव्राता ॥
तब मुनि राज ध्यान ते जाना * यहदोउ शापितमनुजसुजाना ॥
कुश सों बोरि सुरसरी नीरा * दोउपरछिरकिदियोमुनिधीरा॥

दो०—पतित पावनी सुर धुनी, सलिल परसि तत्काल ।
शाप मुक्त तुरतहि भये, द्विजअरु अवध भुवाल॥
अधम तारिणी गंग की, महिमा अकथ अपार ।
कृत्ति बास अति क्षुद्रमति, वरणै कौन प्रकार ॥

श्री मद्भागवत के नवमस्कन्ध नवम अध्याय में सौदास का शाप प्रसंग किंचित भिन्न प्रकार से वर्णित हुआ है । विष्णु पुराण के ४ अंश ४ अध्याय में भी सौदास शाप प्रसंग है किन्तु भाग-

वत वर्णित कथा से उसका सम्पूर्ण सामञ्जस नहीं है ॥ यह निश्चित नहीं होता है कि कवि श्रेष्ठ कृत्ति वास जीने इस सर्ग की कथा वर्णन में किस पुराण विशेष का अवलम्बन किया है

षट्षाष्टितम सर्ग ॥ ६६ ॥

महाराज खट्वांग दिलीप का अश्वमेध यज्ञ तथा रघुकृतइन्द्र पराजय ॥

दो०—नृप सौदास के वंस धर, अश्मक नामि सुजान ।
अश्मक सुत मूलक भये, जो कुल मूल समान ॥
नृप मूलक के समय महँ, परसु राम भगवान ।
क्षिति निक्षत्रिय करनमहँ, रहे प्रवृत्त महान ॥

होय विवसना नारि घनेरी * चहुँ दिशि भूप मूलकहिघेरी ॥
परसुराम करते तिन काहीं * लीन्ह बचाय ख्यातजगमाहीं ॥
यहि हित अपर भूप करनामू * नारीकवच प्रथितजग धामू ॥
मूलक नाम केर यह हेतू * अहैं वदत बुध बुद्धि निकेतू ॥
क्षात्र वंश जेहि समय मझारा * करि डारेहु भार्गव संहारा ॥
पुनि तेहि प्रकटन मूल स्वरूपा * भये यही अश्मक सुत भूपा ॥
नर नायक मूलक के नन्दन * नृप दशरथरिपुगर्वनिकन्दन ॥
दशरथ सुत इलविल गुणव्राता * तिनकेतनय विश्वसहख्याता ॥
नृपति विश्वसह के कुल दीपा * सुयश राजि खट्वांगदिलीपा ॥
अमित वली दिलीप वर भूपा * भये न्याय मह धर्म स्वरूपा ॥

रामगीती छन्द ॥

सागर सहित महि मण्डलाधिप है दिलीप भुवाल ।
पालतप्रजन इमिजलद जिमि जगजीवकहँसबकाल ॥

वर राज नीति अर्थ नीति धर्म नीति सदाय।
भासत अवधपति मधि नीति त्रिवेणि संगम न्याय॥
जेहि भाँति ते पूरुब जन्मकर संस्कार निकाय।
कारजहि द्वारा यहि जगत मधिसतत जाना जाय॥
तेहि विध महीपति कर निगूढ़ सुमंत्रणाचय जोय।
ताके प्रवर्तित सुफल पुंजहि सोहिं सुविदित होय॥
नतु कतहुँ तिन आकार इंगित ते कोइ जनकाहिं।
तिन केर अभिमत कल्पनासम होय भासितनाहिं॥
आतुरी विनु धर्माचरण कर ग्रहण लोभ विहाय।
आसक्त विनु सुखभोग यह नृपकेर कृत्य सदाय॥
कछुकाल महँ महिपाल के जेहि विधि निशातमहारि।
पयसिन्धुते भे प्रकट इन्दु पियूष वर्षन कारि॥
तिमि नृपति रानि सुदक्षिणा के गर्भ ते सुखकन्द।
उत्पन्न यक सुत भयो जिन रघुनाम रविकुल चन्द॥

दो०—अल्प वयस महँ कुवँररघु, सकल शास्त्र पढ़िलीन।
बहुरि धनुर्वेदादि सिखि, भये महान प्रवीन॥
होय उग्रतर जौनविध, ग्रीषम ऋतु लहि भानु।
गजमद वारि संयोगते, वायु सहाय कृशानु॥

सो०—तिमि दिलीप महिपाल, सुत के भुजवल गुणनते।
दुसह तेज तेहि काल, भये तीनहू लोक महँ॥
चक्रवर्त्ति पद लाहु, करि हयमख एकोनशत।
किय समाप्ति नर नाहु, सहित उछाह विधानवत॥

बहुरि जबहिं नृप धर्म धुरीना * शततम मख आरंभम कीना॥
तब सकटक निज सुत रघुकाहीं * कियनियुक्त हय रक्षण माहीं॥
रघुरक्षित तुरंग स्वच्छन्दा * फिरनलागचहुँदिशिसानन्दा॥

जाहि जहहिं हय तहँकर भूपा * मिलै अग्रदै भेंट अनूपा ॥
पुरत मखहि लखि इन्द्र डराई * कहसविनय विधिकेढिगजाई ॥
करिशत मख दिलीपमहिपाला * लेनचहत सुर पुरयहि काला ॥
कौन यतन अब है यहि माहीं * जाते होय पूर्ण मख नाहीं ॥
कहविधिविहँसि सुनियसुरराई * करहु विघ्न मख अश्वचुराई ॥
यह उपाय सुरपति मन भायो * तबरघुकटकनिकटचलिआयो ॥
माया ते घन तम उपजाये * हरि तुरंग निजधाम सिधाये ॥

दो०—अकस्मात हय लोप लखि, भूप दिलीप कुमार ।
है विस्मित निजचित्त महँ, यहिविधकीन्हविचार ॥
सुर राजहितजि त्रिजगमहँ, अससमर्थ नहिंकोय ।
मम रक्षित मख तुरग कहँ, सकैहरण करिजोय ॥

सो०—अस विचारि अति घोर, कोपि दशम वर्षीयरघु ।
द्रुतगति सुरपुरि ओर, कीन्ह गमनसेना सहित ॥

यक पलमहँ रघु समर प्रवीना * सुरपुरिपहुँचिसिंहध्वनिकीना ॥
पुनि पुकारि कह अश्व चुराई * छिपिकै बैठ कहां सुरराई ॥
गगन भेदि रघुकर ललकारा * सुनिसुर नायककोपिअपारा ॥
चढ़िगजराज वज्र गहि पाणी * आय सामुहे कह इमि वाणी ॥
रे अवोध शिशु यहि थल तोहीं * लाई मृत्यु जानि पर मोहीं ॥
होय मशक तै भूधर भारा * चहसि उठावन निपट लवारा ॥
तवरुचि अहै लखन यम धामा * जो मोसन चाहसि संग्रामा ॥
कह रघु यह तुम्हारअभिमाना * विनु रणकिहे प्रलाप समाना ॥
हम तुम मधि जेतक बलताई * सो यहिकाल प्रकट है जाई ॥
बालक हमहिनिजहि बलवाना * प्रथमहि तेतुम करलिय ज्ञाना ॥
पर शिशु करसोंकेहिविध आजू * लहत उबार लखव सुरराजू ॥
यह सुनिकहसुरपति करिक्रोधा * काह तोहिंसुधि नाहिंअबोधा ॥

दो०—मुनिवर कपिल के धामते, मख हय लावन माहिं।
भोगन परयो विपत्ति कत, तव पूर्वज गण काहिं॥
चहसि काह साहन विपद, तोहूं सोइ प्रकार।
अहै कुशल यहिमाहिं द्रुत, निजपुर जाहुसिधार॥

सुनि अमरेश वचन रघु कहेऊ ❋ वाद विवाद वादिअब अहेऊ॥
यदि बीरता अहै तुम माहीं ❋ तौ गहुअस्त्र विलंब करुनाहीं॥
अस कहि धनु चढ़ाय टंकारा ❋ त्रयखरशर इन्द्रहितकिमारा॥
कुलिश सरिसलागत सोशायक ❋ भे विचलितसनागसुरनायक॥
बहुरि सँभरि दशशरपवि पानी ❋ त्यागहुधनुषश्रवणलगितानी॥
सोलखिरघुतजिविशिखविताना ❋ कियविखण्डआखण्डलबाना॥
पुनि प्रचण्ड यम दण्ड समाना ❋ लगे प्रहारण शर खर शाना॥
पाक शासनहु कोपि कराला ❋ सजनलगेअविरलशर जाला॥

हरिगीतिका छन्द॥

विजयाशि दोउवज्रराशि जीवन नाशि विशिख भयंकरा।
आकर्ण कर्षि शरासनहिं वर्षहि वितर्जि निरंतरा॥
बहुभांति अस्त्र अजस्र वारत हनत दोऊ परम्परा।
करलाघवी लखिअतिचकितअदितिजमनुजयत किन्नरा॥
द्विरदेन्द्ररोहि महेन्द्र सकटक ऊर्द्ध थल महँ राजहीं।
अरि दमन भूप दिलीप नन्दन निम्नथल महँ भ्राजहीं॥
यहि हेतु सुरपति क्षिप्त शायक अधो मुख ह्वै आवहीं।
अरु रघुविशिख सहपक्ष विषधर सरिस उर्द्धहि धावहीं॥
जे देव खरशर असुर शोणित करत संतत पानहीं।
ते आजु लहि मृदु नररुधिर उर माहि मुदित सोमानहीं॥
इमि करत रण रणधीर रघु यक बाण इमि तकि मारेऊ।
सुरराज कर कोदण्ड चण्ड द्विखण्ड द्रुत करि डारेऊ॥

दो०—तब सुरपति अति कुपितह्वै, वज्र अस्त्र कर धारि ।
महावेग ते मारेऊ, रघुके हृदय मझारि ॥
तेहि दारुण आघाततें, भूप दिलीप कुमार ।
गिरे अचेतन वक्षतें, वह शोणित अनिवार ॥

कुवँर दशा लखि कटक मझारी * हाहा कार मच्यो अतिभारी ॥
कछु क्षण महँ रघुचेतन पाई * गर्जत इन्द्र सामुहे जाई ॥
पाशुपतास्त्र घोर दुर्वारा * सुरपति ऊपर कीन्ह प्रहारा ॥
सो महास्त्र लागत सुरराई * गजते गिरे विवश घहराई ॥
बहुरि जिते भट सन्मुख आये * पल महँ रघुतिनसबन भगाये ॥
पुनि रघु लौह सांकरी माहीं * बांध्यो जकरि देवपति काहीं ॥
लै निज पावन याग तुरंगा * आये पितुढिग प्रमुदितअंगा ॥
इन्द्रहि डारि वन्दि गृह दीन्हा * नृप दिलीप मखपूरणकीन्हा ॥
सप्त दिवस जब सुरपति काहीं * भये व्यतीत वन्दिगृह माहीं ॥
तब विरंचि सुर गणन लिवाई * कह इमि वचन भूपढिगआई ॥

दो०—नृप बहु पुण्य प्रताप ते, निज समान गुण वान ।
लह्योतनयतुमसरिसजग, भाग्य शालिनहिंआन ॥
देत रघुहि यह वर जिते, ह्वै हैं तव कुल माहिं ।
ते रघुवंशि कहाइ हैं, यहिमधि संशय नाहिं ॥
यहिविधिसुनिविधिकेवचन, ह्वै प्रसन्न महिपाल ।
कारागार ते इन्द्रकहँ, किय विमुक्ततत्काल ॥
पुनियह सत्य करायलिय, रघु सुरनायक पाहिं ।
कबहुँ अयोध्या पुरी महँ, होय अवर्षण नाहिं ॥

सो०—बहुरि देव समुदाय, लै विदाय अवधेश सों ।
इन्द्रहि संग लिवाय, किय पयान सुर लोक कहँ ॥

प्रकट रिपुन उर त्रास, अद्भुत रघुकर चरितसुनि ।
अवलम्बन कृत्तिवास, जासु कुलजपद कमलयुग ॥

यह निश्चित नहीं होता कि रघुकृत इन्द्र का वन्दी होना कविवर कृत्तिवास ने किस पुराण से वर्णन किया है परन्तु उनके इस कथा में यहां कवि कालिदास कृत रघुवंस के तृतीय सर्गका आभास पाया जाता है ।

सप्तषष्टितम सर्ग ॥ ६७ ॥

महाराज रघु की दान कीर्ति ॥

दो०—अयुत वर्ष पालन प्रजन, करि दिलीप नरनाहु ।
पुनि राजासन दै रघुहिं, कीन्ह परमपद लाहु ॥

सो०—जिमि कृशानु कर ज्वाल, ग्रीष्म भानुके तेजमिलि ।
होत महान कराल, दुसहद्विगुण उत्तापमय ॥
तेहि विध रघुमति मान, पैतृक राजासनहि लहि ।
प्रथम ते अति द्युतिवान, भयेरहन रिपुजासुजग ॥

रोला छन्द ॥

मृदु मलयानिल न्याय भूप रघु धर्म निकेतू ।
करत प्रजन प्रतिपाल सतत नय नेह समेतू ॥
अदृस भावते स्वयं चञ्चला नृप शिर ऊपर ।
धारे रहैं सदाय छत्र अभिराम मनोहर ॥
वन्दि वृन्द के कंठ माहिं भारति प्रकटाई ।
करहिं मधुर ध्वनिगान भूपकर सुयश सदाई ॥
स्वयं धर्म वसि सचिव गणन के हृदय मझारा ।
सकल प्रजनपै करैं सर्वदा सद व्यवहारा ॥

विविध यज्ञ अरु श्राद्ध माहिं रघु धर्म धुरीना ।
अगणित धन मणि रतन याजकन विप्रनदीना ॥
धनदाधिक धनि भूप दान यहि विधते दयऊ ।
जाते तिन भण्डार शून्य सम्पति सों भयऊ ॥
दो०–तब नृप मृतिका पात्र महँ, करन लगे जलपान ।
पर याचक तिन द्वारते, विमुखन पावै जान ॥
सोइ समय वरतंतु मुनि, ढिगद्विजकौत्ससुजान ।
सकल शास्त्र पढ़ि करनचह, गुरु दक्षिणा प्रदान ॥
सो०–तब गुरु कह्योबुझाय, रुचिन मोहिं कोइ वस्तु कर ।
तुम जो कीन्हसेवकाय, अति प्रसन्नमैं याहिमधि ॥
पर द्विज कौत्स वारहीं वारा * करिहठयहिविधवचनउचारा ॥
कछु निदेश मोहिं देहु कृपाला * जो मैं पूर्ण करहुँ यहिकाला ॥
लखि हठ तासु रूसि इमि बैना * कह वरतंतु सर्वगुण ऐना ॥
बिशुचिचतुर्दश विद्यां माहीं * किहों पढ़ाय निपुण तुमकाहीं ॥
तदनुसार समुचित यह तोहीं * चौदह कोटि निष्क[1] दे मोहीं ॥
यह सुनि कौत्स चकित ह्वैभारी * अस चिंताकियहृदय मझारी ॥
इतक स्वर्णमुद्रा हम काहीं * मिलि हैकेहि जनते जगमाहीं ॥
बहुरि कीन्ह यहिभांति विचारा * रघुकर दान ख्यात संसारा ॥
तिन ढिग करहुँ याचना जाई * अर्पहुँ गुरु कहँ सुवरण लाई ॥
अस विचारि इमिकह गुरुपाहीं * दै हौं स्वर्ण सप्त दिन माहीं ॥
दो०–असकहिगुरुहिप्रणामकरि, गमन कीन्हद्विजराय ।
पहुँचे इतउत रमत पुनि, अवधपुरी मधिजाय ॥
देखेहु तहँ नृप भवनमहँ, हटक द्विजन हित नाहिं ।
तब हर्षित चित द्विजगये, भूपति रघुढिग माहिं ॥

१–टिप्पणी (५६) देखो २–मोहर ।

सो०—विप्रहि नृपति निहारि, दै आसन करिकै प्रणति ।
मृत्तिका पात्र मझारि, अर्घ्य पाद्य दियभक्तिसह ॥
सोविलोकि द्विजराय, ह्वैविस्मित इमि चिंत किय ।
मृत्तिका पात्र विहाय, है न अपर कछु भूप पहँ ॥
दैहैं कहँ ते लाय, स्वर्ण चतुर्दश कोटि मोहिं ।
अस चितमधि ठहराय, ह्वै हताश चाह्यो चलन ॥
सो लखि भूप कह्यो कर जोरी * हे द्विजराज विनय यहमोरी ॥
जेहि हित प्रयत किहौ मम गेहू * कहहु सो दास सोहिंकर नेहू ॥
सोसुनि द्विजइमिवचन उचारा * नृप तुम अहहुपुराय अवतारा ॥
मैं कछु दान ग्रहण के हेतू * आयहुँ तव ढिग रविकुल केतू ॥
पर विलोकि मैं दशा तुम्हारी * भयहुँचकित अतिहृदयमझारी ॥
तुमहि ह्वै रह्यो रंक समाना * किमि दै हौमम वांछित दाना ॥
यदपि चक्रवर्ती तुम भूपा * दान माहिं सुरदारु स्वरूपा ॥
पर लखियत तव वैभव माहीं * मृदापात्र तजि अरु कछुनाहीं ॥
तुम सन पुरी न आश नरेशू * देहु मोहिं अब गवन निदेशू ॥
यह सुनि कह नृप हे द्विजराजू * तुमहिंकितक धनकर है काजू ॥
दो०—विहँसि विप्रकह हे नृपति, इमि मोहिं रह्यो भुलाय ।
दैमोदक जिमिकोइ जन, शिशुहिलेत विजम्हाय ॥
कह नरेश तबआशद्विज, पूरण करहुँ न जोय ।
वदत शपथकरि तौहमहिं, सद्गतिलाहु न होय ॥
सो०—कहि हरि हरि द्विजराज, दोउपाणि धरिश्रुतिनपै ।
कह्योसुनिय महराज, करन उचितनहिंशपथअश॥
जगमधि तव अनुरूप, दान शील नहिं कोइ जन ।
सुवरण मुद्रा भूप, कोटि चतुर्दश चही मोहिं ॥
सो सुनि कह्यो भूप इमि बैना * मम गृह बसहु आजुकर रैना ॥

अवसि विप्रवर होत विहाना * तव वांछित धन करब प्रदाना ॥
ममगृह माहिंजानि मोहिंदाशा * करहु यज्ञ पावक सम वासा ॥
यह सुनि भे सहमत द्विजराई * तब नृप कह सेवकन बुलाई ॥
इन द्विजराज काहिं लै जाई * करहु सविधिसमुचितसेवकाई ॥
बहुरि अवधपति रघुगुणखानी * कहसचिवनप्रतियहिविधबानी॥
विप्र अभिलषित धन तुम जाई * देहु आशु संग्रह कर वाई ॥
कह सचिवन मुद्रा यहि काला * कोष माहिं नहिं अहै भुवाला ॥
सुनि महीप इमि सचिवनवानी * अतिचिंता उर माहिं समानी ॥
सोइक्षण मधिविधि मानसजाये * नारद मुनि नरेश ढिग आये ॥

दो०—मुनिहिहेरि करि नृपप्रणति, सादर आसन दीन्ह ।
बहुरि हेतु निज चिंत कर, विदितऋषिवरहिकीन्ह
सुनि नरनायक के वचन, विहसिकह्योऋषिराय ।
भूपति यहि लघुविषयकर, है अति सहज उपाय ॥

सो०—यदि तुम कहहु भुवाल, तौ जेतक धन चहत हौ ।
तव ढिग प्रातः काल, देहुँ पठय कहि धनदते ॥
सो सुनि हृदय मझार, किय विचार नरनाथअस ।
उचित न कोइ प्रकार, दान ग्रहण राजन्य कहँ ॥

मदनमोहन छन्द ॥

यह शोशिकै उर भूपवर । लागे करन वार्ता अपर ॥
कछु काल पै मुनि नृपति सन । लहि विदा किय तहँते गमन ॥
पुनि चिंति नृप कछु चित्त महँ । लिय बोलि सेनाध्यक्ष कहँ ॥
तिनसों कह्यो यहिविध वचन । हम जाब धनपति ते मिलन ॥
अति शीघ्रही चतुरंगदल । सज्जित करावहु अमित वल ॥
सो सुनि तुरत सेनप प्रवर । दल मधि निदेश महीप कर ॥
कीन्ह्यो प्रचार सो सुनत क्षन । लागी विपुल सेना सजन ॥

सैनिकन कर कलरव सघन । तुरगन हृषन्न वृंदन गजन ॥
घंटान बाजन घनन घन । खर अस्त्र पुंजन झनन झन ॥
तिन सवन ध्वनिसन गगनदरि । जनु गिरनचाहत क्षिति उपरि ॥

दो०—अवध पुरी मधि रहत रह, दूत धनद कर जोय ।
सहसा कलरव कटक कर, सुनि सो शंकित होय ॥
राज सचिवढिग जायद्रूत, पूँछेहु कहिय बुझाय ।
कौन देश आक्रमणहित, रही सेन यह जाय ॥

सो०—कह्यो सचिव हमपाहिं, काह चकित चित पूँछहु ।
अहै कुशलता नाहिं, यहिक्षण तवप्रभुधनदकर ॥
भूपति कहँ यहिकाल, प्रचुर स्वर्ण मुद्रा चही ।
सो यह सेन विशाल, चढ़ी जाय रहि उनहिं पै ॥

सुनत दूत गनि विषम विषादा * धाव देन धनदहि सम्वादा ॥
उत ऋषि नारद ब्रह्म कुमारा * अलका पुरी माहिं पगुधारा ॥
जाय यक्षपति ढ़िग इमि कहेऊ * काह निचिंत बैठ तुम अहेऊ ॥
जानिपरतमोहिंयहि क्षणमाहीं * तव पुरिकेर कुशल है नाहीं ॥
अवध अधीश ख्यातरघु केरा * भा धन सून्य कोष यहिबेरा ॥
अरुतिननरनायककहँ यहिक्षन * प्रचुर अर्थकर अहै प्रयोजन ॥
यहिहित यह अनुमान हमारा * करिहैं पुर आक्रमण तुम्हारा ॥
सोइ क्षण सो दूतहु कह आई * नृप रघु तुम पै कीन्ह चढ़ाई ॥
सो सुनतहि ह्वै भीत कुवेरा * अति सत्वर धनरत्न घनेरा ॥
बहु यक्षन के शीश धराई * दूत संग दिय अवध पठाई ॥

दो०—गुप्त भाव सों तेहि धनहि, नृप के कोष मझारि ।
राखि तुरत ते यक्ष गण, तहँ ते गये सिधारि ॥
समाचार सो पाय कै, भूपति रघुयश खानि ।
आशुकौत्स कहँ बोलि कै, कहसविनयइमिवानि ॥

सो०-हे द्विजवर धीमान, है यत धन मम कोष महँ।
सबतुम काहिं प्रदान, किधौं कृपाकरि जाहुलै ॥

चुलियाला छन्द ॥

सो सुनि द्विज निज कर्ण पै धरि दोउ कर इमिकहनृप पाहीं।
कोटि चतुर्दश स्वर्णते अधिक लेब हम रति भरि नाहीं ॥
सविनय सबधन ग्रहणहित कहत महीपति बारहिंबारा।
पर नृप मत सों विप्रवर सम्मत होत न कोइ प्रकारा ॥
यहि विचित्र व्यापार लखि अवध निवासी सकल सप्रीता।
कह धनि धनि दाता नृपति धन्य धन्य संतोषि गृहीता ॥
जब समस्त धन ग्रहण महँ सम्मत भये नाहिं द्विज राई।
तब भूपति निज कोष ते कोटि चतुर्दश स्वर्ण गनाई ॥
ताहि बहन हित भृत्य बहु संग विप्रवर के करि दवऊ।
गमन समय द्विज भूपकर पाणि धारि इमि भाषत भयऊ ॥
हे नरेन्द्र कुल शिरोमणि जोइ जग माहिं न्याय पथ द्वारा।
धन उपारजन करि बहुरि सद्व्यय करहिं धर्म अनुसारा ॥
तिनकर देवि वसुन्धरा पूरण करति सकल मन कामा।
पर प्रभाव तव अकथ है हेतु तासु यह नृप यश धामा ॥

दो०-तवअभीष्ट यहिकालसिधि, भयो स्वर्ग ते भूप।
काह देहुँ आशिष तुम्हैं, तुम कल्याण स्वरूप ॥

सो०-पर अशीष यह देत, जेहि प्रकार तव जनककहँ।
सबगुण सुयश निकेत, भयो लाहु तव सरिससुत ॥
तस तुमहू अवनीश, लहहु तनय वरआत्मवत।
इमि दै नृपहिं अशीष, लै धन गमने विप्रवर ॥

निजगुरु निकटकौत्स द्विजजाई * अर्पेहु धन पद शीश नवाई ॥
ऋषि वरतंतु तपोवल खानी * सो धन हेरि कह्यो इमिवानी ॥

मैं तपरत निर्जन वनवासी * अहै अर्थ अनरथ कर रासी ॥
जो यह धन रहिहै यहि ठाईं * रही दस्यु भय मोहिं सदाईं ॥
यहिहित सुरपति कोष मझारा * धरिआवहु तुम यहधनसारा ॥
यज्ञ समय जब होइ प्रयोजन * तब मँगाय लैहौं मैं यहधन ॥
गुरु निदेश लहि धनहि लिवाई * पहुँचे कौत्स इन्द्र ढिग जाई ॥
हेरि विप्रवर कहँ सुर राई * करि आदर पूंछेहु कुशलाई ॥
तब द्विजवर सो सब धन काहीं * राखिअमर पतिसन्मुखमाहीं ॥
निज गुरुकर निदेश रह जोई * किय ज्ञापितसुरराजहि सोई ॥
प्रचुर स्वर्ण सुरराज निहारी * पूंछेहु चित्त चकित ह्वै भारी ॥
विषय विरत तपनिरत उदासी * ऋषिवर तंतु अहैं बन वासी ॥
सो ये तक धन कहँ सन लहेऊ * सोसुनियहिविधद्विजवरकहेऊ ॥
गुरु दक्षिणा हेतु रघु पाहीं * यहधन यांचि दिहौंगुरु काहीं ॥

दो०—रघु प्रदत्त यह धन अहै, सो सुनिकै सुरनाथ ।
हंसि दशन रसनाहि इमि, कहधरिश्रुतिन पै हाथ ॥
हेद्विजवर पुनिपुनिविनय, तव समीप सिर नाय ।
यह धन लै यहि ठामते, आशुहि जाहुसिधाय ॥

सो०—रघुके नामते मोहिं, होत कम्प ज्वर सर्वदा ।
तिन नृपके भय सोहिं, आवत नींद न रैन महँ ॥

तासु शंकसों अवध मझारी * करत सदा खेतन रखवारी ॥
यह धन धरहु अनत लै जाई * नतु हमकहँ सो नृप द्विजराई ॥
निजधन अपहारी करि ज्ञाना * करिहै उत्कट दण्ड प्रदाना ॥
यह सुनिद्विजसोधनहि लिवाई * गुरुके निकट जाय पुनराई ॥
सब वृत्तांत कह्यो कर जोरी * सोसुनि ऋषिवर कह्योवहोरी ॥
अब यहिलै तुम आशुहि जाई * धनद कोष महँ देहु धराई ॥
सो सुनि द्विज कुबेर पहँगयऊ * तिनकरसौंपिसकलधनदयऊ ॥

सोलखि धनदवदत असभयऊ ❋ जाकरधनतेहिढिगपुनिअयऊ ॥

दो०—कृत्तिवास धन जहांकर, होत तहां चलि जात ।
ताके संग सम्बन्ध जग, क्षण थायी दर्शात ॥
राम नाम ही परम धन, सब साधन कर मूल ।
उभय लोक कल्याणप्रद, मथुरा ताहि न भूल ॥

(इस आख्यान में भी रघु वंश के पञ्चम सर्ग की छाया दृष्टि होती है)

अष्टषष्टितम सर्ग ॥ ६८ ॥

अजका जन्म तथा राज्य प्राप्ति और बिबाह ॥

दो०—रवि करत आलोक जिमि, लहत सकल संसार ।
द्विज आशिषतेतिमि लह्यो, रघुयक सुघर कुमार ॥
अभजित ब्राह्म मुहूर्त महँ, शशिसमान द्युतिवान ।
सती शिरोमणि नृप रमणि, प्रशव कीन्ह सन्तान ॥

सो०—यहि हित बुधि आगार, नृपरघु लैसम्मति द्विजन ।
द्रुहिण नाम अनुसार, धरयोनामशिशुकेरअज॥
जिमि यकदीपक काहिं, किहे प्रज्वलित अपर सो ।
रहत भेद कछु नाहिं, उभयदीप के शिखा महँ ॥
तेहि विधराज कुमार, वलबीरज गुणरूप महँ ।
भयेजनक अनुहार, स्वजनप्रजनसचिवनसुप्रिय ॥

वर्षसहस दशरघु महिपाला ❋ कीन्हप्रजनविधिवतप्रतिपाला ॥
पुनिनिज तनुज अजहिवरभूपा ❋ लखिसमर्थ सब गुणन अनूपा ॥
राजभार सब अर्पत भयऊ ❋ स्वयं योग साधन मन दयऊ ॥

करि हरि भजन सतत सउछाहू ❋ होय त्रिगुण विजयीनरनाहू ॥
तजितनु जगतराखि यशरासी ❋ भये रमा पति के सह वासी ॥
नृपरघुतनुज सकल गुण राजी ❋ पितु प्रदत्त राजा सन राजी ॥
अति विचित्रता ते सब काला ❋ लागेकरनप्रजन प्रति पाला ॥
शासन विधि अजकेरि निहारी ❋ इमि अनुभवकरपुरजनभारी ॥
जनुकरि बहुरि तरुणता लाहू ❋ करत राजकृति रघुनर नाहू ॥
राजकाज जब ते अज लयऊ ❋ तबतेद्विगुण विभव पुरछयऊ ॥

दो०—नृपवर रघुते रहि गये, अपराजित यत देश ।
सोउस्वराज्यसम्मिलितकिय, अजवलशालिनरेश ॥
पर विजीत क्षिति पतिनकहँ, नृपअजनीतिप्रवीन ।
उत्सादित सब भांति ते, यक वारही न कीन ॥

रोला छन्द ॥

जेहि प्रकार मृदु उग्र वायु बहि तरुवर काहीं ।
केवल देत झुकाय करत उन्मूलित नाहीं ॥
तिमि यक वारहि नृपन ध्वंस अज भूप न कीन्हा ।
क्रमक्रम ते तिन सबनकाहिं निजवश करि लीन्हा ॥
इमि महि मण्डल माहिं थापि यक छत्र स्वराजू ।
मंत्रि मंत्र लै भूप करहिं संतत सब काजू ॥
सोइ समय महँ विदर्भेशजा इन्दुमती कर ।
ठन्यो स्वयंवर गयेतहां अगणित भूपतिवर ॥
पाय निमंत्रण पत्र भूप अजहू तहँ जाई ।
रुचिर सभा मण्डपहि कीन्ह शोभित अधिकाई ॥
अति सुविचित्र विशाल स्वयंवर सभा मझारा ।
राजेउज्वल वेशधारि सब राज कुमारा ॥
जिमि अकेलि दामिनी भाग बहु करि निजकेरा ।

राशि राशि घन पटल माहिं दमकत चहुँ फेरा ॥
तिमिवहु भाग विभक्त रूप श्री करि निज काहीं ।
रहीं झलक प्रत्येक नृपति के अंगन माहीं ॥
पर अज केर अनूप कांति दिय सबन लजाई ।
यह भावत उर माहिं देखि तिनकर सुघराई ॥
जनु रति नुति ते चन्द्र मौलि प्रभुकरि अतिदाया ।
भस्मिभूत कन्दर्प काहिं अर्प्यो पुनि काया ॥
दो०--देखि सभामधि नृप गणहि, यकते यक गुणऐन ।
तब विदर्भपति विनय युत, कहन लगे इमि वैन ॥
सो०--सुनियसकलमहिपाल, निजरुचिते ममकुँवरिजेहि ।
पहिराई वरमाल, सविधि ताहि अर्पब सुता ॥
यदि ममसम्मतिमाहिं, सम्मत होहु समस्त नृप ।
तौनिज दुहिता काहिं, वेगि बुलाहु सभा मधि ॥
है मम कथन केर यह हेतू * जानिय सकल भूप कुलकेतू ॥
जाते वहुरि परस्पर माहीं * कलह विवादहोय कछुनाहीं ॥
सुनि अस वचन धर्म अनुरूपा * भे सहमत सहर्ष सब भूपा ॥
तब निज सुतहिं विदर्भ नरेशा * दुहितहिलावन दीन्हनिदेशा ॥
पितु आयसु लहि राजकुमारी * जोरतिशचिहिलजावनिहारी ॥
मन्द मन्द गति यथा गयन्दा * चलीसोहचहुँदिशिसखिवृन्दा ॥
कर सरोज धृत सुन्दर हारा * प्रविशी रुचिर समाजमझारा ॥
प्रविशत सभा विदर्भ किशोरी * इमिद्युति छायगयो चहुँओरी ॥
जनुविधिसिरजितअभिनवभासा* सहसा तेहिथल भयोप्रकाशा ॥
राजकुमारि रूप प्रभ परिके * दमक मुकुटमणिसब नरवरके ॥

रामगीती छन्द ॥

पूर्णेन्दुमुखि राजेन्द्र नन्दिनि इन्दुमति छविसार ।

जेहि प्रभाते अति चमत्कृत सारी समाज अपार ॥
नृपवृन्द तेहि करि ज्ञान अद्भुत इन्द्रजाल विशेष ।
ह्वै चित्रवत यक टक लखत तेहि दिशि निवारि निमेष ॥
सहचरी युत नरवर कुवँरि तहँ विचरि इत उत माहिं ।
खोजन लगीं निज मनोमत चिरसंगि सहचर काहिं ॥
तेहिक्षण नृपन मन राजनन्दिनि माहिं ह्वै गये लीन ।
यहि भाँति चिंता करहिं ते सबदेह सुधि वुधि हीन ॥
कोई विचारत मोहिं पै आसक्त भूप किशोरि ।
कोइ भावही कररहि कटाक्ष सुलोचनी मम ओरि ॥
कोइ जानही अनुराग युत सो आइ रहि मम पाहिं ।
कोइस्वगलमधितेहिभुज परससुखमानलियमनमाहिं ॥
कोइ भावही नृप कुवँरि पहिरावत हमहि वरमाल ।
इमि नृपन मनस मरीचिका मय ह्वै गये तेहिकाल ॥
पर सिन्धु अभिमुख गामिनी स्रोतस्वती करधार ।
उल्लंघि गिरि गन्तव्यपथ दिशि जात जौन प्रकार ॥
तिमि इन्दुवदनि गयंद गामिनि इन्दुमति सुकमारि ।
यकयकनृपनतजि बढ़तखोजत स्वामिनिजअनुहारि ॥
संचारिणी दीपक गयेबढ़ि अग्र जौन प्रकार ।
यत राजपथ थित होहिं अट्टालिका तिमिरा कार ॥
तिमिवढ़ै आगे इन्दुमति जेहि नृपहि करि पश्चात ।
कालि माच्छन्न विषन्न मुख तेहि भूपकर ह्वै जात ॥
विचरति कुवँरि इतउत वहुरि रघुतनुज अजहि निहारि ।
ठिठुकीं विमोहित होय पुनि पद उठ्यो नाहिं अगारि ॥
तिनके हृदय कर भाव चतुरा सहचरी लिय जान ।
सो विहँसि कह स्वामिनी आगेकरहु कसन पयान ॥

परिहासमय सुनि सखि वचन भूपति कुमारि लजाय ।
लखिवक्र दृष्टिते तासु दिशिलिय बहुरि शीशनवाय ॥
तेहि दृष्टिकर यह अर्थ तरु सहकार प्रफुलित पाय ।
तेहि तजि अपर पादपनिकट भ्रमरी कबहु नहिंजाय ॥
पुनि मन्द मन्द महीप नन्दिनि जाय नृप अजपाहिं ।
निज प्रणय रूपीमाल दिय पहिराय तिनगल माहिं ॥

दो०—यहविलोकिद्विजमुनिसुरन, प्रमुदितजयध्वनिकीन।
दिवस चन्द्रसम अपर नृप, वदन भये द्युतिहीन ॥
विफल मनोरथ सभाते, उठे सकल महिपाल ।
वैर अनलतिन हृदयमधि, धधकन लगे कराल ॥
पर विदर्भ पति के निकट, सकल हताश भुवाल ।
निजनिजचितकरकुटिलगति, प्रकटनकियतेहिकाल
विषम मकर कुंभीर मय, विमल नदी नद माहिं ।
ऊपर ते तेहि विकट भय, जेहिविध दर्शत नाहिं ॥

तिमि निराश भूपति समुदाई * चित थितईर्षा विषहि छिपाई ॥
वाह्यिक हर्षामृत वर्षाये * पुनिविदायलहिसकलसिधाये॥
ते सब भूपति कटक समेतू * वन मधि जायछिपे यहिहेतू ॥
जब अजकरि विवाह इत आई * तब तेहिहनि तियलेउँछिनाई ॥
उत प्रमुदित विदर्भ नरनाहू * करि मंगल उत्सव सउछाहू ॥
सविधि कुवँरि अर्प्यो अजकाहीं * दियवहुधनमणियौतुकमाहीं ॥
अजसह सोहि इन्दुमति कैसी * सह चन्द्रिका चन्द्र छवि जैसी ॥
तीन दिवस ससुरारि मझारा * करिनिवासअजसबगुणधारा ॥
बहुरि श्वसुर सन विनय समेतू * लहि विदाय पुरगमन केहेतू ॥
रोहि तीय सह सुन्दर याना * अवध पुरीदिशिकीन्हपयाना ॥
पथ मधि तियकेअंकधरिशीशा * गये सोय अजअवधअधीशा ॥

पहुँच्यो रथ सोइविपिनमझारी * जहँ रह लुके कुटिल नृपझारी ॥
दो०–नृपति वृन्दअज स्यन्द नहि, देखि वेगही धाय ।
यहि प्रकार घेरेहु यथा, दीपहिशलभनिकाय ॥
निद्रा वश निजनाथ कहँ, निरखि विदर्भ कुमारि ।
भई कम्पिता व्याघ्र दल, ताडितमृगिअनुहारि ॥
निद्रा भंग करन पति केरा * जानिरानि अपराध घनेरा ॥
यहि हित नृपहि जगावनरानी * केवल तजन लगीं दृगपानी ॥
तियके तप्त विलोचन वारी * परत अवधपति वदनमझारी ॥
जागि निहारयो चारिहु ओरा * घेरे घन इव रिपु दल घोरा ॥
पर कछु भयन भूप उर माना * अतिलघुतेहिविपदहिकरिज्ञाना॥
द्रुत निजपट सों तियदृग वारी * मोचि कह्यो सुनुप्राण पियारी ॥
तुम प्रसन्न मुख धीरज धारहु * यहिक्षणममकौतुकहिनिहारहु॥
मैं यहि तुच्छ भेक दल काहीं * करत विताडित यकपलमाहीं ॥
रघुकी शपथ सत्य करि कहहूं * यकशरत्याजिअपरयदिगहहूं ॥
अस कहि नर केशरी किशोरा * धनु चढ़ाय टंकारेहु घोरा ॥
दो०–जेहिविधि शशकसमूह लखि, मानत तुच्छ मृगेश ।
तिमि यावत नृपगणहिकिय, तृणवत ज्ञान नरेश ॥

षटपद छन्द ॥

लै गन्धर्व प्रदत्त वाण खरशाण भयंकर ।
कर्षि धनुष आकर्ण तज्यो खल रिपुदल ऊपर ॥
प्रलया निलते तूलराशिं जेहि विधि उड़ि जाई ।
तिमि तेहि अस्त्रते भगे विकल ह्वै रिपु समुदाई ॥
तबविजय डंकदै नववधू सहित स्वपुरमधि आयकै ।
नृपराज काज लागे करन धर्म सहित मन लायकै ॥

एकोनसप्ततितम सर्ग ॥ ६९ ॥

महाराज दशरथ का जन्म ।

दो०—लहिपति सब गुणगण सदन, सुन्दर मदन समान ।
इन्दु मती वसुमती दोउ, भई मुदवती महान ॥
भूपति रघुकुल तिलक अज, सुमुखिविदर्भ कुमारि ।
मृत्य लोक महँ राजहीं, इन्द्र शची अनुहारि ॥

हेरि परस्पर प्रेम तिनन्ह कर * रतिमनसिजहुक्षभितउरअंतर ॥
मानहु नृपवर अज मति धीरा * लोक दृश्य प्रत्यक्ष शरीरा ॥
अदृश प्राण रूपिणि महरानी * नित सम्बन्ध दुहुन करजानी ॥
अज शासन ते जौन प्रकारू * भइ क्षिति रत्न प्रसविनी चारू ॥
तेहि विध इन्दु मती पति प्राना * मनहुँ हरणसपत्नि अभिमाना ॥
यक सुन्दर सुत रतन सुहावन * कीन्हप्रसवत्रिभवनमनभावन ॥
तेहि कुमार कर नाम ललामा * भयो ख्यात दशरथ जगधामा ॥
दशरथ पूर्व जन्म आख्याना * लिखितविविधपुराणमतनाना॥
ते नृप यक मत के अनु सारा * हैं कश्यप मुनिके अवतारा ॥
सहित तीय ते हरि तप कीन्हा * असवर तिन्हैं रमापति दीन्हा ॥
कृतयुग महँ तव रुचि अनुसारा * तव सुत होब हरन महिभारा ॥
अपर एक मत लिखित पुराना * तोयहिथल महँकरहुँ बखाना ॥
यक द्विज पूरुब काल मझारी * भिक्षुनाम रहसब गुणधारी ॥
अति कर्कशा रही तेहि वामा * पति सोकलह करत वसुयामा ॥

दो०—यकदिनपतिसों कलहकरि, प्राण त्याग सो कीन ।
पति विरोध अघते भई, सो प्रेतनी मलीन ॥
प्रेत योनि महँ सोतिया, भरमत इत उत माहिं ।

१—अध्यात्म रा० आ० का० २-३ सर्ग ।

गइयक दिन हरिभजन रत, धर्मदत्त द्विज पाहिं ॥
सो०—पूजन हित द्विजराय, रहे पखारत तुलसि दल ।
तेहि प्रेतनी के काय, अकस्मातजलकणपरयो ॥
तेहि शुचि सलिल परस ते तासू * कछुक पाप है गयो विनासू ॥
तब प्रेतनी जोरि युग पानी * कहद्विजसनसविनयइमिवानी ॥
हे प्रभु अस कोइ अहै उपाई * जाते मम अघराशि नसाई ॥
कहद्विज पति द्रोहिनितियजोई * करिसकसो न पुण्य कृतिकोई ॥
सो करि स्वयं विविध आचारा * होहिं शुद्ध नहिं कोइ प्रकारा ॥
निर्मल सलिल उपरि जिमिकोई * खैंचहि रेख विफल सो होई ॥
तिमि पतिभक्ति विरततिय केरा * निफल धर्म ब्रत नेम घनेरा ॥
तियहि स्वामि सेवाहि सदाई * है यक मात्र उवार उपाई ॥
दो०—पर तारण शरणा गतहि, उचित मोहिं यहि हेत ।
जन्मावधि कर पुण्य फल, अर्द्ध तोहिं मैं देत ॥
असकहिद्विजतुलसीसलिल, सिंचि तासुतनु माहिं ।
द्वादशाक्षरी मंत्र पुनि, उपदेशेहु तेहि काहिं ॥
अघ विमुक्त है तब द्विज नारी * धरयोदिव्यतनुशचिअनुहारा ॥
तेहि क्षण विष्णु दूत तहँ आये * सुररथ पै द्विज तियहि चढ़ाये ॥
यह लखि धर्म दत्त मतिमाना * भये मुदित उरमाहिं महाना ॥
द्विजवर प्रति तब सह सन्माना * कह्यो दूत हे तपो निधाना ॥
पुण्यवान जन महँ तुम ऐसे * प्रणव श्रुतिन ऋचान महँजैसे ॥
स्वर्ग मृत्य मधि दोइ उदारू * क्षितिथल तुम सुरपुरसुरदारू ॥
तुमहूं सहित नारि तजि प्राना * जैहो हरिपुर चढ़ि सुरयाना ॥
तहँ वहुकाल मुदित मनलाई * करि कमलापति की सेवकाई ॥
दशरथ नाम ते बहुरि तुम्हारा * होइ जन्म रविवंश मझारा ॥

१—ॐ नमो भगवते वासु देवाय ।

यहिद्विज रमणिसमेत तुम्हारी ❋ ह्वै हैं सतिप्रधान त्रय नारी ॥

दो०—धर्मदत्त द्विज सोइ हरि, दूत वचन अनुसार।
दशरथ नामी भूपवर, अजके भये कुमार ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

दशशत प्रखर दिनकर सरिस दशरथ प्रभाशाली भये।
जिनकर महत कीरत प्रयत अचिरातदशदिशि मधिछये ॥
जिमि देह मधि शिर सुरन मधि हरिनरनमाहि महीसुरा।
सब धातु माहिं सुवर्ण जिमि ग्रह गणन माहिं दिवाकरा ॥
तीरथनमाहिंत्रिवेणि वरजिमि मणिन महँ कौस्तुभ मणी।
धनमाहिं विद्या श्रुतिन मधि उपनिषदजेहि विध अग्रणी ॥
गुणमधि क्षमा पूर्णिमतिथि मधि योगि माहिं उमापती।
तिमि जगतके नरपतिन मधि जोइ नृपतिवर सतपथव्रती ॥
जिनके तनय ह्वै स्वयं चिन्मय इन्दिरालय अवतरे।
कृत्तिवास तिनकर विमल गुणगण कीरतन केहिविधकरे ॥

अध्यात्म रामायणानुसार दशरथ पूर्व जन्म में कश्यप थे किन्तु इस विषय में विस्तर मतभेद है। इस सर्ग की कथा पद्मपुराण उत्तर खण्ड से गृहीत हुई है ॥

सप्ततितम सर्ग ॥ ७० ॥

इन्दुमती की मृत्यु व अज विलाप ॥

दो०—भूपशिरोमणिअजतनुज, दशरथ गुणगण खानि।
भये वर्ष दिनके निरखि, मुदित नृपति महरानि ॥
इन्दुमती सह यक दिवस, अज दिनेश कुलचन्द।
सुमन वाटिका मधि रहे, विहरत सहित अनंद ॥

१—पद्मपुराण उत्तर खण्ड ॥

सोई समय ब्रह्मसुत नारद * भवप्रमाद गतनाद विशारद ॥
करधृत सुन्दर वीण विशाला * शोभित पारिजात सुममाला ॥
हरिगुणगान करत ऋषिराई * रहे अकाश मार्ग ते जाई ॥
सहसः वीण लसित सो माला * मरुत वेगते खसि तेहि काला ॥
इन्दुमती के ऊपर गिरेऊ * तुरतहि रानि प्राण परिहरेऊ ॥
यह लखि भूप वरहु करज्ञाना * प्रियाप्राण सँग कीन्ह पयाना ॥
गिरेविवश क्षितिपतिक्षितिमाहीं * रह्यो देहकर सुधिवुधिनाहीं ॥
दीपशिखा ते जान सब कोई * निपतित तैल बूंद जब होई ॥
दीप शिखाहु केर कछु अंशा * तेहि सँग होत भूमिपर भ्रंसा ॥
कछुक्षण पै नृप चेतन पाई * मणिगतफणिसमानअकुलाई ॥

दो०—तंत्रिहीन वीणा सरिस, तिय शववाक विहीन ।
अति आतुर निज अंकपै, आरोपित नृप कीन ॥
भये नष्ट महरानि के, यत इन्द्रिय समुदाय ।
सकलअंगकी सुघरद्युति, यहिहित गई विलाय ॥
सो मृत गातहि अंगधरि, भूपति इमि दर्शाहिं ।
जिमि मृगांकधारी निशा, पति प्रभात क्षणमाहिं ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

निज रमणि जीवन संगिनीशव हृदय महिं लगायके ।
तजि धीर धरणीपति लगे विलपन महा अकुलायके ॥
हा यदि सुकोमल कुसुम पविसम प्रिया प्राण नसायऊ ।
तब भेद हैं नाशास्त्रके यत वस्तु विधि उपजायऊ ॥
अथवा सुकोमल वस्तु विनसत मृदुल वस्तु के द्वारहीं ।
लखियत तुषार फुहार अति सुकुमार नलिनि संहारहीं ॥
यदि कुसुम दाम ललाम यक असु नाशिनी अशनी रह्यो ।
तौ त्याजि ममतनु तरुहि तेहि आश्रित लताकहँकसदह्यो ॥

रे चेतना जग शोभना प्रियतमा संग सिधाय कै।
पुनि केहि निमित आये पलटि तिनकहँ अकेलि विहायकै ॥
प्रिय विरह सों अब सतत अप्रिय वस्तु के अनुहारही।
यह कुटिल जीवन देत रहिहै मोहिं दुःख अपारही ॥
अलि सरिस तव अलकावली मृदु अनिल ते कम्पत प्रिये।
जनु शांतचित तुम सोयरहि मोहिं होतयह अनुभव हिये ॥
अति घोर रजनी माहिं औषधि लता जौन प्रकारही।
निज तेज सों गिरि गुहाकर तिमिरांधकार निवारही ॥
तेहि भाँति हे प्राणेश्वरी अब विलँब नाहिं लगावहू।
अति शीघ्र उठि मम हृदय कर शोकान्धकार निवारहू ॥
दो०–कोकिकोककहँनिशिशशिहि,बिछुरिमिलतपुनराय।
यहिहिततिनन्ह बिछोहदुख, क्षणथायी दरसाय ॥

दिकपाल छन्द ॥

पर हाय प्राणप्यारी यहि मन्द भाग्य काहीं।
तजिकै गइउ चलीकहँ मिलिहौ बहोरि नाहीं ॥
अब कौन आश सों मम रहिहैं कठोर प्राना।
तापित मनहिं करौं मैं किमि सांत्वना प्रदाना ॥
मोहि जानि सहिन सकिहौं तव विरह प्राणप्यारी।
ममचितविनोदहितइमि निजछवि वितरिसिधारी ॥
निज मधुरवैन अर्प्यो कलकंठ विहग वृन्दहि।
सुन्दर सुचारु मन्थर गति हंसि औ गयन्दहि ॥
चपलाक्ष हरिणि गणकहँ मुखकांति रजनि कांतहि।
पर ये समस्त दहि हैं मम हृदय अब नितांहि ॥
यह सकल चिह्न रहतहु प्रियके विछोह माहीं।
अजकेर आजुते सुख रह शेष लेश नाहीं ॥

हे चारुहासिनी तव पालित अशोक तरुवर।
रह फूलि जासु सुम तोहिं भावत रह्यो निरंतर॥
कहँ तो प्रसून याके तव अलकदाम केरे।
होते सुचारु भूषण सरसात छवि घनेरे॥
अब होय सुमन प्यारी तव अंत कृत्य माहीं।
लगिहैं विसूरि तबहूं मम निकर प्राण नाहीं॥

दो०-हे मद रायत लोचनी, कोमल काय तुम्हार।
लहतनरह सुखनवमृदुल, रांकव सेज मझार॥
हायआजु केहिभाँतितेहि, सरज सरिस तनुकाहिं।
काष्ठ चिता पै धारिकै, देब अनल तेहि माहिं॥

यहि विध करतविलाप भुवाला * पुनितिय तनुतेलै सोइ माला॥
हाय उचारि स्वगल मधि धरेऊ * शोकते तुरत प्राण परिहरेऊ॥
इन्दुमती अज तजि इमि प्राना * मिलियकसँगकियस्वर्गपयाना॥
पूर्व जन्म महँ भूपति वामा * रहि अप्सराहरिणिजेहिनामा॥
एक समय ऋषिवर तृण विंदू * रहे उग्र तपरत सानन्दू॥
सो लखि सुरपतिउरभय छायो * हरिणीकहँ मुनिनिकटपठायो॥
तपो भंग हित विपिन मझारा * रच्यो प्रपञ्चसो विविध प्रकारा॥
सो लखिमुनिहिरोषअतिव्यापा * यहअप्सरहि दीन्हअभिशापा॥
ह्वै मानुषी मनुज पुर जाई * निवसु आशु सुरपुरी विहाई॥
सुनिअभिशापहरिणिअकुलानी * गिरिमुनिपदनकह्योइमिवानी॥

दो०-प्रभु यहि निर्बुद्धिनीसों, भयोमहा अपराध।
क्षमहुक्षमहुनिजओरिलखि, ऋषिवरकरुणागाध॥
होय सदय तब कह्यो मुनि, मृषा न बचन हमार।
अवसि तोहि धारण करन, परी मनुज आकार॥

सो०-पर यह देत वताय, लखिहै जब तें सुर सुमन ।
तब सो देह विहाय, जैहै सुरपुर वहुरि तें ॥

एक सप्ततितम सर्ग ॥ ७१ ॥

महाराज दशरथ की राज्य शासन विधि ॥

दो०-एक वर्ष के वयस महँ, अजसुत दशरथ काहिं ।
लखिवशिष्ठ पितुमातुविनु, भे सचिंत मन नाहिं ॥
बहु चिंताकरि पुनि तिन्हैं, निजगृह मधिलैजाय ।
लालन पालन नेह युत, करन लगे मुनि राय ॥
सो०-कुलगुरु भवन मझार, पांच वर्ष के भे कुवँर ।
सब अंगन छवि सार, राज चिह्न झलकन लगे ॥
तब वशिष्ठ मुनि परम प्रवीना ❋ तिन्है नृपासन कियआसीना ॥
बहुरि तिन्है ऋसिवरमतिमाना ❋ कीन्हनिखिलश्रुतिशास्त्रनिधाना
पुनितिन कहँ भार्गव ऋषिराई ❋ दै सिख धनुर्वेद समुदाई ॥
अर्पि महास्त्र अनेक प्रकारा ❋ सिखयोतिनन्ह प्रयोगसँहारा ॥
शव्द भेदि शरकर संधाना ❋ पुनिसिखदियमुनिपरमसुजाना
अवध पुरी कर शासन काजू ❋ जबते करन लगे महराजू ॥
तबते जिमि पुरि श्री अधिकाई ❋ संतत बढ़त प्रजन सुखदाई ॥
नृप के सद्गुण ते तेहि नाई ❋ राज श्रीहुनित बाढ़त जाई ॥
तिन शासन रहजहँ लग माहीं ❋ तहँ रिपुकसव्याधिहुरहनाहीं ॥
साम दान नृप केर निहारी ❋ सकल प्रजासब भाँतिसुखारी ॥
दो०-थिर तावल गम्भीरता, धीर वीरता माहिं ।
कीन्ह अतिक्रमअजतनुज, निजपूर्वजगण काहि ॥

शठ लम्पट मद्यप कृपण, चोर दस्यु अपघाति।
तिनके राज्य ते ह्वै गये, उत्सादित सब भाँति॥
सो०-सारे नगर मँझार, नर्मशर्म शुभ कर्म शुचि।
ऋधि सिधि धर्माचार, रह प्रचार विस्तार सों॥

रामगीती छन्द॥

चौसँठ कला संयुक्त दशरथ भूपवर गुण ऐन।
अस शांतकबहुँ विपक्षगण कहँकहतनहिं कटुबैन॥
निजवश महीपति वृन्द कहँ निजबन्धुके अनुहार।
जानहिं करहिं तिनप्रति सनेह समेतसद्व्यवहार॥
जेहि भाँति केवल निज उदर परिपूर्णहितसबकाल।
बड़वाग्नि वारिधि वारि सोखत धारि तेत कराल॥
तेहि विध प्रजनधन हरण करिअवधेशपरमउदार।
नहिं कबहुँ परिपूरणकरहिंनिजविपुलकोषागार॥
पर ग्रीष्म तापित जीवगण के ताप वारण हेत।
जिमि उदधि जललै जलदसारे जगत कहँसुखदेत॥
तेहिभांतिपरिमितकरप्रजनसों ग्रहणकरिमहिपाल।
तिनसबन के सुखवृद्धि माहिं लगावहीं सबकाल॥
यह अष्ट मंत्रि प्रधान नृपके शास्त्र विद बुधिवंत।
तिननाम यहि विध अर्थसाधक धर्मपाल जयंत॥
सिद्धार्थ विजय विवेकि विज्ञ सुमंत्र धृष्टि अशोक।
जिनके प्रवर्तित न्याय सोहिं प्रसन्नयत पुरलोक॥
इन भिन्न मार्कण्डेय कात्यायन तपोवल शालि।
काश्यप प्रतापि मुनीशगौतम ऋषिप्रवरजावालि॥

१-टिप्पणी (५७) देखो।

इनहूं सदा शुभराज कारज माहिं करहिं सहाय।
अद्भुत प्रणाली राज्यशासन की वरणि नहिंजाय॥
इन्द्रियजयी सब शास्त्रदर्शी सचिवगण बुधिऐन।
नहिं दुरभि सन्धि के होहिंवश नहिंकथै मिथ्यावैन॥
निजपक्ष अरु परपक्ष कर कोई विषय तिनकाहिं।
अविदितरहतनहिंवहुरिजान हिंहोतजोइपुरमाहिं॥
निज पक्षवहुरि विपक्ष मधिको करि रह्योहै काह।
अथवा कियो है कौनकृति केहिथलकौननरनाह॥
पुनिकौन काजहि करन की वासना राखतकौन।
यहसुनतसंततचरन मुखसोंसचिवगण बुधिभौन॥
इमिन्यायगति यदिनिजसुतहु दोषीप्रमाणितहोय।
ताहू के दण्डप्रदान महँ नहिं आन करहीं कोय॥

दो०—गढ़शोधन वाणिज्यकृषि, सरित सेतु निर्मान।
नगर पर्य्य वेक्षणु सतत, पौर कार्य्य सविधान॥
लखन आय व्ययअष्टविध, राज काज यह जोय।
रहैं प्रवृत्त अमात्यगण, सदा सतर्कित होय॥

सो०—दुखीकृषक गण काहिं, ऋण दैकरहि सहायता।
उचित थलन थल माहिं, खनन करावहिं सरोवर॥
समुचित दण्ड प्रदान, उत्कोची जनप्रति करहिं।
वेतन होत प्रदान, यथासमयमहँ सैनिकन॥

रोला छन्द॥

सकलकला मधि कुशल परस्पर जोय अपराचित।
असनियुक्त करितीनतीन चरतिनन्हमुखननित॥

यत अष्टादशतीर्थ विपक्षी दिशिके अहहीं।
तीर्थ पञ्चदश जिते नियत निजपक्ष के रहहीं॥
तिनकर क्रिया कलाप श्रवणकरि सचिव प्रधाना।
द्रुत प्रबन्ध तसकरहिं होय जस उचित विधाना॥
रिपुदल भेदन निमित समय लखि सोमति माना।
तासु मुख्य सैनिकन करहिं समुचित धन दाना॥
प्रथम प्रहर दिन माहिं सचिव बर बुद्धि विचक्षण।
गणकन सँग नित आय मान व्यय केर निरूपण॥
तपी वृद्ध जन यजन देव अतिथिन सेवकाई।
माहिं त्रुटिन कहुँ होय तासु दिशि दृष्टि सदाई॥
लघु मधि गुरु गुरु दोष माहि लघु दण्ड प्रदाना।
अस अनीति कहुँ होन देहिं नहिं ते मतिमाना॥
धनी निर्द्धनी के विवाद निर्णय कृति माहीं।
पक्षपात कोइकाल होन पावहि कहुँ नाहीं॥
जोय मृषा अभियोग प्रजन महँ करहिं करावहिं।
कठिन शास्ति तेहि देनमाहिंनहिंविलँब लगावहिं॥
थापित यत पुर माहिं चिकित्सालय तिन माहीं।
श्रेष्ठ परीक्षित सुजन भिषकवर नियत कराहीं॥

१—(१) मंत्री (वजीर) (२) पुरोहित (३) युवराज (वली अहद) (४) सेनापति (सिपहसालार) (५) दौवारिक (दरवान; परंतु दौवारिक का पद दरवान से बढ़कर था, कारण दौवारिक के लक्षण इसप्रकार लिखा है " प्रांशुः सुरूपो दक्षश्च प्रिय वादीन चोद्धत ॥ चित्तग्राहश्च सर्वेषां प्रतिहारी विधीयते" मत्स्यपुराण) (६) अन्तपुर रक्षी (७) काराध्यक्ष (मुहतमिम जेल) (८) धनाध्यक्ष (खजांची) (९) राजाज्ञा निवेदक (अर्ज़वेगी) (१०) प्राड विपाक (कानूनी) (११) धर्म्मासनाधिकारी (जज) (१२) व्यवहार निर्णेता (जूरी व असेसर) (१३) सेनाध्यक्ष (कुल फौज जिसके सिपुर्द हो) (१४) वेतन दानाध्यक्ष (बखशी) (१५) नगराध्यक्ष (कोतवाल) (१६) राष्ट्रांतपाल (सूबेदार) (१७) दण्डाधिकारी (मजिस्ट्रेट) (१८) दुर्गपाल (किलेदार) ॥

२—पूर्वोक्त अष्टादश तीर्थों में से प्रथम के तीन भिन्न ॥

वर श्रेणी मधि श्रेष्ठ मध्य मधि जे मध्यम जन।
नीच श्रेणिमधि नीच अनुचरन करहिं नियोजन॥
उत्सव भवन तड़ाग चैत्य वापी देवालय।
चतुष्पाठि आराम नागवन[1] पशुशालाचय॥
सेनालय आयुधा गार गढ़ कारागारा।
चित्र भवन धन धान्य धाम चारहु पुरद्वारा॥
इन सबके दिशि दृष्टि राखहीं सचिव प्रधाना।
शिल्पि गणन कर करहिं सतत उत्साह प्रदाना॥
हिंसक जीवन निधन दस्यु दल कहँ उत्सादन।
करि चेष्टित नित रहहिं जासुमधि प्रजनविवर्द्धन॥
भूपति दशरथ स्वयं क्रोध मिथ्या इन्द्रिय वश।
अनव धानता साधु संग परित्यागन आलस॥
नास्तिकता विपरीत दर्शि सँग करन विचारा।
दीर्घ सूत्रता गुप्त मंत्रणा करन प्रचारा॥
सचिवन तजि एकाकि राजकर कारज चिंतन।
निर्द्धारित जे कार्य्य करन तेहिमधि अवहेलन॥
प्रातकाल के जिते मांगलिक कृत्य सुपावन।
तेहि न करन वा अप्रवृति तेहि माहिं दिखावन॥
बहुदिशि के रिपु उपरि एकही समय चढ़ाई।
इन चौदह विध राज दोष ते मुक्त सदाई॥
दो०–पञ्चवर्ग[2] चतुर्वर्ग[3] अरु, त्रैयि[4] वार्ता[5] त्रिवर्ग[6]।

१–जहां जंगली हाथी रहते हैं।
२–जलदुर्ग, वेणुदुर्ग, मही दुर्ग, धनुदुर्ग एवं गिरि दुर्ग॥
३–साम, दान, दण्ड तथा भेद॥
४–तीन वेद अर्थात् ऋक, यजु, साम।
५–कृष्यादि शास्त्र।
६–अर्थ, धर्म, काम अथवा उत्साह प्रभु मंत्र शास्त्र॥

कृत्य[1] दैव मानुष[2] विपद, षाड़्गुण्य[3] दशवर्ग[4] ॥
व्यूह रचन विधि रीतिवत, यात्रा विशंति वर्ग[5] ।
प्रकृतवर्ग[6] नृप मण्डल, अष्टवर्ग[7] नग वर्ग[8] ॥
सो०—इन सब विषय मझार, त्यज्य ग्राह्य जे अंश हैं ।
नित ताके अनुसार, करहिंराज्यशासननृपति ॥

नरिन्द छन्द ॥

नियम वद्ध सब कार्य्य भूपके रह्यो समय नहिं खोवहिं ।
यह प्रकार वर्तत नित निशिके प्रथम युग प्रहर सोवहिं ॥
पुनि उठि तृतिय प्रहर लगि करहीं धर्मचिंतना पावन ।
शेष रात्रि महँ अर्थागम कर करि उपाय उद्भावन ॥
प्रात समय करि देव अराधन आदि मांगलिक काजू ।

१–अलब्ध वेतनलुब्ध को, अपमानित मानी को, अकारण को पाविष्ट क्रुद्ध को और भयभीत को शत्रु पक्ष से भेद कर के निज वश में लाना इसी को राज कृत्य कहते हैं ॥

२–दैवी विपद अर्थात् अग्नि, जल, व्याधि, दुर्भिक्ष व मरक । मानुष विपद अर्थात् चोर, राजपुरुष, राजा अथवा राजा के मित्र प्रभृति लोभ वश होने से जो विपद उत्पन्न करते हैं ॥

३–सन्धि (मेल) विग्रह (युद्ध) यान (शत्रुके विरुद्ध में रणयात्रा) द्वैध (शत्रुपक्षी मित्रराज गणों में कलहोत्पादन) आसन (युद्धार्थ काल प्रतीक्षा कर के अवस्थान) आश्रय (बलवानका आश्रय ग्रहण करना ॥

४–मृगया द्यूत क्रीड़ा, दिवा निद्रा, परिवाद, स्त्रीपारतंत्र्य मद्य, गीत, वाद्य नृत्य व वृथा भ्रमण ॥

५–बालक, वृद्ध, चिररोगी, ज्ञातिवहिस्कृत, भीरु, भयजनक, लुब्ध, लोभजनक, प्रजागण के विराग भाजन, विषय में अत्यासक्त, बहुलोक के साथ मंत्रणाकारी, देवब्रह्मण निन्दुक, दैवविडम्वित, दैवचिंतक, दुर्भिक्षव्यसनी, बलव्यसनी, आदेशस्थ, बहुशत्रु,मतप्राप, असत्य धर्मरत सन्धिके अयोग्य यह विशंति वर्ग हैं ॥

६–अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग कोष व दण्ड ॥

७–अरिमित्र, अरि के मित्र, मित्र के मित्र, अरिमित्र के मित्र, विजिगीषु इत्यादि द्वादश विध राजा ॥

८–क्रूरता, साहस, द्रोह, ईर्षा, असूया, अर्थदूषण, वाग्दण्ड व परुषता ॥

९–स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, बलयथा सुहृद । स्वामी सप्तप्रकार अर्थात् दुर्गाध्यक्ष, बलाध्यक्ष, धर्माध्यक्ष, चमुपति, पुरोहित, वैद्य, तथा दैवज्ञ ॥

राजमार्ग ते विचरि नगर की दशा लखहिं महराजू ॥
राज वेश पुनि यथा समय महँ करिकै अवध भुवारा ।
प्रविसि सभा मधि राज काज यत करहिं नीति अनुसारा ॥
याजक भिषक वृद्ध साधक गुरु भूसुर योगि उदासिन ।
रणकुशली सैनिकन परीक्षित भृत्य विज्ञ पुर वासिन ॥
मुख्य मुख्य करदायि नरपतिन अवधाधिप मतिमाना ।
मधुर वचन अरु अर्थ के द्वारा करहिं सतत सन्माना ॥
अर्थी नस्थ जे कर्म चारिगण राजकाज महं जोई ।
करहिं प्राण परिहार वहुरि दुर्दशाग्रस्त जोइ होई ॥
तिन परिवार भरण पोषण हित समुचित वृत्ति उपाई ।
करहिं निरूपण रविकुल भूषण अवध अधीश सदाई ॥
असम्पूर्ण यदि कोइ काज रह तासु परीक्षा हेतू ।
करहिं नियत अति दक्ष परीक्षक सतत विचार समेतू ॥
तीव्र दृष्टि सचिवन कारज पै राखहिं सदा भुवाला ।
धनागार गढ़केर अवस्था लखत रहत सबकाला ॥
प्रति कारज कर लाघव गौरव करि विचार नरनाथा ।
तेहि साधन हित करहिं मंत्रणा सुधि सचिवन के साथा ॥
संतत नृपति संधि विग्रह कर उचितानुचित विचारा ।
करहिं दूरदर्शी अमात्य सह राजधर्म अनुसारा ॥
समर पराजित शत्रु भयातुर होहिं जोय शरणागत ।
तिनके प्रति व्यवहार यथोचित करहिं महीपति संतत ॥
कोइ राजपै करहिं चढ़ाई तब तेहि पूरुब माहीं ।
अग्रिम वेतन करहिं समर्पण सुभट सैनिकन काहीं ॥
समर पराजित नृपन अवधपति करि सनियम करदाई ।
तिनन्ह राज्य पुनराय देव दै सन्धिपत्र लिखवाई ॥

प्रियअप्रिय की करन परीक्षा कृषिकन दशा निरीक्षण ।
दम्भिन वारण प्रजावृन्द मधि धर्मभाव संरक्षण ॥
धर्मशास्त्र अनभिज्ञ तार्किकन दूरि करण खलधर्षण ।
कुपथ निवारण कुलनारिन प्रतिनितसन्मान विवर्द्धन ॥
समर विजीत शत्रुनृपतिनप्रतिअति निष्पीड़नवारण ।
उच्च पदाधिकारि जनकर यत कार्य्य भार निर्द्धारण ॥
यह सब दैनिक कार्य्य भूपके रह्यो जाहि नरनाहू ।
न्याय तुलापै साधि धर्मवत करहिं सतत निर्वाहू ॥
धर्महि अर्थ सों अर्थहि धर्मते अथवा दोउन काहीं ।
कबहूं कामके द्वारा भूपति करहिं निपीड़ित नाहीं ॥
इन तिहून समभाव ते सेवा करहिं महीप सदाई ।
सोई निज कर्तव्य मानहीं जेहि मधि प्रजन भलाई ॥
होत ध्वंस सुतराज्य विभव यत गिरे प्रजन दृगवारी ।
यह विसूरि अवधेश पालहीं प्रजन पुत्र अनुहारी ॥
राजत रहे अवनि मण्डल मधि सहस सहस अवनी पति ।
पर यक दशरथ सोहिंराज श्री मयीभईरहि वसुमति ॥
हेतु तासु अगणित उडुगण के समुदित रहेहु पै राती ।
केवल यक शशि सोहिं होतिहै दीप्तवती सब भाँति ॥
जेहिविध सुरगण ते परिवृत ह्वै पूजित होहिं सुरेशा ।
तेहिविध नृपगण सोहिं उपासित रहत सततअवधेशा॥
जिमि असार रज साधु सुजन पदपरसि प्रयतह्वैजाई ।
तिमि कृतिवास करत रसनाशुचिकोशलेश यशगाई ॥

द्विसप्ततितम सर्ग ॥ ७२ ॥

अयोध्या वर्णन ॥

सो०-विभुचिन्मय भवसेतु, नित्य सत्य पर ब्रह्म जोइ ।
एक मात्र जोइ हेतु, जग उतपति थितिप्रलयके ॥
जोय माया युत होय, रहत विगत माया सतत ।
जानि सकतनहिं कोय, जासु अगम्य रहस्यकहँ ॥
जासु विभूति निकाय, अहै अचिंत्य अनंत नित ।
रह एक भाव सदाय, जोय तीनिहू काल महँ ॥
सोइ प्रभु सर्वा धार, निर्विकार कारण रहित ।
यावत विश्व मझार, व्यापित भीतर बाहिरहु ॥
विभु व्यापकता माहिं, महिमण्डल के सकलथल ।
इतर श्रेय कोइ नाहिं, यहि विध वेदांतिन मत ॥
पर जगपति कर्तार, जेहि जेहि थलमहँप्रकटिकै ।
प्रेम भक्ति दातार,कियशिखप्रदशुचिनरचरित ॥
तेहि तेहि थलकी धूर, भक्त जननके दृष्टि महँ ।
नयनांजन सुख मूर, दिव्यदृष्टि दायक सुभग ॥
हरि लीला थल जोय, तेहि महात्म्यवर्णन करन ।
अहै न कारण कोय, इमि प्रमाणतेहिदरसिरह ॥

नरिन्द छन्द ॥

शुभ्रकांति शशिउदित होय जब जगमधिकरतप्रकासू ।
तब का कोय कोइ जन काहीं देत है परिचय तासू ॥
भक्त जननके चिदाकाश कर अवध पुरी शशि नाई ।
तेहि विकास मानस दृगद्वारालखहिं सुजन समुदाई ॥

मधुर इक्षरस स्वादु दृष्टि के यदपि अगोचर अहई।
पर तेहिकेर स्वादु रसनासों अविदित कबहुँ न रहई॥
चिदानन्द विभुकर लीलाथल अवध पुरीअतिपावनि।
चिन्मय सुधाकेर है आकर जो मृतुभीति नशावनि॥
पर तेहि मृतुभय हरण सुधाकर स्वादुरुचिर वर जोई।
सो केवल मानस रसना सों लाहु सुधिन कहँ होई॥
हीरक कांच यदपि एकहि परमाणु सोहिं प्रकटाई।
अरु दुहून रँगरूप होत है यदपि एकही नाई॥
पर दुहून मधिभेद अहै यत सो संसार मझारा।
जानि लेत सूक्षम पदार्थ कर तत्वदर्शि मणिकारा॥
वाह्य दृष्टि महँ अवसि भूमिथित अवधपुरी सुविशाला।
अपरापरं नगरोप नगर सों नहिं विभिन्न कोइ काला॥
परजग वस्तुन के प्रत्यक्ष आकार पछारी माहीं।
यक यक गुप्त रहस्य निहित हैं सोन विदित सबकाहीं॥
सो सुविचित्र रहस्य काहिं जोइ भुक्ति मुक्ति दातारा।
केवल ज्ञानी गण अवलोकहिं सूक्ष्म दृष्टि के द्वारा॥
कूप उदक सरकेर सलिल अरु विमल सुरसरीवारी।
सब करजल एकहि समान है जड़मति बुद्धि मझारी॥
परजो भाव साधु सुधि उरमधि प्रकट गंग जल माहीं।
अपर सलिल मह कबहुँ भाव सो प्रकट होत है नाहीं॥
तिमि हरिलीला थलन प्रेम जोइ भक्तन उर प्रकटाई।
सो कदापि नहि प्राप्त होत है कितनहु सुन्दर ठाँई॥
मानससरिस विभासितवासित विकसित सरसिजनाई।
सुखदा सरयू सरित वरातट पुरि साकेत सुहाई॥
जगत मान्य मनुजाग्र गन्यमनु यह नगरी निर्मायो।

लखिसुघरतामनहुँ रचिरचि निजकरन अनंगबनायो ॥

दो०–द्वादश योजन लम्ब सो, त्रय योजन विस्तार ।
त्रय प्रथस्थवर राज पथ, त्रयधारा अनुसार ॥
ते सब अरु सब राजपथ, सिंचित शीतल वारि ।
विविधसुगन्धितसुमनतरु, दोऊ पार्श्व मझारि ॥

रोला छन्द ॥

पुर के चहु दिशि चार सोह वर सिंहद्वारा ।
जिन्हें देखि उरमाहिं होत यहि भाँति विचारा ॥
काम मोक्ष धर्मार्थ केर चहु द्वार ललामा ।
मनहुखुले जग जनन हेतु सुन्दर छविधामा ॥
सोह वप्र नभ भेदि नगर के चारिहु ओरा ।
तेहि घेरे परिपूर्ण वारि परिखा अति घोरा ॥
द्वारनद्वार विशाल कोट परिखा पै अनुपम ।
शृंखल संयुत बने लौह निर्मित दृढ़ संक्रम ॥
थापित जहँ तहँ वृहत हस्तिनख उपरि मझारा ।
लौह रचित पवि नाहि शतघ्नी वृहदाकारा ॥
महीदुर्ग धनदुर्ग वृक्षगढ़ सुदृढ़ महाना ।
अनीति दूरि महँ लसै जिनन्ह अद्भुत निर्माना ॥
तिनन्ह मध्य महँ सोह सुविस्तृत सेनागारा ।
समर शूर सैनिकन केर जहँ गणन अपारा ॥
कोइ दिशि माहिं विभात रुचिर सुन्दर हयशाला ।
रंग रंग के बँधे चपल जहँ तुरंग विशाला ॥
गजशाला कोइ ओर जहाँ पर्वत सम अंगा ।
वृहत झूमत बँधे कोटि कोटिन मातंगा ॥

(१) शहर पनाह (२) पुल (३) बुर्ज ॥

परिखा वेष्टित सकल दुर्ग दृढ़ गठन विशाला।
चतुरंगिनि दल प्रबल सोहि रक्षित सबकाला॥
जहँ तहँ अद्भुत बने गुप्ति विस्तृत गढ़ माहीं।
कोइ दिशि अगम सुरंग छन्नपंथ कहुँ दर्शाहीं॥

दो०—अश्ववैद्य गज वैद्य गो, भिषक शिल्पि समुदाय।
निवसहिंगढ़मधिस्वकृतिमहँ, रहहिं सतर्क सदाय॥
थलन थलन गढ़ मधिवने, वृहत कुदंर[3] अवटङ्क।
वन्धित बहु गोमेषमय, अजलुलाय खर शंङ्क॥

षटपद छन्द॥

विविध धातु अङ्गार[9] अस्थि मज्जा[10] सर्षप[11] गुण[12]।
धूनक[13] चूर्ण स्नायु[14] शृंग वालुका काष्ठ शणा॥
टंकन[15] लाक्षा[16] पांशु[17] सर्जरस[18] भूर्ज[19] आशिविष[20]।
क्षौमवस्त्र[21] तैलाक्त तैल शार चर्म वेत्र तुष[22]॥
जतु[23] लौह वंश गुड़ मधु[24]क्रम मुंज[25]ारणउपकरणयत।
सबराशिंराशि सज्जित भरेगढ़कोष्टनमहयथा वत॥
यक दिशि बनो विशाल आयुधागार ललामा।
अगाणिति शाणितशस्त्र अस्त्रसज्जित तेहिधामा॥
रंग मंच अति उच्च नगर मधि वने सुहावन।
करहिं जहां भट मल्ल कला कौतुक मन भावन॥
वहुभांति नारयशालासुघरचित्रालयथलथलनमहँ।

---

(१) तहखाना (२) छत्ता (३) भड़सार (४) बाजार (५) भेड़ (६) खच्चर (७) भैंसा (८) गाड़ी के बैल (९) कोयला (१०) हड्डी के अन्दर का गूदा (११) सरसों (१२) रस्सी (१३) रार (१४) तांत (१५) सोहगा (१६) लाख (१७) कपुर विशेष (१८) शाल वृक्ष का गोंद (१९) भोजपत्र (२०) जहर (२१) मोमजामा (२२) भूसी (२३) चपरा (२४) मोम (२५) मूंज॥

धर्माधि[1]करणयकदिशिलसतजनुधर्महिनयकरततहँ

दो०—भैक्षा[2]कुल यक दिशि वनो, संतत जेहि थल माहिं ।
होत दान भोजन वसन, रंक अनाथन काहिं ॥
प्रहरा रक्षित एक दिशि, निर्मित क्षिप्तनि[3]वास ।
रचित बधां[4]गक तेहि निकट, तुंगभित्ति चहु पास ॥

सो०—यक दिशि वृहदाकार, तुंग टंक[5]शाला लसत ।
संतत जासु मझार, वनहि स्वर्ण दीना[6]रचय ॥

छप्पै ॥

सहित आतुरा[7]वास चिकि[8]त्सालय बहु ठामा ।
वहुविध शिल्पागार थलन थल प्रहरिन धामा ॥
ठामन ठामन चतु[9]ष्पाठि जेहि थल मन लाई ।
सनियम द्विजन के तनुज सांग श्रुति पढ़ैं सदाई ॥
बहुमणिमाणिक मुक्ता जटितवर्णवर्णकेअतिसुघर ।
जहँतहँविलासमन्दिरबनेजेहिलखिमोहैंसुरनिकर ॥

सो०—कतहुँ कौतु[10]कागार, निर्मित अद्भुत रचन ते ।
शोभित जासु मझार, विविध वस्तु कौतूहली ॥

दो०—सचिव भवन आचार्य्य गृह, चत्व[11]र दूता गार ।
सोह तुंगतर रुचिरवर, सज्जित सकल प्रकार ॥
विहारार्थ पुर जनन के, सुन्दर ठामन ठाम ।
मन प्रमोद प्रदपरि लसत, कृत्ति भवन आराम ॥

(१) अदालत (२) खैरात खाना (३) पागल खाना (४) जेहेल खाना (५) टकसाल (६) मोहर; यह दीनार शब्द संस्कृत है यथा; "दीनाराणां कोटि शतं स्थाना मयुन्तथा" (अध्यात्मरामा०वा० कां ६ सर्ग) (७) बीमारो के रहने का मकान (८) अस्पताल (९) वैदिक पाठशाला (१०) अजाय खाना (११) यज्ञशाला ।

शार्दूलविक्रीडित छन्द ॥

तामें कुन्द जवा जयन्ति लवली चम्पा शमी मालती ।
शालास्ताल तमाल बेल कदली आँतृप्य औ सेवती ॥
जम्भी जम्बु कदम्ब आम्र कुलै द्राक्षा फली मल्लिका ।
कोरंगी धव माधवी बदर पुन्नागार्जुनै पूथिका ॥
शूका दारुसिता कारंज करवी नारंग औशाल्मली ।
कालस्कंद अशोक पूग लकुचै आम्रातकै पाटली ॥
भद्रश्री अमृता शिरीष तुलसी दोना सरो बर्बरा ।
तुंगा जीर कुंदार भव्य बदरी राजादनी रोषरा ॥
दो०-करक कृष्णकलि केतकी, रजनिगन्ध आरूक ।
वातबैरि आक्षोट तरु, चन्द्रबलि बन्धूक ॥
चुने चुने रँग रंग के, सुमन विटप समुदाय ।
नाना वर्ण के मंच पै, पाँतिन पाँति सुहाय ॥

नरिन्द छन्द ॥

इमि मालती लता वेष्टित पुन्नाग विटप दर्शाई ।
मनहुँ नवलअबलानिज निज नायक कहँभेंटत हुलसाई ॥
नायक मिलन प्रवृत्त कम्पिता नवल नायिका नाई ।
पौन परस ते डोलत सुललित लँवग लता समुदाई ॥

---

(१) गुड़हर (२) कृष्णकमिनी (३) हर्फारेवड़ी (४) समी (५) चमेली (६) चिरौंजी (७) शरीफा (८) नीबू (९) जामुन (१०) मौलशिरी (११) अंगूर (१२) श्यामलता (१३) वेला (१४) छोटीइलाची (१५) सेव (१६) केशर (१७) जुही (१८) मंजीठ (१९) दारचीनी (२०) करौंदा (२१) कनेर (२२) नरंगी (२३) सैंभर (२४) गूलर (२५) सुपारी (२६) "लकुच" वड़हर (२७) "आम्रातक" अमरा (२८) पाड़ल (२९) चन्दन (३०) अंवला (३१) सिरसा (३२) बबई (३३) "तुंग" नारियल (३४) कचनार (३५) कमरख (३६) बेर (३७) खिन्नी (३८) फालसा (३९) अनार (४०) गुलाबास (४१) कैंवड़ा (४२) गुलशब्बो (४३) आड़ू (४४) बादम (४५) अखरोट (४६) सोमलता (४७) गुलदुपहरी ॥

मन्द मन्द दक्षिणनायक[1] जिमि जात खंडिता[2] तीरा।
सुरभित सुम वृन्तन दिशि वाहित तिमि मृदु मंदसमीरा॥
पिक कलरव मयूर केकारव क्रौंच क्रौंचि करुणस्वर।
मधुरा लाप प्रमत्त चातकी चातक केर मनोहर॥
सघन विटप के अंतराल ते यहि विध परत सुनाई।
जनुवन पशु गण के सँगीत गुरु बिहग तिन्है मनलाई॥
षड़ज ऋषभ पंचम मध्यम के रतिका तीव्रा मन्दा।
आदिक भेदा भेद वेद के रहे सिखै सानन्दा॥
थलन थलन पै रजत स्वर्णमय वेदि मनोहर राजैं।
कहुँ कहुँ माधवि लता ते छादित कुंज भवन वर भ्राजैं॥
मणिन खचित सोपान सकुट्टिम पूरित निर्मल वारी।
सोहत विपुल सरोवर सुन्दर कोइ कोइ ठाम मझारी॥
नगरहु मधि प्रफुलित तरु वेष्टित ठामन ठाम ललामा।
विमल सलिल परिपूर सरोवर रहे भ्राजि छविधामा॥
तिन मधि मंजु कंज पै गुंजत पुंज पुंज इमि उड़ अलि।
छवि सदनी कामिनी वदन पै जिमि उड़ातअलकावलि॥
इमि मकरन्द विन्दु सुन्दर अरिविन्द दलन मधि दरसैं।
जेहि विध सुमुखि नारि मुख सों मृदु हास मनोहरसरसैं॥
प्रौढ़ा सखी वृन्द परिवेष्टित लजित नवोढ़ा नाई।
फुलित कुमुदिनी वेष्टित रजनी मलिन नलिन दर्शाई॥
चक्र वाक[3] ढिग लखि मरालगण यह भावत मन माहीं।
मुक्ताहार किहेजनु वेष्टन सुमुखि पयोधर काहीं॥
शत शत कुरर कुररि कारण्डव[4] सारस आदि विहंगा।
विमल सरोवर वारि के ऊपर विचरि रहे सउमंगा॥

१–टिप्पणी ५८ देखो। २–टिप्पणी ५९ देखो। ३–चक। ४–हंसविशेष॥

उघरत भपत जलद सों जेहि विध दर्शत नभमधि तारा।
निकरतितरतिविलातिवारि मधितिमि भषविविधप्रकारा॥
सूक्ष्म नील पट करत आवरित नवल नारि मुख जैसे।
सर तटथित तरु छाया छादित रहत कंजचय तैसे॥

दो०—सारँग¹ श्यामा केकि² पिक, चित्रकंठ³ शुक सारि।
बोलहि तरु शाखान पै, सुनतश्रवणसुखकारि॥
दूरि दूरि मधि नगर मधि, सोह प्रस्थ शृंगाट⁴।
तासन विस्तृत चारि दिशि, कंकर⁵ निर्मित बाट॥
प्रबल समीरणमय उदधि, तरल तरंग के न्याय।
राजमार्ग जन भीड़ने, पूरण रहत सदाय॥
सहस सहस शिविकारुचिर, वाजिराजि गजराज।
करहिं संतत गमना गमन, सज्जित सुन्दरसाज॥
यह भावत धावत निरखि, चपल तुरगयुत यान।
मनहुँ त्रिदिव मधिकरिरहे, गमनागमन विमान॥

हरिगीतिका छन्द॥

पथ के दोऊ दिशि तुंगतर वर रुचिर मन्दिर भ्राजहीं।
तिनपै विविध मणिमय मनोहर कनक कलस विराजहीं॥
छन क्षटा सी ऊँची अटा ऊपर लोभावन मारके।
वर कारु कार्य्य सुखचित उड़ि रहे केतु विविध प्रकारके॥
सित पट रचित मर्मर सदन पै ध्वजा इमि दर्शात है।
हिमिगिरि शिखर ऊपर मनहु सुरसरि तरंग विभात है॥
लखिलक्षलक्ष समूर्ति सुन्दर देवमन्दिर माधुरी।
गीर्बान गण जनु चढ़ि विमान निहारि रहे शोभापुरी॥
कर ताम्रपात्र प्रसून संयुत विविध भूषण धारिनी।

१—राजहंस। २—मोर। ३—कबूतर। ४—चौराहा। ५—कंकड़।

पूजार्थ विचरहिं देवगृह मधि इमि सुमुखि कुलकामिनी ॥
जनु विधु वदनि सुषुमा सदनि गजगामिनी सुर अंगना।
सुर सभा महँ गमनागमन करि रहीं सब प्रमुदित मना ॥
पुर मधि थलनथल माहिं बहुतक पांथशाला[1] भ्राजहीं।
बहु पुरन के व्यापारि हेलाबुक[2] पथिक जहँ राजहीं ॥
वर राज वीथिन के दोऊ दिशि सुघर पांतिन पातिहीं।
सोहत मनोहर वस्तु सज्जित विपणि[3] भांतिन भातिहीं ॥
कोई मधि चकासित विविध मणिमाणिक्य हीराराशिही।
कोइ मधि विशाल प्रवाल मुक्तालरी सहसन भासही ॥
कोइ माहिं भांतिन भांति भूषण सोह रजत सुवर्ण के।
कोइ कोय मधि कौशेय अम्बर सजे नाना वर्ण के ॥
कोइ मधि अगरु कस्तूरि कुंकुम अंगरागादिक जिते।
रहे बेचि गांधिक[4] गये जहँ मन मुदित होत सुगन्धते ॥
कोइ माहिं गुंजाशंख मर्मर फटिक राशि विभात हैं।
कोइ माहिं शुक वक केकि हंसादिकन पंख विभात हैं ॥
कोइ मधि विचित्र विचित्र चित्र पवित्र मुनि राजान के।
कोइ मांहि खेलन पुत्तली सजि सजि चुने बहु खान के ॥

सो०—कोइ माहिं कर्मार[5], ज्वलित लौह ताडन करत।
ध्वनि ठनठनाअपार, उत्थित बिखरत अनलकण ॥
स्वर्णकार पिञ्ञान[6], रहे गलै कोइ विपणि मधि।
सन सन शब्द महान, रह्यो निकरि भस्त्रिका[7] ते ॥
कोइ विस्तृत थल माहिं, वृहत कुर्पशाला[8] बनो।
ढारे तेहि थल जाहिं, विविध धातु के वस्तु चय ॥

१—सरांय। २—घोड़ों के सौदागर। ३—दूकान। ४—गन्धी। ५—लोहार। ६—सोना।
७—धौकनी। ८—ढलाईघर।

दो०—अम्वेक सीसेक रँङ्ग[3] के, वनत वस्तु कोइ ओर ।
तेहि आवर्तन वाष्प ते, छाव धूम्र चहुँ छोर ॥
विविध भाँति सन्दंशचय, कोइकोइ आपँण माहिं ।
रङ्ग रङ्ग के कोइ मधि, बहु समुद्ग दर्शाहिं ॥
पर्णकार के पण्य बहु, ठमन ठाम ललाम ।
बहु मोदक की विपणि जहँ, रहत भीड़ बसुयाम ॥

षटपद छन्द ॥

सूत्रधार[11] वर्णाट[12] श्रेणि भास्कर[13] अरु शांखिक[14] ।
शौल्विक[15] शौचि[16] कुविन्द[17] चक्रि[18] चाक्रिक[19] अरु शौंडिक[20] ॥
प्रावेशन[21] इन सबन जहां तहँ देत दिखाई ।
बहु शिल्पी व्रातीन[22] काज तहँ करहिं सदाई ॥
शत शत सुन्दर हाट जहँ नानाविध सुस्वादुफल ।
विविधशस्यव्यवसायिजनरहतस्वकृति मधि निरत भल ॥
हय गज गोकुल[23] नाश विक्रमी धीवर[24] शौनिक[25] ।
चूर्णकार[26] पलगण्ड[27] धनेयक[28] गोप शाकुनिक[29] ॥
रञ्जक[30] कारावर[31] कुठारु[32] दैवल[33] आपूपिक[34] ।
जांगलि[35] नट हतिहार[36] भिंगनीधर[37] वैतालिक[38] ॥
मृगावजीवि[39] यामिक[40] खलेपु[41] हड्डु[42] भण्ड[43] रतापिनी[44] ।

(१) तांबा (२) सीसा (३) रांगा (४) गलाना (५) सरौता, कैंची, दस्तपनाह (६) दुकान (७) डिबिया पिटारी (८) तम्बोली (९) दूकान (१०) हलवाई (११) बढ़ई (१२) मुसव्विर (१३) संगतराश (१४) शंखकर (१५) ठठेर (१६) दर्ज़ी (१७) जुलाहा (१८) कुम्हार (१९) तेली (२०) कलवार (२१) कारखाना (२२) मजदूर (२३) ऊंट (२४) जालसे मछली पकड़ने वाली जाति (२५) मांस बेचने वाला (२६) चूना बनाने वाले (२७) थवई (२८) धुनिया (२९) चिड़ीमार (३०) रंगरेज (३१) चमार (३२) हथियार बनाने वाले (३३) नौतिया (३४) रोटी बेंचने वाला (३५) सांप पकड़नेवाला (३६) भिस्ती (३७) मशालची (३८) स्तुति पाठक (३९) शिकारी (४०) चौकीदार (४१) फर्राश (४२) मेहतर (४३) भांड़ (४४) वेश्या ।

आर्थिक[1] झल्लादिक[2]न के इत उत महँ पल्लीघनी ॥
कहुँ कुशीद[3] गण वसति धातुवादी[4] कोइ ठांई।
कतहुँ तुलधेर[5] निकर कतहुँ कोटक[6] समुदाई ॥
कोइ दिशि नेजक[7] वसति कतहुँ चन्द्रिल[8] गण के घर।
कहुँ गाथक[9] आकरिक[10] पुंज कहुँ बहु मालाकर[11] ॥
कोइ ओर इन्द्रजालिक[12] बसैं कुहक माहि जे निपुण अति।
कहु भ्रष्टकार[13] गण की विपणि कतहुँ नर्तकिनकी वसति ॥

दो०—सहस्रलिन्द[14] शत शतद्विवल, त्रितलमनोहर धाम।
दोउ दिशि निर्मित मध्यमहँ, पांशुकुली[15] अभिराम ॥
लोकालय के वहिर्मग, तेहि दोउ ओर मझार।
अर्जुन शालमली पनस, देवदारु सहकार ॥
जम्बु कदम्ब अशोक बट, आदिक तरु समुदाय।
फलितफुलित छायासघन, पाँतिन पाति सुहाय ॥

सो०—मध्य मध्य कोइ ठाम, मर्मर निर्मित मनोरम।
पिंडिल[16] ते अभिराम, दुगुन ह्वै रही विथि छवि ॥
यकदिशिमाहिलखाय, राजमार्ग के दूरि महँ।
अग्नि धराधर न्याय, पाकँकुटी[17] चय धूम्र मय ॥

पथदोउदिशिकहुँ विस्तृतप्रांतर[18] * कहुँनवतृणमयशाद्वल[19] सुन्दर ॥
कहुँ उद्यान सोह मन भावन * कतहुं निष्कर्ष[20] परमसुहावन ॥
कतहुँ मनोहर तेवन[21] राजत * कतहूंसुघर खलुरिका[22] भ्राजत ॥

(१) प्रातः काल जो स्तुति पाठ करके राजाओं को जगाते हैं (२) झल्ल-पेशावर पहलवान (३) सूद पर रुपया देने वाले महाजन (४) धातु परीक्षक (५) दवड़ीदार (वया) (६) घरामी (७) धोवी (८) नाऊ (९) गायक (१०) खानखोदने वाले (११) माली (१२) बाजीगर (१३) भुजवा (१४) दहलीज (१५) गली (रास्ता) (१६) पुलिया (१७) पजावा व आंवा (१८) मैदान (१९) वह जमीन जिसपर हरी घास लगाई गई है (२०) आवादी के बाहर खेल कूद की जगह (२१) केलि कानन (२२) अखाड़ा ॥

सहित व्योम मंजर[1] कोइ ठामा * शोभित कूटा गौर ललामा ॥
गज बन्धनी[3] कतहुँ अतितुंगा * विविध जाति जहँ बंधे मतंगा ॥
कतहुं वृहत मन्दुरा[4] राजी * वन्धित रंग रंग के वाजी ॥
कहुँ सुरम्य आक्रीड़ सुहाई * प्रफुलितललित वेलिचहुँ धाई ॥
प्रहरी गृह बहु ठामन ठामा * मध्य मध्य उद्धाट[6] ललामा ॥

दो०—बहुरि राज प्रासाद कर, तोरण द्वार विभात ।
बहु योजन ते नभ परसि, जेहि चूड़ा दर्शात ॥
राज भवन के चतुर्दिशि, तुंग शृंगि अनुहार ।
शोभित बहुविध नग खचित, पांडुवर्ण प्राकार ॥

सो०—द्वारे पर बहु बीर, कौंतिक[7] दंडिक[8] पारस्वध[9] ।
दौसाधिक[10] कांडीर[11], संतत रक्षा हित नियत ॥
यक दिशि द्वार मझार, नाडिरन्ध[12] सुन्दर लसत ।
तेहि ढिग वृहदाकार, याम घोषहू[13] लरकि रह ॥

रोला छन्द ॥

तेहि अभ्यन्तर माहिं रत्नमय परम सुहावन ।
बहु प्रकोष्ठयुत हर्म्य[14] सोह सुन्दर मन भावन ॥
फटिक रजत वैदूर्य्य द्विरद रज रचित विशाला ।
भाँति भाँति के थंभ लसत मंडित मणि जाला ॥
सुधासुध वलित ललित सुविस्तृत आँखन राजत ।
बहुविध धारायंत्र[15] मनोहर जहँ तहँ भ्राजत ॥
तेहि यकदिशि मणि जटित उच्च रजताद्रि कि नाई ।
सहित विचित्र वरंड[16] सभागृह रुचिर सुहाई ॥

---

(१) पताका (२) स्त्रियों का क्रीड़ा भवन (३) पीलखाना (४) अस्तबल (५) शाहीबाग (६) महसूल वसूल की चौकी (७) भालाबन्द (८) लठबन्द (९) फरसाधारी (१०) दौसाधिक-संत्री (११) तीरंदाज (१२) बालूघड़ी तथा जल घड़ी (१३) बड़ा घण्ट (१४) महल (१५) फौहारा (१६) बरामदा ॥

मौक्तिक वन्दनवार द्वार द्वारन पै भ्राजत।
तिनन्ह माहि कौशेप तिरस्करणी[1] वर राजत॥
विविध धातु सो गठित चतुर्दिशि भित्ति विशाला।
मधि मधिवने गवाक्ष जड़ित हीरक मणिजाला॥
रजत स्वर्ण सोपान श्रेणि निर्मित असजोई।
जिनपै उतरत चढ़त परिश्रम तनिकन होई॥
समुदयगृह राजोपकरण सों होत झलामल।
बिछे विचित्र विचित्र चित्रकम्बलै[2] अति कोमल॥
फाटिक रचित बहुरंग शिखातरु[3] छाद सो लम्बित।
होहिं सभाके वस्तु निकर जिनमधि प्रति बिम्बित॥
दमक यथा थलमाहिं रत्न मण्डित राजासन।
तापै पातित स्वर्ण विछुरित रांकव आसन॥
तदुपरि विहगन मृदुल पक्ष पूरित सुखदाई।
कारु कार्य्य कौशेय मसूरक[4] रह्यो सुहाई॥
इमि मरकत मणि जड़ित छत्र तेहि उपर विकाशा।
जनु रत्नाकर उपरि सोहि रह नील अकाशा॥

दो०—भूषित सुममालान सों, राजसभा सुविशाल।
सुरभि[5] अगुरु गन्धादिते, आमोदित सबकाल॥

रामगीती छन्द॥

तेहि अग्रबढ़ि कंचन रचित नग खचित विविध प्रकार।
शोभित सुमेरु के शिखर सम अंतःपुरी कर द्वार॥
तेहि रुचिर सुन्दर द्वारपै शतशत सुभट बलवान।
रक्षा निमित्त नियुक्त कर धृत प्रास असि खरशान॥
अंतःपुरी के सकल गृहमधि महामूल्य ललाम।

(१) परदा (२) गलीचा (३) झाड़ (४) गोलतकिया (५) खुशबू।

आस्तरण[1] आसन विछे वन्धन[2] द्वार मुक्तादाम ॥
पर्यंक कंचन रजत निर्मित सजे ठामन ठाम ।
तदुपरि चतुष्की[3] सोह वन्दित चारु सुवरण दाम ॥
प्रत्येक गृह मधि दीपवृक्ष[3] विभात विविध प्रकार ।
पद्मादि गंधते सौरभित संतत सकल आगार ॥
कहुँ पाँति पाँतिन उच्च तोरणगृह[4] सुचारु लखात ।
सो जन मयोधि मझार उल्थित गिरत वीचि विभात ॥
थल थलन सुन्दर मनहरण परिलसत क्रीड़ागार ।
कहुँ जलद[5] कतहूँ केलिकानन सजे सर्व प्रकार ॥
कहुँचित्र मन्दिर कतहुँ सुन्दर नाट्य भवन सुहात ।
रँगरँग के जहँ चित्र चित्रित तिरस्करणी विभात ॥
कहुँ सोह ललित समुद्रगृह[6] वेष्टित लता समुदाय ।
जहँ विषम ग्रीषम कालहू महँ रहत हिमऋतु न्याय ॥
प्रागन के दक्षिण ओर महँ उत्तुंग प्रस्थ विशाल ।
सोपान शोभित रचित सित प्रस्तर खचित कषजाल[7] ॥
तदुपरि सुघर मर्मर विनिर्मित सप्ततल छविसार ।
रक्तांग[8] मौक्तिक हीरकादिक जटित विविध प्रकार ॥
मनहरण कहुँ कक्षा समन्वित सोह शयनागार ।
लखि जासु अनुपम प्रभाइमि उरमाहिं होत विचार ॥
जनुमेघ अवगुण्ठन विमुक्ता रजनि सुषुमा सारि ।
उडुगणन भूषण पहिरि उज्वल चन्द्रिका पटधारि ॥
निज प्रभाराशि विकासि दशहूं दिशिन करतिप्रकाश ।
तेहि भवन चूड़ा दमक जनु नभमधि अपर शशि भास ॥

(१) बिछौने (२) मशहरी (३) बैठकके झाड़ (४) गुम्बज़दार मकान (५)जलयंत्र (६) वह मकान जिसे सावन भादों कहतेहैं (७) कष=कसौटी, जाल=जाली (८) मूंगा ॥

प्रासादके ईशान दिशि मेरु वेदि पै छवि धाम।
मणि इन्द्र नीलादिक विशोभित देव भवन ललाम॥
तेहि हृदय पावन भवन की इमि छवि छटा दर्शात।
बालार्क संयुत मनहुँ उदयाचल सुचारु विभात॥
पूरुब दिशा महँ नृपति केर निजस्व कोषा गार।
तेहि चतुर्दिशि प्रहरी नियत धृत अस्त्र विविध प्रकार॥
शुभ अग्नि कोण मझार शोभित पाक गृह अभिराम।
तहँ दीयताम विभुज्यतां ध्वनि सुनि परत वसु याम॥
नैऋत दिशामहँ अवध पति कर गोपनायुध धाम।
कोदण्ड चण्ड महास्त्र चय रक्षित रहत तेहि ठाम॥
पश्चिम दिशा मधि मनहरण वर अशन भुवन सुहाय।
तहँ बहुल परिवेशक स्वकृति मधि निरत रहत सदाय॥
परि लसत वायू कोण मधि परि पूर्ण धान्य निकेत।
तेहि अक्षय अव्यय पूर्णता कर वदत बुध यह हेत॥
यहि पुरी माहिं सनातनी हरि भामिनी जग मात।
अति शीघ्र आय विराजि हैं जेहि शुभद पद जलजात॥

दो०-इमि प्रसाद के चतुर्दिशि, द्वितल त्रितल आगार।
शोभित परि पूरित सतत, वस्तु अनेक प्रकार॥

नरिन्द छन्द॥

राजपुरी मधि कतहुँ मूर्छना युक्त वेद ध्वनि होई।
कहुं शास्त्रार्थकरहिंषड़दर्शनविदकोविद जनजोई॥
कहुँ पुराण विज्ञान ज्ञानके होतरुचिर व्याख्याना।
वाकयुद्ध महँकहुँप्रवृत्तसुधि नैयायिक मतिमाना॥

(१) सोना

अति सामान्य अर्थ कर गौरव गुर्वार्थन लघुताई।
करतसिद्धकोइथलमधिकोइबुधबहुबिधयुक्तिदिखाई
उच्चासन आसीन सुबुध जनसोंवेष्टित चहुँपासा।
करत श्रोतृवृन्दहिआनन्दितकहिविचित्रइतिहासा॥
कहुँखटराग अलाप कलावत मृदुध्वनि बीनबजाई।
कहुँअभिनय कहुँवन्दिसूतगण कथत सुजनगुणगाई
अर्थ प्रार्थिद्विजवृन्दन कलरव कोइथलपरतसुनाई।
मल्ल गणन के वाह्वास्फोटन शब्द होत कोइ ठांई॥
दीर्घाध्वग[1] कार्पटी[2] उडुम्बर[3] उपदर्शक[4] जंघाला[5]।
शतशत करहिंगतागतपुरमधिस्वकृतिहेतुसबकाल॥
सहस सहस करदायिमहीपतिप्राभृत[6] करमधिधारि।
सविनय ठाढ़ चक्रवर्ती नृप दशरथ सभा[7] दुवारे॥

हरिगीतिका छन्द॥

मर्दल पटह डिंडिम दमामा क्रुञ्च झल्लक झालरी।
वाजत अवधपाति द्वारपै नितरहत उत्सवमयपुरी॥
यहि भाँति भूपति भवनजनतापूरपरिशोभितसदा।
तेहि अभ्युदय उपमानहैसकइन्दुसिन्धुकेसँगकदा॥
तेहिहेतु यहअम्बुधि कलानिधिवाढ़िघटतअवश्यई।
परयहिनियम सों पृथक है साकेत पुरिवर्द्धनमई॥
कृत्तिवानमनविश्वासयहसोहोयकिमिनहिंअसपुरी।
वैकुंठतजि निर्दिष्ट कियलीला प्रकाशनजेहि हरी॥
यहसुधाँमयकर सुधामय शुचिकथादृढ़ विश्वासते।
कृत्तगानकालिप्रसन्न मानसकलुष नाशन आशते॥

(१) चिट्ठीरसा (२) कार्पटी उम्मेदवार (३) रघाजा (४) अर्जवेगी (५) हरकारा (६) नजर, भेंट (७) राजगृह॥

नगर माहि सब ठामन ठामा * होत मंगलाचार ललामा ॥
कतहु नृत्य कहु गान सुनाई * कतहु भंडगण रहे रिझाई ॥
अमर पुरिहु मधिसुर समुदाई * लगे करन आनँद हुलसाई ॥
साजी पुरी पूर मुद भूरी * नर्तहिं त्रिदश नर्तकी रूरी ॥
बाजहिं वीन दुन्दुभी सुन्दर * करहिं गान गन्धर्व मनोहर ॥
यह विवाह सम्बन्ध निहारी * भयहुभुवन दशचारिसुखारी ॥
यह तेहि हेतु विशुचि यह रचना * प्रभु प्रकटनकर अग्र सूचना ॥
करि कुलरीति हेरि शुभवारा * सजिवरात जेहि वारनपारा ॥

दो०—अवधअधीश्वर गुरुसहित, रोहि मनोहर यान ।
किय चतुरंगिनी सेनसह, कोशल पुरिहि पयान ॥
करि सुवेश आकाश महँ, आय त्रिदश समुदाय ।
अवध प्रजा के हर्ष महँ, मिले प्रमोद बढ़ाय ॥

सो०—सोसुरुचिर आनंद, लखि उरमधि यह भावही ।
मनहु मनुज सुरवृन्द, एकहिलोकक्षेवासिदोउ ॥
यहिविध कस नहिंहोय, जो अनन्य आनंद मय ।
तिनहि के इच्छा सोय, यह शुभ कारज है रहा ॥

समारोह सह अवधि महीपा * पहुँचे कोशल नगर समीपा ॥
तब कोशल पति सानँद गाता * लै सँगसचिव पुरोहित भ्राता ॥
आगे बढ़ि कीन्ह्यो अगवानी * करिपूजन विधिवतसन्मानी ॥
लाय नगर मधि सहित हुलासू * दीन्ह वरातिन रुचिरनिवासू ॥
पुनि शुभलग्न माहिं सह प्रीती * करिसह नेम वेद कुलरीती ॥
नृप दशरथ कहँ सहित विधाना * कियछविसदनि नंदहिदाना ॥
हयगज धन मणि रतन अनूपा * दियअगणित यौतुकमहँभूपा ॥
पुनि बहुतक धन वसन मँगाये * नव दम्पति करदान कराये ॥

तिमि नित्य प्रति वद्धि कुवँरि तनु इमि छाव सुन्दर माधुरी ।
जासों प्रकाशित भयो सुविपुल विमल भल कोशल पुरी ॥
जेहि भांति आदित ज्योति ते विकसैं सदा पंकज घने ।
उज्वल प्रदीप के प्रभा सों जिमि भवन होहिं सुहावने ॥
जिमि स्वर्गपथ संतत प्रयत मन्दाकिनी के तरंग ते ।
जिमि शुद्ध होहिं सुधीन मन भ्रम हरण ज्ञान प्रसंग ते ॥
तिमि मनोहर कोशल नगेर नृप कुवँरि के अवतार ते ।
पावन सुहावन भयो सब विध सुखी पुरजन गणजिते ॥
यह भावही उर माहिं निरुपम कुवँरि कान्ति निहारि कै ।
जनु चित्रपट महँ भस्योरँग वर चित्रकार सँवारि कै ॥
तिन चरणनख इमि अरुण वर्णसुचारु शुठि द्युतिमयमहा ।
गमनत समय लखि जनु अलक्त करस टपक तिनसोंरहा ॥
पुनि होत अनुभव हृदय मधिजनु सलिल त्यागि महीतले ।
मकरंन्द विन्दु समेत वर अरविन्द चय सुन्दर खिले ॥
लखिगमनगति जनुतिननिकटसीखन निमितनूपुरध्वनी ।
अर्पण कियो निज चाल वाल मराल रुचिर सुहावनी ॥
यत क्षण करहिं श्री क्षीर सिन्धुज सुधाधर पै वासही ।
ततकाल लौं श्री रहैं कंज विलास सोहिं निराशही ॥
अरु होहिं श्री जब ललित प्रफुलित मंजु पंकज पै थिता ।
तब अत्रशिही चन्द्रस्परस सुख सों रहैं सों वंचिता ॥
पर राजि कौशल्या वदन पै उभय सुख श्री पायऊ ।
सो वदन केहि पटतरिय असनहिं वस्तु विधि उपजायऊ ॥

दो०—तिनके गुण को कहि सकै, यहि यथेष्ट है वानि ।
जिन गुण ते निर्गुणहरी, भये सगुण सुखदानि ॥
कोशलपतिनिजसुताकहँ, व्याहन योग्य निहारि ।

केहि अर्पहुँ यहि रत्नवर, चिंतित हृदय मझारि ॥
पुनिविचारयहिविधकियो, जिमितजिपावककाहिं।
मंत्रपूत हुत योग्य कोइ, अपर तेज हैं नाहिं ॥
सो०–तिमि यशशील अगार, गुणाधार दशरथहितजि।
अपर न जगत मझार, ममकुमारि केयोग्यवर ॥
यहविचार निज उरमधि आनी * कह्यो पुरोहित सनइमिवानी ॥
विशुचिअवधपुरिआशुसिधावहु * यहममनुतिदशरथहिसुनावहु ॥
निज कुमारि कौशल्या काहीं * अर्पन रुचि तुम्हरे पद माहीं ॥
सुनि नृप वचन तुरत द्विजराई * गे सेतिकापुरा हुलसाई ॥
तिन्हें नृपति दशरथ गुणखानी * बहुसन्मानि कह्यो इमिवानी ॥
भयो आजु शुचि मोर निकेतू * कहिय सकृपा आगमन हेतू ॥
नृप स्वाभाव लखि द्विज हर्षायो * कोशल पतिकर मर्मजनायो ॥
सोसुनि नृपनिज सचिवनपाहीं * कह्यो काहसम्मति यहिमाहीं ॥
कह मंत्रीगण हर्षित गाता * यह विवाह मुद मंगल दाता ॥
कोशलपति कुलशील बड़ाई * हमसबकहँ प्रभुविदित बनाई ॥
तब प्रधान मंत्री सन भूपा * कहइमिवचन नीतिअनुरूपा ॥
करि विवाह मैं फिरौं न यावत * देखेहु राजकाज तुम तावत ॥
दो०–समाचार नृप व्याह कर, फैल्यो नगर मझार।
पुरजन गन लागे करन, उत्सव विविध प्रकार ॥
नेवत पाय अवधेश कर, वहु देशन के नरेश।
आये दलवल सह सकल, किहे मनोहर वेश ॥
सकल नृपनकहँ सचिव सुजाना * दीन्हनिवास सहित सन्माना ॥
सव थल विविध द्रव्य पहुँचाई * सत्कारहि नृप भृत्य सदाई ॥

त्रिसप्ततितम सर्ग ॥७३॥

महाराज दशरथ प्रथम परिणय ॥

दो०—महिमण्डलपति महामति, गुणनिधि दशरथ केर ।
भाप्रकाश यशराशि शुचि, जगत माहिं चहुँफेर ॥
धृत संयम अस्तेय दम, शौच क्षमा धी दान ।
सत विद्या दश धर्म के, लक्षण किय श्रुतिगान ॥
सब प्रकार ह्वै अलंकृत, इन गुण गणन ललाम ।
अवध अधीश्वर कर भयो, सार्थक दशरथनाम ॥
तीस वर्ष के वयस महँ, विधिके अटल निवन्ध ।
नय नागर नरनाथ कर, भा विवाह सम्बन्ध ॥
प्रथित कोशलाधिपति के, रूपराशि छवि सारि ।
रहियकललना कुलरतन, कौशल्या सुकुमारि ॥
भूरि भीरहर हरी कर, जननि रूपिनी होय ।
कीन्ह पावनीअवनि कहँ, नृपति नन्दिनी सोय ॥
जगदम्बा तेहि कहिय किमि, कहे मूढ़ता होय ।
जगपालिनि यहिशब्द कर, अर्थवदतधवुधजोय ॥
पर तिन गर्भते जोय विभु, सृष्टिस्थिति लयकारि ।
सोय स्वयं प्रकटत भये, रुचिर मनुजतनुधारि ॥
सो०—श्रवण सुखद अभिराम, कौशल्या यहिनाम कर ।
व्युतपति वुध गुणग्राम, करैंजोयपुनिहोयजिमि ॥
पर यह होत विचार, यहि मतिमन्द के हृदयमधि ।
जगहि कुशल दातार, सूचक पावन नाम यह ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

जेहिविध सुधानिधि उदित ह्वै द्युति युत कलानकेयोगते ।

क्रमशः विवर्द्धित ह्वै प्रकाशित करत जग निज ज्योतिते ॥
शुभ विवाह लखि सुर हर्षाये * नभते सुमन माल वर्षाये ॥
मंगल मोद अनेक प्रकारा * छाव थलन थल राज मझारा ॥

दो०—वहुरि अर्द्ध कोशलेंहि करि, नृप दशरथकहँदान ।
सहित सुता कीन्ह्यो विदा, कोशलेशमतिमान ॥
निज पुर मधि नववधू युत,आये रविकुल केत ।
होन लाग पुर मधि विविध, उत्सव हर्ष समेत ॥

सो०—ऋषि मुनिअमर निकाय, विगतचिन्तह्वैचित्त महँ ।
जोहत चातक न्याय, हरि प्रकटन स्वाती सलिल ॥
अब जनि होसि अधीर,मनचातककृत्तिवासकह ।
वर्षी जीवन नीर, द्रुत नृपपरिणय जलदसों ॥

चतुस्सप्ततितम सर्ग ॥७४॥

देवी कैकेयी के सहित दशरथ का विवाह ॥

दो०—अपर व्याह नरनाथ कर, कथा, पियूष समान ।
तजि कुतर्कशुचि चित्तसे, करिय सुजन गण पान ॥
रसमयि राम चरित्र कर, भूपति भामिनि जोय ।
जगत माहिं प्रकटत भई, केन्द्र स्वरूपिनि होय ॥

सो०—श्रीपति सर्व सरण्य, जिनके कौशल कलाते ।
प्रविशि दण्ड कारण्य, निष्कण्टक कियधराकहँ॥
सोय देवि विख्यात, क्षितिपति केकय की सुता ।
प्रयत भानुकुल जात, दशरथकी दयिता द्वितिय ॥
सुविपुल केकयराजै, स्वास्थ्यनिलयशुभसौख्यमय।

१–टिप्पणी (६०) देखो । २–टिप्पणी (६१) देखो ।

तासु चतुर्दिशि भ्राज, सुन्दर तरुवरगिरि निकर ॥
नृपति केर रज धानि, रहगिरि व्रज नामक पुरी ।
विविध धान्य धनखानि, चतुर्वर्णवश प्रजा जहँ ॥

दो०—नृपकेकय गुण निलयके, मार नारि मद हारि ।
कैकेयी नामिनि रही यक, कुमारि छवि सारि ॥

अरु यक सुवन सर्व गुण धामा * रहजेहि ख्यातयुधाजितनामा ॥
भूपहि दैव योग अनुसारा * करनपरयोनिजतियपरिहारा ॥
तासु कथा जिमिबुधन बखाना * यहिथल माहिंकरहुँसो गाना ॥
एक समय यकऋषि मतिमाना * नरनाथहि असदिय वरदाना ॥
जासों पशु खगादि के बैना * बूझिलेत रहे नृप गुण ऐना ॥
शयन समययकदिन महिपाला * सुनियकखगकरवचनरसाला ॥
विहँसे सो महरानि निहारी * यह विचारकियहृदय मझारी॥
मम अपमानहि हेतु भुवाला * अकस्मात विहँसे यहि काला ॥

दो०—तियस्वभावचपलतावश, अस विचारि उर आनि ।
साभिमान तब भूप सों, कहन लगीं इमि वानि ॥
यदि कारण निज हँसीकर, मोहि बतैहौ नाहिं ।
तौ अबही तनु त्यागिहौं, तव अवलोकत माहिं ॥

सो०—यह सुनि कह नरनाहु; यदि मैं भाषहुँ भेद यह ।
तौ वैधव्यहि लाहु, तुमहि होइहै याहि क्षण ॥
यद्यपि श्री अनुहार, जग मंगलकारिणितिया ।
पर तिन चित्त विकार, प्रकटे होहिं पिशाचि इव ॥

सुनि नर नाथ वचन महरानी * करि अमर्ष बोली इमि वानी ॥
तव तनु रहै कि जाय भुवाला * परसो कहन परी यहि काला ॥
जाते यहि प्रकार मनमाना * करहु बहोरिन मम अपमाना ॥
इमि निजतियहठनृपतिनिहारी * अतिचिंतित ह्वै हृदय मझारी ॥

वरदाता तेहि मुनि पहँ गयऊ ❋ समाचार सब भाषत भयऊ ॥
सो सुनि कहमुनितपो निधाना ❋ तवतिय रहै कित्यागहि प्राना ॥
पर यह भेद कबहुँ तिय पाहीं ❋ किह्यौ प्रकाश महीपति नाहीं ॥
यहि प्रकार सुनि मुनि उपदेशा ❋ जायभवन मधि बहुरिनरेशा ॥
समुझायहु बहु भामिनि काहीं ❋ परजब तज्यो रानि हठनाहीं ॥
तब ह्वै क्षुभित हृदय महिपाला ❋ कियरानिहित्यागनततकाला ॥

दो०—प्रकृत नियम रक्षा निमित, विधि कैकेयी काहिं ।
असअबला के गर्भ ते, उपजायो जग माहिं ॥
पुनिस्वकाजसाधननिमित, तिन्हैं सृष्टि करतार ।
महानर्थ कर मनोहर, रूप दीन्ह छवि सार ॥

सो०—जासुरूप अभिराम, लखि दृढ़चेता विश्वजित ।
दशरथ सम गुणधाम, नृपहुभये तियजिमप्रथित ॥

मणिमुक्ता छन्द ॥

जबहिं भई नव योवना केकयराज कुमारी ।
लखिति तनुद्युति दमक इमि भावत हृदयमझारी ॥
मानहु चंचल चंचला वारिद पटल विहाई ।
मंजुल गिरिव्रज पुरी मधि भई अंचल आई ॥
सोइ समय गन्धर्विनी दुन्दुभि सों कर्तारा ।
कह्यो प्रकटु सुरकाज हित तैं नरलोक मझारा ॥
विधि निदेश लहिदुन्दुभी धरित्रिवक्र तनु आशू ।
प्रकटी गिरिव्रज पुरीमहँ नाम मन्थरा जाशू ॥
अतिचतुरालखि मन्थरहि गिरिव्रजेश बुधिराशी ।
कीन्ह नियत तेहि निजकुवँरि कैकेयी कीदासी ॥

१—वा. रा. अ, का. ३५ सर्ग ।

२—मन्थरा नाम कार्य्यार्थं मत्सराः प्रेषितासुरैः । दासीकांचन कैकेय्ये दत्त केकय भूभृता । इति पाद्म । महाभारत वन पर्व १७४ अध्याय भी देखो ॥

हेरि स्वयंवर लालसा कुवँरि केरि नरनाहू।
बुलवायो बहु देशके नृपतिन सहित उछाहू॥

सो०—सेतिकेश यशकेत, नरकेहरि दशरथहु कहँ।
केकय नेह समेत, पठय दूत बोलवायहू॥
दशरथ नीतिनिधान, केकयपति कर नेवत लहि।
गिरिव्रजकाहिं पयान, कीन्ह विपुल वाहिनीसह॥
गिरिव्रजेश तिनकेरि, यहि प्रकार सत्कार किय।
जन समूह जेहि हेरि, यहिविधभ्रम मधिभे पतित॥

आगन्तुक केकय कहँ जाना * गृहस्वामी अवधेशहि माना॥
केकय वृहत चारु गृह माहीं * दियनिवासनृप दशरथकाहीं॥
लखि दशरथहि कहैं पुर लोगू * सब विध येइ कुवँरि के योगू॥
सचिवनियततिथिमहँमनभावन * रच्यो स्वयंवर सभा सुहावन॥
देश देश के धीर गँभीरा * जुरे महीप भूरि भइ भीरा॥
समुचित थल पै धृत वर वेशा * शोभितनृपकुलमणिअवधेशा॥
लखितिनकरअनुपमछविराशी * इमि अनुमान कीन्हपुरवासी॥
सुरन लालसा पूरण हेतू * जनुविधि रच्यो अपरबृषकेतू॥

दो०—यथा प्रखर तर दिवाकर, करन तेज सन तोय।
होत तप्त तेहि पूर्व कर, शीतलत्व लय होय॥
तिमिलखिदशरथनृपतिकर, रूप माधुरी भूरि।
भे तापित सब नृपन उर, ब्याह आश गइ दूरि॥

रोला छन्द॥

तेहि अवसर सहचरी भूप आयसु अनुसारा।
लाइँ केकयि काहिं स्वयंवर सभा मझारा॥
तिनकर अनुपम सुघर रूप माधुरी निहारी।

झलक उठे दृग नृपन वैंठ तनु दशा विसारी ॥
पूर्णकाम किय ज्ञान निजहि सब देव समाजू ।
रम्भादिक अप्सरा मूँदि लिय दृग सह लाजू ॥
यक यक करि नृप कुवँरि हेरि सब राजन काहीं ।
पहिरायो वर माल भूप दशरथ गल माहीं ॥
सो विलोकि सुरवृन्द दीन्ह दुन्दुभी वजाये ।
यत हताश महिपाल सकल निज पुरन सिधाये ॥
पुनि वहु उत्सव सहित भूप केकय सविधाना ।
नृपवर दशरथ काहिं कीन्ह निज सुता प्रदाना ॥
मणि माणिक धन वसन तुरग मातंग विमाना ।
गिरि व्रजेश अवधेश काहिं दिय विनु परिमाना ॥
दासि मन्थरहु काहिं कुँवरि के सेवा हेतू ।
करि अर्पण पुनराय विदा किय नेह समेतू ॥
दो०—कृत्तिवास कह हे नृपति, काह काज तुम कीन्ह ।
महामूल्य मणिके सहित, काल भुजंगिनी दीन्ह ॥

पञ्चसप्ततितम सर्ग ॥ ७५ ॥

महाराज दशरथ के सहित सुमित्रा देवी का विवाह ॥

सो०—इन्द्रनील मणि काहि, जोय स्वर्ण संयुक्त करि ।
भक्तगणहि जगमाहिं, किय प्रदान कंठाभरण ॥
हरण धरा कर भार, जासु भक्ति ते धराधर ।
करि पताल परिहार, कीन्ह अलंकृतधरातल ॥
दो०—निजसपत्निसिरजितविषम, कालकूट पै जोय ।
कीन्ह सुधासिंचन सुखद, स्वार्थ त्यागिनी होय ॥

जेहि प्रभाव ते समाचर, सागर मंथन हेतु।
त्रेता मधि पुनि मिलित भे, गुह्यै नाग कुल केतु॥
सो सिंहलपति की सुता, सुमिखि सुमित्रा नाम।
जिन मन पावन चरित ते, पावन वसुधा धाम॥

षटपद छन्द॥

जिमि धातुन मधि कनक रतन मधि जिमि माणिक वर।
सुमन निचय महँ पारिजात ग्रहगण मधि दिनकर॥
तेज माहिं जिमि अनल पल्लवन महँ पर्णासा[2]।
पेय माहिं जिमि सुधा ऋतुन महँ जिमि मधुमासा॥
जेहि भांति सर्व भाषान मधि देववाणि है अग्रणी।
तिमि सिंहलाधि पति की सुता ललना गणन शिरोमणी।
अति ललाम छविधाम कुंवरि कर रूप निहारी।
यह भावत जनु कमल योनि यह हृदय विचारी॥
यत उपमा के वस्तु जगत मधि परत दिखाई।
तिन्हैं किहे एकत्र होत केहि विध सुघराई॥
इमि चिन्ति चित्त मधि चतुर्मुख समुदय उपमा वस्तु कहँ।
निपुणता सहितकिय निवेसित सुमुखि सुमित्रा कायमहँ॥

दो०—तेहि सुन्दरता की छटा, वरणि जाय केहिभाँति।
सिमिटिसकललावण्यता, जेहि तनुमाहिं विभाति॥
ब्याहयोग्यनिजसुता कहँ, लखि सुमित्र नरनाथ।
कियविचार इमिसभामधि, सचिव पुरोहित साथ॥
नर किन्नर सुर पूज्य नृप, दशरथ काहिं विहाय।
मम तनुजा के योग्य वर, अपर न कोइ लखाय॥

१—विष्णु भगवान का द्वितीय अवतार। २—"पर्णास" तुलसी वृक्ष॥

सो०—करि यहिभाँति विचार, निज पुरोहित भूपवर।
पठयो अवध मझार, दै बहु धन मणि भेंटहित ॥
सो द्विजनृपदशरथ ढिग गयऊ ❋ दै असीस इमि भाषत भयऊ ॥
सिंहलेश निज दुहिता काहीं ❋ चहत समर्पण तव पद माहीं ॥
नृप दशरथहु भानुकुल हंसा ❋ सुनत रहे तेहि कुँवरि प्रशंसा ॥
होन सुमित्रा पति तिन काहीं ❋ अति लालसा रही मनमाहीं ॥
मन भावन सो पाय सँदेशा ❋ भये मुदित यहि भाँति नरेशा ॥
जनुनभथितविधुकरमधिअयऊ ❋ पर बड़ि चिंत हृदयमहँ छयऊ ॥
उभय रानि भय उपज घनेरा ❋ तिनमधिअधिक केकयी केरा ॥
बहुचिंता करि तब महराजू ❋ करिपुरमधि मृगयाकर व्याजू ॥
स्वल्प कटक सँग लै अवधेशा ❋ गये मनोरम सिंहल देशा ॥
तिनकर सिंहलपति नरनाहू ❋ बहु सन्मान कीन्ह सउछाहू ॥
दो०—शुभ कारज आरँभ भयो, हेरि रुचिर शुभवार।
होनलाग नृप भवन महँ, विविध मंगलाचार ॥
नन्दीमुख श्राद्धादि करि, बहुरि समेत विधान।
भयो व्याह अवधेश कर, लह्योद्विजन बहुदान ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

गोधूलि लग्नमें परस्पर शुभदृष्टि वर कन्या कियो।
भूपतिसुमित्र विचित्र पटधन मणिविविध यौतुक दियो ॥
नव दम्पती कर रूपराशि विभासि यहिविध सों रहा।
मणि स्वर्णकर जनु योग लखि पुरलोग हर्षित ह्वै महा ॥

(१) वंगीय समाज में विवाह के परदिनस वर कन्या का परस्पर दर्शन निषिद्ध है। विवाहके पर रात्रिको काल रात्रि कहते हैं अर्थात् विवाह के पर दिवस यदि वर कन्या मिलन होतो कन्यापति सोहागिनी नहीं होती। पाठक स्मरणरक्खें कि कृत्तिवास वंगीय कवि हैं। अध्यात्म रामायण मे भी देखाजाता है कि सुमित्रा महाराज दशरथकी विशेष प्रणय पात्री न थीं (देखो अध्या० रा० बा० ३ अ० १२ श्लोक.)

धनिधन्य वचन उचारि प्रमुदितमनकरहिं निवछावरी ।
इमि तेहि दिवस आनन्द उत्सव मयरह्यो सिंहलपुरी ॥
पुनिलहि विदानववधु सहित अवधेश अवध सिधारेऊ ।
पथ माहिं विधि वश कालरात्रीविध महीप विसारेऊ ॥

दो०—यहिहित सिंहलपति सुता, रूपराशिहू होय ।
रहिं पति प्रेम सों वंचित, अबला वांछित जोय ॥

सवधु अवधनिधि आय निकेतू * भये स्वकृतिरत नीति समेतू ॥
शासन कृति नृपकेर निहारी * त्रिदशप्रशंसतत्रिदिवमझारी ॥
इमि प्रजान पालत सहप्रीता * भयहुनृपहि बहुकालव्यतीता ॥
भयहु वयस बहु पर तिन देहू * दहत हेतु तेहि सुतविनु गेहू ॥
संतति हित क्रमशः नरनाहू * सार्द्ध सप्तशत कीन्ह विवाहू ॥
तिनमधि त्रय पटरानि पवित्रा * कौशिल्या केकयी सुमित्रा ॥
रानि केकयी तिन तिहु माहीं * प्रीय प्राणहू ते नृप काहीं ॥
यहि मधि कछु अचरज है नाहीं * सुरअभिसन्धि मूलयहिमाहीं ॥

दो०—वरणिसकै कृत्तिवासकिमि, भाग्य तिहून यथार्थ ।
प्रकटे जिनते रमापति, धराभार हरणार्थ ॥

षट् सप्ततितम सर्ग ॥ ७६ ॥

अवध राज्य में अनावृष्टि तथा दशरथ व खग खगी सम्वाद ॥

सो०—सुयशहीन जिमि काज, फल विहीन विद्या यथा ।
विना नृपति जिमिराज, शोभाविनु आभरणजिमि
धर्महीन जिमि काय, अतिथिहीनगृहनिरसफल

विना लाभ व्यवसाय, दीनहीन सम्पत्तिजिमि ॥
जीवन विनु सत्संग, अहैवृथायह सकलजिमि ।
नीति विहीन प्रसंग, अहै वादही सोइ विध ॥
पर जोइ राम चरित्र, सम्बन्धी कीर्तन कथा ।
ते सब परम पवित्र, ज्ञानकेर आकर निकर ॥
दो०—राज काज मधि लेशहू, आलस अनरथ कारि ।
तेहि प्रमाण दर्शात है, यहि आख्यान मझारि ॥
कलुषितमरुतनकरिसकत, जिमिजीवन हित लेश ।
तिमिनकरिसकहिंराजकृति, ललना सक्त नरेश ॥
अतिप्रतापशालिहु नरहु, काम विवश जगमाहिं ।
परहिं घोर दुर्दशा महँ, यहिमधि संशय नाहिं ॥
कामशक्तिअतिप्रवल तर, फँसिजेहि मधियककाल ।
स्वकृतिसोहिंविचलितभये, दशरथ सरिस भुवाल ॥
इमि भुलान ललनान के, सँग महँ कोशल राय ।
कमलकोशमधिरुद्धजिमि, चंचरीक है जाय ॥

भानु सुवन शनि भूपति काहीं * शिथिलनिहारि राजकृतिमाहीं ॥
कीन्ह्यो दृष्टि रोहिणी ओरा * जासो भयो अवर्षण घोरा ॥
नगर ग्राम सब ठाम मझारा * छायो हाहाकार अपारा ॥
सूखे सर जलचर अकुलाने * तजि तड़ाग जलछदी पराने ॥
उर्वि उर्वरा शक्ति विहीना * भइ जिमिवन्ध्या नारिमलीना ॥
मेघ तो कहा शेष निशि माहीं * परत निहारहु बूँदहु नाहीं ॥
बड़ि बड़ि सरित चारु मनहारी * ह्वै गइँ क्षीणरेख अनुहारी ॥
वापि कूप निर्झर सुघराई * यक वारहि सब गइँ विलाई ॥
सकल वाटिकन तरु समुदाई * सूख काठसम परहिं दिखाई ॥
नगपुर ग्राम धाम छविभूरी * चहु दिशि घोर दुर्दशा पूरी ॥

उपेन्द्रवज्रा छन्द ॥

प्रचण्ड वर्चानल सों तमारी। कियो महीखण्ड वितप्त सारी ॥
उत्तप्त झंझानिल के झिकोरा। चतुर्दिशा रेनु छयो प्रघोरा ॥
क्षुधा पियासा सन अकुलाई। भ्रमै प्रजावृन्द भिखारि नाई ॥
जहां तहां धाम विदग्ध होई। कहूँ करैं लुण्ठन दस्यु जोई ॥

इन्द्रवज्रा छन्द ॥

सारी पुरी माहिं महा कराला। आर्तध्वनी उत्थित सर्वकाला ॥
विध्वंस ह्वै आपण पण्यशाला। क्रीड़ैंतहाँश्वान शिवाशृगाला ॥

उपजाति छन्द ॥

स्वामी परित्यक्त पशून व्राता। फिरैं चहूँओर क्षुधार्त गाता ॥
हेरैं जहां लेशहु वारि जोई। गिरैं तहां पक्षिअधीर होई ॥

दो०—कृषिपशु पालन ते विमुख, ग्राम कृषक समुदाय।
क्षुधितफिरत कृशगातइमि, जनु कंकाल निकाय ॥
जठरानल के प्रबलता, सोहिं प्रजान मझार।
कोइ न खाद्य अखाद्यकर, नेकहु करत विचार ॥
दल के दल तरुछाल दल, भखहिं पशून समान।
सकल ग्राम पुर ह्वै रहे, उत्कट प्रलय मसान ॥
जितदेखियतितलखिपरहिं, जन विहीन बहु गेह।
पतित राजवीथीन महँ, राशि राशि मृत देह ॥

सो०—इमि वीभत्स लखात, विपुल राघवी राज्य मधि।
करहिं विविध उत्पात, प्रजापुंज नित परस्पर ॥
गृहते देहिं निकारि, जननिजनकगुरुजननकहँ।
पतिहितजतकुलनारि, लोकलाज कुलधर्म तजि ॥

भईं नष्ट औषधि समुदाई ❋ जीवित मनुज भये मृत नाई ॥

यक एक रक्षण कृति माहीं ❋ रह्यो समर्थ कोइ जन नाहीं ॥
जनन दुर्दशा वरणि वनैना ❋ विपदग्रस्त जन काह करैना ॥
लखियतकहुँकोउ प्रियसुतनारी ❋ रह्यो बेचि पुरहाट मझारी ॥
मुनि ऋषि यतिहु धैर्य्य यशपागे ❋ सोउविचलित यहिविपदकेआगे
अस उत्पात ते धरणि विशाला ❋ भइ उत्सन्न प्राय तेहिकाला ॥
तब यक दिवस महीप समीपा ❋ आये नारद ऋषिकुल दीपा ॥
देवऋषिहि लखिअवध अधीशा ❋ उठि सादर नायो पद शीशा ॥
दै आसन विधिवत सन्मानी ❋ कहसविनय इमिकरपुटवानी ॥
भयहु आजु शुचि मोर निकेतू ❋ कहिय सकृपा आगमन हेतू ॥

दो०—कह देवर्षि अवृष्टि ते, ह्वै रहि प्रजा विनाश ।
अंतःपुरि मधि तियनसँग, तुम करिरह्यो विलास ॥
याकर फल चिंता करन, उचित तुम्हैं सबकाल ।
यहिप्रकारमुनिवचनसुनि, कहयहि भाँतिभुवाल ॥

सो०—वदत वेद समुदाय, भोग सकल जन कर्मफल ।
तेहिवशप्रजहुनिकाय, काह दोष यहि माहिं मम ॥
मैं पीड़ित कोउ काहिं, करत नाहिं हौ कोइ क्षण ।
कह मुनीश यहि माहिं, नहिं संशयपरलखियनृप ॥

रोला छन्द ॥

सकल प्रजन शुभ बहुरि वृष्टि आशा अनुरूपा ।
अथवा भय व्याधादि जिते दुर्घटना भूपा ॥
इन सब प्रकटन केर अन्यतर हेतु प्रधाना ।
धराधीश कर पाप पुण्य वद वेद पुराना ॥
भये विषय बश भूप होत क्षिति की गति कैसी ।
विनु नाविक घूरणित सलिलमधि तरिगतिजैसी ॥

चतुरानन दिय नृपन प्रजन प्रतिपालन भारा।
यहि मधि जो त्रुटि करत परत सो नरकमझारा॥
परमार्थहि दिशि ध्यान यती राखत जेहि भाँती।
तिमि प्रजान हित निरत रहै नरपति दिनराती॥
धन जन वैभव नृपन भोग सामग्रिन भूपा।
यह केवल ऐश्वर्य्य केर सौन्दर्य्य स्वरूपा॥
नृपन भयो सो लाहु लोक हित साधन हेतू।
उचित भूपगण काहिं रहै तेहि माहिं सचेतू॥
विविध रत्न औषधी निर्झरन भूषित भूधर।
तात बात पविघात वेग सहि जलद धार कर॥
सो पर सेवन माहिं सतत निज सम्पति अर्पत।
यह आदर्श स्वरूप विभव शाली कहँ संतत॥
नृप चूड़ामणि भूप अहौ तुम नृपगण माहीं।
यहि हित करि आच्छन्न देव माया तुम काहीं॥

दो०—लिप्त विषय मधि होनकर, फल दर्शाय कराल।
महि मण्डल के नृपन कहँ, दिय उपदेश भुवाल॥
नारद के हित वचन ते, ह्वै नृप मोह विहीन।
करिअर्चनविधिवतमुनिहि, विदा भवन तेकीन्ह॥

सो०—वहुरि रोहि वर यान, राज्य दशा देखन निमित।
कीन्ह महीप पयान, संग न लीन्हेहु काहु कहँ॥

घूमि घूमि जनपद पुर ग्रामा * देखन लगे नृपति गुण धामा॥
सबन विषम दुर्दशा निहारी * भये दुखितअतिहृदयमझारी॥
भ्रमत नृपहि सन्ध्या ह्वै गयऊ * उदितचन्द्ररवि अथवतभयऊ॥
तब यक तरुतर उपवन माहीं * गये ठहरि निशियापनकाहीं॥
तेहि विशाल तरुशाख मझारी * बसबहु कालते युग शुकसारी॥

दोउ खग जगे शेष निशिमाहीं * कहन लगी सारी शुक पाहीं ॥
यहि कानन मधि वसतसप्रीता * भयुहु नाथ बहु कालव्यतीता ॥
पर अब नित उपवास कलेशू * सहि न जातत्यागिय यहदेशू ॥
रविवंशज अधिकृत क्षितिमाहीं * दुखमुखलखेहुकबहुँ कोइनाहीं ॥
सुख संकुल मंगल समुदाई * रहे अवध मधि वसत सदाई ॥

दो०–पर अब वासव वर्ष ते, मिलत अहार न वारि ।
गये सूखि वर्षा विना, सर सरिता तरु झारि ॥
यहि दिशि दृष्टि नरेशकी, अहै लेशहू नाहिं ।
ते निवसत रनिवास मधि, सततियन संगमाहिं ॥

कबलगि करब विषम दुख भोगू * यहि थल अब न रहनके योगू ॥
यहि हित जहँ जीविका सुपासू * चलिय नाथ तेहिठामहि आसू ॥
कह शुक मैं यहिकानन काहीं * त्यागिसकतकौनेहुविध नाहीं ॥
सत युग ते मम पुरुष पचासा * बीते यहिथल करत निवासा ॥
हियहिं जन्म यहि थल असनेहू * हियहिं तजब यह नश्वर देहू ॥
जननी जन्म भूमि श्रुतिकहही * गरीयसी स्वर्गहुते अहही ॥
जन्मभूमि कर नेह विहाई * सुखहित जोयअपर थलजाई ॥
तेहि पामर समान जग माहीं * अघी कृतघ्न अपरजन नाहीं ॥
संतानहि स्वमातु सेवकाई * जेहि प्रकार है उचित सदाई ॥
तासों अधिक स्वदेश सनेहा * अहै उचित तेहि कारणयेहा ॥

दो०–जननी जायो ताहि कहँ, पर यत तेहिकुल माहिं ।
प्रकटे पालति आइ नित, जन्म भूमि तिनकाहिं ॥
तजहु शोक तुमही न हौ, केवल विपदापन्न ।
यहि दारुण आपदा सों, सकल जगत आछन्न ॥

सो०–यह निश्चय मम बैन, मानहु देखि प्रजान दुख ।
महराजहु दिन रैन, रहतसचिंतितव्यथितअति ॥

कह्यो सारि नृप अघी महाना * तासु राज्य मधि जैहै प्राना ॥
यदियहिवनहि तजनरुचिनाहीं * तौ चलि वेगिसिन्धु तट माहीं ॥
आउब फिरि करिके जलपाना * तृषा ते मोर कंठगत प्राना ॥
यह वारता लाप महिपाला * तरु तरते सबसुनि तेहिकाला ॥
द्विगुण व्यथितहै हृदय मझारा * यहिविध वचन सताप उचारा ॥
अहह वादही जन्म हमारा * क्षुद्रखगिहु मोहि देतधिकारा ॥
वृष्टि होन कर आशु उपाई * करिहौं अब सब काजविहाई ॥
लखि यत मद गर्वित सुरराई * तजिनिजपणअस किहिसढिठाई
मम पूर्वज नृप रघु के साथा * वचन वद्ध इमि रह सुरनाथा ॥
अवध राज्य महँ कोइ थलमाहीं * होई कबहुँ अवर्षण नाहीं ॥

दो०—सो अब साम उपाय ते, सिधि न होइ ममकाज ।
जेहि प्रकार वन्दी कियो, इन्द्रहि रघु महराज ॥
तिमि निज खरशर ते करहुँ, तासु गर्व संहार ।
तवहिं सारथक होइ है, दशरथ नाम हमार ॥

सो०—तेहिक्षण भयोप्रभात, अरुणोदय यहि विध प्रकट ।
जनु रवि रंजितगात, नृप क्रोधारुण नयन ते ॥

नृपहि हेरि शुक भये प्रभाता * कह्यो सारि सोशंकित गाता ॥
गये प्राण निश्चय यहिकाला * तव कुवैन सब सुन्योभुवाला ॥
महराजहि है क्षुद्र विहंगी * कु वचन कहे होय मतिभंगी ॥
अब छिपि रहेहु न वचिहैं प्राना * मरि हैं शब्द भेदि तजिवाना ॥
असकहि डिम्व तुण्ड महँ धारी * भगे दोउचित आतुर भारी ॥
सो लखि भूपति हाथ उठाई * कह पुकारि जनिजाहु पराई ॥
मैं किय अभय दान तुम काहीं * किञ्चित दोष खगीकर नाहीं ॥
वरुसो दीन्ह मोहिं हित उपदेशा * वसहु स्वतरुमधि शंक न लेशा ॥

दो०—आजु ते यहि वनके जिते, पनस जम्बु सहकार ।

सो सब राजप्रसाद इव, होइ भोग्य तुम्हार ॥
विहगहि दै संतोष नृप, आये गृह सविषाद ।
वरणेहुद्विजकृत्तिवासयह, भूप विहग सम्वाद ॥

सप्तसप्ततितम सर्ग ॥ ७७ ॥

महाराज दशरथ का इन्द्रपुरी गमन, शनि प्रसंग व जटायु मित्रता ॥

सो०—उचित काज महँ लेश, शिथिल होन भल अहै नहिं ।
असविचारि अवधेश, कीन्ह तुरत रणवेश निज ॥
पुनिसारथिहि बुलाय, कह्यो लाउ ममयान द्रुत ।
लायहु सूत सजाय, अष्ट वाजि योजित रथहि ॥

भार्गव दत्त अस्त्र खरशाना ❋ लै नृप सुमिरि शंभु भगवाना ॥
चढ़ि रथ धाव त्रिदिव की ओरा ❋ गमनत उठत चक्र ध्वनिघोरा ॥
पहुँचि रुचिर सुरपुरी मझारी ❋ धनु चढ़ाय पवि इव टंकारी ॥
कहां इन्द्र इमि वारहिं वारा ❋ रणंदेहि कह दै ललकारा ॥
अस्त्र शस्त्र ध्वन नृपहि निहारी ❋ अमर वृन्द त्रासित ह्वै भारी ॥
आय निकट कह विनय समेतू ❋ भूपति काह क्रोध कर हेतू ॥
निखिल जगतहित साधनकाही ❋ सृजेउतुमहि विधिसंशयनाही ॥
विवुध समाज सहित सुरराई ❋ शुभ चिन्ता तव करहिंसदाई ॥
मूढ़ मर्म इह सुनु नरनाहू ❋ अहै विदित अवहिं सबकाहू ॥
त्रिदशनाथ पै कोप तुम्हारा ❋ समुचितअहै न कौन प्रकारा ॥

दो०—समरअमरपतिकरिनसक, तुम सों नृप कोइकाल ।

(१) महाराज दशरथ के राजत्वकाल में अनावृष्टि होने का प्रमाण देवी पुराणांतर्गत पचासवें अध्याय में पाया जाता है; अवृष्टौकृतवानासीत क्रतुर्दशरथेनच । अन्यैश्च मुनि शार्दूल प्रजायु राज्य क क्षिभिः ॥

विनय बैन सुनि शांत ह्वै, कहइमि अवधभुवाल ॥
यदि निश्चय शुभ लालसी, अहैं हमार सुरेश ।
तौकेहिहित मम प्रजनकर, टरत न दारुण क्लेश ॥
सो०—कोशल राज्य मझार, आजु चतुर्दश वर्ष ते ।
हाहाकार अपार, वारि अभाव ते है रहा ॥
मम अधिकार माहिं बिनु वारी * सततमरत अगणितनरनारी ॥
शस्य विहीन भई क्षिति सारी * रह न नीर सरसरित मझारी ॥
यह सब चिन्ह काह मम ऊपर * अहै कृपा लक्षण सुरपतिकर ॥
काह न विदित अहै तिनकाहीं * बिना वृष्टि सारे जग माहीं ॥
सहन परत मोहि कत अपमाना * अबयहिमधिहैकुशलविधाना ॥
मम सब राज्य माहिं सुरराजू * करैं सुवृष्टि तुरत नतु आजू ॥
दै हौं अमरावतिहि नशाई * कहहु आशुसुरपति सोजाई ॥
यह सुनि सुरगण वेग सिधाये * सबवृतान्तशचिपतिहिसुनाये ॥
सुनि सुरेश अवधेश के बैना * मदवशअरुणवरणकरिनैना ॥
कह इमि है मानव अवधेशा * निन्दतसुरनशंक नहिंलेशा ॥
दो०—यह सुनि समुझायो सुरन, कहँ है ध्यान तुम्हार ।
नृप दशरथ ते रारि करि, कबहु न पैहौ पार ॥
शब्दभेदि तिनकेर शर, ख्यात अहै जगमाहिं ।
याते चलि प्रिय वचन ते, करहुशांततिनकाहिं ॥
सो०—भे सतर्क सुरराय, सार वचन सुनि सुरन के ।
नृप ढिग आशुहि जाय, विविधभाँतिसन्मानकिय ॥
तब इमि कह अवधेश, अनावृष्टि मम राज्य महँ ।
केहि हित परयो सुरेश, सो बुझाय हमसन कहहु ॥
कह्यो देवपति सुनिय नरेशा * यहिमधिमम त्रुटिअहैनलेशा ॥
उडु रोहिणी ओरि यहिकाला * है पातंगि दृष्टि यहिकाला ॥

पंगु कि दृष्टि छुडावहु जोई * तबहि सुवृष्टि अवध मधिहोई ॥
सुनि सुरराज वचन अजनन्दन * शनिगृहओरि चलायहुस्यन्दन
पहुँचि आशु शनि सदन समीपा * टेरेहु रवि नन्दनहि महीपा ॥
भूपति शब्द अशित सुनिपयऊ * गृहते निकरि द्वारपै अयऊ ॥
पर जस भूपति स्यन्दन ओरा * कीन्ह दृष्टि सप्ताश्व किशोरा ॥
तस नृप केर मनोहर याना * घूमि वेग सों चक्र समाना ॥

दो०—खस्योगगन ते निम्नदिशि, रथबन्धनि भइ भंग ।
टूटि ध्वजा लागी गिरन, इत उत विचल तुरंग ॥
सो०—सारथि सहित भुवाल, पतितनिम्नदिशिसोउघुमरि ।
लखिनपरयोतेहिकाल, नृपकर रक्षाकारि कोउ ॥

गरुड़ तनय अति दूरि दृष्टिधर * गृधकुलजात जटायुविहगवर ॥
सहसा सोइ क्षण छदन पसारी * विचरत रहे अकाश मझारी ॥
तासु दृष्टि नृप ऊपर परेऊ * तब सो इमि विचारहिय करेऊ ॥
भूमि भार हर भुवन विहारी * अवतरिहैं इन भवन मझारी ॥
यदि किंचित सहाय यहि वेरा * करहुँ अवधपति दशरथ केरा ॥
तौ मम जन्म कृतारथ होई * परहितसरिससुकृतिनहिंकोई ॥
गरुड़ सुवन यह उर ठहराई * झपटि सवेग भूप ढिगजाई ॥
पक्ष पसारि सरथ नृपकाहीं * लीन्ह धारि छद ऊपर माहीं ॥
है तेहि उपरि स्वस्थ अवधेशा * सूतहि दिय रथसजन निदेशा ॥
लहि आयसु सारथी वहोरी * सज्योतुरत रथ तुरगन जोरी ॥

दो०—पुनिरविनन्दनसदनदिशि, अश्वन कशा प्रहारि ।
यान चलायो वेग सों, गति मारुत अनुहारि ॥

(१) अरिष्टनेमि पुत्रोऽभूद्गरुडोनाम पक्षिराट् । गरुड़स्य भवत्पुत्रा सम्पाति रिति विश्रुतः ॥ अर्थात् अरिष्ट नेमि के पुत्र गरुड़ व गरुड़ के पुत्र (जटायु के अग्रज) सम्पति (मा० पु० २ अ०) सम्भवतः कविवर कृत्तिवास जीने मार्कण्डेय पुराण का मत ग्रहण किया है । अपर मतानुसार जटायु अरुण के पुत्र हैं ॥

रथ रोकाय तब सूत सों, कह इमि अवध भुवाल ।
अहै कवन जो दीन्हमोहि, प्राणदान यहिकाल ॥
सो०—है हैं जनक हमार, अथवा रघु मम पिता मह ।
जोकियअसउपकार, तासन मिलि पुनरपि चलब ॥
अस कहि कै नृप जाय, पन्नगारि नन्दन निकट ।
तेहि रथ पै बैठाय, मधुर वचन सों कहेहु इमि ॥
को तुम केहि शुचि वंश मझारा * भयहु प्रकट कानाम तुम्हारा ॥
वसत पुण्यमय केहि पुरमाहीं * लखितवकृतिअचरजहमकाहीं॥
तव उपकार शोधि नहिं जाई * दिहौ आजु नवजीवन भाई ॥
अबतुमनिज परिचयकरिदाना * करहुमोहिं प्रमुदितमतिमाना ॥
कह जटायु सादर नृप पाहीं * जानिय गरुड़तनय हमकाहीं ॥
मम अग्रज सम्पाति नामधर * मैं जटायु लघुभ्रात तासुकर ॥
खग स्वभाव वश मैं नभ माहीं * विचरत सापद लखितुमकाहीं ॥
कछु सेवा तव करि महिपाला * भयहु अकथमुदमोहियहिकाला
तुम नृपपावन धर्म प्रदीपा * तव जीवन ते सुनिय महीपा ॥
हित साधन सुर साधुन होई * यहिहितकियसमुचितमोहिजोई
दो०—कह नरेश तुम मित्र मम, जीवन रक्षाकारि ।
तव समान सद्बन्धु कोइ, मिली न जगत मझारि ॥
अस कहि पावक प्रकट करि, उभय हृदय हर्षाय ।
अनल साखि दै परस्पर, किय मित्रता दृढ़ाय ॥
सो०—प्रभु निमित्त निज आयु, उत्सर्ग्यो जोइ प्रेमवश ।
है यह सोइ जटायु, सुयशराशिपावनमनस॥
जो सुमिरै तेहि नाम, विमल हृदयते कोइक्षण ।
पूरत तेहि मन काम, कृत्तिवास हरिभूति ते ॥

(१) रोहिणी के प्रति शनि के दृष्टिपात से महाराज दशरथ के राज्य में अनावृष्टि का होना पद्मपुराण उत्तरखण्ड में वर्णित है ॥

अष्टसप्ततितम सर्ग ॥ ७८ ॥

गणेश जन्म विवरण ॥

दो०—विदा विहंगप अगंजहि, करि पतंग कुलदीप ।
तुंग तुरंगन हाँकि पुनि, गे पातंगि समीप ॥
पुनरागतलखिनृपहिशनि, मूँदि नयन इमिवैन ।
कहन लगे नरनाथ सन, अस सहास भल हैन ॥

करहु भूप हिय माहिं विचारा * मनुजयोनिमहँ जन्मतुम्हारा ॥
तबहु न शंक होत तुम काहीं * आवतपुनिपुनिममढिगमाहीं ॥
त्याजि विचार शुभाशुभ केरा * मैं जबकबहुँ काहु दिशिहेरा ॥
तासु विनाश आशु ह्वै गयऊ * अरु जो तव उदारनृप भयऊ ॥
प्रथम हेतु तेहि यह महराजू * तुम ते सिद्ध होइ सुरकाजू ॥
दूजे अहो सवंशि हमारे * पूर्व पुरुष सवि ताहि तुम्हारे ॥
दिनकर सुवन निमीलित नैना * नृप सन कहेसकल यह वैना ॥
कह्यो वहुरि अब तुम नरनाहू * सन्मुख ते पछारि मम जाहू ॥

दो०—बंनिता के अभिशाप ते, मम दृग दोष नरेश ।
मोरहि दृष्टि ते शुभसदन, भे करि वदन गणेश ॥
सो अद्भुत इतिहास मैं, वर्णन करत भुवाल ।
यहसुनिशनिपश्चातदिशि, गये भूप ततकाल ॥

सो०—कह शनि सुनिय नरेश, तमोगुणी दनुजात गण ।
ध्यायविरंचिमहेश, लहिनिजनिजअभिलषितवर ॥

ह्वै अति उग्र सुरन दिन राती * पीड़त रचि प्रपंच वहुभाँती ॥
दनुज द्रोह देवन भय छावा * यहविचार सबमिलि ठहरावा ॥

१–टिप्पणी (६२) देखो । २–टिप्पणी (६३) देखो ॥

अवशिकदनविबुधनशिककारी * यकपुरुषहि यहिसमयमभारी ॥
प्रकट करन कोइ यतन ते चहई * सोयहशक्तिशिवहिमधिअहई ॥
सुरन शोचि अस गे कैलासू * जहँ वस विश्व ईस कृतिवासू ॥
कीन्ह शम्भु नुति भक्ति समेतू * है प्रसन्न तव कह वृषकेतू ॥
केहि हित इत आगमन तुम्हारा * सुनिसुरगुरु इमिवचनउचारा ॥
लहि तव वर है चण्ड सुरारी * सृजतविविध आपदनयटारी ॥
यहिहित करिय यतन असकोई * जासन जननविघन लयहोई ॥
त्रिदिववदनसुनियहिविधवाणी * विहँसिहृदय मधिअजगवपाणी

दो०—गणपति रूप ते गौरि के, गर्भ प्रविशि त्रिपुरारि ।
भये प्रकट तनुद्युतिअतुल, लखि हर्षे सुरझारि ॥

नारदादि मुनि विधि गन्धर्वा * चारण सिद्ध नाग सुरसर्वा ॥
शैलसुता सुत दर्शन हेतू * गये मुदित वृषकेतु निकेतू ॥
केवल एक मही तेहिकाला * गयोंनशिवसुतलखनभुवाला ॥
तव यक दूत देवि मम पासू * भेजिवोलि पठयोमोहि आसू ॥
मै न टारि सक उमा निदेशू * गयों महूं शिव सदन नरेशू ॥
परजस सुन्दर शिशुमुख ओरी * परी दृष्टि नरनायक मोरी ॥
तसउड़ि गयो कुवँर कर शीशा * लखिसहसुरनचकितगौरीशा ॥
सो लखि भव भाविनी भवानी * कह इमि शोष रोष मयवानी ॥

दो०—कहहु अमर मम कुवँर शिर, केहिहितगयोविलाय ।
मंगल मय सुर आमगन, भयो अमंगल दाय ॥
यह सुनि सविनय वचन ते, कह्योसुरन करजोरि ।
भा शनि दृष्टि ते यह घटन, अपरनकाहुकिखोरि॥

(१)—गणेशोत्पति का विवरण लिंग पुराण पूर्वभाग १०५ अध्याय में इसी प्रकार लिखा है। और श्रुतिके मतानुसार भी "पतिःशुक्ररूपेण भार्य्यां संप्रविस्य गर्भतामापाद्य तस्यां भार्य्यां पुत्र रूपेण जायते" अर्थात शुक्ररूप से पति भार्य्या के गर्भ में प्रविष्ट होकर पुत्र रूप से जन्म ग्रहण करता है ॥

सो०—सुनत सुरन के वैन, ह्वै अभया कोपातुरा।
अरुण वरण करि नैन, विकट रूप कीन्ह्यो प्रकट ॥

पद्धटिका छन्द ॥

भइ ठाढ़ि घोर करि हुहुंकार। डगमगे धरणिधर पदन भार ॥
ह्वै मुक्त शीश के केश जाल। विखरे जनु छायो तम कराल ॥
शशि मारतंड अनला नुहार। क्रोधारुण तीनहु दृगन द्वार ॥
धगधग निर्गत अग्निस्फुलिंग। स्वेदार्द भयंकर सर्व अंग ॥
आरक्त लोल जिह्वा विशाल। वह सिक्कणितेशोणितकराल ॥
सन्ध्याघन रंजित गगन न्याय। उरपै नृमुण्ड माला सुहाय ॥
नरपाणिसमणिफणिगुथितजाल। परिलसतिकांचिकटिवर विशाल
श्रुतिशिशुन मुण्ड कुण्डलविभात। नासानिश्वास जनुप्रलयवात ॥
मुख गह्वर वड़वानल समान। तनु दिगाकाश अम्वरद्धान ॥
खर्पर त्रिशूल खर असि कृपान। चहुँपाणिमाहिं परिदीप्तिमान ॥
क्रोधानल ते युग भृकुटि वंक। लखि जाहिकंकउरउपजशंक ॥
उत्तोलि शूल करि अट्टहास। झपटीं भूपति मोहि करननाश ॥

दो०—यह शंकाकुल सकल सुर, शरण शरण उच्चारि।
भये पतित गीर्वाण गण, अभया पदन मझारि ॥
भे त्रासित चतुराननहु, वहुरि दोउ करजोरि।
लगे करन पार्वती नुति, नमोहिमाद्रिकिशोरि ॥

नगस्वरूपणी छन्द ॥

नमामि देवि ईश्वरी। सुरेश्वरी शुभंकरी।
मनोज नाशि सुन्दरी। नमो सदा दिगम्वरी ॥
सती विधात्रि माधवी। उमा जयंति वैष्णवी ॥
शिवा भवानि भार्गवी। भजामि देवि भैरवी ॥

नृमुण्डमाल धारणी । मशान भू विहारिणी ॥
सुरारि वृन्द घातिनी । नमो स्तुते सनातनी ॥
जनं स्ववांछितं प्रदा । अलभ्य भुक्तिमुक्तिदा ॥
निहंत्रि भक्त आपदा । नमामि देवि शारदा ॥
मनोविकार नाशिनी । विवेक बुद्धिभासिनी ॥
महेश अंक वासिनी । नयोऽऋतं विकाशिनी ॥
विराट रूप धारिणी । भवाब्धि भीतवारणी ॥
चरा चरो तपादिनी । नमो निशुंभ मर्दिनी ॥
मुनीश योगि पूजिता । सुरेश सूर सेविता ॥
अहीश शेष वन्दिता । नमो जगच्छुभे रता ॥
तमेव सर्व कारिणी । त्वमेव सर्व धारिणी ॥
त्वमेव लोक तारणी । नयो त्रिताप हारिणी ॥
जगच्चराचरे श्वरी । अनंत शक्ति शंकरी ॥
भजंति यां सदा सुरी । नमामितां महेश्वरी ॥

दो०—तुमहीं सब प्राणीन गति, विश्वम्भरी भवानि ।
तव असीम महिमाजननि, सकै न कोई बखानि ॥
भानु तनय शनि करस्वयं, तुमहि सृष्टि कियमात ।
बिनुकारणअवनिजसृजित, जनहिन उचितनिपात

तव मायाहि ते जगत मझारी * भइ शनि दृष्टि अमंगलकारी ॥
करि विचार देखिय यक वेरा * काहदोष यहि मधिशनिकेरा ॥
तुमहिं ताहि यदि हतन विचारा * तौतेहिअपर को राखनहारा ॥
होहु शांत करि कोइ उपाई * अबहि देब तव सुतहिजियाई ॥
अस कहि चतुरानन पुनराई * इमि मारुत प्रति कह्यो बुझाई ॥
शीशउतरदिशि करिजेहिकाहीं * सोवत पावहु यहि क्षणमाहीं ॥

छेदि तासु शिर आनु लयावहु * गौरिकोप ते शनिहिंबचावहु ॥
अज आदेश पवन इमि पाई * खोजन लगे चतुर्दिशि जाई ॥

दो०—सोइ समय महँ पान करि, विमल सुरसरी वारि ।
सोवत ऐरावत रह्यो, शीश उतर दिशि धारि ॥
खण्डि पवन तेहिसहितरद, शुंड मुंड सुविशाल ।
आय दीन्ह कमलासनहि, यक पलमाहिं भुवाल ॥

सो०—तवशिवसुतगलमाहिं, धरि विरंचि गजमुंड सोइ ।
किय सजीव तिनकाहिं, ब्रह्म मंत्र उच्चारि कै ॥

लखिगजमुखनिजसुतहिभवानी * दुखितहृदयकहयहिविधवानी ॥
हाय सुघर सुर सुतगण भारी * हँसिहैं मम नंदनहि निहारी ॥
गौरि वचन सुनि कहेहुविधाता * यह वचन मम मानु सतमाता ॥
सर्व गणनपति कुवँर तुम्हारा * होई यहि त्रैलोक मझारा ॥
देव गणन मधि सवन अगारी * पुजिहैं इनहि सकल नरनारी ॥
प्रथमन इन्हें पूजि जन जोई * अपर देव अर्चनरत होई ॥
तिनके धर्म कर्म समुदाई * ह्वै हैं मृषा गगन सुम नाई ॥
ऋधिसिधिनिधिप्रदविघननिकन्दन * ह्वै है प्रथिकदेवितवनन्दन ॥
सुनियहिविध विरंचि मुखवानी * ह्वै प्रसन्न मन माहिं भवानी ॥
पर दै शाप हमहि तत्काला * करदियचिर पंगुलमहिपाला ॥

दो०—पुनिविरंचि सनदुखितमन, कह सुरेश मतिमान ।
ऐरावत उच्चैश्रवा, है मम विभव प्रधान ॥
प्रभु सजीव किय गणपतिहि, ऐरावतहि बधाय ।
मम प्रिय वाहन निमित अब, होई कवन उपाय ॥

सो०—तब विधि आयसु पाय, देव समीरण आशुही ।
पश्चिम दिशि महँ जाय, छेदि श्वेत मातंग शिर ॥

तासन दीन्ह जियाय, इन्द्र द्विरद ऐरावतहि ।
यह शुचि कथा सुनाय, कहदशरथसन वहुरिशनि

मम ढिग अहै काह तव काजू * कहिय सोकरहु वेगिमहराजू ॥
यहसुनि कह्यो अवध अधिकारी * रोहिणि पै है दृष्टि तुम्हारी ॥
यहि कारण मम राज्य मझारी * पीडित प्रजा न वर्षत वारी ॥
कह शनि रोहिणि दिशितेराजू * आजुते किहौं दृष्टिपरित्याजू ॥
जाहु भूपवर नगर मझारा * मंगल मयपुर होइ तुम्हारा ॥
सुनिशनि वचन नृपतिसहुलासू * गये वहुरि अमरेश के पासू ॥
निज आसन दै नृपहि सुरेशा * पूँछेहु कुशलकहियअवधेशा ॥
ह्वै प्रसन्न शनि भाषेहु जोई * नृप सुरपतिहि सुनायहु सोई ॥
सो सुनि कह वासव इमि वानी * जाहुस्वदेश नृपतिगुणखानी ॥
आजु ते सप्तदिवस लगि वारी * वरसी नृपतव राज्य मझारी ॥

दो०—त्रिदशराज के वचनसुनि, हर्षि महीप महान ।
लैविदाय निजनगर कहँ, आशुहि कीन्हपयान ॥

षटपद छन्द ॥

इत सवर्ता वर्त द्रोण पुष्कर चहुँ घन कहँ ।
दीन्ह निदेश सुरेश जाय तुम अवधपुरी महँ ॥
सप्त दिवस निशि वरसि सुखद अविरल निर्मल जल ।
विघन निधन करिकरहु अवधपुर प्रजन मगन भल ॥
सुरराज वचन सुनि अम्बुदन जाय अवध महँसोइक्षन ।

१–पार्वती तनय हेरम्ब को गजमुण्ड प्राप्त होने का वृत्तांत जो महानुभव कृतिवास ने इस स्थानमें वर्णन कियाहै उसकी अधिकांश कथा ब्रह्म वैवर्त पुराणगणपतिखण्ड ११ व १२ अध्याय से मिलता है केवल ऐरावत प्रसंग विभिन्न है । सम्भवतः कवि ने किसी अपर ग्रन्थ का अवलम्बन किया होगा. पौराणिक प्रसंग अपरसीम हैं । का. प्र. सि.

(२) मूल ग्रंथ में इस स्थान पर लिपि कर प्रमाद वश एक दुर्बोध पद आया है उसका अर्थ मनोगत न होने से ग्रहण न कर सका (अनुवादक)

घन घटाछाय वर्षन लगे हेरि प्रजा सब मुदित मन ॥
सलिल पुर भे सकल विपुल नद नदी सरोवर ।
नव किशलय मय भये वहुरि तरु निचय मनोहर ॥
तापहीन भइ धरणि शस्य शालिनी अधिक तर ।
प्रचुर रुचिर फल शालि भये उपवन के तरुवर ॥
प्रांतरन माहिं नव अंकुरित छादित सुन्दर तृण हरित ।
नरनारि पक्षिपशुनिकर मधिछावमोदपुनिअपरमित ॥
जिमि तप पूरण भये मनोरथ होत सतत सिधि ।
तिमि आनँदध्वनि छयो चतुर्दिशि ग्राम पुरन मधि ॥
पुनरपि राजा प्रजा सहित सुख निवसत संतत ।
यज्ञ दान सत्कर्म धर्म महँ रहत सतत रत ॥
यहविघननिधनधरणीशकरविघनहरणकरशुभसृजन।
द्विजकृत्तिवास वर्णन कियो सुनिमनुजनटरिहैंविघन ॥

एकोनाशीतितम सर्ग ॥७९॥

म ार ज दशरथ को कन्या लाभ व अन्धक मुनि पुत्रवध विवरण ॥

दो०—चक्रवर्ति दशरथ नृपति, सकल गुणन आगार ।
क्षिति मण्डलपालनकरत, आखण्डल अनुहार ॥
इमि व्यतीत भे नवसहस, वर्ष महीपति काहिं ।
सार्द्ध सप्तशत रानि रहिं, तिन अंतःपुरि माहि ॥
सो०—पर तिन मधि संतान, भयहु न कौनेहु रानिके ।
यहिहित दुखित महान, रहतहृदयमधि नृपतिवर ॥

(१) नववर्ष सहस्राणि मम जातस्य साम्प्रतं । वृद्धे नो त्पादिताः पुत्रा मयाचैते कथंचन (वंगीय रा० वा० का० २३ सर्ग) ॥

इमिअरु कछुककाल चलिगयऊ * तनयकककुवँरि नृपति केभयऊ ॥
जगत प्रथित शांता जेहि नामा * विधुवदनीछविसदनिललामा॥
लोमपाद नृप अंग देश पति * तिनसोंरहि दशरथ मिताइअति
वचन बद्ध दृढ़ तिनके साथा * रहे भानुकुल मणि नरनाथा ॥
यह यह जौन समय सुनि पयऊ * दुहिता नृप दशरथ के भयऊ ॥
सोइ क्षण कुवँरि आनयन काहीं * पठयो दूत अवध पति पाहीं ॥
सत्य सन्ध दशरथ महराजू * निजपणवतममताकरित्याजू ॥
प्राण प्रिया निज तनुजा काहीं * दीन्ह पठाय सखागृह माहीं ॥
अंगराज के भवन मझारी * लगी पलन शांता सुकुमारी ॥
इत मृगया हित अवध भुवाला * धरि धनुसर गमने यककाला ॥

दो०—निकरि गये वहु दूरि नृप, महा सघन वन माहिं।
　　पर विधिवश बनपशुकोइ, मिल्यो महीपहिनाहिं ॥
　　इमि अहेर हेरत फिरत, इत उत चारिहु घायँ।
　　अंधक मुनि आश्रम निकट, पहुँचे भूपति जाय ॥

सो०—सोइ समय दिनराज, भये अस्त दिनकाज करि।
　　तव दिनकरकुलराज, रुचि न कीन्ह आगे वढ़न ॥
　　सरयू तीर विशाल, हेरि एक पादप सघन।
　　तेहि तरु तरे भुवाल, ठहरे निशि वितवननिमित ॥
　　दैव योग तेहि ठाम, अंधक मुनिवर के तनय।
　　प्रथित सिन्धु जेहि नाम, आये सरयू जल भरन ॥

जस तुम्बिका सरित मधि डारी * लागे भरन अंधसुत वारी ॥
डुब डुब शब्द तुम्विते भयऊ * सोध्वनिनरनायकसुनिपयऊ ॥

---

(१) यह कथा वाल्मीकीय रामायण में नहीं है। पद्मपुराण में इसका उल्लेख है; यथा अथ शांता भवन्नाम्ना कन्यतस्य (दशरथस्य) महात्मनः। तामसौ प्रददौ शख्ये रोमपादाय भूभुजे ॥प० पु०॥ लोमपाद को "रोमपाद" भी कहते हैं ॥

तब भूपति उरमधि यह जाना ❋ करिरहकोइ कुरंग जलपाना ॥
अस विचारि धनुपै ततकाला ❋ शब्द भेदि शर जोरि कराला ॥
सो स्वर ताकि वेग सो वाणा ❋ तज्योकर्षि धनु श्रवणप्रमाणा ॥
फुफकतविशिख भुजगअनुहारी ❋ लग्यो सिंधु के हृदय मझारी ॥
तेहि प्रहार मुनि सुत अकुलाई ❋ भे क्षिति पतित स्वचेत विहाई ॥
इत मृग ग्रहण हेतु नरनाहू ❋ कीन्ह गमन द्रुतपद सउछाहू ॥
पर नृप पहुँचि लक्ष्य थल माहीं ❋ लख्योपतितयकऋषिसुतकाहीं ॥
छटपटात हिय वेधित वाना ❋ स्रव शोणित शरीर हतज्ञाना ॥

दो०—लखतहि नृपके शीश महँ, भयहु मनहु पविपात ।
हाय हाय मैं काह किय, कर मींजत पछितात ॥
मुनि सुत दारुणव्यथासो, सकत न वचनउच्चारि ।
करि इंगित अंगुलीते, नृप सन मांग्यो वारि ॥

सो०—तव नृप तुरत सिधारि, लाय अंजुलीभरिसलिल ।
दियतेहिमुख महँडारि, कछुकस्वस्थ है सिंधुतब ॥
लखिशंकितनृप काहिं, कहेहुकरहु जनिशंकतुम ।
लाभ मोहि कछु नाहिं, दिहे शाप अनुतप्त कहँ ॥

यहिमधिदोष न तनिक तुम्हारा ❋ कोलिलार लिपि मेटन हारा ॥
सुनु नृप पूरुब जन्म मझारा ❋ रह्यों महूं यक राजकुमारा ॥
वाल स्वभाव वर्तुला धाता ❋ करत रह्यों मैंखगन निपाता ॥
सतिय कपोतहि मै यक वारा ❋ विटप शाष पै वैठ निहारा ॥
वर्तुल वेग प्रहारत भयऊ ❋ सोलखिद्रुतकपोतिउड़िगयऊ ॥
पर निस्तल कपोत उर परेऊ ❋ सो क्षततनु क्षिति पैद्रुतगिरेऊ ॥
मरण समय सो खग महराजू ❋ दैइमि शाप कीन्ह तनुत्याजू ॥
वधे प्राण विनु दोषहि मोरा ❋ यहिअघ अपरजन्ममहँतोरा ॥
मरण अवशि अपघात ते होई ❋ नृप नहिं टरत कर्मगति जोई ॥

सोइ छदि शाप सोहिं यहिकालू * भयहुँकाल कवलित महिपालू ॥
दो०—पर मैं पूंछत काह अस, किय अपराध तुम्हार ।
जेहिहित तुम हनिप्रखरशर, कीन्ह्यों मोहिं संहार ॥
अन्धजनकजननीनिमित, सलिलआनयनकाहिं ।
आयहुँ मम आश्रम अहै, यहि श्रीफ़ल वनमाहिं ॥
सो०—हाय कछु न कहि जात, तृष्णातुर मम मातुपितु ।
ह्वै हैं अति अकुलात, लखिविलम्बमम फिरनमहँ ॥
विपद् जाल महँ भूप, परयो मोहिं वधि दैव वश ।
मही अधार स्वरूप, रह्यों अंध पितु मातु कर ॥
मोहि विहाय अपर जगमाहीं * तिन सुधि लेनहारकोउनाहीं ॥
मम मृतु पै अब हाय विधाता * तजिहैंतनु अनशनपितुमाता ॥
हाय मरण क्षण यहि अधिकाहीं * भयहु मातु पितु दर्शन नाहीं ॥
कोइ विध मम पितु मातु समीपा * मोहिलैचलहु आशुअवनीपा ॥
यही माहिं तव है कुशलाई * नतुअनर्थ अतिविषम लखाई ॥
शोक सिक्त सुनि ता मुखवानी * भूप दशा नहि जाय वखानी ॥
कम्पित गात तुरत नरनायक * मुनिउतरेनिकारिलियशायक ॥
लहि असहन शर कर्षण पीरा * रुधिरउगरिमुनि होयअधीरा ॥
एकवार हरिनाम उचारयो * तजिशरीरपरलोकसिधारयो ॥
तेहि गताशु लखि नृप मनमाहीं * इमिचिंतितपुनिपुनिपछिताहीं॥
दो०—हाय आय मृगया निमित, विधिवश यहि वनमाहिं ।
घोर पाप संचय किहौं, वधि तापस सुत काहिं ॥
वहुरि सिंधु शव कंध पै, धारि अधीर महीप ।
स्रवत अश्रु पहुँचत भये, अंधक कुटी समीप ॥
सो०—इतऋषिऋषितियकेर, वाम दहिन दृग भुज फरक ।
लखिअशुकनहिघनेर, इमिऋषिसोंऋषिनारिकह ॥

आजु वारहीं वार, देखि कुलक्षण परत वहु ।
अबलगि तनय हमार, आवन कस फलमूल लै ॥
अति अकुलाय प्राण मम हरेऊ * यहसुनिइमिअंधकमुनिकहेऊ ॥
प्रिये अलीक चिंत करु त्याजू * निकटन पाव तनय फलआजू ॥
यहिहित विपिन माहिं वहु दूरी * अवशिगयो खोजनफलमूरी ॥
याते लग विलंव तेहि काहीं * आवत होइ कछुक क्षणमाहीं ॥
इमि मुनिरह तिय काहि वुझाई * तेहि क्षणनृप पद आहट पाई ॥
निज तनुजहि गृह आवतजानी * वहुरितीय प्रतिकह इमिवानी ॥
लेहु प्राणप्रिय सुत तव अयऊ * असकहि उच्च पुकारत भयऊ ॥
आउ आउ ममसुत जीवननिधि * इतकसमयकस भयउफिरनमधि
बूझि परत यह मोहि कुमारा * रहे भूलि कहुँ खेल मझारा ॥
पुत्र वत्सला जननि तुम्हारी * रहिचिंतित तवविलँवनिहारी ॥
अनशनकालि ते तव पितुमाता * सोभल विदितअहै तोहिताता ॥
देहु अशन द्रुत लायहु जोई * क्षधा क्लेश अब सहन नहोई ॥

दो०–नयन हीन पितु मातु के, तुमही गति सब काल ।
यहि प्रकार करुणा वचन, सुनिमुनिवदनभुवाल ॥
उरमधिअतिशय विकलहै, देह दशा विसराय ।
जस के तस ठाढ़े रहे, सके निकट नहिंजाय ॥

अशीतितम सर्ग ॥८०॥

अंधक मुनि का निजवृत्तांत कथन व महाराज दशरथ को शाप प्रदान ॥

दो०–हेरि मौन आगंतुकहि, निकटहु आवत नाहिं ।
प्रकट भयहु संदेह अति, अन्धक मुनि उरमाहिं ॥

पर तेहि पुत्रहिज्ञान करि, कह इमि वचन बहोरि ।
काह आजु तैं करि रहे, यहकस भइ मति तोरि ॥
सो०—ताहू पै जब कोय, उतर न पायो मुनि प्रवर ।
तबअतिविस्मितहोय, ध्यान मगन तुरतहि भये ॥
सब वृत्तांत ध्यान ते जानी * होयविकल अतिशयमुनिज्ञानी
शिर उर ताड़त वचन उचारा * हाय भूप मम सुतहि संहारा ॥
बधि मम तनुजहि ह्वै नृप पावन * अब तेहिशवमोहिलावदिखावन
यहियक रह मम सुत महराजू * सो मोहिकिहो पुत्रविनु आजू ॥
सुवन शोक ते जौन प्रकारा * हमदोउ करव प्राण परिहारा ॥
तिमि तुमहू नृप विनु सन्देहा * तजिहौ तनय शोक ते देहा ॥
यह सुनि होय मुदित नरनाहू * शुभ उचारिकह सहितउछाहू ॥
सुतमुख हेरि तजहुँ यदि प्राना * तोमोसमसुखि जगतनआना ॥
ऋषि तव शाप पुत्र वर मोहीं * तवशुभ वचन मृषाजनिहोहीं ॥
सुनिसचकित मुनिउरमधिकहेऊ * यह तौ नृपति अपुत्रकअहेऊ ॥
दो०—यहि हितमम अभिशाप कहँ, करत पुत्र वर ज्ञान ।
बहुरि ध्यान ते मुनि वरहि, परयो मर्म यहजान ॥
इनकेगृहमधिजगतनिधि, जलधिजेशसिधिदानि ।
चारि अंश ते प्रकटि हैं, पालनहित विधिवानि ॥
सो०—गूढ़ मर्म यह जानि, कह अन्धक मुनि भूप सों ।
चारि पुत्र मुदखानि, ह्वै है तुम्हरे अवशि नृप ॥
हम तापसन के वैन, होत व्यर्थ कबहूं नहीं ।
सहित नारि विनु नैन, हमहु भये ऋषि शाप ते ॥
सो इतिहास भूप धरि ध्याना * सुनहुकरत यहिकालबखाना ॥
तपोनिधान ज्ञान गुण ग्रामा * यकमुनिरहेत्रिजटजिननामा ॥
श्लीपद रोग ते तिन मुनि केरे * कुत्सित दोउपद रहे घनेरे ॥

ममपितु गृह मधि सोयककाला ❋ भिक्षाहित आये महिपाला ॥
तिनहि जनकममविविधप्रकारा ❋ अशनकराय सहित सत्कारा ॥
विदा करन क्षण कह हम पाहीं ❋ मुनिपद रजलैधरु शिरमाहीं ॥
तिनकर चरण कदर्प निहारी ❋ उपजघृणा मम हृदयमभारी ॥
पर नहिं सक्यों टारि पितु बैना ❋ मुनिपदगह्यों मूंदि दोउनैना ॥
सो लखि कह सकोप मुनिराई ❋ ऐ सहि रहु दृग हीन सदाई ॥
मोसम मोरि तियहुकृति कीन्हा ❋ मूंदिनयनमुनिपदरजलीन्हा॥

दो०—महामहिम मुनिके वचन, भयहु न वृथा भुवाल ।
सहित नारि हम शाप वश, भये अंध तत्काल ॥
तिमिअमोघ जानहुनृपति, मम मुख भाषितवानि ।
चारि पुत्र लहि होइ हौ, पुत्रवान् यशखानि ॥

सो०—शृंगी ऋषिहि बोलाय, जाय यज्ञ आरँभ करहु ।
यह श्रीफल लै जाय, धरयो चारु चरु मधिनृपति ॥
यहि प्रभाव ते भूप, तव त्रय रानिन गर्भ ते ।
ह्वै हैं सुभग अनूप, चारि तनय भवभाव मम ॥

कह्यो बहुरि मुनि रुदन अधीरा ❋ कहँममसुतकर मृतकशरीरा ॥
तब सशोक नृप तेहि शव काहीं ❋ धरिदियमुनिवरसन्मुखमाहीं ॥
परसि तनुज तनु मुनि अकुलाई ❋ विलपत देह दशा बिसराई ॥
रे प्रिय पुत्र अंध दृग तारे ❋ शोक शेलहनि कहां सिधारे ॥
साधि उग्र व्रत तप सउछाहू ❋ तब तोहिं तातकिहौं मैं लाहू ॥
हा श्रुति ध्वनि श्रुतीन सुखदाई ❋ कोअब नितप्रतिमोहिसुनाई ॥
सन्ध्यावन्दन के अवसाना ❋ कोममहुतिआहुति करिदाना ॥
मैं न कबहुँ गुरु निन्दा करेऊँ ❋ नहिं हिंसा नहिं परधनहरेऊँ ॥
संध्या होम नेम आचारा ❋ मैं न कीन्हत्यागनकोइ बारा ॥
कौन दोष ते विधि अस कीन्हे ❋ दारुण पुत्र शोक मोहिं दीन्हे ॥

दो०—हाय सुवनयम सदनयदि, अधिक रहै प्रिय तोहिं।
तौ लै चलु निज संग महँ, निजजननीसहमोहिं॥

नराच छन्द॥

मुनीश नारिहू स्वदेह की दशा बिसारिकै।
करैं लगीं विलाप शीश वक्षको प्रहारि कै॥
हृदै लगाय पुत्र देह काहि वार वारही।
उचारहीं प्रलाप वैन वातुलानुहार ही॥
कहा भयो है तोहिं पुत्र आजु मौनता महे।
रिस्वय कौन हेतु तात लोटि भूमि पै रहे॥
पुकारु मातु मातु मोहिं तात एक वार रे।
विशून भोर क्रोड कै कहां गये सिधार रे॥
भुलाय हाय प्राणपुत्र तोहिं कौन लै गयो।
दया विहाय मोहि लूटि निर्दयी दई लयो॥
पिता सों सर्वशास्त्र वेद नीति पुत्र तैं सिखे।
स्वमातु काहिं शैलधात मारि वो कहां लखे॥
उठो उठो प्रभात है गयो उये दिवामनी।
सुचारु कंठ सों करौ श्रुतिध्वनी सुहावनी॥
गये सिधारि सून तैं विचारु एक वार रे।
को देइहै तिहारे अंधतात को अहार रे॥
विरंचि तोर रंचहू प्रपञ्च जानि ना परे।
किहे सस्वामि अंध मोहिं यष्टिहू पुनः हरे॥
सुनो महीप मोर पुत्र जाय के वस्यो जहां।
खरास्त्र ते सँहारि मोहुँ काहिं भेज दे तहां॥

दो०—सुतशोकिततियसहितमुनि, सके धारि नहिं धीर।

गे हरिपुर हरि हरि उचरि, परिहरिअचिरशरीर ॥
तबअति तापित चित नृपति, तिनतीनहुँ शवकाहिं ।
कीन्ह दाह कृतिरचि चिता, विशुचिसरयुतटमाहिं ॥
सो०—विधि गति अपरम्पार, कृत्तिवास को जानि सक ।
करि तापसहि सँहार, लह्यो पुत्रवर अवधपति ॥

एकाशीतितम सर्ग ॥८१॥

गुहक सम्वाद ॥

दो०—दाह कर्ममुनि केरि करि, दुखित तजत दृगवारि ।
शेष निशा महँअवधपति, आयस्व नगर मझारि ॥
भयहु घटन जोइ दैव वश, कहन हेतु तेहि काहिं ।
क्षभित हृदयगे कुलगुरु, ऋषि वशिष्ठ गृह माहिं ॥
सो०—पर मुनि तपो अगार, रहे न तेहि क्षण भवनमहँ ।
सरयू सरित मझार, गये रहे सन्ध्या करन ॥
मुनि के तनय रहे गृह माहीं ❋ कहिसब कथानृपतितिनपाहीं ॥
पूंछेहु केहि विधि सोहि हमारा ❋ तापस वध अघ होइ उधारा ॥
कहमुनिसुवन्न सुनियमहिपाला ❋ अशुचिकाललाग्योयहिकाला ॥
विधिवतमख आदिककोइकाजू ❋ करन निषेध अहै महराजू ॥
मम चिवार महँ कोइ उपाई ❋ यहि क्षणमाहिं न देतदिखाई ॥
पुनिउर महँ वशिष्ठ मुनिनन्दन ❋ निगमागम पुराणकरिचिंतन ॥
सहसा सोइ मंत्रमन परेऊ ❋ जासों बाल्मीकि मुनि तरेऊ ॥
तब मुनिसुतह्वै मुदित अपारा ❋ यहि प्रकारउरकीन्ह विचारा ॥

(१) टिप्पणी (६४) देखो

दो०—रत्नाकरअधिहननकिय, अगणितद्विजनकेप्राण ।
सोउ जेहि नाम प्रतापते, लह्योनिमिषमहँत्राण ॥
सोइ अनन्य उपाय तजि, अपर भूप कर हैन ।
अस विचार उर धारि कै, कहनृप सन इमि वैन ॥

करि आवहु मज्जन द्रुत भूपा ❋ उपदेशव यक मंत्र अनूपा ॥
ज्यहि जप कीन्हे बिनहि प्रयासू ❋ होइ ब्रह्म वध पातक नासू ॥
यह सुनि प्रमुदित चित नरनाहू ❋ आये तुरतहि करि अवगाहू ॥
करि आचमन तबहिंमुनिनन्दन ❋ सुमिरिपतितपावनजगवन्दन ॥
राम नाम अघ दारण कारी ❋ कहवायो नृपसन त्रयबारी ॥
कह बहोरि यहनाम पुनीता ❋ सुमिरैं जोइ यकबार विनीता ॥
युग युगान्त के कलमष तासू ❋ बिन सन्देह जात ह्वै नासू ॥
विगत चिन्त चित लाय नृपाला ❋ जपहुजाय यह नामरसाला ॥
भक्त शिरोमणि नृप गुणधामा ❋ सुनतहिनित्य मुक्तिप्रदनामा ॥
इमि तिन उर गदगद ह्वै गयऊ ❋ पूर्व सुरति जनु भासितभयऊ ॥

दो०—मणिकारहिमणिमूल्यगुण, ज्ञात जौन विधि होय ।
तिमि प्रभाव यहि नामकर, जान भक्तजन जोय ॥

छप्पै ॥

ज्यहि प्रकार है बादि मधुर बीनाध्वनि वधिरहि ।
बादि काव्य रस जड़हि ज्ञान चचा जिमि चोरहि ॥
बादि नपुंसक काहिं इन्दुमुखि सुवर कामिनी ।
चर्मचोरहि रवि ज्योति अंधकहँ चान्द्र यामिनी ॥
हैलम्बग्रीवकहँसकलविधि बादिशर्करास्वादजिमि ।
यकशब्दमात्रहीनाम यहअरसिक जनकहँअहैतिमि
नर नरेश श्रुति माहिं नाम यह इमि सुख दयऊ ।

जनु पिकध्वनैं निचोरि नाम यह निर्मित भयऊ ॥
अथवा वागीश्वरी देवि मधि सुध सुहावन ।
त्यहि नवनीत सों रच्यो नाम यह त्रिभुवनपावन ॥
जबनृपतिनामयहउच्चरेउ तबझिझकसर्वतनुइमिभई ।
जनुदमकि दामिनी बारइक बहुरितुरतही दुरिगई ॥
सो०—स्वेद कम्प दृग वारि, त्रय लक्षण यह प्रकट भे ।
नृप त्यहि समयमझारि, ह्वै गदगद प्रमुदित वदन ॥
जोरि पाणि शिरनाय, करिप्रणाम मुनि नंदनहिं ।
सबिनय मांगि बिदाय, कीन्हगवननिजभवनकहँ ॥
दो०—इत बशिष्ठ कछुकाल महँ, निज आश्रम मधिआय ।
नितकारजन समाप्तकरि, बैठ बेदि पै जाय ॥
तब सबिनय तिनके तनय, नृप आगमन जनाय ।
कह पितुसन अवधेशकर, सब वृत्तान्त बुझाय ॥
जब सुत मुख ते यह कथा, सुनी विरंचि कुमार ।
कहवायो नर नाह सों, राम नाम त्रय बार ॥
तब जिमि तप्त तैल महँ बारी * परतहि भभरि उठतयकबारी ॥
तिमि रोषानल मुनि उर छयऊ * निजसुतहि इमि भाषत भयऊ ॥
रे विमूढ़ ह्वै मम सन्ताना * भयो तोहिं लेशहु नहिं ज्ञाना ॥
राम नाम प्रभुता अस धारत * ज्यहि सप्रेम यकबार उचारत ॥
कोटिन द्विजवध पाप कलापा * नशत आशु असजासुप्रतापा ॥
काह समुझि सोइ नाम उदारू * नृपसन कहवायसि त्रय बारू ॥
राम नाम कर यदि तैं मूढ़ा * जनतेसि अतुलमहातम गूढ़ा ॥
तौ नरपतिहि करनहित पावन * रह यथेष्ट यकबार कहावन ॥
महापातकिन करन उधारा * प्रकट नामयह जगत मझारा ॥
गुरुधन हरण सँहारण नारी * गोद्विजहतन आदिअघभारी ॥

दो०—अर्द्धमात्र यहिनाम कहँ, श्रद्धायुत यक बार ।
उच्चरतहि ह्वै जात हैं, सो सब पातक छार ॥
जप तप व्रत संयम नियम, सबन सार यह नाम ।
ज्यहिसुनायशिवकाशिमधि, जननदेतनिजधाम ॥
सो०—यह एकहि अस नाम, उच्चारे यक बार यहि ।
लह फल जन अविराम, सोइ नाम जपसहसकर ॥
कीन्हेसु अस जड़ताय, मम सुतयोग्य न अहसितैं ।
अधम योनि लहुजाय, ब्राह्मणत्त्व परिहार करि ॥
सुनि पितु शाप मुनीश कुमारा * होयविकलइमि वचनउचारा ॥
हाय भाग्य कीन्हे लघु दोषू * दिय पितु घोरशाप करिरोषू ॥
पुनि कह जनकते सुनियकृपाला * शापमुक्त ह्वै हौं क्यहि काला ॥
कह कोबिद अरुदेत दिखाई * सन्त रोष सन्तत क्षण थाई ॥
सुतहि बिकल लखिकह मुनिराई * होई शाप तोहिं शुभदाई ॥
तैं जिन केर नाम अघहारी * कहवाये नृप सों त्रयबारी ॥
तें दशरथ निकेत अवतरि हैं * खलन निधनदेवन दुखटरिहैं ॥
जबहिं सुतन सह नृप मतिमाना * जैहैं करन गंग असनाना ॥
तबहिं कराल दस्यु की नाईं * रोधेहु तिनकर पथ द्रुत धाई ॥
यहि उपाय ते तोहिं जगपावन * होइ राम पद परस सुहावन ॥
दो०—याते बिनु सन्देह सुत, तुम अधमत्त्व विहाय ।
लहिहौ जीवन्मुक्त पद, प्रभु के सखा कहाय ॥
यहि वशिष्ठ मुनि के तनय, वामदेवै गुण ग्राम ।

१—१सर्ग देखो । २—पुराणोंमें ऋषि वामदेवका उल्लेखहै; परन्तु वह किसके तनय थे इसका लेख कहीं नहीं मिलता । कृत्तिवासजीके मतमें वामदेव वशिष्ठके आत्मजोंमें से हैं। राज कृष्ण प्रकाशित कल्कि पुराण के पञ्चम अध्याय में वामदेव वशिष्ठेत्र अर्थात् वशिष्ठ के पुत्र कह के वर्णित हैं किन्तु हमारे निकट जो अपर एक कल्किपुराण है उस में वामदेव का वशिष्ठ पुत्र होना पाया नहीं जाता और हमको यह भी निश्चय नहीं हुआ कि महात्मा कृत्तिवास जी ने इससर्ग किस पुराण का अवलम्बन किया है ।

भये निषादाधिप सुमति, ख्यात गुहक ज्यहि नाम ॥
सो०-बिलग राखि निजकहिं, लोकरीति पालन निमित ।
प्रभुपूजनकृतिमाहिं, किय नियुक्तमुनिनिजसुतहिं ॥
कृत्तिवास बुध जान, पितापुत्र मधि भेद नहिं ।
यहिहितगुप्तविधान, किय सुतपितुकृतिसमसमुझि ॥

द्व्यशीतितम सर्ग ॥८२॥

सम्बरासुर की वृद्धि व दशरथ की तत्सहित युद्धार्थ यात्रा ॥

दो०-एक समय महँ यक असुर, सम्बर नाम कराल ।
अति दुरन्त प्रकटत भयो, जनु कालहु कर काल ॥
प्रबल पराक्रम सो दनुज, मायावी बल धारि ।
ज्यहिछलछन्दतेअतिव्यथित, लोकपाल सुरझारि ॥
सो०-जीति सुरन रन माहिं, करि करतल अमरावतिहि ।
वैजयन्ति पुर माहिं, निज शासन थापन कियो ॥
इत उत शंकित गात, भ्रमत अमरगण मानहत ।
दनुजन के उत्पात, श्री विहीन भइ सुरपुरी ॥
है अति विपद ग्रसित सुरराई * सब वृत्तान्त कह विध सन जाई ॥
सोसुनि हृदय चिंति कर्तारा * सुरपति प्रतिइमि वचन उचारा ॥
तुम रविकुल मणि दशरथ पासू * जाय सहाय याँचहू आसू ॥
तपन ताप ते जौन प्रकारा * नसत तुषार निमेष मझारा ॥
तिमितिन नृपति प्रताप अगारी * होहिंछार तव रिपु कुलझारी ॥
सादर तिन्हें जाय ले आवहु * सुरपुर कर आपदा मिटावहु ॥

सुनिविधिवचनइन्द्र मन भाये * अवधा धिप ढिग तुरत सिधाये ॥
लखि सुरनाथकाहिं नर नाहू * दैनिज आसन सहित उछाहू ॥
करिअर्चन विधिवत सन्मानी * बोले वचन सुधा रस सानी ॥
किह्यो आजु मम प्रयतनिकेतू * जानन चहौं आगमन हेतू ॥

दो०—मधुर वचनसुनि नृपतिमुख, लागे कहन सुरेश ।
तुम बंधित मम मित्रता, सूत्र माहिं अवधेश ॥
उत्कट संकट सिंधुमधि, मैं निपतित यहि काल ।
कर्णधार इव हम सबन, तुमहीं एक भुआल ॥

सुर अरिसम्बर असुर कराला * जीति समर मधिहमैं भुआला ॥
त्रिदशनताड़ितत्रिदिवते कीन्हा * सुरपुरनिजाधीन करिलीन्हा ॥
हम विपन्न तव शरण नरेशू * करयहरण सुरगणन कलेशू ॥
यदि करि संगर संबर साथा * तेहिखल काहींहतहु नरनाथा ॥
तौ नृप अवशि प्रसाद तुम्हारे * ह्वै हैं सब सुर बृन्द सुखारे ॥
यह सुनि कहा सहर्ष अवधेशू * तुम उर चिंता करहुजनिलेशू ॥
मैंखरशरन अमर अरि काहीं * करिहौं काल कवल पल माहीं ॥
यहसुनिइमि प्रमुदित सुरनाहू * मनहुं भयउ नव जीवन लाहू ॥
दै भूपहि आशिष सुर राई * कीन्ह गमन उर चिंत विहाई ॥
इत ककुत्स्थ कुलकमल दिनेशा * सैन सजन हित दीन्ह निदेशा ॥

दो०—अनि किनी चतुरंगिनी, रिपु मद दमनि अजेय ।
नृप अनुशासन सों तुरत, सजी अभेद्य अमेय ॥

रोला छन्द ॥

अगणित सुबरण रचित खचित मणिरतन प्रबाला ।
बिज्जुछटासम सोह सादिसह यान बिशाला ॥
कोटिन तुंग मतंग अंग गिरि शृंग सो राजत ।

स्वर्ण शृंखला युक्त घण्ट दोउ दिशि महँ बाजत ॥
बाजि राजि बर साज सजित गति मनस विजेता ।
नर्तत थिरकत हृषत सोह आरोहि समेता ॥
दृढ़ वर्मावृत गात पाणि धृत चर्म कृपाना ।
शेल शूल असि परशु गदा पट्टिश धनुबाना ॥
क्रुधु केसरी सरिस युद्धप्रिया पाँतिन पाँती ।
विन सँभार सागराकार भट सजे पदाती ॥
गज बृंहन हय हृषन भटन केहरि ध्वनि घोरा ।
सबन सोहिं प्रति ध्वनित कुधर कन्दर चहु ओरा ॥
प्रबल पवन अनुहार बेग गतिवान तुरंगा ।
विपुलकाय मदमत्त नीरदोपम मातंगा ॥
सहस २ सित छत्र सितच्छदकुल की नाईं ।
सब मिलि नृपकर कटक घन घटा सरिस सुहाई ॥
रथ चक्रोत्थित अमित गाढ़तर रेणु निहारी ।
जनु ह्वै रहि क्षिति उर्द्धगमनि त्याहि समय मँझारी ॥
अंजनवर्ण मतंग श्रेणि यहि भाँति सुहाई ।
जनु क्षिति पै रहे विचरि नील नीरद समुदाई ॥
पुनि अभेद्य दृढ़ कवच अवधपति करि परिधाना ।
गहि प्रचण्ड कोदण्ड सुमिरि गणपति भगवाना ॥
कैकेयी प्रिय रानिकाहिं सँग लै चढ़ि याना ।
दोह डंक दै सदल समर हित कीन्ह पयाना ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

रणवाद्य विविध प्रकार भेरी तुरी मौहरि बाजहीं ।

(१) वाल्मीकीय रामायण अयोध्या काण्ड ६ सर्ग व अध्यात्म रामायण अयोध्या काण्ड २ अध्याय देखो ।

बहुभाँति पँतिन पाँति केतु विचित्र सुन्दर भ्राजहीं ॥
अभिराम स्यन्दनदाम बामललाम मनसिज गतिजुरे।
जिनचपलगतिलखि चपलचपलाअनिलहू नभपटदुरे ॥
घन चर्मखड्गन दमक दामिनी भटनगर्जन कुलिशही।
शरवाम जनुसुरचाप द्युतिअर्द्धेन्दु सरिस प्रकाशही ॥
जगव्यापि भूपति कर प्रचंड प्रताप अग्र सिधावही।
ताके पछारी तुमुल सेना ध्वनि सवेग प्रधावही ॥
तेहिके परे रजराशि गाढ़ प्रयात तदनु भायवनी।
क्षणछटायुत घनघटा सरिस प्रयात भूपति बाहिनी ॥
कृत्तिवासज्यहि अवलोकि कै उरमाहिं यहिबिधिभावई।
जनु राजसेना चतुर्व्यूह विभक्त होय सुहावई ॥

त्र्यशीतितम सर्ग ॥ ८३ ॥

सम्बरासु निधन ॥

दो०–कछुक्षण मधि दनुजाधिकृत, अमरावती मँझार।
पहुँची अरिमद मर्दिनी, राघव अनी अपार ॥
थलन थलन पै चतुर्दिशि, अतिदृढ़ गुल्मबनाय।
अश्म यंत्र क्षेपणीचय, जहँतहँदीन्हलगाय ॥

करधृत तोमर प्रास कराला * कूटकुशल बहु भटनभुआला ॥
उच्च उच्च थल रक्षण हेतू * किय नियुक्त द्रुतसुतन समेतू ॥
प्रखर खनित्र टंक करि धारण * लागे बहुभट दुर्ग विदारण ॥
तदनु भानुकुल मणि गुण ऐना * करिव्यूहित चतुरंगिनिसैना ॥
सहित सचिव सैनप बलधारी * रहज्यहिदिशिसंबरअमरारी ॥
त्यहि दिशि सैन सबेग बढ़ाई * लीन्ह घेरि द्रुत शंख बजाई ॥

प्रवल शत्रुदल बिनु परिमाना * लखि संबरहु धारि धनुबाना ॥
साजि दानवी कटक कराला * संगरहितनिकस्योत्यहिकाला॥
दो०–वरणिजायनहिं अतिविकट, दानवकटक अपार ।
अति उत्कट यक २ सुभट, लखत काल अनुहार ॥

पद्धटिका छन्द ॥

तिनमधि कोइ भटरथ पै सुहात । कोइ तुरग कोइ गजपै विभात ॥
कोइ वृषभ कोइ बृक पै प्रयात । कोइ खरारोहि अँगिरात जात ॥
कोइ महिष कोइ शादू‍ल रोहि । कोऊ महांग पै अमरद्रोहि ॥
कोइ गहे प्रखर करबाल ढाल । कोइपरशुप्रास कोइभिन्दिपाल ॥
कोइशक्तिज्वलत अनलानुहारि । कोइ भलशूल कोइ गदाधारि ॥
कोइ चक्र शतघ्नी अति प्रचंड । कोइ कोइप्रकाण्ड तरुउपलखंड ॥
तिनबिकटरूप लखि जनुप्रयात । उत्कट प्रलयान्तक दूत व्रात ॥
कोइ नील पाण्डु कोइ ताम्रवर्ण । कोइ केर लंब खर सरिसकर्ण ॥
आकर्णविदारित वदन काहु । कोइ केर कंठ युत उभयबाहु ॥
ज्वलिताग्नि चक्र सम काहुनैन । कचकाहु शलाका सरिस पैन ॥
कोउ केर दशन युग दुहूँ ओर । निकसे मतंगरद इव कठोर ॥
अधरोष्ठ अतिक्रम करि कराल । रहिलरकिरसाकोउकरविशाल ॥
दो०–इमि दुरन्त दानवन जिन, अंग भूधरा कार ।
लिये संग संव्वर असुर, आव देत ललकार ॥

अनंगशेखर दण्डक ॥

विलोकि दानवी घनी भयावनी अनींकिनी ,
नरेश वाहिनीन बीर जै ध्वनी पुकारिकै ।
प्रचण्ड अंशुमान रश्मि के समान तीव्र बान ,
खानि खानि के हनै लगे महा हुँकारि कै ॥
निशंक बंक कंकन्याय विक्रमी सुरारि सैनहू ,

कठोर चाप आशुदाप सों सँवारि कै।
प्रहारने लगे खरे खरे छरे नराच रोष सों,
भरे भिरे स्वप्राण मोह को बिसारि कै॥
दोऊ दिशानते बिना विराम बिज्जुदामन्याय,
अस्त्र शस्त्र बीर बृन्द मारते निवारते।
गदा गदान ठंठनात देखि तस्त देव व्रात,
संसानात बाण ज्यों भुजंग फुप्फ कारते॥
सुयोध वृन्द क्रुद्ध युद्ध के उमंग सों भरे,
पछारु मारु मारु शब्द दोउ ओर ते पुकारते।
जुहे परे कैटै छँटै बिजै मनोरथी रथी,
रतीहु एक पाद पै न पीछुको पछारते॥

रामगीती छन्द॥

जेहि भाँति सम्बर्तक बलाहक प्रलयकाल मँझार।
प्लावित करत संसार कहँ जल बरसि मूशलधार॥
तिमि अनवरत खरतर भयंकर विशिख पुंज प्रहारि।
प्लावित करहिं नरनाथ दशरथ कटक काहिं सुरारि॥
परदान वनदल महाबल रणकुशल कौशल पाल।
इमि रोधहीं जिमि तीर रोधत उदधि ऊर्म्मि विशाल॥
मचि उठ्यो भीषण लोमहर्षण समर तेहि क्षण घोर।
उत्थित भयंकर तुमुल ध्वनि रणक्षेत्र महँ चहुँ ओर॥
एकहि समय कोटिन भटन के सिंहनाद सुनाय।
धुधुवात शंख असंख्य उत्कट जलद गर्जन न्याय॥
रथनेमि कर्षण ध्वनि कठिन धनुगुणन ने टंकार।
उल्का निपात समान खर अस्त्रन लरन अनिवार॥
गतिवान यान बितान के घर्घर निनाद कराल।

दशदिशि गगनमण्डल भयो प्रतिध्वनित तौनेकाल ॥
निक्षिप्त बाण सपुंख विषधर सरिस झूंडन झुंड ।
परि भटन तनु तिन कवच झन २ करत खंड बिखंड ॥
दर्शत समर महिमाहिं चारिहुँ ओर बिन परिमान ।
दामिनि के दाम समान दमकत भ्राम्यमान कृपान ॥
पर्वत सरिस गजबृंद बृंहत धाय परदल माहिं ।
मर्दत पदानिन पदन सों शुण्डन हनत रथिकाहिं ॥
गजकंध रोहि महावतन अंकुशा घातन घोर ।
तिनशीश भूषित आभरण कटि खसिरहे चहुँ ओर ॥
पदरोपि रोपि सकोप दोउ दल के सुभट बलधाम ।
खरधार बिविध प्रकार अस्त्र प्रहारहीं अविराम ॥
कोउ तमकि कोउ कर हृदय तकि रह उचकि शेल प्रहारि ।
कोउ झपटि दै गरपाश काहुहि झटकि डारत मारि ॥
करलाघवी करि कोऊ फेरत बेग सोहिं कृपान ।
कोइ मुशल मुद्गर कोइ पट्टिश कोइ परशु खरशान ॥
मण्डलाकार कृशानु चक्र समान चारिहुँ ओर ।
दर्शात आकर्षि असित शरबाण घोर कठोर ॥
गिरि रहे क्षिति मधि कोइ के कर पाद खंडित होय ।
द्रुतगमि स्यन्दन चक्रतर परि पिसत चरचर कोय ॥
शतशत दुरन्त कवन्ध कर मधि गहे खर तरवार ।
थल थलन महँ उठि उठि लरत पुनि गिरत भूमि मँझार ॥
जेहिं दिशि लखिय तित बृंतुच्युत परिपक्व ताल के न्याय ।
कटि कटि गिरत परिमान बिनु सैनिकन मुंड निकाय ॥
चहुँदिशि प्रवाहित भई शोणित वाहिनी खरधार ।
सित छत्र भासित तासुमधि बिकसित कुमुद अनुहार ॥

भंजित रथन कर अंश चय तेहि विषम नक्र के न्याय।
मृतभट कमठ शर मीन इव मृत करि मकर समुदाय॥
गुन बिनु कठिन धनु बिषरदन जनु तरत इत उत माहिं।
कुंडलीकृत उष्णीष पट सित फेन सम दर्शाहिं॥
रणकला कुशली कोशलेश के सैनिकन रणधीर।
दुर्धर्ष विक्रम सों दियो करि दैत्य दलहि अधीर॥
क्षतगात ह्वै दनुजात व्रात प्रभात नखत समान॥
क्रमशः भगन लागे विकल चित सकल लै लै प्रान।
विचलित व्यथित निज दलहि सम्बर दानवेन्द्र निहारि॥
क्रोधांध द्रुतपद धाव गर्जत प्रलय घन अनुहारि।
तेहि भाल ते धक धक निकरि रह ज्वाल माल कराल॥
लखि वदन व्यादित मनहुँ ग्रासन चहजगहि त्यहिकाल।
पिंगल बरण जुग द्दगन ते अग्नि स्फुलिंग उड़ाय॥
पीसत बिरल रद तीव्र त्यहि ध्वनि शिला घर्षण न्याय।
नीलाभ्रसम आकार त्यहि झपटनि बरनि नहिं जाय।
उत्तुंग अंजन धरणिधर धावत मनहुँ दर्शाय॥
लखि अग्रसर असुराधिपहि आसुरी सेना घोर।
उत्साह लहि संगर भयंकर करन लागि बहोर॥
धावत निवारत हनत भट ललकारि बारहि बार।
मिलि दोउ दिशि की वाहिनी ह्वै गईं एकाकार॥
त्यहि क्षण स्वपक्ष बिपक्ष कर रह ज्ञान काहुहि नाहिं।
रणमत्त भट त्यहि हनत द्रुत जोइ परत सन्मुख माहिं॥
त्यहि काल परलय मेघमाला सरिस सैन लखाय।
रथ चक्र घर्घर त्यहि अशनि ध्वनि चाप दामिनि न्याय॥
खर शान बान बितान अविरल वृष्टि के अनुहार।

रण धूरि भूरिते छायऊ दशहू दिशन अँधियार ॥
शर चाप मुक्त सपुंख सायक पुंज इमि दर्शाहिं ।
जनु हंस श्रेणी उड़िरही आकाश मण्डल माहिं ॥
स्यन्दन अरूढ़ नरेन्द्र निज वाहिनी रक्षण हेत ।
इत उतहि धावत वेग सों रण निपुणताहि समेत ॥
त्यहि काल दानवराज एक प्रहारि अस्त्र प्रचंड ।
नरनाथ केर विशालि अभयाकेतु किय युग खंड ॥
पुनराय यक आपस विशिख तजि वेग सों दनुजेश ।
दिय काटि नृप रथ अक्ष कीलहि पर न जान नरेश ॥
पर केकयी सो लखि पतिहि संकटापन्न निहारि ।
रक्षन लगीं रथ डारि निज कर कील रंधु मँझारि ॥
लखि राजकेतु विलुप्त भूपति कटक माहिं अपार ।
मचि उठ्यो चारिहु ओर महँ अति विषम हाहाकार ॥
तब अति मुदित चित विजय सूचक सिंहध्वनि उच्चारि ।
इमिलाग अपसारित करन नृप कटक काहिं सुरारि ॥
जिमि करत छिन्न विछिन्न झटिका तूलराशी काहिं ।
रिपुसेन सों घिरि गये नृप एकाकि त्यहि क्षणमाहिं ॥
त्यहिक्षणकरत आच्छन्न ज्यहि विधि मिहिरकहँ नीहार ।
रिपुसैन सों छादित भये त्यहि भांति औध भुवार ॥
रह बरसि अगणित अस्त्रशस्त्र महीप ऊपर माहिं ।
त्यहि समय नृप पिंजराबद्ध विहंग सम दर्शाहिं ॥
ज्यहि भांति मनरोचित अमृतरस पियत अहि समुदाय ।
तिमि पान करि रहे भूप शोणित असुर अस्त्र निकाय ॥
पर होत क्षुब्ध मर्याद लोडन ते न जिमि वारीश ।
त्यहि विधिअविचलितहृदय निजकहँरक्षिरह अवनीश ॥

निज दलहि नृपरिपु कटक द्वारा छिन्न भिन्न निहारि ।
धाये हनत घर्षत अरातिन परत जोइ अगारि ॥
जिमि होत जित तृणपुंज त्यहि दिशि लपकपावकज्याल ।
तिमि प्रबल रिपु जित हेरहीं तितधावहीं महिपाल ॥
जिमिशुष्क होत युगांत रविकर सों पयोनिधि नीर ।
तिमि नृपति अस्त्रन होत क्षय रिपु वाहिनी गंभीर ॥
त्यहि काल भूपति केर द्रुत कारिता वरणि न जाय ।
कब लेत शर साजत तजत सो नेक नहिं दर्शाय ॥
लखि परत केवल महाभीषण धनुष चक्राकार ।
अरुकुलिश ध्वनि सम सुनि परत ज्याघोष बारहि बार ॥
ज्यहि बिधि उदित ह्वै धूमकेतु युगांत काल मझारि ।
दाहत जगत प्राणीन कहँ निज ज्वालमाल पसारि ॥
तिमि अरिदमन रण निपुण रघुकुलशिरोमणि नरनाह ।
खर विविध आयुध सों करत दानव अनी कहँ दाह ॥
पर उदधि मधि यक बीचि उठि ह्वै श्रमितपुनि निधिमाहिं ।
तत्काल दूसर उठन महँ जिमि बेर लागत नाहिं ॥
तिमि पुंज पुंज अरातिनाशी नृपति अग्र मँझारि ।
दर्शाहिं बिपुलाकार बिन संभार भट त्रिदशारि ॥

दो०–त्यहि क्षण भूपति चाप ते, भ्रमरावली समान ।
कोटि कोटि शर मुक्त ह्वै, छाये दशहु दिशान ॥
ज्यहिविधिजलनिधिवारिमधि, क्रीड़तकृष्णभुजंग ।
समर सिंधु मधि अवधिपति, तिमिप्रवर्त्त रणरंग ॥

सो०–दनुजहु बिन परमान, अस्त्र शस्त्र बहुभाँति के ।
वारिद वृष्टि समान, अविरत वर्षत नृपति पै ॥

पर रणकुशल कोशला नायक * वारिआशुरिपु प्रेरित सायक ॥

येतक असुर सँहारत भयऊ * जासों समर भूमिकसिगयऊ ॥
तबहुँ जयाशि प्रयासि सुरारी * भये न न्यून न मान्यो हारीं ॥
बरु घन शलभ समूह कि नाईं * क्षणक्षणमहँ अधिकातहिजाईं ॥
रण श्रमसों नर नायक केरा * सर्व अंग स्वेदाक्त घनेरा ॥
तवनृप कछु गुनिहृदय मँझारा * गंधर्वास्त्र समंत्र प्रहारा ॥
त्यहि प्रभाव वश जिते सुरारी * मोहे उपज बुद्ध भ्रमभारी ॥
नृपति एक एकन कहँ जानी * लागे हनन प्रखर असितानी ॥
इमि लरि असुर परस्पर माहीं * काल कवल भे बच कोउनाहीं ॥
तब घन मुक्त दिवाकर नाईं * परे कोशलाधीश दिखाईं ॥

दो०-विकसितकिंशुकबनसरिस, संगर भूमि सुहाय ।
भूप कटकमधि जयध्वनी, रहि चतुर्दिशि छाय ॥

सो०-सब दल निधन निहारि, दानवेन्द्र क्रोधान्ध ह्वै ।
नृप संग घोर हुँकरि, द्वन्द्वयुद्धलाग्यो करन ॥

रोलाछन्द ॥

ज्यहि प्रकार ते केतु करत आच्छन्न दिनेशहि ।
किय संबर त्यहि भाँति शरन छादित अवधेशहि ॥
वारत अविरत क्षिप्रहस्त असुरास्त्र विताना ।
समर धीर गंभीर बिरवर दोउ बलवाना ॥
दुर्निरिक्ष्य ह्वै उठे हुताशन ज्वाल समाना ।
असुर निधन हित नृपति चाप ते त्रिनु परमाना ॥
पर दुरन्त अन्तकाकार उत्कट अमरारी ।
ग्रसत जात नृप क्षिप्त विशिख चय वदन पसारी ॥
करत बिविध रणकला घोर निर्भय चित वीरा ।
त्यहि प्रहार नृपसूत भयो रक्ताक्त शरीरा ॥
तब अति रोषित गात भूप बिविधास्त्र कराला ।

कालचक्र वायव्य ऐन्द्र ऐषिक कापाला ॥
पाशुपव्य अम्वर्त्त वारुणादिक तजि आशू ।
कीन्ह व्यर्थ पल माहिं असुर कृत सकल प्रयाशू ॥
तब दुरन्त दुर्दमन दानवाधिप बलवन्ता ।
लग्यो बढ़ावन तुंग अंग करि कोप अनंता ॥
तासु कायते भये रुद्ध दशदिशि त्यहि काला ।
होहिं छिन्न त्यहि परसि कुलिशवर्षी घनमाला ॥
त्यहि आस्फालन लंफ झंप गर्जनसन त्यहि क्षण ।
बहि बाहिनि विपरीत डिगे गिरि भगे देवगण ॥
वर्षत मेघन सोहिं विषम धधकत अंगारा ।
चहूँ ओर दिग्दाह निरन्तर टूटत तारा ॥
डगमगाने मेदिनी सिन्धुजल उमड़त भयऊ ।
भई उष्ण शशि ज्योति शीत रविकर ह्वै गयऊ ॥
जिमि नखरदसों लरत युगल केसरी सक्रोधा ।
अस्त्राघात प्रवृत्त परस्पर तिमि दोउ योधा ॥
कोस विनिर्मित उभय भटनके वर्म्म कठोरा ।
खंड खंड परे उभय के आयुध घोरा ॥
शरा घात सों दुहुँन होय रक्ताक्त शरीरा ।
गैरिक स्रावी अचल न्याय शोभित दोउ वीरा ॥
बहु क्षणपै रण निपुण भूपवर अवसर पावा ।
अस्त्रन हनि रिपुहयन स्यन्दनहु काटि गिरावा ॥
बहुरि तड़ित द्युति जड़ित बाण शाणित बहुमारी ।
करि दिय सम्बर काहिं शल्लकी के अनुहारी ॥
गत उपाय ह्वै दनुजराय अकुलाय अपारा ।
रणथल ते ह्वै अदृश असुर माया विस्तारा ॥

त्यहि माया परभाव सोहिं नभमधि ततकाला ।
अनलशिखा अनुहार उठे लोहित घनमाला ॥
तासन अगणित ज्वलत चण्ड उल्का अनिवारा ।
करत भयंकर शब्द गिरत नृप कटक मँझारा ॥
अति प्रचण्ड गिरि खण्ड शक्ति क्षर तोमरमुद्गर ।
प्रास गदा शूलादि हनत दुरि घनमधि संबर ॥
तदनु गगन मधि छाव गाढ़ तम चारहु ओरा ।
अविरत परत सुनाय चटचटा शब्द कठोरा ॥
वारन हित असुरास्त्र भूपवर समर प्रवीना ।
शर समूहसों छाय निखिल नभमंडल दीना ॥
लरत जलद दुरि असुर परत नहिं तनिक दिखाई ।
बधहुँ खलहि क्यहिं भांति नृपहि यह चिंताछाई ॥
कोटिन कुलिश निपात सरिस सहसा त्यहिकाला ।
गर्ज्यो दानवराज कँपे ज्यहि सुनि दिकपाला ॥
सोरव सुनि द्रुति जोरि शब्दभेदी खरसायक ।
धनुष कान परमान तानि त्यागेहु नरनायक ॥
सो अमोघ शरचण्ड असुरशिर खण्डन करेऊ ।
कुधर शृंग सम तासु अंग रन अंगण गिरेऊ ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

लखिरिपु निधन विबुधन मगनमन नृपति जयतिउचारेऊ ।
बिधुबदनि देवनरमनि आरति वारि मुदित उतारेऊ ॥
सानन्द धाय महेन्द्र भेंटि महीन्द्रसन यहि विधि कहे ।
नृप तव कृपा ते आजु निज निज सत्त्व पुनि देवन लहे ॥
तुम्हरे प्रसाद सों विचरि हैं स्वच्छन्द चन्द्र दिवामनी ।
निर्भीक ह्वै करिहैं बहुरि जप यज्ञ तप योगी मुनी ॥

यह बिजय कीरति महीपति तव जगत मधि संतत रही।
अब माँगहू प्रियसखा हमसन जौन वर उर भावही ॥
कहभूप तुम्हरी कृपाते मैं सुखी सब बिधि सर्बदा।
पर ब्रह्मत्त्या जो भई त्यहि डरन उर काँपत सदा ॥
सो सुनि बिहँसि कह सहसलोचन शोच मति भूपतिकरौ।
अरु ब्रह्महत्त्या पाप कर शंका न निज उरमहँ धरौ ॥
अज्ञान वश ज्यहि मुनि सुतहि संहारेऊ तुम क्षितिपती।
शूद्रा रही त्यहि मातु अरु पितु तासु द्विज तापसब्रॅती ॥
अब मुदितचित भूपति शिरोमणि गमननिज पुरकोकरौ।
दै दरश निज पावन सुहावन प्रजा की चिन्ता हरौ ॥

दो०—त्यहि क्षणसब एकत्र भइ, भूपति सैन विशाल।
तब सुरपति सों ह्वै बिदा, निजपुर चले भुआल ॥
कृत्तिवास कह भूप जिमि, दिहौ सुरन पुनिस्वर्ग।
हरिहिआनि महिनरनकहँ, तिमि अर्पहु अपवर्ग ॥

चतुरशीतितम सर्ग ॥ ८४ ॥

दशरथ कृत कैकेयी को युगल वरदान का अंगीकार॥

दो०—कछुककाल महँ अवधपुरि, सदल पहुँचि अवधेश।
सचिव सेनयन दै बिदा, किय रनिवास प्रवेश ॥
संबर संगर संगिनी, कैकेयी नृप काहिं।
सेवाहित लैगई निज, सुन्दर मन्दिर माहिं ॥

---

(१) गौडीय वाल्मीकीय रामायण के आदि काण्ड में यह श्लोक है—"न द्विजाति एवं शंकां ब्रह्महत्त्याकृतां त्यज। ब्राह्मणेनत्वहंजातः शूद्रायां बसतावने ॥' यह युक्ति स्वयं शरविद्ध सिन्धु की है ॥ अध्यात्म रामायण में उक्तहै—"ब्रह्महत्या स्पृशेन्नत्वां वैश्योऽहं तपसि स्थितः।" ॥

सो०—पतितनु वर्म्म उतारि, महारानि निज पानि सों।
चिन्तित भई निहारि, विषम अस्त्र क्षतमय वपुष॥
रह परिज्ञात बनाय, संजीवनी विद्या तिनहिं।
नृपहि तुरत लै जाय, करि शायित बर सेज पै॥
मंत्रपूत करि औषधि नीरा * किय सिंचन नरनाथ शरीरा॥
त्यहि अमोघ औषधि गुण भूरी * तनुकी सकल विथा भइदूरी॥
आशुहि पूरि सकल क्षत गयऊ * सुन्दर देह पूर्ववत भयऊ॥
भये स्वस्थ यहि विधि नरनाहू * मनहुँ भयो नव जीवन लाहू॥
तब प्रसन्न ह्वै नृप इमिबानी * रानि ते कही नेहरस सानी॥
सुनहु प्रिये करि विहित उपाई * लिये जात मम प्राण बचाई॥
तुम सम मोहिं प्रीय नहिं कोई * लेहु माँगि बर भावहि जोई॥
साध्य असाध्य जोइ महि माहीं * तुम्हें अदेय मोहिं कछु नाहीं॥
सुनिपतिवचन हुलसिहियरानी * चिन्त बहोरि कछुकउरआनी॥
दो०—जाय कह्यो मंथरा सन, ह्वै प्रसन्न नरनाह।
चहत देन बरदान मोहिं, कहहुलेहुँ मैं काह॥
रह कूबर त्यहि पृष्ठ पै, मांस पिण्ड सो नाहिं।
कूट कूट कै कूट बुधि, मनहुँ भरी त्यहि माहिं॥
सो०—सुनि केकयि मुख बैन, कह्यो मंथरा शोचि कै।
तुमहिं प्रयोजन है न, अबहिं कोइ बर लेन को॥
होइ प्रयोजन ज्यहि क्षण माहीं * तबहिं बताय देब तुम काहीं॥
यह सुनिरानि नृपति ढिग जाई * कह इमि मधुर मंद मुसकाई॥
हे प्राणेश मोहिं यहि बेरा * अहै न काज कोइ बर केरा॥
होइ मोरि रुचि ज्यहि क्षणमाहीं * तब याचना करब प्रभु पाहीं॥
त्यहि क्षण होइ लालसा जोई * पावहुँ अवशि नाथसन सोई॥
कह नृप जब याचिहौ सयानी * प्राणहुदेत करब नहिं आनी॥

यह बारता जानि सुर वृन्दा * कहन लगे सबमिलिसानन्दा ॥
यहिसतनिमित प्रणत दुखनासी * श्रीनिवास ह्वै हैं बनबासी ॥
त्यहिक्षणयहिबिधिबचनबिधाता * कहबिवुधनसनप्रमुदितगाता ॥
अब जग दुखत दशानन काहीं * गणनाकरहु मृतकगणमाहीं ॥

दो०—एक समय महँ नृपतिके, वृद्धांगुलि नख माहिं।
भा यक ब्रण ज्यहि बहुअगद, किहेशमितभानाहिं ॥
त्यहिब्रणदारुण व्यथावश, भूपति अतिअकुलाय।
कहन लगेइमि यकदिवस, सचिवन काहिंबुलाय ॥

सो०—बचनकठिन ममप्रान, विषम दुसह यहिव्याधिसों।
को मम प्रीय प्रजान, प्रतिपाली मम मरण पै ॥

तजि हौं प्राण अपुत्रक जोई * लाहु मोहिं सद्गतिहु न होई ॥
सुनि पद्माकर नामि सुजाना * राजभिषकगुणिविज्ञनिदाना ॥
कहेउ नाथ जनि त्यागिय धीरा * होई आशु नाश नख पीरा ॥
यहि ब्रणरोगहि नाशनहारी * युगऔषधि लिखिशास्त्र मँझारी
यक तो करिघृणाहि परित्याजू * पियहु शम्बुरस तुम महराजू ॥
दूजे ब्रणित अंगुरिहि कोई * चूसै तौ विशल्य द्रुत होई ॥
त्यहि नख ब्रणते बिन संभारा * रक्त क्लेद निर्गत अनिवारा ॥
घृणाबिवश कोइजनत्यहिकाहीं * कियस्वीकार चूसिबो नाहीं ॥
निशिदिन केकयिभवनमँझारी * निवसतरहे अवध अधिकारी ॥
तन मनते सब काज बिहाई * करहि रानि नृप की सेवकाई ॥

दो०—विषमव्यथापतिकीनिरखि, कह केकयि इमि बैन।
नारिन पतिहि बिहाय कै, नाथ अपरगति हैन ॥
सुख वैभव तिय गणन कर, पतिही एक सदाय।
पति बिन यौबन रूप त्यहि, किंशुककुसुम केन्याय ॥
ज्यहि प्रकार प्रसाद थित, पुत्तलिकाहि भुवाल।

पट भूषण मालादि सों, सजब बिफल सबकाल ॥
सो०—त्यहि विधि जगत मँझार, पतिवियोगिनीनारिकर।
विफल अहार विहार, रुचिर वेशविन्यासयत ॥

छप्पै ॥

खचित प्रवालस्फटिक थंभ सुवरणमय धामा।
दासदासि परिपूर सहित उद्यान ललामा ॥
होहिं लाहु सुरअलभ विभव सुन्दर सुखदाई।
तबहुँ बिना पति तियहि निविड़ कानन की नाई ॥
पतिसंग नारि सब कालमहँ दुखभोगहुसुखमानहीं।
परपतिविरहित शतकल्पदिविवासहु दुखमयजानहीं
जोइ पतिसेवारता धन्य त्यहि सम तिय नाहीं।
मैं नख ब्रण कहँ चूमि स्वस्थ करिहौं प्रभुकाहीं ॥
असकहि रानी पौढ़ि भूप के पार्श्व मँझारी।
त्यागि घृणा अतिगलित अंगुली मुखमहँ डारी ॥
त्यहि मंद मंदही चूसि कै शोणित क्लेद निकारदइ।
ब्रणपूरि मुखामृत ते बहुरि क्रमशः अंगुरिपीरगइ ॥
यहि उपाय ते नृपति स्वस्थ तनु होय बनाई।
कहन लगे इमि बैन रानि कहँ हृदय लगाई ॥
मुख क्षालन करि तुरत खाय ताम्बूल पियारी।
आय लेहु बर माँगि रुचे जोइ हृदय मँझारी ॥
कहरानिप्रयोजन होइजब माँगिलेब त्यहिकालबर।
अबयहि दासीकर प्रभुनिकट रहेयुगुल बरधरोहर ॥
दो०—यहसुनिअवध अधीशहँसि, कहे मधुर इमिवैन।
सुनियसुमुखि तुम्हरेनिमित, कछुअदेय मोहिं हैन ॥

सो०—कह कृत्तिवास कुरँग, व्याधजाल महँ फँसत जिमि ।
रविकुल कमल पतंग, सुरकारज हित फँसे तिमि ॥

पञ्चाशीतितम सर्ग ॥ ८५ ॥

ऋष्य शृंग विवरण ॥

दो०—सत्य परायण अष्टदश, दोष रहित गुणगेह ।
चक्रवर्ति दशरथ नृपति, पालत प्रजन सनेह ॥
तिनके सुविपुल मोदमय, राज्य माहिं कोइ ठाम ।
एक कलंकि मयंक तजि, नहिं कलंक कर नाम ॥
द्वेष देशकर शब्द तजि, अपर कतहुँ नहि नाँव ।
स्वप्नदर्शनहि त्यागि कै, कहुँ न मृषा बर्ताव ॥
क्रोधभाव शंकाज नित, मुख भंगिमा निकाय ।
क्रीड़ारत शिशुमण्डली, मधि केवल दर्शाय ॥
सो०—सारे राज्य मँझारि, यज्ञ धूम लागे बिना ।
मनुज विलोचन बारि, पतित होत नहिंकोइक्षण ॥
ताड़न ध्वनि न सुनाय, कशा प्रहारण हयन तजि ।
मदमत्तता लखाय, केवल मत्त मतंग में ॥
रह्योदण्ड कर काम, राज छत्रहित केवलहि ।
नतु पुरमधि कोइ ठाम, दण्डकाज नहिं लखिपरत ॥
यहिविधि सनयसप्रीति, भूप मुकुटमणि दशरथहि ।
गये वर्ष बहु बीति, करन राज अमरेश सम ॥
पर यहि दीरघ काल मँझारी * लोक पितर ऋण मोचनकारी ॥
शोक तिमिर हर सुत गृहदीपा * लह्यो न धर्म्म धुरीण महीपा ॥
उदधि मथन के पूरुब माहीं * जिमित्यहिरतनविदितरहनाहीं ॥

त्यहि विधि दशा रही नृपकेरी * रहत हृदय चिन्तना घनेरी ॥
वेष्ठित सचिव अमात्य समाजू * सभासीन यकदिन महराजू ॥
गुरु वशिष्ठ कहँ बोलि पठाये * लहि सँदेश मुनि नायक आये ॥
लखिकुलगुरुहिसुमतिनरनाथा * करि प्रणिपात जोरि युगहाथा ॥
दै आसन विधि वत सन्मानी * खेद सहित बोले इमि बानी ॥
हे मुनीश आशीष तुम्हारी * पूरीं सब कामना हमारी ॥
एकहि शोच अहै मन माहीं * सो नअहै अविदितिप्रभुकाहीं ॥

दो०—लाग चौथपन नहिं लख्यो, सुवनबदन शुभकारि ।
किमि सद्गति मम होइ है, प्रभु परलोक मँझारि ॥
मम तनु त्यागे होइ है, दिन मणिवंश विनाश ।
पितर निचय जल पिंड सों, ह्वै जाइहैं हताश ॥

सो०—वृथा जन्म जगमाहिं, सुत विहीन कर सर्वदा ।
अवलोकत कोउ नाहिं, प्रात काल महँ तासु मुख ॥
पितरन काहिं प्रभात, जबहिं जलांजलि देत मैं ।
सलिल उष्ण ह्वै जात, तिनकी दीर्घ उसाँस सों ॥

करि बहुबिधि मखव्रत आचरा * भयहुँ देवऋषि ऋणसों उधारा ॥
पर बिन तनय खेद उर माहीं * उऋण पितृऋण सों मैं नाहीं ॥
लोकालोक अचल की नाईं * मोरि दशा ह्वै रही गोसाईं ॥
एक पक्ष भा मम उजियारा * अपरपक्ष मधि घन अँधियारा ॥
मुनि नायक अँधक हम काहीं * यह निदेश दिय रह बन माहीं ॥
ऋष्य शृंग कहँ सह अनुरागा * आनि करायहु विधिवत यागा ॥
यहि उपायते लोक ललामा * लहिहौ चारि तनय सुख धामा ॥
पर यह विदित अहैमोहिं नाहीं * सोऋषि कोबस केहि थलमाहीं ॥
यह सुनिमुनि वशिष्ठ तपखानी * भूपति प्रति बोले इमि बानी ॥
ऋषि वर अंधवचन अनुसारा * होइ मनोरथ सफल तुम्हारा ॥

दो०—उत्पति मुनिवर शृंगिकी, वरणहुँ सुनिय भुआल ।
जात रहे यक कालविधि, चढ़ि निज वाहमराल ॥
सोइ समय भगकी सुता, स्वर्णमुखी ज्यहि नाम ।
निकसी अज सामुहे ते, कीन्हे वेश ललाम ॥

पर यौवन गर्वित सो नारी * कियप्रणामनहिंविधिहिनिहारी
तब कामलाकर कोपित गाता * दीन्हताहि यह अभिसम्पाता ॥
तैं दुर्मुखी मृगी तनु धारी * बिचरुसदा घन गहनमँझारी ॥
होइ हरिणि तुरतरि भग बाला * स्वर्ग ते पतित भई तत्काला ॥
सो बन बन बिचरत दिनराती * चरत फिरततृण तरुवर पाती ॥
ताही समय तपोबल धामा * कश्यपवंशि बिभांडक नामा ॥
यक बन माहिं मनोरम ठाईं * करत उग्रतप रहे मन लाई ॥
तिन के तेज सों सुरगण भारी * कम्पिततनु चिन्तित उरभारी ॥
सुरपति हृदय शंक यह कीन्हा * अबयहमुनिममआसनलीन्हा ॥
तपोभंग हित तब सुरराई * देव समीरहि दीन पठाई ॥

दो०—मुनिवर के आश्रम निकट, देव प्रभंजन जाय ।
गुप्त भाव ते बास किय, जानेहुनहिंऋषिराय ॥
यकदिन अवसर पायअस, सुर मारुत छलकीन्ह ।
मुनि नायक के भक्ष्यफल, सुधालिप्त करिदीन्ह ॥

सो०—मिलित पियूष अहार, करतहि क्षण तिनके हृदय ।
उपज्यो प्रबल विकार, चंचल चित इतउत लखत ॥
सोई समय मँझार, सुमुखि उर्वशी अप्सरा ।
कीन्हे सकल शृंगार, गगन पंथ मैं तात रहि ॥

लखि सहसा त्यहि रूप रसाला * मुनिकरतेज खस्योततकाला ॥
त्यहिक्षणविशुचिहृदय ऋषिनाहू * करत रहे सरिता अवगाहू ॥
तुरतहि पतित तेज कर लीन्ह्यो * सकुचि बहायनदीतट दीन्ह्यो ॥

बहुरि शुद्ध ह्वै आसन मारी ❋ भये मगन दृढ़ध्यान मँझारी ॥
त्यहिक्षणविधि शापितमृगिसोई ❋ नदितट आय पिपासित होई ॥
करि शीतल सरिता जलपाना ❋ चरनलागि तटथिततृणनाना ॥
सो अमोघ ऋषिवर कररेता ❋ गई भक्षितृण हरित समेता ॥
तासन सो कुरंगि त्यहिकाला ❋ कीन्ह गर्भ धारण महिपाला ॥
जबहीं बीति मास षट गयऊ ❋ यकशिशुसुघरप्रसवत्यहिभयऊ
त्यहि शिशुकर नरइव सब अंगा ❋ परशिर पर रहचिह्न कुरंगा ॥
ताहि देखि निज हृदय मझारा ❋ कीन्हमृगीयहिभाँतिविचारा ॥

दो०—ज्यहिलखिमैंबनमधिदुरत, भय सों होय विपन्न ।
सोइ मनुज मम गर्भ ते, आज भयो उत्पन्न ॥
अस उर चिन्ति परायगइ, मृगीत्यागिशिशुकाहिं ।
क्षुधितअँगुरि लेहतरुदन, सोशिशुत्यहिथल माहिं ।

सो०—आन्हिककृत्यनिकाय, साधिविभांडकत्यहिसमय॥
रहे कुटी दिशि जाय, रुदत शिशुहिमगमहँलख्यो ।

तासु मनोहर रूप निहारी ❋ मुनिउर उपज्योकौतुक भारी ॥
बहुरि ध्यान ते मुनिवर जाना ❋ मृगिगर्भज यह मम संताना ॥
तब त्यहिशिशुहि क्रोड़मधिधारी ❋ लाये ऋषि निजकुटीमँझारी ॥
नव कुश काश कि सेज बनाई ❋ तदुपरि दीन ताहि पौढ़ाई ॥
सुखदसुमनमधु शिशुहिपियारी ❋ पालत मुनि सनेह मन लाई ॥
दिन प्रति सो शिशु बर्द्धतभयऊ ❋ सुभगकांति सब अंगनछयऊ ॥
सर्व शास्त्र श्रुति यतन समेता ❋ त्यहिपढ़ावमुनि कृपानिकेता ॥
युवाभये मुनि सुत के शीशा ❋ निकसे युगलशृंगअवनीशा ॥
यहिहित ऋष्य शृंग तिन नामा ❋ परयोजोप्रथितअहैतिहुँधामा ॥
शास्त्रज्ञान अरु तप बल माहीं ❋ तिनकेसरिसअपरऋषिनाहीं ॥
तिन ऋषिवर कर यतनभुआल ❋ ह्वैहै मृषा नाहिं तिहुँकाला ॥

दो०—तिन ऋषिवर अर्चना ते, मोहिं प्रतीति नरनाहु।
दीप्ति मूर्ति सुत अवशिही, तुम्हैं होइ हैं लाहु॥
भये मौन यह कथा कहि, मुनिवर तपोनिधान।
जन्म कथा ऋषि शृंगि की, कृत्तिवास कियगान॥

षाड़शीतितम सर्ग॥ ८६॥

नृपति लोमपाद के राज्य में अनावृष्टि व ऋष्यशृंग का आनयन उपाय॥

दो०—रविकुल गुरू वशिष्ठ के, भये वचन अवसान।
तब कर पुट लागे कहन, सचिव सुमंत्र सुजान॥
अंगदेश पति नृपति वर, लोमपाद के राज।
अनावृष्ट द्वाद्दश बरष, भई जबै महराज॥
सो०—भई विपति सो नास, ऋषि शृंगिहि की कृपाते।
बरणहुँ सो इतिहास, जिमिआनेहुतबऋषिवरहि॥

अंग देशकी प्रजा भुआला * परे अवर्षण दुसह कराला॥
क्षधा तृषा रुज ते अकुलाई * ह्वै विपन्न पुर त्यागि पराई॥
लोमपादपुर दशा निहारी * भये हृदय मधिचिन्तत भारी॥
बोलि एक दिन द्विजन प्रबीना * यहिविधिप्रश्नमहीपतिकीना॥
दैव कोप मम राज मँझारी * क्यहिहितप्रकटसोकहियबिचारो
सुनि करि गणन विप्रसमुदाई * कहन लगे इमि नृपहि बुझाई॥
महाराज तव शासन माहीं * लखियत दुराचार कहुँ नाहीं॥
पर यह विदित हमैं नृप होई * तुव अधिकार भरे महँ कोई॥

१—द्युतिवान् अपरार्थ विष्णु।

भइऋतुमति बिनब्याहि कुमारी * यहि अघिसों नहिं बर्षत बारी ॥
तासुहेत यह नृप मतिमाना * बदबुधजनलिपि शास्त्र पुरान ॥

दो०– मनुज वंशरक्षा निमित, कमलासन भगवान ।
युवावयस महँतियन के, किय ऋतु धर्म विधान ॥
सोइऋतु विफलबिलोकिबिधि, फल उत्पदिनिजोय ।
धरणिशक्तित्यहिरोधहित, बरसावत नहिं तोय ॥

सो०–यदि श्रंगीऋषिराय, आवहिं नृप तब नगर महँ ।
तौ यह पाप नशाय, होयवृष्टि त्यहि हेतु महि ॥
महा पुरुष ज्यहि ठाम, शुभा गमन नृप करत हैं ।
होत सोथलसुरवधाम, सकलअमंगल जात मिटि ॥

यह सुनि नृप घोषकन बुलायो * यहडौंड़ी पुरमाहिं फिरायो ॥
श्रंगी ऋषिहि आनिहैं जोई * पैहैं अर्द्ध राज्य मम सोई ॥
सो घोषण सुनि परम सयानी * एकजरठ गणिका हुलसानी ॥
भूप सभा मधि द्रुतपद गई * शीश नया इमि भाषत भई ॥
हे महीप मैं तव पुर माहीं * लै ऐहौं श्रंगी ऋषि काहीं ॥
नारि पुरुष कर भेद नरेशा * जानत सोमुनिसुवन नलेशा ॥
तिन्हें भुलाउब दुस्तर काजू * हमरे निकट नकछु महराजू ॥
यक सुन्दर तरि सह फुलवाई * हमै देहु नर नाह सजाई ॥

दो०–नव युवतिन सों मोहनी, मुनि नन्दन पैडारी ।
लैं ऐहौं छल छन्द सों, प्रभु केनगर मँझारि ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

यहि युक्तिसचिवनसहितनृपकेहृदय उत्तम भायऊ ।
तबएकतरिमणिखचितसुबरणरचितद्रुतसजवायऊ॥
तापैफलितप्रफुलित ललितबहुबिटपआरोपितकिये ।
कौशेय चन्द्रातप वृहत तनवाय त्यहि ऊपर दिये ॥

बहुभाँति पाँतिन पाँति केतुललाम दोउदिशि सोहहीं।
जेहिदेखिजगत्यागी विरागी होहिं अनुरागीसही ॥
पुनितरणि पै मनहरण मोदकसजे बहुझालन भरे।
बहुद्रव्यबासितशर्करोदकभरिकलशयकदिशिधरे॥
सो०–पुनि महीप पुर सोहिं, बोलिबारमुखि सुमुखिबहु।
जो लखिविदित न होहिं, सुरी नरी कै किन्नरी ॥
तिनसन इमि नृप कह तुमसारी * हौ चतुरा सबकला मँझारी ॥
करिकोइ यतन शृंगिऋषिकाहीं * लै आवहु मोरे पुर माहीं ॥
यह सुनि सब ह्वै त्रस्त अपारा * भूपति प्रति इमि वचनउचारा ॥
प्रभुयहि आयसु पालनमाहीं * कुशल हमारिकोउविधिनाहीं ॥
ऋषि रोषानल मधि नरनाहू * अवशिहोब हमसबमिलिदाहू ॥
तिनसब बारबधुन घबराई * हेरि जरठ गणिका मुसकाई ॥
मुख बनाय मटकावति नैना * तिनप्रति कहनलागिइमिबैना ॥
तोहिं बलिहारि भलीकहि रहिऊ * मनहुँ बड़ीभोली सब अहिऊ ॥
कबहूँ काह कोउ जन काहीं * फन्दन फांसि चेर कियनाहीं ॥
चलु असजनि चोंचला बघारहु * बतबढ़ावकरिजियजनिजारहु ॥
दो०–अरी बावरी तुहिसरी, रहि जवानि ज्यहि काल।
दिखारायहुँतबअसमुनिन, कितक अकासपताल ॥
भाउ भगतिया छोरि कै, किते मुंडि मुनि नाह।
मोरे पीछे फिरत रहे, देह संग जस छांह॥
सो०–अब सब भरम बिहाय, चलहु हमारे संगमहँ।
यहि प्रकार समुझाय, सबन चढ़ायो तरणि पै॥

रोला छन्द ॥

चली वेग सों तरणि बेगवति सरित मझारी।
कहि न जात गति हेरि समीरहु मानत हारी॥

यहि प्रकार सो तरणि कछुकदिन चलिदिन रैना।
पहुँची जहँ ध्यानस्थ बिभांडक तपबल ऐना॥
तब सरिता तट तरणि तरुणिगण दीन्ह लगाई।
पर ऋषिकर लखि अतुल तेजहियमधि भयखाई॥
इमि चिन्तहिं कहुँ अस न होयमुनि कपटहमारा।
जानिसबन कहँ कुपित होइ करि डारहिं छारा॥
अस बिचारि सो ठाम त्यागि तरि रोहि सभीता।
गइँ त्यहि थल ऋषि केरिरही जहँ कुटी पुनीता॥
तरि ते उतरि ते सकल कुटी के निकटहि माहीं।
जाय घेरि कै बैठि संगिनी बृद्धा काहीं॥
बीन बेनु डफ ढोल मुरज मन्दिरा बजाई।
करन लगीं कलगान तान लय बरणि न जाई॥
मुनि सुत के श्रुतिमाहिं परत सो तान रसाला।
भइ निवृत्त श्रुतिध्वनी करत जो रहे त्यहि काला॥
जब सहसा तिन दृष्टि परी सुमुखिन पर जाई।
तब जान्यो सुरपरी वासि यह ऋषि समुदाई॥
दो०—अतिविस्मित ह्वै ऋषितनय, निकरि कुटी ते धाय।
जरठ शंभरी के पदन, गिरे हृदय हुलसाय॥
तरुण वयस मुनितनय सों, बृद्धा परम सयानि।
नेह मोहमयि मधुभरी, कहन लागि इमि बानि॥
सो०—कहहु बालसुकुमार, अहहु कौन काके तनय।
यहिघनगहन मँझार, क्यहिनिमित्तनिवसतअहौ॥
सरल हृदय मुनिवर सन्ताना * करिसविनय निजपरिचपदाना
तिनसब बारबिलासिन काहीं * लायविशुचिनिजआश्रममाहीं॥
एकहि आसन कुटि मधि पयऊ * सो बिछाय बृद्धा कहँ दयऊ॥

पुनि बहु कंदमूल फल लाई * राखे त्यहि सन्मुख हुलसाई ॥
त्यहिलखि धारि श्रुतिनपैपाणी * हरि २ उचरिसो कहइमिवानी ॥
सुनहु तात तुम हम० सब काहीं * जानहु अपर नरनसम नाहीं ॥
कबहू करहिं नाहिं जलपाना * बिना किए हरि अर्चनध्याना ॥
यह सदैव को नियम हमारा * हरि प्रसादही करहिं अहारा ॥
यहसुनिपुलकिकह्योमुनिनन्दन * इहहिंआजुकीजियेविभुवन्दन ॥
तब वृद्धा करि कै चतुराई * किहेसि सैन बहुसंगिनि धाई ॥
सो सब द्रुतपद तरि पै जाई * भक्ष्य पेय बहु बस्तु लै आई ॥

दो०—सकल द्रव्य वृद्धा निकट, सहित यत्न सजि दीन्ह ।
तब सो उठि जल झारिलै, कर पद क्षालन कीन्ह ॥

सो०—पुनि कुशासनासीन, होय मूँदि दृग कपट करि ।
भई ध्यान महँ लीन, धारि अँगुरि नासिका पै ॥
त्यहि को ढंग निहारि, जानिपरयोइमिमुनिसुतहि ।
जनु त्यहि स्वयंमुरारि, दिब्यरूप ते दरश दिय ॥

करि चातुरी सहचरिहु सारी * ठानि ध्यान मिसआसनमारी ॥
मुनिनन्दनदिशिनिमिषनिहारी * बक्रकटाक्ष करहिं मनहारी ॥
कछुककाल यह कौतुक रहेऊ * बहुरि ध्यान तजि वृद्धाकहेऊ ॥
हरि प्रसाद यह परम पुनीता * सब मिलि अशनकरहुह्वैप्रीता ॥
तब सब बार बधू सह लासू * राजिसरल चित मुनिसुतपासू ॥
तिनहि मधुर मोदक मन भाये * फलके मिस भोजन करवाये ॥
तासु विचित्र स्वाद मन भावन * लहिइमिकहमुनिवरसुतपावन ॥
अस फल उपज जौन बनमाहीं * चलिय संग लै तहँ हमकाहीं ॥
कामेश्वर मोदक मन भाये * युवतिनतिनमुनिवरहिखवाये ॥
रस मिश्रित पय रुचिर पियाई * करि प्रमत्त तिन कह्योबुझाई ॥

दो०—जस फल खायहु ताहु सन, उत्तम मधुर रसाल ।

उपजत हमरे तपोबन, बीच प्रचुर सबकाल ॥
यह सुनि बहुअनुनयसहित, कहमुनि सुतइमिबैन ।
यदि अस तौ द्रुत लै चलहु, काजबिलँबकर हैन ॥
अतिविमुग्धमुनि सुतहिनिहारी * सकल कामिनीलाजबिसारी ॥
घेरि चतुर्दिशि ते सहुलासा * लागीं करनहास परिहासा ॥
कोइतिनकर मुखचुम्बन कीन्ह्यो * कोइलगाय हृदय महँलीन्ह्यो ॥
कोइकर धारि खैंचि निजओरी * बैठी देह देह सों जोरी ॥
हाव भाव दृग चपल चलावति * निजकरतेरसमधुरपियावति ॥
निजसुरमितअंचलचलनबयारी * मंद २ करि रहि कोइ नारी ॥
कोइ जम्हात लेत अँगराई * ज्यहिलखिक्यहिचितविचलिनजाई
इमि फँसिकामिनिकुहकमँभारी * मुनिनन्दननिजसुरतिबिसारी॥
मोह मुग्धवृद्ध तिन काहीं * लखिविचारअसकियमनमाहीं ॥
मुनि नायक नन्द नहि भुलाई * यदि आजहि मैं जाऊँ लिवाई ॥

हंसगति छन्द ॥

तौ न विदित तपपुंज विभांडक मुनिवर ।
करै काह धौं कोपि अनर्थ भयंकर ॥
ताते नहिं लैजाहुँ आजु मुनि सुत कहँ ।
पिता पुत्र एकत्र होइहैं निशि महँ ॥
तब निश्चय अति सरल हृदय मुनि नन्दन ।
आज केर वृत्तान्त कही निज पितु सन ॥
यदि पर मार्थ ते अधि कनेह निज सुत पर ।
तौन जाइ हैं कालिह कुटि ते मुनिवर ॥
जैहैं यदि तजि सुतहि कुटीमधि तप हित ।
तौ कल जाब लिवाइ इनहिं निर्भय चित ॥
अस बिचारि इमिकह्यो सुनिय मुनि नन्दन ।

तब सेवा सन मुदित भये हमसब जन ॥

दो०—अब हम सब जन जात हैं, एक शिष्य के धाम ।
बिमल चित्त ते रहहु तुम, तपो निरति वसु याम ॥
ह्वै हताश मुनि तनय तब, कह्यो जोरि युग हाथ ।
मैं चलिहौं तव संगही, सेवकवत् मुनिनाथ ॥

मोहिं बिहाय यदि करहु पयाना * तौ देहौं अबही तजि प्राना ॥
द्विजवध पाप होय तुम काहीं * यहिहितजाहु त्यागिमोहिंनाहीं
तब बृद्धा गहि मुनि सुतमानी * दै ढाढ़स कहयहि बिधिबानी ॥
सन्ध्या समय आय पुनराई * अवशितुमहिंसँगचलबलिवाई ॥
इमि बुझाय युवतिन लै संगा * गइनिजतरिपै पुलकितअंगा ॥
इत जब अस्त दिवाकर भयऊ * बृद्धापुनिनआश्रमहि अयऊ ॥
तब मुनि तनय बिकल भे ऐसे * नसे लब्ध निधि लोलुपजैसे ॥
गइवृद्धा ज्यहि दिशित्यहिओरा * पुनि२लखतमुनीशकिशोरा ॥

दो०—केवल पितहि बिहाय कै, यहि समस्त क्षिति माहिं ।
अपरबन्धु कहँ आजलौं, जानत जोइजन नाहिं ॥
शुद्धचित्तअतिसरलमति, त्यहिमुनि सुतकहँआजु ।
तीय प्रपंच कराय दिय, जनक प्रेम परि त्याजु ॥

सो०—कृत्तिवास जोइ कोय, अस प्रबलहिअबलाकहैं ।
है प्रलाप इवसोय, कौन शक्ति नहिं तियन महँ ॥

सप्ताशीतितम सर्ग ॥ ८७ ॥

ऋष्यशृंग का अंग राज्य में आगमन तथा शान्ता के सहित बिवाह ॥

दो०—लखत बाट मुनिवर तनय, तिन वरांगिनिन केर ।

भानु अस्त संध्या विगत, बिहगन लीन्ह बसेर ॥
सहससहस हीरकखचित, नीलाम्बर बर धारि ।
दीन्ह्यो दरश बिभावरी, सुन्दर वेश सवाँरि ॥
कुमुदिनिमनप्रमुदितकरत, बिधुस्वछटा छिटकाय ।
करन लाग तिनसँगगमन, संचर दीप के न्याय ॥
इमि दर्शत घन गहन के, बिटप निरव निस्चन्द ।
रैनि देवि सन्मान हित, मनहुँ ठढ़ सानन्द ॥

सो०—शुभ्र चन्द्रिका संग, लहित रंगिणी नर्मदा ।
मानहुँ सहित उमंग, नर्तत बिविध कलान सों ॥
छाव शांति चहुँ ओर, केवल प्रहरी शब्दवत ।
विपिनपशुनध्वनिघोर, मधि२सुनि यतइत उतहि ॥
चिन्तित वदन मलीन, यक तरवर तर अबहुँलगि ।
ऋषिकुमार आसीन, जनु विषाद कर चित्रपट ॥
त्यहि क्षणकुटी मँझारि, आयविभांडक तपोनिधि ।
सुतकी दशा निहारि, पूँछेहु कारण चकित ह्वै ॥

ऋष्य शृंग पितुकाहिं निहारी * मिलि नहिं सकेपूर्व अनुहारी ॥
जब पुनि२ पूँछेहु मुनिराजू * क्यहिहितरुदत मलिनमुखआजू
तब उसास लै कह्यो कुमारा * प्रथमकरिय कछुपान अहारा ॥
कहब बहोरि तात सनसोई * घटना घटित आज भइ जोई ॥
यह सुनि कै ऋषिराज प्रबीना * चिन्तित चित्तअशनकछुकीन्हा
तब मुनि तनय बैठि पितु आगे * सहज स्वभावकहन इमिलागे ॥
आज जबहि तुम तपहित गयऊ * तबयंहिथलयक ऋषिदलअयऊ

दो०—दिविपुरवासी ते सकल, गुणी सुशील सुजान ।
त्रिभुवनमहँतिनकेसरिस, दयावान नहिं आन ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

तिन कायवर्ण अलक्त रंजित क्षीर के सम सोहही ।
नवनीतइव अँगअंग चिक्कणमृदुल लखि मन मोहनी ॥
आकर्ण लोचन नीलवर्ण सरोज दल अनुहारही ।
श्रुतिकुण्डलनलखितिनन्हदमकनझपननयननलावही
कलधौतदामतेगुथित कुंचितअसित सुरभितशिरजटा ।
ज्यहिदेखि उरमधि भावही सतड़ित मनहुँ नीरदघटा ॥
तिन भालपट पै बाल रबिइव बिन्दुअति सुन्दर खचे ।
नहिंजानहूँ क्यहिमृत्तिकासों ताहितिन मुनिगणरचे ॥
द्युतिजाल इवगालमाल तिनसितपीतबिबिध प्रकारके ।
केहिफलसोंनिर्मित जलतज्यहितारकाराजि निहारके ॥
नहि विदितसोफलकवनकाननमाहिंक्यहिबिटपन फरे ।
अरुसबनउर श्रीफल सरिस युग कोइपदारथ लखिपरे ॥
तिनमुनिनकटि अतिक्षीण पीननितम्ब चारुविराजहीं ।
द्युतिवंत सुन्दर मनोहर मेखला तिनपै भ्राजहीं ॥
तिन पगन महँ लखिपरी अद्भुत एक वस्तु सोहावनी ।
मनहरनतिनसन होतरुनझुनध्वनि श्रुतीनलोभावनी ॥
परिधान तनुबहुखानि कल्कलछबि बखानि नजातहै ।
मुखरोम बिनु द्युतिमय मनहुँ शारद मयंक विभात है ॥
तिनके निकट फलमूल पेय पदार्थ जे सुन्दर रहे ।
हे तात तिनकर स्वाद अद्भुत जातनहिं हमसन कहे ॥
निज मधुर प्रेमालापसन मम मन हरन ते करि लये ।
विच्छेद खेद स्वरूपि शरसों भेदि यहि तनु कहँ गये ॥

दो०—सुनत विभांडक सुत वचन, प्रकृत मर्मगे जानि ।
सरलअमलसुतहृदयलखि, बिहँसिकह्योइमिबानि ॥

सुनिय सुवन ते नारि हैं, यहि विध बेश सवाँरि ।
कामचारिणीनिशिचरी, विचरहिं विपिनमँझारि ॥
रह शुभभाग्य पुण्य फल मोरा * तिनकर आजप्राण बचतोरा ॥
ते कुहकिनि यदिपुनितोहिं पैहैं * तौतोहिंपकरिअवशिभखिजैहैं॥
यहिहिततिनसँग मिलुन बहोरी * सुनिऋषिशृंगिकह्योकरजोरी ॥
यहिविध वचनकहिय पितुनाहीं * नहिंकृपालुतिनसम जगमाहीं ॥
यहिविधि सदय होय पुनराई * तिन सँग भेंट देय कर वाई ॥
तौ तव पदन माहिं शिरनाई * अबहीं ते मैं चहत बिदाई ॥
यह विचार अब मैं दृढ़ ठाना * रहितिनसँगकरिजपतपध्याना॥
करहुँ सफल यहि जीवन काहीं * अपर सोहात मोहिंकछुनाहीं ॥
सारी रैनि सुतहि मुनिराई * बिबिध भाँति सों थके बुझाई ॥
प्रातसमय निज हृदय मँझारा * यहिप्रकारमुनिकीन्हविचारा ॥

दो०—सुत सनेह ते जाहुँरहि, यदि मैं आश्रम माहिं ।
धर्म कर्म तप कृति सकल, तौ हमार नशि जाहिं ॥
काकोसुत काकी तिया, यहि संसार मँझार ।
है पार्थिव सम्बन्ध सब, दुखद अलीक असार ॥

सो०—यह लिपि बेद पुरान, बदत संत सुधि सन्ततहि ।
है भवपाश समान, मनुजन एक सनेहही ॥
पर सनेह सोइ जोय, हरिपद माहिं लगावई ।
तेहि भवभीतिन कोय, मुक्तिद्वार उन्मुक्त नित ॥

षट्पद छन्द ॥

मनुजन शतशत मात पिता बांधव सुत नारी ।
प्रकट भये होइहैं होत हैं जगत मँझारी ॥
पर यह दैव के सकल पाक सामग्रि स्वरूपा ।
कालमास ऋतु तासु अहैं दर्वी अनुरूपा ॥

रविअनलदिवसनिशिकाठइवपाकसकलजीवनकरत।
यहिहितसँयोग वियोगदुखअहै अनित्त्यपदार्थवत॥
शोक किये निज काय होत संतप्त सदाई।
अरु तासन दुखकेर हेतु लेशहु न नशाई॥
यह तनु यक अव्यक्त महा सरिता अनुहारी।
पंचेन्द्रिय[१] जल जन्तु अहै ममता त्यहि बारी॥
मोह पंकतृण लोभ काम त्यहि ऊर्मि विशाला।
क्रोध तासु आवर्त बासना अतल पताला॥
संतोष बहुरि परमातमा माहिं निवेशन करत मन।
यहिमहानदीते तरनकरयाहितरणिकहकोविदन॥
सो०—यह विचारि ऋषिराय, कह्यो सुवन सनवचनइमि।
रह्यो सतर्क बनाय, मैं बन गवनत तप करन।
यदि कोई तव पाहिं, आवहितासनमिलेहुमति॥
नतु तुम संकट माहिं, परिहौ बिन सन्देह तुम॥
दो०—यहिविधि सुत समुझायकै, ब्रह्म उपासन हेत।
गमने साधन वेदि दिशि, ऋषिवर तपो निकेत॥
यह विलोकि वृद्धा हुलसानी * कह्योसहचरिन सनइमिबानी॥
चलहु स्वकाज करहु सउछाहू * भायहिक्षण भलअवसरलाहू॥
तब सब बारांगना नवीना * गावत मधुर बजावत बीना॥
हँसत ठठोलि करत बहुभाँती * गइँमुनितनयनिकटहुलसाती॥
तिन्हैं हेरि हर्षित ऋषि ऐसे * हत सम्पति लहिलोलुप जैसे॥
उठि वृद्धा कहँ शीश नवाई * तिन सबकाहिं कुटी महँलाई॥
दै आसन सन्मानि बहोरी * कह इमि बचन प्रेमरस बोरी॥
कालिह विहाय हमैं तुम गयऊ * रुदतमोहिं निशि बीततभयऊ॥

(१) नेत्र, कर्ण, नासा, जिह्वा, तथात्वक्॥

अब सोइ उदक करावहु पाना * पिये जाहि मम हृदय जुड़ाना ॥
जनक फिरन ते प्रथम हमकाहीं * चलुलिवाय निजतपबनमाहीं ॥

दो०—यहसुनि वृद्धा मुनि सुतहि, लखि अवसर लै संग।
दै भुलाव निज तरणि पै, गइ लिवाय सउमंग ॥
बहुबिध मधुरालाप मधि, युवतिन तिन्हें फँसाय।
कह सैनन नाविकन सों, द्रुत तरि देहु चलाय ॥

रामगीती छन्द ॥

यहि विधि भुलावत युवतिगण मुनि राजनंदन काहिं।
कछु दिवस महँ पहुँची तरणि अंगाधिपति पुरमाहिं ॥
ऋषि तनय के पहुँचतहि सारे अंग राज्य मँझार।
चहुँओर ते छाये गगन मधि जलद नीलाकार ॥
घनगर्ज ते प्रति ध्वनित दश दिशिदमक दामिनि दाम।
जनु मुनि समादरहित भयो आरंभ नाट्य ललाम ॥
आकाश छादित नील नीरद बर बितान के न्याय।
अभिनेत्रि चातक पुंज दीपावलि तड़ित समुदाय ॥
घनघोर गर्जन वारिदन गमकन मुरज अनिवार।
अरु सनसनान समीर कर मृदु मूर्च्छना अनुहार ॥
जल बरषि मूशलधार भई परितृप्त धरणि बनाय।
लहि जीवगण जीवन मनहुँ जीवन लह्यो पुनराय ॥
नृप लोमपाद मुनीश सुतकर आगमन सुनिपाय।
अगवानि हित गमनत भये सँग लै सचिव समुदाय ॥
ऋषिपद प्रणति करि अर्चि विधिवत कीन्ह बहु सन्मान।
पुनि भूपवरके हृदयमधि यहिभाँति शंक समान ॥
असहोइनाहिं कहुँ जग विरत ब्रह्मर्षिसुत गुण खानि।
ममउपरि रोषित होहिं लालना गणन छलना जानि ॥

तब नृपति सारद मुनि सुतहि निजभवन मधि लैजाय।
करि विविध विध उत्सव मनोहर शुभ दिवस ठहराय॥

दो०–तब कुमारि शांताहि तब, तव सख रविकुल केत।
शृंगीऋषिकहँब्याहिदिय, वेद विधानसमेत॥
तब ते तव तनुजा सहित, ऋष्य शृंग गुणखानि।
अंगराज महँ बसत हैं, गृहीधर्म्म[1] बर जानि॥

सो०–रविकुल कमल पतंग, यह ऋषिशृंगि प्रसंग सुनि।
पुनरपि सहित उमंग, पूँछेहु सचिव सुमंत्र सन॥
कीजिय सचिव बखान, निज सुतके विच्छेद महँ।
पाछे तपोनिधान, काह विभांडक ऋषि कियो॥
कह्यो सुमंत्र बहोरि, मुनिसुत काहिं समर्पि कै।
वृद्धा दोउ कर जोरि, कह इमि अंगाधिपति सन॥

प्रभु तव आयसुते मैं जाई ✽ करि छल शृंगिऋषिहिलैआई॥
परतिन केर जनकज्यहि काला ✽ जनिहैं यह छलछन्दभुआला॥
तब नहिंविदित कोपितुमकाहीं ✽ डारहिं कौन आपदा माहीं॥
ताते यक मैं कहत उपाई ✽ करहु तासु मधि प्रभुकुशलाई॥
राज्य माहिं तुम ठमन ठामा ✽ सजवावहु बहुसुन्दर ग्रामा॥
तहँ बस पशुप कृषक धनवाना ✽ रहैं धेनु गज हयपशु नाना॥
थलन थलन तहँ मन मुददाई ✽ नृतगातादिक होहिं सदाई॥
जब तव राज्य माहिं अवनीशा ✽ ऐहैं खोजत सुतहि मुनीशा॥
तब सुनि मधुर मनोहर गाना ✽ तिनकर होइ रोष अवसाना॥
बहुरि जबहि पूँछहि तपधामा ✽ यह काके हैं ग्राम ललामा॥

(१) "चतुर्णामाश्रमाणांहि गार्हस्थ्यं श्रेष्टमाश्रमम्॥" (वा०रा० अ०कां० १०६ सर्ग २१ श्लोक) अपरंच–"सर्वेषामाश्रमाणांहि प्रधानं पुण्यवान् गृही।" (ब्र० वै० पु० ब्र० खं० २३ अ० ८ श्लो०)

दो०–तब सविनय पुर वासिजन, कहैं जोरि युग हाथ ।
यह समस्त पुर कृषक पशु, तव सुत के हैं नाथ ॥
यह सुनि ताहि प्रशंसि नृप, दै निदेश बहुग्राम ।
बिविध मनोहर द्रव्य सों, सजवाये अभिराम ॥

सो०–उतनिज आश्रम काहिं, फिरे विभांडक तपोनिधि ।
सुनत अन्यदिन माहिं, सुतकृत श्रुति ध्वनिदूरि ते ॥
आज निरव कुटि पाय, मुनिवर अति उद्विग्न ह्वै ।
द्रुतपद भीतर जाय, देखी कुटि सूनी परी ॥

रोला छन्द ॥

चिर संचित मुनिकेर धार सुत नेह अगारी ।
भयो पराजित देखि परत यह जगत मँझारी ॥
विषय विरत जित मनस संयमी कैसहु जोई ।
समय २ मधि चित विकार ताहू कर होई ॥
झंझानिल महि कंप सोहिं हे अवध भुवाला ।
बिचलि जात हैं महासिन्धु अरु अचल विशाला ॥
केवल जीवन्मुक्त पुरुष कहँ कोइ क्षण माहीं ।
विषय पाश करि सकत स्पर्श लेशहु भर नाहीं ॥
करि सुत कर अपमृत्यु शंक मुनि अति अकुलाई ।
खोजन इत उत चले विपिन मधि चारहुँ धाईं ॥
मुनि कछु क्षणपै धीर धारि मुनि तपो निधाना ।
कौशल क्षितिपति लोमपाद कर ध्यान ते जाना ॥
अति क्रोधातुर होय बाँधि शिर जटा विशाला ।
अंग देश दिशि गमन कीन द्रतपद ततकाला ॥
रोषते कँपत शरीर नयनप्रलयानल नाईं ।

कीन्हेसि प्रतिफल तासु आशु कपटी सो पाई ॥
इमि गमनत पथ माहिं लखे बहु रुचिर ललामा ।
सब समृद्धि सम्पन्न घोष पल्लीपुर ग्रामा ॥

दो०—एकदिवस अति श्रमितह्वै, दिनमणि अस्तनिहारि ।
गये ठहरि मुनि नाथ यक, सुन्दर ग्राम मँझारि ॥
बहुविध तहँ के वासिगण, किय ऋषिकीसेवकाय ।
नृपवत सुखते रैनिभरि, रहे तहाँ मुनि राय ॥

सो०—भये प्रभात मुनीश, गमन समय इमि पूँछेऊ ।
यहिपुरकेर अधीश, अहै कौन सुकृती यशी ॥

यहसुनि ग्रामबासि इमि बानी * कहकर जोरि बिनयरससानी ॥
यह सब ग्राम ललाम सोहावन * तव सुनकेर अहैं मुनि पावन ॥
निज दुहिताहि अंग नरनाहू * तबसुत काहिं ब्याहि सउछाहू ॥
यह समुदय पुरहय गज याना * कौतुकबत किय तिन्है प्रदाना ॥
तिन के बच सुनि मुनितपऐना * रोष विगत ह्वै कह इमि बैना ॥
भयो गृहस्थाश्रमी कुमारा * दोष न कोइयहि विषयमँझारा ॥
अब मैं निज आश्रम कहँ जाई * होहुँ स्वकृति मधिरतमनलाई ॥
भानुवंशि दशरथ महिपाला * ममप्रियसुतहिबोलिज्यहिंकाला

दो०—करिहैं मख पुत्रेष्टि तब, हमहुँ निमंत्रण पाय ।
जाय तहँ निज पुत्रसन, मिलब हिये हुलसाय ॥
असविचारिमुनिमुदितचित, कियआश्रमहिपयान ।
ऋष्यशृंगि इतिहास यह, कृत्तिवास किय गान ॥

अष्टाशीतितम सर्ग ॥ ८८ ॥

ऋष्यशृंगिका अयोध्यागमन व दशरथकृत अश्व-मेधयज्ञारम्भ ॥

दो०—करि सुमंत्र सन मंत्रणा, प्रमुदित औधनृपाल ।
चतुरंगिनि घनि बाहिनी, सजवायहु तत्काल ॥
पुनि कुलगुरू वशिष्ठ सन, करपुट माँगि निदेश ।
अंग देश कहँ किय गमन, सह सुमंत्र अवधेश ॥

सो०—मगमहँ अवधमहीप, लखत ग्राम गिरि सरित बहु ।
चम्पा नगरि समीप, पहुँचत भे कछु दिवस महँ ॥
समाचार यह पाय, आगे बढ़ि अंगाधिपति ।
उरमधि अति हर्षाय, मिलिदशरथनिजसखात्यों ॥

करि पूजन बिधिवत सन्मानी * सहितसेननिजपुरिमहँआनी ॥
सुन्दर मन्दिर माहिं उतारा * रह सुपास जहँ सकलप्रकारा ॥
जनक आगमन आनँददाई * सुनि शान्ताद्रुतपितुढिगआई ॥
करपुट प्रणति प्रेमयुत करेऊ * लखि सुताहि नृपउरमुदभरेऊ ॥
शीश चूमि बहु आशिष दयऊ * कुशल पूँछि निजढिगबैठयऊ ॥
बहुरि अंगपति प्रीति समेता * पूँछेहु नृपते आवन हेता ॥
सुनि सनेह साने सख बैना * कह इमि कोशलेश यशऐना ॥
तपोनिधान शृंगि ऋषि काहीं * चहहुँ जान लै निजपुरमाहीं ॥
यक ऋषिवर हमसनयककाला * कहबनमधियहिभांतिभुआला ॥
ऋषि शृंगिहि याजककरु जोई * तव सुत आस पूरि तब होई ॥

दो०—यहसुनि नृप दशरथहि द्रुत, लोमपाद नरनाह ।
ऋष्यशृंग के भवन महँ, गेलिवाय सउछाह ॥

तहँ द्वितीय आदित्य सम, रहे शृंगि ऋषि राजि ।
अँग अंगन ज्वलिताग्नि इव, ब्रह्मतेज रह भाजि ॥
सो०—अतुलतपोबलखानि, ऋषिहि हेरि कोशलअधिप ।
धन्यभाग्यनिजमानि, किय प्रणाम श्रद्धासहित ॥
तब इमि वचन रसाल, कह ऋषिबर सों अंगपति ।
हैं यह अवध भुआल, विदित जासुयशआपकहँ ॥
यदि तुम कृपा करहु मुनिराजू * तौ यह नृपति होइ कृतकाजू ॥
प्राणपुतरि शान्ता ज्यहि साथा * किहौं तुम्हारव्याहमुनिनाथा ॥
सो इनहीं की सुता ललामा * श्वशुर तुम्हार येइ गुणधामा ॥
इनहिं अपुत्रक ताप सदाई * दाहत उरजो बरणि न जाई ॥
सो इन कर दारुण दुख भूरी * करहु कृपाल कृपा करि दूरी ॥
तब ऋषिप्रवर तपोबल खानी * ध्यान ते भावि मर्म सबजानी ॥
भूपति नुति करि हृदय मँझारा * सरसमृदुल अस वचनउचारा ॥
सुनिय अवधपति परम उदारा * होइ मनोरथ सफल तुम्हारा ॥
दो०—असकहि दांत प्रशांत चित, सतिशान्ता के कंत ।
अवधगवनकहँ तियसहित, प्रस्तुत भये तुरंत ॥
तब महीप मणि दशरथहु, उरमहँ अति हुलसाय ।
लोमपाद नरनाथ सन, माँगिसप्रीति बिदाय ॥
सो०—सुन्दर यान चढ़ाय, ऋषि राजहि तनुजा सहित ।
दलबल संगलिवाय, चले अवध कहँ अवधपति ॥
ऋषि आगमन सुखद शुभकारी * सुनिमनमगनअवधनरनारी ॥
सजे सबन निज२ आगारा * लागे करन मंगलाचारा ॥
जब ऋषिराज नगर मधि आये * दर्शन हित पुरजन सबधाये ॥
मुनि पदवन्दि सहित अनुरागू * माना सबन धन्य निजभागू ॥
बहुरि महीप शृंगिऋषि काहीं * गे लिवाय अन्तःपुर माहीं ॥

कनककान्तितनु शांतिकिखानी ❋ पतिसहशान्तहिलखिसबरानी॥
अति प्रमुदित ह्वै धनमणि अंबर ❋ किय यामातृ उपरनिवछावर ॥
बहुरि मनोहर मन्दिर माहीं ❋ दियनिवास वरदम्पति काहीं ॥

दो०—भामिनि सहित प्रसन्न चित, रहन लगे ऋषिराय ।
लोपा मुद्रावत करति, शान्तापति सेवकाय ॥
इमिबीते कछु दिन मुनिहि, भूपति भवन मँझारि ।
आयो शुभद बसन्त ऋतु, जनमन रंजनकारि ॥

गुरु वशिष्ठ ढिग तब अवधेशा ❋ जाय बन्दिपद लहिआदेशा ॥
वेद विहित हयमेध यज्ञकर ❋ अनुष्ठान कीन्हेउ भूपति बर ॥
सहससहस वर्द्धकी कारुकर ❋ कार्मान्तिक अस्थपति सूत्रधर॥
गणक खनक आदिक जनकाहीं ❋ कियनियुक्तनिज २ कृतिमाहीं ॥
पावनि सरयू उतर विशाला ❋ निर्मित भई रुचिर मखशाला ॥
आमंत्रित नृप मुनिन के हेतू ❋ भये रचितबहु सुघरनिकेहेतू ॥
बिबिध बस्तु तिन सबन मझारी ❋ राशि २ पूरित चितहारी ॥
जितक याग सामग्रि पुनीता ❋ सोसंचितकिय सचिवसप्रीता ॥

दो०—यत महिमण्डल मधिनृपति, द्विज मुनिपरम पवित्र ।
किय प्रेरित तिन सबन के, निकट निमंत्रणपत्र ॥
काशिराजमिथिलाधिपति, केकय नृपति समीप ।
सचिव सुमंत्रहि नेवतहित, पठयो अवध महीप ॥

षट्पद छन्द ॥

मुनि गौतम जैमिनी पुलोमा पुलह निशाकर ।
अष्टावक्र पुलस्त्य भरत यमदग्नि पराशर ॥

---

(१) तबलदार (२) कारीगर (३) आसमाप्तिकर्मनिर्वाहक (४) स्थपति (राज) (५) बढ़ई ।

देवयान मौद्गल्य भारगव पर्वत नारद।
चक्रवान नृषदण्ड पिपिलका तपो विशारद॥
भृगुसनकसनन्द सनातनसनत्कुमार मरीचिऋषि।
घटयोनिधौम्यसुप्रभप्रमुचिबालमीकिकौशिककवषि॥
मत्स्यकर्णि सावर्णि कराव दुर्वासा ऋषिवर।
मार कण्ड कौडिन्य कपिल मुनि अतुलतेज धर॥
अत्रिविभांडक गर्ग च्यवन बावन यशराशी।
यवक्रीत उपमन्यु गृत्सदम दक्ष उदासी॥
ऋतुदीर्घतपादिक वेदबित अग्निकल्प ब्रह्मर्षिगन।
ध्वनी उच्चरत अवध मधि लागे करन शुभागमन॥
इन तजि बहुयक पदाश्रयी जटि बल्कलधारी।
बहु बतासभख एकमात्र हरिनाम उच्चारी॥
सहसवर्ष पर्यन्त अनाहारी बहुमुनिवर।
बहुयोगी यति विप्र सकल विद्यान धुरन्धर॥
बहुजपी तपी साधक व्रती एकत्रित मख थलभये।
तिनऋषिनद्विजनवेदध्वनीछायदशहुदिशिमधिगये
मिथिलाधिप राजर्षि जनक कोशलपति[1] गुर्जर[2]।
केकय दरद[3] सुमित्र कच्छ[4] सौराष्ट्र[5] के नृपवर॥
मगध[6] कुलिन्द[7] कलिंग[8] प्राग्ज्योतिष[9] सौबीरा॥
अंग बंग तैलंग सिन्धु हाटक काश्मीरा॥
गान्धार[10] काशिपति रोहितक[11] कालकूट बाल्हीक[12]पति।

(१) उत्तर कोशलपति अर्थात कौशल्याजी के पिता (२) गुजरात देश (३) दर्दिस्तान (४) कचदेश (५) सूरत (६) वर्तमान बिहार का दक्षिणभाग (७) पंजाब के अन्तर्गत देश विशेष यहां के निवासी अब कुनेत कहलाते हैं (८) गोदावरी तटस्थ प्रदेश (९) कामरूप (१०) कंधार (११) रोहतक (१२) बलख।

काम्बोज चीन आनर्त कर्णाट त्रिगर्तेश्विर सुमति ॥
दशार्णादि उदयास्त भूमिमधियत नरनाहू ।
ते सकल सदलबल आय अवधमधि सहित उछाहू ॥
बिविध प्रचुर धन रतन आभरण वसन अनूपा ।
देत अवधपति करहिं विनययुत भेंट स्वरूपा ॥
अवधेशनिमंत्रितजननसोंमिलतपूँछिसादरकुशल ।
तिननेहशीललखिअतिमुदितआगतऋषिमुनिनृपसकल ॥

दो०—सचिवन आमंत्रितन मधि, जोइ आगत दर्शात ।
पृथक पृथक बर भवन महँ, ताहि उतारत जात ॥
राजकर्मचारी निकट, ऋषिमुनि नृपन सदाय ।
सन्मानहिं सब भांति ते, बिबिध बस्तु पहुँचाय ॥

सो०—सुयशराशि अवधेश, कौशल्या पटरानि सह ।
मखथल कीन्ह प्रवेश, शुभ नछत्रयुत बारमहँ ॥
लखि द्विज मुनिसमुदाय, स्वस्ति वचन उच्चारेऊ ।
नृपति मुनिन शिर नाय, बोले करपुट बैन अस ॥

सुनियसकलसुधि साधुसुजाना ❋ अहहुसकलमम पूज्यसमाना ॥
यह मम विनय अहै यहि बेरा ❋ प्रथमहिकरहु बरणक्यहिकेरा ॥
यह सुनि ऋष्यशृंग यशखानी ❋ कहइमि सभासोहावनिबानी ॥
ऋषि वशिष्टही कर यहि काला ❋ अर्चनप्रथम उचित महिपाला ॥
यक तो विधिसुत अपर महीपा ❋ तव कुलगुरु ते ऋषिकुलदीपा ॥
श्रुतिसम्मत नय विधि अनुसारी ❋ पूजनीय गुरु सबन अगारी ॥
अस तो यत ऋषिमुनि तपधामा ❋ राजतअहैं विशुचि यहिठामा ॥
इतर श्रेय तिन मधि कोउ नाहीं ❋ सब समपूज्य अहैं तुम काहीं ॥
यह सुनियत मखथल आसीना ❋ साधु बाद यक स्वरते कीना ॥

(१) कम्बोह जाति का देश (२) काठियावार (३) जालंधर (४) छत्तीसगढ़ ।

तब निजगुरु कर भक्ति समेता * करि अर्चनपुनि नृप शुभहेता ॥

दो०—ऋष्यशृंगि आदिक ऋषिन, पूजेहु सह अनुराग।
सहित रानि दीक्षित नृपहि, कियऋषीनमहभाग ॥
सांगोपांग श्रुतिज्ञ पुनि, मखकृति माहिं प्रबीन।
सदा बारिमख मुनि द्विजन, यज्ञव्रती नृप कीन ॥
जानहिं जे न षड़ंग श्रुति, बहुरि शास्त्र पटु नाहिं।
असद्धिम्भहु न सदस्यसक, मखकी कोइकृतिमाहिं ॥
देवदारु किंशुक विशुचि, रक्तसार बहुबार।
बिल्वदारु निर्मित प्रयत, यूप सुविपुलाकार ॥
एक विंशभूषित पुरट, सप्त ऋषिन के न्याय।
यथाथलन मखशालमधि, विधिवत रहे सोहाय ॥

सो०—श्रुतिविधानअनुसारि, कियमखकृतिआरँभऋषिन।
यज्ञ तुरंग सवांरि, छुट्यो सदल क्षितिभ्रमण हित ॥

रामगीती छन्द ॥

मंत्रज्ञ याज्ञिक शिल्पज्ञाता बिप्रगण तातकाल।
इष्टकन निर्मित कियो शुचि होमकुंड विशाल ॥
तबसहितस्वरबुधप्रवरऋषिवरनिकरश्रुतिध्वनिकीन।
तिनबदन सनप्रकट्यो हुताशनप्रयतधूम्रविहीन ॥
त्यहिपावकहि करि बुधन अर्चनबेदविधिअनुसार।
थापन कियो उच्चरत मंत्रहि हवन कुण्ड मँझार ॥
श्रुति साम मंत्र उचारि कै शृंग्यादि ऋषिन प्रवीन।
अमरेशआदिकसुरन आवाहन यथाविधि कीन ॥
गीर्वाणगण कियग्रहण निज २ भागप्रमुदितहोय।
लाग्यो समापति होन प्रतिदिन केर कारजजोय ॥

जलचर तुरंग विहंग छाग भुजंग त्रिविध प्रकार।
वधभये देवोद्देशमहँ श्रुतिशास्त्र विधि अनुसार॥
यकवर्ष इमि क्रतु करत बीत्यो जबहि भूपति काहिं।
तबआव क्षिति पर्य्यटन करि हय बाजि मखथल माहिं॥
त्रयशत पशू अरु यक सोई यज्ञीय अश्व विशाल।
बंधित भये मालादि भूषित यूपमधि त्यहि काल॥
पटरानि कौशल्या तबहिं याजक वचन शिरधारि।
कियहनन त्यहि अश्वहि अरचि त्रयबार खड्गप्रहारि॥
सोइ बाजि की लै बसा आमिष ऋत्विजन मतिमान।
सविधान वेतस दण्डसों आहुतिहिं कीन्ह प्रदान॥
त्रयदिवस मह किय प्रथम अग्निष्टोम कृति मुनिवृन्द।
दूजे दिवस किय डकथपुनि अतिरात्र किय सानन्द॥
त्यहिपरे ज्योतिष्टोम आयुष्टोम कर्म ललाम।
पुनिभयत अभिजित विश्वजित पुनिभयो आप्तोर्याम॥
इमि निर्विघन करि मख समापन औधपति धीमान।
ऋत्विजन काहिं समस्त पृथिवी करन चाह्योदान॥
तब वेदबिद द्विज गणन कह यहिभाँति बैन रसाल।
करि सकत नहिं हम धरणि प्रतिपालन करौं महिपाल॥
श्रुति पाठ जपतप यजन याजन है हमारो काज।
यह राज्य शासन सोह सबविधि तुमहि कहँ महराज॥
यहि हेतु किंचित दक्षिणा करिदान हमसब काहिं।
अक्षय सुयश तुम करहु लाहु महीप यहि जगमाहिं॥
दो०—तब महीप वर लक्षदश, धेनु कोटिदश हेम।
तासु चतुर्गुण रजतदिय, ऋत्विज गणन सप्रेम॥
बहुरि जलद तृणपुंज पै, ज्यहि बिधि बर्षत नीर।

तिमि अपरापर याचकन, दियनृपधन मणिचीर ॥
सो०--इमि अघओघ विनाशि, अश्वमेध मख पूर्णभो ।
तव सविनय यशराशि, कहमहीप ऋषिशृंगिसों ॥
अवसकृपा मुनिराय, लखिकैममअभिलाषदिशि ॥
कीजिय सोइ उपाय, जासोंअभिरुचिहोयसिद्धि ॥
कृतिवास यश धाम, नृप तव मन चातक तृषा ।
सुखदनवलघनश्याम, प्रकटि आशु निरवारिहैं ॥

एकोननवतितम सर्ग ॥ ८९ ॥

पुत्रेष्टि यज्ञ आरम्भन व देवगण कृत विष्णुस्तुति तथा भगवान विष्णु का अवतार ग्रहणस्वीकार ॥

दो०--नृपतिवचनसुनिशृंगिऋषि, कह इमि वचन रसाल ।
तप मनोर्थ पूरण निमित, अब महीप यहिकाल ॥
शुचि अथर्व वेदोक्त जोइ, सन्तत सन्तति दानि ।
पुत्रेष्टी शुभयाग महँ, होहु व्रती यश खानि ॥

ऋषि निदेश सों तब तत्काला * निर्मितभयो अपरमखशाला ॥
मंडप गठन विचित्र विशाला * भूषितविविध भाँतिशुभमाला ॥
चारहुदिशि क्षण प्रभा बिभा के * फरफराहिं मणिजटितपताके ॥
मध्य माहिं सुन्दर मन भावन * शोभितअनल कुण्डअतिपावन
अध्वर्यू ऋत्विज उद्गाता * होत्रिआदिभे द्विजश्रुतिज्ञाता ॥
सविधि शृंगिऋषि तपोनिधाना * करन लगे आहुती प्रदाना ॥
समुदयत्रिदश सहित त्रिदिवेशा * प्रकट भागहित कियबरबेशा ॥
राशि चक्रयुत गगन कि नाई * त्यहिक्षणशुचि क्रतुशालसोहाई

सुरन विलोकि शृंगि ऋषिज्ञानी ❋ सहित बिनय बोलेइमिबानी ॥
तनय कामनाकरि यहि काला ❋ सत्यशील दशरथ नरपाला ॥

दो०—करत यज्ञ तुम सबन कर, पद पुनीत चित ध्याय ।
भूपति मानस वासना, पूरहु देव निकाय ॥
सुनि महर्षि मुख बचन अस, कह सहर्ष सुरपाँति ।
सरितसलिल सागरहि कर, अंशअहैज्यहिभाँति ॥
त्यहि प्रकार नरनाथ उर, उदित मनोरथ जोय ।
त्रिजग कामना केर मुनि, अंशमात्र है सोय ॥

सो०—नृपहि अपुत्रक शोक, एक मात्रही रहत है ।
पर समस्त त्रय लोक, ग्रसित दारुणापत्ति महँ ॥
ज्यहि प्रकार दिनराय, उदित उदयगिरि पै भये ।
आशुहि जात बिलाय, भूरि तिमिर संसार कर ॥
तिमि भूपति कर आश, फलीभूत जब होइहैं ।
होई तबहिं विनाश, तीनि लोक के शोक को ॥
अस कहि अन्तर्द्धान, होय बिबुध बिधि पुरगये ।
तहँ सविनय मघवान, पद्मासन सों कह्यो इमि ॥

देव दशानन देव अराती ❋ तव बरते प्रबहा यहि भाँती ॥
नीतिरीति जग आनि न मानी ❋ सांतसृ सबन जहांलगिप्रानी ॥
कहि न जातत्यहि की करतूती ❋ हरेसि हमारिहु सकलविभूती ॥
सन्तत सुरन साधु सुधि साथा ❋ द्रोह निरत दुर्मति दशमाथा ॥
बर प्रभाव सों त्यहि शठ काहीं ❋ दमननकरिसुरअसुरसकाहीं ॥
अब त्यहि नाशन केर उपाई ❋ यहिक्षण भलअवसरदरशाई ॥
तनय प्राप्तिहित अवध नृपाला ❋ मख पुत्रेष्टि करतयहि काला ॥
यदितिन भवनभुवन भयदारण ❋ प्रकटहिंमनुजदेह करिधारण ॥

दो०—तौ निश्चय दुर्मद दुखद, दशमुख को कर्तार ।

रमारमण के पाणि ते, अहै निधन अनिवार ॥
सो०—सुनि सुरपति के बैन, शंभु बचन अस्मरण करि ।
कह्यो बिहँसि बसुनैन, यहविचार सब भांतिभल ॥

सुगीती छन्द ॥

जबज्यहिप्रकार निदाघतापितश्रमित अतिशयविकलचित ।
धावहिं पथिक गण बेगसन घन बिटप छाया ग्रहण हित ॥
तिमिखुर निकर हरबर जगत कर्तार कहँ करि अग्रसर ।
पहुँचे मनोरम परम पावन क्षीर निधि के तीरपर ॥
तहँ लख्यो देवन भुवन भावन श्रीरमण राजिव नयन ।
ह्वै योग निद्राच्छन्न करिरहे शेष शय्या पै शयन ॥
त्यहिक्षण रमा फणिराजसह इमिविष्णु शोभारहिबिखरि ।
सतड़ित मनहुँ यक नील नीरदखंड रह जल उपरि तरि ॥
नब दूरबादल सरिस हरिकर बिमल श्यामल कलेवर ।
फणिफणनथितमणिगणकिरणसनहोतझलमल मनोहर ॥
कमलया करकमल पै पावन करण कल्मष हरण ।
शोभित ध्वजांकुश कुलिशभूषित रुचिर विश्वंभरचरण ॥
हरि हृदयथित श्रीवत्स कमलामुकुर इव जोइ छबि सदन ।
सो उज्ज्वलित ह्वै रह्यो माणिक मौलि कौस्तुभप्रभासन ॥
भुज चारि दिव्या भरण भूषित दीर्घ शाखा निकरवत ।
इमि सोह मानहुँ पयोनिधि मधि अपर खुर तरुवरलसत ॥
दनुजात ब्रात निपात कारि मुरारि के बर अस्त्र चय ।
आनन्द चित उच्चरत संतत भुवनपति की जयतिजय ॥
तजि नाग द्वेष रमेशपद पंकजनथल महँ महामति ।
दृढ़ ध्यान धरि राजतकुलिश चिन्हितवपुषविहगाधिपति ॥

दो०—अमर निकर भवभीरहर, हरिछबि इमिद्युति ऐन ।
रहे हेरि यकटक सकल, फेरे फिरत न नैन ॥
तबसभक्तिभय कमलभव, जोरि पाणि शिरनाय ।
लगे करन नुति चित लजित, प्रेममगन हरषाय ॥

तोटक छन्द ॥

जयसंसृति आकृति सव परे । श्रुति सारअमूर्ति जनार्तिहरे ॥
जय आनँद कन्द मुकुन्द विभो । भगवंत अचिंत्य अनन्तप्रभो ॥
जगदादि मनादि भजेय भजं । प्रणमामि विहंगम राजध्वजं ॥
शशि मौलिहृदय हृद हंस मुदा । मुनियोगजनैः परिसेव्यसदा ॥
सरसीरुह लोचन श्रीरमणं । जनभोति निरा करणंशरणं ॥
अविकार उदार कृपा अयनं । नितनौमिफणी शतनौशयनं ॥
शरदम्बर सुन्दर अंग प्रभा । शिररत्न विमंडितकीटनिभा ॥
बनमाल रसाल बिशाल उरे । पटपीत सुचारु तनौ फहरे ॥
भवभूरिभरं भ्रम दूरि कृतं । ऋत ज्ञान प्रदं हतभू अनृतं ॥
मद मत्सर मोह द्विधा गहनं । प्रणमामि तृणेव सदा दहनं ॥
जनरंजन गंजन क्रूर खलं । गुणओघ अमोघ अमेयगलं ॥
सतधर्म विकासि बिनाशिसुरं । परिरक्षक धेनु धरा अमरं ॥
श्रुति पंथ विमंडन ज्ञान घनं । शुभधाम नमामि दया सदनं ॥
जगतारक तापक ताप त्रयं । अनवद्य प्रताप अराध्य वयं ॥
परिहाय जोई भ्रमजाल मिदं । सुमिरंत प्रभो तव कंज पदं ॥
सोइ जीवन मुक्त निचिंत सदा । भवसिंधु तरंति बिना बिपदा ॥
जिन चित्तत्वदंघ्र न सक्त किये । अनुरक्त विषै नहिंभक्त हिये ॥
नर पामर ते जगभार मही । भवकूप परे ज्यहि अंत नहीं ॥
यहि हेतु कृपालु कृपा करिये । सुर धेनु धरा विपदा हरिये ॥
करुणाकर हे शरणायतनं । करुणा करि हेरिय दीनजनं ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

जय दीन दुखदारुण दरण कारण रहित सर्वेश्वरा।
जय पतित पावन भुवन वंद्य पुराण पुरुष परात्परा॥
जय दीन बन्धु मुकुन्द हरि गोविन्द कुन्द प्रजापती।
भव द्वन्द कन्दन शमननित सच्चिदानन्द निराकृती॥
जय करण कारण तरण तारण प्रणतिपाल गुणाकरं।
दनुजात ब्रात निपात कारि मुरारि नौमि निरंतरं॥
जय आत्मवान महान प्राणद वेगवान अगोचरा।
अज्ञान बन दाहन दहन विज्ञान गगन विभाकरा॥
जय खण्ड परसु अखण्ड दण्ड प्रचण्ड कैटभ मद हरे।
शुचि साम धाम निकाम बिभुज्यहि नामजपि जनभव तरे॥
अव्यक्तशक्ति अनादि निर्गुण सगुण विभु विश्वंभरं।
संसार सार पुरारि मनस विहारि दीन दयापरं॥
उत्फुल्ल नीलोत्पल बिमल दल श्यामतनु माया मयं।
सर्वाधिपत्य अचिंत्य सत्य नतोस्मि नित्य निरामयं॥
तुमसर्व जीवन उर विषे निवसत सतत त्रिभुवन धनी।
पर तुमहि लखिपावत न यावत जीव यह कह ऋषिमुनी॥
तुम सबन की बिदलित करत संतत त्रिपद दुख आपदा।
पर अहौ प्रभुतुम स्वयं नित्त्यानन्द दुख वर्जित सदा॥
चर अचर समुदय विश्वके निर्माणकारी तुम प्रभू।
पर अहौ जगदाकार तुम यक शुद्ध बुद्ध स्वयं स्वभू॥
तुम सूक्ष्म अरु अव्यक्त चिन्मय एकरस नित प्रति रहौ।
पर व्यक्त यहि ब्रह्मण्डके प्रभु मूलहेतु स्वयं अहौ॥
तुम सबन के पति अहहु पर कोउ अहै नहिं तुम्हरो पती।
सर्वज्ञ तुम पै जानि तुमकहँ सकहिं नहिं ऋषि मुनियती॥

जग जन्म मरणादिकहुते रह नाथ तुम संतत परे।
पर जगत के हित निमित तुम अवतार मत्स्यादिक धरे॥
तुम अतनु अव्रण सतत विगत शिरादि वन्धन ते रहौ।
पर तुमहि यहि ब्रह्माण्ड मण्डल काहि प्रभुधारे अहौ॥
तुम योगनिद्रा छादितहु रहि जागरूप रहौ सदा।
तुम सर्व कार्यन मूल पुनरपि उदासीनहु सर्वदा॥
इमि परस्पर विपरीत भाव विराजि प्रभु तुम महँ रहे।
यहि हेतुते तव तत्त्व जानन कहँ समर्थ न कोउ अहे॥
चाहै जोई पथ सोइ बहै जिमि बिविध सरितन धारही।
पर अंत महँ मिलि जाति हैं ते सकल सिन्धि मँझारही॥
तिमि भिन्न भिन्न पुराण शास्त्रन पंथ जेते उक्त हैं।
तव सर्व व्यापकता निमित सब तुमहिं महँ संयुक्त हैं॥
जिमि नीर निधिके रत्नराशि दिनेश के कर जालही।
गणना किये ते शेष नहिं ह्वैसकत हैं कोइ कालही॥
त्यहि भाँति तव महिमा अनन्त अनन्त युगपर्यंतहू।
नहिं शेष करि सक गाय शत शारदा कोटि अनन्तहू॥

दो०—तजहु योगनिद्रा विभो, श्रीपति कृपानिकेत।
तव सुषुप्ति सों सुप्त जग, चेते होत सचेत॥
दियो दरश नारदहि जोइ, चारि मूर्ति छविसार।
जगहितहित त्यहि रूपते, प्रकटहु धरनि मँझार॥

सो०—श्रीपति आनँदकन्द, जागि चतुर्मुख विनय ते।
उठि देखेहु सुर वृन्द, चारिहु दिशि घेरे खरे॥

सकलसुरनमुखमलिन निहारी * बोले इमि इन्दिरा विहारी॥
अब असकाह परयो दुखभारी * जासों भइ असदशा तुम्हारी॥

तब सुरेश प्रति इमि कर्तारा * सकुचिमन्दस्वरबचन उचारा ॥
अविदित तुमहिं अहै यह नाहीं * मैं बरदीन्ह दशानन काहीं ॥
यहिहित हरिसँग मोहिं सुरराजू * करत बारता आवत लाजू ॥
यासों अपर कोउ जन जाई * कहहिसुरनदुखप्रभुहि बुझाई ॥
तब सुर पूज्य इज्य बुधि खानी * हरिढिग जायजोरियुगपानी ॥
सहित भक्ति करि दंड प्रणामा * कहन लगे इमि बचनललामा ॥
हे सर्वज्ञ सर्व उर बासी * पूत पतित पावन अविनासी ॥
अस रहस्य जग माहिं न कोई * अहै गुप्त प्रभु तुमसन जोई ॥

दो०-आगम निगम पुराण तुम, सर्व नियंता ख्यात ।
यत घटना संसार मधि, सब तुमसन प्रकटात ॥
ज्यहिकारणसब देवगण, चरण शरण लियआय ।
सो सब मर्म कृपायतन, तुम कहँ विदित बनाय ॥

सो०-पर कछु लाघव होय, किये कथन मन वेदना ।
सुरन दुर्दशा जोय, यहिहित सो प्रभुसन कहौं ॥

ऋषि विश्रवा तनय दशशीशा * यातुधान पति लंक अधीशा ॥
भयहु उग्र विधि सों वर पाई * हिंसत ऋषिमुनि सुरनसदाई ॥
जीति देवपति कहँ रण माहीं * कीन्हस्ववशअमरावतिकाहीं ॥
त्यहि उत्पाततै त्रिदिव मँझारी * सुरन रहबअब कठिनमुरारी ॥
तासु भूरि भय सोंहि प्रभाकर * सन्ततउवतमन्दकरिनिजकर ॥
ज्योतिहीन भा विधु सब भाँती * रहत स्वर्गमधितमदिन राती ॥
शमनहि शासिशमनकरशासन * लंकतेदिहिसिउठायदशानन ॥
पवन कबहुँ त्यहि सन्मुखमाहीं * चलि न बेगसों नेक सकाहीं ॥
तुंग तरंगयुक्त रत्नाकर * बहत मन्दगति सोउ ताके डर ॥
बरुणहि समर पराजित कीन्हा * वारिराज्यकरतलकरिलीन्हा ॥

ह्वै धर्षित त्यहि करन कुबेरा * सौंपि शठहि निजकोष घनेरा ॥
अलकापुरी त्यागि सह त्रासा * जाय कीन्ह कैलास निवासा ॥

दो०—त्यहि दुर्मति की शंकते, हुतभुज तेज विहीन।
विचरतसकुचितचितसतत, ग्रहगण ह्वै द्युति छीन ॥
वसनादि षटऋतु समय, निज२ त्यागि स्वभाव।
तैसहि गुण दर्शा वहीं, जस त्यहि आयसुपाव ॥

सो०—नर किन्नर गन्धर्व, मुनिद्विजादियत प्राणिगण।
तासन पीड़ित सर्व, त्राहि त्राहि उच्चारहीं।
वर बिरंचि सों पाय, भयो चंड दशमुण्ड अस।
अब उनहीं के सदाय, करत विरुद्धाचरण कृति ॥

त्यहि उत्पात ते स्वयं प्रजापति * रहहिंअहर्निशिचिन्तितचितअति॥
करि छलबल सो शठ कुविचारी * हरत सतत सुरनर सुकुमारी ॥
अहै तासुगति त्रिभुवन माहीं * हमसबकर बचाव कहुँनाहीं ॥
जहँहि जाहिं तहँ शठ लंकेशा * विविध कपट करिदेत कलेशा ॥
इमि नित नव उत्पात गोसाईं * हमसबसों कहँलगिसहिजाहीं ॥
हे शरणागत बिपति बिभंजन * धरणी धरा धेनु जन रंजन ॥
हम सब अगतिनके सबकाला * अहौपरमगति तुमहि कृपाला ॥
नाथ आशु दशमुखहि संहारी * टारहु सुरन आपदा भारी ॥
यहि प्रकार सुरगुरु मुखबैना * सुनि श्रीपति सरसीरुहनैना ॥
कमलासनदिशि बिहँसिनिहारा * पररहे निरव ठाढ़ कर्तारा ॥

दो०—तब लीलामय विश्वपति, विधिकहँलजितनिहारि।
रोहि गरुड़ करचक्र धृत, यहिबिधि कह्योपुकारि ॥
त्यागिशंकनिज२पुरहि, जाहु अमर समुदाय।
मैं सवंश दशकंध कहँ, करत ध्वंस द्रुत जाय ॥

असकहि चलन रमापति चहेऊ * तबविधिबारि जोरिकरकहेऊ ॥
प्रभु यहि रूप ते कोइ प्रकारा * होई नहिं दशमौलि सँहारा ॥
मैं बरदान दियों त्यहि काहीं * यहिकारणते त्रिभुवनमाहीं ॥
सुर किन्नर असुरादि के हाथा * है अवध्य दुर्मति दशमाथा ॥
केवल नर अरु शाखबिहारी * सकहिंसकुलत्यहिखलहिसँहारी
यह प्रभुकेरि रीति चलि आई * प्रति पालहु जन वचनसदाई ॥
जगतप्राण तुम हम तव छाया * जोइकृतिकरहिंसोतुम्हरिहिमाया
दास वचन प्रभु राखन हेतू * धारि मनुजतनु कृपानिकेतू ॥
जग कंटक दशमुखहि सँहारी * करहुनाथसुरमुनिन सुखारी ॥
रमारमण विभु जगत गोसाई * जानत दशमुख निधनउपाई ॥

दो०—परविरंचि के वचन सुनि, करुणाकर गुणऐन ।
हेरिसुरनदिशिबिहँसिइमि, कह रहस्यमय बैन ॥
देखहु विधि बरदेन महँ, होहिं सतत अगुवान ।
बिपति परे पुनि टेरहीं, रक्षहु श्री भगवान ॥

सो०—कहत बनत कछुनाहिं, काह करै भगवान अब ।
अघपूरति क्षितिमाहिं, धरब देह कति वार हम ॥
सुनिविरंचि हरिबानि, कछुकक्षभित ह्वै हृदयमधि ।
बहुरि जोरि युगपानि, लगे कहन गदगद गिरा ॥

सुनिय नाथ जो कछु हम करहीं * सोसबतव नियोग अनुसरहीं ॥
कहँ अस शक्ति अहै हममाहीं * जो उलंघि तवरचन सकाहीं ॥
यदि प्रभु सकुच धरत नरदेहू * तो निजसृष्टि कृत्य तुमलेहू ॥
विरचि अपर सुरइन्द्र विधाता * करहु विश्वपालन जनत्राता ॥
काह न विदित मोहिं यहनाथा * दास पुरातन तव दशमाथा ॥
तुम्हरिहि इच्छा सन तव द्वारी * लहिमुनि शापभयो निशिचारी
अबत्यहि निशिचर करखलताई * करियश्रवणप्रभुजगतगोसाई ॥

बलदर्पित शठ दिनकर काहीं * कीन्हेसिनियत द्वारिपदमाहीं ॥
जो ग्रहपति प्रचंड द्युतिधारी * ते अब करत द्वार रखवारी ॥
छत्रतासु शिर निशिपतिधरहीं * चामरव्यजन समीरणकरहीं ॥
माला गुहि नित देत सुरेशा * भरतबारित्यहि भवनजलेशा ॥
करहि भवन मार्जन क्षितितासू * रंधनकृति हित नियतहुताशू ॥

दो०—शमन केरकृतिश्रवणकरि, हँसि हौ रमा निवास ।
काटि लै आवहिं ते सदा, त्यहिअश्वनकर घास ॥
रविसुत शनि ज्यहिदृष्टिते, सृष्टिनष्ट ह्वै जाय ।
तिनहिंरजककृत्तिमहँनियत, किहिसिनिशाचरराय
त्यहि बालकन पढ़ावहूँ, महूँ सतत भगवान ।
गातुन गुरु तुम्बुर करहिं, त्यहिसन्मुखनितगान ॥

सो०—नाथ बरणि नहिं जाय, कुटिलाई त्यहि दुष्ट की ।
त्यहिकर अति दुखपाय, चरणशरणलियहमसबन॥
सुनि चतुरानन बैन, अभयदानदै बिहँसिपुनि ।
पूँछेहु राजिव नैन, क्यहिकुलमहँमैंअवतरहुँ ॥
प्रकटन हित श्रीवास, पूँछेहु जोइ सर्वज्ञ ह्वै ।
हेतु तासु कृतिवास, भक्तसुयशपरमुखसुनन ॥

नवतितम सर्ग ॥ ९० ॥

पुत्रेष्टि यज्ञ समाप्ति व रानित्रय का चरु भक्षण ॥

दो०—सुनिविरंचिश्रीरमणमुख, सुखद अभय प्रदबानि ।
कह्यो काह मोहिं पूँछहू, प्रकटन हित मुदखानि ॥
मैं प्रयोज्य तुम प्रयोजक, तव गति अपरम्पार ।
प्रथमहि ते यहि विषयमहँ, तुमकरि लीन्ह विचार ॥

प्रभु गतिशील समीर पछारी * अहै नादही करन बयारी ॥
पर यदि दास बड़ाइके हेतू * पूँछहु हमसों रमानिकेतू ॥
तौ करपुट यह विनय हमारी * अहै नाथ पदजलज मझारी ॥
रविकुल जात अवधअधिकारी * दशरथ नाम सर्व गुणधारी ॥
भक्त मौलिमणि कोविद ज्ञानी * सरलसुशीलसुकीरतिखानी ॥
उदयअस्त जहँलगि थितधरनी * भासत तासुबिशद बरकरनी ॥
त्रिदशनप्रियसुजननप्रतिपालक * धरा धेनु रक्षक खल घालक ॥
धर्म निरत जनुधर्म अधारा * प्रकटहुप्रभुतिन भवनमँझारा ॥
शुचिही श्री कीरति अनुहारी * तिन महीपकी हैं त्रयनारी ॥
तिनन गर्भ ते कृपा उदारा * निज पूरब विचार अनुसारा ॥
धारि सुचारु चारि आकारा * प्रकटहु हरहु भूरि महिभारा ॥
कमलासन मुख सुनि यह बानी * कहमुरारि मन महँमुदमानी ॥
मैं दशरथ कौशल्याकेरी * पुरिहौं मन अभिलाष घनेरी ॥
पूर्व जन्म महँ ते बहु बत्सर * किय तप तिन्हे दीनमैंयहवँर ॥

दो०—तनय रूपते तव भवन, प्रकटि हरब महिभार।
ते यहि क्षण मख करि रहे, पावन अवध मँझार ॥
पुत्ररूप ते मैं प्रकटि, तिन भूपति गृह माहिं।
सहित वंश विध्वंस करि, खल दशकंधर काहिं ॥

क्षितिमधि सहसयकादश बत्सर * करिजनसिखप्रदमनुजचरितवर
बहुरि करब निजपुरहि पयाना * परतुम सबसुरगणहुसुजाना ॥
शाखामृग भल्लुक तनुधारी * प्रकटहु क्षितिगिरिगुहनमँझारी
सुनि भगवंत वचन सुरवृंदा * विगतशोक उरलह्यो अनंदा ॥
पर इन्दिरा विकल ह्वै भारी * धरिहरिपद इमिवचनउचारी ॥
सुनियनाथ तुम तजि हमकाहीं * अवतरिहो महिमंडल माहीं ॥

(१) इसस्थानपर कृत्तिवास जीने अध्यात्मरामायण का अनुसरण किया है।

पर दासी सों जगत गोसाईं * तवबिछोहदुखकिमिसहिजाईं ॥
प्रियहिदुखितलखि शारँगपानी * चतुरानन प्रति कहइमिबानी ॥
इनके हित का होइ उपाई * सुनिबिधिबिहँसिकह्योपुनराई॥
परम प्रकृति की बिना सहाई * तुमते कोइकृतिसाधि न जाई ॥

दो०—बहुरि त्रिजग पावतकरनि, जगतजननिश्रीकाहिं ।
निज सेवक नारद वचन, काह सुरति है नाहिं ॥
ह्वै अयोनि संभवा प्रभु, महि हलकर्षण सोहिं ।
तीयरूप ते निधि सुता, प्रकट अवनि महँ होहिं ॥

सो०—जनक राजगृह माहिं, लाजित पालित होय सो ।
करि कृतार्थ तिनकाहिं, धराधाम कहँ प्रयतकरि ॥

जगत तियन सति धर्म दिखाई * जै हैं स्वपुर काहिं पुनराई ॥
यहिबिधिसुनिबिधिवचनसोहावन * साधु २ कह सुरगण पावन ॥
तब इन्दिरा सहित भगवाना * भये तहाँ ते अन्तर्द्धाना ॥
इत दशरथहि सहित अनुरागा * भा यक वर्ष करत शुभयागा ॥
तबमख थलमधि जगसुखकारी * भए प्रकट गोलोकविहारी ॥
त्यहिक्षण इमि मनप्राणजुड़ावन * भइनभगिरा जगतमनभावन ॥
सुराराति रावणहि सँहारन * भूमिभूरि भर वारण कारन ॥
हरन सुरन कर दुस्तर त्रासू * प्रकट होत भुवि रमानिवासू ॥
विभु कमनीय रूप छबि खानी * अरुश्रुतिमधुररुचिरनभबानी ॥
केवल त्यागि शृंगि ऋषि काहीं * देखी सुनी अपर कोउ नाहीं ॥
काशलेश प्रति इमि त्यहिकाला * ऋष्यशृंगि कह बचन रसाला ॥
धन्य २ नृप तुम जगमाहीं * भूरिभाग तुमसम कोउ नाहीं ॥

दो०—अस कहि अंधक दत्तफल, शुचि चरुमाहिंमिलाय ।
विष्णुमंत्र उच्चारिकै, दियहुति पुलकित काय ॥

(१) "नशक्तः परमेशोऽपि तांशक्तिं प्रकृतिं विना।" (ब्र. वै. पु. ग. खं.)

तव जन प्रण पूरण करण, रमारमण निखिलेश।
गुप्त भावते तुरत किय, त्यहि चरुमाहिं प्रवेश॥
सो०—भयो पाक ज्यहि काल, पायस उत्तम रूप सों।
तब यक पुरुष विशाल, निकस्यो पावक कुंडते॥

बसन्ततिलका छन्द॥

हेमाद्रिशृंग सम भासत तासु अंगा।
चण्डांशुन्याय द्युति भासत भ्रूबिभंगा॥
दुर्दन्ति सिंह सम शौर्य्य प्रशस्तभाला।
आजानुबाहु गलकम्बु हृदै विशाला॥
सोहै विभूषण मणीन प्रसून माला।
प्रज्वाल ज्योतिइव आस्व प्रभा कराला॥
आरक्तनेत्र अरुणाम्बर अंगधारी।
भेरीसमान घनघोर गिरा उचारी॥

दो०—कर धृतरजता वरणयुत, रुचिर चारु चरु भाल।
नृप दशरथ ढिग आयकै, कह यह बचन रसाल॥
पठयोनृप मोहिं प्रजापति, यह पायस लै जाय।
निजरानिनकहँयहिसमय, भोजन देहु कराय॥
सो०—करत यज्ञ ज्यहि हेत, यासो सफल सो होइहै।
भूपति भक्ति समेत, लै चरु किय शत २ प्रणति॥
तबसुर दूत पूत प्रभधारी * भयो लोप मखकुंड मँझारो॥
लहि चरु इमि प्रमुदितनरनाहू * जिमितापसतपफलकरि लाहू॥
सो चरु पात्र शीश पै धारी * गमने नृप शुभसमयविचारी॥
जाय तुरत अन्तःपुरमाहीं * करियुगभाग चारु चरुकाहीं॥
एक भाग कौशल्यहि दयऊ * अपर केकयिहि अर्पत भयऊ॥

उभयरानि प्रति पुनि सानन्दा * कह इमि वचन भानुकुलचंदा ॥
यह सुतप्रद देवान्नपुनीता * सेवनकरहु सुमुखि सहप्रीती ॥
इमि बुझाय भूपति पुनराई * मखशाला मधि गये सिधाई ॥
नृप चलिगये सुमित्रारानी * चरु ते ह्वै हताश दुखमानी ॥
अति शोचित इमि हृदयमँझारी * कहनलगी लोचनभरि वारी ॥

दो०—दुर्भागिनि सो भामिनी, जापै नहिं पतिनेह ।
त्यहितियकरसबभाँतिसों, बिफल धारिबो देह ॥
सजलनैनमुखमलिनत्यहि, लखि कौशल्या रानि ।
बोलि निकट उरलाय कै, सह सनेह कह बानि ॥

सो०—करहु शोच कछु नाहिं, यह निश्चय उर जानहू ।
भेद न हम तिहु माहिं, अहैं सगर्भाभगिनिवत ॥
मैं तुम कहँ अधभाग, देति अहौं निज अंशते ।
ताहि सहित अनुराग, सेइ होहु सुतवती तुम ॥

असकहि निजचरु करमहँलयऊ * करियुगभाग एकत्यहिदयऊ ॥
तब कौशल्या पदन मँझारी * गिरिइमि कह्योसुमित्रकुमारी ॥
देवि विनय यह तवपदमाहीं * दीजिययह आशिषहमकाहीं ॥
करहुँ कुमार प्रसव मैं जोई * होय दास तव सुतकर सोई ॥
यह अवलोकि कैकयीरानी * प्रखर बुद्धिशालिनीसयानी ॥
कह्यो सुमित्रासन सहनेहू * अर्द्धभाग हमहूँसन लेहू ॥
पर यह सत्य कहहु हम पाहीं * तुम अपने द्वितीय सुतकाहीं ॥
मम कुमार कर चिर सहचारी * किह्यो देह छाया अनुहारी ॥

दो०—कह्यो सुमित्रा यदि लहौं, अपर तनय मैं देवि ।
तेहि करिहौं सन्देह बिनु, तवसुतकर पद सेवि ॥
बहुरि विशुचि ह्वै तीनिहू, नृप भामिनि सानन्द ।
कियसेवनपरमान्न लखि, कियजयध्वनिसुरबृन्द ॥

सो०—उत ऋत्त्विज समुदाय, रविकुलमणि अवधेशसों ।
पूर्णाहुती दिवाय, कीन्ह समापन यज्ञकृति ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

इमि दानविन परमान याचक गणन नरनायक दये ।
जासन सकल जन धन रतन भूषन वसनसों सुखिभये ॥
जेते निमंत्रित विप्र ऋषिमुनि योगि नृपति महाजना ।
ते सब अवधपतिसों विदा लहि गमनकिय प्रमुदितमना ॥
ऋषि शृंगिहू कछुकाल रहिपुनि लहि विदा नरनाथते ।
चढ़ि सतिय यान पयान किय महिपाल भाग सराहते ॥
इमिभे अवधपति महायति कृतकृत्य सकल प्रकारते ।
कृतिवास दास कि दरश आशहु आशु पूरु रमापते ॥

एकनवतितम सर्ग ॥९१॥

वानरगणोत्पत्ति ॥

दो०—जब दशरथ गृह अवतरन, किय स्वीकार रमेश ।
अरु कपि रूप ते सुरगणन, प्रकटन दीन निदेश ॥
तब त्रिदशन प्रति प्रजापति, कहबुझाय यहिभाँति ।
प्रकटत रावण हतन हित, सुराराति संघाति ॥
सो०—तिन प्रभु समर सहाय, हेतु महाबल विपुलतनु ।
सृजहु कीश समुदाय, सुरि किन्नरि अप्सरन ते ॥
मैं यक ऋक्ष प्रधान, जाम्बवान बर बुद्धिधर ।
अपरिसीम बलवान, पूरुबहा उत्पन्न किय ॥
मोहिं जम्हाइ एकदिन अयऊ ❋ तब सो प्रकट ममुख ते भयऊ ॥

लंक समरमधि सो बुधिखानी * होई यक प्रधानभट मानी ॥
सुनिविधिवचनप्रफुल्लित गाता * सिद्ध साध्य विद्याधर व्राता ॥
गुह्यक गातु नाग सुर नाना * कपिनसृष्टि कियबिनु परिमान ॥
इन्द्रते बानरेन्द्र बुधिशाली * प्रकटत भए अतुलबल बाली ॥
मारतण्ड औरसते कपिवर * भे सुग्रीव प्रचंड तेजधर ॥
भए बृहस्पतिसों कपि तारक * विकटरूप रिपुदर्प विदारक ॥
अनल ते नील नील गिरि नाई * विज्ञ जो कुहक कला चतुराई ॥
वरुण देव सों शैलशरीरा * प्रकटे हेम कूट रण धीरा ॥
त्वष्टा तेज जात जगख्याता * भे नल सकल शिल्पकृतिज्ञाता ॥

दो०–दोउ अशिवनी कुमारते, उपजे द्विविद मयन्द ।
भये शरभ पर्जन्य सों, ज्यहि सन्तत प्रियद्वन्द्व ॥
धन्वन्तरि ते सुषेण भे, भिषक निदान निधान ।
कपिगवाक्ष गययम तनय, जिनरण रिपुननत्रान ॥

सो०–धनद सों बिपुलाकार, भये गन्ध मादन सुभट ।
शिवते बली अपार, कपि केहरि केसरी भे ॥

रोला छन्द ॥

वीर वानराधीश बालि सों अंगद भयऊ ।
हिमगिरि इव तनु गौर प्रभा रवि कर सम छयऊ ॥
अति प्रचण्ड भुजदण्ड दण्डधर दण्ड कि नाई ।
स्वपितु सरिस गंभीर धीर वलवीर सुराई ॥
भट देवेन्द्र महेन्द्र नाम रणकला निधाना ।
शास्त्र निधान सुषेण वैद्य के युग सन्ताना ॥
भए चन्द्र सों प्रकट वीर वर कपिदधिगाला ।
अंग तुंग तरु ताल सरिस विक्रमी विशाला ॥

मरुतदेवते प्रकट विकट उद्भट हनुमाना।
तरुण अरुण सम वरण उच्चतनु मेरुसमाना॥
अति शुभांग वज्रांग सांगबलबीर प्रधाना।
गति मुहूर्त्त मन मरुतजयी श्रुति शास्त्र निधाना॥
ध्वनि वारिद रव भेदि थाह बिनु तनु बलताई।
जो ब्रह्माण्डहि फेंकि लोकि सक कंदुक नाई॥
भे देवर्षि मरीचि सोहिं द्वै प्लवगप्रधाना।
नाम सुतिनके अर्चिमाल्य अरु अर्चिष्माना॥
यहि प्रकार गज गवय[1] दरीमुख भट उल्कामुख।
धूम्रसुहोत्र अनंग ऋषभशतवली दधीमुख॥
इन्द्रजानु कपि बल्हि कुमुद संपाति शरारी।
रंभ रुमण शरगुल्म पनस दुर्मुख तरुचारी॥
विनतआदि दशबदन निधन हितअगणितबानर।
प्रकटाये सुरनाग यक्ष विद्याधर किन्नर॥
जस बल बुधि गुणरूप रह्यो ज्यहि देव मँझारा।
तदनुरूप गुणधारि भयो त्यहि केर कुमारा॥
इमि इलेक कपिभालु प्रकटभे भूतल माहीं।
जिनन गणन करि सकहिं शेष गणराजहु नाहीं॥
गिरि शृंगोपमकाय कामचारी सबबीरा।
ज्यहि क्षण जस रुचि होयसकैं तसधारि शरीरा॥
सहनशील उत्साहि श्रमी संगरप्रिय जिन के।
अस्त्रप्रधान प्रकांड विटप गिरिखंड सबन के॥
जिमि राखहिं ते नखनदशन दंशन निपुणाई।
त्यहि प्रकार सबभांति सकहिं आयुधहु चलाई॥

१–गय और गवय इनसे प्रथक् हैं—देखो महाभारत बनपर्व ८२ अध्याय।

तिनके भीम निनाद सोहिं विचलहिं गिरिमाला।
लंफझम्प सों भग्नहोहिं तरुराजि विशाला॥
क्रीड़ाहित चरि गगनगैल महँ कीश प्रचंडा।
बारिद पटलहि करहिं कौतुकहि खंड बिखंडा॥
कोटि कोटि इमि विकट प्रकटि मर्कट बलरासी।
भये सघन गिरिगुहा गहन बन आदि निवासी॥
दिन प्रतिदिन अधिकात जात बानर समुदाई।
यूथनमाहिं विभक्त भये तब हिय हुलसाई॥
बहुतक इन्द्र कुमारबालिकर आश्रय लीना।
बहुतक भए दिनेश तनय सुग्रीव अधीना॥
दो०—कोइ नल कोई नील के, दल महँ मिले प्लवंग।
कोई द्विविद मयन्द के, कोइ शरभ के संग॥
बहुतक रणकुशली बली, बीर बलीमुख आय।
कपिकुंजर हनुमान दल, माहिं मिले हरषाय॥
सो०—ज्यहिबलबरणिनजाय, बालिकीशकुलशिरोमणि।
पालत प्लवग निकाय, थापि राज्य एकाधिपति॥
असप्रतापि नहिंकोय, जस निसिचर दशमुखभयो।
कृत्तिवास किय जोय, त्रिदशनवानर हरि हनर॥

द्विनवाततम सर्ग॥ ९२॥

देवी कौशल्या का स्वप्नमें भगवद्दर्शन॥

दो०—जगत जनन प्रमुदित करन, ताप निवारणहार।
वृष्टि वारिधारण करत, रविकर जौन प्रकार॥

त्यहिविधिअवधाधिपतिकी, सुमुखि तीनिहूनारि ।
भखि चरु धारयो गर्भशुचि, जगमुद मंगलकारि ॥
जिमि मृदु मंजुल लता के, झरे पुराने पात ।
नव पल्लव अंकुरित ह्वै, अति ललाम सरसात ॥
तिमि तीनहु नृपरमणिकर, तनु जरठता विहाय ।
छाई नवलाई नवल, कहि न लोनाई जाय ॥
उदय भये श्री कान्त के, तिनतनु कान्ति निहारि ।
होहिं प्रभाहत रजनिपति, अरुद्युति खानितमारि ॥

षट्पद छन्द ॥

तिन तनुजन पद परसि होइ जो वसुमति पावनि ।
सकल अशन ते भयो तासु मृत्तिका मनभावनि ॥
दुग्धफेन इव मृदुल सेजहू ते अति अधिकाई ।
सोइ भूमिमधि शयन मानहीं अति सुखदाई ॥
त्रयवर्गरूपिणी रानित्रय लिय आश्रय चतुर्व्यूहकर ।
मानहुँत्रिवेणी लहि चतुर्गति अहैं विराजत अवनिपर ॥

दो०—यथासमय महँ मुदितचित, कोशलपति मतिमान ।
क्रिय रानिन करपुंसवन, संस्कार सविधान ॥
रुचिर अशन भूषणवसन, दीन्ह याचकन दान ।
थलन थलन पुरिमहँभये, मनोहारि नृतगान ॥

सो०—स्वप्न अवस्था माहिं, तिहुँ रानी इमि देखहीं ।
घेरिसतत तिनकाहिं, भ्रमत सुदर्शन चक्र बर ॥
ऋषि मुनिवर समुदाय, चतुर्भुजी हरि पारषद ।
वृन्द वृन्द तहँ आय, जोरि पाणि स्तुति करिरहे ॥

स्वयंपयोधि सुता तहँ आई * चामरव्यजन करहिं हुलसाई ॥

१—यहकथा रघुवंशसे मिलता है (देखो र. वं. १० सर्ग)

स्वप्नमाहिं यक दिन भव तारण * रमारमण जनतपन निवारण ॥
दीन्ह दरश कौशल्यहि आई * अनुपमरूप वरणि नहिं जाई ॥
नवनीलोत्पल दल तनु श्यामा * परिधृत पीतवसन अभिरामा ॥
जगसुख कारि चारुभुजचारी * गदा चक्रदर अम्बुज धारी ॥
गोल कपोल लोल श्रुति कुंडल * कोटिचन्द्रछबिजितमुखमण्डल॥
भाल विशाल केश घुँघुवारे * शीश रत्नमय मुकुट सवांरे ॥
कम्बुकण्ठ कौस्तुभ मणिमाला * उर कृपालवन माल बिशाला ॥
अंग अंग मणि भूषणभासत * कायकांतिदशदिशाविकासत ॥

दो०—मन्द मधुर मुसकाइ इमि, कह्यो रानि प्रति बानि ।
मातु पूर्वमहँ मोहिं मुदित, किह्यो उग्रतप ठानि ॥
त्यहि निमित्त तव उदर ते, जन्म लीन मैं आय ।
अस्तनपान कराय मोहिं, पालहु हिय हुलसाय ॥

सो०—रानी स्वप्न मँझारि, विभुमाया मैं मोहिं कै ।
प्रभुहि क्रोड़ महँ धारि, पुनि२ मुखचुंबनकियो ॥

कछु क्षण महँ भे हरि अंतर्हित * जगींरानिपरमुदविमुग्धचित ॥
जिमि यकथल ते टरे कस्तूरी * त्यहि सुगंध द्रुत होत न दूरी ॥
तिमिगत स्वप्नहु कछु क्षण रानी * रहिं सोइ ब्रह्मानँद रससानी ॥
पुनिउठि पुलकित पतिढिग जाई * कहनलगीं निशिस्वप्न बुझाई ॥
करुणाकर प्रभु जगत गोसाइँ * टेरेहु आज मोहिं कहिमाई ॥
सुनि नरनाथ रानिमुख बानी * उमँग हर्ष तनुदशा भुलानी ॥
अन्धक वचन कह्यो रह जोई * त्यहि क्षण प्रकट भूपउर सोई ॥
साथहि पूर्व जन्म सुधि सारी * भई जागरित हृदय मँझारी ॥
तब इमिभे तन्मय नर नाहू * मानहु कियतुरीयगति लाहू ॥
स्वेद कम्प रोमाञ्च शरीरा * मन प्रफुल्ल ढुरि नैनन नीरा ॥

सो०-कछु क्षण कोशलराय, मुद प्रमुग्ध यहि विधिरहे ।
गये विसरि पुनराय, हरिमाया ते ज्ञान यह ॥
दो०-जानि पूर्णगर्भा तियन, भूपति परम उदार ।
लगे करन आनन्द युत, विविध मंगला चार ॥
नृपतिअशनधन मणि पटनाना * नित प्रति देत याचकनदाना ॥
गर्भवास नृप भवन मँझारी * जबते किय इन्दिरा विहारी ॥
तबते नितनव मोद प्रसूती * भई शताधिक अवध विभूती ॥
प्रफुलितललित कमलअनुहारी * प्रमुदितसकल अवधनरनारी ॥
इत सानन्द वृन्दारक झारी * प्रभुकर प्रकटन समयनिहारी ॥
तिहुँरानिन अस्तुति कर गाना * निज२ काहिं धन्य सबमाना ॥
दो०-कृत्तिवास कह लेशहू, यहि महँ अचरज नाहिं ।
कोटि २ ब्रह्माण्डचय, ज्यहि प्रभुके तनु माहिं ॥
त्यहि अनन्त भगवन्त कहँ, धरयो उदर महँजोय ।
त्यहि विभूति तुलनाकहिय, क्यहिप्रकारते होय ॥

त्रिनवतितम सर्ग ॥ ९३ ॥

श्रीराम जन्म ॥

दो०-मधुप मोदप्रद समागत, बहुरि मधुर मधुमास ।
ऋतु वसंत मुदअंत बिन, दिगदिगंत महँ भास ॥
श्रीपति अभ्यर्थना हित, मानहुँ जोरि समाज ।
जग जनमनहारिनिसभा, माहिं लसतऋतुराज ॥

नरिन्द छन्द ॥

प्रफुलित ललित कुसुम द्रुम पूरित वन उपबन मनभावन ।
तासु सभासद अरु सुमनायुध सचिव प्रधान सोहावन ॥

मलयमंद मारुत ऋतुपति के व्यजन सुचामरकारी ।
मदप्रमत्त कोकिलकुल तिनके गायक दल अनुहारी ॥
वृन्द २ गुंजत मलिंद लखि मनहुँ बन्दि समुदाई ।
गाय पंचस्वर ते प्रभु अस्तुति रहे हिय हुलसाई ॥
कलरव करत मयूर मयूरी मारि २ शुकसारी ।
मानहुँ कथत प्रयत भगवत प्रभुताइ दुरित अपहारी ॥
जगजन जीय जुड़ावन सुरभित मरुत बहत इमिधीरा ।
द्वार २ शुभ समाचार जनु करत प्रचार समीरा ॥
पांति २ तरु बिबिध भाँति के पात पुरातन झारे ।
नव पल्लवित होय इमि शोभित नवल वसनजनुधारे ॥
कृत्तिवास कर त्रास त्यागि कै सह हुलास मनमानी ।
पंचबान बिनु आनि बिहरिरह सुमन शरासन तानी ॥
ज्वलितज्वलनवत प्रफुलितकिंशुकसुमछादितछितिसारी ।
इमि शोभित जनु पहिरि अरुणपट लसत नवोढ़ा नारी ॥
ललित ललाम काम मनभावन पुर आराम मँझारा ।
बिकसि हुलसि रहे बिहँसि मनोहर सुमनअनेक प्रकारा ॥
शोक ओघ नाशक अशोक सुम सरस शिरस सुखकारी ।
चित्त बिकलकर वकुल माधवी माधव प्रिय मनहारी ॥
कुन्द प्रसून विशोभित सुन्दर घन उपबन सुमुदाई ।
रहे विभासि हासमयि रुपसि सखिसमूह की नाई ॥
सुमन भारनत हरितपत्रमय तरु सहकार सुहाई ।
सुवरण खचित सुचारु मनोहर मर्कत राशि कि नाई ॥
फटिक मणिन इव चमचमाहिं यत बिमल सरोवर वारी ।
सुमुखिउन्मिलितदृगवत विकसित उत्पल तिनन्हमँझारी ॥
सुवरण रेणु विन्दुवर मंडित नीलकांति मणि नाई ।

लोचन सुखद कंज पै गुंजत मंज मधुप समुदाई ॥
कोक मराल माल कारण्डव आदिक सलिल विहंगा ।
झुंड २ करि रहे केलि सर सरितन महँ सउमंगा ॥
इमि जड़ जंगमजीव जिते जग जल थल गगन विहारी ।
सकल मुदितमन रमारमण कररहे आगमन निहारी ॥
दैव मनाय अवधपुर जन कहँ होइ कवन अस वारा ।
ज्यहि दिन नृप भामिनिन गोद सों ढुरी मोद की धारा ॥
भुवन अभिलषित चैत्रशुक्ल शुचि रुचिर नवमितिथि आई ।
मेषराशिगत भानु पुनर्वसु शुभ नक्षत्र सोहाई ॥
कर्कलग्न मेषादि राशिके उच्चपंचग्रह[1] भयऊ ।
स्वर्ग म्रत्य पाताल दशहु दिशि मधि अति आनँदछयऊ ॥
लग्यो प्रवाहित होन नदिन मधि पावन निर्मल नीरा ।
सुख प्रद मधुर मंद मन भावन सुरभित बहत समीरा ॥
विकसित कुसुम निचय के मुखसों छुरित रुचिरमधुधारा ।
सह कलोल नर्तत तरंगचय सुधापयोधि मँझारा ॥
प्रफुलित चित सुर नर मुनि किन्नर सिद्ध साध्यसमुदाई ।
अति सुप्रशांत भावसों शुचि मुख हुतभुक शिखा सोहाई ॥
रह्यो छाय मंगलानन्द इमि विश्वमाहँ चहुँ ओरा ।
केवल देवद्वेषि निशिचर उर प्रकट भयो भय घोरा ॥
विश्वंभर कर जन्म समय लखि करि सुवेश सुर त्राता ।
चढ़ि २ दिव्ययान नभ थल मधि भ्राजे हर्षित गाता ॥
सुमुखि चारु हासिनी अप्सरा नर्तहिं हिय हुलसाई ।
गावहिं गीत सप्रीत गंधरब किन्नर बाद्य बजाई ॥

१-पंचग्रह यथः—रवि भौम गुरु शुक्र तथा शनि इनके उच्चस्थान मेष मकर कर्क मीन और तुला यह क्रमशः हैं ।

जिमि अनन्त जलनिधि ह्वै परिणित वारिद मालामाहीं ।
वृष्टिरूपते लाभ होत है जग प्राणीगण काहीं ॥
महाकाश जिमि शब्द रूप ह्वै धर्म ज्ञान शिख कारण ।
प्रकट होत संसार माहिं शुचि श्रुतिस्वरूप करि धारण ॥
तिमि अनादि अविचिन्त्यअतनु विभुशुभगुण पुंजनिकेतू ।
माया कल्पित नर शरीर धरि जग दुख वारण हेतू ॥
शुभ क्षण महँ मनहरण सोहावन पावन अवध मँझारा ।
महरानी कौशिला गर्भ सों लीन्ह ललित अवतारा ॥

दो०—खलन दलन पालन सुजन, सतसिख करन प्रचार ।
भुवन रमन प्रभु प्रकट भे, धारि मनुज आकार ॥
प्रसव व्यथा नहिं रक्त कर, चिन्ह न लेश लखान ।
कोटि चन्द्र जित द्युति लसित, प्रकटे विभुभगवान ॥
जासु अल्प कल्पना ते, कल्पित यह संसार ।
तासु रूप किमि आवही, कवि कल्पना मँझार ॥
ब्रह्मज्योति मयदेह द्युति, नव दूर्वादलश्याम ।
मनहुँ पूर्वगिरि पै उदित, श्याम सुधांशु ललाम ॥

सुठि तनु नवनीताधिक कोमल * अरुणकमलइव पाणिपादतल ॥
करि कर ऊरु चारु मनभावन * लजत हेरि केहरि कटिपावन ॥
स्वच्छ वक्ष श्रीवत्स ज्योतिमय * रमा केलिथल दीन दयालय ॥
मन रंजन आजानु बाहुवर * पालनसुजन खलन खलताहर॥
सुधापयोनिधि जात कम्बुजित * कण्ठवसतजहँअभयगिरानित ॥
चिबुकपुलिनजनुसुधाउदधिकर * बिम्ब दम्भहर अधर मनोहर ॥
नीलोत्पल दलवत युग लोचन * नयनसैन भवभीर विमोचन ॥
कुंचितकच अलिगणमद हारण * वदनभुवनशोभा छबिकारण ॥

दो०—यावतीय लावण्यकर, मूलरूप हैं जोय ।

तुलना त्यहि सौन्दर्य की, कौन वस्तु सों होय ॥
सुरसरि पूजन जौनविधि, सुरसरिही के बारि ।
तिमि प्रभुकी समता अहै, प्रभुही के अनुहारी ॥
सो०—ज्ञानिन दृष्टि मँझार, श्रीपति के अवतरतही ।
धरणि केर यत भार, भयो विगत प्रभुपद परसि ॥
प्रयत सूतिका धाम, प्रभुप्रभ ते भासित भयो ।
यततियरहिंत्यहिठाम, थकितठाढ़िनिजकृतिबिसरि॥
प्रकृत मनुज शिशुवत भगवाना * कहाँ कहाँ करि रोदन ठाना ॥
सुनिशिशुरुदनश्रवणसुखकारी * भइं सचेत दारिका सारी ॥
धायप्रधान धातृ परबीना * प्रभुहि उठाय गोद महँ लीना ॥
सुर दुर्लभ विभु छविमन हारी * रहीं हेरि दृग निमिष निवारी ॥
अहह धातृ कर भाग्य बड़ाई * कौशल्यहुते अधिक लखाई ॥
जासु क्रोड़ जननिहु ते अगारी * राजे शिव अज हृदय विहारी ॥
पर यहिमहँ अचरज नहिं कोई * साधु संग फल काह न होई ॥
जो कियरामजननि सेवकाई * त्यहिनअधिक असभाग्यबड़ाई ॥
दो०—मलय प्रभंजन परसतहि, मनप्रसन्न जिमि होत ।
तिमि मुकुन्द के प्रकटतहि, बड़जग आनँदस्रोत ॥

सुरेन्द्रवज्रा छन्द ॥

त्रैलोक मैं हर्ष अमोघ छायो मच्यो महा उत्सवस्वर्गधामा ।
सानन्द वृन्दारक वृन्द वृन्दै लसै नभैवेश किये ललामा ॥
पीनस्तनी चन्द्रनिभाननासीजिती शचीआदिकदेवनारी ।
सामोद सारी का हेम थारी उतारहीं गोघृत दीप बारी ॥
गन्धर्वदिव्याम्वर चारुधारी करैं सबैगान प्रमोद कारी ।
विद्याधरी किन्नरि आदि नर्त बजैं तुरी भेरि मृदंगभारी ॥
प्रेमाश्रुढारी सुर ब्रातभारी करैं प्रभू अस्तुति गायगाई ।

गीर्वाण केरी सुमवृष्टि सोहीं नभस्थलाच्छन्न महा सोहाई ॥
स्वस्तैन तार स्वर सों उचारैं महर्षि देवर्षि यशोनिधाना ।
जैजै ध्वनी मागध बन्दि भाषैं करैं महीदेव श्रुतीनगाना ॥
भानूदये कंज निशाट श्रेणी दशालखाई जिमिलोकमाहीं ।
आनन्द रंगेतिमि संतसाधू दुखी अघीक्रूर खलीलखाहीं ॥
दो०—कृत्तिवास मुदमत्त है, वर्णत यह सुचरित्र ।
वदत आजु ममलेखनी, रसना भई पवित्र ॥

चतुर्नवतितम सर्ग ॥ ९४ ॥

देवगणकृत रामस्तुति, महाराज दशरथकारामदर्शन लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न का जन्म ॥

सुगीती छन्द ॥

सुखमा सदन त्रिभुवन विमोहन भुवन पति श्रीरमण कर ।
लखि बालरूप अनूप मोहित होय यावत सुर निकर ॥
करजोरिकरि शत २ प्रणतिअतिथकितचितप्रमुदितवदन ।
यहि भांति ते नुति भक्तिसंयुत करत गद्गद गिरा सन ॥
निज भक्त मन सासनहि भूषित करनहितनिखिलेशहरि ।
प्रकटावहीं निज काहिं इमि कमनीय कल्पित काय धरि ॥
नतु मम वचन गोतीत तव सत्ताहि जड़मति जीवगन ।
असनहिं समर्थ यथार्थ भावतेकरि सकहिं कोइ विधिमनन ॥
तुम जीवगण ते भिन्न सन्तत हेतु त्यहि इमि श्रुति वदत ।
तुम नित्य मुक्त निरीह अरु भवबद्ध जग महँ जीव यत ॥
अविकार शुद्ध स्वरूप तुम सविकार यावत प्राणिगन ।
परमातमा तुम जीव जड़ सर्वज्ञ तुम अल्पज्ञ जन ॥

तुम सदय हिरदय नय निलय हौ गुणत्रय के अधीश्वर।
त्यहि गुणत्रय के हैं अधीन जितेक तनुधारी निकर॥
तुम पराशक्ती पुरुष प्रकृति ते भिन्न अस प्रभु सांख्यमत।
नवशंक्ति संयुत ब्रह्म तुम कहँ पञ्चरात्र अहै बदत॥
स्वाधीन अविनश्वर महेश्वर तुम्हैं पातंजलि कथक।
पर अज्ञजन की दृष्टि ते यह हैं जटिल सिद्धांत यत॥
प्रभु की पुनीत विभूति काहिं दुरायरख यवनिकावत।
पुनि धर्म नाम ते करत कीर्तन तुम्हैं मीमांसा सतत॥
पै प्रकट यक समभाव ते सबके निकर ज्यहि त्रिधिगगन।
तिमि ज्ञानि अज्ञानीन प्रति तुम्हरी दया यक भाव सन॥
यहि हेतु ते समभावसो तुम ज्ञानि अज्ञानीन कहँ।
निज दरशदेन निमित्त प्रकटहु धारि तनुयहि अवनि महँ॥
जोइयहिसमय रहिराजि सन्मुखप्रभुकि मूरति मनरुचित।
सो पंचभूत मयीन हैं है सत्त्वगुण सम्पन्न नित॥
एकहि अनल वहु काष्ठते ज्यहि भाँतिबहु अव यव धरत।
तिमि एकतुम बहु कृतिनहित बहुरूप जानि वरौ सतत॥
इन्द्रादि देवप्रधान प्रति पादित भये श्रुति माहिं यत।
ते सकल तव ब्रह्माण्ड व्यापी रूप के हैं अंशवत॥
घट केर ज्यहि बिधि होत है मृत्तिका सों उत्पत्तिलय।
यहि हेतु ते घट मृत्तिका सों भिन्न वस्तु न कोइ समय॥
तिमि सृष्टिलय इन्द्रादि त्रिदशन होत तुमहिं ते भुवनपति।
यहि हेतु ते करुणायतन हौ तुमहि तिन की परम गति॥
जिमि काष्ठ इष्टक उपल आदिक पै धरैं पद भूमिचर।

(१) प्रभा माया जया सूक्ष्मा विशुद्धा नन्दिनी पुनः। सुप्रभा विजया सर्व सिद्धिदानवशक्तयः॥ (२) वैष्णव शास्त्र भेद।

है मूल केवल मेदिनी प्रभु तिन सकल अधार कर ॥
त्यहि भांति पावन वेदमधि व्यवहृत भये हैं शब्द यत ।
सो सकल करूणा निधि प्रभुहि के अहैंप्रति पादक सतत ॥
परि सीम तनु धरि नाथ तुमकेवलजगहि के हित निमित ।
विस्तारहू शिख प्रद मनोहर विविध विध लीला ललित ॥
नतु बीजमय प्रभु होत हैं ज्यहि भांत सोहिं विशाल द्रुम ।
त्यहि भांत सारे विश्वमधि हौ व्याप्त यक सम नाथ तुम ॥
चाहै कोई गनि लेय शून्य के हिमकण न रविकिरण कण ।
पर करि न सकही कोइ गणना तव गुणन कमला रमण ॥
जिमि कोइ गणनमधि नाहिं पावक के निकट पावक लपट ।
तिमि हम सकल सुर बृन्द कोइ पदार्थ नहिं प्रभुके निकट ॥
हम सकल नाथे बली वर्द समान प्रभु के अहैं वश ।
तस कर्म हमसन होत संतत नाथ कर प्रेरणा जस ॥
हम सबन की बिनय ते महिभार उद्धारण निमित ।
अघहारिणा शुभ कारिणी निजकीर्ति चय विस्तारहित ॥
यहि रूपते क्षितिमाहिं स्वेच्छा वशभयो अब अवतरण ।
तब यह चरित सुललित जगत महँ करहिंजेकीर्तनश्रवण ॥
ते देव दुर्लभ मनोमत फल लाहु करि यहि जगत मधि ।
अज्ञान ते ह्वै पार तरिहैं बिना श्रम भव पयोनिधि ॥

दो०-इमि नुतिकरिपुनि देवगण, कहइमि वचन ललाम ।
अब प्रभु के गुणकथनमहँ, भयोजोवाक्यविराम ॥
सो केवल श्रमसो भयो, यह कदापि नहिं नाथ ।
कै हम सब कहि सेवकिय, प्रभुकर यतगुण गाथ ॥

अस कहि ब्रह्मादिक सुर ब्राता * करिशत२प्रभुकहँ प्रणिपाता ॥
सफल मनोरथ निजहि निहारी * इमिनिमग्नमुदउदधिमँझारी ॥

दाव दग्ध जिमि करि समुदाई ❋ शीतल सलिल पाय हरषाई ॥
इतहि सुधावती ज्यहिनामा ❋ कौशल्या की दासि ललमा ॥
बदत भूप जय बारम्बारा ❋ आइ अवधपति सभा मँझारा ॥
अतिप्रसन्नमुखलखित्यहिकाहीं ❋ बैठे यत जन नृप ढिग माहीं ॥
ते शुभसुनन आश उर धारी ❋ त्यहिदिशिअनिमिषरहेनिहारी॥
दासिहि निकट बोलि नरनाहू ❋ समाचार पूँछे सउछाहू ॥

दो०—कह्यो दासि मम रानिके, भा यक कुँअर अनूप ।
जासु रूप छबि माधुरी, कहत बनत नहिं भूप ॥
चलिय आशु रनिवास कहँ, दासि संग यहि काल ।
हेरि सुवन मुख नयन मन, करहु सफल महिपाल ॥
जिमि मातही चकोर शशि, स्रवित सुधा के लाहु ।
दासि वचन सुनि तिमि भये, मुदप्रमत्त नरनाहु ॥

सो०—फुरत न मुख ते बैन, बाढ़ी तनु पुलकावली ।
छहर नेह जल नैन, सो लखिबिहँसति दासिकह ॥
श्रवण करत ज्यहि भूप, रह्यो न निज महँ हर्षवश ।
सो छबि राशि अनूप, लखि तव होई दशा कस ॥

जासन आज तिहूँ पुर माहीं ❋ हर्ष बिवशनिज महँकोउ नाहीं ॥
तो अस भे मुदवश नृप जोई ❋ है अचरज यहि माहँ न कोई ॥
करि थिर हृदय महीप बहोरी ❋ गुरुवशिष्ठ प्रतिकह करजोरी ॥
तव पदकृपा सोहिं मुनि नाहू ❋ कीन्ह्यो आजु परम निधि लाहू ॥
विनय बहोरि मोरि यहि काला ❋ शुभ मुहूर्त यहि होय कृपाला ॥
तौ प्रसूतिगृह चलिय गोसांई ❋ हमहुँ नाथके संग सिधाई ॥
जावन सुखसुत बदन निहारी ❋ होहुँ सुखी मन ताप निवारी ॥
सुनि नृप वचन प्रेमरस पागे ❋ इमिहियमाहिं कहनमुनिलागे ॥
निज सुत तत्व न जानत भूपा ❋ है यह प्रेम महत्त्व अनूपा ॥

रहतशुभाशुभज्यहिअधीननित * पूँछतशुभकरित्यहिदर्शनहित ॥

सो०–अत्रमोहुँ नृपसँगजाय, श्रुतिअतीत अविचिंत्यकर ।
लहि दर्शनसुखदाय, करहुँ सफल निजजपतपहि ॥
इमि उर चिन्तिमुनीश, यहि विधि कह्यो महीपसों ।
शुभ मुहूर्त अविनीश, है न आन यहि समयसम ॥

दो०–अस कहि अपर महीसुरन, सहित नृपहि लै साथ ।
सुभग सूतिका भवन कहँ, कीन्ह गमन मुनिनाथ ॥
मुदप्रमत्त नृप गमन गति, अटपट सुधि न सरीर ।
छत्र शिर न पद पादुका, प्रेम ते ढुर दृग नीर ॥

चारु सूतिका द्वार समीपा * पहुँचे जस तस अवधमहीपा ॥
तिन्है बिलोकि धातृ समुदाई * लिय गृह द्वार कपाट चढ़ाई ॥
सो लखि इमि महीप अकुलाने * जिमिचकोरशशिजलदछिपाने॥
तब अधीर चित काकुति ठानी * कहनलगे इमि नृप यश खानी ॥
तृषातेविकल तृषित लहि नीरा * पीवत बिघन किरखिसक धीरा ॥
याते मम जीवन निधि काहीं * आशु दिखाहु निठुर बनु नाहीं ॥
कहकविनृप जससुततुम लहेऊ * तासु दरश जग सुलभ न अहेऊ ॥
नृप मुख पुनि२ कातर बानी * सुनिइमिकह यकधात्रिसयानी ॥
हेरन हित सुत वदन सुचारु * अस अधीर है रहे भुवारू ॥
तौ एतकदिनक्यहिबिधिरहेऊ * यह सुनि बहुरि महीपति कहेऊ ॥
जग महँ जन्म दरिद्रहि जोई * लाह चारु चिन्तामणि होई ॥
तौ बिनुधरे हीय पै ताही * निमिषहुभरिरहि काह सकाही ॥

दो०–अब बिलंब सहि जात नहिं, तुम सब सहित कृपाय ।
करहु कृतारथ मोंहिं द्रुत, सुत मुख चंद्र दिखाय ॥
कहा धात्रि धनदहु ते, तुम धनशालि नृपाल ।
देन चहौ कछु हम सबन, निवछावर यहि काल ॥

सो०—पर शोचति यह भूप, हम जो वस्तु दिखाइहैं ।
कहँ ते त्यहि अनुरूप, पुरस्कार तुम देइहौ ॥
यह सुनि मुनि वशिष्ठ तपखानी * कहनृप प्रति बिहँसत इमिबानी ॥
सुनिय महीप दान कृतिद्वारा * तोषेहु यत याचक संसारा ॥
पर यहि समय माहिं नरनाथा * परयो विषम याचकनके हाथा ॥
इन सन उऋण होन तुम काहीं * सुलभ लखात अहै नृप नाहीं ॥
तब धात्री प्रति कह नरनाहू * सोइ देव जोइ तव चित चाहू ॥
यहसुनि मुनिपुनि कह मुसकाई * जोइनिधिधात्रितुम्हैदिखराई ॥
तामधि अस गुण पुनि तुमपाहीं * याचन करन प्रयोजन नाहीं ॥
सुतदर्शन हित विकल भुआला * सोलखिमुख्य धात्रिततकाला ॥
जगनिधिशिशुहिक्रोड़मधिधारी * बैठि मुदित गृह द्वार मँझारी ॥
बिहँसित बदन अपर यकनारी * दीन्ह सुचारु कपाट उघारी ॥

दो०—जलद पटल अपसृत भये, यथा शीत ऋतु माहिं ।
भानुप्रकाशते अतिमुदित, जगत जीव ह्वै जाहिं ॥
त्यहि विधि उघरे द्वारपट, भवविभासि सुखकंद ।
ह्वै दृगगोचर दर्शकन, दीन्ह परम आनन्द ॥

सो०—लख्यो सबन छबिराशि, इन्द्र नीलमणियकमनहुँ ।
निज द्युतिसोहिंप्रकाशि, मेरु गुहा द्वारहि रह्यो ॥
तप फल पावन कारि, विश्वम्भरकरदरशलहि ।
निज २ हृदय मँझारि, कहमुनिगणमुदमग्न ह्वै ॥

मुक्ति ते श्रेष्ठ बारही बारा * अहै देह धारण संसारा ॥
जासन असमन मोहन कारी * विभु मूरति हेरत संसारी ॥
दर्शन बिन आसक्ति सदाई * अहै विफल बन रोदन नाई ॥
जल लहि तृप्त तृषित जनहोई * डूबे सलिल न त्यहिफलकोई ॥
कुलगुरुप्रति त्यहि क्षण नरनाथा * कहइमि वचनजोरि युगहाथा ॥

नाथ शुभाशुभ सुत कर लक्षण * कहियविचारिकृपाकरियहिक्षण
यहसुनि प्रेम प्रफुल्ल मुनीशा * लागे कहन सुनिय अवनीशा ॥
आजु त्रिजग दुर्लभ निधि चारू * पाई तुम सत्यही भुवारू ॥
त्यहि लक्षण जग मनुजनमाहीं * है संभव कदापि नृप नाहीं ॥
सुनिमुनिवदन सुखद मृदुबानी * कह यहिबिधिनरेशयशखानी ॥

दो०—प्रभुपद पावन कृपा ते, किह्यों रतन यह लाहु ।
यहिशिशुशिरपैदेहुशुचि, चरण रेणु मुनि नाहु ॥
पुनि निदेश कुलगुरुकर, लहि नृप धर्म निधान ।
कीन्ह समापन तनयकर, जातकर्म सविधान ॥

सो०—भा यक सुवन ललाम, सुभ क्षण महँ कैकेयिके ।
नव दूर्वादल श्याम, कौशल्यासुत सम बरण ॥

रूप अनूप शान्ति कर खानी * कामकान्तिनहिंजातबखानी ॥
कुंचित कुन्तल शीश सोहाये * जनु अतिपुंज कंज पै छाये ॥
नीलारुण पंकज अनुहारी * दृग विशाल मनमोहनकारी ॥
सुरुचिर चारु चिबुक छबिधामा * शोभा सदन बदनअभिरामा ॥
चित्रकंठ जित कंठ सोहावन * भुज आजानुलंब मनभावन ॥
विस्तृत वक्ष सूक्ष्म कटि देशा * कर पदतल जनु बाल दिनेशा ॥
अबलग जननी गर्भ मँझारा * रहे प्रभू कमलासन मारी ॥
शुभ मुहूर्त महँ अब भव भावन * प्रकटिकीन्हधरणीकहँ पावन ॥

दो०—बहुरि सुमित्रा गर्भ ते, सर्व शक्ति आधार ।
माया तनु धरिधरणिधर, मोचन हित निजभार ॥
भये प्रकट तनु द्युति बिखर, तप्तस्वर्ण अनुहारि ।
सुन्दर प्रति अंगन गठन, जन मनमोहन कारि ॥

सो०—तदनु बीर अवतार, बिभुकी चौथ विभूति जोइ ।
प्रकटे नृपति अगार, चौथ पुत्र के रूप ते ॥

नरिन्द छन्द ॥

विद्या विशद ज्योति उपजाये शील विवेकहि जैसे ।
भईं धन्य दोउ तनय प्रसवकरि देवि सुमित्रा जैसे ॥
उमड़त सिंधु तरंग तुंग जिमि पूरण चन्द्र निहारी ।
काम मोक्ष धर्मार्थ रूपि तिमि लहि सुचारु सुतचारी ॥
महाभाग कोशलाधीशकर हर्ष उदधि उमड़ाना ।
सो सुख नाहिं विरंचिपंचमुखकथमपिकरिसकगाना ॥
ज्यहिं विधि कोषते मुक्त होतही मृगमद सौरभकाहीं ।
देत पसारि मंद मृदु मारुत आशु चतुर्दिशि माहीं ॥
त्यहिं विधि राज भृत्यगण द्वारा सारे नगर मँझारा ।
समाचार नृप सुतन जन्मकर भा आशुही प्रचारा ॥
सहसा भूमिगर्भ ते प्रकटे अमृतउत्स सुखकारी ।
तासन आनँद मग्नहोहिं जिमि जिते जगत नरनारी ॥
तिमि आवाल वृद्ध वनितायत पावन अवधनिवासी ।
राज कुमारन जन्म सुनतही भे आनँद की रासी ॥
जोइ जहँ सुन्यो सोइ उठि धायो राजपुरी की ओरी ।
पुलकित गातजात अटपट गतिहर्ष बिवश मति भोरी ॥
कोइ नर्तत कोइ गानवाद्य रत कोइ इत उत रह धाई ।
कोइ२ उत्सव साज सजन महँ व्यस्त परत दर्शाई ॥
वृन्द२ अरविन्द बदनि छवि सदनि तरुणि समुदाई ।
मन्द२ भूपति मन्दिर दिशि करत गान रहिं जाई ॥
ज्यहि बिधि जलदजाल परिचालित मरुत बेगते होई ।
पर मारुत की क्रिया कोइबिधि नहिं जानत घनसोई ॥
तिमि प्रमोदवश अवध प्रजायतआतम सुरति विसारी ।
बिविध रंग महँ रँगे मत्तवत बिचरत नगर मँझारी ॥

सुरभित सुमनमाल सों सज्जित देवालयन मँझारी।
घंटशंख करताल बजनलग जनमन पावन कारी॥
बीण वेणु बाँसुरी पखावज शारंगी मुरचंगा।
सकलरंग शालन महँ बाजत होत विविध विध रंगा॥
यहि प्रकार कर दृश्य दरसिरह नगर माहिं चहुँफेरा।
जनु मंगलमय दरशहेतु किय मंगल अवध बसेरा॥
डगर डगर घर घरन नगरमधि मंजुल उत्सव छयऊ।
आनँद सागर सरिस हर्षमे अवध नगर है गयऊ॥
घर२ होहिं मनोहर सोहर साजे सबन अगारा।
रंभखंभ पयपूर पुरट घट शोभित सब के द्वारा॥
नर्तकि नृत्य नटन के कौतुक होयरहे सब ठामा।
को कहि सकै राज द्वारेकर साज समाज ललामा॥
भेरी तुरी झालरी डिंडिम पटह डंक सहनाई।
मृदंगादि बजिरहे मनोहर रहि चहुँदिशिध्वनि छाई॥
बहुदेशन सामंत सचिवनृप धनिक वनिक समुदाई।
आवत जात देत अवधेशहि वहु विधि भेंट बधाई॥
कवि बुध वन्दी सूत मागधन आदि भीर अति छाई।
लेहु २ अरु देहु २ ध्वनि अविरत परत सुनाई॥
कोषद्वार करि मुक्त महीपति मुद ते तनु सुधित्यागे।
रतन आभरण धन मणिमाणिक वसन लुटावनलागे॥
याचक सूत वन्दि नर्तकगण दान अपरिमित पाई।
धन्य २ नृप यहि विधरव ते दिय दशदिशा कँपाई॥
यकदल जात अपर पुनि आवत सोउ वांछितधनपाई।
जयध्वनिकरतजातत्यहिरवकर तहँ न विरामलखाई॥
स्वर्णभृंग रजत क्षुर मंडित सुरभी विन परिमाना।

भूपमौलिमणिअवधअधीश्वर कीन्हद्विजनकहँदाना ॥

दो०—इमि आनंदोत्सवन महँ, नृपतिन रीति सदाय ।
बन्दी शाला ते कछुक, बन्दिन देहिं छोड़ाय ॥
पर इमिरह अवधेश कर, शासन कृति विस्तार ।
जासों बन्दि न एक रह, कारागार मँझार ॥

सो०—कहद्विजवरकृतिवास, लहि सुतरूप ते जगपतिहि ।
दृढ़ भव बंधन पाश, सों विमुक्त नृप स्वयं भे ॥
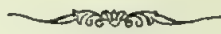
पञ्चनवतितम सर्ग ॥ ९५ ॥

रावण की आशंका व तत्प्रेरित चरद्वय का अयोध्यागमन ॥

दो०—गयन्दारि कर गन्ध घन, बहु अन्तर ते पाय ।
जिमिबिचलहिं त्यहित्रासते, मत्त मतंग निकाय ॥
ज्यहि प्रकार बहु दूरिते, लहि मयूर कर घ्रान ।
काल भुजग के हृदय महँ, उपजत शंक महान ॥

सो०—जिमि तरंग प्रकटात, चाहे जहां पयोधि मधि ।
पर त्यहि करआघात, जातउदधिकीअवधि लौं ॥
तिमि लेतहि अवतार, अवध माहँ खलदलन के ।
दशमुख हृदय अपार, प्रकट विकट आतंक घन ॥

शैल शृंग सम तासु शरीरा ❋ कँपनलग्योमन भयोअधीरा ॥
डगमगात त्यहि आसन भयऊ ❋ खसिशिरमुकुट भूमिगिरिगयऊ
देखि अशुभ घटना यहिभाँती ❋ ह्वैविचलितअतित्रिदशअराती॥

हाहाकार करत इमि बैना * कह्यो पुकारि अरुण करि नैना ॥
अकस्मात यह अशकुन घोरा * प्रकट्यो खस्यो मुकुटकसमोरा ॥
काह इन्द्रजित लखि तैं रहई * यह छलकरणिधरणि करअहई ॥
अस्त्रागार कुमार सिधावहु * मम अमोघ आयुध लै आवहु ॥
दरिमेदिनिहिद्विधाकरिडरिहौं * नागनदलि कागनभख करिहौं ॥
करि दुर्दान्त अनन्तहि अन्ता * प्रेरत अन्तक पुरिहि तुरन्ता ॥
होई विश्वध्वंस यहि काला * असकहितमकि उठ्योदशभाला ॥
यहलखिकरपुटकह्यो विभीषण * सुनिय निशाचर वंश विभूषण ॥
महि अनन्त पै करिय न रोषू * वे दोउ अहैं नाथ निर्दोषू ॥

दो०—ममविचार महँ असपुरुष, कोइ जनम्यो जगमाहिं ।
ज्यहि कर ते महराज कर,कुशल देखियत नाहिं ॥
मोहिं नारद के कथनवत, आज परत यह जान ।
दमन हेत हम सबन के, प्रकट सगुण भगवान ॥

ध्वंसे धरा धरणिधर काहीं * होई काज कोइ सिधि नाहीं ॥
त्यहिछणभइयहिबिधिनभबानी * सत्य जो बदत विभीषण ज्ञानी ॥
गगनगिराइमिसुनित्यहिकाला * अतिवत्रसित चित लंकभुवाल ॥
शुक सारण युग चरन बुलावा * यहिप्रकारकहि तिन्नहबुझावा ॥
तुम दोउ देश२ मधि जाई * खोजहु प्रतिगृह करि चतुराई ॥
कौन ठाम क्यहि धाम मँझारा * प्रकट भयोशठ शत्रु हमारा ॥
शिशुकालही माहिं हम तासू * कोइ यतन करि करब बिनासू ॥
नतु यदि तासु वयस बढ़िजाई * तौ न विदित का करै खोटाई ॥

दो०—पावक कण पद सों दले, बुझत न लागत बार ।
पर पुनि काल बिलम्ब ते, बढ़ि करि सकपुर छार ॥
उपजत बट बिटपहि सबहि, सहजहि सकत उपारि ।
पर ह्वै जात बिशाल तरु, सो ज्यहि समयमँझारि ॥

तो मदमत्त गजहु त्यहि काहीं * सकतु हुमासि कोइ विधिनाहीं ॥
यह जियसमुझिसकलथल जाई * आवहु द्रुत रिपुखोज लगाई ॥
राज निदेश दोउ चर पाई * गमने दशशीशहि शिरनाई ॥
रहे पूर्व दोउ द्विज गुणगेहू * शाप ते धरे निशाचर देहू ॥
उतरि पयोनिधि शुक बुधिऐना * सारणप्रतिकहयहिविधिबैना ॥
सुनिय भ्रात अस मम अनुमाना * प्रकटे अवधमाहिं भगवाना ॥
यहि हित होत विचार हमारा * चलिय प्रथम साकेत मँझारा ॥
अस उर ठानि अवधपथ लयऊ * कछुक्षणमहँतहँ पहुँचतभयऊ ॥
लखेहु उभय वैकुंठ कि नाई * ऋधिसिधिसंयुतअवधसोहाई ॥
धवल धाम जनु सुधा पखारे * चुम्बत नभ चूड़ा द्युतिवारे ॥

दो०—मर्मर निर्मित तुंग तर, गोपुर द्वार सोहात।
तदुपरि स्वर्ण कपाटसह, तोरण रुचिर विभात ॥
तिन चूड़न पै मणिजड़ित, सोह कलश छविराशि।
रत्न दीप मालान सों, सकल नगर रह भासि ॥

सो०—सज्जित सकल निकेत, नवकिशलय सुमनमालसों।
अरुण पीत अरु श्वेत, केतु फरहरैं प्रतिगृहन ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

वैडूर्य मरकत मणि रचित कुट्टिमगवाक्ष सोहावने।
शोभित प्रवाल विशाल मुक्तामालसम मनभावने ॥
मनहरण पुर वासिन सदन दधिचंदनादिक सोंसिंचे।
प्रतिद्वार दोउ दिशिकलश थापित चौक मंगलप्रदरचे ॥
चौहाट बाट पुनीत सरयू घाट लगि मारग जिते।
मोदित अगुरु कस्तूरि सों रंजित हरिद्रा आदिते ॥
दूरबा अक्षत लाँज सुम चत्वरन महँ बिथरे घने।

१—लंकाकाण्ड १ सर्ग टिप्पणी एक देखो। २—खील।

जहँ तहँ मचे उपवनन महँ आनँद प्रमोद सोहावने ॥
मूर्च्छनासंयुत श्रुति ध्वनि देवालयन मधि ह्वै रहे।
थलथलन श्रवणनसुखद सुन्दर वाद्य बाजत गहगहे ॥
यहि विधि नगर मधिविचरिचरउत्सव सुचारुनिहारते ।
पुनि रानिकौशल्या भवन प्रविशे अलख दुरिद्धारते ॥
तहँ लखे श्रीपति अगतिगति ज्यहिरूप की उपमानहीं ।
अद्भुत प्रभा विस्तारि जननी क्रोड़ माहिं विराजहीं ॥

सो०–प्रभुकी रीति सदाय, जस भक्तन की होत रुचि ।
तस स्वरूप प्रकटाय, देहिं दरश लोचन सुखद ॥
दोउ चर ज्ञान निधान, शापते निशिचर तनुभये ।
दिय दर्शन भगवान, तिन्हैं चतुर्भुज रूप ते ॥

दो०–यहिविधि उभय विलोकेऊ, प्रभुकर रूप ललाम ।
नवल नील नीरद सरिस, अतिसुन्दरतनुश्याम ॥
सन्ध्याघन सम पीतपट, लसत मनोहर काय ।
मणिमाणिकमय शीशपै, चारु कीरीट सुहाय ॥

श्रवण रतनमकराकृति कुण्डल * लोलितगोल कपोलन मण्डल ॥
गल विशालवनमाल बिराजत * भृगुपद चिन्ह वक्षथल भ्राजत ॥
अंगदादि आभरण सोहावन * परिसोभित अँग अंगन पावन ॥
तेजपुंजमय चक्र सुदर्शन * दनुजध्वंसि शारंग शरासन ॥
पांच जन्यदर घन निनाद कर * कौमोदकी गदा रिपु मदहर ॥
विद्याधर नामक कृपाण खर * युग तुणीर पूरित अक्षयशर ॥
यह सब बिभव भूत भावनकर * रह प्रकाशिशुचिसोभाविस्तर ॥
सानँद सुनन्दादि पार्षद गन * लोकपालसुरनिकरमुदितमन ॥
जोरि पाणिकरिरहेप्रभुकीनुति * यकदिशिलसतध्यानरतखगपति
नवनिधिअरुअणिमादिसिद्धिजिति*भ्रकुटिभंगिमाकरपुरलोकति

दो०—विभु विभूति इमिलखिभये, मग्न प्रेमनिधि माहिं।
को हम कहँ आये कहा, ह्वैरह यह सुधि नाहिं॥
सो०—ज्ञानदृष्टि त्यहि काल, बहुरि दोउ चर लाभकरि।
विश्व अधार विशाल, इमि प्रभु रूप विलोकेऊ॥

लसत भुवनपति प्रभुके पदतल * सप्त पताल समेत रसातल॥
उभय पदनमधिधरणिविशाला * जंघा युगुल माहिं गिरिमाला॥
खेचर कुल मय जानु सुहाई * वहत ऊरू मारुत समुदाई॥
सन्ध्या सन्धिथलनमहँ भ्राजति * गुह्य देश वस देव प्रजापति॥
जघनअसुरगणगगननाभिमधि * कुक्षि अथाहित सप्तपयोनिधि॥
तारा निकर वक्षथल भासित * हृदयमाह शुचिधर्म्मप्रकाशित॥
युगलस्तन ऋतु सत्य विराजै * मानस माहिं सुधाधर भ्राजै॥
शब्दसाम श्रुतिकंठ मँझारी * बाहु थलन निवसत सुरझारी॥
चारु श्रवण दशदिशा प्रकाशा * त्रिदिवधाम सुठिशिर उद्भासा॥
बृहत भालपट क्रोध कराला * विधि निषेधयुग भ्रुकुटिकराला॥

दो०—अधर लोभ विद्या रसा, सुन्दर माया हास।
निमिष दिवसनिशिशुक्रजल, पृष्ठ अधर्म निवास॥
लोमनिचय औषधि निकर, नाड़ीनदी निकाय।
शिरानेम पदन्यास मख, छाया मृतु के न्याय॥
इमियत प्राणी चर अचर, धर्म ज्ञान आचार।
सो सब निरख्यो दोउ चर, प्रभुके वपुष मँझार॥
कोटि २ बिधि शिव सनक, शौनक ऋषिनसमाज।
जप तप लोकादिक कितक, लोमकूपमधि भ्राज॥

षट्पद छंद।

इमि असीम अविचिन्त्य विश्वमय लखि प्रभुकाहीं।
भयो मोह दोउ काहिं रही तनुकी सुधि नाहीं॥

जब कछु समय मँझार चेत दोउ चर कहँ भयऊ।
तब इमि लख्यो बिलाय सकल विभुवैभव गयऊ॥
निज जननिक्रोणमहँबिहररहींबालरूपतेभुवनपति।
तबकरनलगेइमिदोउनुतिकरिसप्रेमशत२ प्रणति॥

नरिन्द छंद।

हे अनन्त भगवन्त भुवन पति सतत सन्त हितकारी।
तुममनबचगोऽतीतकरहिंप्रभुक्यहिविधिविनयतुम्हारी॥
अपरि सीम विस्तृत अनंत जोइ नभ ऊपर दरशाई।
निम्न माहिं यह जो अपार प्रभु पारावार सोहाई॥
त्यहिलखि तवअनन्त प्रभुतहि जोसकत लेशहू जानी।
तिनपदमाहिं करतहमशतशत प्रणतिजोरिजुगपानी॥
अणु प्रमाण लघु कीटन सों लै कुधर सरिस गज ताईं।
यहअद्भुत तव सृष्टि कुशलता लखिज्यहि चित्तगोसांईं॥
आकर्षित तवदिशि न होत हैजगमधि त्यहि सम कोई।
मन्द भाग्य नहिं अहै गँवायो बादि मनुज तन सोई॥
प्रकट तुमहिते प्राण चेतना त्यहि जगप्राण समीरण।
करिकै बहन सकलजीवनतनुकरतअनुक्षणविचरण॥
ज्यहिजन कोभावनामाहिं यहनहिं आवत भगवाना।
अहै निरर्थक सकल भाँति ते तासु बुद्धि अरु ज्ञाना॥
हे कृपालु प्रेमही प्रकृतितव जगत माहिं त्यहि काहीं।
करि अवतरण जनक उरममता नेहजनेनिउर माहीं॥
बन्धु हृदय सद्भाव प्रणय पति पत्नी माहिं परस्पर।
भ्रातभगिनिमधि प्रीति तनयमधिश्रद्धा भक्ति निरन्तर॥
यहि प्रकार यावत प्राणिन मधि प्रेमांकुर प्रकटाई।

पालनकरतनिखिल ब्रह्माण्डहि तुम निखिलेश गोसांई॥
को जानत शिशु होइ कबै परजननि उरोजन माहीं।
तुमप्रथमहि ते पय संचारहु त्यहि शिशु पालन काहीं॥
तुम अकाय पर दुकगाह आकाशहि तव आकारा।
तुम अरूप पर विश्व विकासहि अहै स्वरूप तुम्हारा॥
नहिं तुम्हरो कोइ वर्ण अहै प्रभु कृपासिन्धु भगवाना।
पर प्रज्वलित हुताश तुम्हारो वर्ण होत अनुमाना॥
हे प्रभु फुरत उदित रवि ते मृदु किरणबुन्द यह जोई।
सो तव करुणाविन्दु त्यागि के अपर वस्तु नहिं कोई॥
तासु हेत हिममयी रजनि ते शीत जोइ प्रकटाई।
सो दिनकर खर किरणतापसन आशु नाश ह्वै जाई॥
शुचिप्रभातकालीनअनिलमधिअमृतनिहिततुमकीना।
यहिहितत्यहिपरसतहि जगतजन होहिविषादविहीना॥
हे प्रभु सकल बंधु संपद के साथी जगत मँझारा।
परयक तुमहिं विपन्न साथिहौ सन्तत करुणागारा॥
जाको यहि संसारमाहँ प्रभु अहै न कोइ सहायक।
ताके परमसहायकारि यक तुमहि त्रिभुवन नायक॥
तुमहो अनिल कि पावक तेजकिमृदुता हर्षकिशोका।
गुणकिविगुण विषसुधाकिप्राणकिमृत्युतुमकिआलोका
शून्यकि पूर्ण किकार्यकिकारन शब्दकिअहौअकाशा।
स्थूलकिसूक्षमचितकिअचित तुमसतकि असतअतुमास॥
यहनकोइ कहिसक न जानिसक कोइ प्रकारजगमाहीं।
अरु न कोइ कहँविदित यहहुहैप्रभुतुम अहहु किनाहिं॥
पर ताहूपै काह ज्ञानि अज्ञानि काह पति योगी।
काहयुवा का जरठ नारिनर काह रोगि का भोगी॥

राजा प्रजा कामि निष्कामि गृहि काहु सन्यासी।
काहु धनी निर्धनी भृत्य प्रभु त्यागी काहु विलासी॥
काहुऊंच कानीच क्षुद्र इमि यत जगप्राणि कृपाला।
तुमहीं काहिं लाहुहितते सबव्यग्र रहत तिहुँकाला॥

दो०–कोइकहु सुखप्रद तनयते, अपर वस्तु है नाहिं।
सम्पतिही सुख मूल है, काहू के मत माहिं॥
कोइ जनकी भावनामहँ, प्रभुताहि सुख सार।
परममबुधिमथितुमहिंतजि, सुखनहिविशवमँझार॥
तासुहेत यह भवविभव, संतति प्रभुता माहिं।
होतलाहु यदि परम सुख, अवनिमाहिंकोउकाहिं॥
तो प्रभु प्रभुतावंत यत, तनय वान धनवान।
तुमहिंलाहुहितक्यहिनिमित, उत्सुकहोंहिं महान॥
पतिहि तीय ते तीय कहँ, पतिते प्रिय न कोउ।
परप्रयास निशिदिनकरत,तुमहिं लहन हितसोउ॥

हे अनंत प्रभु यहि जगमाहीं * हितसब सब न नहोय सकाहीं॥
जोइ ममभित्र ताहिकोउआना * जानत दारुण शत्रु समाना॥
पर प्रभु तुम्हरे विषय मँझारी * अहैं एक मतयत नर नारी॥
तासु हेतु यह जगत गोसाईं * तुम समान हितु सबन सदाईं॥
तुम्हरो शत्रु मित्र जग माहीं * अहै कृपाल कोइ जन नाहीं॥
रविशशिअनलहिकोइ२कहहीं * तुमते भिन्न वस्तु यह अहहीं॥
पर यह कथन अमूल सदाई * तासु हेतु यह परत दिखाई॥
यदि तुमते शशिभानु हुतासन * होते पृथक वस्तु गरुड़ासन॥

दो०–तो विस्तारत अहनिशि, ज्योतिकिरणअरु ज्वाल।
तिनन्ह तेज ह्वै जात लय, अबलौं कबहिं कृपाल॥
पर युग पै युग बीति गे, तिनन्ह अवस्थितमाहिं।

ज्यहिकारणसों तबहुँ प्रभु, भयो तेज क्षय नाहिं ॥
तासु हेतु यहि ज्योति के, परम ज्योति तव जोय ।
त्यहि कछु अंशते भे रचित, अनलभानुशशिसोय ॥
सो०—यहि हित तिनको नाश, सहजनपर कल्पान्त मैं ।
तुममहँ जगत निवास, होहिं लीन तवनियमवश ॥
सृष्टि समय पुनराय, तुम्हरिहि तनते ते सकल ।
जगत माहिं प्रकटाय, ह्वै हैं निज २ कृत्यरत ॥

रामगीती छन्द ।

हे सर्व आत्मक काह कानन काह गिरि का नीर ।
का अनल काह अकाश का नृपभवनकाहकुटीर ॥
इमि जोइकछु यहि जगतमहँस बमधिरहेतुमराजि ।
यहिहित प्रकांड असीम यहब्रह्माण्डरहप्रभुभ्राजि ॥
होईजबहिं तवरुचि तबहिं यह विपुल विश्वसमस्त ।
नहिंविदितकहँ चलिजाइ है क्षणमाहिं ह्वै विध्वस्त ॥
प्रभु सृष्टि थितिलय कृतिपरस्पर जेविरुद्धलखाहिं ।
ते लसहिं एकाधार ह्वै तव नित्य सत्ता माहिं ॥
ज्यहि काल प्रभुतुम करत हो दारुण प्रलय उत्पन्न ।
तब घोर तम तव विश्वरूपहि करत है आच्छन्न ॥
बंधन विषाद प्रमाद छल अवसाद ईर्षा द्रोह ।
अभिमान विषयविकार काम प्रलोभक्रोधबिमोह ॥
प्रलयांधकार के यह सकल हैं अंश कमलाकंत ।
तव दिव्यज्योति व्यतीत इनकरह्वैसकतनहिंअंत ॥
हेभक्त रंजन मन मगन तव ध्यानमधि जब होय ।
तव हृदय मधि पीयूषरस प्रकटत अहै प्रभुजोय ॥

यक बारहूसो अमृत स्वादन भयोज्यहि जनकाहिं ।
ताके निकट इन्द्रत्व अरु अपवर्गहू कछु नाहिं ॥
हे विभो शत २ जनुसोइ शुचि सुधा लाभ के हेत ।
ह्वै दृढ़हृदय तजितियतनयबहुविभवमयस्वनिकेत ॥
दुर्गमनघनबनगिरिगुहननिर्जन थलन मैं जाय ।
निशिदिवस यापनकरत तवश्रीपदनमहँमनलाय ॥
तिनकेर चित्तहि स्वर्गथित ऐश्वर्यहू कोइ काल ।
करिसकत आकर्षित नहीं प्रभुदीन बंधु कृपाल ॥
हेसिंधुजापति इन्दु तव मुख ज्योति सुखमासार ।
दिनराज दृष्टि कुलीश अद्भुत तेज राशि तुम्हार ॥
प्रफुलितललितसुमनिचयकरसौन्दर्यगंध निकाय ।
तुम्हरी अनन्य प्रसन्नता कर अंस मात्र सदाय ॥
शशि दिवसपतिकीरश्मिमधिकरिरुचिररससंचार ।
तुम करत हो उत्पन्न बहु बिध अन्न अपरम्पार ॥
यहि भांति ते प्रभु तव अछय भंडार है सबकाल ।
पूरण रहत नित होत जासों जीवकर प्रतिपाल ॥
प्रभुबीति युगप्रति युग गये अरु सततबीततजाहिं ।
अरुकोटिकोटिन प्राणी अन्नाहारि नितप्रकटाहिं ॥
तबहू रहत भंडार तव परिपूर्ण नित भगवन्त ।
यहिभांति तव प्रभुताइकर है अंत नाहिं अनन्त ॥

रोला छन्द ।

विषय रूपि बिष विषम माहिं प्रभु राजिव नैना ।
जीर्ण शीर्ण घूर्णायमान करि रह दिन रैना ॥
ह्वै रह तनु तौ जीर्ण वासना तरुणहि होई ।
ज्यहि वश काज कुकाज केर भय हमैं न कोई ॥

यहि विधि ह्वै हम विषय लोभ मदमत्त घनेरा ।
निज स्वारथहित कितक हानिकिय कतजनकेरा॥
मम कुकृत्यते भइँ तनय बिन जननि अनेका ।
किती सती भइँ असति प्रीयपनि बिगत कितेका ॥
निज हित साधन निमित आजलौं हम जग माहीं
विदित न किय उत्सन्न किते परिवारन काहीं ॥
निज२कृति सन अप्रसन्न मन स्वर्ग नशाई ।
नष्ट होत परमार्थ मुक्ति मारग रुँधि जाई ॥
हम रहि नित प्रति निरत सोइ सोइ कर्म मँझारा ।
करि दूषित जीवनहि मरण परिणाम विसारा ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

हे रमाकन्त अनन्त विभु भगवन्तशान्ति सुखालये ।
लखिभ्रान्तश्रान्तनितान्तहमकहँशरणदेहिकृपामये॥
लहि रक्ष तनु प्रत्यक्ष खलता दक्ष हम प्रभु ह्वै रहे ।
बिनुअवधितवगुणकहैंनयहिबिधिबिधिहुबोधनजिनलहे॥
जेसरसपदपंकज दरसअज आदिध्यानहि महँलहैं ।
प्रत्यक्षसो हमलहेहमसम भाग्यशालिन कोउ अहैं ॥
अबनाथपदपाथोज मधि यहविनय बारहि बारही ।
श्रीचरणमहँममन रमैमधुपार्थिअलिअनुहारही ॥
यहितजिअपरकोइवासना नहिंअहै इनदासनहिये ।
यहिभांतिनुतिकरिप्रणतिशतशतउभयजगपतिकहँकिये ॥

दो०—चरन विनय सुनि हँसदय, कृपानिलय भगवान ।
चरण पात संकेत ते, किय शुभ उतर परदान ॥
तब दोउ चर प्रभुकहँबहुरि, करि प्रणाम शिरनाय।

गवने प्रमुदित लंक दिशि, रही भक्ति उरछाय ॥
सो०—किय दोउ चार विचार, समाचार जोइ अवधकर ।
सो सबकोइ प्रकार, उचित न दशमुख सोंकहन ॥
विदित नरमा निवास, दास त्रासभव पाश हर ।
कौन चरित्र प्रकास, हेतु मनुज तनु धारेऊ ॥
यहि हित याहि गुप्त यहि भांती * राखैं यथा सीप जल स्वाती ॥
प्रभुलीलामय बिश्व अधारा *ज्यहिहितलियोअवनिअवतारा॥
सो रहस्य शुचि जानन काहीं * अहै शक्तिहम सबनकिनाहीं ॥
असउर ठानि लंक मधि जाई * कहइमिदशशीशहि शिरनाई ॥
प्रभु हम खोज कीन्हसब ठामू * पर कहुँ अशुभकेर नहिं नामू ॥
प्रभु कर शीश मुकुट खस जोई * हेतु तासु अनुभव यह होई ॥
नाथहि कोइ विघ्न दरशाई * यहत्यहि ऽरिष्ट टरन सदुपाई ॥
आनि पुनीत तीरथन बारी * न्हाइतिनहिमहँविधिअनुसारी॥
दो०—अशन वसन धन आभरन, देहु द्विजन कहँ दान ।
भावि विघन यहि यतन सन, टरि ह्वै है कल्यान ॥
यह सुनि दशकन्धर हँस्यो, दशहू वदन पसारि ।
खिले रदन जिमि केतकी, विकसत भाद्र मँझारि ॥
सो०—पुनि कह यहि बिधिबैन, देखहु भ्रात विभीषणहि ।
बुद्धि लेशहू है न, बिन बूझे कहि डारहीं ॥
का विधि सृष्टि नाहिं अस कोई * मम दिशि डारिदीठि सकैजोई ॥
यहि विपरीत जासु अनुमाना *त्यहिननेकुबिधिकियबुधिदाना॥
करपुट बहुरि विभीषण कहेऊ * मम अनुमान मृषानहिं अहेऊ ॥
यह अनसुनि करि लंकभुआला * टेर्यो जलधि काहिं तत्काला ॥
तुरत पयोधि सशंकित गाता * आयरावणहि कियप्रणिपाता ॥
तासन कह इमि दनुज महीशा * जिते तीर्थ महि माहँ नदीशा ॥

यक२ घट जल तिन सबकेरा * लाय देहु हम कहँ यहि बेरा ॥
सुनि वारिधि यत तीरथ बारी * लै आयहु यक निमिष मझारी ॥
तब उठि तुरत निशाचर नाहा * प्रमुदित चितकरिकै अवगाहा ॥
रजत कनक पट हीरक नाना * निशिचरवंशिद्विजन कियदाना

दो०—पुनि बलगर्वित दशवदन, त्यागिमरण कर त्रास ।
करन लाग तिहुँ लोक महँ, द्विगुण प्रताप प्रकास ॥
कृत्तिवास कह दीप जब, होन लगत निर्वान ।
तब यकबार प्रकाश अति, करत सकल जनजान ॥

षण्णवतितम सर्ग ॥ ९६ ॥

श्री रामचन्द्रादि का नाम करण वर्णन ॥

दो०—बालरूपि गोविन्द विभु, चिदानन्द सुखकंद ।
इमिदिन प्रति दिनबाढ़हीं, शुक्लपक्ष जिमिचंद ॥
ज्यहिविधिपूरणसुधानिधि, निरखिउदधिउमड़ान ।
तिमि नित्यानँद दरशते, भूपति मुद अधिकात ॥
तृषित पथिक मरुमाहिं जिमि, हरषसुधा हृदपाय ।
चारुचारि कुअँरन निरखि, नृपउर मुद न समाय ॥
सो०—अब मन पावन कारि, श्रीपति कर अद्भुत चरित ।
मानस नयन उघारि, अवलोकहु बरभक्तगण ॥
दो०—तृषित पथिक मरुमाहि जिमि, हरष सुधा हृदपाय ।
चारु तनय लहि चारितिमि, नृप उरमुदनसमाय ॥
जेहि इच्छा अनुसार होत नित*निखिलविश्वप्रतिपलप्रतिपालित॥
कसस प्रेम सोइ श्रीभगवाना * करिरहे जननि पयोधरपाना ॥

प्रकटत सृष्टि जासु चेतन ते * होत जगतलय जासु शयनते ॥
धातृ क्रोड़ महँ सो जग सांई * यकनवजात मनुजशिशुनांई ॥
निद्रित होंहिं कबहुं कहुँ जागहिं * कहांकहां करि रोवनलागहिं ॥
जेहि अनंत बल पाणि मझारा * आश्रित अहै सकल संसारा ॥
तेहि सूतिका भवन की नारी * चुचकारहिं दै दै करतारी ॥
जासु ज्योति रविचन्द्र हुताशन * करत रहत जगकेर प्रकाशन ॥
सोइ प्रभु प्राकृत शिशु अनुहारी * लखहिदीपदिशिनिमिषनिवारी
शयनहु करत त्रास जिन केरा * चौंकिपरत सोइ कोइकोइवेरा ॥

दो०—जोइ शुचिवदन कृशानुकहि, श्रुतिगण कियोबखान।
चुम्बि सोइ मुख नृपधरनि, करहिं सुधारसपान ॥
प्रेम केर उत्कर्ष तौ, मानत है सब कोय।
पर तेहि कहँ प्रत्यक्ष यहि, देखन की रुचि होय ॥

सो०—तौ जग माहिं विहाय, सगुण ब्रह्म की चिंतवन।
अहै न अपर उपाय, नरन कामना फलन की ॥

पर जेहि भाँति वीज समुदाई * आर्द्र महीमह उगत सदाई ॥
तिमिप्रभु करनर चरित निरंतर * विकसत रसिकभक्त उरअंतर ॥
अजन अनंत असीम अनीशा * करिसंकुचित निजहिजगदीशा
अति संकुचित मनुज उर माहीं * करहिंप्रकाशित जबनिजकाहीं
प्रभु स्वरूप छवि सुन्दर ताई * सकहिं बूझितवजन समुदाई ॥
यहिरहसहि यहिताज विश्वासा * करहि कुतर्क वाग विन्यासा ॥
प्रकटि गर्व पुनि तेहि जनकाहीं * करत विपथ गामी जगमाहीं ॥
यक यक दिन बीते सानन्दा * छठयें दिवस भानुकुल चन्दा ॥
तनु जन मंगल हित सविधाना * पूजिपष्ठिकिय धनमणिदाना ॥
उत्सव नृत गीतादि ललामा * भये नगर मधि ठामन ठामा ॥

दो०—अशौचात तेरहे दिवस, सानँद सहित उछाह ।
नामकरण कृतिकरनमहँ, भे तत्पर नरनाह ॥
त्रिकालज्ञश्रुतिशास्वविद, वशिष्टादि द्विज काहिं ।
वोलि भूप वैठरेऊ, रुचिर आसनन माहिं ॥
सो०—करि कुलरीति भुवाल, कहवशिष्टमुनिद्विजनसन ।
कुंवर न नाम कृपाल, धरिय दास पै ह्वै सदन ॥
यह सुनि द्विज समुदाय, शोधिलगनकरिवहुगणन
आगम निगम निकाय, करन लगे आलोचना ॥

रामगीती छन्द ॥

तव अकस्मात वशिष्ट वाणी माहि लोक ललाम ।
प्रकटयो स्वयंप्रभुकर जगततारण तरणनितनाम ॥
यह विदितरह मुनिवरहिजेहिपर ब्रह्ममाहिसदाय ।
इन्द्रियदमन करिरमण काहींयोगि गणमनलाय ॥
दुर्ज्ञेय तत्व ज्ञान सो अज्ञान होय विनाश ।
लहिपरमनिधिसोपुरुषगणजिनमाहिंकरतविलास ॥
जोइ अर्द्ध मात्रात्मक प्रणव मधिनाद रूप ते गीत ।
मुनिवाल्मीक सप्रीत जिनकर नामजपिविपरीत ॥
किय लाह मुक्ती सोइ पूर्ण ब्रह्म जगदाधार ।
भवभीर टारन हित लियो नृपभवन गहँ अवतार ॥
परगूढ़ यहि रहसहिप्रकाशन स्वाधिकारन जानि ।
इवितहि तेनिजभावकरहि प्रकाशमुनिगुणखानि ॥

१–रमन्ते योगिनोऽनन्ते यित्यनन्देचिदात्मनि ॥ इति रामपदे नासौ परंब्रह्माभिधीयते ॥ (श्रुति) २–यस्मिन रमन्ते मुनयो विद्याया ज्ञान विप्लव (अ. रा. वा. का.) ३–अर्द्ध मात्रात्मको रामो ब्रह्मानन्दौक विग्रहः (राम ताप नीयोपनिषदः)४–सर्वे चांस कलः पुंसः कृष्णास्तु भगवानस्वयं ? परिपूर्ण तमो रामो ब्रह्म शाप स्वृविस्मृताः (ब्रवैपु)

तबइमि बचनकह नृपति सननिजयुक्तके अनुसार ।
हे भूप यह जो अहै तव छबि सदन ज्योष्ठ कुमार ॥
इनके चरित ते मुग्ध ह्वैइ है जगत के मन प्रान ।
सौन्दर्य्यता लखि प्राणि गण ह्वैइहै मुदित महान ॥
रहिहै बिराजित सदा सुखदा रमा इनके धाम ।
यहि हेतु भूपति धरत इनकर राम नाम ललाम ॥
सुनतहि सकल नरनारि यहनितनाम आनँदसार ।
ह्वै गये मनहुँ निमग्न पावन सुधा सिन्धु मझार ॥
यह नाम उच्चारण करत मुनि बरहु के तनुमाहिं ।
स्वेदाश्र पुलकावली छायो देह सुधि रहि नाहिं ॥
यदि नाम केर प्रभाव कीर्तन सनातन विख्यात ।
यहि पन्द कविके विषय महँ तेहिकथनइमिदर्शात ॥
सो०—जिमि प्रभात दिनराय, काहिं कोइ मूढ़ता बश ।
अरुण पराग चढ़ाय, अरुण परण चाहे करन ॥
अधमते अधमहु होय, राम नाम उच्चारतहि ।
भव पयोधि तरि सोय,लहत महत थहसुगतिदुत ॥
बड़ अचरज यहि माहिं, लीन्हे नाम हुतासकर ।
दाह होत है नाहिं, कोइ केर मुख जगत महँ ॥
केवल लिहे सिन्धु कर नामू * प्लावित नाहिं होत पुर ग्रामू ॥
सुमिरण किहे दिवाकर काहीं * निशितौकबहुं होतदिननाहीं ॥
तव केहि भाँति जाययह माना * नाम नामि दोउ एक समाना ॥
पर यह सुरति करहु मन माहीं * परेहु कोइ संकट तुम काहीं ॥
सोई समय तमहि सुन भाई * परम हितू कोइ परहि लखाई ॥
सो केवलहि न बिपद उधारी * बरु तुम्हार पालक हितकारी ॥
ताकर नाम पुकारहु जोई * सो तव कस न सहायक होई ॥

एकर अर्थ विश्व भव भावन * ईश्वर वाचि मकार सुपावन ॥
यहि हितसकल विश्वके स्वामी * स्वयं रा१ प्रभु अन्तर्यामी ॥
काह पयोधि कृशानु कि नाईं * जड़ पदार्थ है जगत गुसाईं ॥

दो०—जो तव आरत बचन सुनि, सकहिं न जगदाधार ।
ताते तर्क वृथाहि यह, पुनिउरकरियेविचार ॥
यहि आधुनिक महीप कर, गहे शरण जगमाहिं ।
मनु जन कर बहु आपदा, बिघ्न दूरि ह्वै जाहिं ॥

सो०—तौ भवनेश्वर नाम, लिहे भक्ति श्रद्धा सहित ।
असन कोइ मन काम, पूर्ण ह्वै सकत जोइ नहिं ॥

नाम रूपि वर पात्र मझारी * कर्म स्वरूपि वर्तिका डारी ॥
भरि तेहि याहि तैन विश्वासू * प्रेम अनल ते करहु प्रकाशू ॥
तव अज्ञान तिमिरि समुदाई * यहि प्रदीप सन जाइ विलाई ॥
तव सम्बन्ध नाम नामी कर * सकिहौ बूझि खुले दृगअंतर ॥
नाम रूपि सविपुल धनुमाहीं * जोरहु मनखर शायक काहीं ॥
विकर अविद्या ठक भय पाई * तब सन्मुख ते जाइ पराई ॥
तव लहि षट२ सम्पद दुख दारी * ह्वै हौ बहुरिमुक्ति अधिकारी ॥
बिनु मृत्तिका जान सव कोई * घट निर्मित कबहूँ नहिं होई ॥
तिमिविनु वस्तु होत नहि नामू * यह विख्यात अहै तिहुँ धामू ॥
विश्व भरण के नाम अनंता * किये गान कोविद श्रुति संता ॥

दोः—पट सर्सत शुचि मधुरता, राम नाम मधि जोय ।
ताहिकथनहित शब्दनहिं, सकलशास्त्र मधिकोय ॥
दिव्य नाम लान्हे सहस, होत अहै फल जोय ।

१—राशब्दो विश्ववचनो मश्चामीश्वर वाचकः । विश्व नामीश्वरो योहि तेनरामः प्रकीर्तितमः राचेति लक्ष्मीवचनो मश्चामीश्वर पावकः । लक्ष्मी पति गतिं रामं प्रवदान्ति मनोषिनः (ब्र० वै० पु) २—शम, दम, श्रद्धा, उपरति, तितिक्षा व समाधान ।

राम नाम यक वार कहि, लहै मनुज फल सोय[1] ॥
लोभादि कथन वीचि युत, कलुष पयोधि मँझार ।
राम नाम ध्रुव नखत वत, पंथ दिखावन हार ॥
उच्च वृक्षथित फल निमित, चढ़िय विटप पै नाहिं ।
आकर्षणी सुहावनी, जव तुम्हरे कर माहिं ॥

जप तप यज्ञ दान आचारा ❋ उच्च वृक्षथित फल अनुहारा ॥
सो फल विनु तरु चढे न लाहू ❋ परयह श्रमन साध्य सब काहू ॥
यहि हित प्रकटी जगत मझारी ❋ राम नाम आकर्षणि भारी ॥
यहि सुचारु आकर्षणि काहीं ❋ करि थिर लक्ष्यलोहकरमाहीं ॥
यहि सहाय ते बिनहि प्रयासु ❋ होहि मोक्षफल करतल आशू ॥
राम नाम कर राम चरीता ❋ अहै विशद टिप्पणी पुनीता ॥
विना निघंटु निरुक्त सदाई ❋ श्रुतिकर अर्थ बूझि नहिं जाई ॥
पर शुचि राम कथा सुख कारी ❋ नितमध्यान्ह भानु अभुहारी ॥
ज्ञान शील के दृष्टि मँझारी ❋ स्वयं सुचाठ करत उजियारी ॥
यहि निमित्त श्रुतिते अधिकाई ❋ राम नाम की है प्रभुताई ॥

दो०—द्वैत और अद्वैत दोउ, भिन्न भिन्न मत जोय ।
यहि युगाक्षरी मंत्रवर, माहि निहित हैं सोय ॥
हेतु तासु यह जगत पति, जग मे दोउ प्रभुताय ।
राम नामही शव्द मधि, उभय यकत्र सुहाय ।

सो०—यह स्वर्वत्र प्रकाश, मोक्ष धर्म है सत्यही ।
वाकर पूर्ण विकाश, है शुचि राम चरित्र महँ ॥
आगम निगम पुरान, अदि सुपावन ग्रंथ मधि ।
विविध भाँति सो गान, सत्य तत्व जोइ भयो ॥

१—नाम्नो सहस्रं दिव्यानां स्मरणं यत्फलं लभेत । तत्फलं लभते नूनं रामोच्चारण मात्रतः ॥ (ब्र. वै. पु.)

सो सब सत अघ हारि, यहि युगाक्षरी मंत्र ते।
साधक हृदय मझारि, प्रकट होत है स्वयंही ॥
कीन्हे दिवस राजदिशि ध्याना * होतप्रकाश राशिजिमिज्ञाना ॥
राम नाम सुमिरत तेहि भाँती * प्रकटि हृदय मधि सद्गुण पाँती ॥
सो क्रमशः करि दूरि विकारा * करत शुद्धचित सकलप्रकारा ॥
राम नाम नित साधन जासू * करपुट मुक्ति ठाढि तेहि पासू ॥
तेहि दिशि चितवन षड्रिपु ऐसे * केहर ओरि शशकमृग जैसे ॥
विषय सर्प देशिन यह नामू * महा मंत्र सम है जग धामू ॥
भव रुज ग्रसित अगद अनुहारी * शोकओक अघतिमर तमारी ॥
राम नाम कर यत प्रभुताई * सो न सकहि शत शारद गाई ॥
सोइ प्रभु करसुचरित सुपुनीता * वरनहुसुनियसुजन सहप्रीता ॥
वहुरि मुनीश कह्यो इमि वैना * सुनियभानुकुलमणिगुणऐना ॥
दो०—केकयि सुत के सुयश ते, भरिहै भुवन ललाम।
यहिहित मैं इनकर धरत, भरत नाम अभिराम ॥
होंहि सुमित्रा के तनय, ज्येष्ट सुलक्षण धाम।
ताते मैं इन कर धरत, रुचिर लक्ष्मण नाम ॥
सो०—नृप तव लघु सन्तान, होहि निपुण रिपुदलन महँ।
तिनकहँ करत प्रदान, नाम शत्रुहन भरत प्रिय ॥
यहि प्रकार सुनि कुँवरन नामू * अति प्रमुदित ह्वै नृप गुणग्रामू ॥
मुनिवर चरण रेणु शिर धारयो * पुनिकुँवरनमुनिपदमहँडारयो ॥
धन्य भाग निज ऋषिवर मानी * दै असीस फेरयो तनु पानी ॥
सकल रानि धनमणि पटनाना * कीन्ह निछावर विनुपरिमाना ॥
वसन स्वर्ण भूषण मन भाये * सादर द्विजरमणिन पहिराये ॥
पुनि गुरु सहित अवध नरनाहू * जाय सभा मधिसहित उछाहू ॥
बहुतक धेनु वाजि गज ग्रामा * दिव्यदिव्य आभरण ललामा ॥

याचक बन्दि द्विजन करि दाना ❋ तोषे सब विध नृपतिसुजाना ॥
ज्ञाति बन्धु कहं सकल प्रकारा ❋ कीन्ह कोशलाधिप सत्कारा ॥
तेहि दिन सारे नगर मझारी ❋ उत्सव रह्यो विविध मनहारी॥

दो०—राज भवन मधि जगत निध, चारहु राज कुमार ।
दिन पर दिन वर्द्धत निरखि, नृपमुदवदतअपार ॥
इमि शोभित प्रभु प्रभासन, भूप भवन अभिराम ।
षट ऋतु संयुत मनोरम, यथा अमर आराम ॥

सो०—भाग्य वंति तिहुं रानि, सुत वत ज्ञान अगोचरहि ।
महा मोह उर आनि, लालन पालन करहिंनित ॥

सहस सहस दारिका प्रवीना ❋ रहहिं शिशुन सेवामधि लीना ॥
तबहु रानि तिहु क्षणभर काहीं ❋ बजहि प्राण निधकुँरन नाहीं ॥
लाड़ पियार अनेक प्रकारा ❋ करहिं सतत मुदभरी अपारा ॥
कबहुं शिशुन पालने झुलावैं ❋ कबहुं अंक पै लै दुलरावैं ॥
कबहुं मणिन खुनखुना बजाईं ❋ रोवत सुतन रहीं बिलमाईं ॥
कबहूं प्रभु के गूंण उचरहीं ❋कबहुंजननिमुखलखिकिलकरहीं
हंसत कबहुं कर पाद चलाईं ❋ लखि मातुन उर मुद नसमाईं ॥
चहुंकुंवरननितरानि सजावहिं ❋ अंग राग तनु उपट लगावहिं ॥
अंजन देहिं नयन अरुणारे ❋ कुंचित कच रचि चोटि सवांरे ॥
इमि शोभित प्रभुभाल दिठोना ❋ अमलकमलदलजनुअलिछोना

दो०—पियतजननिपयजेहिसमय, तब इमि छबि सरसाय ।
हेम कलस मुखमाहिं जनु, नील सरोज सुहाय ॥
जननि वक्ष पै बिलसहीं, जेहिक्षण रमानिवास ।
तब जनु सुवरण मुन्तिगल, मर्कत मणी विभास ॥

विशद सेज पै जेहि क्षण माहीं ❋ देहिंसोवाय जगतनिधिकाहीं ॥
तबजन सुरसरि सलिल मँझारी ❋ विकसितनीलकमलमनहारी ॥

पद अंगुष्ठ मुख महँ प्रभु मेली * सोय उतान करहिं जबकेली ॥
सो शोभा इमि लखि मन मोहै * चन्द्र अरुण जलज जनुसोहै ॥
बहुरि मनहु यह जानत काहीं * कौन सुधामम चरणन माहीं ॥
जाते मुनि जन सर्वस त्यागी * होहिं सदा ममपद अनुरागी ॥
यकदिनकिलकत अधमउधारन * कीन्ह्योस्वयंपार्श्व परिवरतन ॥
सो लखि रानिन उर मुद छावा * दासि धायद्रुत नृपहि जनावा ॥
सुनि महिपाल महा मुद पागे * धनमणि वसनलुटावन लागे ॥
धेनु अलंकृत वत्स समेतू * दियबहु द्विजन भानुकुलकेतु ॥

दो०—इमि अभिनव आनन्दयुत, बीतत दिन अरु रैन ।
अन्न परासन कर दिवस, आयो अति सुख दैन ॥
ऋषिमुनिद्विजनरपतिगणहि, सुमतिअवधनरनाहु ॥
भेजि निमंत्रण सबन कहँ, बुलवायहु सउछाहु ॥

हरिगीतका छन्द ॥

पुर नारि नर यह समाचारहि पाय आनँद महँ पगे ।
करि करि सुवेश सुरेश सम अवधेश गृह आवन लगे ॥
भइ भूरि भीर गभीर भूपति भवन महँ मन भाविनी ।
राजे सभामधि देश देशन नृपतियति ऋषि मुनिधनी ॥
अति पुलकिता पतिव्रता वनितावृन्द सुमुखिसुवेशिता ।
कटधृत प्रथित शुभवस्तु नरपति भवन माहिंगतागता ॥
कुलगुरु निदेश नरेश दशरथ पायअति प्रमुदित हिये ।
सविधान श्रद्धा सहित पावन श्रद्ध नान्दी मुख किये ॥
मुनिद्विजमुनिन भोजननिमितसन्मानयुतनरनायकै ।
मणि जाल पंडित वृहत अशनागार महँलैजाय कै ॥
निजपाणि सों महिपाल मणिमहि सुरनचरण पखारेऊ ।

सुविचित्र शुचि कौशेयऊण सु आसनन बैठारेऊ ॥
नव नीत पूप अनूप पूरी दुग्ध दधि मधु शर्करा ।
मोदक प्रमोदक रुचिर ओदन विक्त मृदु ब्यंजनवरा ॥
सुरभित मधुर सिखिरान्न अरुमिष्टान्न विविध प्रकारके ।
राखे सवन सामुहे सूद सुवर्ण थार सवाँर के ॥
द्विज वृन्द स्वादसराहते करिअशन छकि हर्षित हिये ।
पुनिदक्षिणाबहुलहिनृपहिकहिजयतिवहु आशिषदिये ॥
पुनिद्विजनअनुमति लहिमहीपति अंकमहँप्रभुकहँलये ।
गणपति गौरिकहँसुमिरिकिंचित अन्नश्रीमुखमहँदये ॥
लागे पढ़न स्वसतैन मुनि पुर रमणि मंगल गावहीं ।
बाजन लगे बाजन गगन ते सुमन झरि सुर लावहीं ॥
इमि अन्न प्राशन भरत लक्ष्मण शत्रुहन कर कीन्हेऊ ।
नहि वरणि जाय कदापि जेतक दान भूपति दीन्हेऊ ॥
दश जन्म मार्जित करन दशविध हरन अघ करुणालये ।
दशमुखहि उद्धारण जोई अवतार दशरथ गृह लये ॥
दो०—छाया तेहि पद कमल की, चाहत द्विज कृतवास ।
द्विज मथुरहु की लगरही, सोइपदरज की आस ॥

सप्तनवतितम सर्ग ॥ ९७ ॥

बालकेलि वर्णन ।

दो०—अब प्रभुकर सुललित चरित, बाल केलि सुखदाय ।
सुनिय सुजनजेहिंश्रवणते, शमनशंकनशि जाय ॥
पर मैं दीन मलीन कवि, महामंद अज्ञान ।
केहि प्रकार ते सो चरित, मैं करि सकहुं बखान ॥

सुवन भुवाल कृपाल कर, बाल केलि रससार।
अहै अपार असीम शुचि, सुधा उदधि अनुहार॥
सो पयोधि मम बुद्धि अति, क्षुद्र भग्न घट माहिं।
कस समायसकबहुरिकिमि, बहनकरहुं तेहि काहिं॥

बाल चरित प्रभुकर सुखदाई * कमलासनहु सकहिं नहिंगाई॥
हेतु तासु तेहि चिंतन माहीं * निजवशरहत कबहुं मननाहीं॥
सो मोहिं कथबतोलि जिमिबाहू * बामन गहन चहै निशि नाहू॥
पर द्विज साधु कृपावल पाई * जे यहि रसके रसिक सदाई॥
बाल केलि कछु मति अनुसारी * वरणहु क्षमिय ढिठाइ हमारी॥
देत सबहि नित नव आनन्दा * भे षड़मासके रघुकुल चन्दा॥
जानुपाणि विचरन प्रभु लागे * निरखतरानि नृपति मुदपागे॥
प्रभुकर बाल वेश सुघराई * लखिमनथकितवरणिनहिजाई॥
नील नलिन तनुउपर सुहावन * लसत पीत भंगुलि मनभावन॥
रुन भुन पदन पैजनी बाजे * रतनखचितकटिकिंकिणराजै॥

दो०—भजन विजायठ करन महँ, कनक कटक सर्सात।
व्याघ्रनखांकित मणिजटित, कठुला कंठ विभात॥
अर्द्ध इन्दु इव भाल पै, अश्वथ पत्र सुहाय।
सुभग कर्ण महँ कुण्डलन, छवि सुचारु छहराय॥
सुधाधार विधुवदन पै, लरक अलक दुहूँ ओरि।
अहिशावकअमिलोभवश, जनुरहशशिहिचिचोरि॥
अरुण अधर मुख हास्यमय, तिनमधिसुषुमासार।
विशददशनक्रमशःविकश, करत बीज अनुहार॥

भूपति अजिर त्रिलोक गोसाई * घुटुरुनचलहिंकिलकिहुलसांई॥
कबहुँक भागि दूरि प्रभु जाहीं * जननि अंकमहँकबहुँ लुकाहीं॥
कबहुं धातृकभुँ मातुकिकनियां * कबहुँकमुखमेलतखुनखुनियां॥

भगत प्रभुहिं जब रानि पछारी ✻ धावहि धरन स्वपाणिपसारी॥
तब किलकरत भगहिं प्रभू दूरी ✻ लखिसबजननिलहैं मुदभूरी ॥
कबहुँक फटिक सुआंगन माहीं ✻ क्रीडतप्रभु लखिनिजपरछाहीं॥
चौंकि कबौं जननी की ओरी ✻ लेत बकैयाँ तिन चित चोरी ॥
झपटि कण्ठ लागत जननी के ✻ अंचल बीच दुरत प्रभु नीके ॥

दो०—पुनि कछु क्षणमहँ थिरभये, बैठि मातु की गोद ।
यक स्तन कर धरि अपर, मुखपदडोलाइसहमोद ॥

सो०—श्रीमुख कबहुँ पसारि, जननि ओर यकटक लखत ।
सहित नेह नृप नारि, पय पियाव पीयूष सम ॥

रूपमाला छन्द ॥

हेरि सो छबि होत अनुभव मनु बिकसि जल जात ।
इन्दु पै करि पुरट घट सन सुधाविन्दु निपात ॥
रक्त ओष्ठाधर निरखि यहिभाव रह मन मोहि ।
बारिज प्रफुल्लित पै मनौं युगखण्ड माणिक सोहि ॥
भोजन समय कबहूँ महीपति चुटकियन दुलराय ।
रामहि बुलावहिं निकट अपने मोद मन सर साय ॥
दूरि भार्जहि हँसि मनोहर तब प्रभू शिशु न्याय ।
मातु कौशल्या न पावहिं द्रुत पदहु बहु धाय ॥

पुनि कबहूँ विभु आपहि आवैं ✻ लै कछु भोज्य भाजिद्रुतजावैं ॥
अहो अमरगण जिनकी जूठनि ✻ श्वानमुखहुतेलहिमानतधनि ॥
सोइ अनन्त अजनित्य निरंजन ✻ सन्तसुखद संसृति भयभंजन ॥
नृप जूठनि को सहित अनंदा ✻ लेतस्वाद चलि मन्दहिमन्दा ॥
भक्ति वश्य प्रभु को है नामा ✻ भक्तन पै अनुरक्त अकामा ॥
भक्त प्राण प्रिय उनके अहहीं ✻ निगमागमसमस्त असकहहीं ॥
भक्तन पै यत प्रेम अपारा ✻ सो कवि कहि किमि पावैपारा ॥

शेष शारदा अरु चतुरानन * थके कहौं मैं किमियक आनन ॥
दो०—कछुक काल बीते सुखद, लीला हित नर रूप ।
धाय आँगुरी पकरि करि, चलैं शिद्धैन अनुरूप ॥
जननि तर्जनी हाथ गहि, प्रभु द्वैयक पद जाय ।
बैठि जात थकिपुनि करत, उठिबे केर उपाय ॥

रामगीती छन्द ॥

यह मधुर मनहरनि लीला ललित चित रिझवारि ।
केवल रसिकजन हृदय प्रेम प्रचार करिबे वारि ॥
नतु प्रेरणासों जौनकी ब्रह्माण्ड जीव निकाय ।
काष्ट पुत्तलिका सरिस संचलन कर्त सदाय ॥
जौन की इच्छा बिना नहिं डुलत यक तरु पात ।
आज्ञाबिनाबिचलत न तिलभरिसकलगिरिवरब्रात॥
नीर निधि नहिं अवधि त्यागै रविभ्रमण आकाश ।
पवन पावन विश्वविचरन ऋतु स्वधर्म विकास ॥

सर्व शक्ति युत पामर पावन * प्रणतपाल सो भव भव भावन ॥
मानुषिकर कर पकरि गोसाईं * चलन चेष्टाकर शिशु नाईं ॥
सगुण बादि गण प्रेमी केवल * अति अनुरक्तहृदय के निर्मल ॥
गूढ़ रहस्य सुयह उर पूजे * हृदयंगम करि सकत न दूजे ॥
रत्न रचित भित्ति न गहि गाढ़े * होन लगे जब रघुबर ठाढ़े ॥
तब तनु की तहँ लखि परछाहीं * मुदितहोतअतिनिजमनमाहीं ॥
जननिहु कोसोछबि मनमोहनि * अँगुरिनदिखरावतरघुकुलमनि
यहि प्रतिबिंब सरिस संसारा * सुत प्रतिबिंब अहै यह सारा ॥
सो प्रभु माया मांहिं भुलानी * जानिन सक कौशल्या रानी ॥
निज प्रतिबिंब राम अभिरामा * चाहत गहन जानि नृपबामा ॥
मणिनिर्मित बहुभाँतिखिलौनन * देतहेत करिअति मनभावन ॥

जे निज माया जगत भुलावत * ताहि रानि ऐसे बहलावत ॥

दो०–रैनि उजेरी एकदिन, उदित भयो निशि नाह।
मुदितकरतनलिनीनवल, शोभायुत नभ माँह ॥
निरखिचन्द्रमण्डलबिमल, राम अतिव अनुरागि।
मातहि दिखरावन लगे, अँगुलि सन सब त्यागि ॥

सो०–कनियाँ लै प्रभुकाहिं, आव आव कहि कौशिला।
शशिकहँ आंगन माहिं, लगीं बुलावन हाथसन ॥
प्रभु न भये सन्तुष्ट, यहि उपाय सन नेकहू।
जननी के ह्वै रुष्ट, लगे हतन तनकर चरन ॥

चक डोरी चटुआ मन भाये * रानि निदेश दासि द्रुतलाये ॥
देन लगीं जननी प्रभु हाथा * पै न छुये रिस ते रघुनाथा ॥
फेंकिदियो इतउतहि खिलौनन * मचलि गये लागे पुनि रोवन ॥
आँसुन गयो भीजि चन्द्रानन * अतिहीअरुण भयेदोउलोचन ॥
भूत ग्रस्त बालक की नाईं * मचलतबिचलत जगतगोसाईं ॥
करि उपाय कोटिन सब हारीं * अन्तःपुर निवासिनी नारीं ॥
मानत नेक न बहु बहलाये * असमुझबालकविनुशशिपाये ॥
समाचार दशरथ यह पाये * शयन भौनते द्रुत उठि धाये ॥

दो०—सकल भवन हलचल मची, धाये सब नरनारि।
भइ भीर रनिवास अस, ठौर न परै निहारि ॥
तब सुमंत्र मंत्री सुमति, प्रभुहि गोद बैठाय।
समुझावन लाग्यो चतुर, मधुरे बचन सुनाय ॥

सो०—लीला मनुज स्वरूप, तब उठाय कर गगन दिशि।
मानव शिशु अनुरूप, चन्दहि दिखरावन लगे ॥
प्रभु के मनकी बात, जानि हँस्यो मंत्री चतुर।
आनँद अँग न समात, लीला लखि नृपकुँअर की ॥

दर्पण एक तबै मँगवाई * आँगन माहिं दीन्ह धरवाई ॥
पुनि श्रीराम श्याम घनश्यामै * मुकुटपाहिं लैगयो अँगना मे ॥
लखित्यहिमहँशशिबिंबबिशाला * पायो अति आनँद कृपाला ॥
पुनिजबनिजमुखछबिहुनिहारी * तौ अतीव हरषे असुरारी ॥
एकचँद बदले सुख कारी * द्वै पाये-इमि मनहि विचारी ॥
गहिबो चह्यो चँद करि मूंटी * पर नमिल्यो चेष्टा भइ झूंठी ॥
खीझि मुकुरपर कर दै मारा * तब सुकुमार नरेशकुमारा ॥
दशनख आभा दर्पण माहीं * भासितभइदशशशिमनुआहीं॥

दो०—रघुकुलकुमुद मयंकलखि, दश मयंक कर माहिं ।
हँसतअतुल आनन्दलहि, हेरिजननि बलिजाहिं ॥

सो०—लखि प्रकास त्यहि काल, मधुर मनहरन हासको ।
शशि द्युतिमयी बिहाल, विगतकान्तिरजनीभई॥
रह्यो विषाद जु छाय, सचिव सहचरनकेहिये ।
क्षण में गयो विलाय, सोसबतमसम्मसहजही ॥
पौढ़ि मातु की गोद, पुनिप्रभु पय पीवनलगे ।
करि इमि बाल विनोद, सोइ गये वश नींद के ॥

यहि प्रकार नित नूतन लीला * करतस्वजन मनरंजनशीला ॥
कछुक काल बीते सुख दैना * कहन लगे मुख आधे बैना ॥
मातहि"मा"जनकहि"बा"कहईं * सुनिपितुमातुपरमसुख लहईं ॥
पूँछत कोऊ नाम यदि इनसों * कहत"छिआम"बिहँसितबतिनसों
आधे आधे बचन सोहाये * सुधासने सब के मन भाये ॥
सुनि सुनि लोगन नेक अघाहीं * लहत असीम हर्ष मन माहीं ॥
बाल रूप जग जनक जनार्दन * सकलसमलखलदलबलमर्दन ॥

दो०—जगदा धार अधार बिन, मनि अँगनैयाँ माहिं ।
ह्वै ठाढ़े सुन्दर सुखद, कछुक दूरि चलिजाहिं ॥

लरखराइ मग गिरिपरत, हर बराइ करि फेरि।
उठत चलत कोमल पदन, जननि लहत सुखहेरि॥
योगीजन ध्यावैं जिन्है, नितप्रति सह अनुराग।
ते पदपद्म परैं जहाँ, त्यहिमहि के धनिभाग॥
चलतसमयसुख मयमधुर, किंकिनिधुनिसुनिराम।
बिहँसतचरनन तन चितै, कोटि काम अभिराम॥
सो०-कौशल्यादिक माय, चारिभाय यकठौर करि।
चितै चितै सुख पाय, नाचनचावतबिबिधबिध॥
पितु पादुका धारि प्रभुशीशहि ❋ देतजाय दशरथ अवनीशहि॥
कबहुँ पकरि पितु आँगुरि हाथा ❋ सभा भवन गवनत रघुनाथा॥
सिंहासन नृप गोद बिराजैं ❋ सो छविवरनत कविवर लाजैं॥
मनहुँ सुमेरु सिखरपर सुन्दर ❋ राजतजलधर सहित सुधाधर॥
भये जबहिं जनमन सुखदाई ❋ तीन बरस के चारिहु भाई॥
तब तिनकर मुण्डन नृप कीना ❋ अशन वसन धन मंगन दीना॥
जसजस बयस वृद्धि दरशाई ❋ तसतस प्रणय प्रेम अधिकाई॥
प्रीति अपूरब यों सरसाई ❋ होत न आँखि ओट कोउभाई॥

नरिन्द्र छन्द॥

रानि सुमित्रा केर तनय जो जेठ लखन इमि नामा।
सो अभिराम रामके सहचर भये शीलगुण धामा॥
तिमि शत्रुघ्न शत्रुमदहारी अपर प्रणय नयधारी।
कैकेयी सुत भरत कुँअर के भये सुखद सहचारी॥
पिंगल विजय सुमाधव कश्यप श्रीभद्रादि सुशीला।
समवय सखाभये कुँअरनके करत नित्य नवलीला॥
सँगइनके सबकुँअर कबहुँमिलिमणिमयआँगनमाहीं।
धूरिकेर घर नगर बनावैं हेरि हँसत तिन काहीं॥

दो०–धूरि बटोरि बनावहीं, सुर मूरति सब बाल।
पूँजत जल अरुफूल सन, नृप दशरथ के लाल॥
सो०–देव देव श्री राम, त्यहि आगे धरि मृत्तिका।
श्याम जलद अभिराम, भोग लगावहिं भक्तिसन॥

दिग्पाल छन्द॥

जब देव मूर्ति दीन्हो नैवेद्य खाहि नाहीं।
मुखदेत फेरिवाके हठठानि खान काहीं॥
इतनेहु पै न खावै तब कोप रोपि तापै।
त्यहि तोरि फोरि फेंकैं अति दूरही धरापै॥
दो०–लीला लखि यह ईश की, सखा करत अनुमान।
येई सब देवन सृजत, संहारत भगवान॥
रे मन! लखु करुणायतन, सरल बाल बुधिमाहिं।
यहिमिस ब्यापि दिखावहीं, दुर्लभमगतिनकाहिं॥
बवन ब्रह्म सुख बीज को, बालक उर आराम।
समुझे निज कर्तव्य प्रभु, चिदानन्द घनराम॥

यकदिन प्रभु मनिखंभन माहीं * निरखी निजतनुकीपरछाहीं॥
अपर राम मूरति तहँ देखी * हरषे अधिक सखात्यहिलेखी॥
मातहि लीन्ह्यो तुरत बुलाई * तनु परछाहिं तिन्है दिखराई॥
बोले सुखद सुधारस सानी * मधुर मनोहर कोमल बानी॥
मैया! लखहु अपर यह रामा * आयो क्यहिथलसोंमम धामा॥
राखौ भवन यत्न करि याही * खेलिहौं सँग याके घर माहीं॥
बिहँसति सुखित कौशिला रानी * सुनिसुतकी मृदु भोरी बानी॥
निरखति रूप रुचिररुचि आछे * खरी भई रघु बर के पाछे॥
जननिहुकोनिरख्योत्यहि पासा * तब रघुकुल मणि भयेउदासा॥
बोले पुनि जननी सों ऐसे * मात! गई तुम यहि पहँ कैसे॥

मैं तुम्हरो सुत हौं इत ठाढ़ो * जासों करत प्रेम तुम गाढ़ो ॥
मोहिं बिहाय ममसमयहिजानी * लेहौ कहा गोद सन्मानी ॥ ? ॥
काहू बिधि निज मंदिर माहीं * देहौं रहन नाहिं यहि काहीं ॥

सवासन छन्द ।

दशरथ रञ्जन । भव भय भंजन ॥
कह इमि बैनन । जल भरि नैनन ॥

संयुता छन्द ।

प्रति बिम्ब पै रिस लायकै । कर मुष्टिकाहि बनाय कै ॥
दुइ तीन पग आगे चले । तनुकान्तिसनघनछबिछले ॥

मधुभार छन्द ।

परछाहिं माहिं । त्यहि राम काहिं ॥
धीरज विमुक्त । लखि मुष्टि युक्त ॥

मनोरमा छन्द ।

तबहिं राम शंक धारिकै । भजिचले वली विचारि कै ।
जननिदेहसुधि बिसारिकै । हँसतिकौतुकहिनिहारिकै॥
लियोउठाय गोदमहँ रामै । चूमत चन्द्रबदनअभिरामैं ।
कह्यो पुत्र ! तुम सम सुखदाई * अपर वस्तु जग नाहिं लखाई ॥
गोवत्सन के मण्डल माहीं * चारिहु भाय जबै दरशाहीं ॥
पूँछ पकरि क्रीड़त तिन संगा * मूर्तिमान मनु चारि अनंगा ॥
तौ अवलोकि भाव यह आवै * जल जलधर चपला यकठाँवै ॥
नृप अरु नृपरानी रमनीया * रति रतिपति समानकमनीया ॥
चातक और चातकी नाई * यकटक लखत महा सुखपाई ॥
दो०—कृत्तिवास कह तासु को, सुखप्रद बाल बिलासु ।
को कवि पावै पार कहि, मति अति कुंठित जासु ॥

अष्टनवतितम सर्ग ॥ ९८ ॥

विद्यारम्भ, पौगण्ड, उपनयन, व वेदाध्ययन ॥

दो०—असत्प्रपञ्च विनाशकर, भुवभर हर सुरनाँह ।
किये पदार्पण ज्यहि समय, पंचम वत्सर माँह ॥
तब दशरथ अवनी अवन, वशिष्ठादि द्विज वृंद ।
कुँअरन विद्यारंभ हित, किये नियत सानँद ॥
सो०—ऋषि वशिष्ठ परबीन, ऋषिमुनियुतशुभ दिवसमहँ ।
पदवंदन करि कीन, शिवनंदन की अर्चना ॥

पद्धटिका छन्द ॥

पुनि देवि शारदहि ऋषिउदार । पूज्यो विधिवत वेदानुसार ॥
प्रभुको कोमल कर पकरि हाथ । दीन्ही पुष्पांजलि नाय माथ ॥
दो०—पाटीपर कर धरि दिये, खरिया सन लिखवाय ।
अकारादि अक्षर सकल, राममुखहि कहवाय ॥
तीनिहु भाइन को बहुरि, कीन्ह्यो याहि प्रकार ।
विद्यारम्भन कर्म शुभ, कुलगुरु विगत विकार ॥
सो०—द्विज गण पूजन कीन, त्यहि पाछे दशरथ नृपति ।
भक्तिसहित पुनिदीन, अशनवशन धन रतनबहु ॥
ऋषि वशिष्ठ गृहमाहिं, पाठालय स्थापित भयो ।
सब बालक तहँ जाहिं, नितप्रति विद्या पढ़न हित ॥
पाठ पढ़न नित गुरु गृहमाहीं * जात जबै रघुबर गुरुपाहीं ॥
तब सप्रेम दशरथ की रानी * कांचन कलित अभूषण आनी ॥
घनश्यामल शरीर शृगारैं * तन मन धनछबि ऊपर वारैं ॥
श्वेतवसन लखि श्याम लतन मैं * उपमा आवत है यह मन मैं ॥
कलुष कदनि कालिंदी नीरहि * हंसपांति मनुकरि कलोल रहि ॥

दशरथ लाल लाल पट धारैं * तब यह उपमा सुकवि विचारैं ॥
उदयाचलगत दिनकर दीपति * नील शैल पै परि सोहत अति ॥
जब प्रभु पियरे अम्बर काहीं * पहिरि जात पढ़िबे गुरु पाहीं ॥

दो०-उर आवत तब त्यहि समय, उपमा यही अखण्ड ।
मरकत मणि पै मनु लसैं, सुबरन सुबरन खण्ड ॥
अतन लजावन केर तन, रतन अलंकृत श्याम ।
उर उपजत अवलोकि यह, भाव परम अभिराम ॥
मणि माणिक मुक्तादि मनु, तीर्थ यात्रिगण आहिं ।
ज्योति प्राप्ति हित ते भ्रमत, प्रभुतनु तीरथ माहि ॥
बाम भुजा बिच पढ़न की, पुस्तक सकल दबाय ।
मसि भाजन कर मैं लिये, लेखनि काननलाय ॥
सेवाहित सेवक सहस, यदपि रहत प्रभुपाहिं ।
तदपिनित्ययहिविधिपढ़न, गुरुशाला कहँ जाहिं ॥
राजमार्ग शोभित करत, तीनिहु भाइन साथ ।
कबहुँ मंद द्रुतपद कबहुँ, जाहिं पढ़न रघुनाथ ॥

रथोद्धता छन्द ॥

जाहि लोकशिक्षक प्रमानिये । ताहि लोक शिक्षा यों जानिये ॥
ज्यों समुद्र जल बीचि बीचहीं । वारि वर्षणहि व्यर्थ मानहीं ॥

मालिनी छन्द ॥

तदपि जगत शिक्षाहेत साकेत बासी ।
हितकर सबहीकी राहनीकीनिकासी ॥
नित गुरुपद बंदैं विश्व के वंद्य ह्वै कै ।
ग्रहण करत संथा वाहि मैं चित्त दै कै ॥

दो०-अष्टादश भाषा विविध, काव्य व्याकरण न्याय ।

दर्शन आदिक शास्त्र षट, राजनीति समुदाय ॥
चौदह दिनही में पढ़े, सांगोपांग सलील ।
चारिहु कुँअर नरेश के, सुन्दर वेष सुशील ॥
सो०—तब प्रभु जगदाधार, सहपाठी बालक गणन ।
अग्रिम पाठ विचार, लगे करावन आपुहि ॥
आवत गुरु पहँ नाहिं, जबकोउ बालक पढ़नहित ।
गहि लखत त्यहि काहिं, तब ताके घर जाय कै ॥

पंकअवलि छन्द ॥

काहू दिन दशरथ नरपति वर । लेत पाठ परिचय रघुवर कर ॥
रामचन्द्र पितु केर प्रश्न सुनि । उत्तर उचित देत तत्क्षण पुनि ॥
नाना भाँति फेरि भव भय हर । व्याख्याकरत विचित्रमनोहर ॥
पातंजलि वेदान्त सांख्यमत । आननेन्दु अमृत सम वरषत ॥

अचलधृत छन्द ॥

ज्यहि सुनि नृपति सदसिकर बुध जन ।
अति अचरज उर करत चकित मन ॥
अलप वयस महँ लखि सुत मति अति ।
लहत अतुल सुख दशरथ नरपति ॥

गई निकसि तनुते लरिकाई * वय पौगंड आगमन पाई ॥
चारिहु कुँअरन के मृदु अंगनि * डलही और ओपमन मोहनि ॥
वक्षस्थल विशाल ह्वै आये * सिंह संहनन कंध सोहाये ॥
नासा शुक आनन अनुहारी * उन्नत चिक्कण जनमन हारी ॥
नील नलिन श्रीमोचन लोचन * कृपा कटाक्ष हरनसबशोचन ॥
अरुणअधर अरविंद दीन्हदलि * दाड़िमबीजसदृशदशनावलि ॥
नव किसलय सम मृदुल हथोरी * लखतलेत हरिमन बरजोरी ॥

मृदुमुसुकानि मनोहर विलसति ❋ पूरणचन्दचाँदनिहिबिहँसति ॥

वसन्ततिलका छन्द ॥

हीराजड़े युगुल कुण्डल कानसोहे ।
आभा कपोलन परी मन लेतमोहे ॥
माथे लसै तिलक कुंकुम को सोहायो ।
भ्रूचाप पै विशिख मैन मनौं चढायो ॥
नीके कपोल युग गोल अमोल भ्राजैं ।
मानौं मनोज गृह दर्पण द्वै विराजैं ॥
तैसे मयंक छबि आनन जीति लीन्ही ।
इन्दीवरै पदहु की पदवी न दीन्ही ॥

मस्तक परम रुचिर रुचिकारी ❋ मणि मुक्तामय पाग सवाँरी ॥
कारु कार्य संकलित ललितछबि ❋ अंग रक्षिणी अंग रही फबि ॥
कंध पीत परिधान सोहायो ❋ कबहुँअरुणकहुँसितमनभायो॥
कटितट कनक कलितकटिबंधन ❋ रत्नखचित विलसतमनमोहन ॥
लखि असरूप रुचिर सुखकारी ❋ वारी होत नगर नर नारी ॥
पठन अंत गुरु कहँ शिर नाई ❋ दीन दक्षिणा जगत गोसांई ॥
वय पौगण्ड अवाई पाई ❋ प्रकटत नित नवकेलि सोहाई ॥
समवय सखन सहित सुख दाई ❋ खेलत सुखसों चारिहु भाई ॥

दो०—कर गुटिका अरु दण्ड लै, क्रीड़त जब ज्यहि काल ।
फेंकत रोंकत अरु हनत, गुटिकहि दशरथ लाल ॥
स्तंभ भित्ति जितही परै, गुटिका घात कराल ।
सो कितनहु होवै सुदृढ़, चूर्ण होय तत्काल ॥
वासव प्रेरित वज्र के, लगे कठिन आघात ।
होत यथा चूरण भये, शैल शिखर को पात ॥

सो०—मल्ल युद्धहू माहिं, कोउ सखा मण्डल बिषे ।

समबलनाहिं दिखाहिं, पावैं पारहि जो लरत ॥
परसब कर उत्साह, अधिक होन हित श्रीरमण ।
करि यह प्रण निर्बाह, होत पराजित जानि कै ॥
जो हारहि सो बाल, जीतन हारे बालकहि ।
लै जैहै तत्काल, शत पद कंध चढ़ाय कै ॥
जबहारहिं दशरथ सुखदाई * तब विजयी बालक द्रुत धाई ॥
राजकुमार जानि तिन काहीं * संभ्रम करत न कछुमनमाहीं ॥
सत्त्वाकर धरि शिर रघुबरके * चढ़त कंधपर श्यामसुँदर के ॥
प्रभु विहँसत प्रण पूरण करहीं * मानव तनु चरित्र अनुसरहीं ॥
कबहुँ बनत अवनीपति रघुबर * बैठत कृत्रिम सिंहासन पर ॥
तब बनि २ बैठ सब बालक * कोउ मंत्री कोऊ पुरपालक ॥
कोउ सूत मागध बन्दीबर * कोउसचिवसैनिकअनुचरचर ॥
खड़ो कोउ शिर छत्र लगाये * चँवरडोलावत कोउसुखपाये ॥
दो०—पुनिकछु बालकगणबनैं, नगर निवासी लोग ।
करि बिवाद चलि रामपहँ, ठाढ़करत अभियोग ॥
सो०—मंत्रीयुत समवेत, करि बिचार रघुवंशमणि ।
उचित दण्ड त्यहि देत, जो दोषी ठहरै दोउन ॥
कबहुँ श्रीरमण गुणगण मंडित * बनिदिग्विजयी पूरण पंडित ॥
निज सहपाठी सखन बुलाई * ठानत शास्त्र बाद रघुराई ॥
नाना शास्त्र प्रसंग उठाहीं * उत्तर प्रत्युत्तर तिनमाहीं ॥
कोष व्याकरण न्याय पुराना * अलंकार साहित्य प्रमाणा ॥
दर्शन बैशेषिक अभिधाना * मीमांसादि शास्त्र सब नाना ॥
होत तबै राघव बश माहीं * कठपुतरी समान दरशाहीं ॥
लक्ष्य न होत अमोघ रामकर * बिदितकरत यह समाचारवर ॥
कछुक काल महँ रघुबर बीरा * ह्वै हैं युद्ध चतुर गंभीरा ॥

दो०—इमि नित नवलीला करत, जन रंजन भगवान।
लखिपुरजनजननी जनक, लहत प्रमोद महान॥
सुतन उपनयन योग्यलखि, एक दिवस नरनाथ।
निज कुल गुरुहि बुझाइ कै, कह्यो जोरियुगहाथ॥
सो०—कुअँरन कर उपनैन, करहु जो आयसु देहु प्रभु।
कह मुनिवरतप ऐन, यह विचारभलसकलविधि॥
तब शुभदिन ठहराय, गणकनसहित बिचारिमुनि।
दीन्ह्यो नेवत पठाय, बन्धु मित्र भूपति गणहि॥

हरिप्रिया छन्द।

नृपकर आदेश पाय सचिव घोषकन बुलायडौंड़ी दीनी फिराय सकल नगर माहीं। फैलत यह समाचार प्रयत अवधपुरी मँझार उमँग्यो आनँद अपार वरणिजात नाहीं॥ साजे निज २ अगार कदलिखंभ द्वार २ सुरभित सुमहार चारु बंधनवार सोहैं। कारु कार्य खचित केतु फरहरात प्रतिनिकेत ज्यहि विलोकि रतिसमेत रतिपति मनमोहैं॥ पुरमधि यत हाटबाट मुख्य २ सरयुघाट अद्भत सुविचित्र ठाट शिल्पि रचिबनाये। चन्दातप ठाम २ तने कसे तसर दाम झालर मुक्ता ललाम देखत मनभाये॥ लै लै दलबल अशेष देश देश के नरेश कीन्हे सुन्दर सुवेष अवधमाहिं आये। गायक नर्तक प्रसिद्ध द्विजमुनि ऋषियोगि सिद्ध बंधीमागधसमृद्ध सभामधि सोहाये॥ गृहमधि विरच्यो भुआल शुभमख मंडप विशाल खचित बिविध मणिन जाल बिधिवत सबभांती। नरेन्द्र केसु अंगना आवत जात अंगना बिविध रंगकी उमंग अंग ना समाती॥ बीन बांसुरी मृदंग ढका डफ ढोल भृंग भेरी मर्दल सुचंग बाजत सुखदाई। होत कतहुँ नृत्यगान कोई थल अशन पान कतहूँ सन्मान दान उर मधि हुलसाई॥

दो०—यहिविधिआनँदमचिरह्यो, चहुँ दिशिनगरमँझार ।
आयोशुभ उपनयन कर, नियत अभिलपित बार ॥
तब नान्दीमुख श्राद्धशुचि, करि सभक्ति नरनाह ।
किय उपनयनारंभकृति, विधिवत सहित उछाह ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

बहुमूल्य वसनाभरण सुन्दर पहिरि नर सुन्दर गुनी ।
मुण्डनकियो प्रभुकेरशिर गावहिंसकलगुणकामिनी ॥
पुनि सर्वतीरथ नीर कांचन कलश भरि अन्हवायऊ ।
अगणित ललित भूषण वसन श्रीअंगमहँ पहिरायऊ ॥
पुनिकरनलागे हवनविधिवत पढ़ैं श्रुतिद्विजऋषिमुनी ।
रहिछाय चारिहुओर महँ स्वाहा स्वधा पावन ध्वनी ॥
करियाग सह अनुराग कुलगुरु प्रभुहि ढिग बैठाय कै ।
मृगचर्म संयुत मेखला मौंजी तिन्है पहिराय कै ॥
श्रुतिलागि मुनिबढ़भागि शुचिगायत्रिमंत्रहि दीन्हेऊ ।
धनिधन्यमुनिज्यहिजगतगुरुसहभक्तिनिजगुरु कीन्हेऊ
पुनिठाढ़भे भिक्षानिमिति प्रभु दण्डकर मधि धारिकै ।
त्यहिरूपकी शोभा अकथ मन थकितहोत निहारिकै ॥
कुनाल रहित प्रभुकेर सुन्दर शीश इमि छबि देरह्यो ।
कलधौत अंकित मनहुँ शालिग्राम चारुशिला अह्यो ॥
विधियुत गगन इव भाल ऊपर ऊर्ध्वपुण्ड्र बिराजहीं ।
उपवीत लोलित कंठमधि वर दण्डकर महँ भ्राजहीं ॥
सो हेरि किमि उपमा भनौं पर होत यह अनुमानही ।
अघपूर जनु क्षिति बहन सनद्धै श्रान्त शेष महानही ॥
जनदुख हरण सर्वेस सर्व शरण्य कर आश्रय गहे ।
अरु दण्डपाणि कृपालु तिनकहँ अभयमानहुँदै रहे ॥

प्रभुके मनोहर चारु कटि मधि पीत पट इमि भासही ।
सिन्दूर रंजित घनपटल जनु नीलनभपै बिलासही ॥
सबही पदारथ जगत मधि सुन्दर पदारथ सों मिले ।
ह्वै जात हैं पावन सोहावन रुचिर मन भावन भले ॥
यहि हेत मुंजा मेखला शशिथित शशक अनुहारही ।
प्रभुअंग महँअति छजत निरखतलजत मारअपारही ॥
धृत दण्ड झोरीप्रथम निज जननीनिकट प्रभु जायकै ।
"हे अम्ब ! भिक्षादेहि" कहइमिवचन पद शिरनायकै ॥

दो०—त्यहिक्षण सुतकरकांतियुत, शान्तरूप लखिरानि ।
छहरे आनंदाश्रु दृग, उठीं महा मुद मानि ॥
राशि २ धन मणि वसन, सुतहि समर्पण कीन्ह ।
तदनु बिमातागण सकल, प्रचुरविविधधनदीन्ह ॥

सो०—पुनि आमंत्रित भूप, बहुरि सचिव पुर प्रजागण ।
वहु धन रत्न अनूप, प्रमुदितचित अर्प्यो प्रभुहि ॥

रघुनन्दन त्यहि सब धन काहीं * अर्पेहु गुरुवशिष्ठ पद माहीं ॥
यहिविधि तिहुँकुँअरन नरनाहू * किय व्रतबन्धकृत्य सउछाहू ॥
पुनि षटरस भोजन मनभाये * सकलजननकहँअशनकराये ॥
धेनु दुधारि वसन धन नाना * दीन्हअसंख्यद्विजनकहँदाना ॥
पुनि ज्यहि भाँति पयोदगभीरा * वर्षि शुष्कतृण पै बहु नीरा ॥
नव अंकुरित करत पुनराई * तिमि स्वकोष नृप मुक्तकराई ॥
सकल याचकन बिन परिमाना * रजत हेम पट कीन्ह प्रदाना ॥
बहुरि निमंत्रित जनहि सनेहू * कीन्ह बिदा भूपति गुणगेहू ॥
पुनिभ्रातनयुत श्री रघुराई * लागे पढ़न वेद मन लाई ॥

षट्पद छन्द ॥

शिक्षा कल्प निरुक्त वेद वेदांग पुराना ।

धर्म अर्थ नय शास्त्र चिकित्सा शास्त्र निदाना ॥
गणनशास्त्र आदिकन माहिं तिहुँ भ्रात समेतू ।
कछुक कालहीमाहिं निपुण भे रघुकुल केतू ॥
यहिमाहिंकाहहैआचरज उदधिअंशजिमिसर्वजल ।
तिमिसकलज्ञानविज्ञानकेहैंसोइप्रभु आकरविमल ॥

नवनवतितम सर्ग ॥ ९९ ॥

कैशोर धनुर्वेद शिक्षा व मारीच का प्रथम पराभव ॥

दो०—अब अवधेश किशोर कर, वय किशोर सुखदैन ।
वर्णहिंज्यहि माधुरीलखि, नहिं अघात मन नैन ॥
रमारमण कर सुघरता, कायकान्ति अभिराम ।
दमकत मरकत मुकुरसम, अनुपम लोक ललाम ॥
सुन्दर तुंग तरंगमय, लोहित सागर न्याय ।
रेखायुत अरुणित प्रयत, पदतल विमल सोहाय ॥
कटिअतिक्षीणनिहारिज्यहि, केहरि डमरु लजाय ।
त्यागि धरणि लीन्हीशरण, शम्भुगौरिपहँजाय ॥

त्रिवलित उदर त्रिवर्ग स्वरूपा * नाभि सुधाह्रद सरिसअनूपा ॥
रोमावलि युत वक्षस तुंगा * व्याल जड़ित जनुभूधर शृंगा ॥
मत्त मतंग शुण्ड अनुहारी * बाहु विशाल विश्वभयहारी ॥
कर आँगुरि लखि चंप लजाई * रंजित नख प्रभात रवि नाई ॥
विमलनील शतदल सम पावन * शोभासदन वदन मनभावन ॥
कुंडल जटित लखत मन मोहै * काकपक्ष इमि दोउदिशिसोहै ॥
जनु चिर तृषाशान्तिहित राहू * शशिहिचूसि रहसहितउछाहू ॥
गोल कपोल मनोहर नासा * अरुण अधर सुन्दरमृदुहासा ॥

सुफल बीजसम सित रद पांती * कहत भदेस होय सब भांती ॥
अरुण नयन कर प्रभा निहारी * लज्जित होत कोकनद भारी ॥
दो०—मदनशरासन समयुगुल, भ्रुकुटिश्रवण परिमाण ।
श्रीकटाक्ष त्यहि सुधाविष, सक्त प्रखरतर बाण ॥
कोमल घुँघुवारे सुघर, चामरलांछित केश ।
अंग २ मणि आभरण, मुनिमन हारक वेश ॥

रोला छन्द ।

भूपति चारिहु सुतन मल्ल शिक्षा के हेतू ।
बुलवाये बहु मल्ल ख्यात बलपुंज निकेतू ॥
अनुज सहित प्रभु काहिं मल्लगण हिय हुलसाई ।
लगे सिखावन विविध कला कौशल निपुणाई ॥
यकविंशतिगति प्रथित अगतिगति काहिंबतावहिं ।
तारकब्रह्महि तारकादि यक त्रिंश सिखावहिं ॥
नित प्रभात सहभ्रात वीर धरिकसि रघुनाथा ।
करैं कठिन व्यायाम बली मल्लन के साथा ॥
पर जब करहिं प्रकाश कछुक बल श्रीरघुराई ।
तब सब भट ह्वै जाहिं शक्ति बिन पुत्तलि नाई ॥
तासु हेतु हिमगिरिहि मशक कहुँ सकत हलाई ।
उदधि केर हिल्लोल उदधिहीसन सहि जाई ॥
यहि हित हेरि अशक्त विपुल तनु मल्लन काहीं ।
लरहिं चारिहू बंधु एक एकन सँग माहीं ॥
प्रभुके सँग श्री भरत शत्रुहन लक्ष्मण संगा ।
भिरहिं करहिं बहु भांति मल्ल कौशल सउमंगा ॥
गैरिक मृत्तिक चूर्ण चारु सर्वांग विलेपित ।
केशदास दृढबद्ध वीर धटि कटि आच्छादित ॥

लम्प झम्फ गति दमकि देखि दामिनी दमंकित।
वाहु स्फोटन शब्द सोहिं त्रय लोक विकंपित॥
जब आलिंगन करहिं पूर्ण विक्रम प्रकटाई।
तब मधि परि रज सरिस लौह पिण्डहु ह्वै जाई॥
जकरि भुजासों भुजा जबहिं आकषण करहीं।
बद्ध मत्तकरि शुण्ड सरिस तिन भुज लखिपरहीं॥
दोउ कर सों धरि कंठ एक एकन ज्यहि काला।
करहिं भाल पै भाल घात प्रतिघात कराला॥
तब अनुभव उर होत तासु सुनि शब्द भयंकर।
मनहुँ होत संघर्ष युगुल गिरि केर परस्पर॥
ह्वै प्रभुकबहुँ अकेल अनुज तिहुँ ह्वै यक ओरी।
लरहिं करहिं बहु रंग हेरि मल्लन मति भोरी॥
अस्त्र शस्त्र विधान माहिं प्रभु रमानिकेतू।
भये निपुण यहि भांति तिहूँ भ्रातान समेतू॥
खड्ग चर्म को गहन रीति द्वात्रिंशत जाना।
षोड़ष विधके पाश व्यस्त धारण किय ज्ञाना॥
सप्त चक्रके भेद गदा धारण के द्वादश।
चारि शूलका रीति परशु तोमर की रस रस॥
पांच क्षेपणी भेद यंत्र के पांच विधाना।
सात प्रकारते समर माहिं संचलन कृपाना॥
मुद्गर पट्टिश भिंदिपाल पवि लगुड़ कि रीती।
चारि २ जे अहैं सकल सीखी सहप्रीती॥
षट प्रकार के बल बिभाग अरु व्यूहन रचना।
व्यूहन केर बहु विभेद दुर्गम संघटना॥
कूटयुद्ध की रीति अवस्कंदहि संस्थापन।

गज पदाति रथ बाजि चतुर्विध चमू प्रयोजन ॥

चौपाई ॥

गज आदिनकोस्थान निरूपण * करन महासंकुल संकुल रण ॥
षट विधिके दुर्गम दुर्गन कर * संपादन निजसैन्यहिसुखकर ॥
स्वल्प सैन्यसन बहु रिपुदलकहँ * संहारण उपाय संगर महँ ॥
आस पास सन्मुख अरु पाछे * चारि ओर ते रिपुदल आछे ॥
करै आक्रमण घेर समर मधि * तब निजसेनारक्षणकी विधि ॥
सात अंग जे व्यूह समूहा * तिनकरनिर्णयअतिव दुरूहा ॥
इत्यादिक रण कला मँझारा * भये पारगत चारि कुमारा ॥
अद्वितीय अनुपम धनुधारी * शिक्षितरणअजेय जयकारी ॥

दो०—रामचन्द्र लक्ष्मण सहित, लिये कुसुममय चाप ।
बन बिच बिचरन अब लगे, हरत सुरन उर ताप ॥
व्यघ्रसिंह बाराह ब्रक, शश चमरी गो मायु ।
बन विडाल मल्लूक हरु, अरु तरक्ष बातायु ॥
जो आवत प्रभु सामुहे, सो अमोघ शर घात ।
लहि महि महगिरि तत्क्षणहिं, परमधामकहँजात ॥
रघुबर कर अद्भुत प्रबल, विक्रम क्रम क्रम भूरि ।
दूरि२ देशन रह्यो, अति प्रसिद्ध ह्वै पूरि ॥

बिप्र देव द्रोही दानवजन * निरखिभये अतिहीशंकितमन ॥
हेरन लगे छिद्र प्रभु केरे * रूप अलक्षित धारि घनेरे ॥
तिनको भाव जगत्पति जानी * लखण साथले शारंगपानी ॥
दुरि २ केस घन गहनबन * मृगयाहितविचरत कौतुकसन ॥
एक दिवस निर्जन अंधियारे * कानन पहुँचे नृपति दुलारे ॥
विचरत इत उत बन की शोभा * सुन्दर मनहर लखिमनलोभा ॥
तहि समय मारीच निशाचर * तनय ताड़का केर भयंकर ॥

देखे राम लखण अभिरामा * श्याम गौरवपुअतिव ललामा ॥
दो०-जानि सुअवसर दैत्य तब, मायावी मारीच ।
बनि कुरंग विचरन लग्यो, अति समीम महँ नीच ॥
ब्रह्मादिक बिबुधेश वश, किय ज्यहि माया गूढ़ ।
ताहि तुच्छ मायान सों, चहत लुभावन मूढ़ ॥
सो०-लखिमायाकृत काय, दानव कहँ दशरथ सुवन ।
शर चढ़ाय मुसकाय, धनु टंकारि दियो सहज ॥
सहस कुलिश आघात, सदृश भयो ज्याधात ते ।
शब्द न भुवन समात, सात लोक प्रतिध्वनि हुई ॥
कंपि उठ्यो कानन त्यहि काला * सुनिसो स्वनमहानविकराला ॥
भयो भूरि भयभीत सुरारी * निज कर्तव्य भूलि हियहारी ॥
जानि क्षेम यहि माहिं अभागा * लेत उसाँस प्राण लै भागा ॥
मिथिला पुरी जनक रजधानी * साँस लीन्ह तहँ निर्भय मानी ॥
लखि मारीच केरि कुशलाता * भये तुष्ट वृन्दारक व्राता ॥
दश मुख निधन सहज महँ होई * यहिसहाय लहि असमन जोई ॥
बीतिगई दुपहर यहि माहीं * दोउ भ्रातन भोजनकियनाहीं ॥
भूख प्यास मारग श्रम कारण *भयेमलिनमुखत्यहि क्षणलक्ष्मण
दो०-जिमि तुषार बिनिपात ते, इन्दीवर कुम्हिलाय ।
लखि लघुभ्रातहि दीनइमि, व्यथित भये रघुराय ॥
सह सनेह बोले बर बैना * अवर बंधुसन जन सुखदैना ॥
एक दिवस के श्रम महँ भाई * यदि तुम विकल भये इत आई ॥
तौ द्विज गो देवन को त्राणा * हरण प्रबल शत्रुन के प्राणा ॥
भूमिभार अपहरण अनीती * देवकाज करिहौ क्यहिरीती? ॥
ज्यहिहितलीन्ह मनुज अवतारा * चक्रवर्ति नृप वंश मँझारा ॥
इमिकहि सुंदरमुख लक्ष्मणकर * पोंछ्योनिजकरसोंकरुणाकर ॥

पुनि सुपक्क धात्रीफल लाये * वंधुकाहिं निज हाथ खवाये ॥
क्षुधा तृषा श्रम मिटे त्यही क्षण * लह्यो अनँद सुमित्रानन्दन ॥
दो०—उभय भ्रात आन्द सों, गवने सरवर तीर ।
जित विकसित अरबिंदवर, शोभित निर्मल नीर ॥
चक्रवाक शुक सारिका, बोलत मधुरे बोल ।
कारंडक कलहंस कुल, जहँ तहँ करत कलोल ॥
तहँ दोउ वंधु चरण कर धोई * मुखमार्जन करि सबश्रमखोई ॥
करत भये विश्राम तहाँई * सुन्दर ठौर अनंदहि पाई ॥
यहिअवसर विरंचि सुरपतिसन * बोले मृदुलमनोहर वचनन ॥
तुमजानत शचीश!यहिकालहि * नरतनु धारिविष्णु विचरहिंमहि
यदपि छिपीनहिंतिनकी महिमा * भक्तनसनगुणगणकीगरिमा ॥
तवपालन हितनिज जनवचना * करहिंमनुजलीलाअनुसरना ॥
तुम्हैं रहस्य विदित यह सारा * हरन हेतु महि भार अपारा ॥
नृप दशरथ के भवन मँझारा * प्रभु लीन्ह्यो पूरण अवतारा ॥
दो०—कठिन चतुर्दश वर्ष लगि, फल मूलादिक खाय ।
बनबिच बसिहैं श्रीरमण, बिबुधकाज हितजाय ॥
सो०—मनुजरीति अनुसार, अबहीं प्रभुकर बालबय ।
महिमहँ करत विहार, जनक जननि कहँमोददै ॥
निराहार प्रथमहि रघुनाथा * कीन्ह्योआजु प्रबलरिपुसाथा ॥
रणसंघर्ष सहर्ष कृपाला * यासों जाहु बेगि यहिकाला ॥
नर तनुकृत उपजी तिनकाहीं * क्षधा पियासा कानन माहीं ॥
ताहिं निवारण कर उपाया * सत्वर करहु जाय सुरराया! ॥
सुनि विरंचि के वचन सोहाये * सुरपति द्रुतहिअवनिमहँआये॥
कीन्ह अलक्षित होय पुरंदर * सरवर स्थितसरोज अभ्यन्तर ॥
तृप्तिकरणि श्रमहरणि रसालय * प्रचुरसुधा की सृष्टिशक्तिमय

यहि अवसर महँ दशरथनंदन * लक्ष्मण सन बोले जगवंदन ॥

दो०—चलहु बंधु ! सरसी निकट, सरसीरुह रसखानि ।
भोजन करिये यहि समय, शीतलअतिसुखदानि॥

सो०—यहकहि दोऊ भाय, इन्दीवर भक्षण कियो ।
स्वाद अमृतरस पाय, भये अतिव कौतुकितमन ॥

करिके सरस सुधारस पाना * अतिशयतृप्ति लही भगवाना ॥
तदनन्तर तरु पत्र बनाई * सुन्दर सुखद सेज हरषाई ॥
तदुपरि शयन कीन्ह दोउ भाई * जनक अंक सोये जनुजाई ॥
इत अभिराम राम छबि प्यारी * बिन देखे व्याकुल महतारी ॥
तिनते अधिक भूप परमातुर * सुतहिलखनलालसाअतिवउर॥
बिना समय करिसभा बिसर्जन * अन्तःपुर आये चिन्तित मन ॥
देखीं द्वारदेश महँरानी * विह्वल रुदत नयनजलआनी ॥
मुख सरोज की कान्तिमलीना * राहुग्रस्तजिमिशशिछबिछीना॥

दो०—नृप दशरथ सन व्यग्रह्वै, रामजननि कह बैन ।
कित मम जीवन प्राण हैं, राम नयन सुखदैन ? ॥
पय पायस नवनीत नव, तांबूलादि अहार ।
धरे वैसही हैं सबै, प्रियतम! भवन मँझार ॥

सो०—यह सुनि नृपमुख आय, निकटनिराशा भावकृत ।
रही कालिमा छाय, नैनन अँधियारो भयो ॥
अति विषएण नरपाल, कह्यो दुखितचितरानिसन।
संभव है यहि काल, अहैं राम कैकेयि गृह ॥

पुनि द्रुतपद कैकेयी भवना * राजा अरु रानीकियगवना ॥
कातर कएठ कह्यो अतुराई * रामहि हमहिं देहु दिखराई ॥
बिनदेखे कुँअरहि यह प्राणा * व्याकुलचाहत करनप्रयाणा ॥
यह सुनि चकित कैकयी रानी * हाहा! करि बोलीं यह बानी ॥

नहिं निरख्यो हमहूँ दुखदारन * आज चारु रघुबर चन्द्रानन ॥
औचक भयो हाय! विधि वामा * हमसों बिछुरिगये घनश्यामा ॥
खोजहु कहँ हैं लखण कुमारा * तितही ह्वै हैं राम उदारा ॥
परछाहीं समान सँग रहहीं * क्षणभटकोबिछोह नहिंसहहीं ॥

दो०—इतहि भरत शत्रुघ्न दोउ, भ्राता विकल महान ।
नगर डगर घरघर करत, अग्रज अनुसन्धान ॥

सो०—सकल सखा गण पाहिं, खोज लगायो जाय कै ।
सबै कह्यो हम नाहिं, जानत दोउभाई कहाँ? ॥

तीनिहु रानि विकल भइं कैसे * वत्स विरह ब्याकुल गो जैसे ॥
करत निरन्तर कर आघाता * शिरउरमहँ भूपति अरुमाता ॥
बहत बारि दोउ नयन मँझारी * दशरथ कहत पुकारिपुकारी ॥
हाय ! आजु अन्धकऋषि शापू * दिखरायो निज प्रबलप्रतापू ॥
हाय ! बिनादेखे घनश्यामा * रामकुँअर आनन अभिरामा ॥
ह्वै हौं कालकवल क्षण माहीं * काहू बिधि उबार अब नाहीं ॥
पुत्र विरह को शोक कराला * चाहत ग्रसन हमहिंयहिकाला ॥
आजु मृत्यु दारुण दुखकारी * विस्वीवाम विरंचि हमारा ॥

दो०—रे विधि ! शंक न मृत्युकी, करत किन्तु मनमोर ।
एकबार दिखराय सुत, पूरण करु प्रण घोर ॥

सो०—प्रिय सुतकर मुखचंद, मृत्यु समय महँ हेरि कै ।
करिहैं सहित अनंद, प्राणविसर्जन सत्य हम ॥

अति आसन्न मृत्यु को लक्षण * दशदिशि अंधकारमययहिक्षण
देखिपरत दुखप्रद हम काहीं * तीनिलोक सूने जनु आहीं ॥
पुत्रराम ! मम आज्ञा कारी * लखणलाल!लोचनसुखकारी ॥
दीनदुखी निज जनक निहारे * आवतदया न तुमकहँप्यारे ! ॥
एकबार मम अंकहि आई * पितुऋण उऋणहोहुदोउभाई ॥

अति सुकुमार नरेश कुमारा * खोजन कहँसब नगरमँझारा ॥
अश्वारोही सैनिक धाये * चारि ओर नृप केर पठाये ॥
रानिनकी आरत ध्वनि पूरित *अन्तःपुर ह्वै गयो दुखितचित ॥

दो०-सकल राजधानी विषे, हलचल मची महान।
शोकांकितअतिलखिपरत, सब के मुख मुरझान ॥

सो०—यहि अवसर भइ सांझ, बेला शीतल देत सुख।
प्रविशे तब पुरमांझ, मुदितचित्त रघुबर लखण ॥

प्रभुहि दूरिते लखि घर आवत * भरत शत्रुहन आये धावत ॥
राममातु अरु पितु कहँ आई * दीन्ह्यो शुभ संबाद सुनाई ॥
सुनतहि दशरथ अरु तिहुँमाता * स्रवतनयनजलपुलकितगाता ॥
देह गेह की सुरति बिसारी * सुत मुखदेखन चले सुखारी ॥
एक साथही नृप अरु रानी *लखिश्यामलछबिअतिसुखमानी
गोद उठाय लियो उर लाई * परम सनेह बरणि नहिंजाई ॥
चूम्यो चन्द्र वदन बहुबारा * बोलेयहि विधिअवधभुआरा ॥
वत्स ! हमारी सुरति विसारे * कहां रहे तुम प्राण पियारे ! ॥

दो०—हमनिर्धन की निधि तुमहिं, नयन पूतरी दोय।
यकपल बिन देखे तुमहिं, प्रलय जगत जनु होय ॥
भरत शत्रुहन बंधुदोउ, शोभन शील उदार।
प्रभुपद वंदन कीन्ह पुनि, सादर प्रीति अपार ॥

सो०—पुनि गृह गईं लेवाय, राम लखण कहँ कौशिला।
भोजन दोउन कराय, भईं स्वस्थमन मोदयुत ॥
जानि सकल जन सोय, कृत्तिवाससुत विरहदुख।
दशा बूझि सक जोय, सुरति लुप्त ज्ञानीन की ॥

शततम सर्ग ॥ १०० ॥

गुहक सम्मिलन ॥

दो०—यदिकेवलआकाश मधि, निशिपति करतप्रकाश ।
यदिकरतीं नहिंऔषधी, निजगुणनिचयविकास ॥
जलद पटल तेजलन यदि, वर्षत धरणि मँझार ।
तो यह सब जिमि सबन ढिग, होते महा असार ॥
तिमि यदि पूरण ब्रह्मविभु, श्रीपति जगत निवास ।
सगुण भावते विश्व महँ, करते नाहिं विकास ॥
तौ तिन नित्यानन्द कर, पतित उधारण नाम ।
होतहि यक कोषही कर, अलंकार निष्काम ॥
सो०—हैं समान अधिकारि, नीच ऊँच प्रभु प्रेम के ।
राम चरित्र मँझारि, त्यहि प्रमाण दर्शित अहै ॥
नृप दशरथ यक बार, हेरि अमावस तिथि निकट ।
अस मनकीन्हविचार, होई त्यहिदिन रविग्रहण ॥
जीवन निधि कुँअरन लै संगा ❋ जाय करहुँ अवगाहन गंगा ॥
त्यहितट सुतन हेतु कल्याना ❋ देहुँद्विजनवहुधन मणिदाना ॥
अस विचारि उरमधि अवधेशा ❋ सैनसजनहित दीन्ह निदेशा ॥
पाय राजआयसु तत्काला ❋ सजीराघवी चमू विशाला ॥
कुँअरनयुत चढ़ि सुन्दर याना ❋ सुरसरिदिशिनृपकीन्हपुयाना ॥
भरे रुचिर पट धन मणि नाना ❋ चलेशकट सँगबिन परिमाना ॥
यूथ २ मदमत्त मतंगा ❋ हृषत तरल गति तुंग तुरंगा ॥
रथ पदाति कर धृत धनु बाना ❋ शेलशूलअसिपरशुकृपाना १ ॥
चल्यो कटक सँग बिन संभारा ❋ बाजत बाजन बिविधप्रकारा ॥
विपुल वली दल कलरव घोरा ❋ पूरति ध्वनिनभक्षितिचहुँओर ॥

दो०—यहि प्रकार कुँअरन सहित, दिवसराज कुल केतु ।
तीरथराज प्रयागदिशि, गवने हर्ष समेतु ॥
त्यहिक्षणपूरणकलाधर, सरिस अतुल द्युतिमान ।
रहे जाय नभपंथ ते, नारद तपो निधान ॥
सो०—मृदुध्वनि बीन बजाय, सहित तान लय मूर्च्छना ।
राम नाम मन लाय, प्रेम मग्न गायन करत ॥
प्रभु समेत भूपहि ऋषिराई * सुरसरि ओर जात लखिपाई ॥
नभते उतरि भूमि महँ आई * पूँछेहुकित नृप रह्योसिधाई ? ॥
देवऋषिहि लखि नृपगुणखानी * करि प्रणाम बोले इमिबानी ॥
हे ऋषिवर ! मैं सुतन समेता * जात गंग अवगाहन हेता ॥
यह सुनि विहँसि विरंचिकुमारा * भूपतिप्रति इमि वचनउचारा ॥
सुनिय भूप ! तुम सम अज्ञाना * लखियतजगत माहिंनहिंआनो
रामचंद्र मुखचन्द्र निहारी * तबहुँ तीर्थ अभिलाष तुम्हारी ॥
तनयभाव ते जोय कृपाला * प्रकटे तव गृह माहिं नृपाला ॥
तिनकहँ काह जानि तुमलयऊ * यहिप्रकार जो तवमतिभयऊ ॥
जानत तुमहिं रह्यों मैं भूपा ! * एक रत्न पारखी अनूपा ॥
दो०—परसब रत्नमौलिमणि, शुचि चिन्तामणि जोय ।
त्यहि तुमजानेहु कांचइव, नृपति ! मोहवशाहोय ॥
जौन विश्व तारण तरण, पालन सिरजनहार ।
ताहि मोहवश लखि रह्यो, निजकुमारअनुहार ॥
सो०—श्रीपति जगदाधार, रामहि के पदपद्मते ।
प्रकटीं अवनि मँझार, पतित पावनी जान्हवी ॥
जप तप व्रत मख दान, चारि पदारथ आदि के ।
धाता श्री भगवान, तव समीप राजत अहैं ॥
गलथित रत्नहार वरकाहीं * खोजत भ्रमवश इतउतमाहीं ॥

यासन मानहु कथन हमारा * जाहु भूप ! फिरभवनमँझारा ॥
बहुरि जाय ज्यहि मारग रहेऊ * सो पथ महाबिपदप्रद अहेऊ ॥
कछु आगे बढ़तहि तत्काला * होई विदित तुम्हैं महिपाला ! ॥
याते फिरहु न अग्र प्रयानहु * रामहि सकलतीर्थफलजानहु ॥
यहिविधिसुनिमुनिवरमुखबानी * लखेहु रामदिशिनृपगुणखानी॥
बूझि नृपति इंगित इमि बैना * कहन लगे प्रभुराजिव नैना ॥
इनकर वचनसुनहुपितु ! नाहीं * काह न विदितअहै तुमकाहीं ॥
प्रयत धर्मपथ रोधनहारे * भ्रमत भंड बहु धरणि मँझारे ॥

दो०—सुरधुनिकरमहिमाअमित, जानि सकत हमकाह ।
चलियविशुचितनमनकरहिं, करिसुरसरिअवगाह॥
सुनि रघुबरमुख इमि वचन, नारद मुनि तपऐन ।
गे सिधारि प्रभु ओर करि, सहितभाव यकसैन ॥

सो०—तब तहँ ते नरनाह, सहित कटक गवनत भये ।
पहुँचे सहित उछाह, शृंगवेरपुर के निकट ॥
देखेहु तहं नरनाथ, अस्त्र शस्त्र सज्जित गुहक ।
घनी अनी लै साल, पथरोधे ठाढ़ो अहै ॥

सोलखि नृपयह कीन्ह विचारा * बिनासमर अब नहिंनिस्तारा ॥
तब निज यान बढ़ाय नृपाला * गयेगुहक सन्मुखत्यहिकाला ॥
भूपहि हेरि गुहक बलधामा * हृदयमाहिं करि गुप्त प्रणामा ॥
प्रकट सदर्प कहत इमि भयऊ * काहसमुझिहमकहँतुमलयऊ ॥
जो हमार पुरग्राम नशाई * लीन्ह्यो आपनि पन्थ बनाई ॥
जाहु यही पथ बारहि बारी * लहत कष्ट अति प्रजाहमारी ॥
गंग नहान हेतु तुम काहीं * काह अपर कोइ पथ है नाहीं ॥
अब यहि मांह कुशल नरनाहू * धरयोनपद अगारिफिरिजाहू ॥
नतु सुरसरि के विनिमय माहीं * शोणित नदी लाहुतुमकाहीं ॥

यहिहित भूप! कही मम मानहु * अपर पंथ सों गंग पयानहु ॥

दो०—यदि यहि पथसों जान की, बड़ि इच्छा तुम काहिं ।
तौ निज ज्येष्ट कुमार कहँ, लावहु ममढिगमाहिं ॥
लखहुँ काह सो करिसकत, असकहि गुहबलधाम ।
ऊँचे स्वरते टेरेऊ, राम केर लै नाम ॥

सो०—तब नृप समर प्रवीन, मकरव्यूह विरच्यो तुरत ।
तासु उदर थल कीन, थामन मत्त मतंग दल ॥
कक्षमाहिं रथ व्रात, हयारोहि दोउ पार्श्व महँ ।
मध्यव्यूह सहभ्रात, राखि प्राणनिधि रामकहँ ॥

धारि पाणि को दण्ड विशाला * बढ़े समर हित अवधनृपाला ॥
उतहि निषाद पतिहु धनुधारी * आवस दर्प महीप अगारी ॥
रण तत्पर गुहकहँ नृपहेरी * भइ चिन्ता इमि हृदय घनेरी ॥
संगर किये अधम सँग माहीं * काहसुयश मिलिहै हमकाहीं ॥
दूजे समर हार अरुजीती * प्रथम न काहुहि होत प्रतीती ॥
भई नीचसन यदि कहुँहारी * तौ मिटि गइ मर्याद हमारी ॥
जाहु बराय तबहु हम काहीं * यह उदंड खल छोंड़िय नाहीं ॥
अजय विजय दोउमाँह गलानी * कियोनभलऋषिसीखनमानी ॥

दो०-यहि अवसरललकारिऊ, गुहक अवधपति काहिं ।
घोर समर आरंभ तब, भयो उभय दल माहिं ॥

चामर छन्द ॥

दोउ ओर केर बीर सिंह से हुंकारहीं ।
कान के प्रमान चाप तानि बान मारहीं ॥
भांति२ के नराच वेगि सों प्रहारते ।
संसनात बाण ज्यों भुजंग फुफ्कारते ॥
साजि २ अस्त्र राजि भिल्लराज वर्षई ।

तासु अस्त्र ते भई दशौ दिशा निशा मयी ॥
कोप कै महीपहू शतेक वाण मारेऊ ।
शत्रु के समस्त अस्त्र काटि भूमि डारेऊ ॥
सो विलोकि कै निषाद युद्धमत्त ह्वै गयो ।
राघवी अनीकि नीहि जर्जरांग कै दयो॥
हेरि तासु लाघवी विचित्रयुद्ध की गती ।
विस्मितै महाभये हृदय मंझार भूपती ॥
वीर अग्रगण्य तुल्य योद्ध ताहि जानि कै ।
लागि त्यागिबे सुदिव्य अस्त्र खानिखानिकै ॥
थूल कर्ण कर्णिकार सौम्य इन्द्र जालही ।
आगनेय सिंहदेत मोहमै करालही ॥
सौर आदिकै जिते महस्त्र भूप मारेऊ ।
ते सबै निमेष मा निषादराज बारेऊ ॥
एक एक के प्रहार भूप भिल्ल राजहीं ।
शोणिताक्त काय गैरि काद्रि न्याय भ्राजहीं ॥

दो०—महा भयंकर ह्वै उठ्यो, संगर अति दुर्वार ।
छाव प्रखर शरनिकर ते, चारिहुदिशिअँधियार ॥
वाण जाल चहुँ ओर महँ, दिय निषादपति छाय ।
पिंजर वद्ध शकुन्त दल, सम नृप कटक लखाय ॥

सो०—तब करि कोप कराल, भूप पाशुपत अस्त्र लै ।
किय प्रयोगतत्काल, वारिसक्यो नहिंत्यहिगुहक ॥
ह्वै हताश निरुपाय, त्यहि महास्त्र सन वद्ध तनु ।
गिरयो गुहक घहराय, शृंखलवद्ध मृगेन्द्र सम ॥

त्यहि थल ताहि छांड़ि नरनाहा * आये स्वदल मध्य सोत्साहा ॥
इत निषाद पति हृदय मँझारा * लग्योकरन यहिभाँतिविचार ॥

ज्यहिहितनृपदल अग्निमँझारी * निजकहँहुतेहुँशलभअनुहारा ॥
भयहु न दरश लाहु मोहिं तासू * पर अबहीं जनि होहुँनिराशू ॥
पुनि यकयुक्ति चिन्तिसहदापू * एक चरणसन गहिकरिचापू ॥
द्वितिय पाँय सों करि संधाना * तजन लागखर शर बलवाना ॥
बहु हय गज पदाति समुदाई * त्यहिअघातसन भेक्षितिशाई ॥
इमि त्यहिकी रण कलानिहारी * भयेसकलजन विस्मित भारी ॥
भरत धाय कह प्रभुढिग जाई * चलि देखिय कौतुक यक भाई ॥
ज्यहिविधिसोंहिगुहक बलवाना * करत अमोघ विशिखसंधाना ॥
सो अद्भुत शिक्षा जगमाहीं * देखा सुना कतहुँ कोइ नाहीं ॥
यह सुनि बंधु समेत कृपाला * गुहक समीप गये तत्काल ॥

दो०—प्रकृत सुभक्त निषाद पति, प्रभुकर रूप निहारि ।
दिव्यविभव विभुकरप्रकट, ताके हृदय मँझारि ॥
पुलकावलि अग अंग छई, देह दशा विसराय ।
भवमोचनदिशिलखिरह्यो, लोचननिमिष बिहाय ॥

सो०—बाल सुलभमृदु बैन, बिहँसि गुहकसन कह्यो प्रभु ।
एतिक श्रम बुधिऐन, क्यहि निमित्ततुम करि रहे?॥
तब निषाद मतिमान, अधमयोनि धारिबे कर ।
कारण कीन्ह बखान, दीन्हशाप ज्यहि हेतु पितु ॥
बहुरि प्रफुल्लितगात, निज सुबिधावत प्रेमयुत ।
करिप्रभुपद प्रणिपात, करनलाग यहि भँतिनुति ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

जय दीनदुख दारुण दारण कारणरहितकरुणालयं ।
अशरणशरण भवभरण पोषणकरणविभु मायामये ॥
जपयाग योग विराग थल प्रभु भक्तवत्सल श्रीहरे ।
मुनिजनन शुचि विश्राम ठामअकाम साम अगोचरे ॥

जय ज्ञानमय ऋतनिलय संतत सदयहिरदय मयपर ।
निर्गुण सगुण अद्वैत तारण तरण गुणगण आगरे ॥
तव मनन चिंतनमधि अनुक्षण मग्नमन मनुजन रहे ।
यहि हेतु ते करुणायतन तव नाम चिन्तामणि अहे ॥
तवध्यान धरितप करि कृतारथ होहिं मुनिजनसर्वदा ।
यहिहेत तपोमय वदत तुम कहँ वेदविदको विदसदा ॥
तव जननकर मनबुधि प्रणोदित होतहैप्रभु ! तुमहिते ।
यहि हेतु सन्त वदन्त तुम कहँ मनोमय के नाम के ॥
युगयुगनजगथिति निमित तुमअवतरहु धर्मस्वरूपते ।
यहि हेतु ते तव नाम पावन मनोमय श्रुति गीयते ! ॥
गतिहीन दीन दरिद्र प्रति अविरत दयातुम वितरते ।
यहि हेतु सुमधुर दयामय तव नाम है त्रिभुवनपते ! ॥
प्रभुहाहिं तव इच्छाहिते यहि विश्व के कारज जिते ।
श्रुति कथित तुम्हरो नाम इच्छामय अहे यहि हेतुते ॥
ब्रह्माण्ड मधि केवलहि लीलावश विराजत तुमप्रभो ! ।
यहि हेतु ते तव नामरुचिरललाम लीलामय विभो ! ॥
इमिनाम गुण हैं तवअनन्त न वर्णिसक जिन शारदा ।
तिन कथन महँयह अधम पामरहैसकत समरथकदा ॥
जिन विश्वपतिकी कथा हमसनममजनकवर्णनकियो ।
सोइ दीनबंधु अहो तुम अवतार नृपगृह महँ लियो ॥
प्रभु जोय तव पादारविन्द मरिंद केर मलिन्द हैं ।
विचरन्ति सो स्वच्छन्द नित भवफन्द ने निर्द्वंद्व हैं ॥
हे इन्दिरालय ! ह्वै सदय ममशीश पदरज दीजिये ।
भवविषम पारावार सों अब पार हमकहँ कीजिये ॥
यदिजानि अधमाधम हमहिकरि घृणानहिआश्रयदये ।

तौ पतितपावन नाम महँलगि है कलंक कृपामये ! ॥
इमि गुहक भक्तशिरोमणी शुचिविनय बैन उचारि कै ।
लाग्यो रुदन ह्वै प्रेमगद्गदतनुकेरि सुधिहि विसारिकै ॥

दो०—क्रन्दत प्रेम अधीर ह्वै, लखि निषादपति काहिं ।
नेहनीर छहरत भयो, प्रभुदृगनीरज माहिं ॥
कस न होय अहदेखियत, पाणिखिलौना धारि ।
जबलौं रहत भुलाय शिशु, क्रीड़ा विषयमंझारि ॥
तबलौं गृहकारज करत, तासु जननि मनलाय ।
पर जब बालक उच्चस्वर, रुदत महा अकुलाय ॥

सो०—तब सबकाज विहाय, ह्वै अधीर त्यहि की जननि ।
शिशुढिग द्रुतपद धाय, जाय तासु सांत्वानहित ॥

भक्त रुदन सों ताहि प्रकारा * विचलहिं विश्व पिताकर्तारा ॥
रे मतिमंद जीव ! यकबारा * कह तो रूदन बाल अनुहारा ॥
वृथा धर्मध्वजि बनि जगधामा * दूषित करत दयामय नामा ॥
मानुष जन्म सुकृत बहुपाई * पशुसम देहु न वृथा बिताई ॥
गुहक रुदन ते श्रीरघुराई * ह्वै अतिदुखितजनकढिगजाई ॥
जोरि पाणिकह पितु! तुमपाहीं * मांगत मैं निषादपति काहीं ॥
कहेहु नरेश वत्स ! तुमकाहीं * अहैं अदेय प्राणहू नाहीं ॥
गुहक साथ जस रुचै कुमारा ! * करहु जाय तुमतसव्यवहारा ॥
सुनि पितु वचन कृपाल गोसांई * प्रमुदित वदनगुहकढिगआई ॥
निज इन्दीवर कर सन तासू * उन्मोचन करि वन्धन आसू ॥

दो०—कह्यो लषण सन बेगिही, अनल देहु प्रकटाय ।
मैं निषादपति सुमति सों, करिहौं अचल मिटाय ॥
लखणप्रकट पावककियो, तब प्रभु राजिव नैन ।
अनल साखिदैगुहककहँ, भेंटि कहे यह बैन ॥

सो०—भये सुहृद्द तुम मोत, आजु भिन्न मोते न तुम ।
करि है जगत प्रतीत, अभेदात्मा हम तुमहिं ॥
देहदशा गुहराज विसारी * गिरयो नाथपदपद्म मँझारी ॥
बहुरि सभक्ति जोरि युगपानी * गदगदगिरा कह्योधनिमानी ॥
यह प्रभु! अहै मोर मनकामा * रहौं ख्यात अधमहिकेनामा ॥
जासन रह कीर्तित संसारा * अधम उधारन नामतुम्हारा ॥
रे पामर मन ! अस प्रभु काहीं * तजिभटकत कत इतउतमाहीं ॥
शिवविरंचि आदिक सुरनाना * करतअहर्निशज्यहिपदध्याना॥
सर्व प्रथम सोइ श्री भगवाना * कीन्ह अधमकहँ क्रोड़प्रदाना ॥
राज सचिवगण प्रभुकृतिदेखी * भयेचकित बड़अचरज लेखी ॥
माँगि बिदाय प्रभुहि शिरनाई * गयो गुहक निजगृह हरषाई ॥
दलबल सहित इतहि नरनाहा * पहुँचे सुरसरितट सउछाहा ॥
दो०—अतुल पुण्यप्रद रविग्रहण, मधि चहुँ कुँअर समेत ।
करि अवगाहन सुरधुनी, भूपति न्याय निकेत ॥
अगणितदुग्धव्रती सुरभि, धनमणि बस्त्र अनूप ।
चारिहु कुँअरन हाथ ते, दान कराये भूप ॥
सो०—पुनि कुँअरन लै साथ, सहित कटक संध्या समय ।
गये मुदित नरनाथ, भरद्वाज के आश्रमहि ॥
लखिमुनिवरहि नृपतिगुणधामा * सुतनसहितकियोदंडप्रणामा ॥
अवधपतिहि लखि मुनिहरषाने * दै असीस नृप कहँ सन्माने ॥
बहुरि भूप इमि वचन उचारे * यह चारिहु सुत दास तुम्हारे ॥
तव दर्शन हित आये ईशा ! * देहु कृपाकरिअस आशीशा ॥
जासों सकैं पालि सबभाई * निजकुलरीतिजैसिचलिआई ॥
मुनिहि विदित यह रह्यो बनाई * प्रकटे नृपगृह जगत गोसांई ॥
यहि कारण मुनिवर गुणपाती * रघुबर रूप लख्यो यहिभांती ॥

नव दूर्वादल श्याम शरीरा * कटि पटपीत प्रकृति गँभीरा ॥
बर भूषण भूषित भुजचारी * सरसिज चक्र गदादर धारी ॥
ध्वजा कुलिशअंकुशपद भ्राजत * उरपावन भृगुलता विराजत ॥
शंभु विरंचि आदि सुरनाना * ठाढ़े करत ईशगुणगाना ॥
लखि इमि प्रभु मूरति मनभाई * पुलकावलि मुनीश तनुछाई ॥
शत२प्रणति मनहि मनकीन्हा * बहुरि उतरइमि भूपहि दीन्हा ॥
तुमसम धन्य न कोउ नरनाहू * कियजगनिधिस्वरूपसुतलाहू ॥

दो०—यहिप्रकारकहिमुदितचित, मुनिवर तपो निधान ।
सहित कटक नरनाथकर, कियाअतिथिसन्मान ॥
प्रात समय नृपविनय युत, माँगि बिदा मुनिपाहिं ।
कछुदिन महँ पहुँचत भये, सदल अवधपुरिमाहिं ॥

सो०—कृत्तिवास उर आश, भई गुहक उद्धार लखि ।
हमरहु कलिमल पाश, कटि हैं रमानिवास विभु ॥

इति पूर्वार्द्धम्

एकशततम सर्ग ॥ १०१ ॥

जनक चरित्र व श्री श्री देवी जानकी की उत्पत्ति ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

ज्योस्नारहित जिमिशर्वरी ज्वालाविगत पावक यथा ।
सागर तरंग विहीन अरु ओंकार बिन श्रुतिगणतथा ॥
बिन अर्थ वचनन को रचन तिमि तेजहतमंत्रनगन्यो ।
साहित्यनी रसबिन अलंकृति विकृत अंगयथाभन्यो ॥
विकसितकुसुम,अवलीविहीन वसन्तऋतु ज्योंजानिये ।
मलयज पवन सौरभ रहित जैसे असंगत मानिये ॥

तिमि सगुणब्रह्मोपासना के कल्प महँ असदसमहा।
बिन मूल शक्ति पराप्रकृति के ब्रह्म अवतारहि कहा॥
अव्यय अनन्त सदा अहै सतचितअनन्द स्वरूपसो।
अविकार अज अद्वय विरज परब्रह्मरूप अरूप सो॥
जो योगमाया शक्तिहै तिनकेरि सहचारिणि कही।
उपजायपालतपुनि विनाशत विश्वकहँ गुणवतिवही॥
विश्व बीज सोइ प्रकृति प्रमानी * अहैं जनकजा वेद बखानी॥
जयतिजयतिजय जगतवन्दिता * जनकनन्दिनी जयअनिन्दिता
दुर्गा दुर्गति नाशिनि सीता * गुणमण्डिता त्रिदोषव्यतीता॥
सर्व व्यापिनी श्री निकेतना * सृजन रूपिणी चित्त चेतना॥
परा परायणि विश्व विनोदिनि * नारायणिभवभयअपनोदिनि॥
सिद्धिप्रदा प्रणतारति हरणी * भवभय भंजनि वेदन वरणी॥
सनातनी सत्या साकारा * श्रुति अगोचरा जन अधारा॥
कलुषकदनिविधुवदनिविधात्री * कालरात्रिअविकृतफलदात्री॥

हरिगीतिका छन्द॥

जय विश्वजननी विश्वपालिनि सतत विश्व विनोदिनी।
विज्ञान दायिनि नयविधायिनि भक्तभीति निषूदिनी॥
जय कलुषनाशिनि श्रीनिवासिनि सत्यधर्म्मविकासिनी।
खल त्रासनी हरिउर विलासिनि देवलोक प्रकाशिनी॥
जय यम नियम अपहारिणी संयमनियम विस्तारिणी।
सब काम सक्षम विषम दुर्दम दीनदुख निस्तारिणी॥
जय अन्नदा आनन्ददा शम शर्मदा स्वर्गप्रदा।
जय शारदा वरदा सदा शुभज्ञानदा अपवर्गदा॥
जय योगमाया योगनिद्रा जया हरिनेत्रालया।
श्रीरोदतनया हरिप्रिया अभया अजा अपराजया॥

जय जयति परमा प्रकृति महिमासीम नित सर्वोत्तमा।
हरि प्रियतमा श्यामा निरुपमा रमा विश्व मनोरमा॥
जयदेवि कौमारी कुमारी ईश्वरी सर्वोपरी।
अविनश्वरा रामेश्वरी शुभकरी सर्वकलाधरी॥
जय त्रिगुण धारिणि तापत्रयवारिणि त्रिगणदामुदप्रदा।
तारणतरणि कारण करणि हारिणि सुरन की आपदा॥
जय सुमतिदात्री कुमतिहर्त्री सृष्टिकर्त्रि परात्परा।
हलवर्णधात्री कालरात्रि विधात्र वेद अगोचरा॥
जय अम्बिके अम्बालिके धर्माधरम संचालिके।
जगदम्बिके जगतारिके जगकारिके जगपालिके॥
हे मात तुम श्रुतिव्रात मधि ऋत साधुमधि हो साधना।
जयशील मधिहौ जाप अरु आराध्यमधि आराधना॥
निर्गुणकि द्युति पुनि सगुण मद्धयहि प्रकृतिरूपतेगीतहौ।
रवि महँ प्रभा शशिमाहिं शोभा वारिमहँ तुम शीतहौ॥
वसुमती मधिहौ गंध पावक माहिं दाहक शक्तिहौ।
आकाश महँ तुम शब्द चातुर्वर्ग महँ तुम मुक्ति हौ॥
यहिविधिअखिलब्रह्माण्डमधि तुमराजिरहिअखिलेश्वरी।
बिनवहुँ बहुरि करिप्रणति शतशत तवपदन विश्वम्भरी॥

तोटक छन्द॥

जय चेतन रूपणि मूलपरा। गति दायिनि दीनदुरातिहरा॥
रवि अगंज त्रास विनाशकृते। भव पाशविमोचनि भूमिसुते॥
जय चिन्मयचेतिनि शान्तिमया। प्रणतार्तिहरा सुखमानिलया॥
कलिद्वन्द्व निकन्दनि इंदुनिभे। क्षितिनन्दनिनौमिअनन्द्यप्रभे॥
त्रयताप बिभञ्जिन भ्रान्तहरे। मुनि मानस रञ्जिनि देवपरे॥
हमदीन मलीन विहीन गती। कुरु दृष्ट दयामय दास प्रती॥

बहुजन्म उपार्जित पापभरे। अति आरतआय पुकारकरे ॥
कलिकाल कराल गलानि सदा। परिव्याप्तशरीरसुखी न कदा ॥
विषयाबन दारुण भीषणही। तिमिरावृत पन्थ लखात नही ॥
अहि श्वापद काम प्रपंच मदा। रिपुभूरि चमू विचरन्ति सदा ॥
तिन त्रास निरन्तर जागिरहा। कब ग्रास करै अरिजूहमहा ॥
विषयादि विषाद हुताशनहू। यहि जीवन कानन घेरि रहू ॥
पुनि मोह गभीर समीर बहे। असु किंकर कौनउपाय रहे ॥
जप यज्ञ अराधन नेमव्रती। तप साधन कानन वासहुती ॥
हिम आतप ताप कलेश गहे। तनु पीडन न्यास उपास सहे ॥
इमि यावत पन्थ वदिन्त श्रुती। लहिकोउकदान लभन्तिगती ॥
विनुभक्ति पदाम्बुज राज हिये। नहिं त्राण वृथा बहुबोध किये ॥
तुव पाद सदा जेइ चित्त धरे। महि सोइ निशंक सुखी विचरे ॥
गुण गान बिना अनजान अहं। कर अर्पि शिरै कुरु स्वीय जनं ॥
अनु कम्पित होय भले करिये। कमलाङ्घ्रि प्रकाशन कालिहिये ॥

दो०—सुर गुरु के सुतराज ऋषि, नृपकुशध्वज गुणग्राम।
जासु सुयश कीर्तनविमल, रह्यो छाय तिहुँधाम ॥
तिनकी सुता अयोनिजा, वेदवती ज्यहि नाम।
घोर चितानलमहं प्रविशि, तज्योकाय ज्यहिठाम ॥

सो०—सोप्रदेश सुविशाल, मिथिलानाम सों ख्यात जग।
जनक वंशिमहिपाल, राज्य करत आए जहां ॥

नरिन्द छन्द ॥

प्रकटे त्यहिकुलमाहिं राज ऋषि सीरध्वज मतिमाना।
परमभागवत धर्म्म परायण सतत अटल ज्यहि ज्ञाना ॥
विषय विराग परस्पर दोउन साजिमि किय निर्वाहा।
त्यहिदृष्टान्त त्यागिनिमिबंशिनअपरनकोउ नरनाहा ॥

राज सिंहासन नृप सीरध्वज विज्ञ सचिव गण द्वारा ।
अजितराज्यजीतनकर उद्यमयकदिशिजौनप्रकारा ॥
अपर ओर तिमिमिलिनिर्मलचिततत्त्ववादिमुनिसाथा ।
दुर्लभ मोक्ष लाभ हित संतत करहिं यत्न नरनाथा ॥
वाह्यमाहिं जिमिशत्रु मित्र मधि थाप्योऐक्य भुआलू ।
तिमिअन्तरमधि चितयकाग्रता करतरहत सबकालू ॥
यकदिशिदण्डप्रभाव स्वाधिकृतद्वेषि नृपन करिलीन्हा ।
अपर ओर तिमि ध्यान योगते पञ्चवायु वश कीन्हा ॥
जिमिशत्रन आरब्ध कर्म्मसब नृप निष्फल करिडारा ।
तत्त्वज्ञान अनलमधि तिमिकिय जन्ममरण कृतिछारा
सन्धिआदिषड़्गुणप्रयोगमहँयकदिशिरत ज्यहिभांती ।
अपरओरतिमित्रिगुणविजयमधिकरत यत्नदिनराती ॥
यकदिशिज्यहिविधिराजकीयकृतिकरिअरंभमहराजू ।
तबलौं होहिं विरत नहि तासों जबलौं नहिं कृतकाजू ॥
अपर पक्षमधि त्यहि विधि जबलौं विभुदर्शन नहिंपावैं
तबलौं भूप योग साधन ते चित्त न नेक हटावैं ॥
ज्यहि विधिकरहिं कोषथित रत्नन केर तत्त्व अवधाना ।
त्यहिविधिकरहिंहृदयथितआत्महिसन्ततअनुसन्धाना ॥
रत्न सिंहासन वा कुश आसन क्षिति वा सेज सोहावन ।
युगुलवाहु वा अतिविचित्र उपधान मृदुल मनभावन ॥
अंजुलि वा वहुमूल्यवान वर भोजनपात्र मनोहर ।
वल्कलादि वा पट्टवस्त्र वा लोह बहुरि चामीकर ॥
षटरस भोजन वा तण्डुलकण दुख वा वैभव भोगू ।
निन्दा वा नुतिराग विरागहि अरु संयोग वियोगू ॥
जीवन मरणहि भाव अभावहि मान बहुरि अपमानहि ।

राजऋषी सीरध्वज भूपति सतत एक सम मानहिं ॥
ज्यहिविधि करथित कुण्ड कुण्डथित दुग्धदुग्धथितमाखी ।
रहि एकत्र नमिलत कोइ विधि वद कोबिद सहसाखी ॥
त्यहिविध विविध विभवपरि वेष्ठित रहि संतत मिथिलेशू ।
पर कोइ समय असार विषय मधि रहत लिप्त नहिं लेशू ॥
ज्यहि प्रकार विधिवत यज्ञादिक करहिं नित्त्य रपाला ।
तिमि अन्तष्करणहु भूपकर रह यक शुचि मखशाला ॥
त्यहि मख करहै ब्रह्म हुताशन प्रणस्तोत्र समाना ।
दृश्यस्प्रश्व अरु प्रेय आहुती मन्त्र समीर अपाना ॥
अहंकार मन बुद्धि त्यहि होता अध्वर्य्यू उद्गाता ।
रिपु समस्त पशुनिचय दक्षिणा सर्वत्याग विख्याता ॥
यहि संसार महा काननमधि देहरूप तरु जोई ।
ब्रह्मरूप त्यहि बीज अहै अंकुरित प्रकृति सन होई ॥
गृह धन शाखा कार्य्यं प्रशाखा ममता ज्यहि असकंधू ।
पत्र वासना पल्लव ज्यहिकर नारि तनय प्रियवंधू ॥
सुमन निचय संकल्प शुभाशुभ ज्यहि तरुके फलरूपा ।
त्यहि तरु कहँ बैराग्य खड्ग सों छेदन कीन्हेउ भूपा ॥
ज्यहिविधिस्वयंजाय सरितागण मिलहिं पयोनिधिमाहीं ।
पर तिन की इच्छा रत्नाकर करत नेकहूँ नाहीं ॥
दो०-त्यहि प्रकार घेरे रहत, भूपहि भोग निकाय ।
परनभोग कीरुचिकरहिं, निमिकुल के दिनराय ॥

गीता छन्द ।

मनसोहिं ज्ञानेन्द्रिय गणहि निजवश रखत सबकाल ।
आशक्ति तजि कर्म्मेन्द्रियन सों करहिं कर्म्म नृपाल ॥
सबजीव अन्न ते अन्न मेघ ते मेघगण मखजात ।

मख कर्म्म ते तासन श्रुती श्रुति ब्रह्म ते प्रकटात ॥
यह जानि समुदय कर्म्मफल अर्प्पहीं ब्रह्महि काहिं ।
नृपकेर आनँद प्रीतिरह यकमात्र जगपति माहिं ॥
त्यहि हेतु कूप सरादि ते सिधि होहिं कारज जोय ।
सो सकल केवल यक महाह्रद सोहिं साधित होय ॥
निज आतमहि अवलोकहीं नृपसर्व भूत मँझारि ।
अरु सर्वप्राणिन स्वातमा मधि लखहिं द्वैत निवारि ॥
यहि हेतु साधु असाधु अरु निज शत्रु मित्रन माहिं ।
मिथिलाधिपति की दृष्टिमहँ रह भेद किंचित नाहिं ॥
सर्वत्र गामिहु होय देव समीर जौन प्रकार ।
निवसंत संतत एकमात्रहि अंतरिक्ष मँझार ॥
त्यहिभाँति नाना विषमहू मधि रहिमहीप प्रवीन ।
यकमात्र ज्ञान उपार्जनहि मधि रहत अनुक्षण लीन ॥
यहि अर्थ निज कहँ सर्वव्यापी मानहीं महिपाल ।
अरु प्राणिपूरित थलहि जानत शून्यमय सबकाल ॥
निज कार्य्यचयसों करहिं यह सिद्धान्त नृप मतिमान ।
प्रिय वस्तु यत ऐश्वर्य्य कुल मर्य्याद अरु सन्मान ॥
इन सबन मधि है शीलही केवल पदारथ सार ।
नतु देखियत प्रिय वस्तु द्वारा होत हर्ष अपार ॥
त्यहिहर्ष ते उर होत है घन गर्व्व कर संचार ।
अरुगर्व्व सों खुलि जातहै उत्कटनिरयकर द्वार ॥
नर तनुहि केवल रक्तमूत्र पुरीष दोषागार ।
लखि जानही त्यहि काहिं भूपति महातुच्छ असार ॥
अवलोकि परसुखहोहिं नाहिसुखी सो निमिकुलचन्द ।
दुर्लभ विषय के लाभते नहिं होहिं अति आनन्द ॥

अरु अर्थनाशते होहिं नाहिं विषण कोऊ काल।
यहिभाँति सुख दुख सों विवर्जित रहसतत महिपाल ॥
विकसित रुचिर पाथोजथित मधुलोभि मधुकर न्याय।
परमार्थही के खोज महँ मन मगन रहत सदाय ॥
विपुलांगमत्त मतंग के पदचिह्न परधी माहिं।
सब पादचारिन चरण चिह्न विलीन जिमि ह्वै जाहिं ॥
त्यहिभाँतिऋषिमुनियोगि यति आदिकन ज्ञानविचार।
ह्वै जातलीन महीप वरके ज्ञान परिधि मँझार ॥
यक समय चम्पकवरणि चंचलनैनि सुखमासारि।
रहिजात नभमहँ उर्वशी निज छवि प्रभा विस्तारि ॥
त्यहि हेरिकै राजर्षि के उर उपज चित्त विकार।
अस्खलित तिनकर रेत ह्वै भा पतित भूमि मँझार ॥
दो०—ऋतुवन्ती वसुमति रही, दैवयोग त्यहि काल।
भूपतेज क्षिति मधि भयो, डिम्बाकार विशाल ॥
पुनिसुरगणकेहितनिमित, हरि माया त्यहि माहिं।
गुप्तभाव प्रविशत भई, जान मर्म्म कोउ नाहिं ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

कछुकाल बीते यक समय राजर्षिवर मिथिलापती।
पुत्रेष्टि मखहित स्वर्ण हल सों रहे शोधत वसुमती ॥
तिनके हलाग्रते भूमिथितसो अण्ड दरि छबिआगरी।
तासन प्रकट भइ यक कुवँरि निरूपमा रूपउजागरी ॥
यहिभाँति विश्वविनोदिनी इन्दिरा के अवतरतही।
सम्पूर्णजगमहँ त्यहिसमय आनन्द रसधारा बही ॥
दशदिशि प्रभामयभई देवसमीर मानहुँ मुदपगे।
चन्दनगिरिहि धरि कन्धपै मृदुलमन्दगति नर्तनलगे ॥

दिनराज के करजाल शीतल विधुकिरण सम ह्वैगये ।
औषधिविभासितदिनहिमहँऋतुअऋतुतरुविकसितभये ॥
भूधरनसों प्रेमाश्रु निर्गत जिती जग स्रोतस्वती ।
लागीकरन कलकल ध्वनीसों विश्वपालिनिकीनुती ॥
कलकण्ठ आदिक विहगमङ्गल गान करहिं मनोहरा ।
भा सारथक जगमाहिं बसुमति केर नाम वसुन्धरा ॥
मृतुलोकमधि पुनरागता निजसुताकाहिं निहारिकै ।
तनयावियोगी उदधि उमँग्यो सुखलहरि विस्तारिकै ॥
योगी ऋषी मुनिगण हृदयमधि मुद अनैसर्गिकछयो ।
अरुअसुरगणके हृदयमधि भयकम्प अतिप्रकटतभयो ॥
साकेतलक्ष्मी के प्रकट होतहि अवधनर नारि के ।
फरकनलगे शुभ वाम दक्षिण अंग मंगलकारि के ॥
मुनिवरवशिष्ठादिकनमानस नयनमद्धयहित्यहिगरी ।
भासितभई सम्पूर्णता हरि अवतरण की शुभकरी ॥
लागी सोहावन होन अमरावती ते शङ्ख ध्वनी ।
वर्षहिं गगनते मगन मन घन सुमन यत सुरभामिनी ॥
नर्तन लगे सावित्रि सँग विधि रोहणीयुत चन्द्रमा ।
युतशची सुरपति अनल स्वाहा मातृकायुता अर्य्यमा ॥
झखकेतु रतिसँग वरुण भार्गवि वैश्रवण सह सम्पती ।
शिव शिवासँग कौमारि षटमुख सहित संज्ञादिनपती ॥

दो०—यहि प्रकार यत अमरगण, निज २ भामिनि संग ।
विश्वजननिकरजन्मलखि, नर्तत सहित उमंग ॥
त्यहि अयोनिजा कुँअरिकर, अनुपम छबि सहनेह ।
रहे हेरि सचकित हृदय, होय विदेह विदेह ॥

सो०—यहि प्रकार त्यहि काल, गगनगिरा गम्भीरभइ ।

अहै तुम्हारि नृपाल, यह दुहिता मख भूमिजा ॥
निज गृह माहिं इनहिं लै जाहू * प्रति पालहु सयत्न नर नाहू ॥
सृष्टि अरिष्ट नशहि इन द्वारा * होइ है जगकर बड़ उपकारा ॥
जानेहुइनहिं जगत दुखहारिनि * सर्व्व मङ्गला मुदविस्तारिनि ॥
सीर ते प्रकट भई यह भूपा * यहिहित सीता नाम अनूपा ॥
सुनि नभगिरा नृपति हरषाई * लीन्ह कुँअरिकहँ आशुउठाई ॥
हृदय लगाय लाय गृह माहीं * कियअर्पण निजकामिनिकाहीं
जिमि खद्योत वृन्द यक बारी * होहिंविगत प्रभतडितअगारी ॥
तिमिमणि माणिकरत्न ललामा * रहे जितेक नृपति के धामा ॥
तड़ित लतावत कुँअरि अगारी * भये मन्दद्युति ते मणिझारी ॥
लखि त्यहिरूप कान्ति नृपरानी * भई मुग्ध तनु दशा भुलानी ॥

गीता छन्द ॥

नृप नारि उर वात्सल्य उपजा वन निमित त्यहि काल ।
पयपान इच्छा सों करत रोदन अतीव बिहाल ॥
अवलोकि कन्या रूप विह्वल योग माया काहिं ।
अति नेह उपज्यो त्यहि समय नृप रानि के हियमाहिं ॥
तब चूमि आनन शुभ शरद शशि शोभनी कहि काहिं ।
पूँछयो जनक सन जनक रानी मधुर बानी माहिं ॥
तुम नैन पुतरी कौन की प्रिय अपहरण यह कीन ।
नहिं विदित यहिके मातुपितु किमि जियत दुहिताहीन ॥
मिथिलेश बोले सुनु प्रिये कन्या हमारिहि आहि ।
ईश्वरकृपा ते भइ प्रकट यह यज्ञ धरणी माँहि ॥
"सुर काज कोऊ इनहि द्वारा सिद्ध ह्वैहै" रानि ! ।
इन के उपजतहि हम सुनो आकाश इमि सुर बानि ॥

हल अग्र चिन्हित रेख महँ इन जन्म लह्यो ललाम।
यहि हेतु सुरगण सब धर्यो इन केर सीता नाम॥
निज गर्भजात कुमारि सम तुम यत्न सों इन केर।
पालन करहु अति प्रेम सों सुख पाय मनहि घनेर॥
सुनि पति वचन रानी मुदित मन यों निहाल लखाहिं।
ज्यों रङ्क निधि लहि मग परी अँग फूलि नाहिं समाहिं॥
सुतहीन जनक परा प्रकृति कहँ सुता रूपिणि पाय।
परमार्थ के अरु अर्थ के अधिकारि भे अब जाय॥
सो०—आयस आश प्रयास, अयस्कान्त कर लेश नहिं।
भाषतद्विज कृतिवास, स्वयंलौह त्यहि सनमिलत॥
त्यहि प्रकार निष्काम, साधुयदपि फलआशिनहिं।
तबहुँ विभूति ललाम, लहत विश्वपति कृपा ते॥

द्विशततम सर्ग॥ १०२॥

परशुराम समागम व राजर्षि जनक का धनुभंङ्ग प्रण करना॥

दो०—मख-पावक आहुति परे, जैसे बाढ़त जाय।
जनकजननिपालिततथा, सियतनुवृद्धिलखाय॥
भयो प्रकाशित नृपभवन, जानकि रूप प्रभान।
मिथिला के नरनारिसब, प्रमुदित भये महान॥
लखि सुन्दरता सीय की, अद्भुत अतिव नवीन।
लगे विचारन नृप जनक, यहिविधि धर्म्मधुरीन॥
यह कन्या धन्या सुमुखि, नहिं सामान्या आहि।
अवशि रमा कैधौं उमा, जन्मलियो महिमाँहि॥

तोटक छन्द ॥

तनु भाँति विभात अनूप छटा । चपला चपला लखिरूप घटा ॥
परिव्याप्त प्रभा शर दुन्दमुखी । छवि हेरिरहैं तिहुँ लोक सुखी ॥
इमि काञ्चन नूपुर पाँय लसैं । जिमि दामिनीदर्पण माहिबसैं ॥
लखि जावक ज्योतिहि पादतरे । जल जारुण दारुण मोह परे ॥
नख चन्द्र छटा सुविभात सदा । मनकैरव काहिं प्रमोद प्रदा ॥
कटि खीनता हेरि हिरास हरी । गुरु ऊरु करी मद दूरि करी ॥
मधु माधव मोदिनि रंग मई । भुज कोमल मंजु मृडाल जई ॥
कर आँगुरि मानहुँ चम्पकली । नखराजिविराजिसुधाधवली ॥
अधरारुणता लखिबिम्ब लजे । जिमि सेंदुर बाल दिनेश सजे ॥
द्युति दन्त सुयों मुख माँझ करे । मनु मौक्तिक पंकज मध्य धरे ॥
इमि नासिका सोहत चारु शुकी । जनुतोरि रही फलबिम्ब झुकी ॥
त्यहि ते शुचि सुन्दर श्वास बहे । मलयानिल जासों सुबासलहे ॥
घन अञ्जन गञ्जन वा कवरी । दृग मंजुल खंजन मान हरी ॥
पलकैं झलकैं अति श्याम सदा । रिपुको विष दासहि जीवनदा ॥
भृकुटी शरचाप मनोज यथा । कलकण्ठ लजैसुनि कण्ठकथा ॥
बर सेन्दुर विन्दु ललाट करे । जनु भानु प्रभात प्रभा वितरे ॥
श्रुति मण्डल कुण्डल कान्तिभरे । जनु सूर शशी नग हेम जरे ॥
उर सूत्रिक भ्रामर गुच्छ गरे । बर कङ्कण अङ्गद चारू करे ॥
असिताम्बर गौर तनै फहरै । घन दामिनि संग मनौं बिहरै ॥
गुण ग्राम कथा त्रय ताप हनै । मनकालिनशावनि कालिभनै ॥

हरिगीतिका छन्द ।

सिय पादतल जल जात से अति अरुण वर्ण बिराजहीं ।
चम्पककली सी अंगुली नखचन्द्र संयुत भ्राजहीं ॥

कटि खीन आवत मुष्ठि में सहजहि सुशोभन यों लसै।
भुज युगुल सुललित मृदु मृड़ाल सनाल सुखमा कोहँसै॥
शुक तुण्ड उन्नत नासिका मृगशिशु चपल लोचन भले।
पूरण कलाधर कान्ति हारा मञ्जु मुख कमलहि दले॥
चामर सरिस एँडिन लगे लाँबे चिकूर चय सोहहीं।
सुन्दर सुवर्ण सुवर्ण वर्ण कवीश वर्णत मोहहीं॥
गति मन्द विलसत राज हंसीसी वचन अंमृत सने।
प्रति रोम कूप स्वरूप सुखमा ज्योति के आकर बने॥
चल जात गात सुबास माते मग मधुप मँड़रात हैं।
लोचन चपलता सिखन हित खञ्जन सदा सँग जात हैं॥
पञ्चम परम स्वर सीखिबे की कामना मन महँ करे।
कलकण्ठ कोकिल सुनत कलरव सँग रहत आनँद भरे॥
बरनौं अधिक कह और लखि ज्यहि रूप सम्पति हर्षदा।
स्वयमेव विश्व विमोह नाशन मोहवश रह सर्व्वदा॥
त्यहिको कहब मतिमन्द कवि के पक्ष में ईद्रश अहै।
जिमि वामनाकृति नर गगनथित शशधरहि गहिबो चहै॥
लखि सुन्दराई विश्वमोहनि अद्भुत सीता के तनै।
भूपति जनक चिन्तित भए तब योग्य वरहित अति मनै॥
सिय समान वर त्रिभुवन माहीं * मिलिहै कहाँ सुभटहम काहीं॥
सचिव पुरोहित मन्त्रि आदिसब * भे कर्तव्य मूढ चिन्तित तब॥
उत अमरावति महँ सुर बसहीं * भे उद्विग्न अधिक इमितबहीं॥
प्रतिदिन सीय वयस अधिकाई * राम लही न अबै तरुणाई॥
जनक न अन्यनृपहिकहुँ सीता * देहिं व्याहि रघुनाथ व्यतीता॥
इमि विचारि गे सब सुर भ्राता * गिरि कैलाश समेत विधाता॥
निरखे तहाँ प्रलय कर शंकर * शान्तरूपअतिकान्त मनोहर॥

करि अभिवादन कहे विधाता * करपुट रचन वचन सुखदाता ॥

दो०—अब हम सब तव सन्निकट, यहि हित आए नाथ।
सिय परिणयश्रीराम बिनु, होय न कोउ नृप साथ ॥
सो उपाय करिये कछू, जानकि रक्षा काज।
तव निदेश नहिं मेटि हैं, मिथिला के महराज ॥
सत्य करन को मम वचन, केवल जगमहँ जाय।
ईश अवतरे मनुजतन, देव काज मन लाय ॥
यहि हित गुप्तरहस्य यह, नृपपहँ करन प्रकास।
सब प्रकार ह्वै है अबै, अनुचित उमा निवास ! ॥
देवन को कर्त्तव्य नृप, जानत नहिं यहि हेत।
यदिसहसानिजमतिनिरखि,कोउबरगुणनिकेत ॥
देहिं जानकी ब्याहि तौ, नहिं अचरज कछु आय।
यासों कीजै कौनहू, यहि कर उचित उपाय ॥
सुरन बुझाय बिदाय दै, हृदय चिन्ति शशिभाल।
परशुरामनिजशिष्य कहँ, स्मरण कियोतत्काल ॥
लहि आयसु आए तुरत, यामदग्न्य भगवान।
बीर शान्तरस रूप धरि, जनु प्रत्यक्ष प्रकटान ॥

प्रज्झटिका छन्द।

शिर लसत हेमप्रभ जटाभार। सर्व्वाङ्ग विभूशित शुभ्र छार ॥
मुखज्योति चण्ड जनुमारतण्ड। सुविशाल भाल भ्राजतत्रिपुण्ड ॥
आरक्त उभय लोचन कराल। धधकततिनमधिजनुअनलज्वाल
वर बाम कंध ते लम्ब मान। उपवीत, चाप भीषण महान ॥
कर अंगुरि कुश मुद्रिकाकार। धृत पाणि घोर शाणितकुठार ॥
आकर्णमिलित युगभ्रुकुटि तुंग। जनुलरतकुपितमिलि द्वै भुजंग ॥
अस्त्रक्षत अंकित उर विशाल। त्यहि उपर डुलत रुद्राक्ष माल ॥

कटिमद्ध्य लसत मौंजी पुनीत। जनुहिमगिरि वेष्ठित उरगपीत ॥
मृग ठवनि गवन अद्भुत प्रताप। ज्यहि लखिप्रयात भूपतिनदाप ॥
पूरित तुणीर खर शान बान। बर पृष्ठ माहिं शोभाय मान ॥
परिधान वस्त्र बर द्वीप चर्म। बिजटित तनु ताम्रा भेद्य वर्म ॥
श्रुतिकण्ठ बाहुप्रतिअँग निकाय। रुद्राक्ष आभरण रह सोहाय ॥
भार्गव भर्ग समीपहि आई * दण्ड प्रणाम कीन्ह शिरनाई ॥
दै आशिष बोले त्रयनयना * मृदुल मनोहर मधुरे बयना ॥
ममप्रिय शिष्यजनक नरनाहा * चाहत करत सुताकर ब्याहा ॥
लै मम चण्ड चाप त्यहि पासा * जाहु अबहितुमसहितहुलासा ॥
दै धनुषहि इमि कहेहु बुझाई * मम निदेश जनकहिसमझाई ॥
जो यहि पै गुण देहि चढ़ाई * सुता बियाहेहु त्यहि हरषाई ॥
त्रिभुवन हरिबिनअपरनअहही * जो यह कठिन शरासनगहही ॥
विष्णुअंश सम्भव भ्रगु नाहा * शम्भुबचनसुनिसहित उछाहा ॥
सियाबिवाह उचित निजकाहीं * कियो विचार मुदितमनमाहीं ॥
नाय शीश शिव कहँ धनुलाई * बेगि जनक पहँ पहुँचे आई ॥

दो०—अकस्मात आगतनिरखि, भृगुकुलकमल मुनीश।
उठे ससम्भ्रम अर्घ्य लै, आसन दै अवनीश ॥
पूजन करि पूँछन लगे, यहि प्रकार मिथिलेश।
आज कृपा कैसे करी, हमपर आप द्विजेश ! ॥

निज महिमा प्रताप मन माहीं * मुनि विचारि बोले नृप पाहीं ॥
मिथिलानाथ आप निजकन्या * देहु हमें सुन्दरि अति धन्या ॥
लहौ सुयश शम दम यम ऐना * यह सुनि कहे जनक इमिबैना ॥
अहो भाग्य हैं मम मुनि नाथा * जो तुम चाहत करन सनाथा ॥
बड़ भागिनि मम दुहिता होई * तुमसमसुभट स्वामि लहजोई ॥
हमें प्रतीत तो अस नहिं होई * पै तव वचन अलीक न कोई ॥

पाहनलीक सदृश सब साँचे * बार अनेक अनेकन जांचे ॥
जबसिय परिणयसमयद्विजेशा * ऐहैं तब पालिहौं निदेशा ॥
भार्गव कही कही तुम नीकी * मिथिला नाथ भावतीजीकी ॥
अब मैं जाहुँ करन तप कानन * भूलेहु पै न हमारे बचनन ॥

दो०-जनक पांय परि पूंछेऊ, पुनि तब दर्शन चारु ।
ह्वै हैं कितने काल में, मंगल मय सुख सारु ॥
पुनि प्रत्यागत आप यदि, नहिं होवैं मुनिराय ।
सिय परिणय को नाथ तब, ह्वै है कौन उपाय ॥

कह्यो परशु धर यह को दण्डा * धरे जाहुँ तुव पास प्रचण्डा ॥
जो यहि पै गुण देहि चढ़ाई * सिया बिवाहेहु त्यहि हरषाई ॥
यह कहि गए करन तप काहीं * जामदग्न्य हर्षित मनमाहीं ॥
इत नृप धनु धरिबे को धामा * निर्मित करवायो अभिरामा ॥
तहँ स्थापितकरि शम्भुशरासन * मिथिलामहीनाथप्रमुदितमन ॥
देश देश घोषणा कराई * जो धनु पै ज्या देहि चढ़ाई ॥
शशि बदनी मृगलोचनि बामा * चम्पकबरणी ललितललामा ॥
देहैं जनक जानकी ताही * वेद रीति अनुसार बिवाही ॥

दो०—सकल पुराण समुद्र सम, तिन कहँ मथि सम वेत ।
काढ़ी मणि कृतिवास यह, जन मन रंजन हेत ॥

त्रिशततम सर्ग ॥१०३॥

रावण का दर्प्प चूर्ण ।

दो०—शम्भु शरासन की कथा, फैली देश विदेश ।
मख पायस ग्रहणार्थि बहु, वायस सरिस नरेश ॥

बलदर्पित श्रीजानकी, लाभ लालसा धारि ।
मिथिला महँ आए सुभट, निजकहँ हियेविचारि ॥
कन्या याचन कीन्ह तिन, नृप सों गर्व्व समेत ।
तिनके दर्थ प्रपूर्ण सुनि, वचनन न्यायनिकेत ॥
धनुष भवन दिखराइ इमि, कह्यो जनक नरनाह ।
जो धनु कर्षहि त्यहि सिया, देहौं सहित उछाह ॥
यह सुनिसकल महीप किशोरा * करि घमण्ड गवने धनु ओरा ॥
कछु नर पाल बाल जनु व्याला * लखि शिवचापकठोरकराला ॥
द्वारहिते हिय हारि सिधारे * धनुषहि अति दुर्द्धर्ष विचारे ॥
कछु अवशिष्टवीर भटमानी * कटितटकसिपट निपटअज्ञानी ॥
लागे तमकि उठावन चापै * दिखरावत बल प्रबल प्रतापै ॥
पै न तजी महि वार बराबर * शंकर कर धनु पुर प्रलयंकर ॥
दो०—भग्न मनोरथ भग्नबल, सकल भूप समुदाय ।
तजिसिय अभिलाषागए, निज २ पुरन लजाय ॥
मिले अपर नृप मग जिते, ते धनुकथा कठोर ।
सुनिसिय आशातजि गए, निजनिजपुरकीओर॥
समाचार यह लंक लौं, पहुँच्यो क्रम क्रमजाय ।
सुन्यो दशानन विक्रमी, सुरद्रोही अतिकाय ॥
रावण मन में रह बसी, यत जग उत्तम रत्न ।
तिनकर अधिकारी वही, लेहि कोटि करि यत्न ॥
सुनतहि सिय परिणय सम्वादा * उठ्योअनन्दितविगतविषादा ॥
सत्वर स्यन्दन योजन काहीं * दीन्ह निदेश किंकरन पाहीं ॥
आप बीस बाहुन महँ धारे * कनक कटक हीरकन सँवारे ॥
गिरिसम उन्नत बक्षहि राजत * निष्कहुताशन सम द्युतिभ्राजत
स्वर्ण किरीट शिरन पर दरसैं * कुण्डलकानन रबिछबिसरसैं ॥

गल विशाल मोतिन की माला * कांस्यकवचपहिरयोदशभाला ॥
यहिअवसर स्यन्दन तहँ आयो * विविधभाँति सेवकन सजायो ॥
किंकिणि जाल जटित चहुँघाहीं * ऋक्षचर्म्म परिवृत त्यहिमाहीं ॥
रक्तवर्ण ध्वज पटलित फहरै * पवनलहर लगि लहरत लहरै ॥
होत शब्द जलधर गम्भीरा * अष्ट चक्रयुत विपुल शरीरा ॥
धरे धनुष तोमर असिप्रासा * आयुध विविध सूर्य्य संकासा ॥
मत्त मतंग सदृश बलवारे * लोहित लोचन जिनश्रम कारे ॥

दो०-जटाजाल मण्डित प्रबल, योजित हय त्यहिमाहिं ।
हिनहिनात पुनि२करत, पद विक्षेप लखाहिं ॥
विकटनयनदीपितबदन, कृष्णवर्ण निशिचारि ।
सूर्य्यरश्मिसमरश्मिगहि, संयत किय करधारि ॥

तब प्रहस्त मारीच महोदर * और अकम्पनचारिसचिवबर ॥
सहित भयो रथपर आरूढा * मोह बिवश दशमस्तक मूढा ॥
हाँक्यो सारथि अश्वन काहीं * नभपथ पहुँच्यो रथछनमाहीं ॥
गृद्धचिह्न अंकित ध्वजदंडा * नभपरसत जनुजय कोदण्डा ॥
घनचय चित उन्नत गिरि जैसो * शोभमान सो सुन्दर वैसो ॥
ज्यहि अवलोकि सकलसुरबृंदा * भएत्रसित चित विगतअनंदा ॥
छनमहँ बिविधदेश अरु सागर * पारभयो दशबदन निशाचर ॥
पहुँच्यो मिथिलापुरी मँझारा * भटमानी बलशालि अपारा ॥
रावण आवन कर सन्देशा * सुनिसकुचे मन महँ मिथिलेशा॥
मन्त्रिन निकट बुलाइ बुझायो * निज सम्मतिकर सारसुनायो ॥

दो०-आयो दशमुख खलप्रबल, मम पुरनिशिचर नाह ।
कुशल करै कर्तार मोहिं, विदित न भावी काह! ॥
यदि न सहज मैं देहुँ मैं, निजतनया त्यहिआज ।
बलकरि हरि लै जायहै, तऊ निशाचर राज ॥

त्यहि कुकर्म्म सनसकहि निवारी * कोउन असुर असुरमँझारी ॥
यह कहिनरपति सचिव समेता * शिष्टाचार करन के हेता ॥
कछुकदूरि गवने नरपाला * आयगयो निकटहि दशभाला ॥
नृपहिनिरखिविहँस्योअभिमानी * खलमण्डलि मण्डन भटमानी ॥
पुनि प्रहस्त के कहे कुटिल मति * रथते उतरिपरयो दानवपति ॥
बीसबाहु विस्तारि विशाला * मिल्योमहीपतिसन त्यहिकाला ॥
कुशल प्रश्न पाछेकिय गवना * निशिचरपतिनरपतिकेभवना ॥
दिव्यस्वर्ण आसन बैठाई * बोलेजनक विनय अधिकाई ॥

सो०—क्यहि हित इत्ततुम आय, करिकृपा लंकाधि पति ।
कह रावण हरषाय, त्यागि सकुच तब इमि वचन ॥

दो०—निजकन्या धन्या सुमुखि, देहु हमैं तुम ब्याहि ।
सुनि बोले मिथलेश यह, उचित सबै विधि आहि ॥
तुम सम सुभठ सुपात्रवर, कहँ मिलिहै हमकाहिं ।
परशुराम पै एक धनु, लाय धरयो मोहिं पाहिं ॥

कोउ अस बीर न जगत लखाई * जोत्यहि लेहि उठाय चढ़ाई ॥
जोतुम जाय चढ़ावहु वाहा * तौ साउछाह देहुँसिय ब्याही ॥
यहि सुनि अभिमानादशभाला * खिलखिलाइ हँसिकहत्यहिकाला
हमसन कहा करहु नरराई * क्षुद्रधनुष की यतनि बड़ाई ॥
हमैंइन भुजन प्रमथ गण वासा * शङ्कर शिवा सहित कैलासा ॥
लियो छत्रसम छाय सहजही * तिन आगे यह धनु कह अहही ॥
मन्दर मेरु गिरिन गरुआई * गनौं न नेक महेश दोहाई ॥
इनहुन ते तव धनु यह काहा * है है गुरुतर अति नरनाहा ॥
अर्पहुप्रथमहिं हमहिं जानकी * है है बेला जबहि जानकी ॥
तब मैंकरि द्विखण्ड कोदण्डा * करिकीरति मण्डितभुजदण्डा ॥

दो०—लंकहि जैहौं आप सन, बिदा होइ नर नाथ।
सुनिबोले मिथिलेश इमि, वचन विनय के साथ॥
तुमहि उचित लङ्केश मम, करहु प्रतिज्ञा पूरि।
पुर नर नारिन के अहै, निरखन कौतुक भूरि॥
कह प्रहस्त नहिं है उचित, काहू को प्रणभंग।
निश्चय प्रण पूरण किये, जनक आपके संग॥
कमल लोचनी सीय कहँ, देहैं वेगि बिवाहि।
बल सों हरिये जानकी, मेटि बचन जो जाँहि॥

सुनि बोल्यो दशशिर भटमानी * मैं मातुल! तवशिक्षा मानी॥
पै देखिये व्यतिक्रम कोई * धनु भञ्जन पाछे नहिं होई॥
योंकहि गर्व्व सहित दशशीशा * उठ्योसहितमिथिलाअवनीशा॥
धनुष भवन गवने त्यहि काला * रावण सहित जनक नरपाला॥
यह सुनि समाचार सब धाए * कौतुक लखन हेतु अकुलाए॥
बाल वृद्ध वनिता पुरवासी * राजभवनके दासऽरु दासी॥
मूढ़ जनन जान्यो अब पायो * सिया बरन वर बरमनभायो॥
ज्यहिगृहधनुष धरयोत्यहिद्वारा * ठाढ़ भये निशिचारि भुआरा॥

दो०—बाहर ही ते झाँकि कै, अवलोक्यो धनु ओर।
लखिअतिभीमअसीमभट, रुद्र तेज युत घोर॥

सो०—खल बल प्रबल बिसारि, अति उद्विग्न सुरारिपति।
गयो हिये मैं हारि, कहनिराशमनइमिबचन॥

हरिगीतिका छन्द॥

चलिहै न मेरी आज इत हतभाग्य भूप न जानिये।
यहि पाप को कितते इहाँ लायो उठाय अज्ञानिये॥
उठि कौन पापी को लख्यो मुख आज प्रातःकाल मैं।

बैठे बिठाए जो परयो ऐसे कठिन जंजाल में ॥
उर अन्तरहि आतङ्क यह बाहर बहुतही गर्व सों ।
बोलत बचन बनिबड़ बली लङ्केश दशमुख सर्व सों ॥
चहुँ ओर अवलोके अमित नर नारि निकट निहारहीं ।
ठाढ़ शरासन भङ्ग कौतुक कौतुकित चित धारहीं ॥
दशमुख विचारयो इन सबन इतते हटावन उचित है ।
जासों रहै यह भेद गुप्त अलुप्त मम महिमा रहै ॥
भीषण कियो तनुअस बिचारि निशाचराधिप द्रुत तबै ।
कोपारुणित दृग भौंहभङ्ग निहारि भागे जन सबै ॥
भयभीत निज निज भौन जाय छिपे प्रकम्पित ह्वै हिये ।
दशमुख विचारविचारि उर जनकहुविचार सु यों किये ॥
दुर्जन जनन सन दूर रहिबो है सुजन मम सम्मतै ।
ते श्वानसम मुख लागि चाटत झपटि काटत डाँटतै ॥
योंशोचि निशिचरनाथसन बोलेजनक मिथिलेश्वरा ।
हमभौन गौन करैं सिया शृंगार हित लंकेश्वरा ! ॥
इमि कहि जनक मन्त्रिन समेत निकेतकाहिं सिधारेऊ ।
एकान्त लखि लङ्केश खल मन माहिं ऐस विचारेऊ ॥

एकबार बलकरि धनु काहीं * लखहुँ उठाय हानिकछु नाहीं ॥
छोरि मुकुट आदिक आभूषण * कटितटपटकसि लीन्हदशानन ॥
बीसबाहु ते गहि शिव चापा * लग्यो उठावन करि अतिदापा ॥
करि बहु बलहारयो लङ्केशा * टरयो न शम्भु शरासन लेशा ॥
बह्यो स्वेदजल अङ्गन माहीं * लोचन अरुण भए दरशाहीं ॥
तब प्रहस्त सन कह्यो पुकारी * मातुल! तजहिनमहिधनुभारी ॥
कौन उपाय करौं यहि काला * अहै कठिन को दण्ड कराला ॥
ममसुधि बुधि सबही बिनशानी * सुनि प्रहस्त बोल्यो इमि बानी ॥

दो०-हँसी कराई आज तुम, अपनी मिथिला आय।
सावधान ह्वै पुनि करहु, चिन्ता त्यागि उपाय॥
पुनि धनु धरि लाग्योकरन, बाहुबलहि दशभाल।
नेक न बिचल्यो पै अचल, शिव को दण्ड कराल॥
सो०-तब दशशिर हत ज्ञान, कातर स्वरमहँ यौंकह्यो।
मातुल मेरे प्रान, अहैं कण्ठगत यहि समै॥

यहि धनु की गुरुतर गरुआई * मेरु गिरिहु ते अधिक लखाई॥
है यह युक्ति एक यहि काला * सबमिलि भञ्जहिंधनुष कराला॥
सुनि प्रहस्त हँसि कह यहबानी * सुनिय लङ्कपतिअति भटमानी॥
हम सब करहिं कथन तव जोई * तौ सियपति सब महँको होई?॥
यासों यत्न करहु यक बारा * पुनि मनलाय सुरारि भुआरा॥
जाहिं प्राण बरु मान समेता * मान न तजिय प्राण के हेता॥
हीन मान ह्वै प्राण न राखिय * कायर नर सम्मत यह भाषिय॥
रावण कह्यो बेगिरथ लाओ * कैसो मान?काहि समझाओ?॥
समुझि प्रहस्त लङ्कपति भावा * तहँ स्यन्दन तुरतहि मँगवावा॥
पुनि प्रहस्त कह याहि प्रकारा * हौं मैं लखत उपस्थित द्वारा॥

दो०-इष्टदेव को ध्यान धरि, एक बार तुम और।
करहु परीक्षा भाग्य की, रजनीचर शिर मौर॥
हा!धिक क्यहिकुसमयकियो, मैं तुम्हार सँगआज।
यहसुनिअतिक्रोधितलजित, भयो निशाचरराज॥
शम्भु शरासन पास पुनि, करन लग्यो बलजाय।
अचल उपारन ज्यों चहै, चीटी चरण लगाय॥
लपटिगयो धनुउपरिगिरि, करिदशशिर आघात।
करपद वक्ष प्रहारहू, किय लङ्केश लजात॥
धनुसङ्घर्ष कठोर सों, श्रमित शिथिल गतमान।

क्षत विक्षत रक्ताक्त बपु, लेत श्वास अकुलान ॥
रही न शक्ति कछू अवशेषा * तब उठि ठाढ़ भयो लङ्केशा ॥
कटि तट कर धरि बारम्बारा * लखत गगनकरि ऐसविचारा ॥
शठ शचीश तौ कहुँ न बिलोकै * होय हँसी जो ममसुर लोकै ॥
अति विषएण लज्जित लङ्केशा * लखिप्रहस्त सुचतुर दनुजेशा ॥
निपतित पट अरु बसन उठाई * आन्यो रथ द्वारे पहँ जाई ॥
इत उत झाँकि लङ्कपति रथ पै * द्रुत चढ़ि गयो भागिनभपथपै ॥
लङ्कपतिहि यहिभाँति गगनगत * देखि सशङ्कलङ्कदिशि भागत ॥
मिथिला बाल मारि किलकारी * हँसन लगे सब दै कर तारी ॥

दो०—ज्यहि आज्ञा बिन नहिं हलै, कृत्ति वास यकपात ।
त्यहि नियोग खण्डन करन, को समर्थ दरशात ॥
रमा रमण बिन को करै, रमा कराम्बुज स्पर्श ।
है धनु भङ्ग प्रसङ्ग यक, मोह भङ्ग दिग्दर्श ॥

चतुर्शततम सर्ग ॥ १०४ ॥

विश्वामित्र का अवध आगमन असावधानता वश राजादशरथ राम लक्ष्मणके परिवर्तनमें भरत शत्रुघ्न उनके साथ भोजनाव विश्वामित्र का क्रोधोद्दीपन व श्री रामचन्द्र कर्तृक शांतना ॥

दो०—रघुनन्दन के शंक ते, खल मारीच पराय ।
नृपतिजनकके राज्यमहँ, सदल वास कियजाय ॥
तहँ अमर्ष वश ह्वै सतत, बहु छलबल विस्तारि ।
हिंसतध्वंसतऋषिमुनिन, शठ नृशंस निशिचारि ॥

सो०—जहाँ कोइ ऋषिराय, कोइ यज्ञ आरँभ कियो।
याग धूम लखि पाय, जाय सदल मारीच तहँ॥
रक्त मेद मज्जा वरसाई * देत आशुही यज्ञ नशाई॥
जप तप योग माहिं दिनराती * करहिं विघ्न वहु देव अराती॥
अस उत्पात चहूँदिशि छयऊ * यज्ञहीन मिथिलापुर भयऊ॥
तब अति पीड़ित ह्वै मुनि वृन्दा * जायजनकढिगविगतअनन्दा॥
लागे कहन सुनिय नरनाथा * सहिनजातनिशिचरनप्रमाथा॥
करि आशुहि नृप कोइ उपाई * कीजियदलन खलनखलताई॥
यह सुनि हृदय चिन्तिनृपज्ञानी * कौशिकमुनिसनकहइमिवानी॥
सुनिय महर्षि तपोवल राशी * तुमहिं सकत संकट यहनाशी॥
मारीचादि तमीचर ईशा * ब्रह्म अंशते प्रकट मुनीशा॥
केवल क्षात्र धर्म सन तासू * नहिं कदापि ह्वैसकत विनासू॥
दो०—आपमाहिं क्षत्री दरप, ब्रह्म तेज दोउ भास।
यहिहिततुमहींकरिसकत, यह आपदा विनास॥
यहसुनिविश्वामित्रऋषि, अतुल तपोवल धारि।
यहि प्रकार चिंता कियो, निजशुचिहृदयमझारि॥
सो०—श्रीपति जगदाधार, निशिचर वंशविध्वँस हित।
नृप दशरथ आगार, राम रूप ते अवतरे॥
स्वयं विष्णु माया जग वन्दिनि * पराशक्तिभवभीरनिकन्दिनि॥
नृप विदेह के भवन मझारा * सुतारूप ते लिय अवतारा॥
धरणी भार उधारण कारण * कीन्हे उभयमनुज तनुधारण॥
यहिक्षणभल अवसर मोहिलाहू * अबविलम्बतजि सहितउछाहू॥
सीयराम के मिलन मझारी * ह्वै मध्यस्थ लेहुँ यसभारी॥
भवभर हर रघुवर कर द्वारा * कर वावहुँ जगकर उपकारा॥
असनिचारि मुनिवर विज्ञानी * कहनरेशप्रति यहिविधवानी॥

नृपति चिंतकर काज न कोई * निशिचर वंश ध्वँस द्रुत होई ॥
यहि दुख नाशन केर उपाई * कीन्ह स्वयं प्रभुजगत गुसाँई ॥
जाय अवध नृप दशरथ पासू * लावत याँचि राम कहँआसू ॥

दो०—तिन करसों होई निधन, यत घन विघन निकाय ।
इमिबुझायकीन्ह्योगमन, अवध काहिं मुनिराय ॥
राम दरश की लालसा, मुनिवर हियमधि धारि ।
कछुदिनमधि पहुँचतभये, पावन अवध मँझारि ॥

सो०—सरयू सरित नहाय, बहुरि भूप भवनहि गये ।
मुनिहि हेरि द्रुत धाय, द्वारी नृपहि जनायऊ ॥
सुनि दशरथ महिपाल, गाधि सुवन करआगमन ।
ह्वै विस्मित तेहिकाल, इमि चिंता लागे करन ॥

कौशिक मुनि अति उग्रस्वभाऊ * प्रकटजासु जग विकटप्रभाऊ ॥
जानि परत कोइ आपद माहीं * डरिहैं आजुअवशि हमकाहीं ॥
हरिश्चद्र भूपति गुणखानी * सरलसुशील ख्यातबड़दानी ॥
तिन्है दान छल करि चतुराई * लीन्ह्यों नारि सुवनविकवाई ॥
काह आज धौं भाग्य मझारा * जो मुनिराज इतहि पगधारा ॥
अस उर चिंति सभय नरनाथा * तुरतहि सभा सदन लै साथा ॥
जाय द्वार पै मुनिहि निहारी * गिरेधाय तिन पदन मझारी ॥
कौशिक नृपहि तोलि उरलयऊ * सहसनेह वहु आशिष दयऊ ॥
बहुरि नरेश गाधि सुत काहीं * सादर लाय सभा गृह माहीं ॥
शुचि सुन्दर आसन बैठारी * निज करसों पदपदुमपखारी ॥

दो०—करि विधिवत अर्चन नृपति, कह करपुट इमिबैन ।
धन्य आजु मोरे सरिस, अपर कोउ जग हैन ॥
प्रभु पद पावन रेणु सो, भा मम प्रयत निकेत ।
कहिय कृपा करि दास सो, निज आवनकरहेत ॥

यहसुनिकह्यो कुशिककुल दीपा * कहहुकसनअस सुमतिमहीपा ॥
विनय दान सत तव कुल केरा * अहै ख्यात जगमधिचहु फेरा ॥
यक याँचनानिमित यहि काला * मैं आयहु तवढिग महिपाला ॥
मम आश्रमं निवासि ऋषि जेते * जबजब करहिं कोइ मख तेते ॥
तब तब कुटिल निशाचर आई * करहिं विघ्नकरि बहुखलताई ॥
यहि हित मम यांचन नृप येहू * मख रक्षण हित रामहि देहू ॥
मुनिवर वचन शेल अनुहारा * ठनक अवधपति हृदयमझारा ॥
मुख मण्डल मुरझायहु ऐसे * छुवत लाजवति लतिका जैसे ॥
करि नत शीश महा दुख पागे * यहि विध करन खेदउरलागे ॥
मुनि आवतहि भयहुमोहिज्ञाता * अहै आजु मम वाम विधाता ॥

दो०—हाय आजु हमकहँ भयो, निश्चित सकल प्रकार ।
सुत वियोग दुख शोकते, होई मरण हमार ॥
अंध शाप सुधि करि हृदय, रह्यो मनाय सदाय ।
राम वियोग ते प्रथम ही, छूटि जाय यह काय ॥

सो०—यह मोरे चित माहिं, रह्यो चाउ वहु दिननते ।
प्राण विहग उड़िजाहिं, लखत रामबिधुवदनवर ॥
पर मम आशा जोय, कियो न पूरणशमन तेहि ।
अब चाहे जोइ होय, मनिहौं नहि ऋषिबचन मैं ॥

यहिविधिहृदयचिन्ति नरनाथा * मुनिप्रतिकह्यो जोरियुगहाथा ॥
सुनिय महर्षि तपोबल खानी * प्राणहु अर्पत मोहिं न आनी ॥
पर पलभरि रघुनन्दन काहीं * मैं दृग ओट सकत करि नाहीं ॥
राम विछोह शोक क्षण काला * सहि न सकतममप्राणकृपाला ॥
जब मैं शयन करत मुनि राई * तव राखत तेहि हृदय लगाई ॥
सोवत स्वप्नहु मधि यदि मोहीं * देखन परत चन्द्र मुख ओहीं ॥
तब ह्वै विकल चौंक मै परहूं * तेहि दृगओटकौन विधकरहूं ॥

मोहिंऋषि शापसोहिं मुनिनाहू ❋ जीवन रतन भयो यह लाहू ॥
वर आशी तुम सो मैं नाहीं ❋ वरु प्रिय राम सामुहे माहीं ॥
तुम्हरे शाप ते त्यागहु प्राना ❋ तबहु मोहिं सुखतपोनिधाना ॥

दो०—असकहिअन्धकऋषिप्रवर, शाप जौनविध दीन्ह ।
सो सब विश्वामित्र सों, वरणन नृपवर कीन्ह ॥
कह्यो बहुरि दूजे लखिय, निज उर माहिं विचार ।
किमिअजानशिशुरामसक,निशिचरविघननिवारि

सो०—विकट पर्वताकार, मायावी निशिचरन सों ।
बालक पाव कि पार, जिनसोंसुभटहुकरत भय ॥
याते ऋषि कुल नाथ, होय मोहि आदेश यदि ।
तो चलि प्रभु के साथ, करिहौंमखरक्षण मुनिन ॥

नतु मम विपुल सेन चतुरंगा ❋ जाहु लिवाय नाथनिज संगा ॥
सो प्रभुकर निदेश शिर धारी ❋ करिहै सबविध मखरखवारी ॥
भूप वचन सुनि कह्यो मुनीशा ❋ करिथिरहृदयसुनियअवनीशा॥
यह निशिचरतवकरकोइ काला ❋ निहतनाहि ह्वै सकतभुवाला ॥
पुनिजो देत तुम कटक अपारा ❋ हम तेहि कहँते देव अहारा ॥
दूजे एक राम ही द्वारा ❋ होत सिद्ध जब काज हमारा ॥
तब अगणीत नरहय गजकाहीं ❋ देव कष्ट समुचित कृति नाहीं ॥
तव पूर्वज हरिचन्द सुजाना ❋ मोहिससागराक्षितिकियदाना॥
सो तुम उपजि सोइ कुलमाहीं ❋ रामहि देन कछुकदिन काहीं ॥
अस सकुचाय हृदय महँ रहेऊ ❋ यह न रीतिरघुकुलकी अहेऊ ॥
मोकहँ आजु परत यह जाना ❋ होई दिन कर कुल अवसाना ॥
टारत बचन समुझि का मोही ❋ याकर फल दिखाइ हौं तोही ॥
सुनि मुनिवदन कोपयुत बानी ❋ भे संकित नृप दशा भुलानी ॥
कम्पित गात भई मति भोरी ❋ शून्य दृष्टि हेरत चहुँ ओरी ॥

भरत शत्रुहन कहँ तेहि काला * लखिअनमनइमिकह्योभुवाला ॥
मुनिवर संग जाहु दोउ भाई * करहु काज जस होइ रजाई ॥

दो०--राम लखण कर रूप जस, सुन्यो रहे ऋषिराय ।
भरत शत्रुहन माहिं सो, सब लक्षण लखि पाय ॥
जानि राम लक्ष्मण तिन्हैं, नृप सन माँगि बिदाय ।
दोउ भ्रातन लै किय गमन, मिथिलादिशिहर्षाय ॥
सरयु गंग संगम सरित, लंघि तपोवल ऐन ।
एक विकट कानन निकट, पहुँचि कह्यो इमिबैन ॥

हरिक छन्द ॥

जोय युगल पन्थ वत्स सन्मुख दर्शात हैं ।
दोऊ पथ अगम सुगम मिंथिलापुरकेअहैं ॥
हेरहु वन मध्य वीथि तासों जो सिधाइ हैं ।
आश्रम मधितीनिप्रहर माहिंपहुँचि जाइहैं ॥
दूसर वह मार्ग तीन दिवस की कुमार है ।
किन्तु तीन प्रहर के मग माहिंभयअपारहै ॥
लागत तेहि पंथ माहिं तड़का निशाचरी ।
जो प्रयात ताहि भक्षिजात सो तमीचरी ॥
भाखहु अब वत्स कौन पंथ सों पयानहीं ।
सोसुनि केकयि कुमार कह्यो जोरि पानहीं ॥
नाथ दुष्ट जनन छेड़िबो न कबहुँ श्रेय है ।
यहिहितसब भाँति अशुभविपिन पंथहेयहै ॥

दो०—भरत वचन सुनि गाधिसुत, विस्मित होय अपार ।
यहि प्रकार चिंता करन, लागे हृदय मँझार ॥
काह स्वप्न मैं लखि रह्यो, यह अति भीरु कुमार ।

भुवन जयी दश वदन कहँ, किमि करिहै संहार ॥

सो०—यक निशिचरि करनाम, सुनतजोय शंकितभयो।
लक्ष लक्ष वलधाम, रक्ष ध्वंसकरिहैसोकिमि ॥
मैं भगवत अवतार, विषय माहिं किय श्रवणजोइ।
अहै सो काह असार, पर कदापि अस ह्वै नसक ॥

यहिमधि अवशि अवध पुरिराई * किय मम संग कपट चतुराई ॥
राम लखण के विनिमय माहीं * भरत शत्रुहन दिय हमकाहीं ॥
आह भूप कर अस अभिमाना * मोरेसँग यहि विध छल ठाना ॥
आजु तासु कोशलपुर सारा * करिहौं रोषानल ते छारा ॥
असविचारिअति कुपितशरीरा * तहँ ते तुरत फिरे तजि धीरा ॥
क्रोध तप्त युग लोचन द्वारा * निकरतझरझरअनलअपारा ॥
पहुँचे जबहिं अवध पुर पासू * तबदृग निर्गत अनल ते आसू ॥
वन उपवन वर भवन विशाला * लागेभस्म होन ततकाला ॥
प्रजा पुंज अति शय अकुलाई * राम समीप पुकारेहु जाई ॥
रक्षहु प्रभु कौशिक मुनिराई * रहे सकल पुर प्रजन नशाई ॥

दो०-हेतु तासु नरनाथ सो, माँग्यो मुनि तुम काहिं।
सो नरेश पठवत भये, भरतहि तिनसँग माहिं ॥
आरतवचनप्रजानसुनि, जन रंजन रघुराय।
द्रुतपद विश्वामित्र पहँ, चले आशुही धाय ॥
दूरहि ते आवत लख्यो, रामहि मुनि तपऐन।
रूप छटा छवि माधुरी, हेरि छकित भे नैन ॥

लीला छन्द ॥

नवल नील जलद न्याय। सुखमा मय रुचिरकाय ॥
तासन मन मोद कारि। वर्षंत लावण्य वारि ॥

अरुण चरण काहि कंज। जानि मधुप पुंज पुंज ॥
तिनके चहुँओर माहिं। मंजुल गुंजत उड़ाहिं ॥
मत्तद्विरद शुण्ड न्याय। चारु ऊरु रह सुहाय ॥
उमरु गर्व खर्व कारि। क्षीण सुकटि मनोहारि ॥
त्रिवली शोभित सुचारु। नाभिकमल छबिअगारु ॥
सुन्दर उर अति विशाल। दोलत गज मोतिमाल ॥
मनहुँ सहित राजहंस। शोभित नव जलद अंश ॥
नाल रतन थंभ न्याय। सुभग युगल भुज सुहाय ॥
अंगदादि अलंकार। भूषित जगमग अपार ॥
फुलित कोकनद समान। करतल धृत धनुष वान ॥
इन्दु सरिश वदन भास। सुन्दर मृदु मंद हास ॥
नील जलद थित प्रभात। तपन सरिस अधर भात ॥
उन्नत नासाभिराम। हेरि लजत तूण काम ॥
गृद्धिनिमद भूरि हर्ण। अनुपमेय युगल कर्ण ॥
तिनमधि शशि सूरन्याय। मणि मय कुंडल सुहाय ॥
भ्रू युग जनु चांप मैन। आश्रुति सु विशाल नैन ॥
मृगमदकर तिलक भाल। कुंचित शिर केश जाल ॥
कोटिन रवि शशि समान। अंग प्रभा भासमान ॥

दो०—इमि मुनिवर रघुवीर कर, लखि छवि छटा रसाल।
रामरूप पाथोधि मधि, भये मगन तेहिकाल ॥
वहुरि लगे चिंता करन, इमिमुनि ज्ञाननिधान।
मोसमान जग आजुनहिं, भाग्यवान है आन ॥

सो०—जेहिहितजपतपध्यान, करहिंयोगि ऋषिमुनिसतत।
सो श्रीपति भगवान, है प्रत्यक्ष मम सामुहे ॥

प्रभुपदपदुम मँझारि, होय पतित मै प्रेम युत।
पदरज भवरुजहारि, यदिधरत्यों निज शीश पै॥

तौ जप तप व्रत साधन सारे * होते यहिक्षण सफल हमारे॥
पर क्षत्रिय कुलमधि करतारा * धारण कीन्ह मनुज अवतारा॥
यहिहित लोकरीति अनुसारा * करनप्रणाम न उचितविचारा॥
त्यागे लोकरीति कोइ कालू * ह्वै हैं नाहि प्रसन्न कृपालू॥
यहिविध चिंतामधि ऋषिराई * रहे मगन तेहिक्षण प्रभुआई॥
ह्वै निपतितमुनि चरण मझारी * करिप्रणाम निजनामउचारी॥
जोरि पाणि इमि विनय समेतू * कह्योसुनिय प्रभुकृपा निकेतू॥
प्रजा पुंज सब हैं निर्दोषू * उचित न निरपराधि पर रोषू॥
कीजिय क्षमा क्षमागुण भूषण * अहे ऋषीन क्षमाहि विभूषण॥
सुत सनेह वश अंम आधीना * पितुहमकाहिंप्रभुहिनहिंदीना॥
मोहि जानि आपन अनुगामी * हरहु प्रजान भूरि दुखस्वामी॥
चलत अबहिं प्रभुसँग यह दासू * करिहौं यज्ञ विघ्न सब नाशू॥
नभ निक्षप्त लौह की नाईं * संतत संत रोष क्षण थाईं॥
यहिविधसुनिरघुवरमुखवानी * कौशिकविहँसिनिजहिधनिमानी

दो०—दाहितधामनदिशिकियो, अमिय दृष्टि मुनिराय।
ते समस्त रमणीय भे, तत क्षर पूरुव न्याय॥

सो०—कह कृतिवास विचारि, यह प्रभाव मुनिकेर नहिं।
जिमिसरसरितनवारि, अहे अंश पाथोधि कर॥
तेहि प्रकार धृतमान, भक्तजनन करशक्ति जोइ।
छाया मात्र समान, भुवनेश्वर के शक्तिकर॥

पंचशततम सर्ग ॥ १०५ ॥

श्रीरामचन्द्र व लक्ष्मण का विश्वामित्र के सहित मिथिलायात्रा व बलाअतिबलामंत्रद्वयग्रहण ॥

दो०—रामरूप माधुरी लखि, ह्वै विमुग्ध मुनिराय ।
शतशतआशिषरीतिवत, दै उर लीन्ह लगाय ॥
इतहिसुन्योदशरथनृपति, फिरि आवनमुनिकाहिं ।
अरुरघुपतिकररुचिकरन, गमन जनक पुरमाहिं ॥
सो०—ऋषिकौशिककरघोर, प्रकट रुषानल जेहिनिमित ।
अरु रघुवंश किशोर, कृत वहोर जिमि शांतभे ॥
सो सब अवध भुवार, सुन्यो प्रजन मुखसोइक्षण ।
आये सभा मझार, गुरु वशिष्ठ सँग गाधिसुत ॥

कौशलेश लखिकौशिक काहीं * गिरे धाय द्रुत तिन पदमाहीं ॥
पुनि भे ठाढ़ जोरि युग पाणी * चहकछु कहनपरनफुटवाणी ॥
तब कुलगुरु वशिष्ठ ऋषिराई * कहन लगे इमि नृपहिवुझाई ॥
रामहि पठवन हित अवधेशा * करहु न चिंतहृदयमधिलेशा ॥
जेहि रक्षक कौशिक तपधामा * तेहिभयतनिकनाहिंकोइठामा ॥
दूजे इन ऋषि नायक काहीं * जानिय एक तापसहि नाहीं ॥
यह सब अस्त्र शस्त्र के सागर * अतुलप्रतापसकलगुणआगर ॥
इनके संग गये नरनाहू * रामहि होइ अतुलफल लाहू ॥
अस्त्र शस्त्र यत मुनिकर जाना * करिहैं सब रघुपतिहि प्रदाना ॥
यहिहितनृप विलंव जनिलावहु * रामहि द्रुत मुनिसंग पठावहु ॥

दो०—यही माहि तव तव प्रजन, अहे भूप कुशलाय ।
दूजे तव कुलरीति यह, याँचक विमुखनजाय ॥

कोशलेश गुरुवचन सुनि, होय विगत सन्देह।
ऋषि कौशिक विनय युत, लागे कहन सनेह॥
सो०—हे कृपाल ऋषिराय, भा भ्रम वश अपराध यह।
सोक्षमिजाहुलिवाय, निजपद सेवक रामकहँ॥
परहिय मथितपथाम, यह सदाय राख्यो सुरति।
अबहिअबुझशिशुराम, तासुदोषदिशिलखेहुनहिं॥
सुनिनृप वचन मुनीश प्रवीना * यहिविधउतर विहँसिकैदीना॥
नृप तुमतो रघुनन्दन काहीं * निर्गुणही समुझत उरमाहीं॥
परबहु सुजन साधु सुधिज्ञानी * कहतराम कहँसब गुणखानी॥
यहसत जानु भानुकुल केतू * रामजनम खलदलनहि हेतू॥
मम सँग गये राम कहँ भूपा * होइ लाहु जोइ शक्ति अनूपा॥
जेहिविनु सदा संकल भववासी * रहत उपाधि विहीन उदासी॥
नृप कछु करिय चिंत उर नाहीं * छुइसक अशुभनरामकिछाहीं॥
यह निश्चय तुम करिय भुवारा * तिनकररिपुनत्रिलोकमझारा॥
सुनि इमि द्वर्थ गाधि सुतवानी * विहँसिहृदयवशिष्ठमुनिज्ञानी॥
इमि नरेश प्रति बचन उचारा * अहै सत्य मुनिराज विचारा॥
दो०—पुनि निश्चय करि मानहू, भूपति हृदय मझारि।
यकपल महँकौशिकसकत, खल निशिचरनसँहारि
केवल रघुपतिहितनिमित, मुनि यह कीन्हउपाय।
यहिहित अर्पहु राम कहँ, उर सन्देह विहाय॥
सो०—तब सहर्ष अवनीश, बोलि राम लखणहि तुरत।
चुम्बि नेह युत शीश, दीन्ह सौंपि मुनिराजकहँ॥
वशिष्ठादि मुनि वृन्द, प्रभुके यात्रा समय महँ।
स्वस्ति वचन सानन्द, चहुँ दिशिते उचारेऊ॥
गमन समय कौशिक मुनिराई * कह नृपसनयहिविध पुनराई॥

दश दिन विगत भये नरनाथा * होइ भेंट पुनि सुतन के साथा ॥
गमन समय प्रभु शारँग पानी * कहकरपुटइमि मुनिसनवानी ॥
यदि निदेश मुनिवर कर पाऊँ * तौ जननी सों विदा ह्वैआऊँ ॥
मातुहि वोध दिये विनु नाथा * यदि मैं गमनकरहुँ प्रभुसाथा ॥
तौनिशिदिनमम विरहमझारी * रहैं रुदति तजि भोजन वारी ॥
यहसुनिमुनिकह प्रफुलितगाता * आवहु वन्दि मातु पद ताता ॥
तब सहलषण गये जगत्राता * जहँ कौशिला सुमित्रा माता ॥
उभय जननि पद शीश नवाई * कहन लगे यहि विध रघुराई ॥
ऋषि कौशिक मख रक्षण काहीं * जात जनकपुरतिन संगमाहीं ॥
यहिरण गमन प्रथम मम माई * देहु अशीस हिये हुलसाई ॥
जासों आशु समर जय पाई * बन्दहु मातु चरण पुनिआई ॥

दो०—तनय वचन सुनतहि भई, कौशल्या हत ज्ञान ।
लखण जननि ठगसीं गई, भई पुतली समान ॥
उभय रानि के दृगन ते, बह अविरल जलधार ।
भयोरुद्ध गलविगलअस, वचन न सकहिं उचार ॥

सो०—जननिहिविकलनिहारि, जनजीवन त्रिभुवनरमन
सुखद सुधारस ढारि, कहन लगे करजोरि कै ॥
हर्ष समय सुनु माइ, शोक करन कर काज नहिं ।
ऋषिकौशिक सेवकाइ, अल्पभाग्यसोंकेहिमिलत ॥

वहुरि विचारि देखु उर माई * रक्षक जेहिकौशिक ऋषिराई ॥
तेहि कलेश यहि त्रिभुवनमाहीं * कोउ दैसकत लेशभरि नाहीं ॥
ऋषिकौशिक कर अतुलप्रतापा * कीरतिविमलसकलजगव्यापा ॥
तप बल जोइ महर्षि प्रवीना * रचनाद्वितियसृष्टि की कीना ॥
तिन संग इमि न अशुभभयकोई * रविसहशीतभयन जिमिहोई ॥
यहिहित दोउ भ्रातन सह नेहू * गमन निदेश चिंत तजि देहू ॥

लहि प्रबोध तव दोउ महारानी ❋ सुत मुखचुम्बि फेरि तनुपानी ॥
गमनोचित शुभ कृत्य सवाँरी ❋ दै विदाय इमिगिरा उचारी ॥
गणपति गौरि प्रसाव सिधावहु ❋ करिमुनिकाजतुरतफिरिआवहु
तब सवन्धु रघुकुल दिन राई ❋ भातन पदरज शीश चढ़ाई ॥
जाय आयुधागार मझारी ❋ अस्त्र शस्त्र नाना विध धारी ॥
मनोहारि रण वेश वनाई ❋ कौशिकपद वन्देहु पुनिजाई ॥

दो०—गुरुवशिष्ठ अरु स्वपितुपद, वन्दि लखण रघुराय ।
मुनिवर विश्वामित्र सँग, कीन्ह गमन हर्षाय ॥
निकरि दूरि जब गे कुवँर, परे न नृपहि लखाय ।
तबक्षितिपतिक्षितिपतितह्वै, रुदन लगे अकुलाय ॥

सो०—सो लखि सचिव निकाय, धाय उठाय नरेशकहँ ।
वहु प्रकार समुझाय, अंतःपुरि मधि लै गये ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

रघुवंश मणिकर गमन निशिचरनिधनहितलखिसुर गनै ।
दुन्दुभी शंख वजाय हिय हर्षाय जय जय ध्वनि भनै ॥
सुर अंगनागण गमन मन वर सुमन गगन ते वर्षती ।
विद्याधरी किन्नरा आदिक नर्तकी गण नर्तती ॥
पनघट निकट भरि पुरटघट ठाढ़ीं सुमुखि कुल कामिनी ।
स्वस्तैन उच्चारत खड़ जहँ तहां कोविद द्विज मुनी ॥
वुध वृद्ध गण दोउ भ्रात के शिर धान दूर्वा धारि कै ।
आशिषदियो इमि फिरहु द्रुत मुनिराज काज सवाँरि कै ॥
आगे प्रयात मुनीश तिन पश्चात रघुकुल दिनमनी ।
तिनके पछारी लखण सो अवलोकि इमि शोभावनी ॥
मानहु दिवाकर कलाधर के मध्य माहिं सुहावनो ।
नवनील नीरद पटल निर्मल लसि रह्यो मन भावनो ॥

कछुकाल माहि कृपालु सानुज पुरीते बाहर भये।
मुद प्रद शरद ऋतु विशद शोभा हेरि उर आनद छये॥
दो०-यहि प्रकार वारिद रहित, सोह विमल आकाश।
काम क्रोध मदविगतजिमि, साधु स्वच्छउरभास॥
शांत अनिल लहि शरद प्रसंगू * जिमिखलसुधरसाधुजनसंगू॥
विमल सरन इमिकमल प्रकाशे * जिमिअदोषउरभक्तिविकाशे॥
सोह कीच तृण गत पथ ऐसे * भ्रम विहीन श्रुति मारग जैसे॥
इमि परिपक्क शस्य नतमाथा *जिमिसुधिजननिजसुनिगुणगाथा
लसत हंस बहु इमि सर तीरा * जिमिमुमुक्षु गृह साधुनभीरा॥
कतहुँ न ताप छाव सितलाई * विगत लोभजिमिहृदयजुड़ाई॥
फूले थलन काश सित यूहा * जनुसुजननशुचिसुयशसमूहा॥
इमि डावर जल यगहु झुराई * दंभिदंभ जिमि द्रुत नशिजाई॥
दो०-इमि सानुज प्रभु छविलखत, गमनत मुनि पश्चात।
कमलयोनिसंगमहँ मनहु, दोउ सुरभिषक प्रयात॥
गमनत सरयू तीर ह्वै, तासु उभय तट माहिं।
नन्दन वन सम मनहरन, उपवन सघन सुहाहिं॥
वनज आदि वर वारिरुह, भासत वारि मझार।
तेहिचहुँदिशि मधुकरनिकर, करत फिरत झंकार॥
सो०-कतहु धीर कहुँ तुंग, सह तरंग वाहित सरित।
बहुविध रंग विहंग, सह उमंग क्रीड़त तरत॥
काहु कोइ थल माहिं, नर नारिन अवगाह हित।
सुन्दर घाट सुहाहिं, स्वेत असित प्रस्तर रचित॥
को कहि सक सरयू प्रभुताई * भूषित जासन अवध सदाई॥
दरश परश मज्जन करि जासू * होहि नरनअघ ओघविनासू॥
भवरुज ग्रसित सजीवनमूरी * दायिनि राम चरणरतिभूरी॥

चलि वहुदूरि घूमि मुनिराई * हेरेहु राम लखण की धाई ॥
रवि उताप शशि मुखकुँभिलाये * पथ श्रम स्वेद बुन्द तनुछाये ॥
तव मुनिवर उर कीन्ह विचारा * सगुणभक्त के दृष्टि मभारा ॥
नर सम्भव दुख मम सँग माहीं * भयोआजु गत दुखप्रभुकाहीं ॥
एकहि दिन मधि जबयहिभाँती * भयेश्रमित निशिचरकुलघाती॥
दो०—तौ वहुकाल कराल वन, माहिं निवसि दोउभाय ।
सहिहैं कौन प्रकार ते, आतपवात निकाय ॥
अस विचारि कह अतिप्रयत, यह तीरथ हेराम ।
तव पूर्वज गण यहि थलहि, तनुतजिगे सुरधाम ॥
सो०—करि आवहु असनान, दोउ भ्रात यहि तीर्थ महँ ।
करि हौं तुमहि प्रदान, वला अतिवला मंत्रयुग ॥
जेहि प्रभाव कबहूं तुम काहीं * होइ पंथ विचरन श्रम नाहीं ॥
आधि व्याधिज्वर आदिकपीरा * व्यापी कबहूं नाहिं शरीरा ॥
शत वर्षहु विनु वारि अहारा * रहहु यदपि नर नाथ कुमारा ॥
तवहु न क्षुधा तृषा दुख होई * जपहु मंत्र यदि नितप्रतिसोई ॥
वाढ़े वल तनु तेज प्रकाशै * निर्मल ज्ञान बुद्धि उर भाशै ॥
देव दनुज आदिक जग माहीं * रणमधिठहरि सकीकोउनाहीं ॥
यहसुनिसहितलखणरघुनन्दन * सरितमज्जिकियमुनिपदवन्दन॥
सह सनेह मुनि ज्ञान निधाना * दोउ भ्रातन किय मंत्रप्रदाना ॥
सो अवलोकि देव समुदाई * यहि विध कहन लगे हर्षाई ॥
दो०—अब लक्ष्मण चौदह वरस, रहि विनु वारि अहार ।
इन्द्रजीत कहँ समर महँ, करि हैं अवशि सँहार ॥
कृत्तिवास मुनि केर इमि, मंत्र देन प्रभु काहिं ।
जिमि घनसिन्धु ते वारिलै, पुनि वर्षत तेहिमाहिं ॥

षट्शततम सर्ग ॥ १०६ ॥

ताड़का वध ॥

दो०–विगत निशा रविके उदय, कौशिक तपोनिकेत ।
मज्जि सरित करि प्रात कृति, सानुज राम समेत ॥
किय पयान तहँ ते बहुरि, देखत बहुपुर ग्राम ।
पहुँचे सरयू गंगकर, भा संगम जेहिठाम ॥

सरित उभय तट परम सुहावन * शोभित रुचिर तपोवन पावन ॥
विविध भाँति तरु पाँति सुहाये * बोलहिं विहग मंजु मनभाये ॥
जहँ तहँ मन विराग उपजावन * पावन पर्ण कुटी मनभावन ॥
लखिवनछवि प्रभु उरमुदछयऊ * तबकौशिक भाखतइमिभयऊ ॥
पूर्व माहि यह शुचि थल ताता * रह्यो कामवन नामसोंख्याता ॥
शशि शेखर कोपानल द्वारा * यहिथल भयोमदनअँगछारा ॥
तबसों यह प्रदेश अभिरामा * प्रचलित अंगदेश के नामा ॥
विपिनवासि द्विजमुनिसमुदाई * लखि कौशिकहि हिये हर्षाई ॥
गे लिवाय निज कुटी मझारा * कीन्हसभक्तिअतिथिसत्कारा ॥
यक निशि रघुवर लखणसमेतू * निवसे तहाँ कुशिक कुलकेतू ॥

दो०–प्रातकाल उठि मुनिन सन, लै विदाय ऋषिराय ।
सरित उतरि पहुँचत भये, यक कानन ढिगजाय ॥
अति भीषण सो घनगहन, छाव तिमिर अतिघोर ।
विकटझिल्लि झंकारध्वनि, परिपूरित चहुँ ओर ॥

रोला छन्द ॥

अश्वकर्ण धव कुकुभ वदरि कर्कटी विशाला ।
तिन्दुकादि कटियार चतुर्दिशि पादप जाला ॥

तासु ऊर्द्ध मधि गृद्ध कंक काकादि विहंगा।
उड़त लड़त पुनि गिरत करत बहु भाँतिन रंगा॥
वन मझारि भयकारि श्वान मार्जार शृगाला।
यूथ यूथ करि रहे जहां तहँ रव विकराला॥
तुंग अंग मातंग सिंह वृक व्याघ्र अघोरा।
भल्लुकादि बहु हिंस जन्तु विचरत चहुँ ओरा॥
सूखे तृण तरु पर्ण पूर महि मधि कोइ ठाईं।
दावानल रह धधकि अनल कण गगन उड़ाईं॥
पंथ जटिल संकीर्ण वक्र तम छादित ऐसे।
जगत माहिं परिणाम मनुज जीवन कर जैसे॥
कतहुँ भयंकर गर्त अंध तामस अनुहारी।
समणि फणीफणतोलि फुफुकि रह तासु मझारी॥
कहुँ प्रकांड तरु माहिं लटकि अजगर भयकारी।
रह्यो लील असतर्क पशुहि धरि वदन पसारी॥
कतहुँ कोइ सर माहिं करणि सह करि चिक्कारत।
कतहुँ व्याघ्र दै लम्फ विपुलतनु पशुहि विदारत॥
अर्द्ध भखित अरु गलित परो पशुशव कोइ ठांईं।
महा उग्र दुर्गन्ध रह्यो तेहि दिशि ते आई॥
कतहुँ अस्थि की राशि तहां बहु श्वान शृगाला।
चर चर चर्वन करत धारि पशुवन कंकाला॥
इमि विभीषिका युक्त हेरि कानन रघुराई।
पूँछेहु मुनि सन अहै कवन यह गहन गुसाईं॥
दो०—ऋषि कौशिक लागे कहन, पूर्व माहिं यहि ठाम।
विभव शालि द्वै पुर रहे, मलद करुष ललाम॥
भयोकाल बहु यक्ष यक, रह जेहि नाम सुकेतु।

महा उंग्र तप ठानेऊ, तनय लाभ के हेतु ॥
सो०—ताहि तनय वरदान, यहि हित दीन विरंचिनहिं ।
अवशि तासु संतान, पीड़ित करि हैं जग जनन ॥
पर यक सुता ललाम, सहस द्विरद वल धारिनी ।
जासु ताड़का नाम, करि प्रदान तेहि तोषेऊ ॥
तेहि तनु जाहि यक्ष सउछाहू * सुन्द संग करि दीन्ह विवाहू ॥
कछुदिन यक सुता सो जाई * जो मारीच देव दुखदाई ॥
हेरि दोष यक समय मझारा * सुन्दहि ऋषि अगस्त्य संहारा ॥
तब ताड़का प्रकोपित अंगा * लै निज सुत मारीचहि संगा ॥
ऋषिहि निधन हित गर्जत धाई * तब सकोप कुंभजऋषि राई ॥
यह अधिशाप दोउ कहँ दीन्हा * तुमदोउमनुज रुधिररुचि कीन्हा
यहिहित होयविकट निशिचारी * विचरहुनितधनगहनमझारी ॥
ऋषिअभिशाप सोहिं ततकाला * भये उभयनिशिचरविकराला ॥
खल मारीच अमित वलशाली * भयहु प्रचंड विप्रमुनि घाली ॥
दोउमिलि मलदकरूषहि नाशी *करिदियनिविड़गहन भयराशी
दो०—अघचारिणि ताड़का अब, बसत यही वन माहिं ।
तेहि भयते इतते पथिक, कोउ गमनत है नाहिं ॥
यदि भयप्रद यहि पंथ ते, करहिं गमन रघुराय ।
तौ पहुँचव त्रय प्रहर महँ, निजआश्रम महँजाय ॥
सो०—अपर पंथ वह जोय, है त्रयदिन की निरापद ।
अब जस तव रुचि होय, तेहि मारग सों गमनहीं ॥
सुनि मुनिवर के वैन, कह्योविहँसिराजिवनयन।
कोइ प्रयोजन हैन, गमन तीन दिन फेरते ॥
निशिचरि सोन शंक करकाजू * चलिय याहिपथसों मुनिराजू ॥
सुनियहिविध रघुबरमुख वानी * सपरिहासकह मुनितपखानी ॥

मोहिं तो यहि पथ ओर निहारे * ज्वर प्रकंप उर होत हमारे ॥
जबहि ताड़का मुख फैलाई * गर्जत तर्जत ममदिशि धाई ॥
दोउ वन्धु तब हमहि विहाई * जैहो इत उत अवशि पराई ॥
कह्यो विहँसि प्रभु शारँग पानी * यहमानहुँसतमुनिगुणखानी ॥
धनुष धारिवो वृथा हमारा * जोंनकरहुँ निशिचरिप्रतिकारा
कहकौशिक गोद्विजहित लागी * वधहुताहि खरशायक त्यागी ॥
यह सुनि कह करपुट रघुराई * कस आयसु यह देत गुसाई ॥
श्रुति शास्त्रन मधि हे तपऐना * आपु सबनके लिपिइमिबैना ॥

दो०—गुरुतर अघ तिय निधनते, अपर नाहिं जगमाहिं ।
पुनि उपदेशत आपुही, तीय सँहारन काहिं ॥
यहसुनिकहशौशिकविहँसि, क्षात्र धर्म कर सार ।
प्रति पालन सुजनन सतत, करन खलन संहार ॥
बध अवध्य अघ पुण्य के, जिते काज रघुराय ।
भल प्रजान जेहि माहिंसों, नृप करतव्य सदाय ॥

प्रजाहिंसि चाहे जोइ होई * भूपति केर वध्य है सोई ॥
यही भूप कर धर्म प्रधाना * याके विरुध अधर्म महाना ॥
देश काल अरु पात्र मझारा * दूषणीय कृति करहि विचारा ॥
लखहु वत्स सबकर रह जाना * संतत गरल विनाशक प्राना ॥
तवहुँ ताहि शंकर भगवाना * जग उपकार हेत किय पाना ॥
अन्न उपज हित क्षेत्र पुनीता * धारण करत पुरीष सप्रीता ॥
कबहूँ पावक परश बिहाई * होत न स्वर्ण शुद्ध रघुराई ॥
जग हित लागि ताड़का काहीं * बधबलेश अनुचित कृतिनाहीं ॥
तुमहित्याजि यहिजगत मँझारी * तेहिनअपरकोउ सकतसँहारी ॥
यहिहिततेहिकरि आशुविनाशा * हरहु मुनिनकरदारुण त्रासा ॥

दो०–यहसुनि रघुनायक कह्यो, तुम मम गुरु मुनिनाथ।
वधब ताड़का काहिं हम, तव आयसु धरि माथ॥
तवमुनिवर सानुजप्रभुहि, कछुक दूरि लै जाय।
दूरहि ते ताड़का कर, आश्रम दीन्ह दिखाय॥
सो०–स्वयं त्रास उर आनि, सहित भान तहँ ते भगे।
गुरु कर आशय जानि, विहँसिलखण सोकह्योप्रभु॥
यक सर जाय रहे मुनिराई * तिनके निकट जाहु द्रुत भाई॥
यहसुनि लखण कह्यो प्रभुपाहीं * राखिय संगनिज सेवक काहीं॥
अतिदुरन्तयहिनिशिचरिसाथा * करिहौकिमि अकेलरणनाथा॥
कह प्रभु याहि केर ऋषिराई * लेन परीक्षा चाहत भाई॥
तुमकछु शंक न उरमधि आनहु * यहममवचन सत्यकरिजानहु॥
यदि समस्त महि खंड मझारी * अहैंजिते निशिचरिनिशिचारी
मिलि यकसंग करहि रण आई * तवहुँन ममकछु सकत बनाई॥
प्रभु आयसु सुनि लक्ष्मणआशू * गये धाय मुनिवर के पासू॥
उत खलदलन अशंकित गाता * बढ़े अकेल अग्र जग त्राता॥
जबअति निकट निशाचरिकेरा * रह आश्रम जो विकट घनेरा॥
दो०–तब रघुपति कटिफेंट कसि, धनु गुण तुरत चढ़ाय।
टंकारेहु अति वेग ध्वनि, अशनि पतन केन्याय॥
सुघर स्वर्ण पर्य्यंक पै, रही ताड़का सोय।
गगन भेदि धनु शब्दते, जागि चकितअतिहोय॥
सो०–उठी प्रकोपित घोर, जितते आयहु शब्द सो।
झपटी द्रुत तेहि ओर, मार मार रव उच्चरत॥

षटपद छन्द॥

द्रुतगति वशतेहि शुष्क चर्म पट सों अति घोरा।
उत्पित मर्मर शब्द लागिकै अनिल झिकोरा॥

रहे दोलि तेहि कर्ण माहिं द्विज मुण्ड के कुण्डल ।
नर कपाल गलमाल उभय भुज वलय अस्थिनल ॥
रक्तपान वश तासु मुख निर्गत शोणित धारसों ।
लटकत विपुलाकार दोउ उरज लिप्त कर्दम महा ॥

शोभासार मारमदहारी * प्रभुकर सुन्दर गात निहारी ॥
निशिचारिनिनिजहृदयमझारा * करनलगीयहि भाँतिविचारा ॥
रहितरुधिर पलमुनिगण काहीं * नितप्रति भखतरहीरुचिनाहीं ॥
आजु सदय ह्वै विधि यहिप्रेरा * भखिहौं रुचिरमांसशिशुकेरा ॥
असउर चिन्ति क्रोध करि भारी * कहइमिवचनप्रभुहिललकारी ॥
तैं सोवत जगाय दिय मोहीं * भेजिहौं शमनसदन द्रुततोहीं ॥
यह सुनि कह्यो कोपि रघुराई * हरिहौं आजु तोर खलताई ॥
तव भय ते मुनि साधु सुजाना * करि पावत इत ते न पयाना ॥
तैं असंख्य मनुजन वध कीन्हे * सुघरनगर धनबन करिदीन्हे ॥
आजु तोहिं करि काल अहारा * करव निरापद यह पथ सारा ॥

दो०–रघुनन्दन के वचन सुनि, अट्टहास करि घोर ।
विकट रूप धरि ताड़का, धाई प्रभुकी ओर ॥

पद्धटिका छन्द ।

तेहि रूप भयंकर कहि न जाय । तनुप्रभा दग्ध भूधर के प्राय ॥
संतप्त ताम्र सम अति कराल । अति क्षुद्र क्षुद्र शिरकेशजाल ॥
युग नयन कूपवत तासु माहिं । युगपिंगल रँग तारा लखाहिं ॥
दर्शत न घ्रान पर सोइ थान । द्वै विवर बने कुत्सित महान ॥
अधरोष्ठ जम्बुफल सरिस पीन । गंडस्थलदोउअतिशयमलीन ॥
गिरिगुहा सरिस वड़ मुखागार । रद सकल भवन थंभानुहार ॥
तेहिसंधि थलन थलमधिविशाल । उरझे कितेक मनुजन कपाल ॥
तिन सवन काहिंसो निशाचारि । रहि चाटि घोररसना पसारि ॥

तेहि उदर गहिरहत शुष्क न्याय। युग ऊरु कृष्ण तरु तालप्राय॥
गर्जन ध्वनि केहर रव समान। पदभार मेदिनी कम्पमान॥

दो०—तड़पि तड़ितवत ताड़का, झड़कि ताल तरु तोरि।
भड़कि क्रोध सोतड़किकै, छोड़ेहु रघुवर ओरि॥

नराच छन्द॥

दिनेश वंश हंस सोय पादपै निहारि कै।
कियोतुरन्त खण्डखण्ड चण्ड बाण मारिकै॥
बहोरि घोर गर्जि वृक्ष शिंशिपा उपारेउ।
घुमाय चक्र न्याय धाय राम पै प्रहारेऊ॥
अखण्ड मण्डलेश सूनु सोउ वृक्ष वारेऊ।
तबै महान कोपि रक्षि उग्ररूप धारेऊ॥
प्रलंफि झंपि गर्जि तर्जि पाद पै उपारही।
सवेग तानि राम पै बिना विराम डारही॥
भयंकरी निशाचरी महा अमर्ष सों भरी।
करै अनेक भाँति भाँति के प्रपञ्च आसुरी॥
निवारही प्रघोर तासु घात राघवेन्द यों।
खिलाव काल नागिनी कुतूहली कुहूक ज्यों॥

दो०—तीयजानितेहिनिधनमहँ, करत आनि भगवान।
केवल तेहि गति रोधहित, तजत मन्द मृदुवान॥
जबछलबलनिजशक्तिभरि, करिनिशिचरिगइहारि
तब झपटी प्रभुकहँ ग्रसन, भीषण वदन पसारि॥

सो०—लखि सुरवृन्द पुकारि, कह रघुमणिसनवचनइमि।
कुलिशसरिसशरमारि, वधहुआशुयहिनिशिचरी॥
तव निज हृदय मझार, किय विचार भूभार हर।
गुरु निदेश अनुसार, यहि सँहार अनिवार है॥

अस उर चिन्ति तुरत रघुराई * जोरिएकशर कुलिशकिनाई ॥
कान प्रमान शरासन तानी * तज्यो वेगसों शारँग पानी ॥
सो शर निशिचरि उदरविदारी * पर्यो आशु धसि भूमिमझारी ॥
घूमि घोर ताड़का चिकारी * भइ क्षिति पतित रुधिर उद्गारी ॥
दूरि ते सुनि सो शब्द कराला * भेकौशिकहु विवशतेहिकाला ॥
रामवाणतजि प्राण निशाचरि * शाप मुक्त ह्वै दिव्य रूपधरि ॥
भक्तिसहितकरि प्रभुहि प्रणामा * चढ़ि विमान गमनीसुरधामा ॥
लखि ताड़का निधन सुरत्राता * वर्षे सुमन प्रफुल्लित गाता ॥

सो०—जासु नयनकेसैन, उपजि न शत शत शत जगत ।
कछु विचत्र कृतिहैन, ताहिवधव यक निशिचरी ॥
पर भाखत कृतिवास, है प्रभुकर यह नर चरित ।
हरयोमुनिनकरत्रास, जोइ हेतु अवतार कर ॥

शप्तशततम सर्ग ॥ १०७ ॥

श्री रामलक्ष्मण का विश्वामित्रजी से अस्त्रप्राप्ति ।

दो०—अघ दारण तारण तरण, तारि ताडका काहिं ।
जाय आशु निपतित भये, ऋषिकौशिकपदमाहिं ॥
हियलगाय मुनिवर प्रभुहि, शीश चुम्बि सानन्द ।
दियआशिषयुगयुगजियहु, रघुकुल कैरव चन्द ॥

मुद गद्गद पुनि वद इमिवानी * हे प्रियतात लोक सुखदानी ॥
जग ताड़िनि ताड़कहि सँहारी * हरयो जगत कर संकट भारी ॥
यह सुनि कह रघुवर कर जोरी * यह्मधिकछुकरतूतिनमोरी ॥
केवल प्रभु प्रताप सो आशू * हनेहुँताड़कहि विनहिप्रयाशू ॥

जगशिख प्रदप्रभु मुख इमिबैना * सुनिकह विहँसितपोवलऐना ॥
होन चहत अबदिन अवसाना * आजुहियहिंवसिचलवविहाना॥
कह रघुपति भल नाथ विचारा * बसिय रैनिभरिगहन मझारा ॥
तब सहमुनि दोउ राज कुमारा * कियकछुवन फलमूलअहारा ॥
लक्ष्मण युगल सेज मन भाये * कोमल तरुदल तोरि बनाये ॥
गुरु निदेश लहि जगसुखधामा * अनुज समेत कीन्ह विश्रामा ॥
घोर अर्द्ध निशि महँ सुरराई * गुप्त भाव ते मुनि ढिग आई ॥
कह इमि वचन नायपद शीशा * करत रह्यो जबराज मुनीशा ॥

दो०—तब तव तप ते ह्वै सदय, शशि शेखर भगवान।
सकलअमोघ महास्त्रचय, किय तुम काहि प्रदान ॥
असुरनिधनहितसोसकल, ऋषि कृपाश्व कीनारि।
जया सुप्रभा गर्भ ते, प्रकटे अवनि मझारि ॥

ते दुर्धर्ष अस्त्र समुदाई * है तुम्हरे आधीन गुसाँई ॥
अब सो अस्त्र निचय सहनेहू * निजप्रिय शिष्य राम कहँदेहू ॥
हैं तेहि प्रकृत पात्र रघुराई * बहुरिविचारिलखियऋषिराई ॥
रघुवर सरिस शिष्य तुम काहीं * खोजेहु लाहुनत्रिभुवन माहीं ॥
यदपि सकल विधान विधाता * अहैं राम सचराचर त्राता ॥
पर धारण मरके नर वेशा * समुचित लेन गुरू उपदेशा ॥
विदित तुमहिं दारुण महिभारा * हरण हेतुलिय प्रभुअवतारा ॥
तेहि कारज मधि होइ सहाई * लेहुअतुल यशजग मुनिराई ॥
इमि बुझाय सुरपति मतिमाना * भये तहाँते अन्तरधाना ॥
भये प्रभात कुशिक कुल केतू * कह रघुमणि सन नेह समेतू ॥

दो०—सुनहु वत्स तव कृत्य ते, भयहुँ प्रसन्न महान।
करत अहौं तुम काहिं मैं, दिव्य अस्त्र चय दान ॥

जिनश्रस्त्रन बल सुरासुर, यक्ष रक्ष गन्धर्व।
किन्नर नागादिकन के, हरिसकिहौ रण गर्व॥

चंचला छन्द॥

युद्ध माहिं विक्रमी न होय कोउ तो समान।
ध्यान दै सुनो करौं मैं नाम अस्त्र के बखान॥
धर्म चक्र काल चक्र विष्णु चक्र इन्द्र चक्र।
वज्र शैव शूल इषि कास्त्र जो महान वक्र॥
धर्म पाश काल पाश वारुणास्त्र काल दण्ड।
अग्नि अस्त्रवायुअस्त्र क्रौंच किंकिणी प्रचण्ड॥
ताप नै विलाप नै पिनाक शक्ति दीप्तिवान।
शुष्क आर्द द्वै कुलीश खर्व कारि शत्रुभान॥

रोला छन्द॥

ब्रह्म अस्त्र कापाल उग्र हय शिरकापाला।
शिखरी अरु मोदकी नामयुग गदा कराला॥
ब्रह्म शीश नारायणास्त्र अतुलित द्युति धारी।
जानियइनसब काहिंवत्सनिशिचर वधकारी॥
वैद्याधर गान्धर्व अस्त्र मदनास्त्र प्रश्वपन।
सौमन शोषण सौम्य अस्त्र मायामय प्रशमन॥
दुर्निवार पैशाच अस्त्र जेहि मोहन नामा।
नन्दन नामक अहै ख्यातयहअसि अभिरामा॥
गान्धर्वास्त्र द्वितीय नाम जेहि मानव ख्याता।
तामसास्त्र सम्वर्त त्रस्त जेहि लखि सुरत्राता॥
मोहनास्त्र शिशिरास्त्र सोम दुर्द्धर्ष कराला।
सत्यअस्त्र सौरास्त्र दुसह अति जाकर ज्वाला॥

मौषलास्त्र यह सकल काम रूपी खरशाना।
सहित मंत्रप्रिय वत्स करत तुमकाहिं प्रदाना॥
दो०—सकल अस्त्र करि ग्रहणप्रभु, कह्यो जोरि दोउहाथ।
इनके उप संहार हित, कौन अस्त्र हैं नाथ॥
कह ऋषि उर संहार के, जिते अस्त्र हैं राम।
सहित मंत्र अर्पत तुम्हैं, सुनिये तिन के नाम॥

षटपद छन्द॥

आवम्मुख प्रतिहार सत्यवत विमल शतोदर।
शकुन परामुख महा नाग ज्योतिष योगन्धर॥
इन्दु नाभ दृढ़ नाभ अर्चि भाली अति द्युतिधर।
पद्म नाभ व्रत मान पित्र्य सौमन प्रखरतर॥
शुच्छिवाहुसुनामदशाक्षरति महावाहुनिष्कलमकर।
आवरणविनिद्रिबिमोच धृतभालिमहारुचिअरुरुचिर
विरुच स्वनाम विधूत मोह नैरास्य अस्त्रवर।
जृम्भक्त प्रथमन सर्प नाथ पूरित प्रघोरगर॥
काम रूपि करवीर वीर प्रति पक्षि प्राणहर।
महा विकट मन्थान अस्त्र दश शीर्ष भयंकर॥
शतवक्रजासु सन्मुखनथिर यज्ञरक्ष किन्नरनिकर।
यहसकलअर्पिरघुनन्दनहिध्यानमगनभेऋषिप्रवर॥
दो०—मूर्तिमान ह्वै तब तुरत, प्रकट महास्त्र निकाय।
तिनमधि बहुतकके वरण, ज्वलतअँगारके न्याय॥
कोइ नील कोइ पीत रंग, कोई धूम्र समान।
कोइ रक्त कोइ सित कोई, रविशशिसमद्युतिमान॥
सो०—तेकृशाश्व सुतवृन्द, वन्दि राम कौशिक मुनिहि।
जोरि पाणिसानन्द, कह रघुमणि सो इमिवचन॥

हम सब प्रति प्रभुकाह निदेशा * कहियसोकरहिआशुभुवनेशा॥
सो सुनि कह इमि जगत गुसांई * सुनिय अमोघ अस्त्रसमुदाई ॥
आजुते गुरु आयसु अनुसारा * मम वश्यता करहु स्वीकारा ॥
सुनि आयुधगण हर्षि अपारा * करिप्रभुनुतिइमिवचनउचारा ॥
प्रभु कर कमल परश सुखलाहू * होई हम सम भाग्य न काहू ॥
आजु ते हम सब दास कि नाईं * रहब नाथ अनुगामि सदाईं ॥
यह सुनि फेरि सबन तनु पानी * कहरघुपतियहिविधमृदुबानी॥
अब निजनिजथल करहुपयाना * पर राखेहुउरमधि यहध्याना ॥
सुमिरहि जबहि आशु तब आई * कीन्ह्यो मम रणमाहिं सहाई ॥
तब सभक्ति प्रभुपद शिर नाई * भये विलोय अस्त्र समुदाई ॥

दो०—इमिसबन्धुरघुकुलतिलक, अस्त्र निचय करिलाहु ।
किय गुरुपद शतशतप्रणति, सादर सहितउछाहु ॥
पुनि तेहि वनते कियगमन, राम लखनमुनिराय ।
तेहिदिन ते भय नशि सबन, भयो चैत्ररथन्याय ॥

सो०—तृतिय प्रहर दिनमाहिं, पहुँचि एक भूधर निकट ।
जेहिलखिदृगनअघाहिं, लखेहुमनोरमयकविपिन॥

हरिगीतिका छन्द ।

तेहि थलन थल निर्मल सरोवर विविधसुम तरु शोभिता ।
दर्शत मनहुँ बहु भाँति भूषण भूषिता सुर योषिता ॥
कोइदिशि विशोभित सौरभितप्रफुलितललितसुमतरुघने ।
फल भारनत परि लसत कोइ दिशि चारु विटप सुहावने ॥
तिन विटप शाखन अंतरालन माहिं सहित उमंगही ।
क्रीड़हिं मयूर कपोत शुकपिक सारिकादि विहंगही ॥
निर्भीत चित अगणित सुचित्रित मृग मृगी सहुलासही ।
विचरत कुलेलत फिरत शुचि तापस कुटीरन पासही ॥

प्राकृतिक बैर विसारि केहरि करी सह इत उत फिरैं।
शार्दूल संग कुरंग नकुल भुजंग सो क्रीड़ा करैं॥
मृदु मन्द पवन झिकोर ते इमि सुमन विटपन सों झरैं।
प्रभुआगमन सों भाग्य निज धनि गनि सुमन वर्षन करैं॥
शुचि शांति मूरति सरिस पावन चारु वलकल परिधृता।
कुशसुमचयनहित बिचरहीं इतउत मुनिनतिय पतिव्रता॥
कालिन्दि गंग तरंग इव मुनि पालिता सुरभी जितीं।
आश्रमन मधि आनन्दयुत सावत्स इत उत विचरतीं॥

दो०—सामगान लय तान युत, सुमधुर श्रुति सुखदाय।
पावनमनस मुनीश कृत, यकदिशि सोहिसुनाय॥
अस प्रशांत मय तपोवन, लखि पूँछेहु श्रीराम।
केहि सुयशीऋषिकर अहै, यह आश्रम सुखधाम॥

अरुजेहिथल पै खलनिशिचारी * करत विघ्न प्रभु यज्ञ मझारी॥
जहँ चलिमोहिं मखकीरखवारी * करनपरी शठ शत्रु सँहारी॥
सो शुचि थल अब है कत दूरी * कहियप्रभो करुणाकरिभूरी॥
कह मुनि हे रघुवंश किशोरा * यहि वनमधि आश्रमहै मोरा॥
पूर्व समय महँ हरि अवतारा * सुर दुखदारिहारि महिभारा॥
श्रीवामन कर रह यह ठामा * सिद्धाश्रम है याकर नामा॥
यहि थल मधि वामन भगवाना * ह्वै ध्यानस्थ उग्र तप ठाना॥
यहि निमित्त यह थल तप हेतू * है उपयुक्त भानुकुलकेतू॥
हरि गुण गान हेतु बुध कहहीं * अति उत्सुक भक्तनउररहहीं॥
पर यहि सुखते कुशिककुलकेतू * हैं वंचित सुरकारज हेतू॥

दो०—मधुकर सुमन समीपरहि, विनु कीन्हे झंकार।
रहि न सकतयहिभाँतिप्रभु, करिउरमाहिं विचार॥

हृदय वेग मुनि नाथकर, प्रकट करन के हेत।
कह्यो नाथ वामन कथा, वरणहु नेह समेत॥
सो०—जोइ अनंत भगवान, निरवलम्ब अवलंब जग।
कारण अहैं प्रधान, जगतजन्म थिति प्रलय के॥
सोयअतनुअविकार, काहि मनुज तनु धारिवो।
यहअतिविस्मयकारि, अहै रहस अद्भुत महा॥
यहसुनितपोनिधान, ऋषि कौशिक हिय हर्षि कै।
लागे करन बखान, भव पावन वामन कथा॥

अष्टशततम सर्ग॥१०८॥

वामनावतार प्रसंग॥

दो०—कह ऋषिवर हे नृपकुवँर, लिपि श्रुति शास्त्रपुनीत।
विभुहिधरन तनुहैन कछु, प्रकृति रीति विपरीति॥
करत जोइ सन्देह हैं, यहि गुरु विषय मझार।
तजि कुतर्क सोहृदयमधि, यहिविध करहिंविचार॥
रंग भवन समभुवन यह, जनन लुभावन हार।
भुवन भरणपावन करन, नट इव तासु मझार॥
सो माया सनमन रुचित, धरि वहुवेश सदाय।
करहिप्रकाशितअवनिमहँ, निजऐश्वर्य्य निकाय॥
अरु सोई कौशल कुशल, अटल ज्ञान अविकारि।
करत वास तौ सतत हैं, प्रति नर देह मझारि॥
परजलकणअरुउदधिमधि, भेद जितेक लखाय।
तत नर अरु नर देहधर, हरि मधि भेद सदाय॥

अनिलशलिलअन्नादिके, रूप ते जोइ कृपाल।
निखिलविश्वकेजीवकहँ, करत सतत प्रतिपाल॥
एक क्षुद्र परिमाणु ते, महा कुधर पर्य्यन्त।
सम समान व्यापितअहै, जिनकर शक्ति अनन्त॥
सोय धारि तनु करहिं, यदिनिजमहिमाविस्तार।
अहै असंगत तौ कहा, यहिमधि करियविचार॥
सुन्दर साँचा मधि परे, मृत्ति पिंड जेहि न्याय।
भाँति भाँति के होत हैं, रुचिर वस्तु समुदाय॥
तिमिमनबुद्धिअगम्यविभु, काहिं धरे आकार।
तिन विभूति रमणीयह्वै, प्रकटत जगत मझार॥
जगमंगलहितअगतिगति, श्रीपति जगतनिवास।
विविध भाँति ते निजकृपा, संतत करत प्रकाश॥
सो०—विनुअभावजिमिऋद्धि, दुखव्यतीतसुखवृद्धिजिमि।
उत्कंठा विनु सिद्धि, विनुवियोग संयोगजिमि॥
बिना तिमिर उजियार, करश्रेयता न जानि पर।
यह हित जग कर्तार, कीन्हसृष्टिशुभ अशुभकहँ॥
जोइ विपत्ति निकाय, अपरजनन सोटरिनसक।
तेहि निष्कृती उपाय, एकमात्र हैं जगतिपति॥
तासु प्रत्यक्ष प्रमान, दर्शावन हित जगत महँ।
अरु निज कृपा महान, भक्तनहित वितरणनिमित
समय समयमहँ सोय, करि दुरन्त असुरनसृजन।
स्वयं प्रकट पुनि होय, दलततिन्हैंकरिवहुचरित॥
अति निर्मल अभिराम, रुचिर काँचमयठाम महँ।
सुवरण मूर्ति ललाम, जस उद्भासित होत है॥
तस निर्मल अविकार, हरिपद सेवी भक्तउर।

भासत सुखमासार, हरिअवतार कि माधुरी ॥
हे प्रिय वत्स सुजान, कहँलगिबरणहुँयहविषय ।
अब मैं करत बखान, पावन बलि वामन कथा ॥
श्री नृसिंह भगवान, पाणि सोहि दानवाधिप ।
हिरणकशिप बलवान, भयोनिधन तेहिवंशमहँ ॥
वीर विरोचन सुत गुणधामा * धर्म धुरीन ख्यात बलिनामा ॥
राजि विशाल असुर सिंहासन * लाग्यो करननीति सहशासन ॥
भृगुकुल ऋषिन के कृपा अनूपा * अतुल प्रतापि भयो बलिभूपा ॥
एक समय महँ बलि बलवाना * साजिदनुजदलबिनुपरिमाना ॥
रुचिर अमर पुरि पै चढ़िगयऊ * संगर घोर सुरासुर भयऊ ॥
पर दनुजेश के तेज अगारी * होयपरास्तत्रिदिवअधिकारी ॥
अतिचिन्तित चितगुरु ढिगजाई * कहन लगे करपुट शिरनाई ॥
प्रभु केहि हेत दनुजपति केरा * भा वर्द्धित अस तेज घनेरा ॥
यह अनुमान हृदय मधिहोई * तासन रण करिसकत नकोई ॥
अस तेहि तेज मनहु मुखद्वारा * पान करन चाहत संसारा ॥
दो०—लेहत रसा सो दश दिशा, कुमुद वन्धु ग्रहराज ।
काहिं दाहि दृग ज्वाल सों, प्रयानल सम भ्राज ॥
कह्यो देवगण ब्रह्मविद, भृगुऋषिगणमतिमान ।
कीन्हनिहित बलिराजमहँ, चण्ड तेज सविधान ॥
सो०—हरि बिनु कोइ जगमाहिं, होय तुमहु ते यदिबली ।
सोउ जीति सक नाहिं, भृगुरक्षित दनुजाधिपहि ॥
यहिहित अब जबलौं तेहिं केरा * होत नाहिं हत तेज घनेरा ॥
तबलौं तुम सब सुर समुदाई * निवसहु दुरि सुरपुरी विहाई[2] ॥

१–हरिवंश २३१ अ० ॥ २–यह कथा भागवतानुसार है (अष्टम स्कन्ध १५ अ० द्र०) परंतु हरिवंश में मतांतर दृष्ट होता है (हरि० वं० २३९–२५४ अ० द्र०) ॥

यह सुनि सुरन सहित सुरराजू * ह्वै हताश किय सुरपुरित्याजू ॥
तब बलि आजि इन्द्र सिंहासन * लग्योकरन त्रिभुवनकरशासन
निजतनुजनअतिदुखितनिहारी * होय अदित उरचिंतितभारी ॥
निजपति कश्यप सों इमि बैना * लागी कहन नीर भरि नैना ॥
हे प्रभु सवति तनय बलधारी * अधिहरिदियममसुतननिकारी
तुमरेहि तन मन ते गुणखानी * भये प्रकट जहँलगिजगप्रानी ॥
यहि हित नाथ सुरासुरझारी * हैं तवकृपा के सम अधिकारी ॥
मम तनुजन दारुण दुख भूरी * अब ह्वै सदय करहु प्रभु दूरी ॥
करिय वेग अस कोइ उपाई * जासो राज लहैं पुन राई ॥
यहसुनि कह कश्यप इमिबानी * धरहु धीरउरसुमुखि सयानी ॥

दो०—दुख दारण श्री रमण पद, ध्यावहु ध्यान लगाय ।
तिन समान कोइ आन नहिं, दीन दुखीनसहाय ॥
हरि तोषण व्रत करहु तुम, चित शौचताधारि ।
ता प्रभाव द्रुत पूरि है, मन कामना तुम्हारि ॥

सो०—सुनिपतिमुखइमिवानि, अदित चित्त करिकै प्रयत ।
भई हृदय सुख मानि, हरि तोषणव्रत माहिंरत ॥
करि सारथि मन काहिं, इन्द्रिय रूप तुरंग महिं ।
करिसब विध वशमाहिं, रहतनिरत हरिध्यानमहँ ॥

इमि व्रत करत विते कछु काला * तब प्रसन्न ह्वै दीनदयाला ॥
भये प्रकट सुर जननि अगारी * पीत बसनकर आयुधचारी ॥
हरिहि हेरिअति प्रमुदित गाता * कीन्हअदितशतशतप्रणिपाता ॥
बहुरि ठाढ़ सन्मुख कर जोरी * फुरत न बैन भई मति भोरी ॥
तब जन रंजन पंकजपानी * कह्यो अदितप्रति मंजुलवानी ॥
तव संतान गणहि अमरारी * राज विभवहरि कीन्हदुखारी ॥
यह तव रुचि सुर गण पुनराई * लहैं राज बलिसन जय पाई ॥

पर यहिकाल दनुज पति काहीं * जीतिसकतजगमधिकोउनाहीं॥
जानिय तासु देवि यह भेवा * रक्षत तेहि समरथ महिदेवा ॥
यहि हित बल प्रयोग के द्वारा * ह्वैसकनहिंवलिकर प्रतिकारा ॥

दो०-पर उपासना मम विफल, कबहू ह्वै सक नाहिं।
तुमव्रतकरिमोहितुष्टकिय, निज सुत रक्षणकाहिं ॥
यहि हित कश्यप तेज ते, हम ह्वै तनय तुम्हार।
जोइ उचित मोहि होइ है, करिहौं तेहि अनुसार ॥

सो०-यहि विहाय तुम पाहिं, कहबकछुन तेहि हेतु यह।
देव काज जित नाहिं, रहै गुप्त तत अहै भल ॥

रामगीती छन्द ॥

इमि अदिति काहिं बुझाय सुनिय नरेश कुँवर सुजान।
जन विपदहारी हरि तहाँते भये अन्तर्द्धान ॥
कछुकाल मधि किय वास अदित के गर्भमधि श्रीकंत।
यक सहँस वर्ष व्यतीत जब ह्वै गयहु तब भगवंत ॥
तिथि भाद्र शुक्ला द्वादशी मध्याह्न काल मझार।
भे प्रकट अद्भुत रूपते जग छयो मोद अपार ॥
बाजन लगे भेरी तुरी डफ प्रणव शंख मृदंग।
सुर वृन्द जयजय कार ध्वनि लागे करन सउमंग ॥
सप्तर्षि सप्तप्रजापति कश्यपभवन मधि आय।
श्रीपतिहि शतशत प्रणति कीन्ह सभक्ति शीशनवाय ॥
अहि ब्रन्ध अपराजित पिनाकी शम्भु अजैकपात।
ईश्वर महेश्वर वृषाकपि त्र्यम्बक हरण विख्यात ॥
एकादशहु यहरुद्र लहि हरि दरश ह्वै कृतकृत्य।
सानन्द भृंग बजाय लागे करन ताण्डवनृत्य ॥

१-हरिवंश २५१ अ. ॥

पूषार्य्यमा धाता विधाता विवस्वान प्रचंड।
मित्रावरुण भग शक्र सविता तेज जासु अखंड॥
त्वष्टा उरुक्रम द्वादशु आदित्य सानँद गात।
हरि रूप मंजुल हेरि अंजलि वद्ध किय प्रणिपात॥
दोउ सुर भिषक वसुगण मरुद्गण विश्वदेव निकाय।
सिध साध्य गण प्रभुके चतुर्दिशि ठाढ़ शीश नवाय॥
कच्छप वलाहक वासुकी अरु चापकुंज अनँत।
धृतराष्ट आदिक नागगण आरुणि गरुड़ वलवंत॥
रविसूत अरुण अरिष्टनेमि महातमा मतिमान।
लागे करन श्रीरमणकर सहप्रेम अस्तुतिगान॥

अष्टपदी छन्द॥

नारद गौतम भरद्वाज कश्यप अतिनामा।
अत्रि वशिष्ठ मरीचि और्व मनु जमदग्नि सुधामा॥
कपीवान अतिविश्य विश्य विरजा तपराशी।
वेदशिरा अंगिरा जान्य पर्यन्य उदासी।
देववाहु अस्तम्व हिरणरोमा विज्ञानी।
सत्यनेत्र दत्तोलि च्यमन वामन यशखानी॥
क्रतुपुलहपुलस्त्यपदुन्धपृथुगर्गआदिऋषिमहामति।
सहभक्ति सकललागेकरनश्रीवामन भगवानुति॥
भीमसेन धृतराष्ट्र ब्रह्मचारी ऊर्णायू।
रतिगुण त्रिशिरा शालिशिरा गोपति गोमायू॥
अर्क पर्ण पूर्णायु पर्ण पर्य्यन्य सुपर्णा।
युगप सर्वविद्धशी तृणप विश्वावसु वरुणा॥
हाहा हूहू हंस सूर्य्य वर्चा विद्याधार।
प्रयुत महा श्रुति नन्दि सिद्ध तुम्बुर गुण सागर॥

कलि उग्रसेन अरु चित्ररथ आदिख्यात गन्धर्वगन ।
लयतान सहित लागे करनगान मनोहरमगनमन ॥
मिश्रकेशि उर्वसी चित्ररेखा तिलोत्तमा ।
असिता रम्भादिका अलम्बूषा सु मध्यमा ॥
सह जन्या पर्णिका पुंजि कस्थला घृताची ।
महा रंगवति भानुमती सुरथा विश्वाची ॥
सुग्रीवी लक्ष्मणा प्रमाथिनि विद्युत पर्णा ।
सुरता सुरसा श्यामि सुलोचनि रम्या अरुणा ॥
मेनका केशिनी शरद्वति अनकादिक अप्सरागन ।
बड़भागशालि कश्यपभवनमधि नर्ततवर्षतसुमन ॥
दो०—चतुरानन प्रमुदित वदन, जोरि पानि शिरनाय ।
विनय बानि इमि वदत भे, प्रेम न हृदय समाय ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

हे इन्दिरालय दयामय उर गाय प्रभु जगदाश्रये ।
ब्रह्मण्य देव पुराण पुरुषोत्तम निरीह निरालये ॥
रहि पृश्नि नामिनि पूर्वमाहिं प्रजेश कश्यप कामिनी ।
तुम भयो तिनके गर्भते उत्पन्न देव शिरोमनी ॥
तव गर्भ मधि थिर रहत संतत अति प्रयत वेदत्रयी ।
त्रिभुवन सुहावन नाथकर है नाभि थल सुखमामयी ॥
तुम निराधार अपार तुमही सार तिहुँ संसारके ।
बुधिवंत संत वदंति तुम आधार शक्ति अनंतके ॥
जलपतित तृण आदिकहि कर्षत ऊर्मि जौन प्रकारही ।
लय समय तिमि तुम कालरूपते कर्षहू संसारही ॥
प्रकटे तुमहिं ते प्रजापति अरु जीव सचराचर जिते ।
हे श्रीरमण तुम करत माया गुणग्रहण स्वेच्छाहिते ॥

पर निज स्वरूप अनूप तजहु कदापि नाहिं महामते।
जिमिनटहिंचीन्हिनसकहिंदृगभ्रमतेकबहुँदर्शक जिते॥
तिमि होय मोहित जीवगन देहाभिमान असारते।
करि सकत नहिं तव रूप निर्णय नाथ कोइ प्रकारते॥
तुम देव द्विजदुख दरन हित वारनजननभव यातना।
अवतार लै संहारि खल प्रभु करहु धर्मस्थापना॥
बूड़त नर न के पक्षमहँ प्रभु होति है जेहि बिध तरी।
तिमिअमर पुर ताड़ितसुरन यकमात्रतुमआश्रयहरी॥

दो०—इमि अस्तुति करि चतुर्मुख, प्रेम प्रफुल्लित गात।
भूमिलोटि प्रभुपद कमल, कियशतशतप्रणिपात॥
जन्म समय कुण्डलकरण, शीश मुकुटसुविशाल।
चतुर्बाहु आयुध सहित, भूषित रहे कृपाल॥

सो०-सो मूरति छविसार, बुध विबुधन लखतहिंलखत।
भई वामाना कार, पर प्रदीप्त शत भानुसम॥

नवल नील नीरद अनुहारी * वरणसुचारु मुनिनमनहारी॥
रक्त कमल दलवत युग लोचन * भृकुटिसुमन धनुगर्वविमोचन॥
उन्नतभाल केश गभुवारे * झपट नयन मुखप्रभा निहारे॥
उर विशाल श्री वत्स सुहावन * भ्राजततहँ भृगुलता सुपावन॥
रुचिर सर्व तनुरोम विभासित *जनुसमस्तद्युतिसिमिटिप्रकाशित
योगीगण जेहि वद योगीशा * जोइ अणिमादि गुणनकरईशा
जो अविकार अनीह अनूपा * विगतजन्ममृतुअलखअरूपा॥
सब आश्रमवासी मतिमाना * जेहितपफलस्वरूपकरिजाना॥
विगत विषय जोइ परम पुनीता * चतुर्विंश तत्वन सों अतीता॥
अतुल असीम अगोचर जोई * पावन थाह जासु जग कोई॥

दो०–जोइ काज कारण करण, रूपते प्रति अणुभास।
कोटि कोटि ब्रह्मांडचय, जेहि सत्ता ते भास॥
अतुल योग वलते सोई, धारि मनुज अवतार।
कियकृतार्थकश्यपअदित, धरणिहि सकलप्रकार॥
सो०–पुनि कश्यप भगवान, तनय रूपि भुवनेश कर।
जाति कर्म सविधान, कीन्हविविध उत्सवसहित॥
श्री वामन उपनैन, माहिं मगनमन दिन मणी।
सुजन श्रवण सुखदैन, किय सावित्री पाठ शुचि॥
ऋषि कश्यप मेखला पुनीता * पहिराये वामनहि सप्रीता॥
ब्रह्म सूत्र सुरगुरु मतिमाना * दियपहिरायकरत श्रुतिगाना॥
विमल कमण्डलु दीन्ह विधाता * कुश सप्तर्षि छत्र सुरत्राता॥
दीन्ह बृहस्पति दण्ड विशाला * बाम देवि अर्प्यो जपमाला॥
देव जननि दीन्ह्यो कौपीना * असित कुरंग चर्म विधिदीना॥
भिक्षा पात्र यक्षपति दयऊ * भिक्षागौरि समर्पति भयऊ॥
इमिद्विज उचितउपकरण नाना * ह्वै भूषित वामन भगवाना॥
तासु ब्रह्म द्युति भूरि अगारी * भये तेजहत ऋषि मुनिभारी॥
होम समाप्ति भये सविधाना * सुन्योसुरन मुखयहभगवाना॥
वलि राजहि भृगुगण मनलाई * अश्वमेध मखरहे कराई॥
दो०–यहसुनि दण्ड कमण्डलहि, गहि किय गमन कृपाल।
तिनके पद भरते धरणि, कँपन लगी तेहि काल॥
सरित नर्मदा उतर दिशि, शुचि भृगु कच्छ मभार।
सहित पुरोहित करत मख, रह वलि परम उदार॥
सो०–गये तहां भगवंत, संत सुखद अंतक खलन।
तिन्हे हेरि अत्यंत, भे सचिंतयतयज्ञमधि॥
यकटक प्रभुहि निहारि, कहन लगेसब परस्पर।

काह स्वयं तमहारि, आयेमख देखननिमित ॥
जिते प्रधान ख्यात दनुजाता * कम्पन लगे सबन उरगाता ॥
मन्द तेज मख पावक भयऊ * विसरिमंत्रऋत्विक गणगयऊ ॥
मख शाला मधि श्रीपति जाई * प्रथम कीन्ह बहु याग बड़ाई ॥
बहुरि आतमहि यज्ञ स्वरूपा * कहि प्रतिपादन कियभवभूपा ॥
तदनु याग कर विषय उठाई * भृगुआदिक यतरहे ऋषिराई ॥
सबन युक्ति युत तर्क मझारी * कर दीन्हे परास्त यक वारी ॥
यकवटु कर दानव अधिकारी * यहिविधवुधिवलतेजनिहारी ॥
ह्वै विस्मित उठि आसन दयऊ * जोरिपाणि इमिपूँछत भयऊ ॥
कहिय विप्रवर सब गुण ग्रामा * तुमकेहि तनय कहांतवधामा ॥
तव समान अस ज्ञान निधाना * लखा न नयनसुनानहिंकाना ॥

दो०—दूजेयहि विध ज्ञान वुधि, कहां होत शिशु माहिं ।
बहुरिरूप माधुरिहु अस, कतहुँ देखियत नाहिं ॥
कौन मनोरथ पूर्ण तव, करहुँ कहिय सह नेहु ।
स्वर्णग्रामक्षिति गजतुरग, जोय होय रुचि लेहु ॥

दनुज राजमुख सुनि इमि वैना * कह्योविहसि प्रभुराजिवनैना ॥
वुध प्रह्लाद पौत्र वर माहीं * अस उदारता अचरज नाहीं ॥
तव पितु सुमति विरोचन ज्ञानी * घोर शत्रु देवन कह जानी ॥
तबहुँ सुरन कहँ सो मतिमाना * निजपरमायु दीन्हकरिदाना ॥
भये जिते जन तव कुल माहीं * विमुख दान रणते भयेनाहीं ॥
सुनिय दानवाधिप यशराशी * धन सम्पतिकर मैन प्रयासी ॥
केवल यह याचन तव पाहीं * हमहिं हुताशन रक्षण काहीं ॥
दीजिय भूमि त्रिपद परिमाना * यहिविहाय वासना न आना ॥
यहसुनिविहँसि दनुजपतिकहेऊ * यदपि सुविज्ञ वृद्धसम अहेऊ ॥

१—नरसिंह पु. ॥

पर निज स्वारथ साधन माहीं * तव लरकाइँ दूरि भइ नाहीं ॥

दो०—तीनि लोक करपति हमहिं, जानिय विप्र सुजान ।
एक द्वीप सहजही हम, तुमहिंसकहिंकरिदान॥
सो केवल तुम तीन पद, क्षितियाँचेहु हमपाहिं ।
शोचिय द्विजवर है तुमहिं, काहलाभयहिमाहिं ॥

सो०—दूजे यह न सुहाय, आय हमारे निकट तुम ।
बहुरि अपर ढिग जाय, याँचन पुनि तुमकहँ परै ॥
यहि हित तव निर्वाह, जितकभूमि मधिहैसकहि ।
तवक्षिति सहित उछाह, माँगि लेहु हमसो वटुक ॥

सुनि वलिवचन कह्यो भगवाना * सुनिय भूपवर बुद्धिनिधाना ॥
जिते अभीष्ट वस्तु जग माहीं * सो लहितृप्ति लोलुपहि नाहीं ॥
भूमि प्रयोजनीय सन जोई * नहि सन्तुष्ट जगत मधि होई ॥
सो नव वर्ष युक्त यक द्वीपा * लहि न मिटीवासना महीपा ॥
पुनि तेहि उर होई यह चाहू * करहु समस्त द्वीप में लाहू ॥
करि विचारि देखिय दनुजेशा * गत आदिक यतभये नरेशा ॥
ते लहि सप्त द्वीप कर राजू * विषयतृषा करिसकै न त्याजू ॥
थोरिहु वस्तु निवाहक पाई * रहैं सुखी संतोष सदाई ॥
परत्रिभुवननिधिलहिविषयाशी * तबहुँ न तासु वासना नाशी ॥
खीसत नित प्रति यहतनु जोई * पर नित तरुण वासना होई ॥
सोईनित सुखीजगत मधिरहहीं * प्रवल न जासु वासना अहहीं ॥
यहि हित त्रयपद भूमि मझारी * होई कामना पूर हमारी ॥

दो०—सुनि अद्भुत द्विज याचना, भृगुवर ज्ञान निधान ।
है विस्मित मुनि मर्म सब, गयेजानि करिध्यान ॥
तब वलिसनकह करहुजनि, भूजिइनहिंक्षितिदान ।
जानहु इनकहँ जगत पति, छद्म वेशि भगवान ॥

सो०—तुमहि छलन दनुजेश, देवनहित साधन निमित ।
आये धरि ये वेश, परहु न इनके फन्द महँ ॥
सुनि कह बलि इमिवैन, यदियहराजिवनयनहरि ।
तौ इन सम मिलि हैन, दानपात्रवर जगत मधि ॥

अस कहि धारि वारि भृङ्गारा ✱ वामन प्रतिइमि वचनउचारा ॥
राजहु पूरुव मुख द्विज राई ✱ सोलखि इमिकवि कहपुनराई ॥
सावधान करु शोच विचारी ✱ नतु पछिताव होई उर भारी ॥
कह वलि जवमम यज्ञ मझारी ✱ आये रमारमण अघहारी ॥
तौ यांसन बढ़िके जग माहीं ✱ कौन कामना रहि हमकाहीं ॥
अब यहि क्षण सव तर्क विहाई ✱ दान मंत्र पढ़ि देहु गुसाईं ॥
यह सुनि कुपितगात भृगुकहेऊ ✱ अबहूं कुशल मूढ़ तव अहेऊ ॥
दै इनकहँ कछु सहितसनेहू ✱ करि दण्डवत बिदाकरि देहू ॥
नतु इनके लघु लघु पद जोई ✱ सोइ तुमकाहिं विपदमय होई ॥
यहसुनि यहिविध कहदनुजेशा ✱ काह देत यह हमहि निदेशा ॥

दो०—यदि यह वटु कारण करण, अहैं चराचरनाथ ।
तौ हमार सम्पति विपति, अहै इनहि के हाथ ॥
पुनिहम केहिहित सुनियगुरु, भीरु पुरुष अनुहार ।
सत्य विमुख ह्वै शीश पै, धरहिं अयश कर भार ॥
सो०—विषय लालसा माहिं, महा नीच वंचक सरिस ।
सत्य लंघि सक नाहिं, होय पौत्र प्रह्लाद कर ॥

वदत अवनि यह वचन सदाई ✱ एक मृषावादीन विहाई ॥
अपर सकल सचराचर भारा ✱ करिसकवहनसुमन अनुहारा ॥
यत भय मोहिं वंचना माहीं ✱ तत मृतु नरक रंकभये नाहीं ॥
मै यांचन यहि द्विजसुत केरा ✱ करिहौं अवशि पूर्ण यहिबेरा ॥
यहसुनि कह भृगु कोपिकराला ✱ तै मतिछिन्नभयसियहिकाला ॥

निजकुबुद्धिसन यहिक्षणआशू * तोर होइहै सर्वश नाशू ॥
अब यहिथल नहिं काजहमारा *असकहिमुनिउरकीन्हविचारा ॥
हरि मायावश होय सुरारी * नहिं बूझिहै गई मति मारी ॥
अबमोहिं उचित यतनकरि कोई * रक्षहुँ यहि नतु वंचित होई ॥
अस बिचारिउर कवि बुधिवंता * होय योगवल अलख तुरंता ॥

दो०—वलि करथित भृंगार मधि, प्रवशिरुद्ध कियनाल ।
सो छल अन्तर्यामि हरि, जानि गयें ततकाल ॥
पुनिवलिप्रतियहिविधवचन, कह्योविहँसिभगवान ।
निज अंगीकृत भूमि अब, करहु आशुही दान ॥

रोला छन्द ॥

यह सुनि कह वलिराज अहौं प्रस्तुत द्विजराई ।
पर को पढ़िहै मंत्र गुरु तो नहिं देत दिखाई ॥
कह वामन भगवान नाहिं चिंता कर काजू ।
मैं पढ़िहौं संकल्प लेहु जल दानवराजू ॥
तब भृगांर सो वारि लेन वलि भूपति चहेऊ ।
पर न नाल मुख नीर गिरयो तब श्रीपति कहेऊ ॥
है यहि मधि कछु रुद्ध नाल मधि यक तृण डारी ।
परिस्कार करि लेहु गिरी तब यासन वारी ॥
यह सुनि यक अति पुष्ट दर्भ दंठ दनुजेशा ।
सबल नाल मुख माहिं तुरत करि दीन्ह प्रवेशा ॥
नाल रंध्रथित सोइ समय भृगु नयन उघारी ।
रहे हेरि का करत अहै दानव अधिकारी ॥
सो तृण लगि तिन चक्षु दियो यक नयन नशाई ।
तब कहरत चिकरत नाल ते वाहर आई ॥
कह वलि सन इमि वचन होइ क्रोधांध महाना ।

रे पामर भल किहे गुरुहि दक्षिणा प्रदाना ॥
रे दानव कुल कुलिश काह मै तार बिगारा ।
जेहि निमित्त तैं मोर फोरि यक लोचन डारा ॥
यह सुनि हरि हँसि कह्यो ऋषिन तुम कीटपतंगा ।
को जानत रह बैठि ग्रहो नलमधि करि रंगा ॥
सो सुनि शुक्राचार्य्य प्रभुहि कछु उतर न दयऊ ।
वलिहि अकथ कटुवचन वदन तहँते चलिगयऊ ॥
तदनु वारि कर धारि आचमन करि दनुजेशा ।
किय त्रिपाद महिदान स्वस्ति उच्चरेहु रमेशा ॥
द्विजपद क्षालन करन निमित सोइसमय मझारी ।
बिन्ध्यावलि वलि रानि दिव्य पट भूषणधारी ॥
अति पुनीत सहप्रीति पुरट घट भरि जल लाई ।
निजपतिढिगधरि दीन्हद्विजहिपुनिपुनिशिरनाई ॥
श्रीपति के पद पदुम भक्ति युत भूप पखारी ।
किय धारण निज शीश बिश्व पावन सो वारी ॥
पुनि खर्वाकृति मूर्ति लखत सब के ततकाला ।
भयो विराट स्वरूप विश्व व्यापी विकराला ॥
यक पद पद सो सब धरणि काय सोंगगनअनंता ।
वाहुते दशहू दिशा आक्रमित करि भगवंता ॥
दूसर पद विस्तारि बहुरि भगवान त्रिविक्रम ।
स्वर्ग सत्य जन तपो लोक कहँ कीन्ह अतिक्रम ॥
दो०—तृतियचरण श्री रमणके, नाभि ते प्रकट्यो जोय ।
तेहिथितनहिकोइथलरह्यो, निरव लम्वरह सोय ॥
सो०—इमि समस्त अधिकार, लखिअपहृतवलिराजकर
विपुल भूधरा कार, दनुज प्रधान २ यत ॥

छप्पै ॥

विकम्भाण्ड अहितुण्ड चण्ड यक मुण्ड घटोदर ।
निष्प्रभ सुप्रभ शलभ कुलभ हर अहर प्रियंकर ॥
कालक नटक कराल कुपथ कापथ क्रथ विक्षर ।
पुष्कर पुष्कल समल कुलाकुल वास्कल शम्बर ॥
असिलोमपुलोमाशंक शिवशंकुकरणसोमपअरुज ।
वातापि इन्द्रतापन वरुण मरुताशन ध्रव चतुर्भुज ॥
अग्र व्यग्र अति उग्र भूवलोन्मथन शशि ध्वज ।
खञ्जवाहु भट काल कञ्ज शतलोचन गो व्रज ॥
सुप्रसाद संह्लाद वीर अनुह्लाद गजोदर ।
मेघनाद यकपाद प्रमद मद निरुदर सँहर ॥
मृदुचापजंलन्धमविभुनमुचिअस्त्रशस्त्रखरधारिकर ।
सबगर्जितर्जिकरिनिकर समधाये प्रभुहृषिकेशपर ॥

दो०—यकविलोकिवलिसबनकहँ, वारि कह्यो इमि वानि ।
जोय सकल प्राणीन के, दुखसुख सम्पति दानि ॥
तेहि प्रति द्वन्दी होन महँ, को समर्थ संसार ।
यहि विवाद नहिंकरनचह, पुनिउरकरियविचार ॥

सो०—अतुल विभव दिय जोइ, निजसम्पति पुनिसोइहरत ।
यहि मधि अहै न कोइ, खेद करन कर काज कछु ॥
जब इच्छा पुनराय, जगत नियंतहि होइ है ।
तबकरि कृपा निकाय, सानुकूल मम होइ है ॥

करहिं जोइकछु रमा निकेतू * सो हम सबन सतत शुभ हेतू ॥
करतभिषकजिमिरुजि व्रणघाता * क्षणककष्टवड़पुनि सुखदाता ॥
जीवन शुभहित तिमि भगवाना * करहिंक्षणकदुखशोकप्रदाना ॥
तेहि क्षण थाइ तुच्छ दुख माहीं * केवल मूढ़ जीव विचलाहीं ॥

सुनिबलि वदन ज्ञानमय बानी * भये निरस्त असुर भटमानी ॥
तब बलिप्रतिइमि कह भगवाना * तुमत्रिपादक्षितिकियमोहिदाना
परजहँ लगि तव है अधिकारा * सो सब युगपद भयहु हमारा ॥
धरहुँ तृतिय पदकेहि थल माहीं * भयहु तुम्हार पूरप्रण नाहीं ॥
सत्य भंगहित तुम कहँ आसू * अहैदेन भल नरक निवासू ॥
प्रभु इंगित सों बलिहि उर गारी * बाँधेहु पन्नग पाश मझारी ॥
यहलखिविन्ध्यावलि बलिरानी * कह्यो स्वामिप्रतियहि विधवानी
नाथ करिय चिंता जनि कोई * हरि सेवक प्रण भंग न होई ॥

दो० तृतियचरण श्रीरमण कर, निज मस्तकपरधारि ।
होहु उऋण प्रणते प्रभू, सब वासना विसारि ॥
सुनिबलिभामिनीकेवचन, कहिधनिधनिसुरवृन्द ।
वर्षै विन्ध्यावली पै, सुमन माल सानन्द ॥

सो०—तब दनुजेश सप्रीत, निज भामिन के कथनवत ।
हरिपद तृतिय पुनीत, धरिनिज शिर पैकह्योइमि ॥
हे प्रभु त्रिभुवन नाथ, संतत दोषी पुरुष कहँ ।
वर अनुशासक हाथ, दण्ड मिलन वांछित अहै ॥

मद गर्वित कर याहि मझारा * है मंगल प्रभु सकल प्रकारा ॥
विषय गर्व ते अन्ध समाना * हमअसुररहे सुनियेभगवाना ॥
प्रभु ह्वै सदय भूरि मद दारी * दिहौ ज्ञान दृगआजु उघारी ॥
दिहो दण्ड सो दण्ड न लेशा * सो तव परम कृपा भुवनेशा ॥
पर यहि योग्य अहौं मैं नाहीं * याते यह भावत उर माहीं ॥
मोहि प्रह्लाद सुतज प्रभु जानी * किहौ कृतारथ शारंग पानी ॥
योगि ऋषिन दुर्लभ सिधि जोई * लाभ असीमकृपा मोहि सोई ॥
सुमिरत जेहि भवताप नशाई * सो पद मम शिर उपर सुहाई ॥
भव सम्पति भव पाश कराला * तासन करिमोहि मुक्तकृपाला ॥

बाँधेहु निर्भय पाश मभारी * अबप्रभुसन यहविनयहमारी ॥
यहि प्रकार बंधित हम काहीं * राखहुनितनिज शासनमाहीं ॥
इमि बलि भाखि रहे अविबादू * आये तहाँ सुजन प्रहलादू ॥
श्याम वरण वर काय विशाला * भुजआजानु पाणि जपमाला ॥
तनुद्युति वरुण दिनेश समाना * सुन्दर पीत वसन परिधाना ॥
पदुम पलाश सरिश युगलोचन * शोभितभाल तिलकगोरोचन ॥
देखि पितामहि बलि मतिमाना * करिसकबन्धवश न सन्माना ॥

दो०—केवल शीश झुकाय कै, किय सभक्ति प्रणिपात ।
उत प्रहलाद रमेश पद, वन्दि सहर्षित गात ॥
जोरि पाणि लागे कहन, विनय सहित इमि बैन ।
धन्य पौत्रमम जेहिसरिस, भाग्यवंत कोउ हैन ॥

सो०—निज प्रपितामह न्याय, सोउ अमितनिजशक्तिते ।
आकर्षेहु पुनराय, तुमहिं नाथ नरलोक महँ ॥
नाम तासु भगवंत, तव पंचम अवतार सँग ।
महा प्रलय पर्यंत, रहि है कीर्तित जगत महँ ॥

यह जग दुर्लभ सुयश अगारी * अहै तुच्छ अमरत्व मुरारी ॥
पुनि बलिरानि जोरियुग पानी * विश्वभरणप्रतिकहइमिबानी ॥
सुनिय भुवनपति धर्म उधारन * तुमहिजगतउतपतिलयकारन ॥
दान करन श्री पति तुम काहीं * राखत अहै अर्थ कछु नाहीं ॥
जेहिपद जल दूरवा चढ़ाई * लहैं परम गति मनुज सदाई ॥
तेहि पद पदुम माहिं ममकंता * अर्पेहु त्रिजगराज भगवंता ॥
तवहुँ काह मम पति मतिमाना * रहिहैं इमि बंधित भगवाना ॥
बलिभामिनिमुखसुनिइमिबैना * कह्यो विहँसि सरसीरुह नैना ॥

दो०—सुनिय सती हम करब का, बन्दी तव पति काहिं ।
स्वयं आजु ते मैं परयो, तेहि दृढ़ बन्धन माहिं ॥

दया दृष्टि ते मैं लखत, जेहि दिशि जगत मझारि ।
सो अडिमादिक अष्ट निधि, केर होत अधिकारि ॥

तेहि सन्मुख पार्थिव प्रभुताई * अहै असार वस्तु की नाई ॥
लखहु सती तव स्वामि प्रवीना * भयहुराज्यधनविभवविहीना॥
करि अपमान शाप गुरु दीन्हा * ज्ञातवन्धुसब त्यागन कीन्हा ॥
दशा दीन विच्छेद तुम्हारा * वन्धित रिपुकृतपाशमझारा ॥
तवहूं अचल हिमाचल नाई * रह्यो अचंचल चित्त सुहाई ॥
आयस खण्ड पयोनिधि माहीं * भयेपतित जिमिडोलतनाहीं ॥
तेहि विध वन्धन आदि कलेशा * सकतवलिहिविचलायनलेशा॥
तव पतिहित प्रथमहि ते रानी * जोनिश्चयकियथलसुखदानी ॥
अमरगणहु कहँसुलभ सो हैना * वहुरि हृदय राखिययहवैना ॥
सावर्णी मन्वन्तर माहीं * देव इन्द्र पदवी वलि काहीं ॥
इमि विन्ध्यावलि काहिं बुझाई * कहन लगे वलिसों पुनराई ॥

दो०—सुनिय सत्य शालीसुमति, असुर योनि तुमपाय ।
करत रह्यो क्लेशित सुरन, विनु कारणहि सदाय ॥
जिमि पावक के ताप सों, धातु शुद्ध किय. जाय ।
तेहि प्रकार मैं नाशकिय, तव पातक समुदाय ॥

सो०—यह मम नियम अखंड, प्रायश्चित अघकर करन ।
कछुक काल तव दण्ड, शांत थापिहै जगत मधि ॥
जवलौं लागत नाहिं, मन्वन्तर सावर्णि वर ।
जाय सुतलपुरि माहिं, सहकुटुम्ब तबलौंवसहु ॥

मम आयसु ते तहँ दनुजेशा * आधिव्यधियतजगतकलेशा ॥
सकल सहचरन सह तुम काहीं * सकिहै कबहु परशिहू नाहीं ॥
तुम्हरे अतुल प्रताप अगारी * लोकप आदि सुरासुर झारी ॥
अवनत शीश रहे जग जेते * तैसहि मान करहि तव तेते ॥

हमहूँ सुनिय दनुज अधिकारी * यककल रूपि होत तव द्वारी ॥
देव दरशरहि सतत समीपा * सुनिहरिवचनअसुरकुलदीपा ॥
भरे विलोचन आनँद नीरा * छाव पुलक रोमांच शरीरा ॥
गदगद कंठ दोउ कर जोरी * कहन लाग्यइमि वचन वहोरी ॥
हे अनंत भवभक्त भीर हर * हेतुन तवकरुणा वितरणकर ॥
कब कापै तव कृपा गुसाँई * होइ प्रकट सो जानि न जाई ॥
नतुयहि मन्द असुर खलकाहीं * सुलभजोइ विधि ईशहिनाहीं ॥
मुद प्रद प्रभुकर दर्शन सोई * पविनहिप्रयाससकलक्षणहोई ॥
अस कहि प्रेम प्रफुल्लित गाता * करिहरिपदशतशतप्रणिपाता ॥
निज कुटुम्बिगण कहँ लै संगा * गयो सुतल लोकहि सउमंगा ॥

दो०—हे रघुकुल मणि युगन युग, यहि बिध रमानिवास ।
धराधाम महं प्रकटि कै, पुरवत भक्तन आश ॥
होन हार अबहू अहै, तिन लीला सुपुनीत ।
असकहिरघुपतिवदनदिशि, कीन्ह दृष्ट सह प्रीत ॥

सो०—तब सरसीरुह नैन, लीलामय करुणा अयन ।
कहमुनि प्रति इमिवैन, मधुर मन्द मुसकाय कै ॥
अब गुरु सहित सनेह, निज आश्रम कहँ लैचलहु ।
करहिं प्रयत निज देह, हेरि नाथ कर तपोवन ॥
यह अघहारि प्रसंग, सुविमलवलिवामनचरित ।
वरणेहु सहित उमंग, कालि प्रसन्न पुराणमत ॥
छन्द वद्ध सहुलास, द्विज मथुरातेहि कीन्हेऊ ।
पूरहि तिनमन आश, पढ़ैं सुनैं जे यह चरित ॥

नवशततम सर्ग ॥ १०९ ॥

मारीच पराभव, सुताहु निधन व मुनि यज्ञ समाप्ति ॥

दो०—वहुरिकुशिककुलकुमुदविधु, अतुल तपोवलखानि ।
मुनि गण मनस मरालसन, कहन लगे इमि वानि ॥
मम आश्रम यहि ठाम ते, अहै कोस त्रय तात ।
यहिप्रकार गुरुवचनसुनि, पुलकि चले दोउ भ्रात ॥
सो०—आनँद कन्द मुकुन्द, सहितवन्धुवनछविलखत ।
पहुँचे रघुकुल चन्द, सिद्धाश्रममनशुचिकरन ॥

हरिगीतिका छन्द ।

आश्रम मनोरम परम पावन चारु छवि मनभावनी ।
अवलोकि भ्रात समेत मोहित भये रघुकुल दिनमनी ॥
शोभित चतुर्दिशि पाँति पाँतिन भाँतिभाँतिके तरुघने ।
मधि मध्य माहि विभात मंजुल कुंज भवन सुहावने ॥
प्रफुलित ललित द्रुमभरित सुम इमि तरु तरे बिखरे परे ।
आस्तरण जनु श्रीरमण कहँ दै रहे सब आनँद भरे ॥
उत्तुंग तरु शाखान पै रँगरंग के सुविहंगही ।
वोलहिं मधुरध्वनि सोहिंकरत किलोल सहितउमंगही ॥
कहुँ पुंज पुंज मयूर मंजुल पुच्छ गुच्छ पसारि कै ।
नर्तत मुदित चित करत केकारव लुभावन मार कै ॥
असफटिक तोरण मालवत नभमार्ग मधि आनन्द ते ।
दल वद्ध वृंदन वृन्द चारु मराल सारस विचरते ॥
कहुँ प्रयत व्रतधर मुनि प्रवर जप होम मधि रतनेमते ।
कहुँ दै रहे सुयशी मनीषी पाठ क्षात्रन प्रेमते ॥

कहुँ साम गान सतान रत सविधान मुनि संतानही ।
तेहिसँग भ्रमर झंकार मिलिजनु वजत वीनसतानही ॥
सब शास्त्रविद कोविद कतहुँ आसन पुनीत विछायकै ।
फलप्रद सुखद अस्तोत्र सुढ़करि रहेपठन मनलायकै ॥
कहुँ सांख्य सार विचार करिरहे वुध प्रवर वर वैनते ।
कहुँ ह्वै रह्यो प्रतिध्वनित कानन मुनिनऋकअध्यनते ॥
कोइथल विपुल मखशाल तहँउपकरण यागोचितजिते ।
श्रुक सोमघट पश्यूप कुश आदिक विभात विधानते ॥
चहुँदिशिफुलित सुमराजिसंजुत लतागृहशोभित महा ।
जाके सुगन्ध सों नित मलय मारुत पराजित ह्वै रहा ॥
मुनि तियन सुवनसमान मृगशावक अशंकित इत उतै ।
वैठे कुटीरन द्वारवहु वहु केलरत प्रमुदित चितै ॥
शिर जटा मुंजा मेखला कटि रक्त वल्कल आवृता ।
जपमालकरइतउत विराजहिं मुनिनभामिनिप्रतिव्रता ॥
लेपित उशीर शरीर पाणि मृनाल कंकण धारिणी ।
परिधान कृष्णाजिन मुनिन तनुजाभुवन मनहारिणी ॥
कोई सुमन करिरहि चयन कोइहार गूंधत मुदभरी ।
कोई द्रुमन के आल वालन माहिं जल सिंचत खरी ॥
आश्रमन प्रांगन माहिं लाग निवार धानके राशिही ।
तेहिनिकट शायितहरिणिगणरोमन्थहीं विनुत्रासही ॥
गन्धोदगारी याग धूमसो तपोवन पावन महा ।
मन ताप हारन मोद कारन अति सुवासित ह्वै रहा ॥
दो०—सुभगपुनर्वसु नखतयुत, युगल शशिकला न्याय ।
प्रविशेरघुवर लखणसह, सिद्धाश्रम ऋषि राय ॥
आश्रम वासीमुनिसकल, लखि सानुज प्रभुकाहिं ।

उठे सवन मन ह्वै मगन, मोद पयोनिधि माहिं ॥
सो०—परयो मुनिहि यह जानि, रामलखण छविहेरिकै ।
आये शोभा खानि, सहितविशाखास्कन्दजनु
सहित वन्धु करपुट रघुनाथा * सकलमुनिन पदनायहुमाथा ॥
भुज उठाय ऋषि मुनि समुदाई * दिय शतशत आशिष हर्षाई ॥
प्रभु शिर धान दूरवा डारी * दीन्हअशीस मुनीशननारी ॥
ऋषिकुमारि गणलोक ललामा * कुवँरन बालरूप छवि धामा ॥
यकटक लोचन निमिष निवारी * लखतवदत इमिहृदयमझारी ॥
इननृप सुतन जननि धरिध्याना * कीन्ह होइ वहु जपतप दाना ॥
जेहि फलअस कुमार किय लाहू * धन्यभाग तिन सरिसनकाहू ॥
उर अचरच लखिऋषिवर कामू * निशिचर संगइनकर संग्रामू ॥
दो०—कहां घोर निशिचर प्रवल, कहां मृदुल यह बाल ।
आयसपिंड किखण्डिसक, कोमलकमल मृनाल ॥
सिद्धाश्रम वासी सकल, ऋषि मुनि हर्षिअपार ।
कीन्ह दोउ भ्रातान कर, विविधभाँति सतकार ॥
सो०—वहु क्षण लगि मुद दैन, विविध वार्ता लाप रह ।
हेरि अधिक तग रैन, कीन्हशयनसरसिजनयन
विगत निशा दोउ भ्रात, ह्वै निवृत नित कृत्य ते ।
करि मुनियन प्राणिपात, मुनिसमाज राजतभये ॥
सहित विनय प्रभु शरंग पानी * कह्योमुनिनप्रतियहिविधवानी॥
जेहि कृतहित आनेहु हम काहीं * अहै विलम्व काह तेहि माहीं ॥
परिहै करन हमै का कामू * कहियसोसकल तपोवलधामू ॥
सुनि प्रभुवदनअमियमयवानी * कहइमिऋषिगणउरमुदमानी ॥
करहिं यज्ञ हम सब जेहि काला * तबनिशिचर मारीचकराला ॥
रुधिर मेद मज्जा वर्षाई * ध्वंसत मख करि बहुखलताई ॥

किहे रोष मख निष्फल जाही * यहिहितशासिसकहिंनहिंताही॥
दूजे करन द्विजन कहँ रोषा * श्रुतिवद यहिसमअपरनदोषा॥
निशिचर विघन निवारन हेतू * लाये तुमहिं कुशिककुलकेतू॥
कह प्रभु सकल चिंत परिहरहू * मख पुनीत द्रुत आरँभकरहू॥

दो०–दुष्ट कष्ट दै शिष्ट कहँ, कबहूं न तेहि कुशलाय।
यहि हित करि है तुमसवन, धर्महि एक सहाय॥
सुनि रघुनन्दन मृदु वचन, मुनिगण हियहर्षाय।
गाहि सरित संचित कियो, मखसामग्रि निकाय॥

सो०–मखशाला सुविशाल, रंभ खंभ मंडित रुचिर।
अति सुरभित सुममाल, वन्धित वन्दनवार वर॥
दधिमधुघृतकुशकाश, समिधिअरुणपटफलसुमन।
यव तिल तंडुल भाष, राशि राशि प्रस्तुत तहां॥

कोइमुनि मृगछालापर भ्राजे * व्याघ्र चर्म पै कोइ विराजे॥
कोइ आसीन कुशासन नीके * रह्यो उमंग उमगि सबहीके॥
वेद मंत्र सो ऋषिन प्रतीना * पावक प्रकट कुंड मधि कीना॥
लागे यज्ञ करन मुनि वृन्दा * रक्षत धनुधृत रघुकुल चन्दा॥
क्रमशः वर्द्धित भयहु हुताशा * उडिसुगन्धिछायहु आकाशा॥
रज नीचरन वास लहि तासू * लागे कहन सहित परिहासू॥
वहुरि मुनिन प्रकटीं जड़ताई * देव अवहि मखफल दर्शाई॥
तेहि क्षण द्रुत पद यक चरआई * कह इमि मारीचहि शिरनाई॥
होहु सतर्क नाथ यहि काला * लखिआयहुँयकविपतिकराला॥
द्वै वालक यक मृत्यु कि नाई * आय भये मुनि गणन सहाई॥

दो०–सुन्द सून सुनि चर वचन, करि आमर्ष कराल।
घनी वाहिनी सजन हित, दिय निदेशततकाल॥

भट सुबाहु आदिक विकट, तानिकोटिनिशिचारि।
सजे समर हित तुरतही, विविध अस्त्रकरिधारि॥

रोला छन्द॥

विपुल भूधराकार भीम दर्शन निशिचारी।
करत विकम्पित दशोंदिशा धाये यकबारी॥
बहु निशिचर कर गहे रुधिर पूरित शत शत घट।
पूय पलित पल अस्थि चूर्ण लीन्हे अगणित भट॥
गगन पंथ सों बेगि रहे मख की दिशि आई।
गति प्रचण्ड घनघोर प्रलय मारुत की नाई॥
जस मखनगिचातजात तसहि तस तिननहुकारा।
लग्यो सुनाई देन सिन्धु गर्जन अनुहारा॥
मख थल लखतहि लखत चण्ड मारुत प्रकटाई।
उपरि उपरि तरु विपुल गिरन लागे घहराई॥
सकल कुटीरन माहिं घोर पावक लगि गयऊ।
यज्ञ वेदिका सोहिं शिखा उठि नभलगि छयऊ॥
दिक सब क्रन्दन करहिं कँपत धरणी गिरिमाला।
छायो गगन मझार नील परलय घन जाला॥
दमकत अगणिततडित अशनिध्वनि होतप्रघोरा।
भये उदय बहु धूम केतु नभमधि चहुँ ओरा॥
लेहत पुनि पुनि रसा समणि फणि विषउद्गारत।
विचरहिं झुंड के झुंड यज्ञ थलमधि फुफकारत॥
उल्कामुख चिक्करहिं जहां तहँ श्वान शृगाला।
भगेजात लांगूल तोलि वन पशू विहाला॥
यह उत्कट उत्पात हेरि ऋषिमुनि समुदाई।
लखि प्रभुदिशि संकेत कीन्ह आकाश कि धाई॥

तब खलगण मद हरण ऊर्द्ध करि दृष्टि निहारा।
सकल गगन परिपूर्ण रैनचर सैन के द्वारा॥
सो विलोकि यहिभाँति भयो अनुभव प्रभुकाहीं।
जनु वर्षा ऋतु विकट प्रकट तहँ असमय माहीं॥
नीलांजन द्युति रक्ष पुंज घन वारिद जाला।
चम चमात तिन अस्त्रनिचय बहुदामिनि माला॥
भटन घोर हुंकार अशनि गर्जन ध्वनि नाई।
यह लखि कह सौमित्र सोहिं इमि जगत गुसांई॥

दो०—इन मदान्ध दुष्टन हनन, अवहिं मोरि रुचिनाहिं।
करिहौं अस्त्र प्रहारते, अपसारित सब काहिं॥

यहि उपदेश ओरिरखि ध्याना * होहुसजग अववन्धुसुजाना॥
यह सुनि लखणजोरियुगपानी * कहइमि वचन वीररससानी॥
प्रभु निदेश शिरधाय हमारा * पर सेवक उर होत विचारा॥
शुभ्र मृदुल मणि ज्योतिकेद्वारा * है सक कंटक गहन नछारा॥
केवल दावानलहि सदाई * ताहि दाहिसक जगतगुसाँई॥
अस कहिधनु गुण तुरत चढ़ाई * भये सतर्क राम लघुभाई॥
रघुराजहु चढ़ाय धनु घोरा * फिरन लगे मखके चहुँओरा॥
विपुल शत्रुदल पै भगवाना * प्रथमहि करन वाण सन्धाना॥
भीरु जनोचित कारज जानी * तजत न शायक शारँगपानी॥
अति गंभीर भाव प्रभु धारी * रहे निशिचरन वाट निहारी॥

दो०—तेहि क्षण ऊरध दृष्टिकरि, हेरहु रमानिवास।
रक्त पूय अरु अस्थि सों, भयो अदृश्य अकाश॥
सो विलोकि प्रभु आशुही, प्रशमन अस्त्र चलाय।
निशिचर प्रेरित रक्तचय, दीन्ह्यो तुरत उड़ाय॥

रामगीती छन्द ॥

यहिभाँति पुनिपुनि पूय शोणित वर्षही निशिचारि ।
पहुँचत न सोमख थलकरहिं अयसरित प्रभुशरमारि ॥
इमिमखअशुचिकृतिमधिनिजहिलखिविफलवारहिवार।
कियसकलपिशिवाशनअशनिसम अतिविकटहुंकार ॥
तेहिअति भयंकर शब्दसो अनुभव भयो तेहि काल ।
मानहु विदीरण भयो सहसा स्वर्ग मर्त्य पताल ॥
क्रोधान्ध ह्वै छल छन्द सो भट सुन्द नन्दन घोर ।
वर्षाय ज्वलतंगार ते दिय छाय चारिहु ओर ॥
अरि दमन दारुन दुख दरण श्रीरमण समर प्रवीन ।
हनि वेग वारि दवाण सकल कृशानु प्रसनित कीन ॥
यहदेखि दुगणित कुपित ह्वै निशिचर निकर वलधाम ।
अविरल विपुल गहिगहि उपलवर्षन लगे अविराम ॥
तिन शैल खण्ड प्रकांड चंड के परस्पर आघात ।
उत्थित विकट रवहेरि सो लक्ष्मण धनुर्धर ख्यात ॥
करलाघवीयुत हनि शिलीमुख प्रखर अस्त्र निकाय ।
करि रेणु समसब कुधर खडहि दीन्ह आशु उडाय ॥
यहि भाँति अद्भुत कर्म लखि मारीच भट वल ऐन ।
ललकारि श्री रघुवरहि लाग्यो कहन इमि कटु वैन ॥
रे दुग्धमुख शिशु कस चहसि तै असु करन परिहार ।
यह सकल खलमुनि डूबिहैं मम क्रोध उदधि मझार ॥
इनके प्रथम पाषाण तरि सम वोरिहौं तुमकाहिं ।
अबहूं अहै दोउ भ्रात कर कुशलाय याही माहिं ॥
जबलौं न दुर्दम दुराधर्ष अमर्ष मम उमड़ाय ।
यहि ठाम ते तबलौं दोऊ जन आशु जाहु पराय ॥

यहि भाँति पिशिताशन वदन गर्वित वचन सुनिपाय ।
भेलखण रोष ते दण्ड ताडित ज्वलत पावक न्याय ॥
फरकन लगे भुज दन्ड दोउ अधरोष्ठ रह थर्राय ।
विकसित जलज तव नैन ते अग्नि स्फुलिंग उडाय ॥
सोलखिअनुज प्रति दनुजदारन कहविहँसि इमिवैन ।
सुनि रक्ष वाक प्रलाप त्यागहु धीर समुचित हैन ॥
यहदर्पवल वलमधि गणित नहिभणित नीतिक्रमाहिं ।
जेहि वली उरयक तुच्छ हेतु सों क्रोध उपजत नाहिं ॥
सोई जगत विख्यात रण कुशली विपुल वल धाम ।
पुनि सुन्द नन्दन सनकह्यो खलगन निकन्दन राम ॥
रे वाकवीर उलंघि धर्महि जो चहत कुशलाय ।
पुरुषार्थ ताकर अहै गगन प्रसून चयन के न्याय ॥
करु वाम क्षय प्राणिन वृथा तोहि काह होई लाहु ।
अविराधि मुनिनविरोधतजिनिज धामकहँफिरजाहु ॥
दो०-यह सुनि इमि मारीच कह, रे नृप तनय अजान ।
काल कराल के जाल परि, काह कथत वहुज्ञान ॥
तीरथ दूषण मुनि हनन, ध्वंसन मख शुभ कर्म ।
दैव नियोजित हम सवन, यहै परम है धर्म ॥
सो०—कह्यो विहँसि रघुराय, तौ स्वधर्म प्रतिपालि तैं ।
शयन सदन महँ जाय, करुनिवासनिजसेनसह ॥
सुनि निशिचर प्रभु वैन, दल वेष्टित गर्वित महा ।
अरुणवरण करि नैन, ललकारेहुनिजकटककहँ ॥

महा भुजंगप्रयात छन्द ॥

महाकोपिकै नीचमारीच विस्तार कीन्ह्यो महाघोर मायाअपारा ।
प्रलैकालिनी प्राणसन्तापिनीयामिनीवच्छयो नीलगाढ़ान्धकारा ॥

धरो धावरे मारु संहार के शब्द सो पूरि गो अभ्र पाताल सारा ।
शिला खण्ड वर्षै खसैं चण्ड उल्का परै वेगसो रक्तकी भूरिधारा ॥
गिरैं व्योम सो भूमिपै घोर भिन्दोल डोली धरा भूधरा डग्मगाने ।
डिगे दिक्करी रव्धिसंक्षब्ध गीर्वाण शंकाकुलै त्यागि स्वर्गैं पराने ॥
तमीचारि माया घनी देखि कै हंस वंशावतंसै नृसंशासु हारी ।
कियो आशुहीनाश मायान्धकारै महाभास मे भास्करास्त्र प्रहारी ॥
पुनः क्रोध संतप्त ह्वै रात्रि चारी महा घोर हुंकार कै तीव्र धारा ।
गदा कुन्तले भिन्दिपालादि शूलादि लागे तजै वेगसों वेसँभारा ॥
परैं उर्द्ध ते निम्नमा आशु गे लक्ष लक्षै सयक्षाक्षि कर्ण नुहारी ।
सोऊ सर्व भल्लास्त्र सों खंडि डारे धरा भारहा रक्ष दर्प प्रहारी ॥

दो०—पुलिन सहन शीलताजिमि, निधि तरंग दुर्वार ।
करि अग्राह्य तापै करत, घात वारहीं वार ॥
तेहि विध विफल मनोर्थ, पुनि पुनि रक्ष निकाय ।
पर निरस्त नहि व्यस्तरण, रहे विशिख वर्षाय ॥

वरषिविशिखदशदिशिभरिदयऊ * छावतिमिरतमहरछिपिगयऊ ॥
वाणविद्ध भे ऋषि मुनि भारी * टेरहिं त्राहि त्राहि मुनिनारी ॥
आहत होम सुरभि अकुलाई * वहु लुठित वहु जात पराई ॥
घनछादित रवि शशिअनुहारा * शर छादित दोउराजकुमारा ॥
निजनिज उरनसुरनभयमानी * जगमंगल हित अस्तुतिठानी ॥
लखि यहिविध उत्कट उत्पता * जनरक्षक घातक खल त्राता ॥
समरोत्सुक स्वभ्रात प्रतिकहेऊ * अब नहिं काजक्षमाकर रहेऊ ॥
ह्वै स्वच्छन्द दण्ड विधि धारहु * प्रखरशरननिशिचरनसँहरहु ॥
भस्मा वृतहुतभुक जेहि नाई * होत उग्र लहि अनिल सहाई ॥

दो०—तिमि अनुमतिभगवंत कर, लहि अनन्त वलवन्त ।
उमडेहु तासु तुरंतही, वल वीरता अनंत ॥

गगन विदारण घोर ध्वनि, करि केहरि अनुहार।
मंत्र युक्त त्यागत भये, अनल अस्त्र दुर्वार॥

हरिगीतिका छन्द॥

तासन हुताशन शत्रु नाशन छाय चारिहु दिशि रह्यो।
तेहि ज्वाल सोक्षणकालमहँशर जालनिशिचरकृतदह्यो॥
उत्कट हुताशन लपट नटखट विकट भट निशिचरन के।
शिर त्रान तनु भूषण वसन रथध्वज पताका चकमके॥
लाग्यो धधकि धकिदहन तब इमि सघन इंधन लहिमहा।
लक्ष्मण सृजित आशुग अनल यहिविध प्रवर्द्धितह्वैरहा॥
मानहु दशहुदिशि गगन मंडल सहित वारिद जालही।
अतिव प्रवल वेगते दग्ध ह्वै रह सकल एकहि कालही॥
निजदल दहन दिव्यास्त्रविद भट सुन्द सूनु निहारेऊ।
सो तुरत अद्भुत मंत्र संयुत वरुण अस्त्र प्रहारेऊ॥
तेहि अस्त्र सों विध्वस्त ह्वै आशुही सर्व हुताशही।
तेहि क्षण गगन दिशि लखेमानहु निधितरंगविभासही॥
जल राशि सो कर्पास व्रत दिशि विदिशि सारे ह्वै गये।
तब लखण शोषण अस्त्र सो वरुणास्त्र द्रुत नाशत भये॥
पुनि असित अगणित फुफकरतविषरदत समशायकखरे।
वर्षाय चहुँदिशि छायदिय तेहि क्षण दिवस नायक दुरे॥
तेहि कालजेहि दिशिलखिय नील विशालअम्बर अन्तरैं।
अविरल प्रवल गति उड़तकेवल विशिखपुंजहिलखिपरैं॥
अरि दल दलदमन श्रीलखन करद्रुतकारि ताहिंनिहारिकै।
रिपु वृन्द अचरज माहि परि मोहित भये हिय हारि कै॥
सवहिन परत यह जानि धनु पूर्वही जस कर्षेहु रहै।
तैसहि निरंतर मण्डली कृत कै अवस्था मधि अहै॥

इमि तिनशरन निशिचरशिर कटि कटिसमरथलमहँगिरैं।
जनु चण्ड भूधर खण्ड अविरल गगन मण्डल ते परैं॥
रक्तात्त सुभटन रुण्ड सो इमि समर भूमि विभासही।
मानवु पतित बहु छिन्न मूल प्रफुल्ल विटप पलासही॥
उत्तुंग भूधर अंग अध प्रविशित भुजंग समान ही।
मारीच तनु मधि विद्ध भ्राजहिं लखन प्रेरित बानही॥
लघुहस्त लछिमन शरन सों अकुलाय निशिचरदलगयो।
तब महाबाहु सुबाहु गर्जत गगन ते उतरत भयो॥
तेहि संग संगर दक्ष राक्षस लक्ष लक्ष भयावने।
उतरे बजावत शंखभेरी तुरी रण उमगावने॥
चहुँ ओरते लक्ष्मणहि घेरि अघोर पिशिताशन अनी।
लागे प्रहारन प्रखर शर पुनिपुनि करत केहर ध्वनी॥
बहू उलूखल कर बाज भल्ल त्रिशूल शेल प्रहारहीं।
बहु परिघ असि गोशीर्ष मुद्गर कुंत तोमर मारहीं॥
सो लखि लखण रणनिपुण उर मधिशंक नेक नधारेऊ।
आशुही मायामय विषम गन्धर्व अस्त्र प्रहारेऊ॥

दो०—तब तेहि अस्त्र प्रभाव सों, मोहि रक्ष समुदाय।
जितहेरहितेहि दिशितिन्हैं, लक्ष्मण मयीलखाय॥
लगे करन सब परस्पर, समर भूमि तेहि काल।
होत विदित यक मनोरम, गातुसमाज विशाल॥

भटन धनुष गुनतंत्रि समाना ❋ अस्त्र लरनजनु बाजननाना॥
मरत वीरहिचक्रन वर ताना ❋ पीडितआरत ध्वनिजनुगाना॥
करपद मुण्ड विगत भट रुण्डा ❋ परे समर थल झुंडन झुंडा॥
इमितिन तनुस्रव शोणित धारा ❋ वहनदि जनु दरिगेरु पहारा॥
यहि प्रकार बहु कटक सँहारा ❋ हेरि होत भट सुन्द कुमारा॥

पंगपाल सम लै निज सैना * उतरि समरथलमधिनलएना ॥
कोपि विविध आयुध खरशाना * लग्यो प्रहारन विनु परिमाना ॥
तब अरिमद मर्दन रघुनंदन *यहिविधकीन्हहृदयमधिचिंतन॥

दो०—अहै श्रेय यहि रणहि अब, करहुँ आशु अवसान ।
असविचारिजन भयहरण, कीन्हग्रहण खरबान ॥

रोला छन्द ॥

प्रयत सतोगुणनिहित तमोगुण प्रभु प्रकटाई ।
किय धारण संहारमूर्ति कालांत कि नाई ॥
तिन दृग तेज ते भयो मन्द द्युति तेहिक्षणतरणी ।
पदभर यकदिशि उच्च निम्न यकदिशि भइधरणी ॥
करि प्रघोर हुंकार वज्र सम धनु टंकारी ।
द्रुत गति सों धसिगये निशाचर निकट मझारी ॥
तन जिमि घेरत मार तंड कहँ वारिद माला ।
तिमिचहुँदिशि ते घेरि प्रभुहि रिपु कटककराला ॥
कंक दण्ड कर्पूर कुंत कापाल कृपाना ।
खेटक अंकुश प्रास मृगानन असि खरसाना ॥
वत्स दण्ड क्षुरआदि अस्त्रचय विविध प्रकारा ।
तमकि तमकि प्रभु उपर करहिं अविराम प्रहारा ॥
मानवास्त्र तजि क्षिप्तकारि रघुनन्दन आशू ।
रिपु प्रेरित सब अस्त्र कीन्ह अविलंब विनाशू ॥
पुनि सहास पवनास्त्र विषम प्रभु किय संधाना ।
अति प्रचण्ड कोदण्ड सोहिं छूटत सो वाना ॥
महाभयंकर हहर हहर ध्वनि करत प्रघोरा ।
प्रकट्यो प्रवल समीर शत्रुदल मधि चहुँओरा ॥
कुन्द सुमनवत धवल रिपुन इमि छत्र उड़ाहीं ।

मानहुँ विमल मराल माल उडिरहे नभ माहीं ॥
शतशत ध्वस्त पताक गगन मधि इमि उडिरहेऊ ।
लखत हृदय भ्रम होत स्वर्ग सरिता जनु अहेऊ ॥
अनिल वेगसों भये विपुल वहु यान विभंगा ।
क्षितिशायी वहु तुंग अंग मातंग तुरंगा ॥
द्विरद कुम्भ विच्छिन्न होय मुक्ता विखराहीं ।
जनु प्रभु कीरत वीज वपन संगर महि माहीं ॥
प्रवल प्रधान प्रधान राक्षसहि लागि झिकोरा ।
ह्व आहत क्षितिपरे करहिं चिक्कार प्रघोरा ॥
तिनन करन सों परे अस्त्र खसि इत उत माहीं ।
उठहिं वहुरि गिरि परहिं सभँरि पावत कोउनाहीं ॥
यहिविध शंकाग्रसत व्यस्त करि रिपुदल सारा ।
वहुरि विषम अनिलास कीन्ह प्रभु उपसंहारा ॥
तव दुरंत मारीच अजय ते मृतु भल जाना ।
प्रभुहि सदल पुनि घेरि वर्षि सरविनु परिमाना ॥
अविरलछादितकीन्ह दशोदिशिक्षिति आकाशा ।
तेहिक्षण नभथित अमर वृन्द भागे सह त्रासा ॥
वाणविद्ध आरक्त काय प्रभु शोभित ऐसे ।
रश्मिजाल संयुक्त प्रात दिनकर छवि जैसे ॥
इमिदमकहिनिशिचरनभ्रमतअसिखरतरझलमल ।
मानहुँ वदनपसारि हँसत खिलखिल समरस्थल ॥
लेलिहान विकराल काल रसना की नाईं ।
महा विकट खरशान प्रास दमकन दर्शाईं ॥
भटन पदोत्थित रेणु सोहिं संगर महि सारी ।
भईघट आच्छन गगन मण्डल अनुहारी ॥

शंखभेरि ध्वनि सिंहनाद धनुषन टंकारा।
कम्पतजल थल सकल विकलदिकद्विरदअपारा॥
तब रण कौशल कुशल कोशलाधिपति कुमारा।
मर्मभेदिशर तजन लगे अविरल अनिवारा॥
प्रभुके खरतर शरन सोहि संगर महि माहीं।
कांस रचित दृढ़ भटन वर्म कटि भुवा उड़ाहीं॥
इतउत निपतित दीप्तिमान असि परिध कृपाना।
भानु किरणते रहे दमकि दामिनी समाना॥
क्षिप्रकारि सुर विपदहारि दोउ राज कुमारा।
सकल निशाचर कटक काटि यकपल महँ डारा॥
राशि राशि मृत देह छिन्नशिर गजन तुरंगन।
परि पूरित ह्वै गयो विपुल भीषण समरांगन॥
स्येनपुंज निशिचरन मुण्ड गहि पदनख माहीं।
छीनत यक यक सोहिं लरत नभमाहिं उड़ाहीं॥
विन आरोही अनिल विचालि शैल कि नाई।
गजगन आहत भटन विमर्दत जात पराई॥
विगत प्राण सारथी रथी युत सुतिपुञ्ज याना।
खण्ड खण्ड ह्वै परे पतित प्रसाद समाना॥
यहि प्रकार सब कटक निहत मारीच निहारी।
गहिअसि प्रभुदिशि धाव गर्जि इमिगिराउचारी॥

दो०—जिमि कुलटा धन लोभ ते, भेटति कामुक काहिं।
तिमियहअसितवअसुहरन, लपटीतव गलमाहिं॥
असकहितोलि प्रचंडअसि, झपट्यो प्रभु की ओर।
सोंलखि मारिक्षुरास्त्रतेहि, वारेहु अवध किशोर॥

सो०—पुनि प्रभु समर प्रबीन, अर्द्ध चन्द्र शर मारि कै।

छिन्नमुंड करि दीन, तेहिसहचरदोउसचिवकहँ ॥
तब मारीच दुरंत, ह्वै अमर्ष ते क्षिप्तवत ।
शायक पुंज अनंत, तजन लाग भगवंत पै ॥
तासु प्रखर विशखन आघाता * भये जर्जरित तनु जग त्राता ॥
सो लखि देव मुनिन भय छयऊ * स्वस्तिस्वस्ति उच्चरत भयऊ ॥
पर अविचल चित प्रभुथित ऐसे * अहिछादित मलयज तरुजैसे ॥
प्रखर प्रखर शर जलधर नाईं * रहे शत्रु पै प्रभु वर्षाईं ॥
पर मारीच काहिं सुरभ्कारी * लखि दशमुख वधमहँसहकारी
रक्षा करन लगे तेहि केरी * सो कौतुक रघुनन्दन हेरी ॥
जानि मर्म हँसि हृदय मझारा * वज्रवान मारीचहि मारा ॥
तेहि अघात सन सो निशिचारी * पक्ष विहीन विहग अनुहारी ॥
भ्रमत गगन मधि चक्र कि नाईं * गिरयो अचेत लंकामधिजाई ॥
सो लखि भट सुवाहु वलधामा * तजि सौमित्र संग संग्रामा ॥

दो०—कुपित कलेवर धारि कर, शूल भीषणाकार ।
रघुपतिदिशिझपटतभयो, गर्जि अशनि अनुहार ॥
तेहि आगत लखि रमापति, किय अनलास्त्रप्रहार ।
तेहि शायक के ज्वाल सों, भा सुवाहु द्रुत छार ॥

नायक हीन शेष निशिचारी * भगे चतुर्दिशि आयुध डारी ॥
भई नाश सब निशिचर माया * स्वच्छप्रकाशउदित दिनराया ॥
भासेदिशि आश्रम सुघराई * भई मनोरम पूरुब नाईं ॥
निशिचर निधन हेरि सुरवृन्दा * जय दुन्दभि बजाय सानन्दा ॥
सुरभित सुमन माल भरि लाये * जोरि पानि इमि विनयसुनाये ॥
जय मुकुन्द आनंद कन्दघन * जयगोविन्दकलिद्वन्दनिकन्दन
निशिचर कुंजर मदहर केहर * जनमन जलजविकासिभासकर
निर्गुण सगुण निरीह निरन्तर * जयजयहितवर मनुजरूपधर ॥

जय अनंत भगवंत कृपाकर * शंतनोतु संतत संतन कर ॥
इमि प्रभु नुतिकर सकल देवगन * गमनेनिज़निजपुरनमगनमन॥
दो०—आश्रम वासी मुनिसकल, अतुलित हिय हर्षाय।
दोउ भ्रातन शतशतदियो, आशिष करफैलाय॥
पुनिसवन्धुप्रभु गाहिसर, धौत रुधिर तनु कीन्ह।
ऋषिन क्षतांगहि मंत्र सों, द्रुत विशल्य करि दीन्ह॥
सो०—ऋषि कौशिक तप ऐन, पितर यज्ञ सम्पूर्ण करि।
इमि सनेह युत वैन, कहरघुपतिसनमुदितचित॥
हे प्रिय तात सुजान, यहि मख की रक्षा स्वयं।
यज्ञदेव भगवान, करि कृतार्थ हम सवन किय॥
तव प्रभाव आश्रम रघुराजू * भयहु प्रकृत सिद्धाश्रम आजू॥
वहुरि उभय भ्रातन लै संगा * किय सन्ध्या वन्दन सउमंगा॥
उत माराच निशाचर काहीं * भयो चेत जेहि समया माहीं॥
प्रकट्यो तेहिउर माहिं विरागा * हृदय माहिंइमि शोचनलागा॥
यदि वालक के समर मझारा * होतै आजु मोर संहारा॥
तो मोहि दस्युवृत्ति फल भोगू * करत परंत जो विषम कुयोगू॥
यह अघ ओघ युक्त संसारा * केवल अहै मोह अगारा॥
अस विचार उरमधि ठहराई * जटा धारि मुनि वेश वनाई॥
सिन्धु तीर यक वन मधिगयऊ * रचि यक कुटी तपो रत भयऊ॥
सोवत जागत तेहि चहुँघाई * केवल राममयी दर्शाई॥
दो०— भयविह्वल नित शोचही, यहि शंकानल सोहिं।
राम वाण सो तनु तजन, रहै श्रेयतम मोहिं॥
कृत्तिवास कह रक्ष रुचि, विफल होइहै नाहिं।
प्रभुसुरतरु सन जाँचजस, तस पावत तिन पाहिं॥

दशासततमसर्ग ॥ ११० ॥

अहल्या उद्धार ॥

दो०–अद्भुतक्रिया कलाप लखि, रघुपतिकर मुनि वृन्द ।
लागे करन विचार इमि, गोयन महँ सानन्द ॥
साधुसंत परित्राण अरु, धर्म थापना माहिं ।
निशिचर वंशविध्वँस महँ, अब शंसय रह नाहिं ॥
सो०–श्रीपति जगदाधार, भूमिभार हारण निमित ।
धारि मनुज आकार, महि मंडल मधि अवतरे ॥

धन्य धन्य दशरथ गुणखानी * धन्य सती कौशल्या रानी ॥
जिन पद कमल परशतेयहमहि * गरीयसी स्वर्गहुते ह्वै रहि ॥
जनकराज ऋषि भवन मझारा * हैभव अजगव चण्ड अपारा ॥
विन सन्देह ताहि करि भंजन * ह्वै हैं श्रीयुत रघुकुल रंजन ॥
सिद्धाश्रम मधि रमा निकेतू * रहे तीन दिन वन्धु समेतू ॥
विविध पुराण कथा इतिहासा * होत मुनिनमधिरहसहुलासा ॥
चौथेदिन कौशिक तपखानी * कहरघुपतिप्रतियहिविधवानी ॥
नृपति विदेह भवन मधि ताता * अहै शंभुधन जग विख्याता ॥
यहप्रण कीन्ह विदेह भुवाला * जो चढ़ाव सो धनुष कराला ॥
तेहिजनकहँ निज सुताललामा * श्रुति विधिवत समर्पि हैंरामा ॥

दो०–देश देश के वहु नृपति, धीर वीर वलवान ।
तोलिनसकशशिमौलिधनु, फिरे घरन हतमान ॥
परयहिमधिअचरजनकछु, उग्र तमोगुण युक्त ।
गुण कर्षन महँ हैं सतत, सुर नर आदि असक्त॥
सो०–अहै निहित तव माहिं, तेहिगुणकर वशकारिगुण ।

१–श्री–लक्ष्मी व कीर्ति ॥

कहिय तात मो पाहिं, अब जोइ इच्छा होत तव ॥

यहसुनि रमारमण सुखदानी * जोरियुगलकरकह इमिवानी ॥
सुनिय तापो निवास गुरुस्वामी * हमप्रभु भृत्य सदा अनुगामी ॥
जोइ निदेश नाथ मोहि देहू * शिरधरि पालब सहितसनेहू ॥
चलिय सुचारु जनकपुर आसू * नाथसंग मोहि सकल सुपासू ॥
यह सुनि ऋषि कौशिक हर्षाई * शकटन मख उपकरण भराई ॥
आश्रम सौंपि विपिन सुरकाहीं * लै सानुज प्रभुकहँ सँगमाहीं ॥
सकल वेद विद मुनिन समेतू * चले उतरदिशि तपो निकेतू ॥
देखत पथ वहु पुरवन ग्रामा * ठहरत गमनत ठाम न ठामा ॥
ऋषि गौतम तप गहन मझारा * पहुँचे ऋषिवर गाधिकुमारा ॥
उपवन सघन माहिं मन भावन * रह्योभ्राजि यकआश्रम पावन ॥

दो०—विपिनधरणिनवहरिततृण, छादित चारिहु धाँय ।
घन छायायुत विविध विध, विटपविशाल सुहाँय ॥

मन्दारमाला छन्द ॥

फूले फले तालहिन्ताल उद्दालिका मल्लिका जाति धौमालती ।
यूथी जवावारिका कर्णिकाराजु नै नाग चम्पा शमी सेवती ॥
द्रोणासरो तुन्दिका गाथि अंजीर खर्जूर तर्कारिका पाटली ।
पावन्ति सिन्दूर पुंडीर क्षीरी विजौराकदम्वाम्र औशाल्मली ॥
छायाघनी हेरिकै मेघमाला मनोवास लीन्ह्यों तहां आइकै ।
मोहै हिये माहिं भूले भ्रमै चारु कन्दर्पहू वाथलै जायकै ॥
भ्राजै झुकै पुष्प के भारसों पादपै तासु शोभा लखै भावहीं ।
मानो रमाकंत अभ्यर्थना अर्थ ठाढ़े सुखी शीशकानावहीं ॥

षटपद छन्द ।

डोलत अनिल झकोर सोहिं इमि तरु समुदाई ।
किसलय पाणि पसारि मनहुँ रहे प्रभुहि बुलाई ॥

जहँ तहँ शोभित सरसि भरे अति निर्मल वारी।
विविध रंग के विकस पंकरुह तासु मझारी॥
तिन्छवि निहारिइमि भावउर श्रीपतिकरआगमन।
जनुभेंटथारिसजिसजिधरयोविपिनदेवह्वैमगनमन॥
यहि प्रकार सब भाँति सोहिं सो विपिन सुहाई।
पर खगमृग पशुहीन कतहुँ कीटहु न दिखाई॥
चहूं ओर निस्तब्ध निरव सो लखि रघुनाथा।
पूंछेहु इमि मुनि पाहिं जोरि युग पंकज हाथा॥
यहपत्रपुष्पशोभितरुचिरमुनिगणखगमृगरहितवन।
केहिपुण्यशलिऋषिराज करहैआश्रमयहतपोधन॥
दो०—देववास उपयोगि यह, रुचिर विपिन मुनिराय।
तवयोवनिविरहिन्सरिस, कस उदास दर्शाय॥
यहसुनिकौशिकक्केवलहि, सानुज रघुवर काहिं।
लैनिज सँग गमनत भये, यक यकांत थल माहिं॥
सो०—तहँ यक रघुवर काहिं, शिलाखण्ड दिखराय कै।
कहमुनिवर यहिमाहिं, निजपद देहु छुवाय तुम॥
यह सुनि रमा निकेत, लीलामय सर्वज्ञ प्रभु।
पूछेहुँ विनय समेत, हेतु छुवावन शिलहिपद॥
तब कह मुनि हे तात, यह गौतमतिय है शिला।
तव पद पंकज तात, रज आशी वहुकाल ते॥
सो सुनि लखणसविस्मितगाता ❋ कहइमिजोरिपाणिजलजाता॥
हे गुरु प्रभु ह्वै क्षत्रि कुमारा ❋द्विजतियकहँकेहिविधिअनुसारा
चरण छुवान आयसु देहू ❋ है अवैध गुरु कारज येहू॥
तवऋषि कौशिक तपो निधाना ❋ कीन्ह अहल्या शाप वखाना॥
सो इतिहास श्रवण सुखकारी ❋ है इमि कथित पुराण मझारी॥

एक समय मधि विधि कर्तारा * सृष्ट वस्तु यावत संसार ॥
सवन हरण करि सुन्दरताई * यक अनुपम तियरच्योवनाई ॥
तेहि कामिनि दिशि हेरत जोई * सोहिय हारि विमोहित होई ॥
हल विहीनता वश तेहि नामू * परयोअहल्या यहि भवधामू ॥
सुरि आसुरी जिती जग नारी * भईं निष्प्रभ तेहिरूप अगारी ॥
सुरेशादि यत सुर समुदाई * लखिरमणीय रमणिसुगराई ॥
सबहिन सहित चाउ विधि पाहीं * कियर्यांचनतेहिकामिनिकाहीं॥
तब विधि कलह निवारण हेतू * तेहिकामिनि कइ यतन समेतू ॥
ऋषि गौतम के पाणि मझारा * सौंपेहिगच्छित धन अनुहारा ॥
विते वर्ष बहु तेहि तिय काहीं * लाये ऋषि गौतम विधि पाहीं ॥
अटल धीर्य मुनि केर निहारी * कमलासन प्रसन्न है भारी ॥

दो०–तेहिछविसदनीरमणिकर, प्रमुदित चित सउछाह ।
तिनिमुनिवरसँगकरदियो, श्रुति विधिवत उद्वाह ॥
परसाधनहितनिजकुरुचि, मदन मत्त सुरराय ।
मुनितियके छलखोजमहँ, रह्यो प्रवृत्त सदाय ॥

सो०–ऋषिवर गौतम नारि, एक दिवस रवि पर्व महँ ।
पुष्कर तीर्थ मझारि, रही गाहि श्रुचि नेमते ॥
तिन्हैं अकेलि निहारि, शक्र वक्र मति जाय ढिग ।
दृगन लाजजलवारि, लग्योकहनयहिविधवचन ॥

दिक्पाल छन्द ।

सुनु चतुर चारु लोचनि चंचल छटान वारी ।
रहियो सतर्क निर्मल सरवारि सो पियारी ॥
तेहि हेतु तासु मधि निज प्रति बिम्ब को निहारे ।

१–ब्रह्म वैवर्त पु० श्रीकृष्ण जन्मखण्ड ।

करिहैं प्रहार तौपै दृग शर प्रखर तिहारे ॥
हे मधुर हासिनी तुम खग खंज गर्व गंजन।
निजदृगनमाहिंअंजन केहि हित किहे हो रंजन ॥
शरतो सदाय सहजहि हैं प्राण नाश कारी।
पुनिगर किहो लेपन तिनपे कहा विचारी ॥
घन वेग युक्त तवदृग चञ्चल त्रिवेणि नाईं।
तेहि माहि स्वेतता जोइ सो सुरसरी सुहाई ॥
नीलांश भानु नन्दिनि सरस्वती पीलरंगा।
तेहि मधि पलक पवन सों पुनि पुनि उठततरंगा ॥
यहि सरित माहिंबूड़त उतरात मोर प्राना।
मोहि काह न उबरिहौ करि हृदयतरणि दाना ॥
तुमकाहिं क्षणक हेरे पूरत न मोर आशा।
प्रशमित न होयकिंचित जल सों प्रबल हुताशा ॥
मम दृष्टि के अगोचर जब रहति हौ पियारी।
तब सतत मै निहारत निजमुख मुकुट मझारी ॥
तेहि हेतु मम दृगनमधि अंकित है छवि तिहारी।
यहि भाँति सदा तव मुख लखि होतहौं सुखारी ॥
हे शरद इन्दु वदनी यह जानु सत्य वानी।
मृतु सोहिं मृत्यु शंका है अधिक दुःख दानी ॥
तव नयन युगल घातक तव केश पाश द्वारा।
फँसरी लगाय पीड़त नित मन सगल हमारा ॥
मम प्राण ग्रहणकरन कि यदि होयरुचितिहारी।
विषअमृतमिलितवचन सों कहि डारु एक वारी ॥
मै अवहिं पूर्ण करिहौं तव लालसा है जोई।
प्राणहुँ करत समर्पण नहिं आनि मोहिं कोई ॥

दो०—दीप तरल ज्योतिहीकर, है लालसी सदाय।
तासु आशापूरन निमित, प्रेमिकशलभ निकाय॥
निजहि आहुती दै क्षणक, तासु प्रकाश बढ़ाय।
स्वयं प्रफुल्लित चित्त सों, देत स्वप्राण गँवाय॥

सुनु छविसदनि प्रिये हम काहीं * ऋषि अभिशापकेरभयनाहीं॥
जो चहमलयज विपिननिवासा * सोकिकरतभुजगनकरत्रासा॥
नारि पुरुष योजना मझारा * निपट अजान अहै कर्तारा॥
तब तौ तुम सम सुन्दरि काहीं * अर्पेसि यक तापस करमाहीं॥
मृग लोचनि सुन मोरसिखावन * निजअमूल्ययोवनमनभांवन॥
जरठ निरस मुनि सेवा माहीं * वादिकरनसमचितकृतिनाहीं॥
मोहिं उर्वसी आदि सुर नारी * भजतिअतुलगुणशालिनिहारी
यह सब समुझि दया वश होई * पुरवहु मोरि आश तुमजोई॥
तौ शचि आदि स्वर्ग की नारी * ह्वैहैं सब अनुचरी तुम्हारी॥
इमि सुरपति मुख वचन प्रलापा * सुनिअतिरोषअहल्यहिव्यापा॥

दो०—अरुण वरणयुगनयन करि, कहन लगी इमिवैन।
शतशतधिकतोहिंसुराधम, महा निलज अघऐन॥
काह बृहस्पति के निकट, यहि शिक्षा तैं कीन।
रे पामर ह्वै अमरपति, अस मति तोर मलीन॥

सो०—नारि सृजन कर्तार, कीन्ह सृष्टि रक्षा निमित।
जगत भित्ति अनुहार, है शुचि दंपति धर्महीं॥

तेहि धर्महि छेदन चह जोई * तेहि मुख लखे महाअघ होई॥
कुपथ गामि कुलकामिनि काहीं * करहिंजोइजनत्रिभुवनमाहीं॥
सो हिंसक पशु सोहिं भयंकर * अहै शत्रु मानव समाज कर॥
कारण कुलटा तीय समाना * जगतअनर्थकारि नहिआना॥
जिमि सरि क्षीर सार सुरराई * सतत मलहु ते अधिक वसाई॥

तेहिविध-कोमल चित कुलनारी * भये कलुपिता जगत मझारी ॥
होइ पिशाचिहु ते अधिकाई * करहिं विषय दुर्घटन सदाई ॥
सुनु सुरेश उर कुमति निवारी * जानु मोहिंजननी अनुहारी ॥
मम अमर्ष ते अवशि तिहारा * ह्वै सकविभवनिमिषमहँछारा ॥
लाहु जोइ फल किहे दुराशा * तापै सुनुखल यक इतिहासा ॥

दो०–सतयुग महँ उत्तानपद, धर्म धुरीन नरेश ।
तिन प्रपौत्र की नन्दिनी, लहि पितुमातुनिदेश ॥
यमुना तट यक मनोरम, वन कानन महँ जाय ।
लगी करन अति उग्रतप, हरिपद ध्यान लगाय ॥

सो०–इमि कछुकाल सुरेश, गयेवीति तपकरत तेहि ।
यकदिन धरि द्विज वेश, धर्म परीक्षा हित गये ॥
तुम जस यहि क्षणमाहिं, घृणितवचनहमसोकह्यो ।
तिमिनृप नन्दिनि पाहिं, कह्यो धर्म छलछन्दयुत ॥

सो सुनि धर्महि नृपति कुमारी * समुझायहु स्वधर्म अनुहारी ॥
पर नहि धर्म सुन्यो कछु तासू * चह्यो बहुरिबल करनप्रकासू ॥
तब नृप कुँवरि प्रकोपि अपारा * क्षयहो क्षयहो कहित्रय वारा ॥
चौथ वार जब चह्यो उचारन *तबसयतनदिनमणिकियवारन॥
तेहि क्षण विष्णु महेश विधाता * आये तहां सशंकित गाता ॥
इमि धर्महि तिन सवन निहारा * यककलमात्रशिथिलतनुछारा ॥
धर्म दशा लखि शारँग पानी * नृपकुमारि प्रतिकहइमिवानी ॥
हे सति करिय रोष परिहारा * परम भक्त है धर्म हमारा ॥
लखहु धर्म विनु जगत मझारा * रह्यो छाय तमविषम अपारा ॥
जग मधि भये धर्म की हानी * जननकर्मफल विफलसयानी ॥
सुनि हरि वचन नरेश किशोरी * धर्महि कीन्ह सजीव वहोरी ॥
तव धरि तप्त स्वर्ण इव रूपा * पुनिरपि तुरत उठे यम भूपा ॥

तब नृप कुवँरि कह्यो हरि पाहीं * होई वचन मृषा मम नाहीं ॥
रोष विनश यहि समय मझारा * तीन वार मे शाप उचारा ॥
दो०—पूर्णकाय यहि काल जो, भयो लाहु यम काहिं ।
सो इमि पूरण कलायुत, रहि है सतयुग माहिं ॥
पर त्रेता मधि पाद त्रय, द्वापर मधि युग पाद ।
एक कला कलिकाल महँ, रही धर्म मर्याद ॥
सो०—वहुरि धर्म संचार, कलिअवसान के समयमहँ ।
रहिहै जगत मझार, षोडसांश यक कला कर ॥
पुनियहिभाँतिसदाय, वृद्ध क्षीणता धर्मकर ।
रहिहै त्रिभुवन राय, युगन युगनमम वचनवत ॥
सुनासीर सुनु तेज सती कर * दावानलहु ते अहै भयंकर ॥
यहिहित यदि चाहसि कुशलाई * तौ यहि थल ते जाहु पराई ॥
नत मैं वदति सत्य तव पाहीं * परिहौ दारुण संकट माहीं ॥
अस कहि ऋषिवर गौतम नारी * गईसिधारि निजकुटीमझारी ॥
तवनिज कुरुचिफलन छलद्वारा * कियसुरपतिउर माहिविचारा ॥
एक दिवस निज आश्रम माहीं * रहे ब्रह्म ऋषि गोतम नाहीं ॥
तव भल अवसर लखि सुरराई * धरि मुनिरूप कुटीमधि जाई ॥
काम विवश ह्वै वुद्धि विहीना * मुनिकामिनिहिप्रतारितकीन॥
दो०—पर जस निकस्यो कुटी ते, तस हेरेहु सुर राय ।
सरिसमज्जिकरसमिधिधृत, ऋषि गौतम रहे आय ॥
तिन्हे देखि दावा ग्रासित, कँपत शशक अनुहारि ।
भगनचह्यो परभय विवश, पगनहि उठ्योअगारि ॥
सो०—मुनिवर सुरपति काहिं, निजस्वरूप धारेनिरखि ।
तियहु काहिं कुटिमाहिं, लखितेहिक्षण अयवेशमहँ
तब मुनिवर तत काल, होइ रोषते अनल वत ।

कह इमि वचन कराल, रे अधमाधम अमरपति ॥
यहिं अघ ओघ ते कुटिल मलीना * ह्वै जा द्रुत तैं विषण विहीना ॥
जेहि शरीर सों तै कुचि चारी * कीन्हे परस सती मम नारी ॥
सो अघ पूरित काय तिहारा * होइ अवशि वन्धित रिपुद्वारा ॥
तीय चिह्न संयुत अनुसारा * होइ आजु ते कुमति तिहारा ॥
इमि इन्द्रहि करि शाप प्रदाना * मुनितियप्रतिकहतपोनिधाना ॥
रे पतिपितु कुल नाशनि नारी * दिहे धर्म मर्य्याद विगारी ॥
यहि हित तहू शिला ह्वै वामा * रहुरे परी तपति यहि ठामा ॥
आजु ते यह सुरम्य वन जोई * खग मृगादि पशुवर्जित होई ॥
दारुण शाप सुनत मुनि नारी * भईपतित पतिचरण मझारी ॥
वहुरि तजत लोचन जल धारा * जोरिपाणिइमि वचनउचारा ॥
प्रभु सर्वज्ञ शील गुण खानी * करियक्षमा निर्दोषिनिजानी ॥
यक तो सुरकुल कमल तुषारा * सर्वनाश खलकिहिसहमारा ॥

दो०—पुनि निज पद सेवकाइ ते, करि दूरित हम काहिं ।
परमारथ सों वंचिता, करियकृपाकरिनाहिं ॥
नारि जातिपैं सब दया, करत हेरि अपराध ।
लखहु तीय वाची पशुहि, वधतकबहुँनहिंव्याध ॥

सो०—धनमन तोहि सदाय, मै केवल प्रभुपद भजत ।
प्रभुहिसो विदित बनाय, काह गुप्त सर्वज्ञ सों ॥
सुनि गौतम तिय वानि, हृदय ध्यान धरि हेरेऊ ।
सकल मर्म जिय जानि, लगेकहननिजरोषतजि ॥

तव पतिव्रता धर्म हम काहीं * सुनियसुमुखिअविदितरहनाहीं
पर तवहुं परिहार तुम्हारा * है अनिवार शास्त्र अनुसारा ॥
परस्यो अपर पुरुष जेहि काहीं * सोसहवास योग तिय नाहीं ॥
जवलौं शुचि न होय तव देहू * तवलौं विधिवत विनुसन्देहू ॥

धर्म कर्म सहचरी हमारी * ह्वै सकिहौ न पूर्व अनुहारी ॥
अघकृति विकृति प्रकृति उपजाई * मानस कलुष प्रलोभ बढ़ाई ॥
तासन वचन केर सदुपाई * केवल अनुतापही सदाई ॥
यहिअभिशाप सोहिं तुमकाहीं * ऋषिमुनिसुरन सुलभजोइनाहीं
अज महेश वाँछित फल जोई * विनहि प्रयास लाहु सो होई ॥
जबहिं भुवनपति रमानिकेतू * भूरिभार भवहारण हेतू ॥

दो०—रामरूप ते प्रकटि हैं, दशरथ भवन मझार।
तब तिनपदरज परशसों, ह्वै हौ विगत विकार ॥
रामचरण तारण तरण, दरश भये तोहि लाहु।
पुनरपि मैं करिहौं ग्रहण, तुमकहँ सहित उछाहु ॥

सो०—इमि बुझाय ऋषिराय, गेसिधायहिम शैलदिशि।
खगमृगादि समुदाय, गे पराय तेहि विपिन ते ॥

होय शिला मुनि गौतम नारी * परीरहीं तेहिठाम मझारी ॥
अब मैं मूल कथा सुखदाई * वरणहु सुनियसुजनसमुदाई ॥
मुनिमहर्षि कौशिक मुखवानी * चिदानन्द जन मुदप्रदखानी ॥
जगतवन्द्य अघ ओघ नशावन * शिलहि छुवायदीन्हपदपावन॥
परसत पदरज भवरुजहारी * ततक्षण ऋषिवर गौतमनारी ॥
पूरुव सोहिं अधिक मनहारी * धारि चारु मूरति छविसारी ॥
भई ठाढि जिन छटा अपारा * गयहुछिटकसबविपिनमझारा ॥
तबकरिप्रणति कह्यो जगत्राता * मै महीप दशरथ सुत माता ॥
सुनि श्रुति मधुर मनोहर वानी * पूर्व सुरति तिनउर प्रकटानी ॥
दिव्य दृष्टि ते सो तेहि काला * इमि हेरेहु प्रभुरूप रसाला ॥
इन्द्र नीलमणि वरण सुचारू * लजत हेरि जेहि कोटिनमारू ॥
मधुर मन्द विहँसत वर आनन * शीशमुकुटमणिकुंडलकानन ॥

दो०—लसत चिह्न श्रीवत्स उर, जन रंजन भुज चारि।

गदा पद्म दर चक्र धृत, वेश मुनिन मनहारि ॥
प्रयत पीत कौशेय पट, शोभित सुन्दर काय ।
अंग अंग रँग रंग के, मणि आभरण सुहाय ॥
सो०—मुनि कामिनि छविव्रात, हेरि रुचिर हरि माधुरी ।
करि शतशतप्रणिपात, करनलगींयहिभाँतिनिति॥

हरिगीतिका छन्द ॥

हे चिदानन्द मुकुन्द हरि गोविन्द विभु कमलापते ।
सब वचन तुमहीं मधि बसत करुणानिधान महामते ॥
यंहितन वचन सन भुवनपति तव विमल गुणगणगावनों ।
इमि अहै जिमि मध्याह्न भानुहि दीपवारि दिखावनों ॥
भवरुज हरन जेहि जलज पदरज अज व्रषध्वज खोजही ।
सो दुरित दारणरेणु दासिहि लाहु भा प्रभु सहजही ॥
जे चरण ते तारण तरणि भइँ प्रकटि पावनि सुरसरी ।
तेहिपद पराग विरागप्रद नम शीश भूषण सादरी ॥
जेहि सुखद पद इन्दिरा उरकर आभरण त्रिभुवन धनी ।
तेहि दरश परशते विगत कलमष भयूँ मैं प्रभु पावनी ॥
जे विश्य विजयी पदकमल यक समय महँ भवभय हुते ।
आयत्त करि त्रिभुवन सुरन किय मुक्त असुरनशंक ते ॥
सो श्रीचरण जोइ कीन्ह मोहिं सामन्य शापसों मर्जिता ।
यहि माहिं लेश लखात नाहिं रमेश कोइ विचित्रता ॥
मैं कीन्ह पूरब जनम मधि जे कर्म करुणालय हरे ।
ताकर विषम फलरही भोगति दुसह भव फन्दन परे ॥
यहअवशि श्रुतिमधि भणिततुमही अहैं जग प्राणीजिते ।
बहुविध अवस्था माहिं राखहु तिनन कर्मन सूत्र ते ॥
यहिकेर केवल अर्थ इमि यह विश्व मायामय महा ।

यक मात्र तव इच्छाहि ते प्रभु सतत चालित ह्वै रहा ॥
पर सकल मनुजन करि प्रदान विवेक शक्ति दयामये ।
सबकाहिं निजनिज कर्मकर दायी प्रभो तुम करि दये ॥
सब क्रिया शक्ती शुभा शुभ तेहि भेद ज्ञानादिक जिते ।
प्रभु इन सबन की सृष्टि संतत होत केवल तुमहि ते ॥
यहिहित तुमहि हौं सब विषयकर मूल देव शिरोमनी ।
याही अहै श्रुति वचन कर गूढार्थ जेहि जानत गुनी ॥
पर अबुधगण भ्रमवश यथारथ भेद तासु न जानिकै ।
निजनिज कुकारज निचयकहँ प्रभुतव प्रणोदितमानिकै ॥
तृणपुंज छादित तिमिर संकुल कूपमधि निपतित सदा ।
निज पाप कृति ते भोगहीं तव विषमतर दण्डापदा ॥
सुख दुःख मय संसार कहँ लखि शंसयीजन जे अहैं ।
प्रभु के सुमंगल मय विषय महँ करत उर सन्देह हैं ॥
ते सूक्ष्मदृष्टि विहीन तत्त्वज्ञान विमुख अजान हैं ।
तेहि हेतु इमि शास्त्रन भणित संतत वदत धीमान हैं ॥
यह जगत केवल शुद्ध बुद्ध अपापविध होतै जोई ।
तौ भेद नहिं रहिजात किंचित सृष्टि स्रष्टा मधि कोई ॥
है पूर्णता यक मात्र सत्ता नाथही कर सर्वदा ।
ह्वै सकत नहिं सब जीवगण तेहि केर अधिकारी कदा ॥
पर जगत जनन अभाव मोचन निमित तुम कमलानने ।
कीन्ह्यो सृजन शुचि सरल सुन्दर विविध रूप सुहावने ॥
जेहि मनन धारण करन सन जगजन विनाहि प्रयासते ।
निज हिताहित करि चिन्तवन तरिजाहि घन भवपाशते ॥
हे कृपावंत अनंत अंतन तव कृपाकर यहि थले ।
तुम ज्ञान पुष्टि निमित्त निजप्रति भक्ति प्रकटन हितभले ॥

युग युगन मधि जन बोधगम्य सुचारु सगुण स्वरूपते।
निज कहँकरत अवतरण क्षितिमहँ विश्वभरण रमापते॥
अब मम सरिस पातकीगणके प्राण हेतु भयापहे।
त्रिभुवन विमोहन रामरूप ते विचरि तुम क्षितिमधिरहे॥
हे प्रभो तुम निर्लिप्त ज्ञान स्वरूप विश्वम्भरणहौ।
जगदादि कारण करण असरण शरण तारण तरणहौ॥
मायाहि सो संस्रवभये तव सगुणमूर्ति सुहाविनी।
जगमधि प्रकाशित ह्वै करतयहि अवनिकहँपरिपाविनी॥
हे नाथ तव माया द्विविध विद्या अविद्या बुध कहैं।
तिन मधि अविद्या वर्ति जीव प्रवृत्तिपथ मधि रत रहैं॥
पर विशुचि विद्यावर्ति प्राणि निवृत्त पथ पग धारिकै।
लहि भक्तितव पुनि लहत मोक्ष कुवास नाहि निवारिकै॥

दो०—वार वार पद कमल महँ, नाथ विनय यह मोरि।
लहौं जन्म जेहि योनिमहँ, रहै भक्ति दृढ़ तोरि॥
इमि नुति करि मुनि कामिनी, प्रेम प्रफुल्लितगात।
निमिषनिवारि निहारिरहि, रामवदनजलजात॥

सो०—इन्द्रादिक सुरवृन्द, यह बिचित्र लीला निरखि।
दै दुन्दुभि सानन्द, वर्षें सुमन मुकुन्द पै॥

तुषाराद्रिथित तपो निधाना * ऋषि सत्तम गौतममतिमाना॥
निज भामिनी केर उद्धारा * अविकलजानियोगवलद्वारा॥
निजशुचि आश्रम मधि पुनराई * आये सोइ समय हर्षाई॥
कौशिक इंगित सों रघुनन्दन * सानुज किय गौतमपदवंदन॥
मुनि नारिहु पतिकाहि निहारी * गिरिंपदन तनु दशाविसारी॥
अधोवदन पुनि पुलकि शरीरा * ठिठुकि ठाढ़ि ढाढ़तदृग नीरा॥
लहि गौतम प्रभु दरश ललामा * करिमनहीं मनशततप्रणामा॥

ह्वै मुद मगन प्रेम रस सानी ❋ गदगदगिरा कह्योइमिवानी ॥
प्रभु मैं कहां क्षुद्र यक प्रानी ❋ कहांविश्वपति तुममुदखानी ॥
केवल जगशिख हेतु कृपाला ❋ ममवन्दना किहौ यहिकाला ॥

दो०—प्रथमधर्म व्याख्याहिकरि, पुनि कारज सो ताहि ।
दर्शावन हित अवतरहु, नाथ युगन युग माहि ॥
श्रीपद रजते ममतियहि, कीन्ह्यो विगत विकार ।
ताहि परसि अब महूँ प्रभु, ह्वैहौं धन्य अपार ॥

यह तव रीति सदा चलि आई ❋ प्रति पालहु जन वचन गुसाई ॥
सो विश्वास हृदय मधि आनी ❋ कहेहुँतियहि शापांतक वानी ॥
अव यह विनय जोरि युगहाथा ❋ यकक्षणहोहुअतिथिममनाथा ॥
अस कहि नारि सहित मुनिराई ❋ सुन्दर रुचिर फूल फल लाई ॥
कौशिक युत सानुज प्रभु केरा ❋ किय पूजन करिभक्ति घनेरा ॥
पुनि जब कौशिक तपो निकेतू ❋ चह्यो चलन दोउवन्धु समेतू ॥
तब तजिधीर रुदत मुनि नारी ❋ गिरीं रामपद जलजमझारी ॥
सो लखि गाधि तनय इमि कहेऊ ❋ सति जोवस्तुलाहु तोहिभयऊ ॥
तुलना तासु नाहिं जगमाहीं ❋ तो सम धन्य आजुजगनाहीं ॥
गाय सुयशतव जगत मझारी ❋ ह्वैहैं प्रयत सकल नर नारी ॥
अव सानन्द चित्त मन लाई ❋ करहु सवतपतिपद सेवकाई ॥
अस कहि लै विदाय ऋषिराई ❋ तेहि आश्रम ते वाहर आई ॥

दो०—निजसहगामीऋषिन सन, मिलि दोउ वन्धसमेत ।
मिथिलादिशिकीन्ह्योगमन, ख्यातकुशिककुलकेत ॥

सो०—जोइरज भवरुजहारि, जेहिनितभजअजजलजभव ।
रिधिसिधि सम्पतिचारि, लाहुजासुसुमिरन किहे ॥
कृत्तिवास करि आश, सोइ पद पंकज रज विरज ।
वरणेहु सहित हुलास, रुचिर अहल्याचरित यह ॥

एकादशसततम सर्ग ॥ १११ ॥

नाविक प्रसङ्ग ॥

सो०–यह जानत सब काहु, वारि क्षार मय उदधिकर ।
करत मिष्टता लाहु, वारिदही के संग मिलि ॥
धूलि करण समुदाय, गलिनगलिनवनभवनमधि।
हम सब जनन सदाय, होत रहत पद दलितही ॥
पर सोई पग धूरि, चिंन्तामणि पद परस ते ।
चिन्तामणि हु ते भूरि, कस प्रभाव दर्शायऊ ॥
सुनियसुजनधरिध्यान, तिन भवतारन पदनकर ।
यहि थल करत वखान, यकरहस्यमयशुचिकथा ॥
दो०–मुनिनसहितकछुदूरिचलि, निखिल चराचर राय ।
देखेहु सुरधुनि की छटा, रह्यो सुचारु सुहाय ॥

छप्पै ॥

विमल प्रलम्ब विशाल प्रवाहित गंगकेर जल ।
भानु किरण ते रह्यो दमकि यहिभाँति झलामल ॥
मनहु ज्योति मय रुचिर रजत मेखला पुनीता ।
किहे अहैं परिधान सुमुखि मेदिनी सप्रीता ॥
जबगयेसकलजननिकटमहँयहिप्रकारतबलखिपरी ।
जनुशम्भुभामिनी वेशमहँ राजतिहैंशुचिसुरसुरी ॥
विविध वरण सुमफुलित विटप संयुत युग नीरा ।
सो सुन्दर युगपाणि खचित मणि माणिक हीरा ॥
ललित सघन शैवाल तासु वन कुंचित कुण्डल ।
अंशुमालि प्रतिविम्ब तेजमय तिन मुख मण्डल ॥

यौवनोच्छ्वासवीचीनिचयजलप्रवाहमृदुअसफुरन ।
आवर्तपूर्ण सहपुन तिनकारु खचित उज्वल वसन ॥
पुंज पुंज वर राज हंस तिन मौक्तिकहारा ।
वर्ण वर्ण के कमल कर्ण भूषण अनुहारा ॥
चित्रित रुचिर पताक सज्जिता तरि समुदाई ।
इत उत गमनत तासु मंजु मेखला सुहाई ॥
अनवरतकलकलाध्वनिसुनेयहिविधहोतप्रतीतउर ।
जनुमधुरशब्दसोंगाइरहिं शशिशेखरकरगुणनिकर ॥

दो०—करि प्रणाम देवापगहि, ऋषि कौशिक तपखानि ।
रघुनन्दन प्रति नेह युत, कहन लगे इमि वानि ॥
तात येहि हैं त्रियगा, जिनहिं पुराण मझारि ।
अहैभणित तारणतरणि, कारण जलनिधि वारि ॥

सो०—सुरसरि महिमा पूति, को समर्थ हैं कथन महँ ।
इन कर विमल विभूति, भूतनाथ केवल विदित ॥
इनहि शीशपै धारि, गंगाधर के नाम सों ।
भये ख्यात त्रिपुरारि, करहु प्रणति इनकहँसुवन ॥

सुनि गुरु वचन लोक शिखहेतू * निखिलविश्वपतिरमानिकेतू ॥
जोरि सभक्ति पाणि जलजाता * निजआंघ्रिजहिकीन्हप्रणिपाता
यक कौतुक मय चरित पुनीता * अबयहि थल वर्णतसह प्रीता ॥
राम चरण पंकज अघहारी * परसत एक शिला भइ नारी ॥
यह सम्वाद तडित की नाई * गयहु फैलिक्षण मधिचहुँघाई ॥
हेतु तासु प्रभुजहि क्षणमाहीं * कियविमुक्तमुनि कामिनिकाहीं
तेहिक्षणलकडिहार वहुतेहिवन * तरु पै चढ़े छेदि रहे इन्धन ॥

१—सर्व प्रथम जलकी सृष्टि हुई फिर उसीसे ब्रह्मांड का निर्माण हुवा "अपएवसमर्जा दौ तासु वीज मवा सृजव (मनुस) कारण समुद्र जल से यही तत्पर्य्य है ॥

तिन सहसा यहिभाँति निहारा * यक श्यामल सुन्दरसुकुमारा ॥
पग छुवाय दिय शिला मझारी * सो तुरतहि वनगइ यक नारी ॥
ते लखतहि ह्वै चकित महाना * यहसिद्धांत सकलमिलिठाना ॥

दो०—इनके पद छुइ जाइ है, शिला काठ जेहि माहिं ।
सोइ तीय वनि जाइहै, यहि मधि शंसय नाहिं ॥
वहुरि वुद्धि विस्तारि कै, यहिविध कीन्ह विचार ।
यक यक तियके भरणमहँ, नाकन प्राण हमार ॥

छेदित काठ तीय ह्वै जोई * परहिं गरे तब का गति होई ॥
अस विचारि इंधमी समुदाई * भागे संचित काठ वहाई ॥
तिनमधि दुइ यक हृदय अधीरा * द्रुत पद जाय सुरसरी तीरा ॥
कहन लगे केवटन पुकारी * देहु हमहि द्रुतपार उतारी ॥
जो तुम सबहु चहत कुशलाई * आशु घाट तजि जाहु पराई ॥
सुन्दर श्याम गौर युग छोरा * लाय रह्योसँग गाधि किशोरा ॥
दोउमधि श्यामल शिशुकरभाई * कछु करतूति वरणि नहिजाई ॥
शिला काठ आदिक मधि तासू * पद छुइजात होततिय आशू ॥
यहिहितजोनिजनिज भलचहहू * लै लै तरी अनत चलि जाहू ॥
लकडिहार मुखसुनि इमि वानी * सकल केवटन वुधि चकरानी ॥

दो०—विचलित चित नाविक निकर, काष्ट छेदकन काहिं ।
अरुआगतसवपथिककहँ, द्रुत चढ़ाय तरि माहिं ॥
तरी दण्ड गहिगहिसकल, निजनिज वल अनुसार ।
खेवन लागे वेग सों, नावनः गंग मझार ॥

एकहु तरितट रहत न भयऊ * मनुज विहीन घाट ह्वै गयऊ ॥
सोइक्षण माहिं कुशिककुल केतू * राम लखण मुनिवृन्द समेतू ॥
तट पै पहुँचि लख्यो तप धामा * एकहु तरणिनाहि तेहिठामा ॥
दूरि मांहि यक परी दिखाई * मध्य गंग रहि वेग ते जाई ॥

तेहि नाविकहि टेरि मुनिराऊ * कह्यो फेरितरि द्रुत लै आऊ ॥
सुनि सो वैन हेरि मुनि धाँई * गे केवट के प्राण झुराई ॥
ह्वै भय भीत जोरि दोउ पानी * गिड़गिड़ायकहयहिविधवानी ॥
आजु मोहि मुनि दैव निहोरे * करहु क्षमा विनवहुँ करजोरे ॥
आयहु काल्हि नाथ करि नेहू * देव पार करि विनु सन्देहू ॥
अस कहि भाग वेग सों लैतरि * सोलखिकह्योमुनीशरोषकरि ॥

दो०—रे विमूढ़ जानसि न मोहि, करत कपट चतुराय ।
करिहुँ अवहिशठभस्मतोहि, नतुतरिलाउ फिराय ॥
कह केवट तुम काहिं मुनि, मैं जानत भलिभाँति ।
भसम करन महँ जगत मधि, तव पटुताहै ख्याति ॥

काहू केर करन उपकारा * लखानाहिं तवकोष्टि मझारा ॥
हरिश्चन्द्र पै करि तुम माखा * कोई गति उठाय नहिं राखा ॥
दैव वाम वश मोपै आजू * दया दृष्टि तवभइ मुनिराजू ॥
पर मोहि दीन जानि ऋषिराई * करिय कृपा क्षमि मूढ़ ढिठाई ॥
तजि यहि टूटि फूटि तरिकाहीं * मम जीविका आन कछुनाहीं ॥
जो जाई यह कवहु विलाई * तव मम होई कौन उपाई ॥
सुनि अटपट केवट मुख वैना * कह्योविहँसिकौशिक तपऐना ॥
रे विमूढ़ कित है चित तोरा * मनथिरकरिनिहारुयहिओरा ॥
आजु देव दुर्लभ धन जोई * तव निमित्त मैं लायहुँ सोई ॥
जासों जन्म जन्म कर भूरी * तव अभाव ह्वै है सब दूरी ॥
पुनि तैं उच्च धनद पद काहीं * गनि है तुच्छ मृषा यह नाहीं ॥
यह सुनि कर्णधार इमि कहेऊ * जोअस कृपा नाथकर अहेऊ ॥

दो०—तौ तजि कार कुमार कहँ, जो वड़ अनरथ कारि ।
तुमहिं अपर सहचर सहित, दैहौं पार उतारि ॥
पर निज ढिग सों प्रथमही, टारि देहु तेहि काहिं ।

तौ निर्भय चित तरणि मैं, लै आवहुँ तवपाहिं ॥
सो०-यहसुनि कह मुनिराय, कौन दोष इन मधि अहै ।
जासों तैं भय खाय, इनहि न पार उतारि है ॥
कर्णधार कह मोहिं, जानिपरत गुण दोष नहिं ।
पर इनके पद सोहिं, दैव वचवहि सर्वदा ॥
देखा सुना भला अस कोई * शिशुपद छुयेशिला तियहोई ॥
अति जीरण यह तरणिहमारी * कवहुँक जो वनि जइहै नारी ॥
तौ करिकै मैं कौन कबारू * पोषिहौं मुनि आपनपरिवारू ॥
यहसुनिविहँसिगाधि सुतकहेऊ * उपलरचित तवतरणिनअहेऊ ॥
पुनि केहि हेत रहे भय खाई * कह केवट यह सत्य गुसांई ॥
पर काठहु पषाण की नाईं * निरस कठोर वस्तु दर्शाई ॥
यह सब विध विश्वास हमारा * जड़ पदार्थ जतजगत मझारा ॥
इनके गूढ़ कुहक बल सोहीं * चरण छुवावत चेतन होहीं ॥
कह मुनि सुनु जड़ताय निवारी * वह जो शिला गई वनि नारी ॥
सो गौतम तिय सती सयानी * लहि पतिशाप भई पाषानी ॥
दो०-अब नृपसुत पद परस सों, भई नारि पुनराय ।
यहि मधि तव भय केरकोइ, हेतु न परत लखाय ॥
कह केवट वलिहारि मुनि, निपटअबुझहमकाहि ।
जेहिविध तुमसमुझतअहौ, तस अवोधहौं नाहि ॥
सो०-कायहतरणिहमारि, मुनि धरणी नहि ह्वैसकति ।
कोइयकमुनिगुणधारि, कीन्हहोयतरुनिजतियहि ॥
तेहि तरु काठ ते जोय, वनी होय यह मम तरी ।
इनके पदरज सोय, शाप मुक्त विधि करि रखा ॥
हे मुनिवर केहि हेतु हमारा * चाहत करन सर्व संहारा ॥
हौं दरिद्र यह तरिहि गुसाँई * ममलरिकनकर जियनउपाई ॥

याहि विलाने निपट अजाना * मरिहैं भूखन मम संताना ॥
मोहि उछिन्न करिकै मुनिराजू * होई सिद्ध कौन तवकाजू ॥
कह मुनीश सुनु शंक विहाई * इनहुँ एक नाविक तुवनाई ॥
निज व्यंवसापि केर अपकारा * यह करिहै नहि कोइ प्रकारा ॥
यह सुनि कर्णधार मुखफेरी * तीव्र दृष्टि सों प्रभुदिशि हेरी ॥
भयो छकित दृग टरहिं न टारे * पुनिमुनिप्रति इमिवचनउचारे ॥
का सांचहु यह केवट अहहीं * कौने ग्राम माहिं यह रहहीं ॥
हम न दीख अस मूरति चारू * केहि नदि तट इन केर कवारू ॥

दो०—कह मुनीश कैवर्तही[1], सत्य जानु इनकाहि ।
करहि काज यह सर्वदा, भव सरिता तट माहिं ॥
परोपार तेहि सरितकर, अहै परम सुखकारि ।
तेहिसुखभोगके सकलजन, है समान अधिकारि ॥

मानु त्याजि हठ वचन हमारा * करु इनकाहिं सुरसरी पारा ॥
पेऊ तोहि भव सरित उतारी * करिहैं अतुलविभवअधिकारा ॥
यह सुनि केवट हिय हर्षाई * तरणि घुमाय तीर पै लाई ॥
प्रभुसन सहित नेह इमि कहेऊ * मुनिजोकहत सुनतसोअहेऊ ॥
सांचहु साँच भाय तुम कहहू * का मम अन्तरंग[2] मम अहहू ॥
कितक दूरि भव नदि कत पाटू * अहैं कितेक तासु मधि घाटू ॥
रहत कितक केवट तेहि ठाई * लेत अहौ तुम कत उतराई ॥
प्रकृत सरलता युत तेहि वानी * सुनि विहँसे प्रभुशारँगपानी ॥
तव मुनिवर तासन इमि कहेऊ * सो भव नदी निकटही अहेऊ ॥
वने घाटदश[3] तासु मझारा * नाविकयहियकश्यामकुमारा ॥

१—के=जलमें + वर्त=जो रहता है अर्थात मल्लाह; द्वितीयार्थ नारायण ॥ २—अन्तर—अंग=अन्तरस्थित आत्मा; द्वितीयार्थ कुटुम्बी ॥ ३—धृति, क्षमा, दम, अस्तेय इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य व अक्रोध; दशकं धर्म लक्षणम् । (मनु)

दो०—कह केवट यहतो अवहिं, हैं लरिका मुनि राज।
इनके हुति तेहि घाट पै, करत कौन है काज॥
कह मुनि तेतिस कोटिहैं, इनके भृत्य निकाय।
ते इनके आदेश वत, कारज करत सदाय॥
कहनाविक तवकरिचुके, मोहिं भव सरिता पार।
इनकर गातहि कहिरहा, हैं धनि दास कुमार॥

भव नदि केर पार उतराई * कितकलेत सो जानि नजाई॥
वड़ दरिद्र मैं हों मुनिराई * कहँ ते देव अधिक धन लाई॥
कह मुनिचिंत न करु उर माहीं * यह उतराइ लेत धन नाहीं॥
इनके उतराई कर मूला * है इन कर पद भक्ति अतूला॥
सुनिमुनिवचनभिझकिसोकहेऊ * धनिधनिभले चतुरतुमअहेऊ॥
घूमि घुमाय मोहि भट काई * तेहि चरण न कीवात चलाई॥
मैं भूलिहों नाहि मुनि राजू * गिरै दैव उन पग पै गाजू॥
ताकर चाह अहै मोहिं नाहीं * तुमहि ताहिराखहु ढिगमाहीं॥
भवनदि उतरन लोभ दिखाई * विलवनमोहिचहकरिचतुराई॥
केहिहित तिनसोउतर नहिजाहू * कस पद लै इतउत भट काहू॥
कहमुनि यह मुदप्रद धन जोई * है ममगृह कर सम्पति सोई॥
जवहि होइमम चित मधि चाहू * तवहि उठाउव तिन सो लाहू॥

दो०—तैं सुर दुर्लभ पाय धन, काहे रहे गवाँय।
भवनदिउतरनकातरणि, यहि पदकंज सदाय॥
यहसुनि हसिकेवट कह्यो, यदि इनके पद नाव।
तौ इनही पै चढ़ि न कस, उतरि सुरसरी जाव॥

सो०—घटकी नाव विहाय, वादिझगरि हमसो रह्यो।
कह्यो वहुरि मुनिराय, तैंअतिशय निर्वोधहसि॥

१—भक्त श्रेष्ठ राजादशरथका यह विशेषण समीचीन है, दासका अर्थ कैवर्तभी है॥

यह सरिता तव न्याय, जगत जननके लाभहित ।
इनहि पदन प्रकटाय, तवसन्मुख मधिवहिरहीं ॥
यह निज त्यक्त पदारथ काहीं * पुनरपि ग्रहण करत हैं नाहीं ॥
यहजो करहिं यहि नदि केवटाई * तब होई तुव कौन उपाई ॥
यह सुनि केवट हृदय मझारा * क्षणकशोचिइमिवचनउचारा ॥
तुम तो मुनि कहँ ते यहि वेरा * फेंटि बाँधि मम किहौ पछेरा ॥
अब इन कहँ मैं कंध चढ़ाई * देव उतारि गंग मुनि राई ॥
यहि विहाय निज वचन उपाई * कोइ आन नहि देत दिखाई ॥
कह्योविहँसि मुनि कातोहिंकाहीं * नारि वनन कर डर है नाहीं ॥
यहसुनिसचकित नाविक कहेऊ * यहतो साँच कहत तुम अहेऊ ॥
पर कोइ यतन देखियत नाहीं * अच्छाचलियचढियतरिमाहीं ॥
नाव तौ विलय गई मम आजू * खैहौं भीख माँगि मुनि राजू ॥
तव विहँसत सबन्धु रघुनाथा * चढ़नचह्योतरिजसमुनिसाथा ॥
यकदिशि ते तेहि समयमझारा * दीन्ह सुनाय तीय चिवकारा ॥

दो०—मुखघुमाय तवयंहलख्यो, तेहि नाविक की नारि ।
धावत आवति शिरधुनत, कहतपतिहि इमिवारि ॥
रे नठिया सठियाय कै, वटिया मोर न पार ।
यहघटिया मुनिकरनचह, मटिया मेट हमार ॥

सो०—आध पेट नित खाय, मम छौना तौ मरि रहे ।
तोहिं बुढ़भस बौराय, सूझी दूजी तीयकी ॥
यह मन माहि विचारु, तरणी जो घरणी भई ।
तौ करि कौन कवारु, दुइ तिरिया तैं पोषिहै ॥

प्रभु कैवर्त दम्पती केरी * अकपट भाव स्वभविक हेरी ॥
तिन पै करन कृपा चित चहेऊ * तब नाविकनी प्रति इमि कहेऊ ॥

सुनु केवट तियतै विनु दोषू ❋ करत कांत[1]पै केहि हित रोषू ॥
करु न चिंत हम रहव अपारा[2] ❋ कलह प्रकृ[3]तगत नाहि हमारा ॥
पार उतरि मम सब जन जाहीं ❋ हैं संतोष मोहिं यहि माहीं ॥
करत अहों मै अनत पयाना ❋ मम सुपास सब ठाम समा[4]ना ॥
प्रभुमुख फुरित सुधा समवानी ❋ सुन्दरमृदुल श्रवणसुखदानी ॥
कर्णधार तिय कर्ण मझारी ❋ परवहिसिहिरिउठी यक वारी ॥
प्रभुदिशि लख्यो फेरि युगनैना ❋ रहे अटकि दृग फेरे फिरैंना ॥
पुनि विस्मित चित केवट नारी ❋ प्रभुविभूतियहि भांतिनिहारी ॥

दो०—ज्वलत धरणिधर सरिसयक, तेज शिखा सुविशाल ।
परम्परा सों दशहु दिशि, व्यापि रह्यो तेहि काल ॥

सुगीती छन्द ॥

लखतहि लखतसो तेजरविशशि सरिसअतुलित प्रभामय ।
ह्वैगयो यकमन हरण सुन्दर भवन मण्डित मणिनिचय ॥
तेहि चतुर्दिश मधिलसत नन्दन विपिन इवउपवन सघन ।
रहेवोलि तरुशाखान पै अति मधुर ध्वनिसन विहगगन ॥
तेहि निम्न महँ निर्मल सलिल परिपूर शोभित सरोवर ।
रँगरंग के तेहिमाहिं विकसे कुमुद उत्पल मनोहर ॥
शतखम्भ संयुत तुंग सौधके चतुर्दिशि मर्मर रचित ।
दरसात सोपानावली लहरात मानहुँ सुरसरित ॥
प्राचीर सबअसफटिक मरकत खचित चित्रितविविधखग ।

१—कान्त=भर्ता; द्वितीयार्थ विष्णु। २—अर्थात पार न उतारूंगा; अथवा मै अपार अनंतहीं रहूंगा। ३—ईश्वर सृष्ट यावतीय पदार्थ का नाम प्रकृति है; माया शक्ति कोभी प्रकृति कहते हैं समुदाय ब्रह्मांड माया शक्ति का विकाश है और उसमें कहीं किसी प्रकार का विशंखला वा नियमवहिभूत क्रिया असम्भव है; एक अर्थयह हुवा द्वितीयार्थ यह है कि वृथा लड़ाई झगड़ा लगाना हमारे स्वभाव विरुद्ध है! ४—अर्थात मै सम्पति शाली हूं सब जगह हमारा आदर है; द्वितीयार्थ सर्व स्थान हमारा अधिकार है ॥

कुट्टिम गवाक्षन माहि विजडित जगमगत बहुभाँतिनग ॥
प्रति द्वार द्वारन लटकि रहे मुक्तान झालरि मनहरण ।
विस्तृत ललित सारे प्रकोष्टन मधि बिछे वर अस्तरण ॥
सुविचित्र मध्य प्रकोष्ट महँ गज दन्तमय पर्य्यङ्क पर ।
नव नीतहू ते मृदुल सज्जित पट्ट निर्मित सेजवर ॥
शोभित सकल गृह माहिं पांतिन पांति दीपक रत्नमय ।
सज्जितयथावतप्रति भवन मधि जगतयावतनिधिनिचय ॥
भूषित रुचिर वसनाभरण बहु दास दासी मगनमन ।
इत उतहिंनिजनिज काज मधिरत करिरहे गमनागमन ॥
निज स्वामि कहँ अवलोकेऊ पहिरे नृपोपम परिच्छद ।
राजत सभामधि तेहि चतुर्दिशि लसत बहुवर सभासद ॥
निज कहँ लखेहु भूषिता सुन्दर पट मणिन आभरणसन ।
बैठी कनक पर्य्यंक पै सेवकाइ करि रहिं दासि गन ॥
अनुपम वसन भूषण विभूषित तासु यत तनुजन तनय ।
तेहि सामुहे क्रीड़त सकल पुर शिशुन सँग हर्षित हृदय ॥
कैवर्ततिय इमिहेरि माया होय विस्मित भय विकल ।
उरमाहिं शोच्यो यह सकल छल कुशल है यककुहकदल ॥
पुनिपलकझपतहि इमि लख्यो सो भवन वैभव कछुनतहँ ।
दोउ कुवँर विहँसत वदन मुनि सँग ठाढ़ सरिता तीरमहँ ॥
तबअतिचकित भयग्रस्त ह्वै निज स्वामि सनकहइमि वचन ।
अबकाह हेरत अहहु लखियत नाहि यहिक्षणभल लछन ॥
कह छोरिहैं कोइ भांति पीछा नाहिं बिनु उतरे सरित ।
इननटखटन सन वचनहित यह यतन अब तैं करुतुरित ॥
दो०—कुहकीकार कुमार कर, पगरज झारु पखारु ।
पुनि कोरवा महँ लै तिन्है, नाव माहि बैठारु ॥

यह सुनि तियहिप्रशंसिकह, केवट इमि प्रभुसोहिं।
मानिलेहु जो तिय कहति, तबहिं उतारब तोहिं॥
सो०—कह्यो विहसि रघुराय, जेहि मधि रहै न शंकतव।
सो करि वेगि उपाय, दे उतारि मोहि सुरसरी॥
तब केवट भरि कठवति वारी ❋ लाय राखि रघुराजअगारी॥
मंजु कंजपद भवभय तारन ❋ लग्योदोउ करसोंहिपखारन॥
सोलखि कौशिकादिमुनिभारी ❋ कहनलगे इमि हृदयमभारी॥
धन्य धन्य केवट तोहिं काहीं ❋ तोसम सुकृतिआनजगनाहीं॥
हम सबकर जपतप आचारा ❋ अहै वादि शत शत धिक्कारा॥
केहि कृति तोहि लाहु यहभोगू ❋ हम सब तब पदक्षालनयोगू॥
भूरि भाग केवट कर देखी ❋ है अजादिसुरचकितविशेखी॥
सहमि सकल इमि वचन उचारा ❋ धन्य तहीं केवट संसारा॥
धोवत केवट पदन मभारी ❋ ध्वज वज्रांकुश चिह्ननिहारी॥
है अति चकित टेरि तिय काहीं ❋ कह्यो देखु इन पायन माहीं॥
दो०—वने चित्र केतक अहैं, जानिपर्यो अब मोहिं।
इनहीं के छुवतहि तुरत, शिला काठ तिय होहिं॥
चिह्न हेरि कैवर्तिनी, कह्या चिंत कछु नाहिं।
तैं इन कहँ वैठाय दे, नीकी विध तरिमाहिं॥
मैं इनके दोऊ पद काहीं ❋ रहब धरे निज कोरवा माहीं॥
यासन पगन वरणि छुइ जाई ❋ यह उपाय केवट मन भाई॥
तब प्रभु कहँ लै क्रोड़ मभारा ❋ दियतरिपै यकदिशि वैठारी॥
वैठि सामुहे केवट नारा ❋ प्रभुदियतेहिदिशिचरणपसारी
नाविक तिय प्रभुपद अघहारी ❋ वैठ सतर्क अंकमधि धारी॥
प्रभुके उभय ओर सानन्दा ❋ बैठे लखण कुशिककुल चन्दा॥
अपर नाविकन जब प्रभुकाहीं ❋ हेरेहु वैठ चुके तरि माहीं॥

तबनिजनिजतरियहिदिशिलाये * निर्भयचित सबमुनिनचढ़ाये ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

भव जलधि नाविक काहिं नाविक लै चलाय तरी दिये ।
लखिअमरगणतेहि करिसराहन गगन ते सुमझरि किये ॥
सुरसरी मधि नर हरीकर इमि छवि निरखि मन मोहई ।
जनु क्षीर सागर माहिं सुन्दर नील भूधर सोहई ॥
कछु ऊर्द्ध उत्थित रक्त प्रभु के पाद तल मन भावने ।
विकसितकमलवतमुनिनमन अलिकाहिं लागि लुभावने ॥
श्री पदनपै इमि परत क्षेपणि क्षिप्त सलिल पुनीतही ।
जनु करहि प्रक्षालन प्रभू पद सुर धुनी सह प्रीतिही ॥
निज जीव रक्षा कारिनी काकर समादर करि रहीं ।
यहि लखनहित जनुमीनगण शिर तोलिइतउतविचरहीं ॥
प्रति विम्ब प्रभु पद अम्बु मधि परि हेरि इमि उर भावहीं ।
श्री पाद परसननिमितपाणि पसारि जनु सुरसरि रहीं ॥

दो०—कछु क्षण महँ वहियार मधि, पहुँचीसबतरिजाय ।
तब केवटनी अंक ते, खैंचि चरण रघुराय ॥
धरि तरिपै पद भूमिपै, परे कूदि मुसकात ।
सो लखि केवट शीशपै, भयो मनहु पविपात ॥

सो०—प्रभुपद तरणि मझार, परसत लखि कैवर्तिनी ।
करि अति हाहा कार,कहमुनिप्रतियहिविधवचन ॥

सुनु छलिया घटियातोहि काहीं * जानत कौन नाहिंजगमाहीं ॥
तार डीठि जेहि ऊपर परही * कोटिन यतन करे न उबरही ॥
मो समान दुखियाहि विलाई * कहँ को मिली तोहिं ठकुराई ॥
सुनि केवट तिय की कटु वानी * हँसतमोरिमुखमुनिगुणखानी॥

तब कौशिक प्रति कह रघुराई ❋ चलिय बढ़त रवितापु गुसाई ॥
यह सुनि तहँ ते तपो निधाना ❋ सकलमुनिनयुतकीन्हपयाना ॥
तजितरि आशसहिततिय केवट ❋ रुदनलग्योशिरधुनतसरिततट॥
केहि विध बनीतरणियह नारी ❋ सो देखन हित केवट भारी ॥
यक यक करितेहि थलमहँआई ❋ लखन लगेसब तरणिकिघाई ॥
लखतहि लखततरणि यकवारी ❋ गई बैठ सुरसरी मझारी ॥

दो०–सो लखि जानेहुकेवटन, निजनिज हृदयमझारि ।
जलते कढ़ि अइहै अवहिं, ह्वै तरि सूघर नारि ॥
जब कछु क्षणबीतत भयो, तब दुइ यक जलमाहिं ।
पैठि परसि तरि टेरि कह, नाव बिलानी नाहिं ॥

सो०–यहसुनिबहुतकधाय, प्रविशिसरितमधितरणिकहँ ।
खैंचि तीर पै लाय, हेरि सबन तरि स्वर्णकी ॥
विस्मित भयो महान, सो विलोकि तरणीपती ।
भयहु विगत अज्ञान, उघरे हियके ज्ञान पट ॥

तब तियसन इमिभाखत भयऊ ❋ चूक बड़ी हमसन ह्वै गयऊ ॥
मैं दुर्लभ अमूल्य निधि पाई ❋ दीन्हेउँ निज करसोहिं गवांई ॥
भव सरिता जो मुनिवर कहेऊ ❋ तेहितरिश्याम कुँवरपदअहेऊ ॥
बूझेहु गूढ मर्म अब तासू ❋ मैं न स्वर्ण तरिकेर प्रयासू? ॥
असकहि जेहि दिशिगेमुनिराई ❋ तेहि दिशि धावक्षिप्त कानाई ॥
प्रभु कृपाय कैवर्तिनीहुके ❋ उघरे ज्ञान विलोचन हीके ॥
सोउ विषय लालसा निवारी ❋ धाई द्रुतगति स्वपति पछारी ॥
दोउ चलि कछुक दूरि प्रभुकाहीं ❋ हेरेहु जात मुनिन सँग माहीं ॥
तब कैवर्त हृदय हर्षाई ❋ प्रभुपद माहिं गिरयो द्रुतधाई ॥
पुनि कर जोरि तजत दृगनीरा ❋ कहन लाग ह्वै प्रेम अधीरा ॥

दो०–हे प्रभु अब लगि रह्यो, दुखी दरिद्र महान ।

पर अब सारे जगत निधि, होत धूरि सम ज्ञान ॥
पारस मणि छुइ जात है, प्रभु जेहि वस्तु मझार ।
आय जात तेहि वस्तु महँ, पारस गुण कर्तार ॥
प्रभु पद परस भयो मोहि लाहू * अब नहिंहृदयअपरकछु चाहू ॥
देहु स्वर्ण कोइ औरहि जाई * फेर देहु मम दारिदताई ॥
यहमोहिबूझिपरयो यहि काला * विनादीन दुखि भये कृपाला ॥
तुम्हरी कृपा न पाय सकाहीं * यहिहितराखिदरिद्रहमकाहीं ॥
मम उर रूपी तरणि मझारा * करहु वास नितयाहिप्रकारा ॥
सुत वित तीय बन्धु परिवारा * काहू सन नहिं काज हमारा ॥
प्रभु कर नाम अमिय रस पाना * रहिहौं करत सदा भगवाना ॥
तेहि क्षण धावति केवट नारी * आयलपटिप्रभु पदनमझारी ॥
अविरत स्रवत प्रेम जल नैना * कहन लगी इमिप्रभुसन बैना ॥
यह पद धन मोहि दै यहिकालू * लियेजातपुनिकितहि कृपालू ॥
मैं निज वस्तु छोड़ि हौं नाहीं * लपटी रहब सदा इन माहीं ॥
दो०—मूरुख तिय जानहुँ न मैं, मुक्ति मोक्ष निर्वान ।
केवल तव पद सुधा की, मैं प्रयासि भगवान ॥
प्रभु केवट दम्पत्ति कहँ, निज कर सोहिं उठाय ।
सहित नेहकह इमिवचन, तुम दोउनिजगृहजाय ॥
सो०—प्रेम प्रदत्त धन भूरि, यहि जीवन भरि भोगहू ।
बहुरि होइ है पूरि, जोइ अभिलाषा उर वसत ॥
प्रभुनिदेशशिर धारि, दोउ शत शतकरिकैप्रणति ।
जाय स्वधाम मझारि, अतुल विभवभोगन लगे ॥

रोला छन्द ।

कृत्तिवास कह राम चरित सुविचित्र अपारा ।
पतित तारनहि हेतु लीन्ह प्रभु नर अवतारा ॥

कहँ मुनि ध्यान अगम्य निखिल सचराचर सांई।
कहां कुहक कैवर्त जासु सँग कीन्ह मिताई॥
जेहि जग पावन पदन मदन मर्दन नित ध्यावहिं।
सह सानन जेहि पदन विमलगुण संतत गावहिं॥
ब्रह्मा जेहि पद निमित ब्रह्मचारी ह्वै रहहीं।
जे पद पंकज रमाकेर सर्वस धन अहहीं॥
सोइ सुर दुर्लभ कंज मंजु पद कल्मष हारी।
आजे यक कैवर्त ताय के अंक मझारी॥
गूढ़ मर्म यहि केर बूझि सक भक्त सुजान।
कबहुँ जानि सक नाहिं मूढ़ अरसिक अज्ञान॥
सकत कर्षि संततहि तिलहि सुम सौरभ काहीं।
सौ सौ कीजिय यतन वसत सुममधि यव नाहीं॥

द्वादशसततम सर्ग॥ ११२॥

श्रीरामचन्द्रादि का मिथिला प्रवेश व पुरी वर्णन॥

दो०—सुरसरि करसित रेणु मय, सुन्दर पुलिन मझार।
गमनत वन्धु समेत प्रभु, लखि उरहोत विचार॥
जनुसित नभमधिइन्द्र धनु, सह घन पटल सुहाय।
अरुतिनसहचरमुनिनिकर, चातकपुंज केन्याय॥
करि पछारि सुरधुनी कहँ, कौशिक तपो निकेत।
पूर्वउतरदिशि कियगमन, मुनिन समाज समेत॥
सो०—पथके दोउ दिशि माहिं, तपोनिरत ऋषिमुनिनके।
पर्ण कुटी दर्शाहिं, होत प्रयतमन हेरिजेहि॥

तिनसों परत सुनाय, श्रुतिरंजनश्रुतिध्वनिरुचिर
रह्यो शांति तहँ छाय, विगत मोह लोभादि ते ॥
तिन आश्रमन मझार, लसहिंआत्मवितसिद्धगण।
पाप पुंज तृण छार, भये तिनन योगाग्नि ते ॥

रामगीती छन्द ॥

निर्वायु थल दीपक शिखा थिररहत जौन प्रकार।
तेहिभाँति वैखानस निकरतेहि तपोगहन मझार ॥
करियोगवल सोंसकल विषयादिक विकारहिछार।
उद्दीप्त तत्त्व ज्ञान सों ह्वै रहे रवि अनुहार ॥
शीतोष्ण वात सहिष्णु उन्नत कायतरु समुदाय।
तिन तपश्चरण के मूर्ति मय आदर्श इव दर्शाय ॥
प्रफुलितकुसुमचयतिनन विद्यासुरभियशविस्तार।
शीतल सुमन्द समीर सुकृति प्रवाह के अनुहार ॥
सरसलिलतिनअविकार मानसमुकुरसरिससुहाय।
प्रज्वलित मख हुतभुक तिननवर ब्रह्मतेज के न्याय ॥
इन सबन मधि श्रीरामचन्द्र मुकुन्द त्रिभुवन भूप।
शोभितभयेतेहि ठाममधि शुचि योगसिद्ध स्वरूप ॥
जेहिभाँति शीतलमन्दसन्ध्याअनिलकरयकझोंक।
लागत निदाय प्रतप्त तनु मधि हर्षहीं सब लोक ॥
तेहिभाँति आश्रमवासि पावन मुनिन हृदयमझार।
प्रभु के समागम सोहिं ब्रह्मानन्द प्रकट अपार ॥
तेसकल मुनिगणमुदमगन इमिभयेतेहिक्षणमाहिं।
जासन तिननकीदीठि पथिकनपरपरत भइनाहिं ॥
देखतविविध पुरग्रामउपवन कुशिककुल दिनराय।
ससमाज मिथिला राजधानी निकट पहुँचे जाय ॥

लाग्यो सुनाई देन दूरि ते बजत शंख मृदङ्ग।
भेरी तुरी बाँसुरी डफ बीना मुरज मुरचंग॥
जसजस बढ़तसुनि परत कलरव हाटकन घमसान।
कुलकामनिन:कर मनोरंजन मांगलिक कलगान॥
पुनिमिल्यो विस्तृतपरिस्कृतवर राजमार्गविशाल।
जोइजनन गमनागमन सनसंकुल रहतसबकाल॥
वहुवस्तु परिपूरित शकट रहपाँति पाँतिन जाय।
सुन्दर पताकायुक्त रथ चय रहे इत उत धाय॥
सज्जित विविध आयुध हयारोही पदातिक वृन्द।
दलबद्ध नियमसमेत पुरिदिशि जातमन्दहिमन्द॥
गिरि शृंग सम उतुङ्ग अङ्ग मतङ्ग चिचित भाल।
शोभित वराण्डक पृष्ट ग्रन्थित स्वर्ण शृङ्खल जाल॥
दोउदिशि पुरट घंटा लरक घनघनन बाजतजात।
वृहत झुमत मत वार इतउत ते कितेक प्रयात॥
कौशेय पट छादित रुचिर वहुरहे शिविका जाय।
यहि भाँति जनता सों कसामस राजमार्ग सुहाय॥
कंकर रचितपथ सलिलसिंचित उड़तरजकहुँनाहिं।
मर्मर विनिर्मित सेतु शोभित ठाम ठामन माहिं॥
पथके दोऊ दिशिमाहिं सुन्दर सघन पाँतिनपाँति।
शोभितफलितप्रफुलित ललिततरुराजिभाँतिनभाँति॥
लखिनिविड़ छायाजिननइमिउरमाहि होतविचार।
तेहि ठामजनु थापन कियोविधि जलद करभंडार॥
पुनिसवन सुवरण नीलमणि मयमोर कंठकेन्याय।

१—आधुनिकरीति अनुसार पूर्व काल में भी राज पथ सकल कंकड़ से पक्के बनाये जाते थे (वा. रा. अयोध्या काण्ड ८ सर्ग द्रष्टव्य)

नभ भेदि गोपुर उपरथित चूड़ा परयो दर्शाय ॥
पुनि पहुँचि सिंहद्वार ढिग हेरेहु सु विपुला कार ।
तेहि दोउ कपाट विभात उत्कट गरुड़च्छद अनुहार ॥
असि चर्मधारि अनेक प्रहरी द्वार देश मझार ।
निश्शब्द इतउत करि रहे सह्रतर्क पाद विहार ॥
तेहि सामुहेसित असितप्रस्तर रचितखटित प्रवाल ।
पुरजनन गमना गमनहित संचर विभात विशाल ॥
तेहि सेतु तर गढ़ केर परिखा अर्द्ध चन्द्राकार ।
वहि रह्यो निर्मलसलिल दर्शत उदधिके अनुहार॥
तेहिमधितरतभासतजलजजलचरलतादि निकाय ।
शोभित प्रकृति करअतिविचित्र प्रदर्शनीकेन्याय ॥
बहु रँग पताका युत तरणि तिन बीचबीचनमाहिं ।
कोइ कोइ थिर कोइ चलत सोवरचित्रसमदर्शाहिं ॥
प्रतिविम्व नीलाकाश करजोइ परत वारि मझार ।
सोई मनहुँ तेहि चित्र पट कर अहै नीला धार ॥
अति तुंग दृढ़ प्राचीर परिखा के अपर तट माहिं ।
घनमाल युक्तअलंघ्य गिरिसम घेरिरहपुरिकाहिं ॥
शायक प्रहारन निमित वृत्ति के मध्यभाग मझार ।
रह बने सब थल माहि अगणित छिद्र एकाकार ॥
सोदेखि अनुभव होतजनुइमि जनुनगरकरवृत्तारि ।
करि रहे पर्य्या वेक्षण निज सहस नयन पसारि ॥
प्राचीर चूड़ा राजिथित धनुधारि सुभटन केरि ।
सित हरित पीत अलक्त वर्णके परिच्छत्त पटहेरि ॥
यह भावही उत्तुंग जनु भूधरन शृंग मझार ।
रहसोहि सन्ध्याराग रंजित धन पटल छविसार ॥

चूड़ा तरालन थल थलन भीषण भुजंगाकार।
धृतशक्तिशूर्म्मिशतघ्निआदिकअस्त्रविविधप्रकार॥
रहनियतगढ़ रक्षानिमित अगणित सुभटरणधीर।
गढ़ चतुर्दिशि लागीं वृहन्नालिका अति गम्भीर॥
पुरद्वारलंघि सबन्धु रघुमणि मुनिन वृन्द समेत।
कियनगरमाहिं प्रवेशमुनिनायककुशिककुलकेत॥

दो०–मिथिलापुर की सुघरता, को जगवरणि सकाहिं।
सकल भोग दायिनी श्री, राजहिं जेहि पुरमाहिं॥
यहिहितमिथिलापुरीकहँ, करिय भगवती ज्ञान।
तेहिथलकररजआशिनित, ऋषिमुनियतिगिर्वान॥

नरिन्द्र छन्द॥

प्रविशि सकलजन जनक नगरमहँ जिसहि दीठिउठिजाहीं।
तहहिं रहत मन अटकि भटकि कै हटकि फिरत दृगनाहीं॥
लसत ललाम काम मन भावन ठाम ठाम आरामा।
षट ऋतु के फल फूल भारसों झुके विटप अभिरामा॥
जहँ तहँ ताम्र रजत सुवरण मय शोभित सर मनहारी।
परि पूरित कर्पूर सुवा सित कुंकुम रंजित वारी॥
यौवन मद प्रमत्त प्रमदागण प्रमुदित तिनन मझारी।
जलक्रीड़ा करि रहीं परस्पर करन उछालत वारी॥
विस्तृत पथ वीथिका परिस्कृत सिंचित सुरभित नीरा।
विविधद्रव्यपरिपूरितदोउदिशिविपिणिखचितमणिहीरा॥
दीरघ माहि चारि पंथ शोभित अरु परिसर मधि चारी।
इमि षोडस चौहाट सुविस्तृत शोभित नगर मझारा॥
विविधरंग नगखचित तुंगतर मन्दिर सकल सुहाये।
मिरुकत गल जिन शिरोभाग दर्शन हित वदन उठाये॥

तिनपै रजत शृंग चामीकर कलस सुचारु विभासैं।
वहुतन चूड़ा सुमन वृष्टिसम वरमणि जटित प्रकाशैं॥
सकल मन्दिरन दीप्ति प्रज्वलित दावानल अनुहारी।
होंहि मन्दप्रभ जिनन अगारी विभावरीश तमारी॥
गृहतल विमल महामर्कतमय चित्रित चित्र विशाला।
तिन प्रकोष्ठ अतिध्वनित होत घन गर्जन वत सबकाला॥
अटालिका चारु वातयन जालन सोहिं सदाई।
निकरत सुरभित अगर तगर वरधूप धूम सुखदाई॥
रंग रंग के रुचिर पताका वडभि उपर फहराहीं।
स्वर्णवेल तरवेल चकासित गृह प्राचीरन माहीं॥
मर्मर रचित स्वेद वारिद सम शुभ्रद्वार सुविशाला।
अटालिन चतुर्दिशि वेष्टित जलद सरिस तरु शाला॥
कहुँ कहुँ पाण्डुर वर्ण मनोहर मन्दर शिखर कि नाई।
गगनभेदि उत्तुंग समुत्थित वेणुराजि दर्शाई॥
प्रफुलित ललित लता परिवेष्टित कोइकोइ भवन ललामा।
पदुम पराग सुवासित सरवर परिवेष्टित कोइ धामा॥
तेहिवट नव पल्लवित फुलित वक्राग्र विटप समुदाई।
पसरी शाखा तिनन सलिल पै अद्भुत छटा सुहाई॥
नील कुमुद कुवलय परिपूरित ते अभिराम तड़ागा।
गुंजहि मधुर मंजु ध्वनि सों अतिपुंज सहित अनुरागा॥
तेहि इत उत सारस मराल कारंडव आदि विहंगा।
मद प्रमत्त निर्भय चित प्रमुदित करत केलि सउमंगा॥
सुन्दर सुविपुल उद्यानन मधि कोइ वृक्षाग्र मझारी।
सुमन मंजरी धारिणि लतिका रहीं लटकि मनहारी॥
कहुँ शोभित केतक अशोक धवनीत प्रियंगु प्रियाला।

कहुँ चम्पा पाटली हरिद्रक शालमली हिन्ताला ॥
कहुँ अंजन कहुँ मंजुल वंजुल कहुँ विभात परणाशा ।
कहुँ प्रज्वलित अनल वत विद्रुम परसि रह्यो अकाशा ॥
नीलबिम्ब कहु वरुण पीत अश्वत्थ कपित्थ रसाला ।
वत्सनाभ पुन्नाग कोइ थल कहुँ चन्दन तरुमाला ॥
देवदारु कहुँ अगरु तगर कहु कुरवक कुटज सुहाये ।
कहुँ माधवी मधुक अर्जुनतरु पाँतिन पांति सजाये ॥
मोर चकोर सारिका शुकपिक आदि विविध खगवृन्दा ।
बैठत उड़त तरुनपै मृदुध्वनि करहिं सहित आनन्दा ॥
उपवन अट्टालिकन द्वारपै दिव्यरुचिर पटधारी ।
करधृत खड्ग चर्म पहरीगण करत सतत रखवारी ॥
चतुर्वर्ण जन गण पूरित पुर सब स्वधर्म मधिलीना ।
सब प्रकार सों सुखी सकल जन आधि व्याधिसोहीना ॥
सुवरण मणि आभरण विभूषित दिव्य दिव्य पटधारी ।
शुद्धचित्त नरनारि मगन मन विचरत नगर मझारी ॥
कोइ पल्लीमधि वसत शास्त्र श्रुतिविद कोविद बुधिवाना ।
कोइ पल्लीमधि धनिक वणिकवस धनोजे धनद समाना ॥
कोइ पल्लीमधि देवशिल्पसम शिल्पीगण कर वासा ।
यहिविध सकल कृत्यके कर्ता निवसत सहित हुलासा ॥
सकल वस्तु परिपूर्ण हाट सब जेहि लखि जनु कर्तारा ।
थापन कीन्ह विदेह नगर महँ विश्वविभव भण्डारा ॥
कनक भवन उपवन परिशोभित मिथिलापुर मनहारी ।
दर्शत नखतमाल परिपूरित विमल गगन अनुहारी ॥
सुरगण वेष्टित कार्तकेय सम मनिन समाज मझारी ।
रघुनन्दन कहँ हेरि चकित अतिभये नगर नर नारी ॥

प्रभुकर रूपमाधुरी अनुपम जोइ जहाँ मुनिपावैं।
सोइदर्शनहित ललकि त्याजि निजकाज आशु उठिधावैं॥
पथके दोउदिशि माहिं जनन की भई भीर अतिभारी।
भये निमग्न सबन मन प्रभुके रूप पयोधि मझारी॥
भयो सबन अनुभव रघुवर कर लखि छविछटा अनूपा।
मानहु प्रकट भयो ऋतुनायक धारि मनोहर रूपा॥
खंजन गंजन रघुनन्दन के नयन विशाल मनोहर।
प्रफुलित नील नलनि परिशोभित सुन्दर पूर्ण सरोवर॥
मधुकर निकर सरिस घनचिक्कन कुंचित कुंतलदामा।
श्रुति विश्रांत युगलवर भृकुटी जनु पिकपिकी ललामा॥
अधर ओष्ठ विकसित अशोकसुम दशन कुन्द सुमनाई।
मधुर मन्द मुसकान मल्लिका सुमन समान सुहाई॥
मणिन जड़ितश्रुति सुवरण कुण्डल कर्णिकार अनुहारी।
स्वेद वुन्दचय सिन्धवार सुम सरिस चारु मनहारी॥
जृम्भनोद्गत वायु सुशीतल मलय समीर स्वरूपा।
नव पल्लवित सुघर किशलयवत कर अंगुरी अनूपा॥
पाणिचाप किंशुक रसाल मंजरी तूणथिरवाना।
श्यामलवर्ण निविड़ तरुछाया कुसुम पीत परिधाना॥

दो०—भये उदित सुखमा सदन, रामरूप रजनीश।
सकल नगर नरनारिकर, उपड़ मोद वारीश॥
पर निर्मल चित तत्वविद, साधु संत समुदाय।
हेरेहु मानस दृगन ते, पूर्णब्रह्म रघुराय॥

सो०—तासु हेतु इमि भास, संतत स्वतः स्वभाव सिध।
कबहूं सुरभि सुवास, रहत न अविदित घ्राणसन॥

ब्रह्मानंद मगन सब ज्ञानी * कहत परस्पर यहिविधवानी॥

नेति नेति तेहि वेद बखाना * मुनिनअगोचरजेहिपदध्याना॥
कस सप्रेम जोइ रमा विहारी * गमनत विश्वामित्र पछारी॥
अहोधन्य कौशिल्या रानी * जेहिपयपान कीन्हसुखदानी॥
अहह दैव तैं हम सब काहीं * किहेअवध कर तृणकसनाहीं॥
जासों नितप्रति प्रभुपद धूरी * होत लाहु जोइ जीवन भूरी॥
कस कृपाल प्रभु जगत गुसांई * रहत भक्त आधीन सदाई॥
नतुजोइ विश्वजनक जनरंजन * विगतजन्म भवभीर विभंजन॥
सो केहिहित नृप दशरथ काहीं * स्वपितु प्रथितकरते जगमाहीं॥
संतन वदत साधु श्रुति संता * तुम अनंत तव कृपा अनंता॥
हम सब दीन जनन उद्धारन * जगमधि धर्मभक्ति विस्तारन॥
मनुज देह धरि रमानिवासू * यह लीला करि रह्यो प्रकासू॥
तव दर्शन की आस गुसांई * बहु दिनते रहि हृदय समाई॥

दो०—तेहि कारण करुणायतन, जिमि प्रभात अरुणाय।
भानु प्रकाश कि सूचना, प्रथमहि देत जनाय॥
तिमितवनितसहचरिन श्री, प्रकटिजनकगृहमाहिं।
तव आवन की सूचना, प्रथमहिंदिय जन काहिं॥

सो०—प्रभुकर रूपनिहारि, प्रौढ़ा तिय गण कहहि इमि।
अससुभागवतिनारि, अहै कौन यहिजगत मधि॥
सो केतक तप कीन्ह, जेहि फलते तेहि गोद महँ।
अस कुमार विधिदीन्ह, धन्य धन्य सो सुतवती॥

अहह लखहु वड़ अचरज येहू * सरजहु ते मृदु इनकर देहू॥
सो सहि रवि आतप मग जाहीं * देखत करक होत उर माहीं॥
हा यदि मम वश होत पुरन्दर * जलद ते ढांपि देति मैअम्बर॥
जगत प्राण हे देव समीरा * कुँवर स्वेद हरु वहिमृदुधीरा॥
जानि परयो मोहिं इनकी माई * कठिन हृदय पाषाणकिनाई॥

जो जीवन निधि अस सुत काहीं * करिदृगओट तज्योतनुनाहीं ॥
यदि होते यह मम संताना * रखितिउँ दृग पूतरी समाना ॥
सो सुनि अपर तीय इमि कहिऊ * काहअलीकभगिनि कहिरहिऊ
यदि सुभागवति इनकी माई * होत स्वारथिनि तुम्हरेहिनाई ॥
तो अस रूपराशि सुकुमारा * करतीं लाहुन कोइ प्रकारा ॥

दो०—वहुरि इनहिं यहि नगरमहँ, यदि पठावतीं नाहिं ।
तौ अनुपम इनकर दरश, किमि होते हमकाहिं ॥
युवती गण जब यह सुनेहु, युग अपूर्व सुकुमार ।
अतुल तेजधर मुनिन सँग, आये नगर मझार ॥

सो०—जिनकर रूप निहारि, पुरवासी सब नारि नर ।
गये प्राण मन हारि, भये समस्त विदेह सम ॥
तब प्रमत्त अनुहारि, दर्शनहित ललना ललकि ।
निजनिजकाजविसारि, धाईं जेहिदिशि रहे प्रभु ॥

दरश आश सब द्रुत पद जाहीं * तनमन पट भूषण सुधि नाहीं ॥
यकपद यावक रंजित काहू * कोइ कंठ श्री पहिरे वाहू ॥
कोइ चरण नूपर कर लीन्हे * वेंदी कोइ चिबुक मधि दीन्हे ॥
भ्रम वश मणि माला कोइ नारी * कियेधारणकटिदेशमझारी ॥
कोइ किंकिणि पहिरे गल माहीं * काहु एक दृग कज्जल नाहीं ॥
इमितरुणी गण प्रेम विभोरी * भईं एकत्र पथके दुहुँ ओरी ॥
झुंडझुंड सुमु खीन निहारी * यहभावत कवि हृदय मझारी ॥
जनु प्रभु अर्चन हेतु विधाता * पठयो पुंज पुंज जलजाता ॥
शोभा सदन राममुख हेरी * भईं विमुग्ध पुररमणि घनेरी ॥
कोइ कामिनि हत चेतन होही * रहीं राम मुख यकटक जोही ॥

दो०—रामरूप कोइ दृगनभरि, पलक किवाँर चढ़ाय ।
बौरीसी मुद सों छरी, खरी पूतरी न्याय ॥

नेह नीर दृग तजत कोइ, कोइ रोमांचित गात।
कोइ कम्पति रोमांच कोइ, लखिलखिकोइसिहात॥
सो०—इमि तेहि समय मझार, शांत दास्य सखकरुणके।
सहस सहस आकार, चहुँदिशिते पूरित भयो॥
कोइ कह बड़ अचरज दर्शाई * क्षितिपै कस नवजलद सुहाई॥
अपर कह्यो सखि फुरतैं कहई * लखुतेहिनिकट तड़ितहूअहई॥
यकतिय कह यह मोर विचारा * हैं यह मूर्तिमान शृंगारा॥
ध्वज वज्रांकुश चिन्ह निहारी * लागी कहन अपर यकनारी॥
सखीहेरु पद रेख सुहावन * जोहमसवनभाग्यलिपिपावन॥
कोमल पद पंकज लखि कोई * लागीकहन दुखितचित होई॥
हा जोइ मृदु किसलय अनुहारी * धरनयोग्य ममहृदयं मझारी॥
कठिन सो भूमि परत केहिभाँती * यह विसूरि दरकत ममछाती॥
सो सुनि कह्यो अपर यक नारी * करुनचिंतयहिविषयमझारी॥
अति कठोरं सखि रह मन मोरा * सोउनम्रलखिश्यामकिशोरा॥
दो०—यहिहित इनके पद परत, जेहि जेहि ठाम मझार।
होत होइ तहँ तहां की, क्षितिकिशलयअनुहार॥
एकतीय कह इनहिं लखि, यह विचार मम होत।
रूपराशि शशि के अहैं, यह भासक रवि ज्योत॥
बूझि अर्थ तेहि यक तिय कहेऊ * यह तव कथनअसंगत अहेऊ॥
हास वृद्धिमय नभ शशि नाई *किमिमिथिलेशकुँवरिकहिजाई॥
वरुसखिसिय तनु कांति अगारी * है सक शीतल प्रभा तमारी॥
कवहूं स्वयं प्रभा छविराशी * हैसकअपरप्रकाशकि आशी॥
मम विचार महँ आवत जोई * अवमैं तुमहिं सुनावत सोई॥
सकल जनन यह विदित बनाई * विनुपूरणशशिनिशिनसुहाई॥
निशिरूपि यह श्याय कुमारा * सोइसोइविधुहेतुइतहिपगुधारा॥

इमि स्वजाति मुख्यता सयानी * कियसिधयुक्तिसहितकहि वानी

दो०—सो सुनि ताहि प्रशंसिवहु, कहन लगी सब नारि ।
होय व्याह सिय रामकर, यहअभिलाष हमारि ॥
यदि हमार यह लालसा, पूरण दैव न कीन ।
तौ जीवनयहि जगतमहँ, विधिकौशलविधिहीन ॥

सो०—कृत्तिवासकहजननिगण, जनि मन करहु विषन्न ।
सीय प्रकृति रघुवर पुरुष, ते दोउ सतत अभिन्न ॥

त्रयोदशसततम सर्ग ॥ ११३ ॥

अथ राजपुरी वर्णन ॥

सो०—बाढ़ि सरितपुर काहिं, जिमिबोरततिमिजनकपुरि ।
बूड़िभक्ति रस माहिं, गई राम आगमन सों ॥
नगर नारि नर वृन्द, ह्वै पार्थिव सुख ते विरत ।
लगे तरन सानन्द, परमार्थिक सुचि सरितमहँ ॥

दो०—मुनिगणरघुकुलमौलमणि, सहितकुशिककुलदीप ।
कछु क्षणमह पहुँचत भये, राज निकेत समीप ॥
लख्यो दूरि ते अतिसुघर, गोपुर द्वार विशाल ।
अनुपम विद्रुम देहरी, जड़ितविविधमणिजाल ॥

उभय ओर शोभित भलभाँती * मणि वैडूर्य्य खंभ की पाँती ॥
फटिक भित्ति आछी छबि छावत * मध्यस्थित मारग मन भावत ॥
मरकत खचित रचित चितचोरा * युगुलपार्श्व राजत शुभओरा ॥
उपरि लसत सुन्दर छबिवारी * मणिगणजटित अनूपअँटारी ॥
स्वर्ग भवन परसत जिन केरे * दरसत स्वर्ण शिखर बहुतेरे ॥

अभ्यन्तर पथ के दुहुँ ओरन * सखर लसत युगुल चितचोरन॥
नील नलिन जिन महँ बहुफूले * भ्रमित भ्रमर अवली अनुकूले॥
जिनसनपुरी बिशालबिलोचनि * बनिताविदितहोतिदुखमोचनि॥

हरिगीतिका छन्द॥

ऋषि गाधि पुत्र ऋषीन गोपुर बाहरै ठहराय के।
श्री राम सन बोले बचन मृदु प्रीतिरीति दिखाय के॥
हे तात! बिनपाये निमन्त्रण अपर भूप समाज में।
है जाइबो सहसा उचित नहिं तुमहिं उत्सव काज में॥
यासों रहहु ऋषि मण्डली युत इतहि दिनकर कुलमनी।
इमिकहि विहँसि कौशिक कही पुनि बाणी अमृतरस सनी॥
पै नहिं अगम्य तुम्हार गुरु कहँ स्थान हैकोउ त्रिभुवननै।
मैं जाय के मिथिलेश पहँ तुम कहँ बुलावत हौं अबै॥
कीन्ह्यो सबन मुनि कथन केर प्रशंसि अनुमोदन भले।
मुनि कुशिक सूनु प्रसून पूजित होत मिथिलामहँ चले॥
द्वारस्थ भूपति किंकरन कर जोरि अरचन कीन्हेऊ।
तप पुंज तेज निधान तब पुरि बिच प्रयत पग दीन्हेऊ॥
ऋषिवर्य्य कौशिक आगमन सम्वाद विद्युत सरिसही।
पहुँच्यो द्रुतहि यकनिमिषमहँ मिथिलापुरी पति पासही॥
सुनतहि जनक सानन्द कै आगे शतानन्दहि भले।
ऋत्विज निचय मन्त्रिन सहित मुनिकहँलेवावनद्रुतचले।
कछु दूरि ऋषिवर अग्रसर भे यही अवसर आयगे।
युत पारिषद मिथिलामहीप प्रमोद घन चहु छायगे॥
नृप अर्घ्यदान विधान विधिवत दण्डवत नति नुतिकरे।
मुनिहू उचित सनमान सन जनकहि लगाय लियो गरे॥
सप्रेम कुशल प्रश्नकरि आशिष दै बैदेह को।

बोले बचन मंजुल मनोहर मधुर मृदु करि नेह को ॥
हौं इत प्रयोजन वश नृपति आयो निकट मैं आप के।
सँग शिष्य शोभाधाम लै बलवान पुञ्ज प्रताप के ॥
हैं ऋषिजनन युत कै सुवेषहि द्वार देशहि मैं खरे।
सुनतहि द्रुतहि महिपति चले कौशिक सहित मनमुदभरे ॥
निरख्यो नरेश्वर आय बाहर कर शरासन शर करे।
द्वै मार सम सुकुमार भूपकुमार मारग मैं खरे ॥

गीता छन्द ॥

नक्षत्र मण्डल मध्य संस्थित शुक्र शशके न्याय।
रामलक्ष्मण सोहहीं मुनिवृन्द बिच दोउ भाय ॥
स्वस्तिबाचन कीन्हेऊ ऋषिवर्ग दै आशीष।
कीन्ह्यो उचितसन्मान नृपनतशीश मिथिलाईश ॥
कौशिक निदेशहिपाय रघुबर लखणगुणगणधाम।
सविनयजनकनृपकहँकियोदोउभाय दण्डप्रणाम ॥
सप्रेम मिथिलापति लियो दोउ बालकन उरलाय।
अद्भुत असीम अनन्द सों रोमाञ्च रह तनुछाय ॥
जीवतहि मुक्त रहे प्रथम पर मुक्तिकर अब भूप।
पायो परम फल ब्रह्म लखि प्रत्यक्ष श्यामस्वरूप ॥
योगी जनक भगवत रहस्य समस्त लीन्ह्यो जानि।
पुनिज्ञान नयननसों बिलोके हरिकृपाकी खानि ॥
गोलोक तजि मिथिलापुरी महँ रमतहैं यहिकाल।
पै देश काल निहारि भावहि रख्यो गुप्त नृपाल ॥
ताही समय सुखमय सबन सविनयसदय नयरूप।
लै सँग गये जयध्वनि सुनतमिथिला पुरीमहँभूप ॥

दो०—निरखी राजपुरी सबन, हठि मन मोहे लेत।
चित्र शाल ज्यों स्वर्गकी, सोह समृद्धि समेत॥
रत्न रचितमणिगणखचित, कनक कलशयुतद्वार।
जिनमहँ राजत रुचिर रुचि, सुबरण वन्दनवार॥
ऐसे गृहगण रवि किरण, प्रभा बिभासित होत।
मनहुँ शृंखला बद्ध बहु, महि महँ भानु उदोत॥

गीता छन्द॥

तहँ ध्वजावृन्द समेत उन्नत गृहनिचय दरशाहिं।
जिन छांहसन मारग घनावृत गगनवत ह्वैजाहिं॥
भवनावली के स्वर्णमय सुन्दर शिखर को पाँति।
बहु हेमदण्डमयी पताकन शोभही यहि भाँति॥
मानहुँ मनोहर मेरुपर्वत शिखर श्रेणी शीश।
दरशात नन्दनबन बिशदछबि सकल काननईश॥
तिनमध्य संस्थित राजगृह महँ ठौर ठौर दिखात।
कृत्रिमरचितक्रीड़ाअचलमणिगणखचितअवदात॥
बापी बिपुलपुलिना बनीं जहँ स्वच्छ सोहत नीर।
कल्हार इन्दीवर प्रफुल्लित कोकनद जिन तीर॥
सोपान मणि निर्मित मनोरम घटित घाट प्रतीर।
उपवन बने बहु सुमनयुत जित भ्रमत भ्रमरीभीर॥
मधुकर निकर तहँ मोद माते करत कूजि कलोल।
कलकण्ठ पारावत कलापी भनत मधुरे बोल॥
दिपति दीपति नृपति गृहकी ज्यों प्रभातहिभानु।
कै सुसंस्कृत स्वर्ग सम अथवा प्रदीप्तकृशानु॥
त्यहिकेनिकट अट्टालिका यक लसत सुन्दर ज्योति।
मणि पद्मराग विनिर्मिता जगमग चहूंदिशि होति॥

प्रासाद नाना रत्नराजि रच्यो रुचिर त्यहि पास।
मध्यान्ह सूर्य्यप्रभसुसज्जित करत बहुल प्रकास॥

हरिगीतिका छन्द॥

यहि भाँति के शत शत भवन रविभा विभासित भ्राजहीं।
सुबरण रचित मौक्तिक खचित सुवरण सुउन्नत राजहीं॥
जिनकेर आयत आयतन लखियन अमित इमि होवहीं।
मनुभिन्न आकृति ज्योतियुत शैलावली अति छवि लहीं॥
कछु दूरपर बैडूर्य्य बिघटित हरितवर्ण विराजहीं।
क्रीड़ा भवन वैदेहि कर लखि इन्द्रमन्दिर लाजहीं॥
सियगृह सकल गृह निचय कर मण्डन मनोहर मनु लसै।
जहँ ऋद्धि सिद्धि समेत परमा रमा नित्यप्रति बसै॥
त्यहिके चहूंदिशिस्तंभशतशत मणिनमय छबिछावहीं।
वेदी रजतकृत हेम तोरणयुत महामन भावहीं॥
प्रज्ज्वलित पावक पुञ्जसम दीपति अमित विस्तारहीं।
अवलोकि कौशल कहँ जगतके शिल्पिगण हिय हारहीं॥
तदुपरि रचित रत्न रुचिर रुचि चन्द्रशाला सोहहीं।
जिनबीच बातायन बने बहु मणिजटित मन मोहहीं॥
तिन महँ परीं सुखमा भरी आतप प्रताप पिधानिका।
बहु मूल्य मुक्ता दामयुत कौशेय सुन्दर जवनिका॥
तिमि हेम जाल प्रणीत क्षुद्रा गवाक्ष राजि विराजहीं।
शत शत विहगयुग कनक पिंजर धरे शोभा काजहीं॥
जिनमहँ प्रतिपालित कलोलत कहत मधुरी कारिका।
कलहंस कोकिल कीर कुररी कोक केकी सरिका॥
नवतृण छवाये गृहाच्छादन युक्त प्रांगण मैं पले।
क्रीड़त हरिणशावक सरस सारसबधू सारस भले॥

चहुँओर संचर रत्न निर्मित अमित अरुमन भावनी।
बहुबर्ण जलचर जन्तुचयमय जलज युत परिखा बनी॥
जलयन्त्र कर निर्म्माण कौशल इमि विचित्र लखात है।
जलतट निकट प्रस्तुत रहत नतगामि नहिं ह्वै जात है॥
तिमि ठौर ठौर सोहावने सुन्दर सरोवर हैं बने।
जिन तट निकट कृत्रिम कनकमय मंजु उपबन हैं घने॥
तहँ रत्न निर्मित फूल फलयुत वृक्षराजि विराजहीं।
मणि संकलित गुच्छावली छबि भानु भासित भ्राजहीं॥
इमि राजपुरि सुविशाल शोभित मुनिन मनमोहन करी।
ज्यहि निज विभव संभव मदन सुरपति सदन छबि अपहरी॥

अपर एक विरचित मखशाला * रत्नजाल संयुक्त विशाला॥
इत उत लसत ध्वजा बहुतेरी * पीतअसित सित अरुण हरेरी॥
चहु दिशि सोहत सुन्दरसुबरण * स्वर्णखचितमणिविरचिततोरण
कदली तरु मंगल मय राजैं * कांचनकलितकलशछबिछाजैं॥
दारुयूप शत शत दरशाहीं * हेम अलंकृत बरणि न जाहीं॥
कनक कराह धरे महिं माहीं * बिछे मृगाजिन जहांतहांहीं॥
स्थल जल संभव जन्तुविचित्रा * रक्षित मख उपयोगि पवित्रा॥
श्रुक, शराव,पुष्पन की माला * आज्य, पवित्री, समिध,कपाला

दो०—परिस्तोम कौशेप पट, दण्ड कुशादि पदार्थ।
मख मण्डपमहँ सब धरे, यथा योग्य यज्ञार्थ॥
प्राची दिशि मण्डप बन्यो, सुन्दर अति अभिराम।
उत्तर दिशि यजमानगृह, विरचित रत्न ललाम॥
हाटकमय मंजुल बन्यो, भोजन भवन सोहाय।
रमणी शाला पश्चिमै, अति रमणीक लखाय॥

मध्यस्थल विरचित बृहत, हवनकुण्ड कमनीय।
सहित मेखला संकलित, बेदी अति रमनीय॥

मख मण्डप अभ्यन्तर माहीं * अगणित फटिक खंभ दरशाहीं॥
चहुंदिशि अन्नराशि बहुतेरी * नदी अपरिमित घृतदधि केरी॥
प्रस्तुत भोज्य बस्तु बहु ढेरी * शैलशिखर सम तुङ्ग घनेरी॥
धारे कमल कलित उरमाला * ठाढ़े सहसन नर मखशाला॥
तेजपुंज ऋत्विज गण केरी * आज्ञापालत करत न देरी॥
अति उछाह उर उत्सव देखी * सफलजन्मनिजमनमहँलेखी॥
याही भाँति अतुल अनुरागे * निज२काज करन महँ लागे॥
राजपुरी के सब थल माहीं * दासी दास अमित दरशाहीं॥

दो०—सब मुनिजन युत नृप जनक, सभाभवन के पास।
पहुंचे जहँ ठाढ़े अमित, द्वारहि दासी दास॥

हरिगीतिका छन्द॥

मरकत रचित रत्नन खचित प्राकार उन्नत राजहीं।
जलधर सजल ज्यों दामिनी सँग गगनमधि छबिछाजहीं।
निर्मित सरोवर सभा प्रांगण मद्धय निर्मल जल लसै।
आरोह परिसर वेदि मणि मय मानसर शोभहिं हँसै॥
शोभित फटिक निर्मित अमित सोपान श्रेणि परम्परा।
निर्म्माण कौशलकला जिनकी अति विचित्र मनोहरा॥
तहँ कनक कच्छप मनि मणिमय जन्तु जलचर जल परे।
वैडूर्य्यपत्र प्रवाल मय शतपत्र शोभा कहँ करे॥
त्यों पद्मराग रचे रुचिर रुचि पद्म सुखमा सदन हैं।
कल्हार राजत रजत कृत निजकर रचे मनु मदन हैं॥
वृक्षावली कुसुमावली किसलय युता फल सेविता।

प्राचीरतल सरवर उभयदिशि श्रेणिवद्ध प्ररोपिता ॥
दुहुँ ओर द्रुमचय मद्धयमें निर्मित गमन पथ राजहीं ।
मर्मर खचित विस्तृत विशद मनु सभागृह भुज भ्राजहीं ॥
सुन्दर सभामंदिर कनक द्वारे दुहूं ओरन गँसैं ।
मंजुल मनोहर मंजरी रंजित लता ललिता लसैं ॥
जलयन्त्र युत जलपूर पूरण निम्नतल गृह केर है ।
तदुपरि सभागृह सित जलदसम हित जलज उपमा लहै ॥
चहु ओर मुक्ताफल समावृत गृहाभ्यन्तर सोहहीं ।
कृत्रिम विहंगम रत्नमय जित तित बने मन मोहहीं ॥
बहुभांति की कल्पित कनकमय वृक्षाराजि विराजहीं ।
मरकत कलित मधुकर निकर कमनीय सुखमा साजहीं ॥
निर्मित हरित मणिमय अमित छबि पत्र चय मन भावनें ।
विरचित विशाल प्रवाल के तिन आलबाल सोहावने ॥

दो०—नीलपीत सित अरुअसित, अरुण अनेक वितान ।
कारु संकलित तित वने, वने अतिव छबिवान ॥
आसन बिछे अमोल तहँ, पाद पीठ शुभरूप ।
कांचन चित कौक्तिकग्रथित, नृप सम्पद अनुरूप ॥
मणिमय चित्र विचित्र बहु, खंभन सन मनलाय ।
परिषद भवन विभागकिय, चतुरशिल्पिसमुदाय ॥
दिव्य सुरभि सों सौरमित, सकल सभा दरशाय ।
जहँ पहुँचत श्रम शोकभ्रम, जड़ता जरा नशाय ॥
मानसि सभा समान निज, सभाभवन महँ लाय ।
दीन्ह्यो सबन विठाय नृप, शुभ आसननबिछाय ॥
कृत्तिवास कह तब भई, शोभित सभा महान ।
हिमकरदिनकरज्योतियुत, ज्योतिश्चक्र समान ॥

चतुर्दश शततम सर्ग ॥ ११४ ॥

ऋषिगण कर्तृक विविध तत्त्वविषयी प्रश्न व जनक कृत तदुत्तर प्रदान ॥

दो०—सहितअनुजरघुवंशमणि, मुनि मण्डली समेत ।
सभासीन वर आसनन, भये कुशिक कुलकेत ॥
तब मृदु वचन जनक कह, कौशिक प्रति इमिवैन ।
हे मुनीश इमि वदत है, ज्योतिर्विद बुध ऐन ॥
गृह गणके मिलनही सों, कबहुं कबहुं जगमाहिं ।
अतिअद्भुतविस्मयजनक, घटनावलि दर्शाहिं ॥
परहिमकरअरु तिमिरहर, एक साथ दोउकाहिं ।
होत प्रकाशित जगतमहँ, कोउ अवलोकेहुनाहिं ॥
परइन दोउनव कुँवरकहँ, लखि प्रत्यक्षही आज ।
सो अद्भुत संयोग हम, रहे हेरि मुनिराज ॥
कहियकृपाकरिऋषिप्रवर, तजि दुराव हमपाहिं ।
कौन अभाविनिदैवकृति, प्रकट होइ जगमाहिं ॥
जानसकल भलप्रबलतर, ज्वलत अनलमुनिराय ।
मूँदे मुदत न वस्त्र सों, कोटिन करिय उपाय ॥
तब सहचर दोउ कुँवरकहँ, लखि संशय उर होय ।
इनके अभिनव उदयमहँ, सुररहस्य है कोय ॥
मोमन पुनि पुनि कहतहै, इनसो भुवन मझार ।
अद्भुत घटना होइँ बहु, विबुध साध अनुसार ॥
सो०—सुनि विदेह मुखवानि, ऋषिवरकौशिकविहँसिकह
हे भूपति यशखानि, ज्योतिष व्यवसायी नमैं ॥

पर इतनाहिं महीप, मैं तुमसन कहि सकत हौं ।
ये दोउ रघुकुल दीप, दशरथ के सुत शिष्य मम ॥
मैं मखरक्षण काहिं, नाशनहित निशिचर विघन ।
गयों अवधपुरि माहिं, इनही के आनयन हित ॥
येह नवघनसम श्याम, चारु तामरस नयन जोइ ।
इनकर लोक ललाम, नाम राम सुखधाम हैं ॥
गिरा अशक्य सदाय, इनके गुणगण कथन महँ ।
यहजनुशुचिदम न्याय, सत्य नियम के मूर्त्ति हैं ॥
तेज विजय दण्डहु इनकाहीं * कहनअयुक्ति कोइ विधनाहीं ॥
निष्ठानन्द शांति के रूपा * करहु ज्ञान इन कहँ वर भूपा ॥
पुण्याश्रम अरु मंत्र विभूती * इनमधिमिलितअकथकरतूती ॥
इनहि विषय भय नाशन माहीं * है सन्देह रंचकहु नाहीं ॥
महस मत्त वारण वल धारिनि * जोताड़काघोरनिशिचारिनि ॥
तेहि प्रचारि कौतुकहिं सहँरी * हरेहुऋषिन करआपद भारी ॥
अरु मारीच अतुल वल धामा * कँपतअमरगणसुनिजेहिनामा ॥
तेहि त्रिकोटि निशिचरन समेतू * कीन्ह ध्वंस यह रघुकुल केतू ॥
यह जो लघु कुमार अभिरामा * तप्त कनक समवरण ललामा ॥
अप्रयत्न हरि विक्रम धारी * राजव तव सामुहे मझारी ॥
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता * शक्तिअनन्तरखतनिजगाता ॥
गुणगण माहिं येउ वर भूपा * अहैं ज्येष्ठ के अंश स्वरूपा ॥
दो०—द्व्यर्थ युक्त दोउकुवँर कर, मुनिपरिचय महिपाल ।
तासु मर्म निज हृदय महँ, गये बूझि ततकाल ॥
तव ब्रह्मानँद मधि मगन, ह्वै महीप यशखानि ।
गुप्तराखि उरभाय इमि, कसमुनिवर प्रतिवानि ॥
चिकटाननि ताडकहि सँहारन * खल मारीच केर मद हारन ॥

यह अति विस्मय कर व्यापारा * परतव कथन ते होत विचारा ॥
याहूसन अद्भुत कृति कोई * मारग माहिं दीख तुम होई ॥
कानन शिला काठ संकूला * परसि राम कोमल पदशूला ॥
विदित न काह काह दर्शाये * केतक विपिन गमन दुखपाये ॥
धन्य धन्य तुम तपो निधाना * तवप्रभाव को करिसकगाना ॥
मंगल सिद्ध सरिस जेहि संगा * विचरत रघुकुल कमल पतंगा ॥
महूं धन्य सब विधि मुनिराजू * मोसमभाग आन नहिआजू ॥
मुनिगणदोउनिज शिष्य समेतू * आयकिहौं मम प्रयत निकेतू ॥
लहिमुनि नायक दरश तुम्हारे * भये मखादिक सफल हमारे ॥

दो०—परम तत्त्वविद भूपकहँ, जानत मुनि समुदाय ।
गूढ़ वचन तिनवदनसुनि, मोहि हृदय अधिकाय ॥
सारज्ञान नृप मुख सुनन, भयो चाउ सब काहिं ।
कसन होय असदेखि यत, संतत यहि जगमाहिं ॥
सकल राग रागिनि विद, अहैं गुणीजन जोय ।
सोइ गान सुनि अपर ते, मुदित सो काहनहोय ॥

सो०—यकमुनि परम प्रवीन, ऋषिकौशिकदिशि हेरिकै ।
गूढ़ प्रश्न यह कीन, राजर्षी मिथिलेश प्रति ॥

धर्म बुद्धि मनुजन नरनाहू * कहत स्वभाव जात सबकाहू ॥
यदि यह शास्त्र वचन अनुसारा * है सत तब कस जगत मझारा ॥
धर्म माहिं विश्वास विचारा * मनुजन होत न एक प्रकारा ॥
यक कारणी भूत जोइ भूपा * तेहिलखियतकस विविधस्वरूपा
सुनि मुनि प्रश्न महीप प्रवीना * मधुरवचन ते उतरइमि दीना ॥
सुन्दर ताथि बोध संसारा * अहै स्वभाविक सबन मझारा ॥
पर विभेद दर्शत महिमाहीं * रक्त वर्ण प्रियकोउजनकाहीं ॥
पीत वर्ण कोउ के मन भावै * नील रंग कोउ काहिं सुहावै ॥

तेहि विध अस्वादनहु सदाई * नर न स्वभावजात मुनिराई ॥
पर मत भेद यहुमधि अहई * मधुररसहिरुचिकरकोउ कहई ॥
दो०-कोउ कहँ भावत अम्लरस, तिक्त भाव कोउकाहिं ।
तृप्ति कोउकर अन्नमधि, कोउकर आमिष माहिं ॥
तिमि स्वाभावि कह्र भये, धर्म बुद्धि कह वेद ।
अहै स्वभाव विरुद्ध नहिं, धर्म माहिं मत भेद ॥
सो०-बहुरि प्रश्न इमि कीन, अपर एक ऋषि भूप सों ।
भाखहु नृपति प्रवीन, बुधि विवेक मधि भेदकत ॥

अष्टपदी छन्द ॥

कह नृप घटना द्रव्य कार्य्य कारण कर निर्णय ।
ज्ञात वस्तु सों प्रकट करन अज्ञान वस्तु चय ॥
यह सब बुधि कर काज बहुरि बुधि संतत कहई ।
अनित पदारथ कबहुँ चिरस्थायी नहिं रहई ॥
पर हटाय मन अनित वस्तु सो तिन पदार्थ महँ ।
चित आरोपित करन मुख्यकृति यह विवेककहँ ॥
यहिसवनसारबुधिसोंविदितहोतकार्य्यकरफलाफल।
परज्ञात विवेकहि करताहैकार्य्यउचितअनुचितसफल
सो०-बहुरि अपर ऋषिराय, पूछेहु यह मिथिलेश सों ।
कहिय महीप बुझाय, बुधि परिचालन करत को ॥

अष्टपदी छन्द ॥

दीन्ह उतर नरनाथ सकल प्राचीन शरीरा ।
पंचभूत मय गगन वारि क्षिति तेज समीरा ॥
गगन केर गुण शब्द नीर कर रस मुनिराई ।
तेज केर गुण अहै ख्यात परिपाक सदाई ॥

पृथिवी कर गुण गन्ध सकल श्रुति शास्त्र बखाना ।
अनिल केर गुण परस जानहू ऋषि मतिमाना ॥
करिविषयग्रहणइन्द्रियनिचयमनसंततेहिविषयमहँ
संशयउतपतिकरिकरतहैनितपरिचालनबुद्धिकहँ ॥
सो०—पूँछेहु अपर मुनीश, यदि बुधि चालन संशही ।
तौ केहिहितअवनीश, बुधगण तेहि निन्दाकरत ॥

षटपद छन्द ॥

कह नृप संशय निन्दनीय नहिं तपो निकेतू ।
संशयही सुविचार केर केवल यक हेतू ॥
जगमधि सत्यासत्य निरुपण केर उपाई ।
है केवलहि विचार वदत कोविद समुदाई ॥
नहिंभेदि सकत हैं भ्रांतपथ संशय हीन मनुष्ययत ।
व्यवहार सकल तिनके अहैं मेषसमूह प्रवाह वत ॥
पर संशय जगमाहिं तवहिं लग शुभप्रद अहई ।
सत्य वस्तु के खोज माहिं जबलौं मति रहई ॥
जब संशय उत्पन्न होय उरमधि मुनिराजू ।
तब सब जन कहँ अहै सतत समुचित यह काजू ॥
सतसंगकरहिं सत साधुकर सदग्रंथ कर चिंतवन ।
यहियतनसोहिसन्देहमिटिलागतसतपथमाहिमन ॥

यक ऋषि पूछेहु सुनिय भुवारा * कत प्रकार नर जगतमभारा ॥
मनुज समाज त्रिविध कहभूपा * अन्न औषधी व्याध स्वरूपा ॥
सदगुरु संत साधु विज्ञनी * अन्न सरिस पोषत जगप्रानी ॥
सदाचार व्रतरत जन जोई * सुरुचिनिदान अगदसमसोई ॥
कुटिल कुभाषि कुरति परद्रोही * विषमव्याधिसमजानियओही॥
यहसुनि यकमुनि परम प्रवीना * यहिविधप्रश्ननृपतिप्रतिकीना॥

को जग प्रकृत दानके योगू * दान प्रदान कहत केहि लोगू ॥
सुनि मुनि प्रश्न महीपति कहेऊ * अभय दान सर्वोपरि अहेऊ ॥
दान पात्र सब सो बड़ सोई * है अति दुखिहुन याँचत जोई ॥
पूछेहु अपर एक मुनिराई * जपसिधि कर है कौन उपाई ॥
कहत तपस्या केहि कृति काहीं * होत चिरायु मनुज केहिमाहीं ॥
कह भुवाल मन कह वश राखन * सदव्यहार अल्प परिभाषन ॥
परमित अशन जीव पर दाया * क्षमाशांत गुणगहन अमाया ॥
यहसब कृति श्रुतिशास्त्र वखाना * हैं जपसिधि के यतन प्रधाना ॥
लोभादिकहि करन परिहारा * यहयथार्थ तप जगत मझारा ॥
सदाचार साधनहि सदाई * दीरघ जीवन केर उपाई ॥
अपर प्रश्नकिय नृप जगमाहीं * सुखदुखकहत अहैंकेहिकाहीं ॥
कह नरेश सुख दुख मुनिराई * सत्यअसतमधिमिलिनसदाई ॥
है सत्यही धर्म अति पावन * तेहिप्रकाशआलोक सुहावन ॥
आलोकही परम सुख ख्याता * जगतसुयशपुनिहरिपुरदाता ॥
अधरम केर असत नामांतर * तेहिविकासहै तिमिरनिरंतर ॥
तेहितम काहिंकरिय दुख ज्ञाना * तेहिसमजगतकलेशनआना ॥
सो सुनि अपर मुनीश प्रवीना * यहिविध प्रश्नभूपप्रतिकीना ॥

दो०—सुख दुखकर आश्रयकहा, कहत पाप केहि काहिं ।
वहुरि पापकर ध्वंस नृप, होत अहै को नाहिं ॥
कह नृप सुखके थल इते, क्षमा धीर्य्य सन्तोष ।
सत्य अहिंसा वासना, त्याग सदाय अरोष ॥

सो०—अहैं इते दुखठाम, संतत इन्द्रिय प्रवलता ।
आलस आठहु याम, चौर कर्म अरु धूर्तता ॥
हैं अघ तीन प्रकार, कायिक वाचिक मानसिक ।
घात चौर्य्य परदार, हरण पाप कायिक इते ॥

पर निन्दा कटु वचन उचारन * पर अपकीर्ति बढ़ाय प्रचारन ॥
मृषा कथन अरु असत प्रलापा * हैं यह सकल वाचनिक पापा ॥
पर धन हरण अपर जनकेरा * अशुभ चिंतवन करन घनेरा ॥
श्रद्धा विगत धर्म कृति माहीं * मानस पाप कहत इन काहीं ॥
द्विविध पाप कृति बुधन बखाने * जानिकै एक अपर बिनु जाने ॥
जिमि स्वेताम्बर भये मलीना * कीन्हे धौत होत मलहीना ॥
तेहि विध जोइ अजानकृत पापा * सो मिटिजात किहे अनुतापा ॥
पर जेहि भाँति नील पट काहीं * धोवहु कितक होत सित नाहीं ॥
तेहि विध पाप ज्ञानकृत जोई * तासु विनाश कबहुँ नहि होई ॥
पूँछेहु यक ऋषि हे महीपवर * अहैं अधम पदवाचिकितेनर ॥

दो०—कौन मनुज यहि जगत महँ, जियत मृतक अनुरूप ।
सो सुनि यहिविध उतरदिय, परम तत्त्वविद् भूप ॥
मृषावादि द्विज भीरु नृप, वाणिक प्रयत्न विहीन ।
अलस शूद्र कुलटातिया, भ्रष्टाचारि कुलीन ॥

सो०—असत चरित विद्वान, अपढ़ कथक क्रोधी यती ।
जानिय अधम समान, इन सबकहँ पहु गणहुते ॥
आलस प्रिय नर जोय, रहै विरत उद्योग सों ।
जगत माहिं है सोय, जीवन्मृत वाची सदा ॥

पुनियकमुनिइमि नृपप्रतिकहेऊ * भयविहीन को जगमधिअहेऊ ॥
कौन सुखी रहि सकत सदाई * सो सब कहिय महीप बुझाई ॥
कह नरेश जासन जग माहीं * पावत शंक कोइ जन नाहीं ॥
काहू सों तेहि जनहिं सदाई * भय भावना न है मुनिराई ॥
पर गृह वासि सर्प की नाईं * जेहि भय ते सब रहत डराई ॥
उभय लोक मधितेहि जन काहीं * है सक लाहु कबहुँ सुख नाहीं ॥
दूजे कोइ जन यहि जगमाहीं * सबविध सुखी न होइ सकाहीं ॥

यह जग नियम जान सब कोई * दुख पै सुख सुख पै दुख होई ॥
भूलि न करत जो पर अपकारा * ईर्षा जासु सतत परिहारा ॥
जाकर शत्रु मित्र नहि कोई * जो कोइ कर रिपु मीत न होई ॥
प्रीति ताप सो रहित जो रहई * सोसवसबभाँति सुखी जनअहई
यकऋषि कह मनुजन महिपाला * कौन मित्र को शत्रु कराला ॥

दो०—कहनृप जानिय प्रवलरिपु, अवश इन्द्रियन काहिं ।
संयत इन्द्रिय गण सरिस, मित्रअपर कोउ नाहिं ॥
हेतु इन्द्रियन चपलतहि, जीवन वन्धन न्याय ।
अरु तिनकहँ संयम करन, अहै मुक्ति मुनिराय ॥

सो०—जिमिप्रतिविम्वलखाय, निर्मलथिरसरसलिलमहँ ।
परम वस्तु दर्शाय, इन्द्रिय गण थिर भयेतिमि ॥
पूछेहुँ अपर मुनीश, है प्रधान इन्द्रिय मनहि ।
तेहि उत्पति अवनीश, केहि प्रकार ते होत है ॥

वुधि विवेक दोउ पै मन सोई * प्रवल कौन विध सों नृप होई ॥
सो सुनिइमि मिथिलाधिप कहेऊ * स्वयंजात मन संतत अहेऊ ॥
तेहि मनकर विकास मुनिराई * वुधि कारज सन होत सदाई ॥
यथा भटकि मद्यप पथ माहीं * कर्षतनिजदिशि संगिहुकाहीं ॥
बुद्धिहु काहिं मनहु तेहि नाई * आकर्षत निज ओर सदाई ॥
निर्गुण बुद्धि सगुण मन रहई * वुधि प्रशांत मन चंचल अहई ॥
वुद्धि विवेक विराग के द्वारा * होतसतत मनस्ववश मझारा ॥
वुधि विवेक मन मिलन अनूपा * ब्रह्म दरशकर मुकुर स्वरूपा ॥
वुधि स्वेतता कांच मन जानहु * पारद रूप विवेकहि मानहु ॥
पुनि यक ऋषि पूछेहुँ नृप पाहीं * अतिदरिद्रको यहिजगमाहीं ॥
कह नृप सो दरिद्र संसारा * विषय तृषा जेहिमाहिं अपारा ॥
भरिय करण्ड चहै यत वारी * पर न भरतकोइसमयमझारी ॥

दो०—तिमि यावत संसारके, विभव पाइये जोय।
विषय तृषा तबहू नहीं, शांति कोइ क्षण होय॥
जरा जीर्ण ह्वै जाय तनु, तदपि विषय की आश।
दिनपैदिनअधिकातइमि, जिमिसरिता नभभास॥
सो०—पूरण कबहुँ अभाव, होय न विषय प्रलोभिकर।
तेहि अभाव कर नाव, अति दरिद्रता जानहू॥
वहुरि अपर मुनिराय, पूछेहुँ इमि नरनाथ सो।
कहिय महीप वुझाय, कहतसाधु जनकेहिनरहि॥
कह नृप गनिय साधुतेहि काहीं * लखिय इते लक्षण जेहि माहीं॥
जाइ शत्रुकृति निन्दित होई * पर तेहि निन्दा करत न सोई॥
जोइ पीडित ह्वै काहु के द्वारा * पर तेहि द्वेष करत परिहारा॥
अपर केर निन्दा जेहिमाहीं * सोकृति करत भूलि जो नाहीं॥
जोइ लखन कहँ जगत मझारा * करहिविजय सद्गुणहिकेद्वारा
जोइ होय वड़ ज्ञान निधाना * परनिजकाहिं करतलघुज्ञाना॥
जोयस्वमुखनिज सुयशनभाखैं * अपरहु तेन सुनन रुचिराखैं॥
पुष्पनिचयजिमिकछुनहिंकहहीं *दशदिकसुरभितकरियशलहहीं॥
दो०—तिमिनहिंनिजश्लाघाकरत, निजमुखसाधुस्वभाव।
करत अलंकृत भूमितल, कीर्तित कीर्त्तिप्रभाव॥
कुटिल काल गति ते कबहुँ, सुजन सुशील उदार।
होत दुर्दशा पन्न वहु, ह्वै विपन्न परिवार॥
पैजिमि यामिनि आगमन, सूर्य्यकिरणछिपिजाहिं
होत प्रकाशित पुनि प्रयत, प्रात काल के माहिं॥
तिमि सज्जन जन केरयश, रहिकछु कालमलीन।
अति उज्ज्वल वर्ण लहत, होत नितान्त नवीन॥
पूँछयो एक ऋषीश पुनि, तेज पुंज आगार।

कहिय महीपति है कवन, अतिउत्तम व्यवहार ॥
कौनभाव उत्तम जगमाहीं ❋ होय दुखितज्यहिसनकोउनाहीं
कह नृप यह उत्तम व्यहारा ❋ करै न हिंसा कर व्यापारा ॥
जिमि निजतनु लागे आघाता ❋ होत कष्ट दारुण दुखदाता ॥
तिमि आहत पशुकेर शारीरा ❋ उपजत कठिन जानिये पीरा ॥
जिमि निज मरण न चाहतकोऊ ❋ तिमिप्राणान्तचहतनहिंसोऊ ॥
निजहित जानहि ज्यहिव्यपारा ❋ सोइपरकहँप्रियकरहिविचारा ॥
ज्यहिमहँनिज अनहितअनुमानै ❋ सोइ दूजे कहँ अप्रिय जानै ॥
यहै नीति उर अन्तर धारै ❋ निजदुखसमपरदुखहुविचारै ॥
दो०–चितचाहिय निजसाथसब, करैं जैस व्यवहार ।
कारिय आचरण वैसही, अपर संग अविकार ॥
सो०–रहै सरल मन माहिं, विनयभाव धारण किये ।
यहि सम दूसर नाहिं, भाव श्रेयकर श्रेष्ट है ॥

चामर छन्द ॥

विप्रवर्य्य ज्ञानवान एक प्रश्नकीन्ह फेर ।
बोलही न झूठ वैन यत्न कौन याहि केर ॥
भूप उत्तरै दियो विचार युक्त वाहि बेर ।
कीजिये कबौं नहीं प्रणै प्रदान आदिकेर ॥
एक विप्र पूंछेउ मनुष्य कौन से निदान ।
हैं दिखात विश्वमाहिं हीनदीन छीममान ॥
उत्तरै दियो नरेश यों कछुक ध्यानध्याइ ।
जन्म कर्म दोउते लहैं मनुष्य हीनताइ ॥
पै प्रधानकर्म्महीं निदान जानिये न आन ।
नीचयोनिजन्मजोंलह्योमनुष्यबुद्धिमान ॥
निन्दनीय कर्म्म में नहोय किन्तुवर्त्तमान ।

सोप्रशस्त जानिये समस्तसाधुतानिधान ॥
उच्चवंश जन्म पाय जो सदा करै कुकर्म्म ।
सोनस्पर्शयोग्य है अयोग्यनीचत्यक्तधर्म्म ॥
एक और तेजपुंज विप्रफेरि प्रश्न कीन ।
काहुभाँति पावही न उच्चताहि अर्थहीन ॥
विश्वमाहिं यो प्रयोजनीय वस्तुअर्थकाहिं ।
क्यों कहैं अनर्थमूल ज्ञानवान जेलखाहिं ॥
भूपयों कह्यो सुनौ न अर्थ है अनर्थ मूल ।
है अनर्थही अनर्थ मूल पाप सानुकूल ॥

निन्दनीय कर्म्मन के द्वारा * उन्नति चेष्टा भुवन मँझारा ॥
निन्दनीय सबही विधि जानो * अतिअयथार्थअसुखकरमानो ॥
धन संचाप कर्म्महि अनुसारा * है यथार्थ सुखकर निर्धारा ॥
संचित अर्थ अधर्म्महि द्वारा * है अनर्थ कारण सविकारा ॥
ऋषिवर अपर कह्यो तपऐना * यहि प्रकार के उत्तम बैना ॥
अबहिं कह्यो तुमनृप गुणखानी * सारयुक्त उत्तम यह बानी ॥
सद ग्रन्थन कहँ पढ़त पढ़ावत * बुद्धि विमल मानवगनपावत ॥
पर नर अधिक ऐसलखि परहीं * ह्वै विद्वान कुकर्म्म जु करहीं ॥
यहि कर कारण कवन नृपाला * कहहुकृपाकरितुम यहिकाला ॥
कह्यो भूप सुनिये ऋषिराया * केवल लखे ग्रन्थ समुदाया ॥
तिनकर फल कछु नहिं दरशाई * जिमिऔषध लखिरोगनजाई ॥
तात्पर्य्यहि गहिबो फलदायक * सब प्रकार है सुकृत सहायक ॥

दो०—केवल शास्त्राभ्यास कहँ, करत न जानत तत्त्व ।
दृष्टि शून्य दूषित नयन, नर सम लहे जड़त्त्व ॥
घृतहित यदि गर्दभ वधू, दुग्ध मथै नर कोय ।
घृत उपयोगी नहिं लहै, तौ नवनीतहि सोय ॥

दुर्गन्धित विष्ठा सरिस, वस्तुहि तासों होय।
ज्ञानहीन विद्या तथा, कह असार सब कोय॥
सो०—श्लोकहि पढ़ि यक बार, सरल प्रकृति जन सामुहे।
निजशठता अनुसार, चतुर प्रकृति शठ धूर्त्तजन॥
विकृत अर्थ तिनमाहिं, वचन चातुरी सों रचैं।
भ्रम वश करितिनकाहि, साधतस्वीयअभीष्टकह॥
असशठशौण्डिकपद अधिकारी * लीजियमनमहँसुजनविचारी॥
प्रश्न कियो मुनि एक बहोरी * अतिअधीनताविनयनिहोरी॥
आपने अघदुराय बहुमानव * लहत लोक मर्य्यादा गौरव॥
यहि कर कह सिद्धान्त नृपाला * कहिये हमसन परम कृपाला॥
भूपति उत्तर दीन्ह विचारी * सुनिय मुनीश्वर तप बलधारी॥
मानव मूढ़ कुमति हैं जोई * दुरित दुराव करत जगसोई॥
किन्तु अन्त महँ दुरित दुरावा * उनकहँ नष्ट करत यहिभावा॥
छिपहिकलुषनरसनक्यहुक्रमसों * पैन छिपै परमेश परम सों॥
दो०—सर्व ईश सर्वज्ञसों, दुरित दुराये माहिं।
नित प्रति दिन दूनो बढ़ै, ऊनो होवै नाहिं॥
शठ शठता अवलंबि निज, कलुषहि राखत गुप्त।
साधु भाव भानहि करत, भूलि कुकृत जिमिसुप्त॥
सो०—पैजिमि समयहि पाय, राहु जातनिशिकरनिकट।
त्यों कलुषहु समुहाय, पापी दिशि अत्युग्रतनु॥
अनुता पानल सन त्यहि केरा * सञ्चित सुखविनशतबहिबेरा॥
यक ऋषि पूँछेउ तपो निधाना * कर्म्म दैव महँ कौन प्रधाना?॥
नृप बोले जिमि बीज बिनाहीं * उपजत द्रव्य कौनहू नाहीं॥
तिमि तुम कर्म्महि क्षेत्र प्रमानो * बीज समान दैव कह जानो॥
बीजरु क्षेत्र समागमही ते * उपजत अन्न अनेक मही ते॥

तिमिबिन कर्म्म किये जगमाहीं * फल पावहि प्राणी कोउनाहीं ॥
बिन उपयुक्त क्षेत्र कहँ पाये * बीज सफलनहिंकहुँ दरशाये ॥
कर्म्म त्यागि दैवहि आधारा * कछू लाभनहिं कियनिर्धारा ॥

दो०—कर्म्महिके आधीन हैं, देव वृन्द यत आहिं।
दैव स्वयं यहि हेतु कछु, देइ सकत है नाहिं ॥
किन्तु करत शुभ कर्म्मप्रति, प्रकृति प्रवृत्तिहि दैव।
जासों उचित उपाय करि, शुभ फललहिय सदैव ॥

सो०—पूँछेयो मुनिवर एक, सादर सुन्दर बैन कहि।
कहिये नृप सविवेक, कारणयहि कर कौन है ? ॥
नर कृत कार्य्य अनेक, सहज सफल है जात हैं।
होत विफल बहुतेक, वहु श्रमकीन्हेऊ कवहुँ ॥

कार्य्य करन कीं उत्तम रीती * कहहुकृपा करिनृपति स प्रीती॥
कह अवनीश सुनहु मुनिराऊ * कर्म्म करनकर उचित उपाऊ ॥
देश काल अनुकूल विचारी * होनहार विघ्नन कहँ टारी ॥
पुनिस्वशक्तिलखिकार्य्यहिकरही* सो न विषाद जालमहँ परही ॥
यथा नीर काचेघट केरा * क्षण क्षण क्षीणहोतजगहेरा ॥
अरु सुपक्क मृदघट कर पानी * लहतनकबहुँकोउविधिहानी ॥
कर्म्म विफल याही विधि होई * प्रथम विचारे बिन कृतजोई ॥
अरु जो कियो विचार समेतू * होत सफल सोई सुख हेतू ॥

दो०—प्रश्नकियोयकऋषिबहुरि, कहिय महीप सुजान।
सब तीर्थ मैं कौन तुम, जान्यो तीर्थ प्रधान ॥
कह नृप तीनि प्रकार के, बरने तीर्थ पुनीत।
स्थावर अरु जंगल तथा, मानस सुजन परीत ॥

स्थावर गंगादिक अनुमाने * जंगम साधुन नाहिं बखाने ॥
मानस चित्त शुद्धि पहिचानो * सब तीर्थन महँ मुख्य प्रमानो ॥

विन चित शुद्धि विफलसब ऐसे ❋ भस्म माहिं घृत आहुति जैसे ॥
अन्तिम प्रश्न एक ऋषि कीना ❋ यहि प्रकार तपराशि प्रवीना ॥
कौन भाँति लहिये सो लोका ❋ जहँनहिंजन्ममरणअरुशोका॥
भूप कह्यो नर देह अनूपा ❋ अहै सुदृढ़ सुन्दर रथरूपा ॥
ज्ञान सारथी यहि कर जानो ❋ त्यहिथितिथानधर्म्मअनुमानो ॥
ध्वजा दण्ड सन्तोष बखाना ❋ सत्य पताका सरिस प्रमाना ॥

दो०—विषय-निवृत्ति वरूथ है, बुधि विवेक रथ-चक्र ।
कूबर योग विराग हैं, युग सम प्राण अवक्र ॥
प्रज्ञासार समान है, नेमि चरित्रहि जानु ।
जीवहि वंधन रज्जुसम, त्यहि रथ केर प्रमानु ॥
दर्शन पर्शन घ्राण अरु, श्रवण अश्व हैं चारि ।
शास्त्रवोध हयरश्मि है, आत्मा रथी विचारि ॥

सो०—मनुज मुमुक्ष अकाम, योजित करियह रथरुचिर ।
जाहिं परम जो धाम, मग अकाम अवलंबि कै ॥

दो०—सुनि सदर्थयुत जनक के, उत्तर चय मुनिवृन्द ।
नृपहि प्रशंसत सव कहत, धन्य धन्य सानन्द ॥

सो०—गाधि तनय कह वैन, तबअवसर बर पाय कै ।
ज्यहि हित नृप तवऐन, लाये राजकुमार हम ॥
सो यह कारण आहि, जो तव गृह शिवचाप है ।
त्यहि कहँ देखन काहिं, बड़ी लालसा राम कहँ ॥
नृपसनतुम क्यहिकाज, कौशिक ! करतदुरावकहँ ।
अहैं जनक महराज, प्रभुके भक्त अनन्य मति ॥
छिपत न पुष्प सुवास, किये दुराव मलिंद सों ।
तैसेइ कह कृत्तिवास, यह मन महँ अनुमानिये ॥
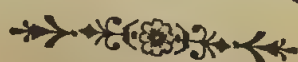
पंचदशसततम सर्ग ॥ ११५ ॥

श्री रामचन्द्रादिक का शतानन्द भवन में अतिथ्य ग्रहण ॥

सुनिकरि मुनिकी मधुरी बानी * गूढ़ अर्थ संयुत रससानी ॥
निजकहँ सुमिरि नृपतिनयकेतू * प्रकृति पुरुष संगम कर हेतू ॥
परमानन्द हृदय अधिकाता * लसतसजलदृगपुलकितगाता ॥
लोचनपथ अदृश्य भइ मिथिला * देहभई प्रति अंगहि शिथिला ॥
अनुपम विभव महीपति काहीं * दीसनलगे दशहु दिशिमाहीं ॥
मुनिगण के परिवर्तन माहीं * विष्णु पारिषदगण दरशाहीं ॥
तेजपुंज रंजित रमणीया * बैठे करपुट करि कमनीया ॥
तिनबिच श्रीपति रमानिवासा * अमित भानु आभा संकासा ॥
पूरणचन्द्र निरादर कारी * सुन्दर अनुपम आनन वारी ॥
कमला कहँ वामहि बैठाये * रत्नरचित आसनहि सोहाये ॥
काम कदन शंकर तिन आगे * ताण्डवनृत्य करत अनुरागे ॥
मधुरी ध्वनि गावत त्रिपुरारी * प्रभु गुणगाथा आनँद कारी ॥

दो०—बीणा वृहती कच्छपी, कलावती ध्वनि मिष्ट ।
अरु महती तितबजिरहीं, बहुलय ताल विशिष्ट ॥
चतुरानन चारिहु मुखन, करत वेद कर गान ।
सनकादिक सविनय खरे, करत परम सुखभान ॥
इन्द्र वायु वरुणादि सुर, अपरापर दिक्पाल ।
दशशिर निधन प्रसन्नमन, स्तवनकरतत्यहिकाल ॥
सुर ललना नव यौबना, भूषण भूषित अंग ।
उत्तरीय उत्तम परम, पहिरे सहित उमंग ॥
चन्दन चर्चित पुष्पचय, पारिजात तरु जात ।

लाजायुत बरसावहीं, श्री श्रीपति के गात ॥
चिदानन्द मय श्री हरि केरी * इमि अद्भुत विभूति नृपहेरी ॥
भक्तिरसाप्लुत सुधि बुधि हीना * हरिपदपद्म माहिं भे लीना ॥
मूल शक्ति सियज्ञान स्वरूपा * राम परम आत्मा अनुरूपा ॥
तिन कहँ जनक बिवेक समाना * प्राप्तभयोत्यहि समयसुजाना ॥
ऐश्वरीय ऐश्वर्य्य निकाया * क्षणमहँ भई तिरोहित माया ॥
नृपति विलोके लक्ष्मण रामा * तेज पुंज रंजित अभिरामा ॥
युत विश्वामित्रादि ऋषीशन * कुँवर किये सन्मुख उपवेशन ॥
मंजुलगात जलज अनुहारा * मृदु मुसकात किशोर कुमारा ॥
दो०—गाधि सुवन प्रस्ताव कह, सुमिरि महीप उदार ।
समयोचित्त वचननदियो, उत्तर याहि प्रकार ॥
सो०—शिवधनु मम गृह माहिं, स्थापित है ब्रह्मर्षि वर ।
पर वह अब मोहिं काहिं, महाअशिवफलदैरह्यो ॥
धनु कारण जामाता केरा * मुख अरविन्द न अबलौं हेरा ॥
ईश निदेश धारि शिर लीन्हा * हमयह दृढ़ भीषणप्रणकीन्हा ॥
जो कोइ हरकर चांप चढ़ै है * सो अयोनिजा जानकि पैहै ॥
पै असीम साहस अस नाहीं * देखि परै भट त्रिभुवन माहीं ॥
जो विक्रम शुल्का सीताकर * गृहण करि सकै करइन्दीवर ॥
सहसर्न सुभट महाबल भीमा * बुधि बल विक्रमसाहससीमा ॥
गुणरोपण की कहिये काहा * छ्वै न सकै धनुसहि नरनाहा ॥
त्यहिदुहिता कर परिणयकाला * पहुँच्यो आनि समीपकृपाला ॥
पै प्रण-पूरण-कर बर लाहू * निपट दुराशा मम मुनिनाहू ॥
सुनि नृप वचन मनहिमुसकाने * नृपदिशिलखि मुनिवचनवखाने
है अवशेष एक यह काजू * ज्यहिहित इत आएहमआजू ॥
यह कामना महीप तुम्हारी * द्रुत पूरण ह्वै है सुख कारी ॥

योगी जनक समुझि मुनिबैना * बोले बचन श्रवण सुख दैना ॥
मुनि! तववचनविफलकहुँनाहीं * विदित बातयहत्रिभुवन माहीं ॥
तव आशीष पाय मुनिराजू * प्रण पूरण ह्वै है मम आजू ॥
असमोहिं जानि परत जामाता * मिलि है धीर बीर मृदुगाता ॥

दो०—कौशिक कह्यो नृपालअब, शिवधनु लावन माहिं।
क्यहिहितकरतविलम्बतुम, उरधर संशय काहिं ॥

सो०—शम्भु चाप दिखराय, कौतुक भूप किशोर कर।
हरिये मिथिला राय, योगनिरतनिमिकुलकमल ॥

कह्यो जनक इन कुँअरन केरा * लखिमुखचन्दसुखदयहिबेरा ॥
चित चाहत दारुण प्रण त्यागी * ब्याहहु इन्है सुता अनुरागी ॥
नहिं जानिय क्यहिहेतुद्विजेशा * निदरि शिवापतिकेरनिदेशा ॥
इन कुँअरन के आदर माहीं * अति अनुरक्त चित्तदरशाहीं ॥
हँसि बोले मुनि मनहिं विचारी * मिथिलानाथ योगबलधारी! ॥
निज मनही सों यहि कर हेतू * बूझहु निशानाथ कुल केतू ॥
ह्वै है तव न कबहुँ प्रणभंगा * सत्य गनहु यह बात अभंगा ॥
विश्व कर्म्म निर्म्मित अतिघोरा * शंभु शरासन कठिन कठोरा ॥

दो०—दक्षयज्ञ विध्वंस कृत, त्रिपुर दहन उत्पन्न।
दर्प्पसहित ह्वै है दलित, राम भुजान विपन्न ॥

सो०—पूरण ह्वै है आश, आशु तुम्हारी त्यहि समय।
सुनि नृप कहे सहास, मुनिवरसनसविनयवचन ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

अस होन ते महि-बासि मानव मनहि विस्मय आनि हैं।
तव शिष्य कहँ अद्भुत अचिन्त्य पराक्रमी अनुमानि हैं ॥
अब निवेदन यक हमारो यह अहै अति प्रीति सों।

सिय ब्याहि देहौं धनु चढ़ावत रामकहँ कुलरीति सों ॥
पै यकान्तहि करन योग्य न काज यह मुनिवर ! अहै।
खल जीह विफलहु सर्व्वदा निन्दा परायणही रहै ॥
यहि हेतु मोर विचार अस है जौन आये भूप हैं।
मम मख लखन हित इत अमित सुकुमार रूप अनूप हैं ॥
तिनकहँ एकत्रित करि करहुँ महती सभामुनिराज ! मैं।
अरु घोषणा नगरहि करावहुँ यहि प्रकारहि आज मैं ॥
जे मम सुता परिणय लखन आये महीप कुमार हैं।
ते काल्हि मख निरखन सभा महँ आय मनवाँछितलहैं ॥
यहि हेतुसन मुनिराज आज सशिष्यमुनिगण सँगलिये।
मम प्रिय पुरोहित के भवन महँ बास सुखसों कीजिये ॥
नृपउक्तिसुनि मुनिवर सयुक्ति प्रशंसि अनुमोदन दये।
तब मुनि शतानन्दहि जनक एकान्त भवनहि लै गये ॥
लै जाय तहँ कह यह बचन बैदेह नृप मुनिराव सों।
अविदित तुमहिं नहिंकछु कृपानिधि योगशास्त्रप्रभाव सों ॥
यक तदपि गूढ़ रहस्य मैं सूचित करहुँ हित भावते।
आये भवन मम एकदिन देवर्षि हरिगुण गावते ॥
पूजन अनन्तर माहिं नारद इमि कह्यो एकान्त मैं।
सूचित करहु तब अभ्युदयमययक कथा महिकान्त ! मैं ॥
परमेश परमात्मा त्रिविक्रम अवनि महँ हैं अवतरे।
श्री राम नाम कृपानिकाम ललाम मानव तनु धरे ॥
दशमौलि मारण आदि सुरकार्य्यन सँवारन कारनै।
अरु भक्त अनुरक्त न उपरि करि उर अनुग्रह धारनै ॥
अवधेश दशरथ के भवन लिय जन्म चारिहु अंश ते।
शोभित दिवाकर-कर-कदन प्रकटे दिवाकर वंश ते ॥

नृप दशरथ के गृह शुभ शीला * बिलसतलसतकरतनवलीला ॥
तब गृह प्रकृति रूप जग माता * लियअवतार सियामृदुगाता ॥
यहिहित सावधान ! अतिधन्या * रामकरहि अर्पेंहुनिज कन्या ॥
परमात्मा दशरथ सुत रामा * प्रकृतिपरिग्रह-योग्य ललामा ॥
अपर सीम कर कर इन्दीवर * गहिन सकैत्रिभुवन महँकोउनर
तब ते हम जानत अति अमला * सियाअहैहरिकामिनिकमला ॥
निशिदिनअबलगिममनमाहीं * चिन्ता महती हती सदाहीं ॥
कब जग जननि जानकीकाहीं * अर्पणकरिजग पितुकरमाहीं ॥

दो०—करिहौं अपने जन्म कहँ, सफल होइ कृतकाज ।
आज मनोरथ मोर सोइ, पूर्ण भयो महराज ॥

सो०—लिये ऋषिगणन साथ, धनु दर्शन करमिस किये ।
सहित लखण रघुनाथ, कौशिक मुनि आये इतै ॥

आत्माराम राम अभिरामा * लखणकुँअर बलविक्रमधामा ॥
दोउ भ्रातन ऋषि वृन्द समेतू * निज गृह लै जाइय कुल केतू ॥
यथा उचित आदर अधिकाई * करिये पूजन अरु पहुनाई ॥
घोषित करहुँ इतहि मैं जाई * सिय परिणय वार्ता सुखदाई ॥
उपयोगिनि धनु भंजन काजू * रंग मंच रचना कर आजू ॥
देहुँ निदेश शिल्पिगण काहीं * यहसुनि शतानन्द मनमाहीं ॥
परमानन्द त्यहि समय सरस्यो * विकसितमुखइन्दीवरदरस्यो ॥
बोले शतानन्द मतिमाना * सत्यभयो ममकृत अनुमाना ॥

दो० -किन्तुसभामहँ करिप्रथम, प्रणघोषित नयभूप ।
गुप्त राखि यहिभाव कहँ, मम अनुमति अनुरूप ॥

परामर्श करि याहि प्रकारा * तेज पुंज युत रवि अनुहारा ॥
आय गये मुनि वृन्द समीपा * मुनिअरुजनकयोगिअवनीपा ॥
तब ऋषि कौशिक कृपानिकेता * राम लषण मुनि वृन्द समेता ॥

लै बिदाय नृपसन त्यहि काला * शतानन्द गृह गये कृपाला ॥
इत मन्त्रिन कहँ दीन्ह नरेशा * सिय बिवाह घोषणा निदेशा ॥
अरु यक सुन्दर सभा सोहाई * निर्म्मित करन कह्यो हरषाई ॥
राज पुरुषगण तुरत बुलाए * अमित कर्म्मचारी तहँ आए ॥
तिनकहँ कार्य्यभार प्रत्येका * अर्पण कीन्ह एक कहँ एका ॥

दो०—धाये चहुँ दिशि तब अमित, अनुचर सह आह्लाद ।
पूरिगयो मिथिलासकल, ढका परह निनाद ॥
कोलाहल नगरहिमच्यो, डगर डगर नरवृन्द ।
फिरत मोद माते महा, विकसितमुखअरविन्द ॥

रामगीती छन्द ॥

त्यहि समय शतशत राज अनुचर दुन्दुभीन बजाय ।
प्रत्येक पल्ली माहिं घोषित करत यहि विधि जाय ॥
आगामि शुभ दिनमाहिं शोभन राजकुँअरि बिवाह ।
मंगल करण सम्पन्न ह्वै है विधि सहित सउछाह ॥
मुनि कुशिक युत अरु नृपति की बार्ताभई ज्यहिठौर ।
मुनिगण शतानन्दादि बिननहिं जायसक तहँ और ॥
अतएव अविदित रह सबन नृप के हृदय कर भाव ।
औचक सिया परिणय श्रवण करि प्रजागणसहचाव ॥
विस्मित परस्पर यों कहन लागे सबैमिलि बैन ।
उत्तम भयो जो भूमि पति की भइ सुमति सुख ऐन ॥
त्रिपुरारि अबधनु आपनो वृष भेजि लेहिं मँगाय ।
जो राम की अभिराम मूरति भइ प्रकट इत आय ॥
त्यहि सामुहे शिवचाप कस ! कस भूप कृत प्रणघोर ।
हैं मोहनीमय मंजुरूप अनूप भूप किशोर ॥
हम प्रथमही कीन्ह निश्चय लखि कुँअर सुकुमार ।

धनुभंग प्रण नृप भूलि जैहैं निरखि कै छबिसार ॥
राज कर्म्म चारिहु मनमाहीं * करम सतर्क तर्कणा काहीं ॥
प्रकृत मर्म्म अवगत क्यहु नाहीं * चकित चित्त सबही दरशाहीं ॥
यहि अवसर शत २ मनुजेशा * आये जौन जनक के देशा ॥
ते औचक सुनिसियपरिणयकहँ * भये यकत्रित चिन्तितमनमहँ ॥
तर्क बितर्क अनन्तर सबही * यह सिद्धान्तकियो मनतबही ॥
निश्चय धनुषभंग प्रणमाहीं * अबमिथिलेशनिराशलखाहीं ॥
अरु जबनिजप्रण पूरण कर बर * मिलबअसम्भव है त्रिभुवनबर ॥
तौ अवश्यही राज कुमारी * है है पतिम्वरा सुकुमारी ॥

दो०—असमनमाहिं विचारकरि, भये मुदित नरपाल ।
आशापर वश अंगनिज, लखिसगर्व्वत्यहिकाल ॥
शतानन्द सानन्द इत, कौशिक कर सत्कार ।
सादर कीन आधीनता, ठानि शास्त्र अनुसार ॥

सो०—निशा काल गम्भीर, भयो यकत्रित भे तबै ।
कौशिक मुनि तपबीर, शतानन्द संकेत सन ॥

गदगद गिरा कहे इमि बैना * शतानन्द मुनि तब तपऐना ॥
धन्य भाग्य तव अहैं मुनीशा * जिन्हे कियोगुरु जग गुरुईशा ॥
विदित भयो हमक़हँ यहिकाला * चक्रपाणि प्रभु परम कृपाला ॥
रामरूप दशरथ के भवनहि * लै अवतार ब्रह्म विहरत महि ॥
अबकछु मम दुःखितजननीकर * कहिये चरिततेजधरमुनिवर ॥
मम पितु भये क्रोध आधीना * दारुण शाप मातु कहँदीना ॥
रामरूप हरि बिन है नाहीं * मुक्त करन शक्ती कोउमाहीं ॥
श्रीपदपद्म धूरि सुख दाई * कहा अनाथ मात मम पाई ? ॥

दो०—कीन्ह्यो अंगीकार पुनि, पिता मोर कै नाहिं ।
तवमुख ते यह सुनन की, इच्छा बड़िमोहिं काहिं ॥

सो०—राम चरण रज पाय, धन्य भई तिहु लोक मैं ! ।
दीजै नाथ ! बताय, मम जननी वृत्तान्त यह ॥
यह सुनि मुनिकौशिकतपऐना ❋ बोले सह सनेह मृदु बैना ॥
बत्स ! कह्यो जस तुम इत आई ❋ वैसिहि घटना भई सोहाई ॥
तब पितु वचन अमोघ सदाहीं ❋ मृषा त्रिकाल ह्वै सकत नाहीं ॥
तब पवित्र जननी कहँ पाई ❋ ग्रहण कियो गौतम हरषाई ॥
गूढ़ मर्म्म पै जो तुम जानेहु ❋ साधारण प्रति सो नबखानेहु ॥
देव रहस्य अगम्य अपारा ❋ ताहि प्रकाशनकरअधिकारा ॥
देव निदेश बिना जग माहीं ❋ हमहिं तुमहिं काहू कहँनाहीं ॥
कृत्तिवास कह हृदय विचारी ❋ हैसयुक्तिमुनि ! उक्तितुम्हारी ॥
दो०—पै कोउ कर महँ दामिनी, दीपति द्युति सम्पन्न ।
रत्नज्योति अँधियार महँ, राखिसकत प्रच्छन्न ॥

षष्टदशसततम सर्ग ॥ ११६ ॥

रङ्गमञ्च वर्णन ॥

दो०—उठि प्रभात देखेहु सबन, यक समभूमि मझार ।
राजशिल्पिगण निर्मयो, रंगमञ्च छविसार ॥
परिखायुततेहिचतुर्दिशि, रुचिर मण्डलाकार ।
विविधचित्रचित्रितलसत, अति उतंग अकार ॥

नरिन्द्र छन्द ॥

तेहि अभ्यन्तर माहिं चारिहु दिशि सुन्दर सुविशाला ।
सोहत पातिन पाँति थंभ चय खचित नीलमणि जाला ॥
मौक्तिकमाल अलंकृत अगणित मंचभवन वर भ्राजैं ।
जिनकर शिल्प निपुणतालखि कै देव शिल्पि गण लाजैं ॥

थंभन के चारिहू ओर मधि रजत सुवर्ण विमण्डित।
उज्वल नागदन्त श्रेणी युत अस्तर क्रम सों शोभित॥
अति सुविचित्र चित्र मंचन प्राचरिन माहिं सुहाई।
तेहि तट सुरभित सुमन वेल की अतिसुन्दर छविछाई॥
द्वारन द्वारन चारु पताका मणिगण जटित चकासित।
विविध वर्ण के शिलापट्ट सों कुट्टिम महि उद्भासित॥
चित्रांकित रोमज पट निर्मित अति चिक्कण सुखदाई।
बिछे उत्तरच्छद तिन मधि जहँ परत चरण बिछलाई॥
अध चन्द्र आकार मञ्च सब दृष्टि रोध कहुँ नाहीं।
वर सोपान मंच रोहन हित लसत यथा थल माहीं॥
पँतिन पाँति मंच के यकदिशि सुर विमान की नाईं।
पृथक पृथक नृपगण बैठनहित बने भवन समुदाई॥
उनमन्दिरन माहिं अति सुन्दर आसन बिपुल बिछाये।
सजे पुरट पर्य्यंक त्रिपद पै पुष्पस्तवक सुहाये॥
निर्मल मिष्ट पानरसन पूरित कंचन कलस सुहावन।
धरे यथाथल सहित मणिनमय पानपात्र मनभावन॥
राजमराल मालसम यकदिशि पाँति पाँति अभिरामा।
शोभित अंतः पुरी तियन हित सुधा धौत जहँ धामा॥
तदुपरि खचित विविध मणि मुक्ता सुन्दर केतु समेतू।
उच्च उच्च वलभी परिशोभित भूप भामिनिन हेतू॥
मरकत मय प्रति द्वार द्वार पै लटकत सुवरण धारा।
उड़त खचित मणि हेरिपवनिका महँ उर यह होतविचारा॥
मनहुँ रत्नगिरि पक्षवान ह्वै नभ महँ करत विहारा।
विविध प्रयोजनीय वस्तुन सों सज्जित सब आगारा॥
मंचावलि के निम्न भागमहँ वर आस्तरन समेतू।

काष्ट रचित अगणित आसनथित पुर दर्शकगण हेतू ॥
पर ते सब यहिविध कौशल सों बिछे उचित थलमाहीं।
जासों गमनागमन केर सङ्कोच कोइ दिशि नाहीं ॥
रङ्गभूमि के चतुर्दिशाथित फटिकस्थंभ माभारा।
भूषित सुरभित कलिन ललित सुम माल अनेक प्रकारा ॥
रंगभूमि के मध्य भाग मधि चतुष्कोण सुविशाला।
भ्राजत अश्मसार मय वेदी जड़ित विविध नग जाला ॥
तदुपरि जगमगात चन्द्रानय जेहि लखिजानु दिनमाहीं।
निज द्युति सों करि रह्यो पराभव चन्द्र भानुप्रभ काहीं ॥
क्रमशः कछुदिन चढ़े मनोरम नगर माहिं चहुँघाई।
आनँद ध्वनि पुरवासि गणन कर लाग्यो देन सुनाई ॥

दो०–योग ध्यान साधन निरत, जेहिविध सिद्धनिकाय।
मुद प्रमत्त ह्वै जात हैं, परम पदारथ पाय ॥
तिमि परमाराधिनी कर, परिणय समय निहारि।
भये मगन पुर नारि नर, आनँद उदधि मझारि ॥

सो०–घंट शंख मुरचंग, डिंडिम दुन्दुभि घूंघरी।
भेरी डंक मृदंग, लगे वजन चारिहू दिशि ॥
भूषण वसन सवाँरि, दल के दल पुरवासि गण।
महामोद उर धारि, चले रंगशाला लखन ॥
तेहिशुभसमयमझारि, सुघर रंग शाला रुचिर।
रत्नाकर अनुहारि, रहसुहाय निधिचयसहित ॥

दमकन मंचन हीरक ऐसे ❋ छलकपयोधि वारि कण जैसे ॥
फर फर उड़त केतु वहु रंगा ❋ सो विभात जनु तरल तरंगा ॥
विविध वाद्य निधि गर्जन नाई ❋ फेन जनन उष्णीष सुहाई ॥
दोउ तट इत उत मनुज समाजा ❋ बड़ बड़ मंच द्वीप सम भ्राजा ॥

रंग भूमिदिशि नरन पयाना * सिन्धुगामिनीसरित समाना ॥
राज पुरुषगण सहित उमंगा * कृत सुवेश चढ़ि तरल तुरंगा ॥
कर्मठ राज भृत्य गणद्वारा * रहे शोधन कराय पुरसारा ॥
हाट बाट सब स्वच्छ कराये * सबथलसुरभित वारिसिंचाये ॥
सोह घरन पै केतु विशाला * सज्जित द्वारकलस सुममाला ॥
गृह तोरण पै मुद उपजावन * बाजत मंगल वाद्य सुहावन ॥

सो०—मंडित सुवरण साज, मेरु शृंग इव तुंगतर।
ध्वजाराजि रह भ्राज, सकलराजपथ उभयदिशि ॥
पट मण्डप छविसार, चारु सरोरुह नगर सर।
दामनाल अनुहार, सोह मार मन हारि कहुँ ॥

दो०—चक्रदोल बहु भाँति के, शोभित ठामन ठाम।
थलन थलनमधि परिलसत, धारायंत्र[1] ललाम ॥
गायक वादक वन्दिगण, मागध सूत निकाय।
निज निजकृतिते जहँ तहाँ, सुजनन रहेलुभाय ॥
इतहि सुधेच्छुक दनुज दल, सरिस महीपति वृन्द।
करन लगे सिय लाहु हित, काय वेश सानन्द ॥

मनस कलुष दिशि दृष्टि निवारी * भूषहिं तनु वर भूषणधारा ॥
केशचिंत तजि सहित हुलासा * कोइकोइकरहिं केशविन्यासा ॥
विमुख नरोत्तम प्रेम सो होई * नर सुन्दरहि आदरहिंकोई ॥
उमग चाव ह्वै भाव विहीना * हावभावमधि कोइचितदीन्हा ॥
त्यागि हिरण्य नाभ प्रभुताई * रुचिहिरण्यदिशि कोइप्रकटाई ॥
यहिविध नृपगणहृदय मलीना * संयत रहित अवर वर हीना ॥
यतन सहित वर वेश सँवारी * वर्जित छत्र छत्रशिर धारी ॥
तजितजिश्री दातादिशिध्याना * निजनिजकहँश्रीयुतकरिज्ञाना ॥

१–फोहारा। २–विष्णु। ३–महादेव।

चढ़ि चढ़ि तरल तुरग गज याना * रंगभूमि दिशि कीन्हपयाना ॥
मानहुँ करन सिंह मख लाहू * गमनेहु जम्बुक दल सउछाहू ॥
दो०—उतप्रभात कृति प्रातक्षण, करि विदेह महिपाला ।
शशिकरइवसितपटवसन, पहिरिसुमुरिशशिभाल॥
रंगभूमि दिशिकियगमन, सहित सचिवसुधिव्रात ।
बहुतकतनु रक्षक सुभट, चले अग्र पश्चात ॥
सो०—कृष्णाजिन परिधान, स्वर्ण दण्ड कुण्डी गहे ।
करत मधुर श्रुतिगान, चले संग आचार्यगण ॥
अन्तःपुरी मझारि, जनक भामिनी सुमति[२]कर ।
लहिअनुमतिछविसारि, सुमुखिराज कुलवधूगण ॥
भूषि रतन मणि भूषण नाना * कारुकार्य्य पट[१]करि परिधाना ॥
भानु भास जित सुघर नृपाना * अश्वयान कर्णी[३]रथ नाना ॥
चढ़ि चढ़ि हृदय प्रमोद समेतू * चली सभाछवि दर्शन हेतू ॥
यान समूह घेरि चहुँपासा * अगणितरक्षकधृतअसिप्रासा ॥
चढ़े मरुत गतिवान तुरंगा * चले हृषत हय देत उछंगा ॥
इमि क्रमशः रंगभूमि मझारी * विनु सँभार भीर भई भारी ॥
सिय सहचरिन इतहि महरानी * बोलि नेह युत कह इमिवानी ॥
तुम सब जाय सियहि हनवाई * करि सुवेश लावहु ममठाँई ॥
अस कहि स्वयंरीति अनुसारा * लगीमाँगलिक कृत्य मझारा ॥
उत कौशिक सानुज रघुनन्दन * सरितगाहिकरिसन्ध्यावन्दन ॥
दो०—रहे राजि तेहि समय महँ, राज सचिव तहँ आय ।
रंगभूमि दर्शन निमित, कह्यो चलिय मुनिराय ॥
राज सचिव के वचन सुनि, अतुल तपोवलखानि ।
ऋषिकौशिककहँविहँसि कै, चलियरामसुखदानि॥

१—रेशमी । २—जनकराजपत्नी (कालिका पु. ३८अ.) । ३—स्त्रियों के चढ़ने की गाड़ी ॥

मन्दर इव शिव चाप युत, जनक राज निधिरूप।
सभा सम्भवा श्री[१]दरश, करहिं सुचारु अनूप॥
कहिय लखण प्रियप्राणअधारा * काविचार याहिमहिं तुम्हारा॥
कह कर जोरि लखण हे स्वामी * हैं अग्रंज[२] कर हौं अनुगामी॥
कहहिं प्रथम निज रुचि तेहिहेतू * यह जानिय गुरु तपोनिकेतू॥
इनहीं के आधीन गुसाँई * मोर शेषकृ[३]ति अहै सदाई॥
तब राजीव नयन धनु पानी * गुरुप्रतिकह्योविहँसिइमिबानी॥
जलनिधि मन्थन सों मुनिराई * नहिं केवलहि रमा प्रकटाई॥
तेहि अवशेष माहिं विकराला * विष उमड़न कर शंक कृपाला॥
तासु हेतु यह उर अनुमाना * शिव धनुकर कीन्हे अपमाना॥
चण्ड तेजमय खण्[४]डपरशु कर * पकटी रोषानल रूपीगर॥
कहमुनिविहँसि ख्यात यहअहई * न्या[५]यते दम्भ[६] पराजय लहई॥
इमि सानुज रघुनायक मुनिवर * करत वारतालाप परस्पर॥
पुनि नृप सभा विलोकन हेतू * भे प्रस्तुत मुनि वृन्द समेतू॥
दो०—गमने कौशिक सभादिशि, लै दोउ राज किशोर।
ब्रह्म तेज मय ऋषि निचय, चले घेरि चहुँ ओर॥

सुगीती छन्द॥

सो छबि निरखि उरमाहिं भावत मनहुँ दिनकरसुधाधर।
प्रज्वलित हुत भुक ज्वाल वेष्टित रहे क्षिति ऊपर विचर॥
सुखमा सदन श्रीरमनकर मूरति सुरन मुनि मन हरन।
पुनराय पुरजन मगनमन दर्शन ललकि लागे करन॥
तिन प्रभूकर सुविशाल उर कमला निकेतन मनोरम।

१–सौन्दर्य्य अथवा लक्ष्मी। २–विष्णुनाम विशेष व ज्येष्ठ भ्राता। ३–छ्यर्थसंयुक्त। ४–महादेव व परशुराम का नाम विशेष। ५–विष्णु का नाम विशेष। ६–महादेव का एक नाम (महाशि. पु. ७१ अ. महाभारत अनु. पर्व १७ अ.)

वर वदन शोभा पुंज जनु सौंदर्य्य पानके पात्र सम ॥
सुन्दर मनोहर कर युगल आश्रद लोकप निकर कर।
अरविन्द जनु पद द्वन्दशुचि सुर वृन्द जासु मलिन्दवर ॥
निज प्रभा सन नव धन वरन पटपीत धारन श्रीरमन।
किय सायधन रंजित हरित मरकत कुधर करद्युतिहरन ॥
तिन सरल दृष्टि सुचारु मृदु मुसकानि अनुपम मनोहर।
वरसत मनहुँ आनन्द चय पुर नारि नर के हृदय पर ॥
पुरजन लखहिं जब ऊर्द्धदिशितव नीलजलज केकोषवत।
प्रभुकर अरुण अधरोष्ठ अरु सुम कुन्द इव विहँस तलखत ॥
जब निम्नदिशि हेरहिं तबहिं पदकमल के नखगर प्रयत।
वरअरुणमणि के सरिस जगमग करत सुन्दर लखिपरत ॥
यहि हेतु पुरजन प्रभूकर सर्वाङ्ग शोभा लखत कहँ।
पुनिपुनि कबहुँ ऊरध निहारत कबहुँ हेरत निम्नमहँ ॥
पर यक समयमह निम्नऊरध उभयदिशि नहिं लखिपरत।
यहिनिमित सो सुख लाहुहित भे सकल पुरजन ध्यानरत ॥

दो०–उतहि सीयकर वामभुज, खंजन गंजन नैन।
बार बार फरकन लगे, सुभग सुमंगल दैन ॥
तेहिक्षणयकसियसहचरी, रघुवर दर्शन पाय।
लगी कहन मुद सों भरी, आशु सीयढिग आय ॥

सो०–यदिरुचिहोयतुम्हारि, श्यामशरद विधुलखनकहँ।
तौचढ़ि आशु अटारि, करहुसफल निजनयनमन ॥
मनोहारि सुकुमार, भूपति दशरथ के तनय।
आये नगर मझार, मुनिवर कौशिक संग महँ ॥

ते यहिक्षण रँग शाला काहीं ❋ रहे जाय कौशिक सँगमाहीं ॥
तिनके रूपराशि सो आली ❋ रहीछाय पुरमधि उजियाली ॥

सखि अबलग मन प्राण हमारे * रहे सतत आधीन तुम्हारे ॥
जब ते श्याम कुवँर छबि हेरे * गय लागि सँग फिरत न फेरे ॥
अबतेहि मनकर फिरन उपाई * अहै एक सो कहत बुझाई ॥
यदि समवस्तु योजना माहीं * चतुरविरंचि करहिंत्रुटिनाहीं ॥
पर विपक्ष पञ्चानन जाही * का करिसकत अहैविधिताही ॥
परेहु बूझि यहि समय मझारी * त्रिपुरारी साचुहि त्रिपुरारी ॥
नतु निहारि अनुपम संयोगू * मुदमत होत तिहूं पुर लोगू ॥
प्रेम मगन हमहू दिन रैना * हेरति हिय चोरहि भरिनैना ॥

दो०—यद्यपि चिन्मयि रूपिणी, विश्वभरणि जग मात ।
वैदेही निज चित्त महँ, सकल रहसरहिं ज्ञात ॥
परलीला विस्तार हित, निजकहँ अवनिमझार ।
प्रकट होनकरसुरति करि, कह अजान अनुहार ॥

सो०—सखितव वचनललाम, समुझिपरेहु कछुमोहिनहिं ।
कहिय काह है नाम, तवश्यामलशशिसरदकर ॥

कहसहचरि सो शशि सुखदाता * रामनाम सों जगमधिख्याता ॥
प्रभुकर नित्य नाम सुखदाई * सुनतहिसिय सहचरिसमुदाई ॥
भई छकित निस्तब्ध महाना * मानहुँ कीन्ह सुधारस पाना ॥
जेहि विध वीज क्षेत्रवर माहीं * परे उगे विनु रहि सकनाहीं ॥
तिमिसहचरिगणकेसियशोभित * हृदयक्षेत्रमधि नामवीजनित ॥
परत उग्यो शुचि प्रेम अपारा * तनुगदगद दृगवह जलधारा ॥
यहवद संतत संत सुजाना * सबतियप्रकृतिके अंशसमाना ॥
तेशिखवश निजप्रकृति विसारी * विचरहिं इतरजीव अनुहारा ॥
परशुचि भक्ति नेह आचारा * भ्राजत तिन उर सकलप्रकारा ॥
स्वच्छवस्तु जिमि विनहिप्रयासू * कर्षत सहजहि दिपत प्रकाशू ॥
लहि सुयोग तिमि तिय उरमाहीं * भगवत भक्ति नेह प्रकटाहीं ॥

बहुरि सकल सहचरी सयानी * सियप्रतिकहनलगींइमिवानी ॥

दो०–हेसखि सुनतहिनामजेहि, रहत स्ववश चितनाहिं ।
कोन दशा तव होइ है, हेरतही तिन काहिं ॥
सहजचपलचिततियनकर, यह मम सत अनुमान ।
नृपकुवँरहिलखिअरपितेहि, दैहो जिन मन प्रान ॥

सो०–परसखि तवपितु केर, दारुण प्रण दारुण हृदय ।
बाधक होइ घनेर, तव मनोर्थ सिधि होनमहँ ॥
यातेसखि तिनकाहिं, अवलोकन हितजाहु जनि ।
नतुबनि परिहै नाहिं, नारि धर्म रक्षा करन ॥

रोला छन्द ॥

यह सुनि मृदु मुसक्याय कह्यो मिथिलेशकुमारी ।
सुजन आश पूरिवो सहजही प्रकृति हमारी ॥
यहिक्षण ममप्रिय सखी केर यह है मन कामा ।
वेगि अटा चढ़ि करहुँ राम दर्शन अभिरामा ॥
पर यह निश्चय जानिलेहु निज निज मनमाहीं ।
कवहुँ सती आचरण त्यागिसक जानकि नाहीं ॥
असकहि हुलसित हिया सिया सखिवृन्द समेतू ।
चली स्वनितया श्रमद रामके दर्शन हेतू ॥
राजमराल समान करत श्रीपद संचारा ।
चढ़ि सुवर्ण सोपान गईं वर अटा मझारा ॥
रतनआभरण भुषित तड़ित जित सियभुजवामा ।
रह सुहाय यक सुमुखि सखी के कंठ ललामा ॥

१–विष्णुनाम विशेष । २–द्व्यर्थ संयुक्त पद । प्रथमार्थ "मैं सती धर्म से कदापि विच्युतनही हो सकती । अपरार्थ" भगवती दुर्गाका भी अपरनाम जानकी है और सती व भगवतीअभिन्न हैं ॥ यहांपर श्री वैदेही ने प्रछन्नभावसे निज प्रकृत तत्व ज्ञापित किया (भगवती सहस्रनाम द्रष्टव्य) ॥

सो निहारि यहि भाँति होत अनुभव उरमाहीं।
मानहु किये निविष्ट अर्द्ध विधु रोहिणि काहीं ॥
तेहि क्षण सियकर चारुरूप माधुरी अगारा।
भई अमित विधि बुद्धि तुच्छ निज रचन निहारी ॥
दीप्ति दामिनी दाम वहुरि माया मयि वामा।
महि उत्थित जगधातृ मूर्तिमति क्षितिअभिरामा ॥
हियकर कर सृजिता ललित हेमभ वर वाला।
सिय तुलना मधि तुच्छ होन लागे तेहि काला ॥
तेहि क्षण जगवन्दिनी जनक नन्दिनि हुलसाई।
कमलारूप अनूप सोहिं निज कहँ प्रकटाई ॥
रक्त रागरंजिता शुभ्र कलिका श्रेणीजित।
विम्वाधर द्युति लसित अद्धरदचयकरि विकसित ॥
मन्द मन्द मुसिकात राम दर्शन अनुरागीं।
निज प्रभुकर आगमन वाट अवलोकन लागीं ॥
मायातीतहि जोय हास मायावश कारी।
सो केहि विध सकं आय कविन कल्पनामझारी ॥
हेरेहु कछु क्षण माहिं सहचरिन दीठि उठाई।
कृष्णाजिन परि धान अग्र कौशिक मुनिराई ॥
तेहि पछारि छवि सारि राम नव नीरद गाता।
वदनु स्वर्ण द्युति हरण लखण राघव लघुभ्राता ॥
दुहू ओर ऋषि वृन्द आय रहे यहिदिशि माहीं।
प्रभुछवि लखि यहिभाँति भयोअनुभवतिनकाहीं ॥
मानहुँ रजनी दिवस मध्य सन्ध्या छवि राशी।
अर्द्धस्फुट तारका राजि वेष्टित रह भासी ॥
जब क्रमशः भे निकट सखिन तबंलख्योरह्योफवि।

नवदूर्वादल सरिस श्याम अभिराम राम छवि ॥
दो०—तेहिक्षणमनकल्पितसखिन, सो सन्ध्या मनहारि ।
जनु परणित भा गाढ तर, वर शर्वरी मझारि ॥
अरु विदेह नन्दिनी जनु, पूर्ण कलाधर न्याय ।
तेहि रजनी के हृदयमहँ, आशु विराजीं जाय ॥
सो०—यद्यपि तेहि क्षण माहिं, रामदरश अनुराग सिय ।
प्रकटन दीन्ह्यों नाहिं, तदपि लाज आवेश ते ॥
रक्तयादि लतिका अनुहारी * गईसकुचि मिथिलेश कुमारी ॥
जब सिय भवन निकट रघुराई * पहुँचे मुनिन सहित रघुराई ॥
तब रघुराज विदेह ललीके * मिले परस्पर लोचन नीके ॥
उभय उभय के हृदय मझारा * कीन्ह प्रवेश नयनपथ द्वारा ॥
रखि सियमूर्ति हृदय रघुराई * बढ़े अगारि मन्द मुसकाई ॥
भक्ति समेत राम लघुभ्राता * कियउरमधिसीतहिप्रणिपाता॥
होइ मुग्ध इव सिय सखि सारी * राम सीय कर रूप निहारी ॥
दमकत मरकत मणिवत रामा * कनक वरणि वैदेहि ललामा ॥
उभय मिलन मधि शंसयजाना * तजत ऊष्णनिश्वाससयानी ॥
दो०—कृत्तिवास कह जननि गण, करहुचिन्तकछुनाहिं ।
नित्य प्रिया श्री रामकी, सिया कथित श्रुति माहिं ॥

दशसप्तसततम सर्ग ॥ १७७ ॥

हरधनु भंग प्रसङ्ग ॥

दो०—गाधि सुवन कर आगमन, सहित दोउ रघुचन्द ।
मुनिमिथिलाधिपहृदय महँ, लहिमहान आनन्द ॥

सुमति पुरोहित सचिवगण, लैसँगनृप यश खानि।
धन्य भाग निज मानिकै, चल्यो लेन अगवानि ॥
सो०—जेहि प्रकार सुरराय, सन्मानत आगत गुरुहि।
तिमि आदर ते लाय, सभामाहिं मुनि नायकहिं ॥
आसन रुचिर अनूप, दै सबकहँ बैठयऊ।
कहन लगे पुनि भूप, सभासदन सम्बोधि के ॥
हे सुधि साधु सुजन समुदाई * यह संतत जगरीति लखाई ॥
तप विहीन जनगण जगमाहीं * करि थापन देवादिक काहीं ॥
तिन दर्शन अर्चन करिभूरी * मानस कलुष करन चह दूरी ॥
तासु हेतु तिन मनुजन काहीं * सुलभसाधु सुधि दर्शननाहीं ॥
हे कौशिक तीरथ अरु देवा * कियेअधिकदिन साधनसेवा ॥
तब साधक के होहि अनुकूला * पर जे सिद्ध ज्ञानि तव तूला ॥
तिन दर्शनहीं सोहि सदाई * पावन मन मनुजन है जाई ॥
अगनगअनलअनिलजलआदित*भेद बुद्धि सो भये उपासित ॥
ते कबहूं मनुज जन अज्ञाना * दूरि न करिसक तपो निधाना ॥
पर किये क्षणक साधु सहवासा * भेदज्ञान इमि होत विनाशा ॥
जिमि पारद पावक संयोगू * जात विलाय जानसब लोगू ॥
सुनि नृप उक्ति धर्म्म नयसाने * धन्य धन्य सबसुजन बखाने ॥
दो०—तेहिक्षणअसजनभीरभइ, तेहि रँगशाला माहिं।
कतहुएक तिल धरनकी, रह्यो ठौर तहँ नाहि ॥
विप्रवैश राजन्य गण, ऋषिमुनियतिगुणगाह।
निजनिजसमुचितथलनमहँ, बैठे सहित उछाह ॥
सो०—कनक रचित सुविशाल, रंगमंच कर जगामग।
नृपतिन हीरक माल, रतनजड़ितकुण्डलमुकुट ॥
कारु कार्य्य छविसार, कंचुक उष्णीषन चमक।

दमकत सर्पाकार, मणिमय पुरट शरासन ॥
दीप्तमान किरपान, माणिक जड़िततुणीरद्युति ।
यह उरमधि अनुमान, होत सबनकर प्रभालखि ॥
मनहु तड़ित समुदाय, छादित मेरु के शिखरचय ।
जगमगाय अधिकाय, रहे लखद लोचन सुखद ॥

रुचिरझरोखन सन मनभावनि * मणि भूषण भूषिता सुहावनि ॥
शतशत तिय मुख दामिनि नाईं * प्रकटत दुरत देहिं दिखराईं ॥
हेरि रंगशाला छवि सुन्दर * यह अनुमान होत उर अंतर ॥
जनुसिधि विरचित मूरतिमाना * तेज शौर्य तप तत्वस ज्ञाना ॥
विद्या वैभव आभिजात्य कर * चारु चित्रपट सोह मनोहर ॥
कृत सुवेश अमरेश जलेशा * कमलासन सह गणनउमेशा ॥
यत गन्धर्व देव ऋषि किन्नर * लोकपाल चारण विद्याधर ॥
यक्ष कुवेर आदि सुरनाना * रोहतियनयुतनिजनिजयाना॥

दो०—रौद्र वैष्णवी शक्ति कर, पुनः घोर संघर्ष ।
कौतुकअवलोकननिमित, छाये गगन सहर्ष ॥
कौशिकादि मुनिवृन्दयुत, कोशलराज कुमार ।
सभासीन जब भे सकल, मंजुल मंच मझार ॥

सो०—तिनदोउदिशिअभिराम, रतन विभूषित पुरुषयुग ।
चामर विशद ललाम, करन लगे मुद सो पगे॥
सोलखि जनु उडुव्रात, छादितयुगशशिमध्यमहँ ।
संसृत सुखद विभात, नवलनील नीरद पटल ॥
प्रभु छविजन मनहारि, हेरिहरयो नहिजेहिहिया ।
अस न कोउ नरनारि, रह्योतहांतेहिकथियकिमि॥

हरिगीतिका छन्द ॥

है जाय वाणी शेष तबहु विशेष छवि भुवनेश की ।

कहिजाय नहिंजिन तेजते निष्प्रभ प्रभा दिवसेश की ॥
हम सकल परमित बुद्धिकवि प्रभुवरण की उपमासदा ।
नव नील घन सन देत हैं पर यह न सामंजस कदा ॥
तेहि हेतु प्रभुकर श्याम शोभाधाम रूप निहारि कै ।
घनअश्रुवारि विमोचि क्रन्दतनिजहि तुच्छविचारिकै ॥
पुनि प्रथित नीरद कर सनातन आभरण ऐरावती ।
सोउ पीत पट के रूपते प्रभुपदन संतत लुंठती ॥
खर मीन केतन मद निपातन जिन पदन नत ह्वैरहे ॥
प्रभु भुजन मंजु मनोज शासन दण्ड किमि उपमा लहे ।
जेहिगल सुघरता कम्बुलखि हतदम्भ ह्वै अम्बुधिदुरै ॥
तेहिनिखिलजगदवलम्बकहँ किमिकम्बुगलकहिबनिपरै
सम्बन्ध नहिं जेहि पंचभूत सों तिन दृगन उपमा कदा ।
पाथोज सँग ह्वै सकत किमि जो पंक सो उपजत सदा ॥
निशिमणि सहितसुखमासदन प्रभुवदनकीउपमादिये ।
वाचालता अति होत है तेहि हेतु यह जानी हिये ॥
ऋषि शापताप कलाप सोहिं कलाप क्षयगदमय भये ।
अरु सोइ कारण ते जगत तारण भये करुणालये ॥
जिनश्रुतिनमधिप्रविशननिमितयतश्रुतिनिचयपावनमयी
तेहोत लखियत पललनिमित क्लेदमयि रसनाश्रयी ॥
तिन दीन आरत श्रवणरत प्रभुश्रवण तुलना जोई ।
विधि सृजित वस्तुसो देत हैकेवल मृषा जलपत सोई ॥
प्रभुपद नवत नित विहगपति तेहि प्रतिविघर्षित ह्वै रहा ।
तेहि संग प्रभु नासिका उपमा देय सो बाउर महा ॥
यदि रहतथिर क्षणभरि कलाधर विम्बपूर्ण अलंघही ।
तौ प्रभूकर श्रीवत्स लांछित वक्षसो तेहि संगही ॥

तुलनाकरन करमिलत अवसरपर चपलाकहँ नदियती।
अरुकहँ प्रभुकर हृदय पूरणशांतिमय सौम्याकृती॥
भयभीत शीतसों रहत नितजोइ अरुण विनताकेतनै।
लियशरणग्रहपतिभानुकी गाथन कथित बुधजनभनै॥
तासो भुवन पावन पदन ह्वै सकत नहिं तुलना कदा।
जिन सुमिरतहि मनप्राण शीतलहोत मनुजनसर्वदा॥
पुनियकनिशाकरशिशिरउरतेहिनियरह्वैसकनहिंजोई।
केहिभाँति दशशशधर सुघरकर ह्वै सकतसहचरसोई॥
तेहिक्षण मदनमोहन भुवन भावन वदन छवि माधुरी।
लागे पियन भरि दृगन सुरनरनारि किन्नर किन्नरी॥
परमीनजिमिनिधिथितशशिहियकसुघरजलचरभावहीं
अरुतासु रुचिर पियूषगुण तिन बुद्धिमधिनहिंआवहीं॥

दो०—तिमिमदगर्वितनृपतिगण, निजनिजहृदय मझार।
प्रभुहि हेरि जानत भये, यक वर भूप कुमार॥
पर परमारथ तत्वविद, ऋषि योगीशन काहिं।
विश्वव्यापिप्रभुकरविभव, अविदितरहिसकनाहिं॥

सो०—प्रभुस्वरूप छविराशि, इमि अवलोकेहु तिनसबन।
रह तिन माहिंविभासि, ज्ञान तत्व यतभुवनमधि॥

श्रुति छन्दस पट पीत पुनीता * प्रणव त्रिमात्र चारु उपवीता॥
सतगुण श्रुति श्रीवत्स सुहावन * चेतनकौस्तुभमणिमनभावन॥
गुणगणमयि माया वनमाला * वलयुतप्राण गदासुविशाला॥
सलिल ? तत्व वर पांचजन्यदर * तेज सुदर्शन चक्र प्रखर तर॥
चर्म तमोगुण गगन कृपाना * जन रक्षन करअँगुरी त्राना॥
काल कराल धनुष शारंगा * कर्म कलाप सुचारु निषंगा॥
ऐश्वर्य्यादिक गुण नीलोत्पल * सांख्य योग मकराकृतकुंडल॥

करिति धर्म व्यजन अरु चामर * शेषरूपि आसन शोभाकर ॥
श्रुति त्रय गरुड़ रूपि वाहनवर * गोपुर रूपी छत्र मनोहर ॥
आगम निगम पारषद चारी * अणिमादिकवसुगणगृहद्वारी ॥
भवव्यापिनि भवविभवप्रदायिनि * श्रीप्रभुकरप्रियश्रीअनुपायिनि ॥
ऋषि मुनि योगि ज्ञानदृगद्वारा * प्रभुविभूति यहिभाँतिनिहारा ॥

दो०—जेहि प्रकार वारिधीमधि, जलकण लय ह्वै जाहिं ।
तिमि विलीन भे मुनिनमन, रामरूपनिधिमाहिं ॥
देखि समय नृपजनक सों, कह कौशिक इमिवानि ।
दिखरावहु रघुनन्दनहि, वेगि शम्भुधनु आनि ॥

यहरुचिरघुकुल मणि करअहहीं * हरधनुहेरि जान गृह चहहीं ॥
यहसुनि सचिवगणनमिथिलेशा * धनुआननहित दीन्हनिदेशा ॥
उत विदेह भामिनि सविधाना * करि मंगलकृति दै वहुदाना ॥
भववन्दिनि निजनन्दिनिकाहीं * सहित सहचरिन लैसँगमाहीं ॥
चारु रंगशाला मधि आई * वैठी चन्द्रभवन मधि जाई ॥
पञ्चसहस्र मल्ल तेहि अवसर * विपुल वली कौशलीधुरंधर ॥
अष्ट चक्र युत शकट विशाला * वंधितचहुँदिशि शृंखलजाला ॥
तापै लौह मंजुषा राजै * तदुपरि विषम शम्भुधनुभ्राजै ॥
हुमकि तमकि खैंचत यक संगा * स्रवत स्वेद झरझर दृढ़अंगा ॥
लाय वेदि पै यतन समेतू * थापेहु बोलि जयति वृषकेतू ॥

दो०—जल चाहत चातकन पै, कुलिश पतनजिमि हाय ।
विवाहाशि नृपतिन दशा, देखि धनुष भइ सोय ॥
भइ विलीन विहँसन नृपन, लागि हृदय धनुफांस ।
अधोवदन मन मलिन ह्वै, तजहिंऊष्ण निश्वास ॥

सो०—सकल परस्पर माहिं, यहि प्रकार लागे कहन ।
बूझिपरयो हमकाहिं, अब शठता यहिजनककी ॥

चित्रित भुजन समान, देखत सुन्दर शीश विष।
कपटी अहै महान, धर्मध्वजी विदेह यह॥
हम सब काहिं बोलि छल ठानी * अबअपमान करतअभिमानी॥
जिमि सुमधुर बांसुरी बजाई * वधतव्याधगहि मृगहिंलुभाई॥
तेहि विध मृषा स्वयंवर केरा * करि विदेह घोषणा घनेरा॥
किहिस लजित हमसबन बुलाई * अबयहि क्षणकाकरियउपाई॥
यह छल विदित होत जो भाई * कौनमूढ़ आवत यहि ठाँई॥
बूड़त जलधि मनुज जिमि कोई * भासत तृणहि गहत द्रुत साई॥
तिमि दुराश वश कोइ भुवाला * इमिजल्पन लाग्योतेहिकाला॥
आनहु जो शिवधनुष विदेहू * है यहि क्षण तेहिअभिमतयेहू॥
धनु दिखाय यहि मध्य समाजू * करिहैं धनुष भंगप्रण त्याजू॥
बैठहु कछुक्षण धीरज धारी * स्वयंवरा द्रुत करी कुमारी॥
दो०—शतानन्द संकेत सों, तेहि क्षण सभामझारि।
ठाढ़ होय नृप सचिव इमि, लाग्यो कहन पुकारि॥
अहो क्षात्र कुल कमलहंरि, नरकेहरि नृप व्रात।
गुणगण गेह विदेह प्रण, अहै तुम्हैं भलज्ञात॥
सो०—भव अजगव विकराल, है थापित सन्मुख सवन।
तापै जोइ भुवाल, गुण रोपण करिकर्षि है॥
तेहि नर नाह विदेह, भुवन मोहिनी नन्दिनिहि।
अर्पण सहित सनेह, करि हैं वेद विधान वत॥
यहि तजिसुविदित सवन वनाई * त्रिभुवनजितदशवदन सुराई॥
यहि समाज मधि करि वलताई * मदन कदन धनुजोइ चढ़ाई॥
ताकर सुयश लंघि भट सोई * सुरनर असुर माहिवर होई॥
तासु हेतु यहि धनुष अगारा * भा हत तेज लंक अधिकारी॥

१—सूर्य

तेहि क्षण तहां महा षड़यंत्री * रह सौष्कल रावण करमंत्री ॥
सो निज प्रभुकरसुनिअपमाना * कह्यो कोपते ह्वै हतज्ञाना ॥
सुनहु सचिव यहिसमयमझारी * बोलु वचन निजरसा सभांरी ॥
त्रिभुवन मधि दशवदनसमाना * अतुलविपुलबलशालिकोआना
सुर नर असुर अस न जगकोई * लंक नाथ यश जान न जोई ॥
जान भुवन जोइ वीरदशानन * सह शिव शिवागणेशषड़ानन ॥
चालित कीन्ह चन्द्र चूड़ाचल * तेहि लघुकहब चपलताकेवल ॥

दो०—अतुलवली दशभाल कर, भुजवल जलधि अपार ।
तेहि सन्मुख हरकार्मुक, शुष्कदारु अनुहार ॥
तिनके रहत कुमारिवर, इमि खोजब दर्शाय ।
यथा वटोरै रेणु कोइ, चिंतामणिहि विहाय ॥

सो०—कह्योसचिव मुसिक्याय, हमतुमसो कोइ विषयमहँ ।
अहैं ज्ञात अधिकाय, अनुचितकथबसोसभामधि ॥

दृढ़ प्रतिज्ञ मम प्रभुप्रण जोई * है तुमसनअविदित नहिंसोई ॥
विनुकर्षै हरधनु कोइ काहीं * नृपनिज सुता अरपिहैंनाहीं ॥
कसन दशानन यहिथल आई * वरहिंकुवँरि शिवचाप चढ़ाई ॥
यह सुनिहँसिसौष्कल इमिकहेऊ * सचिवनतोहिं विचारकछुअहेऊ
अतुलबली दशमौलि अगारी * है यहधनु कन्दुक अनुहारी ॥
पर ममप्रभु शिवभक्त प्रधाना * गुरु धनु केर करन अपमाना ॥
जानि अधर्म न खैंचन चहई * नतुधनु कौनगणन महँअहई ॥
कह्यो सचिव यहि धनुषअगारी * लइहैं कत जन शरणपुरारी ॥
सकिहै चाप चढ़ाय न जोई * निजहि शम्भुसेवक कहिसोई ॥
पूछहुँ एक बात मैं भाई * मानिय माखनकहिय बुझाई ॥

दो०—मदन कदनकर आभरन, है विषरदन अधीश ।
काह मनन कै दशवदन, मान कीन तेहिखीश ॥

पुनि तिनकर गुरु भक्तिहू, अहै ख्यात संसार।
निजअग्रजअजसखासन, कीन्ह जोय व्यहार॥
सो०—उचित उतर यह पाय, भयो लजित रावण सचिव।
वहुरिकोपिभुँ झलाय,लग्योकहनयहिविधवचन॥
तुम्हरेसँग मोहिं यहिक्षण माहीं * वाद विवाद करनरुचिनाहीं॥
पर अति विषम दशानन क्रोधा * लेइ अवशि याकरपरिशोधा॥
कबहुँ नकबहुँअवशिसिय काहीं * परिहै जान लंक पुरि माहीं॥
जनक सचिव पुनिवारहिं वारा * धनु तोलनहितनृपन जुहारा॥
तेहि धनु लगत नृपन उर कैसे * केहरि शब्द मृगन कहँ जैसे॥
भे श्रीहत इमि सकल महीपा * आदितउदित यथाद्युतिदीपा॥
गये सबन मुख इमि कुँभिलाई * जिमि जलयोग जवासझुराई॥
अधोवदन मन करहिं विचारा * चलियभागिभलयाहिमझारा॥
इमिविचार थिर करिउरअन्तर * इतउततकहिंभगनहितअवसर॥
मनगत भाव नृपनकर जानी * सचिव सव्यंगकह्योइमिवानी॥
दो०—सुनहुसकलमहिपालअब, भइ प्रतीति हमकाहिं।
क्षात्रवीर्य्यविनुअवनिभइ, वीर भुवन मधि नाहिं॥
वाहुज कुल सम्भूत जत, राजकुमार निकाय।
ते केवल देखवेहि के, किंशुक कुसुमके न्याय॥
सो०—इतरघुकुलमणि काहिं, हेरिमौन महि नन्दिनी।
भइँ अधीर उरमाहिं, पुनिपुनिहेरत रामदिशि॥
अंतर विद अनंत यशखानी * चिंचितजननिजानकिहिजानी
प्रभु सों कह्यो जोरि युगपानी * विनय वीररसमय इमिवानी॥
नाथ सुनेहु जोइ सभा मझारा * राजसचिवकहत्याजिविचारा॥
यह लघुकाज करन प्रभुपाहीं * कहतेउँ करि ढिठाइ प्रभुनाहीं॥
पर यह कार्य्य किये निर्वाहू * होई जो महान फल लाहू॥

ताकर प्रभु स्वयहू मझारी * मैहौं सकत नाहिं अधिकारी ॥
नतु यहि सेवक सन्मुख माहीं * धनु कर्षन दुस्तर कृतिनाहीं ॥
यदि यह जीरणशीर्ण शरासन * निजकरसोंप्रभुचहहुनपरसन॥
तौ निज दासहि देहु निदेशा * लखहिंसमाज सहितमिथिलेशा
चण्ड चण्डिपति कर कोदण्डा * करहुएरण्डसरिसशतखण्डा ॥
नृपप्रण पूर्ण भये मम हाथा * तवहुँ जनकजा पणतवनाथा ॥
लिखित नीतिवद कोविद भारी * भृनकृतश्रमफलप्रभुअधिकारी॥

दो०—मनभावन लक्ष्मण वदन, सुनि इमिवचन रसाल ।
भईंअवनि नन्दिनिदुगुन, उत्कंठित तेहिकाल ॥

सो०—उमड़ि घुमड़ि घहराय, जेहि क्षणघन वर्षन चहै ।
तब अधोर अधिकाय, होतकपिंजलि जानजग ॥
सोइक्षण सुयश निकेत, सतव्रतनिमिकुजकलाधर ।
करपुट विनय समेत, ऋषि कौशिकप्रतिकह्योइमि ॥

हे मुनीश लहि तव अनुशासन * आनेहुविषम महेश शरासन ॥
जगत विदित यह दारुण चापा * हारक भूमि भूपतिन दापा ॥
नर तो काह यक्ष गन्धर्वा * किन्नर नाग सुरासर सर्वा ॥
यहि दिशि चितै सकतनहिंकोई * है थापित तव सन्मुख सोई ॥
यदि रुचि होय महीप किशोरा * अव तोकहिं अघोरधनुघोरा ॥
सुनि नर नाथ वचन मुनिराई * रघुनन्दन प्रतिकह मुसकाई ॥
उठहु राम जग आनँददाता * करहु जनक प्रणपूरणताता ॥
तुमहिं मौन मिथिलेश निहारी * संशय जलधि परे हिय हारी ॥
प्रणतारतहर जगत नियंता * गुरु आयसु लहि उठे तुरंता ॥
कसि कटिसों पट पीत पुनीता * गुरुहिद्विजनकरिप्रणतिसप्रीता

दो०—गमने धनु वेदिका दिशि, कौशल राज किशोर ।
जनु गमनतनिशितमहरन, तपनउदयगिरिओर ॥

भ्राजे मंजुल वेदि पै, मन्द मधुर मुसकाय।
नवरस संयुत तेहि समय, रामरूप सरसाय॥
सो०—महावीर बलवान, यत धरितृपति क्षत्रिचय।
ते दृढ़ कुलिश समान, अवलोकेहु रघुवर वपुष॥
सकल नगर नर नारि, रहे निहारि प्रभुरूप इमि।
नव किशोर छविसारि, मनुजविभूषण मनहरण॥
लखहिं नवल कामिनी सुचारू * सुखमा सदन समूरति मारू॥
पूरित दुरित नृपति समुदाई * चण्ड दण्डधृत शमनकिनाई॥
रावण सचिव मृत्यु अनुहारा * करन चहत जनु जगसंहारा॥
नास्तिक गण अरु मूढ़अजाना * केवल नृप बालक इवजाना॥
नारद सनकादिक मुनि नाना * परमातमा तत्त्व किय ज्ञाना॥
भूमि विबुध बुध बुद्धि प्रवीना * कुल देवता ज्ञान हिय कीना॥
गगन अमरगण मन अनुमाना * विभु इन्दिरा रमण भगवाना॥
जनक जनक रानिहि इमिभाये * कोमलशिशुमानहुनिजजाये॥
प्रभुकर रूप अनूप सुहावन * कोटिकामजितभुवनलुभावन॥
सा छवि हेरि सीय महतारी * छाव मोह तनुदशा विसारी॥
चेत विहीन चित्र अनुहारी * महरानिहिसहचरिन निहारी॥
तुरत सिंचि मुख सुरभित वारी * लगींकरनमृदुव्यजनवयारी॥
सीय जननि तब चेतन पाई * लगीकहनयहिविधविलखाई॥
हाय स्वप्नमधि मैं सियकाहीं * थापि राम वायें दिशि माहीं॥
सो सुचारु सुखलखि मनमाना * करतिरह्यूं शीतल मनप्राना॥
कस तुम सवन अभागिनिकेरा * कीन्ह भंग सुख स्वप्न घनेरा॥
स्वामि वायु गदग्रस्त कि नाई * करि रहे काजविचार विहाई॥
दो०—कहाँ कुलिशहू ते कठिन, शम्भु शरासन घोर।
कहाँ सरज पूतरी इव, सुन्दर श्याम किशोर॥

कहसहचारिनिकरियजनि, यह विसूरि मनताप।
ऋषिवर विश्वामित्र कर, विदित प्रचण्ड प्रताप॥
तपवलसों विरच्यो अपर, विश्व जोइ ऋषिराज।
तेहिशिष्यहिधनुतोलिबो, कौन कठिन है काज॥
सो०—यहसुनि कह महरानि, अहै सत्य तुम्हरो कथन।
पर जगदम्ब भवानि, विनुन शंभुधनु विघ्नटर॥
असकहिदोउकरजोरि, लगीं करनकालिका नुति।
जयजयकुधरकिशोरि, कृपावंति कैवल्यदा॥

हरिगीतिका छन्द॥

जय कारणाकृति कौशिली कारण करितृ कुमारि के।
कल्याण कारिणि कलारिणि कारणा कारण कारिके॥
कलिकल्ककदनि कुकुझिनीकिरदिनी कुमतिनिकन्दिनी।
केवला कमला कमलजा कमलांघ्रि कीर्ति कपर्दिनी॥
जय काम चारिनि कामदा कमनीय कांति कपालिनी।
कामारि कामिनि कामरूपा काम कानन केलिनी॥
कुशकेशिनी कौशिकी कुष्माण्डी कृषा कादम्बरी।
काशीश्वरी कौवेरि कौमारी किशोरि कृशोदरी॥
जय कर्णिकारकरा कलाकारा करालि कलांतरा।
कलि कंठिनी कलि कलुषहा कालिका कालिकलाधारा॥
जयकालकांता कालरात्री काल कण्टक कृन्तिनी।
कृतकर्मफल कर्षिणी कृष्णा कर्षणी कच केशिनी॥
जय कमल नाभा कमलभा कनक प्रभा कामेश्वरी।
कङ्काल कुण्डलिनी कमलिनी कुटिल कदिनी किन्नरी॥
जय कोमलाङ्गी कुङ्कमांगी क्वणत काञ्चि किरीटिनी।
करुणाक्षि कल्पलता कलातीता कृपाणि करीषिनी॥

जय कीर्त्तिदा कर्मप्रदा कामदा कांति कदायिनी।
कलि कौलिकप्रिय कारिणी कुलकामिनी कात्यायिनी॥
जय काश्यपी कामुकी कलिता कलिहता करुणाकरी।
कुरु कृपा कमलातमा कृष्णा कुंत कांति कुलेश्वरी॥
दो०-तव भवभूत विभूति ते, तवपति शिवशिव मूल।
सोशिवशिवइवअशिवकस, सेविकिनी प्रतिकूल॥
करि सनेह वैदेहि पै, होहु सदय वैदेहि।
पूरण करै विदेह प्रण, चारु श्याम शिशुयेहि॥
इतहिविहँसिरघुवंशमणि, भव भय भंजन हारि।
वेगि उधारेहु मंजुषा, नमः शिवाय उचारि॥
सहजहिमत्त मतंगजिमि, लेत उपारि मृनाल।
वामपाणिधनुतोलितिमि, लीन्ह्यो भुवन भुवाल॥
परशुराम मिथिलेश कुवँरि के * तेहिक्षणवाम नयनभुजफरके॥
रघुपति कृतिसबनृपति निहारी * भयेचकित अतिहृदयमझारी॥
पुनि रघुमणि गुणजोरनकाहीं * धरिधनुएक शिराक्षितिमाहीं॥
चापि मध्यधनु जानुं ललामू * उत्कट कोटि धारि कर वामू॥
करिवल कियनतधनुषविशाला * विश्वम्भर भर सों तेहिकाला॥
डोलीधरा धरणिधर धरके * करिचिकारदिग्गजगणसरके॥
कमठ कोल कसमसे महाना * है संक्षुब्ध अब्धि उपड़ाना॥
वासुकि नाग दशहु मुख द्वारा * करत सधूम गरल उदगारा॥
इमि धनु सह भटमानिनशीशा * करिनतनिखिलचराचरईशा॥
यथा द्विरद दुर्वार विशाला * करतकेलगहिकमल मृनाला॥
दो०-तिमिनिर्गुण धनुसगुणकरि, वामपाणिमधिधारि।
ऊर्द्ध लोकवत गहत पुनि, प्रभु इन्दिरा विहारि॥
पुनि नास्तिक संशयसहित, धनुगुण कानप्रमान।

आकर्षेहु अतिवेग सो, विन प्रयास भगवान ॥
ज्वलत अनल मण्डल सरिस, ह्वै प्रचण्ड कोदण्ड ।
कड़कड़ कड़कि तड़ाक सों, टूटि भयो युगखण्ड ॥
सो०—धनुटूटतही काल, भरयो भुवन भैरव ध्वनि ।
जनुसहसासुविशाल, फाटि घहरि गिर मेरुगिरि ॥

रोला छन्द ॥

१-एक उठ्यो शिवधनुष विभंजन शब्द प्रचण्डा ।
२-दुइ जगदण्ड प्रकाण्ड भयोदरिजनुतेहिदण्डा ॥
३-तीन लोक के जिते जीव निर्जीव के नांई ।
४-चारि वदन चित चौंकि चकितचितयोचहुँघांई ॥
५-पांचमुखन सो अंधकारि हरि हरि उच्चारेउ ।
६-छामुख औचक भवचकाय कह भयो पुकारेउ ॥
७-सात अब्धि ह्वै क्षुब्ध ऊर्मिसहकरि उठकलकल ।
८-आठ कुलाचल सचल साचला होत टलामल ॥
९-नवग्रह विग्रह ग्रस्तविसरिनिजनिजगतिगयऊ ।
१०-दशहुदिशाप्रतिध्वनितघोरधनुध्वंनितेभयऊ ॥
११-ग्यारह रुद्रन टरेहु अटल आसन कँप अंगा ।
१२-बारहरविरथ विपथभ्रमित अतिचपल तुरंगा ॥
यत नरपति रहे रमत रुचिर रँग भूमि मझारी ।
सकल हहलिगिर गये मञ्चपै चेत विसारी ॥
कोइ केर शिर मुकुट चटकि गिर दूरपै जाई ।
कोइ मंचते लुढ़कि गिरयो मधि थलमधि आई ॥
कोई परयो अचेत दास पद पै शिर धारे ।
कोइ रहिगे दृगफारि चित्रवत सुरति विसारे ॥
कोइ मुख भरि गिर तासु भगन भे रदन वदनके ।

इमि अचेत सब धनुष भंजतहि रमारमन के ॥
दो०—केवल ऋषिकौशिकलखन, जानकिजनकभुवाल ।
सतानन्द यह पंचरहे, निज सुधिमहँ तेहिकाल ॥
ते पांचहु जन सोह इमि, महाप्रलय क्षणमाहिं ।
सब पदार्थ क्षय होय जिमि, पञ्च तत्त्वरहि जाहिं ॥
कछु क्षणमाहिं सचेत भे, सकल नगर नर नारि ।
उमडेहु मोद पयोधि तब, मिथिलापुरी मझारि ॥
सो०—दीह दुन्दुभी दीनं, गगन देवगन मगनमन ।
यत गन्धर्व प्रवीन, गावहिं नर्तहि अप्सरा ॥
कृत वृन्दार शृँगार, वृन्द वृन्द वृन्दारकी ।
बर्षन लगिं सुमहार, आनँद कन्द मुकुन्द पै ॥
मंगल वाजन मुद उपजावन * पुर वादक गण लगेवजावन ॥
मुद कलरव उठ विन संभारा * नर्तत मनहुँ जनकपुर सारा ॥
हर्षमत्त सिय सखि समुदाई * सीतहि लपटि गई द्रुत धाई ॥
बहुरि सीय सन यहिविध वानी * लागीं कहन हासरससानी ॥
सखि तब देव अराधन पावन *सफलआजुलहिनिधिमनभावन
एक साध अब हम सब केरी * पुरवन परी तुमहिं यहिवेरी ॥
तव दुखरूपि धनुष करि भंजन * भये अमितअतितबमनरंजन ॥
तोष स्वरूप तिन्हें यक वारू * देहु दिखाय चन्द्रमुख चारू ॥
यहसुनि विहँसि कह्योइमिसीता * किमि त्रिन्हि हैं हमैं नवमीता ॥
याते मिलहु तुमहि सब जाई * लखिवहुकमल मधुपहुलसाई ॥
दो०—कह्योसखिनवलिहारिअलि, कहहु वाटिका माहि ।
फुलितललितकमलहिकौन, चिन्हैंदेतअलिकाहिं ॥
बहुरि हमैं लखि काहसुत, लहिहैं तब चितचोर ।
केवल चन्द्रकलाहि लखि, पुलकत रसिक चकोर ॥

सोइक्षणजानकिजननिढिग, शतानंद ऋषिआय ।
कह वरमाल प्रदान हित, सिय कहँ देहु पठाय ॥

लीलावती छन्द ॥

तवलहिजननि निदेशसखिनयुत सकुचि सलाजविदेह कुमारी ।
मन्द मन्द ऋषि शतानन्द सँग कीन्ह गमन वर समा मझारी ॥
तेहि क्षण परम तत्त्वदर्शी ऋषि जनकादिक राजर्षि निकाया ।
भव वन्दिनी अवनिनन्दिनिकरलख्योविचित्र भागवति माया ॥
कोटि विभावसु सरिस तेज मयि कोटि दामिनी वतद्युतिसानी ।
कोटि चन्द्र सम शीतल तेहिथल विमलअनादिज्योतिप्रकटानी ॥
तेहि भववीत पुनीत ज्योति के चारु अंग प्रति अंगन माहीं ।
नारि नपुंसक पुरुष केर कोइ चिह्न होत परिलक्षित नाहीं ॥
चारहु श्रुति समूर्ति नुतिकरि रहे तेहि अद्भुत द्युतिके चहुँओरी ।
ह्वै प्रतिहत तेहि प्रभा सों सब जनलियदृगमूँदिभईमतिभोरी ॥
पुनिकछुक्षण मधिदृग उघारि लख सोइ ज्योतिमनपावनकारी ।
मनोहारि छविसारि नारि ह्वै रही विचरि तेहि सभा मझारी ॥
वरणिजाय किमिविश्वभरणि निखिलेश रमणिकरसुन्दरताई ।
मनहुँ विश्व सौन्दर्य्य सिमिटि कै तीयरूप ते तहँ प्रकटाई ॥
अजव्रषध्वज पूजित पद पंकज जेहिरज भवरुज सहजहिगंजन ।
तिनमधि लसत मणिनमय नूपुररुनझुनवजत सुनतमनरंजन ॥
रम्भागर्भ सरिस अति चिक्कण कोमल चारु ऊरु छविधामा ।
कटिअति क्षीण होत तेहि थलमहँ मनहुँ अंकुरितदारितकामा ॥
तेहिकटिकंचन रचित खचित नगकांचि किंकिणी सोहललामा ।
त्रिवलित सुललित उदरमनोहर नाभिसुधाहृद इवअभिरामा ॥
वर्ण वर्ण मणि जटित स्वर्णमय अंगदादि आभरण सुहावन ।
भूषित उभयवाहु मृदु मंजुल जेहि द्युति सुरपति चापलजावन ॥

कम्बु कपोत कण्ठ निन्दित गल सुन्दर कण्ठाभरण सुहाई।
कर्ण रतन ताटंक विभूषित शोभित चन्द्ररेख की नाई॥
मध्योन्नत युग अधर विद्रमहि जीति लसत जनुसह अभिमाना।
मृदु विहँसन वश दसन प्रभावर रह विभासिक्षणप्रभासमाना॥
शरद चन्द्र अरविन्दहि निन्दत वदन मदन छविसदन सुचारू।
श्रुति विश्रांत चपल युगलोचन सैन मनहुँ तीक्षणशर मारू॥
कुटिल भृकुटि युगलपत चापवत जेहिनिरखत प्रतीत उरहोई।
दृष्टिवाण सन्धान हेतु जनु टूटन चहत आशुही सोई॥
कादम्बिनी लजावनि शिर कच मुक्ताजाल गुथित वरवेनी।
सो लखिजनु मल्लिका मालसँग रहे खेलिमाते अलिश्रेनी॥
देह कांति कमनीय सुभ्रतर चामीकर चम्पक अनुहारी।
परिधत सुवरणरेणु विच्छुरित रक्ताम्वर सुन्दर मनहारी॥

दो०—दक्षिण पङ्कज पाणिधृत, वरमाला कमनीय।
गमनत मत्त गयंदगति, गई पीयढिग सीय॥

सो०—निगुण रूप रसहीन, ब्रह्म सगुण तनु धरहिंजब।
माया प्रकृति अधीन, रहत सतत वद तत्वविद॥
यहि दर्शावन हेत, माल ग्रहण छलते मनहुँ।
रघुमणिनेह समेत, विहँसत शीशनवायदिय॥
दोउ भुज मंजु उठाय, सहित सनेह विदेहजा।
दियप्रभुकहँ पहिराय, हेम हार हीरक खचित॥

अष्टपदी छन्द॥

करन लगीं कलगान मगन मन पुर कुल कामिनि।
सुमन वृष्टिकिय सुरन नचन लागी सुरभामिनि॥
अमर नगर नरनारि सुमन झरि सा तेहिकाला।
परि पूरित ह्वै गयो मनोहर सभा विशाला॥

कह कृत्तिवास तुमजन्मधनि तोरध्येय निधियुगलपद ।
भे दुगुण आजते जेहिसरिस नाहि चतुवर्गउ सुखंद ॥

अष्टदशसततम सर्ग ॥ ११८ ॥

महर्षि विश्वामित्र की अयोध्या यात्रा ॥

सो०–रमा प्रदत्त ललाम, पुरटदाम वरमाल ते ।
शोभित शोभाधाम, राम सधनुपन श्यामयुव ॥
सियछविउरमधिधार, उतरि तुरत वरवेदि सों ।
कौशिकनिकटसिधारि, कीन्हप्रणति नतशीशहै ॥

१ मन्तव्य । इस सर्ग के कुअंश श्रीमान् गोस्वामीकृत "मानस·रामचरित" से मिलते हैं, कारण उसका यहहै कि उभय कविने इस स्थानपर श्रीमन्महानाट और श्री मद्भागवत के १० स्कन्ध का ४३ अ० को अवलम्बन करके निजनिज रचना पारिपाट्य प्रदर्शित किया है । उदाहरण; लक्ष्मणोक्ति, बालकाण्ड; सकों मेरु मूलक इव तोरा ॥ तव प्रताप महिमा भगवाना । का बापुरो पिनाक पुराना ॥ नाथ जानि अस आयसु होऊ । कौतुककरहुँ बि· लोकिय सोऊ ॥ (देव श्री रघुनाथ किंवहुतया दासऽइस्मिते लक्ष्मणे । मेर्वा दीनपि भूध रान्नग आये जीर्णः पिनाकः कियान् ॥ तन्मामादिशवीरस्य भवतो वाक्यादहं·कौतुकी प्रोद्धितं प्रबलायुतु इत्यादि इतिमहानाटक) दिशि कुंजरहु कमठ अहिकोला । धरहु धरणि धर धीर न डोला । रामचहहि शंकर धनुतोरा । होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥ पृथ्वी स्थिराभव भुजंगमधार मैनं । त्वं कूर्म्मराज त्वदिदं द्वितियं दधीथाः ।(पृथ्वी यातिरसातलं फणियतिर्नम्र फाणमण्डलम् । विभुतक्षुभ्यति कूर्म्मराज सहितो दिक्कुञ्जराः कातराः इत्यादि श्रीराम चन्द्रकी नवरस मण्डिता मूर्ति का श्रीमान् ने तो वर्णन कियाहै यथा; देखहिभूप महारणधीरा इत्यादि उसका भाव श्रीमद्भागवत वर्णित कंस सभास्थ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की विभूति का रूपान्तर है यथा; मल्लाना मशनिर्न्टणां नरवरः स्त्रीणांस्मरोमूर्तिमान गोपानां स्वजनोऽसतां क्षिति भुजां शास्तास्वपित्रोःशिशुः मृत्युर्भोजपते र्विराडविदुषां तत्त्वं परं योगिनां । वृष्णीनां परदेवतेति इत्यादि । श्रीमद्भागवत १० स्कन्ध ४३ अध्याय १४ श्लोक ॥ भावर्थ वे मल्लगणके दृष्टिमे कुलिश भावन गणके दृष्टि मे श्रेष्ठ मनुष्य रमणी गणके दृष्टि मे मूर्तिमान कन्दर्प गोपाण दृष्टिमें सुहृद दुरात्मा नरपति गणके दृष्टि में शासन कर्त्ता, निज माता पिता के दृष्टिमें शिशु कंसके दृष्टि में मृत्यु, अज्ञगणके दृष्टि में जड़, योगियों के दृष्टि में परमत व वृष्टिगण के दृष्टि मे परमदेवता के स्वरूप सप्रकाश होने लगे" जिनके रही भावना जैसी प्रभुमूरति तेखी तिन तैसी । श्रीमद्भागवत टीकाकार श्रीधर स्वामी भी लिखते हैं ॥ तत्रशृंगारादि सर्वरस कदम्ब मूर्तिर्भगवान तत्तभिप्रायानु सारेण वमो इत्यादि । का० प्र० सि०

तेहि क्षण जौन प्रकार, झंझानिल वाहित भये।
कलुषित मरुतविकार, होत दूर सब भाँति ते ॥
दो०–तिमि अवोध भूपति जिते, राजत सभा मझार।
सवन दूरिभे भूरिमद, रघुपति भूति निहारि ॥
भईप्रतीति तिन सवनउर, जिमि केवलहि पुरारि।
तुंग लरंगिनि गंग कर, वेग सकत हैं धारि ॥
तिमिविहाय रघुरायकहँ, भुवन चारिदश माहिं।
कर ग्राही वैदेहि कर, देहधारि कोउ नाहिं ॥
यहिविध सुमति होन तिनमाहीं * अचरजकछुक देखियतनाहीं ॥
पतित द्विखण्डित धनु तेहि ठाँई * पर अछिन्न गुणपूर्व कि नाँई ॥
तिमि मदमान नरन नशिजाई * पर सद्गुण तेहि सँगनविलाई ॥
निज प्रण सफल विदेहनिहारी * होय मगनमुदउदधिमझारी ॥
प्रेमविवश तनु लटपट धाई * लीन्ह प्रभुहि द्रुत क्रोड़ उठाई ॥
ढारत दोउ दृग आनँद नीरा * कीन्ह सिक्त रघुनाथ शरीरा ॥
मुनिऋषिकौशिक पदनमझारी * गिरे गिरा नहिं जाय उचारी ॥
गदगद कण्ठ वहुरि इमि वानी * बोले हे महर्षि तपखानी ॥
तुम्हारी कृपा लह्यो सुख जोई * लघुउर मुद समातनहि सोई ॥
खोजत एक वरातक नाथा * चिन्ता मणि लाग्योममहाथा ॥
दो०–अब निदेश यदि होयप्रभु, तौ सोतहि यहिकाल।
अर्पिराम कर मधि करहुँ, जीवन सफल कृपाल ॥
यहसुनिइमिकौशिककह्यो, सुनिय सुमतिनरनाह।
धनुकर्षतही ह्वै गयो, रघुमणि सिय उद्वाह ॥
सो०–केवल विधि अनुसार, चलिआई कुलरीति जोइ।
लोक वेद आचार, करन उचित है भूपवर ॥

अब जितेक यहिठाम, लसत निमंत्रित नृपतिगण ।
करहिं जाय विश्राम, सहसहचरनिजनिजशिखिर ॥

कछुक मंत्रकरि रघुवर साथा * आशु मिलब तुमसोनरनाथा ॥
सुनि मुनि नाथ वचन सउछाहू * ह्वै गलवस्त्र जनक नरनाहू ॥
सभासदन उत्सव दर्शन हित * विनयवैन तेकीन्ह निमंत्रित ॥
ते सब परम प्रीति दरशाई * निज निज शिखिरगयेहर्षाई ॥
यक सुमंत्र द्विजवर यशराशी * तत्वदर्शि मिथिलापुर वाशी ॥
सकलशास्त्रविद जोइगुणखानी * परब्रह्म रामहि पहिंचानी ॥
सो सुर दुर्लभ वस्तु लहु कर * तेहिक्षणमनविचारिभलअवसर
सरस सयुक्ति प्रेमरस सानी * कहकौशिक प्रतियहिविधवानी
हे मुनि परिणय कृत्य मझारा * चाही होन नारि आचारा ॥
शतानन्द हैं जनक पुरोधा * तिनगृहसोकृतिरीतिविरोधा ॥
यहि हित यह अभिलाष हमारी * यदि अनुमतिमुनिहोयतुम्हारी
तौ सबन्धु रघुनन्दन काहीं * मैं लैजाय स्वमन्दिर माहीं ॥

दो०—लोकविहितशुभकृतिप्रयत, करि साधित सविधान ।
सह धर्मिणियुत साधनिज, पुरवहुँ तपो निधान ॥
शतानन्द कौशिक उभय, बूझि विप्र उर भाव ।
हियमधि द्विजहिप्रशंसिबहु, भे सहमत सहचाव ॥

सो०—तब सहर्ष द्विजराय, निज सौभाग्य सराहि कै ।
निजगृहगयहुलिवाय, रामलखणऋषिकौशिकहि॥
तेहि सुमंत्र की नारि, कौशिल्य भामिनि सती ।
जे सम भुवन मझारि, सौ भागिनीन सुरतियहु ॥

भ्रात सहित जेहि जगत गुसाँई * सादर प्रणति कीन्हकहिमाई ॥
प्रभुकर कमल परशि सहप्रीता * भइं इमिद्विजभामिनीपुनीता ॥

जिमि कुशपरशि सुधारसकाहीं * लह्यो पवित्रिनाम जगमाहीं ॥
अतिपुलकित चितद्विजवरनारी * दोउ भ्रातन स्वअंक बैठारी ॥
शीश चुम्बि बहु आशिष दयऊ * पुनिकौशिकसोंकहतइमिभयऊ
तब कृपाय पुर मधि चहुँफेरा * उमड़ि रह्यो आनन्द घनेरा ॥
अबजोइ लखनलागिवड़ि आशू * करिय आशुआयोजन तासू ॥
बहु बाढ़े जल तासु प्रवाहू * खोलदेन द्रुत चहि ऋषिनाहू ॥
यहसुनि मुनिनिहारि प्रभुओरी * कहइमिवचन सुधारस बोरी ॥
हे प्रिय तात सत्य सति कहेऊ * अबयहसवन केरिरुचिअहेऊ ॥

दो०—तव मंगल संकुल सुखद, परिणय कृत्य निहारि ।
करहिं पूर्ण मनकामना, सकल नगर नर नारि ॥
निज चिर संचित तपोफल, तुमहिं करनकहँदान ।
राजऋषी मिथिलाधिपहु, उत्सुक अहै महान ॥

मोरिहु रुचि सतीय तुम काहीं * जाहु लिवायअवधपुरिमाहीं ॥
यह सुनि जोरि पाणिप्रभुकहेऊ * सतत मान्य गुरुआयसुअहेऊ ॥
पर यदि दासकेर मत जोई * कहे तासु यदि दोष न होई ॥
तौ प्रभुपदन माहिं कर जोरी * हैयहविनयसुनियक्षमिखोरी ॥
अब द्रुत हम दोउ भ्रातन काहीं * चलियलिवाय अवधपुरिमाहीं
विचरत हम दोउन तव साथा * भयेऽयतीतअधिकदिननाथा ॥
मम विछोह पितु मातु हमारे * विदतन कत होइहैं दुखारे ॥
यहि विहाय हम चारहु भाई * जन्मे एकहि दिवस गुसाँई ॥
प्राणाधिक प्रिय अनुजन त्यागी * करहुव्याहकिमिस्वारथपागी॥
यह मम प्रण जोइ जगतमझारी * सकीदानकरि चारि कुमारी ॥

१—खगराज गरुड़ निजमाता को दासित्वसे मुक्त करने के निमित्त अमृत आरण करके कुशपर रख दिया था । महा भारत में लिखा है कि " परम पवित्र अमृतकुशमें सम्बद्ध हुवा था" इसीकारणतबवधि कशाका नाम पवित्री हुवा (म. अ. प. ३४ अ.)

चारहु भ्रात तासुगृह नाथा * करव व्याह हम एकहिसाथा ॥
यह सुनि मुनिशिरपैतेहिकाला * मनहुघहरिगिरभिदुरकराला ॥
दो०—है अतिशय उद्विगन मन, लागे करन विचार।
काह पतित अवलगिरह्यों, मै भ्रम उदधि मझार ॥
आदि शक्ति जानकि अहैं, रघुपति पुरुष प्रधान।
तिन दोउन सम्वन्ध नित, रविअरुरश्मि समान ॥
सो०—पुनि प्रभु कस यहि काल, असअनघट हठठानेऊ।
कहँसो जनक भुवाल, अपर कुवँरि त्रय लाइहैं ॥
मृदुल गभीर प्रकृति रघुराजू * निजप्रणकवहुँनकरिहैंत्याजू ॥
अहै विदित आदर्श पुरुषकर * उरजसखुमहुतेमृदुलअधिकतर॥
तसलहि समय हृदय तिनकेरा * कुलिशहु ते दृढ़ होत घनेरा ॥
किय जोइ प्रणप्रणतारत तारन * कोसमरथतेहिकरहिनिवारन ॥
अथवा सर्वदर्शि रुचिजोई * ममलघु वुधिनवूझि सकसोई ॥
स्वच्छ मणिहि छाया सकधारी * कहँसोशक्तिमृतपिण्डमझारी ॥
इमि चिंतवन करत मुनिराई * सूझन प्रभुहि बुझाव उपाई ॥
पुनि जिमिवृहत पात्र मुखढाका * थापित अनल होत रसपाका ॥
तिन पावक मय हृदय दुराई * कौशिकभूप जनक ढिगजाई ॥
रघुपति चितगत अभिमत जोई * कियअवगत नरपतिकहँसोई ॥
दो०—वीचि वुद्बुदावर्त जिमि, सलिलहि के आकार।
तिमिएकहि करुणारसहु, प्रकट अनेक प्रकार ॥
मुनिवर वचन विदेह उर, वेधे शल्य समान।
भइ गति मनहुँ विदेह के, देह नेह तज प्रान ॥
भये हताश भई मति भोरी * जनुविधितटलगायतरिवोरी ॥
कंपत अधर रसना जड़ भयऊ * भूरिवारि युगलोचन छयऊ ॥
शतानन्द लखि दशा विदेहू * कह इमि सरस वचन सहनेहू ॥

केहिहित मधुर सुधाहि भुवाला * करिरह्योगरलज्ञानयहिकाला ॥
निदिध्यासन सों कछु चितफेरी * संसृति ओर लखिय यकवेरी ॥
तुम रघुनन्दन प्रण अनुहारी * सकत दानकरिचारि कुमारी ॥
तव लघुभ्रात कुशध्वज भूपा * हैं तिनके द्वै सुता अनूपा ॥
युग कुमारि तुम्हरे नर नाहू * अरपहु चारिहु सहितउछाहू ॥
जोइ प्रणकरहिं भानु कुलदीपा * जानियताहिअखण्ड महीपा ॥
देह प्राण प्रविशे पुनराई * सजग होहिं इन्द्रिय समुदाई ॥
तिमिसुनि शतानन्द मुखवानी * नृप विदेह कौशिकतपखानी ॥
दूरि भूरि दुख इमि उर हरषे * दहतदावमृग जिमिघन वरषे ॥
तनसुधि विसरि प्रचुर मुदपागे * तोलिपाणि मुनिनर्तन लागे ॥

दो०–पुनिरघुमणिढिगजाइइमि, कहन लगे मुसकाय ।
चक्रिचक्र किमि भेदिसक, वनवासी मम न्याय ॥
पर सियकर हेलन करन, नहि समर्थ तुम माहिं ।
चारि कुवरि नृप अर्पि हैं, तुम चहुँ भ्रातन काहिं ।

कहहु तात यहि शुभ कृतिमाहीं * अवतो रह्यो विघ्नकोइ नाहीं ॥
कहरघुमणि ममतुच्छबुद्धिमधि * अबहुविघ्न प्रत्यक्ष तपोनिधि ॥
भरत शत्रुहन मम लघुभाई * अहैं कहां यहिथल मुनिराई ॥
पुनि केवल मखरक्षण काहीं * पठयोपितु मोहितव सँगमाहीं ॥
पितुअनुमति विनु करनविवाहू * है न धर्म सम्मत ऋषिनाहू ॥
यहिहित मम विवाह कृति केरी * यदि प्रभुउर रुचि अहै घनेरी ॥
तौ कोउ मंत्रिनिपुण जनआशू * जाय अवध अवधेश सकासू ॥
यहसुनि मुनि सराहिप्रभु काहीं * कहनलगे यहिविधि मनमाहीं ॥
धन्य धन्य तुम त्रिभुवन स्वामी * कहहुकसन अस अन्तर्यामी ॥
हरण कुरीति सुरीति प्रचारण * कीन्ह्यो मनुजदे हतुमधारण ॥

दो०—मही स्वयं जग जननि के, शुभपरिणय कृतिमाहिं ।
जान चहत हौं ह्वै घटक, प्रयत अवधपुरि माहिं ॥
पुनिप्रभुसोंकह तवकथन, नीति विहित है तात ।
याहि जनावन निमितमैं, नृपति जनकपहँ जात ॥
सो०—असकहिपुनिमुनिराय, निमिकुलमणिढिगजायकै।
कह नरपतिहि बुझाय, रघुपतिकर अभिमतजोई ॥
सो सुनि भूप भाव अनुरागे * ह्वै मुद मगन विचारन लागे ॥
मोसम भागि शालि नहिंआना * भयो धन्य हिमवान समाना ॥
ह्वै जग जननि जनक भवधामू * सार्थक भयो जनक ममनामू ॥
अबमोहिंलाभ विनहि करतूती * सुरस्वरस्वामि श्वसुरपदभूती ॥
जन रंजन भवभीर उधारण * अशरणशरणनिखिलजगकारण
होय सदय शिव हृदय विहारी * निजजनसदन माहिंपगुधारी ॥
मन वचकर्म अगोचर जोई * सम्पद रहे दान करि सोई ॥
पुनिकहयहिकृतिमधिमुनिराजू * नहिं सामान्य दूत कर काजू ॥
दो०—अहैविदितमुनिनायकहि, वदत तत्वविद लोग ।
केवल यहि ते होत है, ज्ञानमोक्ष संयोग ॥
अतिविचित्र सियरामके, परिणय कृत्य मझारि ।
घटकहु होनविचित्र चहि, यहिहित विनयहमारि ॥
सो०—तुमही कृपा अगाध, द्रुतसिधारि पुरिअवध मधि ।
पूरहु प्रभु मम साध, आनि ऋधिपअवधाधिपहि ॥
यदि आयसु तुम्हारि प्रभुपावहुँ * तौआशुहि रथसाजिमँगावहुँ ॥
सुनिनृपवचन विहँसिमुनिकहेऊ * यह तौ मम संकल्पहि रहेऊ ॥
आनहु तुरगयान सजवाई * असकहि रघुनायक ढिगजाई ॥
सहित वन्धु रघुनन्दन काहीं * सौंपि सुमंत्र विप्रकर माहीं ॥
रोहि जनक प्रेरित वरयाना * अवधओरिमुनिकीन्हपयाना॥

इत विदेह यत नेहि महीपा * पठय निमंत्रण सवन समीपा ॥
नृप दशरथहि समादर हेतू * निजसीमा लगियतन समेतू ॥
सकल सुपास वस्तु संचयकर * नियनिदेशघोषणअतिसत्वर ॥
दो०—निज अनुज कुशध्वजहि, पत्र पठाय विदेह ।
सपरवार सांकश्य ते, लिय बुलाय सहनेह ॥
कृत्तिवास मुद निधि उमण, मिथिलानगरमझार ।
श्रोतागण उच्चारहू, राम नाम यक वार ॥

ऊनविंशोत्तरशततम सर्ग ॥ ११९ ॥

महर्षि विश्वामित्रका अवध प्रवेश व उनका एका की प्रत्यागत देखकर महाराज दशरथ व तद्राज्ञी गण की आकुलता ॥

दो०—इतहि करत निजमनहिमन, रमारमन गुणगान ।
सिद्धाश्रम पहुँचत भये, कौशिक तपोनिधान ॥
तिनहि हेरि ऋषि कुँवरि गण, पूँछेहु चाव समेत ।
काह सत्य यह हर धनुष, भंजेहु रघुकुल केत ॥
सो०—कँह मुनि जगत मझारि, जड़ चेतन यावत अहैं ।
सबन विदेह कुमारि, अहैं प्रेम कर्षण करनि ॥
चन्द्र चूड़ कोदण्ड, तिनहीं के कल्याण हित ।
आपुहि ते युगखण्ड, भयो भुवन भर रामयश ॥
अब आशुहि सियराम विवाहू * लखिकरिहौलोचन फललाहू ॥
नृप दशरथहि लिवावन हेतू * जात अहौं मैं पुरि साकेतू ॥
यहसुनितहि ऋषितियनमझारी * मचेहु मोद कलरवअतिभारी ॥

पुनि तहँते मुनि तपोनिधाना * रोहि यानवर कीन्ह पयाना ॥
पहुँचि गंग तट रोकिस्वस्यन्दन * सरितगाहिकरिसन्ध्यावन्दन ॥
चलिक्रमशाहि अहिल्या आश्रम * पवन जन्म महिपरममनोरम ॥
सघन ताड़का वन बहु तपवन * लांघत चौथे दिवस तपोधन ॥
पहुँचि अवध सरयू तट माहीं * शुचि नितकृत्यसमापनकाहीं ॥
रथते उतरि सरित करि गाहू * करन लगे सन्ध्यामुनि नाहू ॥
उत जबते सवन्धु रघुनाथा * कीन्ह गमनऋषिकौशिकसाथा

दो०—तबसों नित यक यकघरी, राम अदर्शन माहिं ।
यक यक युग सम बीतही, रघुपतिजननीकाहिं ॥
जेहिदिनअवधहिआगमन, कियकौशिकयशखानि
तेहि दिन अति उच्चाटचित, कह नृपसोंइमिवानि ॥

सो०—नाथ जानि नहिं जाय, कसकठोर तुम्हरोहृदय ।
मुनि सँग सुतहि पठाय, कछु नखोजसुधिलेतहौ ॥

केहि हित मोर प्राण निधि रामू * अबलगिनाहिं आवफिरिधामू॥
अब बिनु लखे चन्द्र मुख ओही * कछु न सुहातरैनदिन मोही ॥
दिकसव तिमिर पूर दरसाई * श्री विहीन रजधानि लखाई ॥
रुचिर रम्य उपवन उद्याना * लगव भयावन गहनसमाना ॥
खगमृग निरानन्द दुखसाने * विचरत इत उतचितअलसाने ॥
सुरभि विहीन प्रसून उसीरा * तप्तमरुत वत मलय समीरा ॥
प्रजापुंज सब विगत उछाहू * लखियत चितप्रसन्न नहिकाहू ॥
प्राण अधार राम विच्छेदू * इमि दै रह्यो नाथ मोहिं खेदू ॥
जिमिअलिपकविष व्यापतदेही * नरहिं घोर बाउर करि देही ॥
सुयशनिमितकौशिक करमाहीं * सौंपि मोर अंचलनिधिकाहीं ॥
बैठ निचिंत स्वधाम मझारी * अहै तुमहिं अब शपथहमारी ॥
द्रुतपद दूत पठय मुनिपासू * लेहु बुलाय सुतन कहँआसू ॥

दो०—नतु मम प्राण पयान महँ, होई विलँवन लेश।
यहसुनि इमि मृदु वचनते, दीन्ह उतर अवधेश॥
सुनियसुमुखि कैसिहु व्यथा, भये अर्द्ध तनु माहिं।
अपर अर्द्ध तनु विन व्यथा, कबहुँक रहिसकनाहिं
सो०—तुम्हरेहि न्याय सदाय, रामविरह दुख दाव ते।
गहन रूपि ममकाय, धधकिधधकिनितदहकिरह॥
परसुनुसुमुखि निमिषजेहिभांती * करत तपनरक्षा दिन राती॥
तेहि प्रकार मुनिवृन्द समेतू * तपवल वली कुशिककुलकेतू॥
रक्षत उभय कुमारन काहीं * छुइसकअशुभछांह तिननाहीं॥
दूजे आजु वारही वारा * फरकदहिनभुजनयन हमारा॥
यहिहित उर प्रतीति मम रामू * सानुज आजु आइहै धामू॥
अथवा अवशि आजु कोइ आई * तिनन कुशल सम्वाद सुनाई॥
हेरहु और आजु कर वारा * यदिनपुरयो अनुमान हमारा॥
तो मैंहीं कल होत विहाना * करिहौ सिद्धाश्रमहि पयाना॥
इमि भुवाल भामिनिहि वुझाई * आजे सभाभवन मधि जाई॥
इत पुर लोग सरयु तट माहीं * लखिऋषिअकसरकौशिककाहीं
दो०—शंकित चित लागे कहन, सकल परस्पर माहिं।
मुनिवर आये छोड़ि कहँ, सानुज रघुमणिकाहि॥
हाय दैव कस आपदा, यह सहसा प्रकटान।
राम विना हम सवन कर, रहिहै केहि विधप्रान॥
सो०—तिन मधि कछु जन धाय, राजसमामधि जायकै।
लगे कहन विलखाय, यहि प्रकार अवधेश सो॥
प्रभु अकेल आये मुनि नाथा * है न राम लक्ष्मणति नसाथा॥
याकर हेतु जाय नहिं जाना * कहँ रहे दोउ अवधपुर प्राना॥
यह सुनतहि नृप शीश मझारी * गिरेहुमनहुँ शतपवियकवारी॥

स्वेत कुष्ट व्यापे तनु माहीं * जेहिविधकायचर्मनशिजाहीं ॥
तिमि सुनतहि यह अशुभसँदेशू * भई विकृति इन्द्रिय अवधेशू ॥
अन्तःपुरि मधि यह सम्वादू * पहुँचिप्रकटकिय विषमविषादू ॥
कन्दनध्वनि चारिहुदिशिछयऊ * मनहुँ वसेर शोक तहँलयऊ ॥
यह वृत्तान्त जोइ सुनि पावहि * राजभवनदिशि रुदतसोधावहि
पुरी द्वार दिशि वातुल नाई * धाये नृप तनु दशा भुलाई ॥
यथा अर्थगति गिरा पछारी * अपर अक्ष मानस सहचारी ॥

दो०—तिमि कौशल्या कैकयी, सुमित्रादि नृप नारि ।
रुदतधनुतशिर उरकरन, धाईं नृपति पछारि ॥
सचिवसभासदकुलगुरुहु, नृपसँग कीन्ह पयान ।
सोइक्षण पहुँचे आयतहँ, कौशिक तपोनिधान ॥

सो०—रोगि दशा जस होय, मृत्यु काहि अवलोकि कै ।
नृपहु दशा भई सोय, लखिअकेल ऋषिकौशिकहि

गिरि महीप मुनि पदन मझारा * विलपतयहिविधवचनउचारा ॥
मम दोउ प्राण पूतरिन काहीं * आये छोड़ि कौन थल माहीं ॥
अन्धक शाप काह मुनिराजू * सिद्धिकरन रहतुमरहि काजू ॥
राम दरश विनु आकुल प्राना * ह्वै रह्योंजीवन मृतक समाना ॥
यहिहित प्रीय प्राण हमकाहीं * ताके रहे सोहि तनु माहीं ॥
व्याये राम विरह सन्तापा * रह्योसकतिकरि रुदनविलापा ॥
काहलाहु लखि पूछहु तोहीं * वंचित किहौ ताहुसन मोहीं ॥
चारु राममुख दर्शन केरा * मृतुनकरत यदिअटक घनेरा ॥
तौ सहर्ष करि असु परिहारा * करतेहुँ मुनिपरितोष तुम्हारा ॥
रंकहिविधि अमूल्यनिधिदाना * कीन्ह रहे करि कृपा महाना ॥
तेहि नशाय तुमकहँ ऋषिनाहू * भयहु कौन धौं तपफल लाहू ॥
मैंनिशिमधिनिशिचरअनुहारा * ऋषि अन्धक सुवनहि संहारा ॥

दो०—अबबूझेहुँनिशिचरवधन, गयहुजो सुतनलिवाय ।
तासोंरह मम वधहि कर, तव आशय मुनिराय ॥
पुनिमखरक्षणमिसकरन, का यहि मधि रहकाज ।
ममअघते दै शिशुन दुख, कौन युक्ति ऋषिराज ॥

सो०—कौशल्यादिक रानि, वत्स विरहिता सुरभि वत ।
विलपतियहिविधवानि, कौशिक सो लागीकहन ॥
हे मुनि जगत मझार, सकलजननहितसाधनहि ।
यही धर्म है सार, तपोनिरत ऋषिमुनिनकर ॥

विदित तुमहिं यक निमषहुजोई * हमहि न दरशराम मुखहोई ॥
तौ व्यापत मृतु व्यथा अपारा * राम सवन जीवन आधारा ॥
तव निगूढ़ छलछन्द फन्द सन * दीरघ कालसोहिंहम सबजन ॥
राम वदन सुचारु मन रोचन * लखिपावतीनाहिंभरिलोचन ॥
अबलगितासुफिरन आशारखि *तेहपिदअंकितअजिरआदिलखि
करतरहीं कछु शीतल प्राना * अबतजि मृत्युनहिंगतिआना ॥
हा मम वत्स अबुझ सुकुमारा * कवहु न गृह वाहर पदधारा ॥
खेलन शयन खान अरु पाना * यहितजिअपरनाहिंजिन जाना
काह बूझि तेहि दै रणभारा * सर्वनाश कर दीन्ह हमारा ॥
कस तुम निरव ठाद मुनिराई * आयहु कह मम वत्स गँवाई ॥

दो०—राम लखण विनुतिमिरमय, जगत हमहि दर्शाय ।
अब यहि भल्त कोइभांतितव, क्रोधानल प्रकटाय ॥
तेहि अनिवार हुताश मधि, हमसब जन ह्वै छार ।
यहि दारुण यंत्रणा सों, लहहिं आशु निस्तार ॥

यहिविध रानिनविकल विहाला * परेमूर्छि महि अवध भुवाला ॥
लखिकौशिकचितचकितअपारा * इमि वशिष्ठ प्रतिवचनउचारा ॥
यह व्यापार काह रह होई * बूझि परत कछुमोहिं न सोई ॥

जाने बिना प्रकृत सम्वादू * कस करि रहेसबविषमविषादू ॥
तुम्हरहु सर्व दर्शिता भूरी * का यहिकाल गयो है दूरी ॥
मोहिनिश्चय रह धनुध्वनिघोरा * दियभरिरघुवरयशचहुँओरा ॥
विदित न मोहिं काह मन लाई * राखेहु मुनि यह मर्म लुकाई ॥
गुरुवशिष्ठकह यहिअभिनयकर * तुमहिंमुख्यकारणहौमुनिवर ॥
तेहि अपरापर पट परिवर्तन * करन तुम्हहिं पै भारतपोधन ॥
अबआशुहि मुनियहिक्षणमाहीं * करन सचेत महीपहि चाहीं ॥
तेहि उपाय यह तुम यकवारा * कीजिय राम नाम उच्चारा ॥
यहसुनि तुरत कुशिककुलनाथा * परम पुनीत कष्ट स्वर साथा ॥
उच्चारेहु शुचि नाम ललामू * जयजय दशरथ जीवनरामू ॥
जिमि वर्षे पियूष असुदाई * होत सजीव मृतक पुनराई ॥

दो०—रामनाम तिमि श्रवणमधि, परतहि क्षणततकाल ।
उठि चहुँ दिशि लखिपूछेऊ, सह व्यग्रता भुवाल ॥
काह राम मम आयऊ, मैंतौ प्रिय सुतकाहिं ।
बैठारे निज क्रोड़ मधि, लखि पावत हौं नाहिं ॥

सो०—पुनिकहँ गयउसिधाय, तात राम प्रियवरलखण ।
इमि कौशिकमुनिराय, लखिअधीर अवधेशकहँ ॥

राव रानि प्रति वचन उचारे * सकुशल हैंदोउ तनय तुम्हारे ॥
करि अद्भुत यशप्रद बहु कामू * यहिक्षणलसत जनकपुररामू ॥
कहन न दिहौ प्रकृत सम्वादू * काह बूझि करि रह्यो विषादू ॥
परे वारि दाहित तरु पाँती * होत सजीव बहुरि जेहि भाँती ॥
तिमिऋषिवदनअमियमयवानी * सुनत शोकगत नृपति सरानी ॥
हर्ष चिह्न सब जन मुख छयऊ * मनहुँपलटि अभिनयपटगयऊ ॥
शान्ति रसज वीचिनमहँ आई * करुणा रस जलरह लहराई ॥
कौशिक कर वचनामृत पाना * करन लगे सब हुलसि महाना ॥

जिमिरघुपतिताड़कहि सँहारयो * खल मारीच केर मद दारयो ॥
जिमि गौतम तिय कहँउद्धारी * जाय जनक पुर सभा मझारी ॥
शम्भु शरासन भंजन कीना * सो सब वरणि मुनीश प्रवीना ॥
पुनि कह अब विदेह कृत भूपा * ग्रहण करन हित दान अनूपा ॥
दो०—समुचित साजसमाज युत, मिथिला चलिय भुवाल ।
सो सुनि नृप सुखस्वप्नजनु, लखनलगेतेहिकाल ॥
पुनिपुलकित चितकह्यो नृप, यहिविवाह कृतिमहिं ।
कर्ता धर्ता तुमहिं तजि, अपर अहै कोउ नाहिं ॥
सो०—मैं केवल हौं दास, तव पावन पद पद्म कर ।
वरणत कवि कृतिवास, रामचरण रज आशकरि ॥

विंशोत्तरशततम सर्ग ॥ १२० ॥

अयोध्यामें मंगलोत्सव व महाराज दशरथकी यात्रा और मिथिलाप्रवेश ॥

दो०—तपोराशि कौशिक कथित, समाचार सुखसार ।
निमिष माहँ घोषित भयो, सगरे नगर मँझार ॥
प्रमुदित चित्त अमात्यगण, बिविध कृत्य के हेत ।
इत उत द्रुत धावित भये, शत २ भृत्य समेत ॥
मंगल उत्सव कर रुचिर, आयोजन सउमंग ।
करन लगे पुरवासि सब, समारोह के संग ॥
सो०—ज्यहिप्रकार पलमाहिं, यक प्रज्वलित प्रदीपसन ।
उद्दीपित ह्वै जाहिं, सहस सहस दीपावली ॥
त्यों नरनायक केर, अपरिसीम आनन्दयक ।
किय मुदमत्त घनेर, सकल नगर नर नारि कहँ ॥

दो०—अवधपुरी आनन्द सों, गई भली विधि पूरि।
वाद्य निनाद तरंग मैं, भासमान भइ भूरि॥

हरिगीतिका छन्द॥

प्रति दुर्गसों उत्थित सहस्रन तूर्यघोष अपारहीं।
मानहु गगनमण्डलविदारत योंविपुलवपुधारहीं॥
सित नील पीत हरित पताकास्वर्ण दण्डनपैलसी।
फहरैं गृहन महँ मंगलीक अनूप शोभा भौनसी॥
किंकर निकरकर मैं लिये कांचनकलश पुरि बीचहीं।
चन्दन सलिलसन राजमार्गन मोद मोहित सीचहीं॥
थोरेहि समय में सब नगर महँ होनउत्सवयों लगे।
कहुँनृत्य गान कर नगरनरनारि आनँदरसपगे॥
कहुँविप्रगणकृतध्वनिश्रवनकीकहु नटादिककी कला।
कहुँ नास्य अरु कहुँ मल्लक्रीड़ा इन्द्रजाल कुतूहला॥
बहु सौधकार महीप सौधन को करत मार्जन उहां।
चित्रित करत चहुँ चित्रशालन चित्रकार जहांतहां॥
इतउत भ्रमतवनिता निचययुत भौन यों शोभितभये।
जैसे गगनमग महँ विमान भ्रमैं छवीली छवि छये॥
वनितानके वर विधुवदन वृंदन गमन पथ यों लसैं।
शत २ निशाकर नभपथहि पूरणप्रभायुत ज्यों लसैं॥
अरु कामिनीगण कान्ति लखि उर माहँ उपमायोंभई।
जनु राजधानी घनघटा विद्युतनिचय मय ह्वै गई॥
दृढ़काय बलशाली सहस्रन प्राश असि करमहँ लिये।
निजकार्य तत्पर बहु सुभट विचरतसतत निर्भयहिये॥
जिनसन पुरी बहुसिंह संवृत गिरि गुहासम लखि परै।
शोभित सुशोभन कनक कदली तोरणन जनमनहरै॥

सुन्दर अमलजल पूरिता सरयू निरप निस्तारिणी ।
त्यहिकाल यहि आनन्द उत्सवकी बनीं सहकारिणी ॥
कांचन जटित नौका अमित तहँ पाँति पाँति सोहावतीं ।
चंचल तरंगन मिलिमनौं भल छुरित नृत्य दिखावतीं ॥
कोऊ बकाकृति मीनआकृति मकरआकृति राजतीं ।
कोउ कोलसर्प मयूर आकृति तरणि तहँ पर भ्राजतीं ॥

रामगीती छन्द ॥

तिनपर निवेशित किये शिल्पिन बहु विलासनिकेत ।
उद्यान मनहर चम्पकादिक वृक्षवृन्द समेत ॥
माणिक्य मरकत चन्द्रकान्त प्रबाल आदि मणीन ।
विरचित खचित चितहरण जिनके बाह्यद्वारनवीन ॥
वहु नागरिकगण करत उत्सव कै अरोहण पोत ।
सरयू सरित के स्रोत सँग नृतगीत बाद्य स्त्रोत ॥
जनु भे प्रवाहित त्यहिसमय—असहृदय अनुभव होत ।
दशरथ नगर घर घर डगर दरसत अनन्द उदोत ॥
कोउ ऊर्णनिर्मित उद्ररोमन के रचित परिधान ।
कोऊ कनकपट कृत परिच्छद पहिरि तनु अनुमान ॥
पाँयन विचित्रित स्वर्णचित्रित अधिकमूल्य सुरंग ।
धारे उपानह मणिजटित भूषण सँवारे अंग ॥
पुरबीच बीथिन बालिका बालक किये शृंगार ।
विचरत अनूप स्वरूप सुंदर हृदय हर्ष अपार ॥
तिन सन सकलपथ तारकावृत गगनपथ अनुरूप ।
त्यहिकाल लोचन मोददायक लखिपरत शुभरूप ॥
चत्वर विशालन बीच शत शत अन्नमेरु लखात ।
घृत दुग्ध दधिमधुके सरोवर बर दुकूल सोहात ॥

याचक निचय परिचारकावलि नादसन सब स्थान।
शब्दायमान दिखात गर्जनशील सिंधु समान॥

नरिन्द छन्द॥

अगुरुधूप चन्दन गंधनसन सुरभित सबथल सोहे।
सूर्य्य प्रभा भासित भवनावलि लखत लेत मन मोहे॥
जिन पै विपुल वैजयन्तिनके दाम ललामा फर हरैं।
स्वर्ण रेणुचित कौशेयादिक क्षौमपटक्रुत लहरैं॥
मुक्तास्तवक फटिकमणि शोभित रत्नजटित चहुँओरैं।
ऊर्ध्व भाग प्रासादन केरे चमकि चमकि चित चोरैं॥
बिच २ पारिजात पुष्पन सों विरचित सुन्दर माला।
धरीं सुगंधित करत हरत हिय सूक्ष्मविराट विशाला॥
विस्तृत चत्वर उपरि कुसुमचय अक्षतहविदधि लाजा।
धूपादिक मांगलिक वस्तु सब धारे मंगलकाजा॥
अन्तःपुरके वृहत प्रकोष्ठन सहस २ त्यहिकाला।
भालविशाल त्रिपुण्ड्र लगाये गलरुद्राक्ष कि माला॥
भस्माच्छादित सकल कलेवर जटाजूट शिरधारे।
सिद्ध प्रसिद्ध तपोबलवारे शिव २ मुख उचारे॥
हरिचन्दन चर्चित मस्तक पै ऊर्ध्वपुण्ड्र छबिछाई।
तुलसीदास लिये वैष्णव वहु भजत हरिहिहियध्याई॥
वेदपाठि विप्रन के यूथा ब्रह्मकल्प ऋषिवृंदा।
स्वस्तिपाठ करि सामहि गावत तारस्वर सानंदा॥
इन्द्रसदन सम निज २ सदनन शची सदृश सबरानी।
दासी दासन द्वारा देतीं दान महा मुदमानी॥
वस्त्र अभूषण यान धेनुगन धराधाम धनकाहीं।
रत्न अमोल अशननाना बिधि सकलयाचकनकाहीं॥

क्षुधित गणन कहँ कामधेनुसी भोजन प्रदा लखानी।
सुकृतार्थिन कहँ कल्पवृक्षसी सकल कामनादानी॥
धनअर्थीगण अभिमत धनलहिचिन्तामणिअनुमानी।
जो जो कछु चाहत सोइ देतीं कौशल्या महरानी॥
अपरापर रमणीक कक्ष यत राजपुरी के सारे।
वीणा वेणु मृदंग वल्लकी ध्वनि पूरित भे भारे॥
वेद अर्थ पालक पवित्रमति नृपदशरथ सुखमानी।
गाधि सुवनसन पाणि जोरि इमि बोले मधुरीबानी॥
हे भगवन्! यह रामविरह रह हमहिं हलाहल जैसो।
तव प्रभावते पै अब उपज्यो त्यहि ते अमृत ऐसो॥

पै आश्चर्य न कछु यहि माहीं * मेटिसकतमुनिविधिलिपिकाहीं
दैवहु होय यदपि प्रतिकूला * ऋषिमुनिहोहिंएक अनुकूला॥
तौ न दैव कछु सकत बिगारी * विप्रतपो बल प्रबल अगारी॥
ज्यों वर्षाऋतु आगम पाये * प्रखर ग्रीष्म के ताप तपाये॥
तदपि सकल वन लहि नवपल्लव * हरितहोतलहिशोभाअभिनव॥
राजसचिवगण नरपति बचनन * सुनितिनकर कीन्ह्योअनुमोदन
कीह्यो सत्य नृप वचन बखाने * मृदुल सयुक्ति मधुररससाने॥
विकल वारिबिन रहे सबै हम * आयइतै कौशिकऋषिसत्तम॥
सुधा प्रवाह प्रवाहित कीन्ह्यो * मरतजिययासबनकहँलीन्ह्यो॥
महाराज दशरथ तदनन्तर * द्रुतगामी दूतन त्यहि अवसर॥

दो०—पठयो नेवत देन कहँ, निजाधीन सामन्त।
मण्डलेश भूपन निकट, अश्वारोहि अनन्त॥
पुनि प्रधान मन्त्रिन दियो, हर्षित अवध नरेश।
मिथिला यात्रा के उचित, आयोजना निदेश॥

सो०—तदनन्तर नरनाथ, सुख सागर महँमानमन।

कौशिक कहँ लै साथ, गे प्रधान अन्तःपुरे ॥
कौशल्या कैकेयि सुमित्रा * आदिक रानि पवित्रचरित्रा ॥
द्रुत एकत्रित ह्वै मुनि केरी * पूजन नति नुति करीघनेरी ॥
पुनि करजोरि कहन इमिलागीं * रघुवरपरिणयसुनिअनुरागीं ॥
भगवन् ! ज्यों समुद्र नहिं हेरी * उद्धत प्रकृति जलचरन केरी ॥
तिनकर करत उलटि प्रतिपाला * प्रेम विवश सागर सबकाला ॥
तिम हम मूढ़ नारि अज्ञानी * तुमऋषिवर्य ! ब्रह्मऋषिज्ञानी ॥
यासों जो अपराध हमारा * सोनविचारियविगतविकारा!॥
सुत सनेह उपज्यो उन्मादा * हम हतज्ञान भईं सविषादा ॥

दो०—जो मुखआयोसो कह्यो, त्यहिक्षणहमऋषिराज ! ।
सो सब चूक क्षमा करौ, ह्वै प्रसन्न मन आज ॥
बिना विचारे जो कह्यो, दासी दास अजान ।
सोऊ सब क्षमिये किये, कृपादृष्टि भगवान ! ॥

सो०—यों कहि सगरी रानि, ऋषिपद पद्मनशीश धरि ।
निजहि कृतारथ मानि, प्रणति करी साष्टांग तब ॥
कह नृप निज कुलकेतु, रानिन सन मधुरे वचन ।
होहु विकल क्यहि हेतु, ? मुनि अन्तर्यामी अहैं ॥

पद्धटिका छन्द ॥

तिनके सन्मुख निजहृदय बात । है प्रकट करब निष्फल लखात ॥
ज्यों उदित होत दिननाथकाँह । कोउ दिखरावै लै दीप राह ॥
पुनिकौशिकमुनिसोंअवधपाल । यों कहे वचन मधुरे रसाल ॥
हे स्वयंसिद्ध मुनि तपोधाम ! । तुमकीन्हो हमकहँ सिद्धकाम ॥
गाधि सुवन सुनि नृपति बैन । बोले सयुक्ति यमनियम ऐन ॥
कृतकृत्य होन के त्रय उपाय । सुनिये महीप ! सोइ चित्तलाय ॥
उत्साह, तेज, मन्त्रण महीप ! । सोइ तीनि शक्ति हैं तव समीप ॥

तिहुँरानिन दिशि करत सैन्न । योंकहे विहँसि मुनिविशद बैन ॥
पुनि राजा अरु रानिन कीन । मुनि की सेवा ह्वै भक्तिलीन ॥
सूर्योदय प्रथमहि प्रभात । आनन्द नगर महँ नहिं समात ॥

दो०—स्वर्णदण्ड सन सब भईं, वादित भेरी भूरि ।
पटह शंख धुनि अवधमधि, गई भलीविधि पूरि ॥
वाद्य निनाद सुने सबै, जगे सचिव समुदाय ।
आयोजन लागे करन, यात्राकर हरषाय ॥

भूभागज्ञ स्थपति करुभास्कर * सूचिक खनकऽरुसूत्रकर्मकर ॥
वंशाकार पथ शोधक यूथा * तरुतक्षक आदिकन वरूथा ॥
पथ प्रशस्त विरचन कहँ आगे * प्रेरित भये सकल अनुरागे ॥
गुल्मलता तरु वल्ली छेदन * प्रस्तरकक्कर कर अपनोदन ॥
करत चले वह सब मग माहीं * ज्यहिपथ छांह नेकहू नाहीं ॥
बिविध वृक्ष तहँ दिये लगाई * जिनकी छाया परम सोहाई ॥
टंक कुठार दात्र आघातन * नष्टकिये मगमाहिं महाबन ॥
सकल निम्नथल समतल कीने * पूरि गर्त बिलआदि प्रवीने ॥

सो०—क्षुद्र प्रवाह समूह, वंधन कौशल सों तबै ।
सागर सरिस दुरूह, भये प्रचुर जल पूर्ण ह्वै ॥

दो०—जलविहीन थल जहँ तहां, चांप दण्ड युत कूप ।
कुद्दालादिन खोदि कै, विरचे वृहत अनूप ॥
तदुपरि सुन्दर बहु रचीं, प्रस्तर वेदि विशाल ।
शत २ पिण्डिल सेतु तहँ, निर्मित भे त्यहिकाल ॥
निर्मित स्कन्धावार भे, अमित पवनिकाच्छन्न ।
तुंग अपाश्रय केणिका, संयुत छविसम्पन्न ॥

सुगीतिका छन्द ॥

विराजहीं पटरचित मत्तालम्ब भांति अनेक ।

विचित्र कम्बल कलित कुट्टिमराजि वर बहुतेक ॥
घने बने निर्मल जलाशय कुसुम कुंज विभात ।
सुचारु आपण श्रेणि गोगृह खलुरिका दरशात ॥
महामहानस हयकुटी गजबन्धनी सु अनन्त ।
स्वयं महीपति और अन्य अनेक नृप सामन्त ॥
असंख्य मण्डल ईशगण विश्रामहित रमणीय ।
सुहावने शुभठौर स्थापित भे शिविर कमनीय ॥
तहाँ विशाल निवेश बहु रथ्यानभे सुविभक्त ।
दुहून ओरन वृक्षराजि लतावितान प्रयुक्त ॥
सुधासमुज्ज्वल गृहचयन रथ्या अलंकृत सर्व ।
करैं शचीपति लोक मारगगर्व कहँ जे खर्ब ॥
इन्द्रनील मणि निर्मित बहुवर * बिच २स्थापितप्रतिमामनहर ॥
धारायन्त्र समन्वित सुन्दर * तृणमय रचितनिकर्षण सुखकर
गमनागमन मगन किंकरगन * कीन्ह्योचन्दनजलकरसिंचन ॥
शोभासदन सदन श्रेणिनपर * फहरैं विविध बैजयन्तीबर ॥
होयनिरखिजिनकहँ अनुभवयों * नभमहँचित्रितचित्र बिविधज्यों
चतुरशिल्पिगण थोरेहि काला * करि चातुरी रचे सुविशाला ॥
स्कन्धावार असंख्य सोहाये * अमरावती सरिस छबिछाये ॥
सकल राजपथ सुरपथ जैसे * निर्मित किये अनूपम ऐसे ॥
नदी गण्डकी तट लौं विरचित *शोभितभयोअमितपथअभिहित
उडुगण उडुप सहित मनभावै * अमलगगनथलज्योंछबिजावै ॥
दो०—शत २ यामिक भटविकट, कौन्तिक अरुकाण्डीर ।
त्यहि पथ प्रहरी काजकहँ, करत सुपुष्ट शरीर ॥
इत सतंचित आनंदमय, प्रभु के मानवधाम ।
अवधमाहिं आनंदध्वनि, पूरि गई सब ठाम ॥

चन्दन चर्चित चारुरुचि, चामीकर के कुम्भ।
मंगलमय द्वारन लसैं, तोरण कदलीस्तम्भ॥
पूगीफल माला सुमन, नव पल्लव श्रेणीन।
अनुपम छबि पाई पुरी, निदरत देवपुरीन॥
वामनयनि नव यौवना, सुरांगना के न्याय।
दशरथ नृप भुजपालिता, पुरी सुतनु दरशाय॥

काव्य छन्द॥

अन्तः पुर अतिगुप्त जघन सम संवृत शोभन।
उन्नत अतिप्रासाद मनहुं त्यहि के पीनस्तन॥
शोभमान चूचुकसमान त्यहिपै मयूरगन।
धवल मुक्तमाला मरालमाला मनोहरन॥
अगुरु आदिकृत धूम पटल पट नील जानियत।
कोकिल के कलबचन बचन रचना प्रमानियत॥
सज्जितगोपुर मुख सहास सुन्दर निहारियत।
मणिगण भूषणसदृश सकल अस्तथितविचारियत॥
चहुँदिशि कलरव गयो पूरि साकेतहि घरघर।
इत उत धावित कर्म चारिगण कहयह तारस्वर॥
"सज्जित द्रुततर होहु सबै सज्जित द्रुतयहि छन"।
हय हेषित मातंग तुङ्गबृंहित सैनिकस्वन॥
घर्घर ध्वनि रथचक्र केरि उत्थित अपार भइ।
शंख भेरिदुंदुभि निनाद दशदिशि पूरिगइ॥
चतुरंगिनि घन अनी रथादिक संकुल दरसत।
मनौं ऊर्मिसंकुलित महोदधि आवत उमड़त॥
आपण वाहन यान शकट अरु कोष जानकहँ।
भये सुसज्जित सकल तहाँ अविलंबित पलमह॥

अक्षरचंचु अनेक अक्षदर्शक अधिकर्मिक।
धान्यमाय अरु वैद्य तुलाधारी दैसाधिक॥
यन्त्री यामिक तन्तुवाय कारावर बहुकर।
खण्डपाल दृतिहार अमित पाचक निदेशहर॥
दण्डिक रंजक रजक अजय आदिक अनंदमन।
पर्णकार जंघाल सूतमागध वंदीजन॥
नटनर्तक नर्तकी भण्ड भाण्डिक बाजीकर।
सज्जित श्रेणी भुक्त भये यात्राहित हरबर॥
सहस २ शैलेय भौम वायवकुल मल्लिक।
केकाणी कल्याण पञ्चकादिक अरु ताजिक॥
चक्रवाक जातीय मृगज आदिक सुखमामय।
श्रेणिवद्ध कमनीय कान्ति संस्थित सुशील हय॥
कनक कलित पटघटित जटित रत्नसन सुन्दर।
तिन ऊपर कुथ परे हरे पीरे सित चितहर॥
रंकुचर्मचित खचित मणिन पर्याण सोहावन।
शोभित त्यहिपै दिपै हीरकन की सुषमासन॥
कारुकार्य संकलित स्वर्णकृत दोऊ ओरन।
लम्बमान चरणावलंब उनपै अति शोभन॥

दो०—मणिमय बल्गायुतखलिन, शोभमान मुखमाहिं।
राजत रजतरचे रुचिर, क्षुरत्राण दरशाहिं॥
अश्वसैन्य सुन्दर सजी, अनुचरगण मनलाय।
मनुगंधर्व समाजसी, वास्तव महँ दरशाय॥
भद्र मन्द्र मृग मिश्र ध्वज, रम्यक कारुष भीम।
वीर अष्ट मंगल लसैं, गिरिसम करी असीम॥

सो०—मुक्तादाम ललाम, लहरत उनके अगमहँ।

गलशृंखलछविधाम, कनककलितअतिहीललित ॥
दो०-सुघर घटित घंटा लसत, चामरदर मुखमाहिं।
पृष्ठ बरण्डक बर धरे, प्रभाभरे दरशाहिं ॥
जिनपै छाए छत्र मणि, जटित ज्योतिमय सोह।
कनकविन्दु चित्रित रुचिर, रज्जुग्रथित अवरोह ॥
ऐरावत सम सुन्दर साजा * शत्रुंजय नामक गजराजा ॥
भूषण भूषिततनु शुभरूपा * नृप आरोहण हेतु अनूपा ॥
भयो सुशोभित बहु सन्नाहन * अवधनरेश केर बर बाहन ॥
बहु बशिष्ठ आदिक तेजस्वी * बर ब्रह्मर्षि सुशील यशस्वी ॥
चढ़े रथन पर सोहत ऐसे * पावक अमित प्रज्वलित जैसे ॥
जात बातगति योजित घोरे * लखतलेत बरबस चितचोरे ॥
श्यामकर्ण मणि भूषण धारे * स्वर्ण वर्ण सबभांति सँवारे ॥
शोभमान इमिजिमिअति सुन्दर * दरशतनखतमालमहँहिमकर॥
सुत वत्सला कौशिला रानी * हर्ष विषाद युक्त यह बानी ॥
कहीसपतिनसन त्यहि काला * रामदरशबिनअतिवबिहाला ॥

पद्धटिका छन्द ॥

मम राम प्राणप्रिय निकट नाहिं। पुनितिनकेतनु संस्कारकाहिं ॥
अरु सूत्रवंध आदिक प्रकाण्ड। वरमंगलमय यत कर्मकाण्ड ॥
मैं करहुँ कौन विधि ? यहैमोहिं। है शोच, सुनायो सोइ तोहिं ॥
सुनि सकल सुमित्रा ज्ञानखानि। नयतत्वदर्शिनी मधुर बानि ॥
यों कह्यो विहँसि है राम नाम। स्वयमेवसकलमंगलनिकाम ॥
त्यहिकेरिअवधि अविदितअमेय। असकवनसूत्र जोपापलेय ? ॥
तुम रामनाम पै करहु रानि। मंगल उत्सव मन मोदमानि ॥
तव यहि उत्तर करमरम जानि। भइँपरमसुखितअवधेशरानि ॥
निरख्यो अन्तःपुर सकल माहिं। चहुँओररामअभिरामकाहिं ॥

इत भरत शत्रुहन युत अनूप। भे करिबर पर आसीन भूप॥

रामगती छन्द॥

हरिअंश दोउ भ्राता दोऊ दिशिमध्य दशरथभूप।
भे शोभमान शचीशसम बलशालि रूप अनूप॥
ज्योंस्वप्न जाग्रत अरु सुषुप्तिहितिहूँ अवस्था जाहिं।
लयहोन काहिं तुरीय महँ उपमा सोइमिदरशाहिं॥
त्यहिकाल शंख मृदंग गोमुख तूर्यध्वनिप्रतिनाद।
अरु वेदपाठी विप्रगण कर गगन गामी नाद॥
हय हस्तिरथरव पूर्ण ह्वै निःश्वासशक्ति विहीन।
मनुगगनथलअतिशयभयोव्याकुल महालयलीन॥
शुभ शंख ध्वनिमिश्रितत्रिदिवमहँदुंदुभीस्वनभूरि।
बहुहोन लाग्यो त्यहिसमै तिहु लोक रह परिपूरि॥
नभपथ कुसुमवर्षा करत सुर वृंद केर विमान।
विचरहिंइतहिउतसरितथितवहुतरणिश्रेणिसमान॥
वहु सैनिकन के पदन उत्थित धूलि घन अनुमेय।
त्यहिविच कनकमयकेतु दण्ड लसैं तड़ितउपमेय॥
वहु नीलगिरि समनील उन्नत गजगमत दरशाहिं।
मनुवारि भारानत अवनि लौं वारिधरवहु आहिं॥
अवधेश दशरथ को भये शुभ शकुन यात्राकाल।
सुर सुदंरी नरपति उपरि वरसैं सुरद्रुम माल॥
ग्रामीण तिय कृत लाजवर्षण सों नृपति मातंग।
दरशतयथा हिमजाल मंडित हिमअचल उत्तुंग॥
पुरनारि गण के भ्रमरवि भ्रमसम सुभग दृगपात।
निरखत नृपति सेनासहित निर्गत भये हरषात॥
मगमहँ सदलगुहराज अरु शत२निमंत्रित जौन।

सामन्त मण्डल ईश नृप सह सैन्यसँग भे तौन ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

त्यहिकालवहसुविशाल सेनासोहनिर्मलरातिज्यों ।
त्यहिकेरनीलाकारनभसम लसतगजगणपाँतित्यों ॥
उज्ज्वल तुरंगम श्रेणि छायापथ सदृशदरशै भली ।
नरपतिशिरनमुकुटन जटितहीरकघटिततारावली ॥
ब्रह्मर्षि विश्वामित्र और वशिष्ठ शुक्र बृहस्पता ।
तिनमध्यपूरणशशिउदित दरशातदशरथनरपती ॥
कैकेयि सुत शत्रुघ्न युत नृपपास उपमा योंलहैं ।
ज्योंस्निग्धतासँगज्योति केनिशिनाथपाससदारहैं ॥
श्रीराम निकटहिजात नरपति सैन्यसहु बहुदेश के ।
उपमा लहत यह अनुपमा अनुगामिहै अवधेशके ॥
निज२ प्रकारन भिन्न २ अभिन्नफल गौरव गही ।
ज्योंएकमोक्षहिकेमिलनहित बहुमतनकीगतिलही ॥
नूतनउदितदिननाथसम कमनीयकान्तिमुनीनकी ।
पावक शिखासम ताम्रवर्ण जटान जूठ छटानकी ॥
आभाविभासित स्वर्णमय दीसतसकलसुन्दरसचे ।
पटभौन जे नृप सैन्य के विश्राम हित प्रथमहि रचे ॥

दो०—गण्डक के यहि पार लौं, कोशल सीमास्तंभ ।
अपरपार सन जनक को, भयो राज्य प्रारंभ ॥
मिथिलापति किंकरनि कर, नृपनि देश अनुसार ।
अवध नाथ अभ्यर्थना, करन हेतु वहि पार ॥
पथ प्रथमहिं शोभित कियो, दिव्यगंध छिरकाय ।
कनक कलश जल भर धरे, शोभाहित हरषाय ॥
बाँधे बन्दन वार वहु, बिबिध ध्वजा फहराहिं ।

माल्य पुष्पभूषित भये, कृत्रिम द्वार सोहाहिं ॥
दशरथ अरु तिन सैन्य के, रहन हेतु मगमाहिं ।
बने आवसथ पथ घने, तने वितान जहाँहिं ॥
सुख सामग्रीसब धरी, अन्न पान संयुक्त ।
सेवा हित सेवक सहस, जहँ तहँ अहैं नियुक्त ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

सुभगासुलक्षण संयुता निकटस्थ ग्रामनिवासिना ।
सौभाग्य वतिसुन्दरि खरींमग दोउदिशि मृदुहासिनी ॥
मंगल निमित दधिदूध दर्पणदर सुन्दर कर मैं लिये ।
वहु वेदपाठी विप्रगण जय२ ध्वनिहि सादर किये ॥
बाजत बिपुल बादित्र चित्र विचित्र कौतुक लखिपरैं ।
गणिकान के गण गीत गावत मांगलिक नृत्यहिकरैं ॥
यहि विधि करत विश्राम मग महँ ठाम२ नरेश्वरा ।
मिथिला पुरी के पास पहुँचे सँग वशिष्ठ ऋषीश्वरा ॥
पठयो जनक पै कोशलेश्वर आगमन सम्वाद को ।
सुनिदूतमुख सननृपसचिवकरिउर अतुल अह्लाद को ॥
बेगिहि गयो नृप मण्डला अरु मंत्रियुत नृप निकटही ।
अवधेश आवन बात सुखदायक जनक सन सो कही ॥
मिथिलेश दशरथ दूत कर सत्कार सब विधि कीन्हेऊ ।
पुनि द्विज सुमंत्रहि यह सुखद सम्वाद सत्वरदीन्हेऊ ॥
जिन के भवन श्रीराम लक्ष्मण दोउ कुँअर अवधेशके ।
निवसत मनोहर मारसम सुकुमार सुन्दर वेष के ॥
पुनि आप मन्त्रीगण शतानन्दादि ऋषि सँगलै चले ।
अवधेश अगवानीनिमित त्यहिछन मुदितमनह्वैभले ॥

दरशतविमल चामर ध्वजनज्योत्स्ना मयीमनुदिक सबै।
जनु श्वेत छत्रन गगन राजत रजत तोरण युत तबै॥
दो०-गजगण पीठन पै धरे, सुघर वरण्डक जाल।
पवन गवन अवरोध भो, जिन सों यात्राकाल॥
हयपद उत्थित रजमिटी, गजगण के मदवारि।
नभथल निर्मलही रह्यो, शुभ सूचना प्रचारि॥
दोउ दल पहुँचे आनि समीपा * निरखि परस्परदोउअवनीपा॥
रथते उतरि परे मिथिलेशा * गजहि तज्योदशरथ अवधेशा॥
प्रेम सहित परिरंभण कीना * कुशल पूँछिदोउ नृपतिप्रवीना॥
बोले जनक मधुर मृदु वानी * अवध नाथ सनमनमुदमानी॥
महाराज! तपबल बिननाहीं * तव सम्बंध सुलभ हमकाहीं॥
तव गुण गण गाथा शुचिकाहीं * गावहिं सुर रमणी दिवमाहीं॥
त्यहि करकारणसहजबखान्यो * सुरपुरएक कलानिधि जान्यो॥
पै तुवपुर सबनर यहि काला * सकल कला निधि अहै नृपाला॥
दो०-स्वर्ग केर गौरव अहै, रति पति सोउ अनंग।
तुव पुर सांगो पांग हैं, सकल मनुज बर अंग॥
तुवशासन नहिं गोत्रभिद, कोउ मानव नयधाम!।
स्वयं पुरन्दर केर है, प्रकट गोत्रभिद नाम॥
कृष्णपक्ष में स्वर्गथित, रहत चन्द्र क्षय ग्रस्त॥
पै प्रजान कोतुम कियो, क्षय पथ प्रथम निरस्त॥
इन्द्र लोक महँ देखिये, नवग्रह रहत कृपाल!।
निरखिय नहिंतव राज्यमहँ, एकहु ग्रह क्यहुकाल॥
एक हिरण्यगर्भ दिवअहहीं * सकलपुराण शास्त्र असकहहीं॥
पै सब प्रजाभवन तवदेशा * अहैं हिरण्यगर्भ अवधेशा!॥
यक कमला वैकुण्ड विराजैं * तव पुरबहु कमलाकर भ्राजैं॥

धनद कुबेर स्वर्ग यक हेरे * तवपुर धनद मनुज बहुतेरे ॥
शुभागमन तव त्यों सुखदाता * भयोहमैंरघुकुल जलजाता ! ॥
गगनगमन सामर्थ्यहि पाई * ज्यों थलचर प्राणी हरषाई ॥
कै अकाल महँ बहु जल बरसे * रंकहि स्वप्न प्राप्त धन परसे ॥
पुनि वशिष्ठ आदिक तेजस्वी * अवलोके ब्रह्मर्षि तपस्वी ॥
पापपुंज विनस्यो बहुतेरा * आत्माभयो विमल यहिबेरा ॥
तव संगम-सुख-सागर बोरे * यह विचार उपजत मनमोरे ॥
शशिमण्डल महँ मनु मैं जाई * करहुँ पियूषपान हरषाई ॥
यहसुनि जनक वचनमनरंजन * बोले दशरथ जनभय भंजन ॥

दो०—हे नृपाल कुल मौलिमणि !, धर्मसत्य तपज्ञान ।
तव आधीन रहैं सदा, कुलकामिनी समान ॥
चपला अथवा चन्द्र को, चहै गहै कोउ हाथ ।
पै नरनाथ ! न कहि सकै, कोउतुम्हरीगुणगाथ ॥
ममसम क्षुद्रमनुष्य को, इती प्रशंसा कीन ।
सो तुवकुल के योग्य है, योगशास्त्र लवलीन ! ॥
शशि मैं आतप नहिं मढ़ै, सर सों कढ़ै न धूर ।
सज्जन मुख निकसत नहीं, वचन कठिनअरुक्रूर ॥

सो०—मैं तव शिष्यसमान, अहौं ननिमिनृपवंशमणि ! ।
हो तुम परम सुजान, योग शास्त्र के पारगत ॥

साधु कमल कानन दिननाथा * हो मुनि वृंदवंद्य गुणगाथा ॥
विषय पवनहित मेरु समाना * तवमनअचलअचलअनुमाना॥
सकल शास्त्र आदर्श स्वरूपा * ज्ञानार्थिन सुरतरुसम भूपा ! ॥
तत्व ज्ञानमय हिमकर केरी * अहौविमल छविसहितउजेरी ॥
मोह शुष्क बनदाहन हेतू * दहन समान अहौं कुलकेतू ! ॥
वाह्य संपदा तुमकहँ ऐसी * नभ महँ नीलरंग छवि जैसी ॥

वचन विचित्र उभयनरपतिकर * पुनिमोहितभेदोउदिशिकिन्नर ॥
ऋषिमुनि गण अरुसब भूपाला * धन्य २ बोले त्यहि काला ॥

दो०—तदनन्तर मिथिलाधिपति, वशिष्ठादि मुनिकेर।
करि सादर साष्टांगनति, किय सत्कार घनेर ॥
आगन्तुक नृपवृंद के, आदर महँ त्यहि काल।
पुनि प्रवृत्त भे हर्ष युत, जनक नृपाल कृपाल ॥

शतानन्द आदिक ऋषि वृंदन * यथायोग्यकरिकैअभिवादन ॥
करन लगे दशरथ नरनाथा * मिष्ठालाप आप तिनसाथा ॥
यहिं अवसर सुमन्त्रद्विजराजा * आयसुशोभितकियोसमाजा ॥
साथ राम लक्ष्मण दोउ भ्राता * सोहत इमि इन्दी वरगाता ॥
जिमिगणेश अरु स्कन्द समेता * आवत शंकर शैलनिकेता ॥
तहां अमित मणिरत्न प्रभासन * भासमान चहुँदिशाप्रकाशन ॥
अरु सुकुमार सुंदर मनु मारा * शत २ संस्थित राजकुमारा ॥
तिन तनुकी शोभा मन हरनी * रही फैलिसुन्दर त्यहिधरनी ॥

दो०—पै आवतही रामके, भये सबै हतकान्ति।
होत उदित रविके लहै, नखतकान्तिज्योंशान्ति ॥

सो०—प्रभु तेजहि मैं लीन, भये सबन के तेज तब।
प्रथमहि तेज विहीन, मनौं हते सिगरे कुँअर ॥

दो०—कृत्तिवास कह कौन है, यहि महँ अचरज बात ?।
सकल नदी नद तबलगे, पृथक २ दरशात ॥
जब लगि ते दरशत अहैं, पै जब सागर माहिं।
जाग मिलत तबकाहुकर, चिह्नहु लखियतनाहिं ॥

—❀—

एकविंशोत्तरशततम सर्ग ॥ १२१ ॥

रामगीती छन्द ॥

परिचित अपरिचित मनुजगण मनरामसुखसुखरासि ।
अवलोकि जो अद्भुत अलौकिक प्रेमरस रह भासि ॥
अस कौन कवि जो त्यहि सकै संपूर्ण रूप वखानि ।
को अस निपुण जो चन्द्रथित अमृत सकै अनुमानि ॥
पितुपाद वंदन करि मनोहर मृदुल तनु दोउभाय ।
संध्यासमयके वारिवाह समान सीस सोहाय ॥
जिनके जटा को जूट ऐसे तेज तप यशधाम ।
ब्रह्मर्षि वृंदहि सहित आदर कीन्ह दण्डप्रणाम ॥
वै ब्रह्म तेज समेत ऋषि गण मधि लखण अरु राम ।
दरशत अनल वेष्टित सुरक्षित सुधासम अभिराम ॥
पितुपाद वंदि मुनीन सन मिलि करि मधुर आलाप ।
द्रुत गति गुहकसों प्रभुमिले मेटे सकल भवताप ॥
सो छबि मिलन की कवि कहत मन मोर मोहे लेत ।
मनु शोभही यमुना प्रफुल्लित नील कमल समेत ॥
पुनि जब मिले चारहु कुँअर तब साधुगण उर स्वच्छ ।
संयोग चारहु अक्षरन कर होनलाग प्रतच्छ ॥
महाराज अवधेश प्रवीना * द्विज सुमंत्रकर आदरकीना ॥
यथा उचित पूजन उनकेरा * कीन मुदित मन ह्वैवहि बेरा ॥
रहन हेतु जे विपुल निवासा * निर्मित किये प्रथम वहुदासा ॥
अन्न पान युत सुभग सोहाए * तिनके अभिमुख अतिहरषाये ॥
दशरथ साथ जिते ऋषि यूथा * सैन्य सहित नरपाल वरूथा ॥
तिनहि सहित दशरथ सँगआछे * चले जनक भूपति त्यहिपाछे ॥

ऋषि गणनृपति वृंदबिच रघुवर * भे दशरथ करपकरि अग्रसर ॥
कैकेयी सुत भरत कुमारा * अरु शत्रुघ्न लखणसुकुमारा ॥
चलत मन्द रघुनन्दन पाछे * लहत अनुपमा उपमा आछे ॥
ज्यों मयंक अनुगत त्यहि केरे * प्रभापुंज लखि परत घनेरे ॥
मिथिलापुरीचहुँ दिशिविरचित * यतसुरम्य आराम अपरिमित ॥
विस्तृत प्रान्तर अरु विहारबन * अटवीनिचयबीचअतिशोभन ॥
आमन्त्रित आगन्तुक नृप गन * रहनहेतु विरचित बहुशिबिरन॥

दो०—उज्ज्वल पट निर्मित अमित, सोहत इमि गृहराशि ।
मनु दोउ भूपन केर यश, निर्मलरह्यो प्रकाशि ॥
उनमहँ फहरत कनक कृत, दण्ड युक्त छवि हेतु ।
रक्त पीत श्यामल हरित, क्षौमवस्त्र कृत केतु ॥
मुक्ताफल मणि माणिकन, खचितरचितकमनीय ।
तोरण द्वारन महँ बँधे, सुमन माल्य रमणीय ॥
कहुँ सुवर्ण द्रव धौत अस, कुट्टिम पाँति लखाहिं ।
चन्द्रहि ते उत्कीर्ण है, भे थित मनु महि माहिं ॥
स्वर्ण रजत मणि गण खचित, दारु रचित प्रासाद ।
गंधर्वन के नगर सम, शोभमान साह्लाद ॥

स्वर्ण रेणु अंकित तनवाई * कलित केणिका श्रेणि सोहाई ॥
मत्तालंब समष्टि विताना * निरखिहोतअसमनअनुमाना ॥
सकल सूर्य मय जगत महीपर * मनुअवतरयोआनिअतिभास्वर
कुसुम कपूर पूर पूरित चहुँ * धूप सुवास सुवासित गृहवहु ॥
सब उपकरण पूर्ण जिन माहीं * सुख सामग्रि धरी दरशाहीं ॥
रथ पथ अरु नर पाल निवासा * हयगज सैनिक जनआवासा ॥
स्कंधावर सभा सुविशाला * अन्तः पुरअरु भोजन शाला ॥
पृथक २ सब भूपन केरे * विनि वेशित स्वतन्त्र बहुतेरे ॥

दो०—नृप वृंदन सों पूर्ण वह, महाशिविर त्यहि काल।
मणिगण युत अर्णवसदृश, शोभितभयो विशाल ॥
सो०—यकदिशि धर्म धुरीण, काशि राज सेना सहित।
सुर उपमेय प्रवीण, भये अवस्थित शिविर महँ ॥
महा धनुर्धर भूप, लोम पाद अंगाधि पति।
अपर ओर शुभरूप, शोभमान सुरराज जनु ॥
नर श्रेष्ठ मगधेश, सौवीरेश अशेष नृप।
सिंधुदेश मनुजेश, एक ओर विश्राम किय ॥
चहुँदिशि के यावत नरपाला * सबकं शिविरबने सु विशाला ॥
मेकल उत्कट बंग कलिंगा * ब्रह्म माल मद्रक तैलंगा ॥
कुरु केरल केकय वहुदेशा * चोल निषाद पुलिंद विशेषा ॥
मत्स्य पुण्ड्र कम्बोज जितेका * प्रस्थल अंग दशार्ण अनेका ॥
बहुदेशन के नरपति वृंदा * निजनिजशिविरिचलेसानन्दा॥
भीरभई मगमांह अपारा * उठ्यो कोलाहल नगरमँझारा ॥
बहु बादित्र बजत तिन आगे * यहि विधि नृपतवृंद अनुरागे ॥
निज२ शिविरन महँ यशधामा * कीन्हो जाय सबन विश्रामा ॥
दो०—सृष्टि काल प्रथमहि यथा, लोकपाल दशदेव।
उपजि करत अधिकृत सबै, निज२ दिशा सदैव ॥
यकदिशि ऋषिमुनि रहनहित, फलमूलादि समेत।
देखि परत निर्मित अमित, आश्रमशान्ति निकेत ॥
सिद्ध महात्मा ब्रह्मऋषि, तेजस्वी तपखानि।
तिनकहँ शोभितकोन तहँ, निज पुनीतपदआनि ॥
कुँअर सहितदशरथ नृपति, विश्वामित्र वशिष्ठ।
अपरापर ऋषि साथ लै, बोलत वचन सुमिष्ठ ॥
मिथिलापति तत्क्षण कियो, मिथिला पुरी प्रवेश।

सुरपुर सम सुन्दर सदन, सज्जित वस्तु विशेष ॥
उच्च अँटारिन महँ सबन, जाय टिकायो भूप ।
योजित कीन्हे आहरण, नृप सम्पद अनुरूप ॥
सेवा परिचर्या निमित, नियत कियेबहु दास ।
आज्ञा पालन जे करत, प्रतिक्षणसहित हुलास ॥

होत प्रात द्विजवर सुमंत्रइत * लैदशरथ अनुमति प्रसन्नचित ॥
चारहु कुँअरन निज ग्रह लाये * उत नरनाथ जनक हरषाये ॥
कुशध्वज सहित बिवाह लग्नकहँ * निश्चयकरनहेतुत्यहि क्षणमहँ ॥
उत्तम सभाविरचि त्यहि काला * बुलवाये सगरे नरपाला ॥
पुनि दशरथढिग सुदमननामा * पठयो मंत्रि प्रवर गुण धामा ॥
ऋषिगण अरु वशिष्ठ मुनिसाथा * आए क्षणमहँ कोशल नाथा ॥
जल बरसे जिमि सूख सरोवर * तूर्ण होत परिपूर्ण मनोहर ॥
तिमिक्षणमहँवह सभा विशाला * बहु जन पूर्णभई त्यहिकाला ॥

दो०—वृहत विमल सर महं यथा, विकसित पद्म समेत ।
हँसश्रेणि शोभालहे, वैसे सभा निकेत ॥
आमंत्रित ह्वै दोउ दिशि, आगत नरपतिवृंद ।
यक यक सन मिलि हर्षयुत, शोभित भये अमंद ॥

ज्यों निदाघ पीड़ितऋषिगनकी * कान्ति दूर करिबेहित मनकी ॥
उठत घनी घन घटा सोहाई * त्यहि विधिद्वारपाल समुदाई ॥
सभा भवन के चहुँदिशि माहीं * पहरे लौह कवच दरशाहीं ॥
तब अवधेश कही मृदुबानी * जनकनृपतिसन मनमुदमानी ॥
निमिकुलमौलिमुकुट तवजाना * हैं कुलगुर वशिष्ठ भगवाना ॥
यह इक्ष्वा कुवंश रखवारे * मन्त्र बलहिं रिपुदलहिं सँहारे ॥
ममकुल परिचयविधि अनुसारा * देहैं यह यहि समय भुआरा ॥
ऋपि वशिष्ठ तब परम प्रवीना * सूर्य वंश वर्णन तहँ कीना ॥

सोखुनिविनयसहितनयअयना * बोले जनक मनोहर बैना ॥
हे नरनायक ! तवकुल केरी * कीरति विश्व विदित हमहेरी ॥
को सरवरि करिसकै तुम्हारी * हौ तुम तेज पुंज बलधारी ॥
वर्षाजल समता क्यहु भांती * धूलिराशि सम नहिं दरशाती ॥

सो०–पै वर्षा ऋतु पाय, सूक्ष्म खण्डहू जलद कर ।
अतिविशाल ह्वैजाहि, ज्यहिप्रकार अवलोकतेहि ॥
त्यहि प्रकार अब तूर्ण, तवसम्वन्ध प्रशस्त लहि ।
मम वंशहु यश पूर्ण, ह्वै है धन्य महीप मणि ! ॥

तुम्हैंविदितकुलपूजत द्विजवर * कन्या दान समय मंगलकर ॥
शाखोच्चार करत हरषाई * रीति सनातन यह चलि आई ॥
केवल सोइ रीति अनुसारा * मम कुलपूज्य महर्षि उदारा ॥
शतानन्द सानन्द मोर अब * कुलपरिचय प्रदान करि हैं सब ॥
गौतमनन्दन शतानन्द मुनि * मृदु सयुक्ति नरउक्ति सारसुनि ॥
बरण्योनिमि नृपवंशप्रशंसित * कीर्तिधवलजगविदितसुशिक्षित॥
दोउनृपकी अनुमतिअनुसारा * ऋषि वशिष्ठ ब्रह्मज्ञ उदारा ॥
करिज्योतिषगणनात्यहिकाला* बोले सुनहु उभय भूपाला ॥

दो०–कर्क लग्न महं होय जो, सविधि विधान बिवाह ।
पति पत्नी बिछुरैं न तौ, यहि कारण नरनाह! ॥
कालिह पुनर्वसु ऋक्ष शुभ, कर्क लग्न कहँ पाय ।
कीजिय बैवाहिक क्रिया, संपादन हरषाय ॥

सो०–यह सुनि सुन्दर बात, उभय नृपतिअरु सभ्यगण ।
सबके मुख जलजात, भये प्रफुल्लित हर्षसन ॥

असुरनि पीड़ित सुरगण केरे * पै मुख सूखिगए यह हेरे ॥
ज्यों पावक परि चर्म विरूपा * होय सकुंचित त्यहिअनुरूपा ॥
ह्वै चिन्तित चित सब सुरवृंदा * कहनलगे इमि विगत अनंदा ॥

राम सिया बिछुरन नहिं जोई * तौरावण वधक्यहि विधिहोई ॥
पुनिशशि सनसब कह्यो बुझाई * विनय सहितकर विपुलबड़ाई ॥
विपति समय सबकर अधारा * हमतुमहीं कहँ एक निहारा ॥
पुनिहम समतुमहू अतिपीड़ित * निशिचरनिधनचहतचितितचित
जो वशिष्ठ मुनि लग्न बताई * टारिदेहु वेला वह भाई ॥

सो०-यहिकर एक उपाय, सुर सम्मत हिमकर ! अहे ।
नर्तक वेष बनाय, जाहु बिवाह समाज महँ ॥
नृत्यतुम्हारिनिहारि, ह्वै हैं सब सुधि बुधि रहित ।
कर्कलग्न यों टारि, देव दुःख मेटौ द्रुतहि ॥

निशानाथ करि शोच विचारा * यह प्रस्ताव कियो स्वीकारा ॥
इत दशरथ यश न्याय निकेता * विश्वामित्र वशिष्ठ समेता ॥
मंत्रिगणन सँग कीन्ह्यो गवना * ऋषिसत्तम सुमन्त्र के भवना ॥
संध्यास्नान आदि के पाछे * नान्दीमुखश्राद्धहिकरिआछे ॥
करनलगे ह्वै करि प्रसन्न मन * अधिवासनकृतिकरसम्पादन ॥
सहस२ ऋषि मुनि त्यहि ठामा * करत वेद गायन अभिरामा ॥
वाद्यशब्द शिरपर पदधारी * सोध्वनि गई अकाश मँझारी ॥
गंध पुष्प नैवेद्यऽरु दीपा * धरे गणेशादिकन समीपा ॥

दो०-तिलसित सर्षपकृत उहाँ, उन्नत वेदि महान ।
चारहु ओर विराजहीं, उपत्यका अनुमान ॥
दीप दूब दधि शंखमसि, कांचन ताम्र समेत ।
गोरोचन चामर रजत, आदिक मंगल हेत ॥
स्वतिकवस्तु यथा समय, चहुँ कुँअरन के माथ ।
स्पर्श कराए कुलगुरु, पुनि वशिष्ठ ऋषिनाथ ॥

सो०-दूर्वादल अभिराम, राम हाथ दूर्वा सहित ।
मंगल सूत्र ललाम, बाँध्यो हरदीसन रँग्यो ॥

तिहुँ कुँअरनकर यही प्रकारा * बाँध्योसूत्र महर्षि उदारा ॥
चारलाख सुरभी त्यहिकाला * द्विजनदान दीन्ही नरपाला ॥
वत्ससहित सूधी सब श्यामा * दुग्धवती युवती अभिरामा ॥
शृंग सुवर्ण मढ़े जिन केरे * रजत कलित खुरचारहु हेरे ॥
पीठ पट्टपट मण्डित सोही * पुच्छ ग्रथित मुक्ताफल सोंही ॥
निष्करजत पट भूषण नाना * दीन्हेअमित द्विजनकहँदाना ॥
मुण्डनकर्म समाप्ति अनन्तर * चारहु कुँअर मनोज मनोहर ॥
लोकपाल सम शोभा पाई * तिनसन परिवृत दशरथ राई ॥
कमलासन समान दरसाने * जिनकेगुणगण विश्वबखाने ॥
अन्तःपुर वासिनि द्विजनारी * चहुँकुँअरनकहँभवन मँझारी ॥
मख मण्डपसन लियो बुलाई * श्यामलछवि निरखतटकलाई ॥
करन लगीं सबमिलि सुकुमारी * नारिन कर आचार बिचारी ॥

दो०—कुँअरन अँग गोरोचना, तैल हरिद्रा केर।
लेपनकरि कुल कामिनी, मंगल हित वहिबेर ॥
उलुलुनादअरुशंखध्वनि, करन लगीं हरषाय।
सोसुखक्यहिमुखकहिसकौं, त्रिभुवनसुखहुलजाय॥
उच्चवंश उपजी सकल, भूषण अंग सँवारि।
पहिरि महाधन क्षौमपट, नगर वासिनी नारि ॥
नखतमालसी क्रमक्रमहि, मनु दामिनि परछाहि।
आवन लगीं निमंत्रणहि, लहि सुमंत्र गृह माहिं ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

तिनसन सुशोभित विप्रगृह आगन सु उपमा यों लहै।
विकसित कमलकुसुमावली परिपूर्ण सरबर ज्योंअहै ॥
चारहु कुमारन घेरिकै ठाढ़ीभईं सब सुन्दरी।
पूंछनलगीं हँसि२ हँसी सों रूपगुण छवि आगरी ॥

"इनमहँ हमारी प्रियसखी सियके दयास्पदकौनहैं? ।"
लखि भावभंगी भरत जान्यो हास्यतत्पर तिय अहैं ॥
अबज्यंष्ठबंधु समीप अनुचित है रहन यहि कालहा ।
दोउ बंधुलै मिस कौनहू करि टरिगए तत्कालही ॥
द्विजवर सुमंत्रसुता सती ज्यहि संग रघुवर करभयो ।
भ्राताभगिनि संबंध स्थापित प्रेम परिपूरण नयो ॥
सबकामिनिनश्रीरामसों परिचितकियोसोइशशिमुखी ।
तब एक भामिनि प्रभुभुजा गहि सूत्रवद्ध हिये सुखी ॥
बोली विहँसि यह तौ हमैं अति चतुरचोर दिखात हैं ।
ज्यहि हेतु चोरहि केर केवल हाथ बाँधे जात हैं ॥
यह सुनि सुमंत्रसुता कह्यो कछु मंदमृदु मुसकाय कै ।
तुम्हरिहु सखी की यह दशा है होत देखहु जाय कै ॥
तुम्हरे कहे अनुसार जो भाई हमारो चोर है ।
तौ राजपुत्रीहू तुम्हारी यहि पदहि पाये अहै ॥
यहि उत्तरहि सुनिकै अपर यकबाम बामाहँसि कही ।
दोउ सतिकहौ तुम बरवधू दोउ चतुरचोर अहैं सही ॥
दोउन हरयो मन दोउको यहिकर प्रमाण अहै यही ।
सुनि एक रसिकायों कह्यो तुम जानती कोऊनहीं ॥
इनकीपहुँच सियलौंभई किमिसोउशरदशशि निर्मला ।
अन्तःपुरहिरहिकौन विधि इनकर चुरायोचित भला ॥
सुनि सुकुमारी विप्रकुमारी * कहे विहँसियह वचनविचारी ॥
चोरी यहै विचित्र कहावत * धनहिहरत पैनिकटन आवत ॥
पास आय जो वस्तु चोरावै * अधम चोर वह सखी!कहावै ॥
तुम्हरी सखी केर कछु कीरति * कहहुँ सुनहु मनरोषकरौमति ॥
तुव प्रियसखी घरहिमहँ बैठी * श्रवणराह ह्वै हियमहँ पैठी ॥

हमरे बंधुकेर मनरूपा * हरयो रत्न अलमोल अनूपा ॥
यह अद्भुत चोरी बलिहारी * त्रिभुवन कतहुँ सुनीननिहारी ॥
उत्तर उचित सकल सुनिनारी * भई शिथिल हँसि २ सुकुमारी ॥
पुनि यक सुन्दरितियइमिबानी * बोली मृदुल हास्य रससानी ॥
हममान्यो प्रियसखी हमारी * ऐसहि किय सरोजसुकुमारी ॥
पै तुम्हार भाई हमकाहीं * चोर चक्रवर्ती दरशाहीं ॥

दो०—तुम्हरे भाई चेर चित, हरयो जानकी एक।
इन त्रिभुवन के मनहरे, डरे न मनमहँ नेक ॥
दोउन महँ को चोरवड़, सत्य कहहु करिन्याय।
यहसुनि पुनि पुरनागरी, सगरी हँसी ठठाय ॥
तदनन्तर मृदुभाषिणी, यक रमणी मुसकाय।
रामचन्द्रसन यों कह्यो, लोचन लोल नचाय ॥
रसिक शिरोमणि! आपक्यों, बैठी मौनी होइ।
पाथरखोदी सूर्य की, प्रति मूरति ज्यों कोइ ॥
तुमहू तौ कछु आपने, मुख बोलौ रघुनाथ।
हमहूँ जानहिं सुन्दरी, सुघर सखी के साथ ॥
क्यहिस्वभावको आयकै, मिल्यो मनुष्य गंभीर।
यहसुनिपुनिसबहँसिपरी, रमणी हास्य अधीर ॥
पुनियकमृगलोचनिकह्यो, करि कटाक्ष प्रभु ओर।
भ्रमरराज! यहरैनिनहिं, होय गयो अब भोर ॥

रामगीती छन्द ॥

देखिये फूले कमल तब सामुहे छबि भौन।
मूक समहो आप बैठे मौन कारण कौन? ॥
आपकर गुंजन सुनन उत्सुक सबै मनमाहिं।
दीन्हउत्तर तबबिहँसि,रघुनाथ रमणिनकाहिं ॥

नील पंकज नैनि हम परकीय नारिन सोहिं ।
साँचही बातैं करन महँ संकुचित चित होहिं ॥
पद्मिनी नायक दिवाकर एक है जग ख्यात ।
धर्म भीरू भौंर जो उनमैं रमै नहिं जात ॥
सोइ है शुभनीति सम्मत हे सकल सुकुमारि ।
उत्तरैसुनिकै शरद शशिछविहरणि सबनारि ॥
हास्य सागर मग्न ह्वै बोलीं बिहँसि-बलिहारि ।
योग्य उत्तर यह भयो हमरे कथन अनुहारि ॥
फेरि बोले प्रभु बिहँसि-हे सुन्दरी ! जेहिदेश ।
न्याय के थलमहँ करै अन्याय घोर प्रवेश ॥
दोष और अदोषको निर्णय तहाँ किमिहोय? ।
चित्त चोर कहौ हमैं तबहूँ लखौ सब कोय ॥
एकचित्तहि हम चोरावैं-प्रियसखी तब स्वार्थ ।
विश्व मैं यत देखिये जड़ चेतनादि पदार्थ ॥
चोरिलीन्ह्योकछुनकछु तिनकेर कछुयशसोइ ।
सावधान तथा सुनौ मनलाय कै सब कोइ ॥

उनके अंग कनक कहँ कीना * अवलोकहु शुभ शोभा हीना ॥
जासों जरत पावकहि परिकै * मनमहँ अतिअनुतापहिकरिकै ॥
कुंचित कच उनके मन हारी * चामर छबिछीनी सुकुमारी! ॥
कचन दिय। बंधन यहि कारन * दण्डरूप त्यहिकर चतुरानन ॥
मुख सुषमा चन्द्रहि करिदीना * दीन दरिद्र महा छबिहीना ॥
यहअनीतिलखिकमल निवासा * तुव मृदु मुखी सखीके पासा ॥
प्रति विधानहितजातनयहिभय * कहुँ सोऊलखिछबिमोहनमय ॥
आठहु निज नयननते जाई * धोव हाथहि करि अरिताई ॥

दो०—सखिनैननननलिनी प्रभा, हरी निठुर करि काज ।

त्यहिकर लग्यो कलंकहै, लोचन कज्जल व्याज ॥
तिनके पद पंकज कियो, जावकदर्प विनाश।
नूपुर बेंड़ी दण्ड है, यहि कर बंधन पाश ॥
इन्दीवर शोभा हरी, हाथन यह दुख पाय।
अरुण कमल डूब्योसलिल, मुखमलीनमुरझाय ॥
केहरि कटिकी छामता, छीनी कटि उन केरि।
कटि बंधन बंधन दियो, यह कारण विधि हेरि ॥
कहि करकी कमनीयता, गुरु ऊरुन हरि लीन।
यहि कारण जगराज गण, बनबास ब्रत कीन ॥

तुव प्रिय सखी केरि निठुराई * कहँलौं कहौं तुम्हैं समझाई ॥
अब सब रमणीगण मन लाई * लखिनिजसखीसुशील बड़ाई ॥
करहु न्याय सन सत्य विचारा * कोबड़ चोर दोऊन मँझारा ॥
प्रत्युत्तर सुनि तनु सुकुमारी * मोहित भई सकल पुरनारी ॥
पुनि यक चतुर सुंदरी बाला * बोली वचन विचित्र विशाला ॥
लेहु अबहि लगि सखी हमारी * चोरहि हती विदेह कुमारी ॥
पै अब इनके सूक्ष्म विचारा * निठुर डरहु उनकेर निहारा ॥

दो०-नागर गुण आगर रसिक, सोचहु कछु मनलाय।
दूजे पै निज दोष कोउ, साधुन होत लगाय ॥
कनक आदि जिनकेर तुम, लीन्ह्योनाम विचारि।
क्यहु कर कछु बलसों नहीं, छीन्यौसखी हमारि ॥
उन देख्यो आपहि जबै, उनकी सोभा ऐस।
सखि मुख सन्मुख तुच्छ शशि, आगेजुगनू जैस॥
न्यौछावर सर्वस्व तब, सखि पै कियो लजाय।
अबनहिं चाहत वह विभव, बसे अनत सब जाय ॥
पुनि यदि माँगहिं तौ सखी, दुगुन फेरिकै देय।

तुम अपनी तौ अब कहौ, नील नलिन उपमेय ॥
छीनो शशि शोभा तुम्हरे मुख * व्याकुलभयोनिशाकरयहिदुख॥
दश स्वरूप सों परयो तुम्हारी * पद पंकज आँगुरिन मँझारी ॥
पै तुम कुटिल कान्ति वहिकेरी * अवलौं निठुरहृदय नहिंफेरी ॥
अरुण केरि अद्भुत अरुणाई * पाद पद्म अपहरी सोहाई ॥
चरण शरण पद तल रह सोई * तदपि न ध्यानदियोतुमकोई ॥
तव मृदुहास प्रकास निहारी * चन्द्रप्रभा अपने हियहारी ॥
पक्षाघात रोग आधीना * क्षीणज्योतिभइविकलमलीना॥
मृगपति गति अपहरि मनमाहीं * उपजी अजौं दया तव नाहीं ॥
दो०—लहि सुयोग महँ सिंह कहँ, ताहि सँहारन हेतु ।
होय जाहु उद्यत अबहुँ, तुम राघव कुल केतु ॥
तुव अंगनकी गठनिकहँ, लज्यो अनंग निहारि ।
निज शरीरत्याग्योतबहि, निजछबितुच्छविचारि॥
साधु सिरोमणि ! साधुता, कहँलौं करौं बखानि ।
यह कहि वह मृगलोचनी, हँसी महा मुदमानि ॥
सो०—यहिविधिसब सुकुमारि, त्रिभुवनपति श्रीरामसों ।
सुधि बुधि सबै बिसारि, हँसी कुतूहल भल करैं ॥
मंगल होत अनन्त, पुर घर २ उत्सव मच्यो ।
ज्यों वर्षा ऋतु अन्त, प्रकटत ऋतु शोभन शरद॥
त्यहि विधि शंकर चाप, जनित महासन्देह सों ।
ह्वै विमुक्त सन्ताप, मिथिलापुरबासी सकल ॥
बाल वृद्ध समुदाय, नर नारी आनन्द मय ।
सुख सागर महँ न्हाय, पैरन लागे त्यहि समय ॥
हरदी तैल दूब दधि कल्पित * भरी नगरमहँनदीअपरिमित ॥
चहुँदिशि बिविधरंग जलपूरित * सोहत सरवर सहस सुवासित ॥

जो ज्यहि निजसन्मुखमहँपावै * पकरि ताहि उनमाँहि डुबावै ॥
बाजे बजत मनोहर नाना * गृह २ होत नृत्य अरु गाना ॥
पटह शंख बंशी रव संगा * भेरी मर्दल बीण मृदंगा ॥
सातहु स्वर सों सातहु स्वर्गन * करत भवन सबजनुआवाहन ॥
इत राजर्षि जनक महिपाला * अनुजकुशध्वजसहत्यहिकाला ॥
सकल कृत्यकरिविधि अनुसारा * निर्मितभयो शिल्पिगणद्वारा ॥
वर बिवाह मण्डप अवलोकन * अन्तःपुर गवने प्रसन्नमन ॥

दो०–जायलख्योमण्डप नृपति, अतिविचित्र सुविशाल ।
कनक खंभ श्रेणी लसैं, घटित जटित मणिजाल ॥
सूर्यकान्त अति कान्त छवि, चन्द्रकान्त दरशाहिं ।
खचित नील विद्रुभ फटिक, इन्द्र नील उनमाहिं ॥
ऊपर खंभन के बँधे, मंजुल मुक्ता दाम ।
श्वेत श्याम सित पट्ट पट, रचित महा अभिराम ॥
अति विशाल दर्पण धरे, मध्य २ छबिवान ।
दिनकर हिमकर बिंब मनु, शोभित भये महान ॥
मण्डप ऊपर फहरही, बिविध वर्ण छविहेतु ।
स्वर्णरेणु चित्रित अमित, क्षौमपट्ट कृत केतु ॥
बिविध देश के पक्षि पशु, मानव आदि अनेक ।
रुद्र अप्सरा देवगण, गन्धर्वादि जितेक ॥
पुष्पसिंह शार्दूल अरु, मयूरादि सुविचित्र ।
रत्न रचित उन महँ लसैं, अंकित नाना चित्र ॥

मण्डपभूमि भाग बहु वरणा * शोभमान यहिभाँतिसुबरणा ॥
इन्द्रचाप सम सुन्दर क्यहु थल * कतहुँकमलदलवर्णलसतभल ॥
नील नलीन सम कतहुँ सोहाई * नील मेघ सम कतहुँ बनाई ॥
कहुँ बन्धूक कुसुम सम हेरी * कहुँ शोभित छविबिद्रुम केरी ॥

कनक कलश हरिचंदन धूपा * चन्दन कुसुम कपूर अनूपा ॥
स्वस्तिक द्रव्य दीप अरु माला * यथायोग्यस्थापित मखशाला ॥
जाती सुमन अरुण इन्द्रीवर * चम्पा पुष्प प्रशस्त मनोहर ॥
मालतिप्रभृति कुसुमसौरभ सन *दशदिकमयोसौरभितत्यहिछन॥

दो०–जलद चन्द्र चम्पक सदृश, इन्द्रनील छवि कोय।
सिंदूरारुण वर्ण कोउ, मुक्ताफल छवि कोइ ॥
जवा कुसुम के गुच्छ सम, सन्ध्या राग समान।
दाड़िम सुमनसमान कोउ, तारागण अनुमान ॥
नीलनलिनअरुनीलमणि, स्वर्ण वर्ण वहु रूप।
आसन सज्जित सोहहीं, नृप सभ्यद अनुरूप ॥
मण्डप चहुँदिशि ह्रद बने, रत्न जटित सोपान।
घृत दधि अमृत नीर पय, परिपूरण द्युतिमान ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

तहँ पुष्पतरु वेष्ठित दोऊ दिशि दीर्घिकन के भ्राजहीं।
बहु कुट्टिमन की पांति भोजन अन्न संयुत राजहीं ॥
मण्डप चहूँ दिशि सलिल क्रीड़ा हेतु बापीबर बनी।
कलदी अवलिकृत्रिमतमालन सनघिरी मनमोहनी ॥
तिनमध्यछवि विस्तारहितरोपित ललितकल्पितघनी।
सुन्दर अशोक तरूनकी श्रेणी दिखात सोहावनी ॥
सरतट निकट रोपित तरुन पै हेरतै मन मोहहीं।
मुक्ता कलित हिण्डोल शाखन पै विलम्बित सोहहीं ॥
त्रिभुवन तिलकसमत्यहि भवनके मध्यमहँ निर्मितभई।
वेदी रतन मय यक सहस दल मण्डिता शोभामई ॥
कृतकारुकार्य खचितकलश शोभित बिबुधतरु मंजरी।
कांचन रचित सोपान श्रेणीयुत अमित शोभाभरी ॥

मण्डप चतुःसीमा उपरि चामर लिये कर सुन्दरी।
अम्बर विभूषणभूषिता मानहु सजीव अहैं खरी॥
सुंदरसघन जघना विशालविलोचना शिल्पिन तहाँ।
बहु काष्ठ पुत्तलिका करीं स्थापित मनोहारिणि महाँ॥
यहिविधिनिरखिनिर्माणनिपुणाईनृपतिआनँदकियो।
शिल्पीगणनकहँधनअनल्प प्रशंसि तत्कालहि दियो॥
ज्यहिविधि समीरण आहरण कै सुमन सौरभवेग मै।
चहुँदिशि पसारतजाय तुरतहि त्यहिप्रकार त्यहीसमै॥

दो०—राज शिल्पि गण राज यश, गावत सहित सनेह।
राज दत्त धन रत्न लै, गवने निज २ गेह॥

द्वाविंशोत्तरशततम सर्ग॥ १२२॥

दो०—जो प्रसंग अब अमृतमय, रह रसनहि ललचाय।
पूर्ण प्रकट त्यहिकर करब, बाणी सों यहि न्याय॥
लै साधारण छत्र कहँ, अति मतिमन्द प्रमत्त।
ज्यों कोउ भास्कर करनिकर, करन चहै आयत्त॥

हरिगीतिका छन्द॥

विभुनित्य शक्ति समेत अज अविनाशि ईश्वर की कहाँ।
लीला ललित अगणित कहाँ मम ढीठ कुण्ठित मति महाँ॥
पै नाहिं कछु उत्साह त्यागन केर कारण यह अहै।
जासों जबहि श्रीरामनाम स्वरूप दीपक कर गहै॥
सब भाँति के संशय तुमुल तम सम तबहि वह नाश कै।
स्वयमेव मारग कहँ दिखावत हृदय पूर्ण प्रकाश कै॥

चारहु कुमारन केर मुण्डनकर्म करि प्रमुदितमनै।
मंत्रिन सहित अवधेश बैठे स्वर्णमय सिंहासनै॥
त्यहि क्षण युधाजित भरत मातुल केकयेश्वरसुत भली।
चतुरंगिनी सेना सहित आये जनक नगरी भली॥
सहसा समागमसों निमंत्रित अतिथि के अत्यन्तही।
अवधेश आनन्दित भये मिलि पूँछि कुशल क्षेमही॥

कह्यो युधाजित राज कुमारा * केकयेश आज्ञा अनुसारा॥
प्रथम गयों मैं अवधहि माहीं * भागिनेयनिजनिरखनकाहीं॥
सुन्यो तहाँ चहुँ कुँअर विवाहा * करन हेतु करिपरम उछाहा॥
आये आप जनकपुर माहीं * सुनियहिसुख संवादहिकाहीं॥
दर्शन कियो आप को आई * क्षमा कीजिये मोरि ढिठाई॥
यहि प्रकार दशरथ महिपाला * उत्तरदियोविहँसित्यहिकाला॥
अर्धांगिनी नारि कर भ्राता * अर्ध अंग समसोउ विख्याता॥
यहि हिततुम्है निमन्त्रण कैसा? * तुम तो अर्धशरीरहि जैसा॥

दो०—आग्रह करि पूंछयो बहुरि, कौशलदेश महीप।
कहहु युधाजित सत्यहि, केकय राज समीप॥
दूत निमंत्रण पत्र लै, पहुँच्यो नाहीं मोर।
यह सुनि प्रत्युत्तर दियो, केकय राज किशोर॥
यात्रा कीन्हें बहु दिवस, बीते मोहिं अवधेश।
आयों मैं अवधहि अबै, घूमत नाना देश॥

सो०—मम यात्रा पर काल, दूत निमन्त्रण पत्र लै।
केकय काहिं नृपाल, गयो अवश्यहि होय है॥

दो०—तदनन्तरकोशल नृपति, श्यालक कर सत्कार।
कीन्ह्यो आदरसों अधिक, अति मतिमान उदार॥

पुनि ऋषि मुनि अरु कुँअरयुत, महाहर्ष के साथ।
राति बिताई क्षणसदृश, अवध नगर नरनाथ ॥
जिमि नृपउर उत्साह अधिकतर * यथाविभव सम्पदा जनककर ॥
परदिन त्यहि अनुरूप महाना * सिय बिवाहआयोजननाना ॥
होनलगे प्रातहिते सुन्दर * मिथिलानाथ जनककेमन्दिर ॥
उत्सव जनित कोलाहल भारी * उठ्योचहूँदिशि नगरमँझारी ॥
चाहै अन्य वस्तु सम कोऊ * लेय पकरि मूठी करि सोऊ ॥
राजभवन के चत्वर माहीं * अमितउपस्थित जनदरशाहीं ॥
बाजे बजत होत जय२ ध्वनि * जिनसनहोतमहान प्रतिध्वनि॥
आँगन अरु कोठरिन घनेरी * धरीं वस्त्र धन भूषण ढेरी ॥
देन हेतु याचकगण काहीं * अमित अमोलवस्तु दरशाहीं ॥
जिनके बिविधवर्णसन वह थल * इन्द्रधनुषसम सोहत अतिभल ॥
दो०—हयगज गर्जनयुत मुरज, काहल शंख मृदङ्ग।
दुंदुभि ध्वनि व्यापीनगर, डगर डगर उत्तङ्ग ॥
नगर वासि सामन्त समाजा * बरसावत बहु सुमन सलाजा ॥
सो सुषमा अनुपम सुखकारी * अनुभय यहउर होतनिहारी ॥
बिविधवर्ण अंवर मय अंवर * शोभमानमानहुँ वरछविधर ॥
नगर निवासि सकल नारीनर * मगनमगनमनगमतनिरन्तर ॥
दलितभये पदतलगत निपतित * विविधसुगंधितसुमनअपरिमित
तिनके रससींचे मारगयत * प्रकृत सुरभि कर्दममयदरसत ॥
सुमनसमाल्य वितान सुसज्जित * सकल राजपथभये सुशोभित ॥
अरुण असित सित पीत हरेरी * चहुँदिशिशोभितध्वजाघनेरी ॥
चित्रित पटमण्डित मनभाये * कांचन तोरणद्वार सोहाये ॥
दो०—नगरविभवयहिविधिविपुल, डगर २ दरसाय।
मनुमहि महँ अमरावती, आई स्वर्ग विहाय ॥

नगर वासिनी भामिनी, रूपराशि विस्तारि ।
नूपुरकिंकिणिध्वनिकरत, भूषण वस्त्र सँवारि ॥
पहिरि परिच्छद पीतम्बरु, अरुण नील शुभवर्ण ।
स्वर्ण घटित रत्न जटित, कर्णफूल करि कर्ण ॥
सुवरण सूत्रगुँधी सरल, तैल सुगंध समेत ।
पीठमाहिं नागिनि सदृश, कवरी लहरैं लेत ॥
मुक्ता दाम ललाम गल, मौक्तिक नासामाहिं ।
मणिनजटित भूषणसहित, कोमल भुजा लखाहिं ॥
बिविध बर्णपट पट्टमय, लसत कनक कृत बेल ।
कसीकंचुकी कुचनपै, तिनपै हेम हमेल ॥
यों शोभन शोभा लसै, उनकी अमित अमन्द ।
ज्योंगिरि शिखरनपैउदित, शोभितशत २चन्द ॥
यों युवतिन के दल अमित, इत उत आवत जात ।
राममार्ग जिनसन सुमन, उपवन सदृशदिखात ॥
कमलकली सम कुच लसैं, भूषण सुमन समान ।
नयन भ्रमरश्रेणी मनौं, भासमान छविवान ॥

लसत सुरभि अंगन अँगरागा * मनु उपवनथित पुष्पपरागा ॥
अरुण कोकनदवरण सोहाए * करतल नवं पल्लव दरशाए ॥
सरित सरिस मुक्तनकी माला * शोभित उनके बक्ष विशाला ॥
अंग प्रफुल्लित लतासमाना * चपल दृष्टिमृगगणअनुमाना ॥
लसत विलास शिलासमशोभन * वरनितम्बतटसघनजघनघन ॥
घनमाला सम अंशुक दामा * शोभमान अतिहीअभिरामा ॥
इत दशरथ नरनाथ उदारा * गुरु वशिष्ठ आज्ञा अनुसारा ॥
मंगलमय कुँअरन करस्नाना * करवायो प्रमुदितसविधाना ॥

दो०—जगतजननि श्रीजानकी, कहँ उत निज २ गोद ।

लै गुरुजन वान्धवजिते, प्रेम पूर्ण सहमोद ॥
देत विविध आशिषसफल, भूषणअमित अमोल ।
निरखतसियमुखमाधुरी, अनिमिषनयनअडोल ॥
मिथिलावासिनके हते, स्नेहपात्र वहुतेक ।
पै त्यहिछन सबकर रह्यो, स्नेहसिया मह एक ॥
शतानन्द आदिक ऋषिवृंदा * करत विचार मनहिं सानंदा ॥
धन्यभाग्य मिथिलापति केरी * परम प्रशंसित दुर्लभ हेरी ॥
जासों जगजाके पद बन्दत * जोनजगतमहँकोउकहँप्रणमत॥
जो न कोऊकी स्तुतिकहुँपरहीं * जाकौस्तवननिगमअनुसरहीं ॥
तौन जगद्गुरु के नरराजू * सम्वन्धहि गुरु ह्वै हैं आजू ॥
दिवसशेष यहि विधि ह्वै आयो * संध्याकाल क्रमहि दरशायो ॥
मनहुँ सूर्य अस्ताचल भवना * संध्याकरन हेतुकिया गवना ॥
इतसिय अंगन नारि नवीना * तैल हरिद्रा लेपन कीना ॥
दो०—सूर्य किरण सम्पर्क ते, विमल शशिकला जोइ ।
शोभा पावत जानकी, तनुशोभा भइ सोइ ॥
विद्रुम विरचित स्तंभजहँ, शोभामान शुभ चारि ।
मुक्तमाल सज्जित सुधर, ऐसे भवन मँझारि ॥
स्नान वस्त्रपहिराय पुनि, पंकज सम सुकुमारि ।
श्रीसीता कहँ लै गइं, सकलसोहागिलनारि ॥
रत्नशिलापर सीय कहँ, स्नान हेतु बैठाय ।
कनककलशथितसौरभित, जलसों स्नान कराय ॥
अपर प्रकोष्ठहि लै गईं, करन हेतु शृंगार ।
सुन्दरआसनपर सियहि, बैठायो पुरदार ॥
पुंज २ वहुमूल्य सोहाये * धरे अभूषण तहँ मनभाए ॥
पै रमणी सियकर मनहारी * स्वाभाविक सौन्दर्य निहारी ॥

मोहित भई तनुदशा विसारी * यकटक लखत रहींसुकुमारी ॥
पुनि सियके सब अंग लगायो * सित चंदन सुगंध मनभायो ॥
तब सिय तनु शोभायहि भांती * परम मनोहर वर दरशाती ॥
ज्यों बालुकाखचित अति संदर * गंगापुलिनविमल शोभितवर ॥
चक्रवाक कामिनि त्यहि माहीं * बैठी मंजुरूप दरशाहीं ॥
सिय मुखकान्ति अलकछबिपाई *यहिविधिअतिकमनीयलखाई॥

दो०-ज्यों शतदल ऊपर भ्रमर, श्रेणी रही सोहाय।
कै शशिशिरमहँ नीलघन, शोभाशुभ दरशाय ॥
सखियन बेनी यों गुही, अनुपमभाव सँवारि।
प्रभुमन मनु त्यहि साथही, दियोबाँधिसुकुमारि ॥
सोहत सीता के अधर, ऊपर दशनन पाँति।
पद्मराग आधारथित, मुक्तावलि ज्यहि भाँति ॥

इन्दुनील हीरक अति उत्तम * पद्मराग वैडूर्य अनूपम ॥
मणिमुक्तादि रत्नचय विजटित * आभूषण चामीकर विघटित ॥
धारि अंग महँ राज कुमारी * शोभितभइँयहिविधि सुकुमारी
कुसुमित कुसुमराजि कमनीया * ललित लता जैसे रमणीया ॥
कै तारकवलि सहित सोहाई * ज्योत्स्ना अनुपम छविपाई ॥
कर आँगुरिन जगतजननीकी * सोहें अमल आरसीनीकी ॥
ज्यों क्षीराब्धि तरंगन ऊपर * फेनपुञ्ज लखिपरत मनोहर ॥
सियकटि तटपट अरुण सोहायो * शोभमानयहिविधिमनभायो॥
संध्यासमय अरुण घनमण्डित * विमलपश्चिमाशाजिमिशोभित
यहिविधिकनक गोर सुकुमारी * कुटिल कुन्तला राजकुमारी ॥
चन्द्रमुखी मृगशावक नैनी * कृशकटिअमृतसरसमृदुबैनी ॥

दो०-जौन माण्डवी ऊर्मिला, अरु श्रुतकीर्ति कुमारि।
तिनहुनस्नान करायकै, भूषण अंग सँवारि ॥

सखिन सुसज्जित कै दियो, करि सोरह शृंगार।
रूपराशि बिथुरी परै, उनके अंग अपार॥
गायत्री सावित्रि अरु, सरस्वती के न्याय।
तीनहु कन्या राजहीं, छवि सुन्दर सरसाय॥

तिन तनु कान्ति परमरमणीया * नैन सुखद ऐसी कमनीया॥
मनु उनके कोमल सब गाता * चन्द्रकिरण सन रचे विधाता॥
तिन मुख छवि सों पंकजहारी * वसतबिपिन कण्टक तनुधारी॥
शुक शावक लखि नीकी नासा * उनके घटहि रहत मनु दासा॥
नैन निहारि हरिन हियहारे * तुरतहि काननकठिनसिधारे॥
हरन हेतु श्रवणन की शोभा * गृध्रपक्षिकर मन लखिलोभा॥
ताहि फँसावन सखी विचारे * कुण्डल पासरूप तहँ धारे॥
अधिक करहुँ क्यहि हेतु बड़ाई * यतनहि कहब यथेष्ठ लखाई॥

दो०-इन अंगन की चारुता, सुन्दरता शुभहेरि।
सकल सृष्टि सौन्दर्य कहँ, रच्यो विधाता फेरि॥
चन्द्रकान्ति रंजित विमल, दीपावली समूह।
सहित प्रकाशित भइ पुरी, क्रम२ शोभा व्यूह॥
मणिहारन सज्जित सुतनु, मनुरजनी त्यहिकाल।
लखन हेतु उत्सव महा, आई नगर विशाल॥
कौशेयादि विचित्र पट, मण्डित पुर के द्वार।
लसत अलंकृत तनुविमल, बिबुध बधू अनुहार॥
पाँति२ आलोक मय, कनक कलित गृहपाँति।
शोभमान शोभन प्रभा, तारावलि की भाँति॥
तिन के मध्य विशाल पथ, गन्धमाल्य सम्पन्न।
ध्वजा श्रेणि शोभितसुछबि, बैजियंति प्रच्छन्न॥
कृत्रिम कुसुमावलि कलित, ललित बनबहु द्वार।

चामर चन्द्रा तप जहां, करत कान्ति विस्तार ॥
यहि विधि भूषितमार्ग सोहाए ❋ चित्र भवन समसब दरशाए ॥
सब भवनन के द्वारन माहीं ❋ सधवा सुन्दरिदल दरशाहीं ॥
लिये हाथ महँ मंगलमूला ❋ दधिदूर्वा माला अरु फूला ॥
रोचन व्रीहि कमल कमनीया ❋ आम मंजरी मृदु रमणीया ॥
सलिलपूर्ण मणिमय भृंगारा ❋ विद्रुम अंकुर आदि अपारा ॥
मुख्य२ यत राज पुरुषगण ❋ करि मातंग अश्व आरोहण ॥
पुरसज्जा आयोजन नाना ❋ सम्पादनहितस विधिबिधाना ॥
यातायात करत मगमाहीं ❋ इतउत संभ्रम युत दरशाहीं ॥
दो० - क्षुद्रवातचय जात जिमि, बिपुल बात पश्चात ।
त्यों शत२ किंकरनिकर, उनके पाछे जात ॥
गीत वाद्यस्वन नागरिक, वृन्दन कर सानन्द ।
कोलाहलपुर भरिगयो, जिततितअमितअनन्द ॥
चन्दन कुंकुम कुसुमचय, अरु कपूर का गन्ध ।
चहुँदिशि आमोदित कियो, मारुत मन्द सुगन्ध ॥
परम सुगंधित धूपकर, धूम रह्यो चहुँछाय ।
जासों नभमण्डल मनहुँ, जलदावृत दरशाय ॥
रघुबर करबर वेषबर, लखन हेतु नरनारि ।
उच्चभवन शिखरन खरे, परम लालसा धारि ॥
सज्जित सुरमंदिर सबै, रंगालय दरशाहिं ।
हाटन भारी भीर भइ, ठौर मिलत कहुँनाहिं ॥
बिविध द्रव्य संभारयुत, शकट श्रेणि गजबाजि ।
रथराजिन सों व्याप्त ह्वै, रहे राजपथ राजि ॥
जयमंगल पुण्याह ध्वनि, नगर विकंपित कीन ।
देखि परै कहुँ काहु कर, मुखनहिं दीन मलीन ॥

उच्च मञ्चथित नर्तकी, नाचहिं कर उचकाय।
तिनसननभमनुकोकनद, संयुत सुछबि लखाय॥
यथा विशाल नीरनिधि माहीं * देखिपरतजल बिनकछुनाहीं॥
तिमि मिथिलामहँ सबहि बिहाई * आनँद उत्सव एक लखाई॥
लखिशुभअवसरकहत्यहिकाला * महाराज दशरथ नरपाला॥
बरसज्जाहित कुँअरन काहीं * दीन्हींअनुमति शुभक्षणमाहीं॥
पितु निदेश सुनि राम उदारा * उठे हर्षयुत अति सुकुमारा॥
यदि कोउ कहै राम भगवाना * निर्गुण समदर्शी मतिमाना॥
हर्ष विषाद अहै जगधंधा * त्यहि सन उन्हैं कौन सम्बंधा॥
त्यहि कर उत्तर यहै विचारा * परमविमल मणिजौनप्रकारा॥

दो०—इन्द्रियमन अभिमान सों, हीन तउ निजमाहिं।
सन्मुख स्थापित वस्तुकी, ग्रहण करत परछाहिं॥
त्यहिविधिब्रह्मअनीहअज, माया गुणन विरक्त।
यथा प्राप्त कर्महि करै, रहै न तहँ आसक्त॥

चारहु कुँअर काम कमनीया * कनककलित भूषणरमणीया॥
क्षौमवस्त्र अनमोल सोहाये * धारण किये मंजु मनभाए॥
रामरूप स्वाभाविक सुन्दर * नयनानन्द करन सुमनोहर॥
अबभूषण भूषित ह्वै औरहु * वचनअगोचतभयोललितबहु॥
श्याम शरीर शरद नभ सुन्दर * विमलनीलछबिश्रीरघुवरकर॥
जबहि कनकमणि भूषणभूषित * भयोपट्ट पटसहित सुशोभित॥
अंगराघ अरु अरुण सोहायो * अंगनअनुचर गणनलगायो॥
तबज्यों जलहि तरंग होत लय * तैसेइ जलदमाहिं बहुहिमचय॥
घन पवनहि महँ लय ह्वै जाहीं * होत लीन सौरभ नभ माहीं॥
त्यहिबिधिविधिसंकलितबिबिधबिधि*शुभसौन्दर्य परमशोभानिधि
रामरूप माधुरी मँझारा * भये लीन उपमा अनुसारा॥

तब ज्यों आतप अनुभवचाही * निज अस्तित्व गंवावतछाँही ॥

दो०—त्यहि प्रकार प्रभु केर बर, बेष विलोकन केरि ।
जिनके अभिलाषा हता, वै प्रभु रूपहि हेरि ॥
सुधिबुधि सबै गँवाय भे, तन्मय दिय हिय हारि ।
लोचन कीन्हे सफलनिज, नरतनु ईश निहारि ॥

राम पाद नख पंक्ति सोहाई * मनहुँ तारकाराजि लखाई ॥
नाभिउपरि त्रिबलीइमिशोभति * जनु विधिरूप भ्रमरपद्मस्थित ॥
मृदु मुसकान बक्षथल माहीं * मणिमाला मय तनु दरशाहीं ॥
दशनश्रेणि दरशैं यहि भाँती * जनुसित पंकज कलिदापाँती ॥
भाल तिलक हेरत मनमोहत * शशिमहँमनौं अपरशशिसोहत
कै जीतन कहँ सिय मुखचन्दा * प्रभुमुखशशि अकलंकअमंदा॥
लीन्ह्यो साथ अपर शशिकाहीं * यह उपमा उपजत उरमाहीं ॥
कुण्डल कनक किरीट निहारी * मनुशशिभयोश्यामहियहारी ॥

दो०—त्रिभुवननलिनीकेनलिन, काम बाम छविधाम ।
प्रिया समागम हेतु इमि, भे प्रस्तुत अभिराम ॥
शुभ मुहूर्त महँ महाऋषि, राजवृन्द लै साथ ।
वरयात्रा कुँअरन सहित, कीन्ही कोशलनाथ ॥

कनकघठित मणिजटित सोहाए * चतुर्दोल सुन्दर मनभाए ॥
उनपै चारहु राजकुमारा * भे आरूढ़ परम सुकुमारा ॥
लखिभ्रमहोत मनौंरविकिरणन * अंकित हैं मंजुल मयूरगण ॥
सैनिक तूर्यनादसन सगरी * प्रतिध्वनितभइ मिथिलानगरी ॥
नृपगणमौलिमुकुटमणिछबिसन * सकुलभए निष्प्रभ दीपकगन ॥
रथपदाति अवली गज बाजी * इमि चतुरंगिनि चमू सुसाजी ॥
जासों राजमार्ग सुविशाला * भयोसमाकुलअतित्यहिकाला ॥

मार्ग माहिं गज वृन्दन केरे * उत्थित शुण्डा दण्ड घनेरे ॥
लखि जिनकहँ उरअसअनुमाना * होत अनूपम उक्तिसमाना ॥
अन्तरिक्ष महँ मानहु अगणित * दावदग्ध वनबृक्ष सुशोभित ॥
दो०—राजत रजत रची रुचिर, श्वेत छत्र की पाँति ।
गजारूण नृप वृंद शिर, शोभित शुभ यहि भाँति ॥
क्षीरो दधि मंथन समय, त्यहि के सित पय माहिं ।
फेन पुंज मंजुल यथा, जित तित बहु दरशाहिं ॥
अरुण असित सित पीत पट, घटित ध्वजामगमांहि ।
आसपास प्रासाद जे, तिन ऊपर फहराहिं ॥
जिनसन सज्जित सबभवन, नभथित त्रिपुरसमान ।
देखि परत सुन्दर परम, अनुपम शोभावान ॥
बर्षा महँ जिमि सतड़ित शोभन * पुञ्ज २ नीलांजन सम घन ॥
अपर मेघ मण्डल दल पाछे * देखि परतगवनत अतिआछे ॥
तिमिसित तनु हयवृंद संमिलित * गजगणगमतमार्गमहँअगणित ॥
पावक क्रीड़ा बिबिध प्रकारा * होन लगी मग बारहि बारा ॥
दशादिशिजानिपरतज्यहिकारण * कनककलितकुण्डल कियधारण
राजभवन अद्भुत त्यहि काला * विरचित भईसभा सुविशाला ॥
अतिविचित्र मृदुकंबल मण्डित * सभाभवनआँगनअतिशोभित ॥
जहँ कर्पूर पूर सब ठौरन * रहबिकीर्णसौरभित सुशोभन ॥
दो०—जासों जानि परै मनौं, शरद कालके श्वेत ।
मेघ खंड दशहू दिशन, शोभन शोभादेत ॥
स्तंभखचितमणिगणनकी, अरुणकिरणकमनीय ।
नीलवर्ण चन्द्रातपन, परि यों भइ रमणीय ॥
मानहुँ भास्करकर निकर, रंजित कोमल शील ।
छवि छाजी राजीव दल, राजा राजी नील ॥

पद्मराग आदिकमणि विजठित * पुरटघटित आभूषण भूषित ॥
हेमासन आसीन अनूपा * देशदेशके अगणित भूपा ॥
तिनतनु अरुणकान्ति सोरंजित * नीलवर्ण मण्डपइमिशोभित ॥
लोहित जलद जाल युत पावन * जैसे सन्ध्यासमय सोहावन ॥
नृपगण मुकुट जटित मणिराजी * बिविधवर्णशुभशोभा साजी ॥
मनु धनु सुछबि पुरन्दर केरे * सभाभवनमहँ उदित घनेरे ॥
चामर लिये ललित तनु ललना * लहहिंअप्सरागणछवितुलना ॥
तिनकी भूषणकान्ति मनोहर * सोहतविमलसलिलसमसुन्दर ॥
त्यहिमहँ तिनकी मृदुमुखराजी * विकसिलकमल कुसुमसमराजी
ऋषि मुनि विप्र वृंद मतिमाना * कविकोविद मन्त्रीगणनाना ॥

दो०—पुरवासी सम्भ्रान्त गण, राजा मंत्रि कुमार ।
सभाभवन बैठे कुँअर, सचिव अमात्त्य अपार ॥

सो०—अक्ष वलययुत हाथ, वेणुदण्ड शोभा लहै ।
कठिन कपिशरँग माथ, जटाजूट मण्डित अहै ॥

दो०—दूर्वांकुर शोभित शिखा, पहिरे बल्कल चीर ।
एक ओर ब्रह्मर्षि गण, बैठे अति गम्भीर ॥
पद्म पराग सुगंध युत, अगुरु सुवास समेत ।
शीतल मंजुल मृदु पवन, हठि मन मोहे लेत ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

कुसुमावली मण्डित गवाक्षन पास आसन पै खरी ।
अन्तःपुरस्थित नारि निरखहिंदृश्ययह मनमुदभरी ॥
प्रत्येक द्वारन द्वारपालक करलिये काञ्चन छरी ।
नीरवखरे शोभाबढ़ावत शीश पहिरे पागरी ॥
जहँ तहँ सुरूपा नर्तकी बहु हावभाव बतावहीं ।
वीणा मृदंग निनाद संग मृदु मधुर स्वरसों गावहीं ॥

सनकादिऋषि वसु रुद्र अरुआदित्य आदिक सों भयो।
इत अन्तरिक्ष अनन्त पूरित सुरविमानन सन छयो॥
श्रीराम परिणय दृश्य देखन कहँ असुर सुरबर सबै।
समवेत होन लगे पगे आनन्दमय रसमहँ तबै॥
बसु वरुण नैऋतिवायु वन्हि कुवेर यम गणपति भले।
अरु असुरवर प्रह्लाद आदि सुभक्तनभपथ सों चले॥
यहि अवसरहि देवर्षि नारद ब्रह्मलोकहि द्रुत गये।
पदवंदि सादर पिताके पुनि यों वचन बोलत भये॥
श्रीराम जगजनक जननी जानकी के ब्याहही।
द्रुत चलि लखहु माया मनुजलीला सहित उत्साहही॥

यह सुनि समाचार सुखदायक * हर्ष समेत प्रजापति नायक॥
रक्तमाल्य पटभूषित गाता * हंसयान चढ़ि विश्वविधाता॥
सावित्रीयुत मिथिला काहीं * सत्वर चले गगन मगमाहीं॥
यक दिशि संग लिये गणभीरा * मुक्तागिरि सम गौर शरीरा॥
कोटि सूर्य समतेज अपारा * शिरशोभितसुरसरिकीधारा॥
कण्ठ कपाल माल छबिपाई * भवभय भंजन जन सुखदाई॥
जटाजूट मण्डित जगदीशा * महादेव देवन के ईशा॥
उमाकुमार गणेश समेता * वृषारूढ़ ह्वै शैल निकेता॥
पांचशीश शोभित दशबाहीं * भये उपस्थित नभथल माहीं॥
पुनि सुरगण संयुक्त सुरराजा * बाल सूर्यसमतेज विराजा॥
हेममयी मणिमाल विभूषित * सहसनयनकर कुलिशसुशोभित
ऐरावत आरूढ़ सोहाए * शचीजयन्त सहित तहँआए॥

सो०—पुष्कर तीरथ राज, नैमिष गया प्रभास यत।
आगत तीर्थ समाज, दिव्य रूपसो सोहहीं॥

कृष्णा कावेरी सरस्वती * कालिंदी रेवा दृष द्वती॥

गंगा गोदावरी विपाशा * जिनजलछुवतहोतअघनाशा ॥
सो सब सरिता उत्सव माहीं * दिव्यरूप आगत दरशाहीं ॥
यक्ष रक्ष गंधर्व वरूथा * विद्याधर किन्नर वरयूथा ॥
गगनहि नरकानन अनुरूपा * शोभितकियो आनिशुभरूपा ॥
नृत्यगीत वाद्य ध्वनि पूरण * देवसभाभासितभइ त्यहिक्षण ॥
सबकी दृष्टिपरी यहि अवसर * चतुर्दोल आसीन प्रभूपर ॥
दनुजदलन विभु दयासिंधुकर * लखि अद्भुतवरवेष मनोहर ॥

दो०—भक्ति विभोर विरंचि भे, आठनयन अरविंद ।
प्रेमनीर वरसन लगे, जनु अमंद मकरंद ॥
गद्गदस्वर लागे करन, प्रभुकर गुणगण गान ।
अनिमिषलोचनसबकरत, अनिमिष सो छविपान ॥
पादपद्म प्रभुके निरखि, सुरपतिके त्यहिकाल ।
प्रेमनीरसों भीजिगे, सहस नयन सुबिशाल ॥
वीणा मधुर बजायकै, नारद मुनि सानन्द ।
राम नाम पीयूषकर, खोल्यो उत्स अमन्द ॥
अपरापर नभचर अमर, अमरवधू मुदमत्त ।
रामरूप लखि सब भये, भक्तिभाव उन्मत्त ॥
प्रेम जलधि महँ मग्नमन, भे शिव पुलकित गात ।
श्यामल शोभा हेरि कै, उर आनँद न समात ॥
कसि कपर्द बांध्यो जोई, सो खसिपरयो विशाल ।
करन लगींशिरजान्हवी, कल२ ध्वनित्यहिकाल ॥
कृत्तिवास कह त्यहि समय, गंगा मेरी जान ।
अस मन महँ अनुमानकरि, ब्याकुल भईं महान ॥
"जनक जबै श्रीरामपद, करिहैं पाद्य प्रदान ।
दूजी गंगा उपजि तब, ह्वै हैं मोर समान ॥"

त्रियविंशो सततम सर्ग ॥ १२३ ॥

दो०—सुर मण्डली प्रपूर्ण नभ, मण्डल भयो विशाल ।
जासों तारागण भये, विगत कान्ति त्यहिकाल ॥
पै शत २ देवांगना, विद्या धरी कुमारि ।
रुद्र नाग गुह्यकसुता, सिद्धसुता सुकुमारि ॥
उनके कान्ति विकाशसों, नभ थल नील अनन्त ।
तदधिक सुन्दर ह्वै गयो, मन मोहन छबिवन्त ॥
गायत्री सावित्रि अरु, मातृवृंद शुभ रूप ।
लसहिं अश्विनी आदि शुभ, नक्षत्रन अनुरूप ॥
उनकी मंगल गानध्वनि, मधुर सुधा अनुहार ।
शशिके सुधा प्रवाह सम, मुग्ध करत संसार ॥

राजभवन निकटहि यहिअवसर * पहुँची आय बरात मनोहर ॥
गजगण गर्जन नाद घनेरा * हिन हिनाब हय वृंदन केरा ॥
रथचक्रन घर्घर स्वन विसृत * झन २ शब्द शस्त्रपुञ्जन कृत ॥
कोलाहल जन जनित अपारा * द्विजवृंदनकृत जयजय कारा ॥
मर्दल शंख पटह अरु भेरी * ध्वनिअसीमवहु डिण्डिमकेरी ॥
नभभेदी निष्क्रण स्वन भारी * गयो जनक नृप कर्ण मँझारी ॥
मंजु मंजरी पुञ्जन रंजित * नवकिसलयचयमयअतिशोभित
आम्र वृक्ष सुन्दर दरशाई * ज्यों बसन्त ऋतु आगम पाई ॥

दो०—त्यों अतिशय आनन्दवश, पुलकित तनु भे भूप ।
तदनन्तर सत्वर जनक, महाराज नयरूप ॥
वहु अमात्यवान्धव अनुज, मनुज संघके संग ।
आरोहित मदमत्त गज, ऊपर सहित उमंग ॥

दशरथ ओर चले मुदमानी * लेनहेतु बरदल अगवानी ॥

तब मणिजटित अभूषण धारी * गजारोहियुत गजननिहारी ॥
इमि अनुमान होत उर मानहु * गमनसीलकुल गिरिविचरतबहु
तदुपरि कुसुमित कुसुम विभूषित * बिविधवृक्षऔषधी प्रकाशित ॥
कछुक काल पर दोउ दल भारी * मिले परस्पर प्रेम प्रचारी ॥
सादर संभाषण मय व्यापी * सुखमयध्वनिउनकेरिअमापी ॥
सेतुभग्नकरि जिमिदोउ सागर * करतविषमध्वनिमिलतपरस्पर॥

दो०—तब दशरथ नृप यानसन, उतरि हिये हरषाय ।
मिले जनक सों प्रेमयुत, सो सुखबरणि नजाय ॥
रायरूप लखि नृप जनक, पुलकित सकलशरीर ।
मन संयमहि अशक्त मन, भे आनन्द अधीर ॥

सबके सन्मुख प्रणमि नृपाला * करनचहीप्रभुस्तुतित्यहिकाला॥
पै तत्क्षण अलक्ष्य प्रभुमाया * नाशत ज्यों घामहि घनछाया ॥
त्यों वहि दिव्यदृष्टि शुभकाहीं * कीन्यो आच्छादित छनमाहीं ॥
क्रम२ दोउ दल सहित हुलासा * पहुँचे सभा द्वारके पासा ॥
तब पुर रमणी श्रेणि सोहाई * ऊंचे गृह शिखरन पर जाई ॥
बरअरु सकल बरातिन ऊपर * सुमन सुगंधित माल्य मनोहर ॥
मुक्ता मिश्रित अक्षतलाजा * बरसावहिं सुख विस्मृतलाजा ॥
तब सब हयरथ वाजी राजी * शोभन श्वेतवर्ण छबिसाजी ॥

दो०—यह अद्भुत छबि लखि हिये, होत यही अनुमान ।
मनुहिम मयहिम शैलके, शिखर लसत छबिवान ॥
जनक प्रभुहिअरु मंत्रिद्वय, लखणशत्रुहन काहिं ।
कुशध्वज भरतहि गोद लै, गये सभा गृह माहिं ॥
तेज पुञ्ज ब्रह्मर्षिगण, भे आगे आसीन ।
राम चन्द्र अरु भरत पुनि, भूषित मंजु मणीन ॥
पुनि लक्ष्मण शत्रुघ्न दोउ, शोभित राज किशोर ।

श्वेत चँवर किंकर करहिं, कुँअरन के चहुँ ओर ॥
होनलग्योतब यह विदित, मानहुँ सन्मुख माहिं ।
चपला चय चमकत तदनु, नील जलद दरशाहिं ॥
पुनि तिन पाछे दामिनी, दमकत अति कमनीय ।
चहुँ दिशि बक पक्षी लसैं, श्वेत वर्ण रमणीय ॥
सभा भूमि त्यहि समय सोहाई * सुमनमयी मंजुल दरशाई ॥
धँसत पाँय गुल्फन पर्यन्ता * इमिनिपतिततहँसुमनअनन्ता ॥
चारहु कुँअरन स्वर्णपीठन पर * भे आसीन मनोज मनोहर ॥
औरहु यथायोग्य आसन महँ * भे आसीन सभामधि जहँतहँ ॥
कनकासन आसीन कृपाला * यहिविधिशोभितभेत्यहिकाला ॥
सजल जलद ज्यों मेरुशिखर पर * शोभमान बरसुन्दर छबिधर ॥
अनिमिषदृग निरखत तबसबनर * रामरूप माधुरी मनोहर ॥
ज्यों मयूर जल भरे जलद कहँ * लखतअतृप्तराखिमुद मनमहँ ॥
दो०—वहु सुगंध गंधित सुमन, बन महँ मारुत माय ।
त्रिविधगंध युत जौनविधि, विविधगंधह्वै जाय ॥
त्यों दर्शक गण सभास्थित, निज२रुचि अनुसार ।
भिन्नि२ भावन निरखि, कोशल राज कुमार ॥
भिन्न २ रससिंधु मधि, भये मग्न मन मर्त्य ।
सुमति कुमति कामी कुटिल, योगी यती अमर्त्य ॥
मणि गण भासित भवनमहँ, शोभित सभा अनूप ।
जन मण्डली अनेक तहँ, लसहिं चक्र अनुरूप ॥
सब महँ गायक गण करहिं, निज२रुचि अनुसार ।
बिविध राग आलाप इमि, मधुरे स्वरउच्चार ॥
मूलतान मह कहँ कोउ सुचतुर * मूलमंत्र गावत हर्षित उर ॥
तजिधन धाम धरा भवपाशा * संसृति सिंधु तरन की आशा ॥

आशावरी राग रुचि कारी * गावतगुणीनिपुणकोउभारी ॥
कहुँ कल्याण राग मन भायो * निज कल्याण हेतुकोउगायो ॥
जयजयन्ति महँकोउ ईश्वर कर * जय उच्चारण करत कहूं पर ॥
श्यामल शुभशोभन मन लोभन * प्रभुतनु मेघवर्ण कर वर्णन ॥
मंजु मेघ मल्लार अलापी * करत कहूँ कोउ परम प्रतापी ॥
अहंभाव कहँ कहुँ कोउ त्यागी * अहं राग गावत अनुरागी ॥

दो०—ध्रुव पदमहँ ध्रवपद कहूँ, देखि सरत अविकार ।
मूर्ति भैरवी की प्रकट, कहुँ भैरवी मँझार ॥
कहुँ गौरीमहँ करि रहीं, गौरी प्रकट विहार ।
मूर्तिमान श्रीश्री कहूँ, श्री महँ श्री विस्तार ॥
होत वसन्त अलाप महँ, कहू वसन्त विकास ।
राम केलि महँ ह्वै रह्यो, रामकेलि परकास ॥

कहुँ कोउ गायक गुणी उदारा * वैरागी रागिनी मँझारा ॥
व्रत वैराग्य केरबर बर्णन * करत मनोहर राग विबर्णन ॥
हरश्रृंगार माहिं कोउ नरबर * हरश्रृंगार दिखावत सुखकर ॥
वीण मृदंग वेणु करताला * इनकीसुनिधुनिलयअरुताला ॥
सब जनमन मोहित हरषाई * करत प्रशंसा शीश कँपाई ॥
राम जानकी कर मन भायो * ब्याहलग्न जबनिकटहिआयो ॥
देव वृंदथित इन्द्र पठाये * चन्द्रदेव त्यहिछन तहँ आये ॥
धारि नर्तकी वेष विशाला * मिलेनर्तकिनमहँत्यहिकाला ॥
शशि आभाभासित ज्यहिभाँती * होहिंसु छबि तारन की पाँती ॥
कपटनर्तकी तनु शशि छविसन *अपरनर्तकिनकीछबित्यहिछन॥
वैसेइभई द्विगुण कमनीया * काञ्चन रुचि रत्न रमणीया ॥
छेद भेद आदिक वहुरूपा * यौवन लास्यभेद अनुरूपा ॥

दो०-नृत्यकियो आरम्भ जब, चन्द्रदेव यहि भाँति।
तब मधुकरज्यों रहतफँसि, कमलमुकुलमहँराति॥
त्यों सबके चित चन्द्र की, चमत्कारमय चाल।
और अंगविक्षेप महँ, फँसेविवश त्यहिकाल॥
लोपभई सुधि बुधि सबै, सबकी यहि सम्पर्क।
ऋषि वशिष्ठ निर्दिष्टशुभ, लग्नगई टरि कर्क॥

कार्यसिद्ध अनुमानि सुजाना * चन्द्रदेव भे अन्तर्धाना॥
कुहकमुक्त नर न्याय यकायक * भये सचेत सबै नरनायक॥
बीती जानि लग्न सबहीके * भये विषाद मलिनसुखफीके॥
रामसिया सब पुर चतुराई * हेरि हँसे मनमहँ मुसकाई॥
अरु सर्वज्ञ मुनीन निहारा * आशु निशाचर कुल संहारा॥
तब वशिष्ठ आदिक ऋषिराजा * करन हेतु द्रुत परिणयकाजा॥
दीन्ही अनुमति नृपतिजनककहँ * सोउसंभ्रान्त भयेअतिमनमहँ॥
अनुज वंधु बांधव लै साथा * कुँअरन निकटगए नरनाथा॥

दो०-उनकर बरकर कर पकरि, उन्हैं उठायो भूप।
सोउ कुसुम माला गरे, पहिरे रूप अनूप॥
इन्दुकिरण सुन्दर हंसी, सुतिसों सभा निवास॥
उद्भासित करिकै कुँअर, चारहु चारु विलास॥
रत्नाकर निर्गत विगत, चारि बेदके न्याय।
रत्नासन सन तब उठे, शुभ शोभा सरसाय॥

मंगल ध्वनि चहुँओर अपारा * छाय गई नृप भवनमँझारा॥
सरल शील अन्तःपुर नारी * चहु कुँअरनकहँ जायअगारी॥
अन्तःपुर महँ गइं लेवाई * परम प्रमोद रह्यो हिय छाई॥
तब कौशल उत्साह स्वरूपा * सम्पति और नीति अनुरूपा॥
प्रविशे चारहु राजकुमारा * अन्तःपुर अन्तर सुकुमारा॥

जानकिजननिआदिगजगामिनि * रत्नदीप लीन्हे कर कामिनि ॥
घेरि लियो इनकहँ चहुँ आई * निरखहिं नयन निमेषविहाई ॥
यातापात निरत सुकुमारी * मंजुल महिला वृंद मँझारी ॥
छिपत कबहुँ कहुँ प्रकटत सुन्दर * राम भरत दोउकुँअरमनोहर ॥
कुसुमित कमल काननहिं जाई * ज्यों मधुकर दुरिदुरि दरशाई ॥

दो०—और फटिकगिरिशृंगचय, चुंवित शशि के न्याय ।
लखण शत्रुहन सोहहीं, गौरवर्ण दोउ भाय ॥
यों दर्पणदर्पहि दलित, करत ललित सबभाँति ।
सुन्दर छवि पुर सुन्दरी, देहन का दरसाति ॥
कै प्रतिबिंबित ऊजरे, होत मनोहर रंग ।
एक एक के अंग मैं, एक एक के अंग ॥
फल भारानत पुष्पचय, मय वृक्षन की पाँति ।
शोभत उपबन बीच महँ, सोहहिं बहु ज्यहिभाँति ॥
हेम कमल कलिका सदृश, कुचमण्डलनतबाल ।
त्यों आनत निरखहिं खरी, नृपदशरथ के लाल ॥
होत हिये अनुभान लखि, उन के गुरु उरु देश ।
मदन सदन के खम्भमनु, कनककलित वरवेष ॥
उन के नवलनितम्बमनु, मन्मथ के पथ माहिं ।
गमन आगमन हेतु द्वै, सेतु ललाम लखाहिं ॥
उनकी अलकावलि चपल, लाचन तारा और ।
कारे कच अवलोकि कै, हारे हिय महँ भौंर ॥
उन रमणिन की कण्ठधुनि, सुनेसुधा अनुहारि ।
अरु सुंदरता चारुता, सुकुमारता निहारि ॥

सो०—यह अनुभव उरहोय, सुधासंचयी सुर मनहुँ ।
समय निरापद जोय, अम्मृत रक्षा कारणहिं ॥

कला सकल शशि मण्डल केरी * सुधामयी मंजुल बहुतेरी ॥
भयहर जनपावन प्रभु पावन * कीन्हीआश्रितआमलसोहावन॥
जनक राज रानी सुकुमारी * स्नेह स्रवितचित रामनिहारी ॥
कृत्यवर बरण केर सम्पादन * कीन्ह्यो यथा योग्य हर्षितमन ॥
पूर्व समय हिमगिरि की नारी * नाम मेनका अतिसुकुमारी ॥
करिशंकरकर बरण सोहायो * केवल निजकृत तपफल पायो ॥
पै जानकी जननिमुद भरिकै * चहुँ कुँअरनकेवरणहिकरिकै ॥
सत्य, दान, तप, तीर्थन केरा * एक काल फल लह्यो घनेरा ॥
बड़भागिनि रानी अतिधन्या * तिनसमानत्रिभुवननहिंअन्या॥

दो०-स्त्री आचार समाप्त करि, चारहु राजकुमार ।
पुनि बिवाह मण्डप बिषे, आये अति सुकुमार ॥
पूर्व ओर मुख के प्रभू, बैठे नीरज नैन ।
पश्चिम मुख ह्वै नृप जनक, बैठे शमदम ऐन ॥
छाया मण्डप घेरि कै, घने निमंत्रित भूप ।
तेज पुंज ऋषिवृंद अरु, राजराज शुभरूप ॥
मणि मण्डित रत्न रुचिर, बर आसन आसीन ।
भये मण्डलाकार करि, शोभित बहु श्रेणीन ॥
त्यही भाँति रमणीनकी, पाँति मण्डलाकार ।
लसतगवाक्षन स्वच्छ द्युति, नक्षत्रन अनुहार ॥

सुरमण्डली पूर्ण नभमण्डल * देखिपरत शोभायुतअतिभल ॥
तुम्बुरु आदि गुणी गन्धर्वा * गावत गीत प्रीतियुत सर्बा ॥
नारद गुणगावत हरिजीके * बीणामधुर बजावत नीके ॥
बजत बल्लकी बेणु मृदंगा * जहँ तहँ वीणा मृदुमुहचंगा ॥
रम्भा प्रभृति अप्सरा वृंदा * रम्य किन्नरीगण सानन्दा ॥
ताल राग लय नृत्य दिखावहिं * देवसमाज सकलसुखपावहिं ॥

इत मिथिलानगरी नरनाथा * तेजनिलयऋषिमुनिगणसाथा ॥
करि स्वस्त्ययन कर्म सम्पूर्ण * परम प्रसन्न हेरि प्रभुपूरण ॥
दो०—बहुरि मधुरमधुपर्क अरु, जलयुत मणि भृंगार ।
हाथ लिये नृप उठे तब, ऋषि निदेश अनुसार ॥
पुरुष पुरातन के चरण, धोए सह अनुराग ।
सफलमनहिं मान्योअपन, जप तप ज्ञान विराग ॥
पुनि प्रभुके करकमलमहँ, माया शक्ति स्वरूप ।
निज तनया अर्पणकरन, कहँ भे प्रस्तुत भूप ॥
अहोजनक ! तुमधन्यहौ, तुम सन अन्य न कोय ।
हरविरंचि ईश्वर जऊ, यह पद लह्यो न कोय ॥
जासों जो योगी हृदय, आसन रह आसीन ।
त्यहिप्रभुकहँतुमआजकुश, आसन संस्थित कीन ॥
त्रिभुवन पावनि सुरधुनी, जिन पाँवन उत्पन्न ।
करधरि धोथे तुम सोई, भये भाग्य सम्पन्न ॥
जिनके चरण कमल कमलाके * अहैं परमधन सिंधुसुता के ॥
अर्घ्यदेन कहँ जिन चरणनमहँ * रहतलालसा कमलासन कहँ ॥
लखहु ललाटमाहिं उनही के * जनुकअर्घ्य दीन्ह्योअतिनीके ॥
करत आचमन लै ज्यहि नामा * देव पवित्र होत शुचिकामा ॥
बैठे जनक नृपति के आगे * सोइआचमन करत अनुरागे ॥
सबसुर प्रथम सकल मखईशा * जो मखभागलहत जगदीशा ॥
जनकदत्त मधुपर्क त्यहीके * नासाअग्र विराजत नीके ॥
पुनिमिथिलेश जनक नरनाथा * दूर्वा अक्षत दै प्रभुहाथा ॥
दो०—प्रभुकर दक्षिण जानुधरि, करि तत्सत् उच्चार ।
गोत्र प्रवर कहि आपने, वेदरीति अनुसार ॥
वरण कृत्यपूरण कियो, हर्षित हिये अपार ।

कहवृतोऽस्मिकौतुकसहित, रामहु परम उदार ॥
कन्या नयन निदेशपुनि, कुलगुरु दियो महर्षि ।
तुरत तहाँ लाईसखी, सियहिहियहिअतिहर्षि॥
तहँ ते ज्ञानी ब्रह्मऋषि, सिद्ध देव नभचारि ।
तिनहिंकृतारथ करनहित, अवसर उचितविचारि ॥
कछुककाल हित जानकी, जगतजननि भवमूल ।
मूर्ति सनातनि आपनी, उन्हें दिखाई स्थूल ॥
सियशरीरमहँ सब जगत, सृष्टिस्थिति संसार ।
दिवस यामिनी राजहीं, रजत विन्दु अनुहार ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

सियअंग महँ सितअरु असित मणिमाल मनुमन भावही ।
सित अरु असित दोउपक्ष केर विकास-यों उपमा लही ॥
शशिसूर्य मण्डल रत्नभूषण से प्रकासित ह्वै रहे ।
नक्षत्र कण्ठहि रत्नहार विहार की उपमा लहे ॥
परिधेय अम्बर सम सोहावन स्वच्छ अंवर छविलहैं ।
घन २ तडित मनु वसन की उज्ज्वल कनक रेखा अहैं ॥
सियके चरण विक्षेप सों लुण्ठन लगी मानहुँ मही ।
फिर होन लाग्यो हृदय महँ अनुमान इमि तत्कालही ॥
शशिसूर्यरूप अभूषणन झनकार होन लग्यों महा ।
सोकान्ति सों मिलि दशदिशन महँ व्याप्त मानहुँ ह्वैरहा ॥
निज नैन गोचर भई केवल अतिविराट सोहावनी ।
संसार जननी जानकी की मूर्ति जनमन भावनी ।
ब्रह्मर्षि ब्राह्मण राजऋषि सुरसिद्ध मुनि ध्यानहिं धरे ॥
उद्भ्रान्त चित्त भये सबै अवलोकि कौतूहल भरे ॥
गद्गदगिरा पुलकित शरीर अधीर अद्भुत छबि छके ।

है वाकशक्ति विहीन परमाशक्ति नुति नहिं करि सके ॥

दो०—यहिअवसर पुनिजानकी, सहज वधू के रूप ।
देखिपरीं सब कहँ जनक, कन्या तनु अनुरूप ॥
पहुंचीं जब श्री जानकी, छाया मण्डप पास ।
तब तरुपल्लव डुलत ज्यों, लहि कै पवन विकास ॥
त्योंनिजप्रियासमागमहिं, लहि विराट वपु राम ।
भे पुलकित तनु हर्षवश, कम्पित गात ललाम ॥

रत्नदीप नक्षत्र समाना ❋ भासित सभाभवन महँनाना ॥
कनककलितमणिमाणिकमण्डित❋ छाया मण्डप प्रभाअखण्डित॥
भूपन के भूषणगण अगणित ❋अरुअमोलउज्ज्वलमणिविजटित
रहे सुशोभित करत विशाला ❋ अबलौं सब बिवाहकी शाला ॥
पै ज्यों रविप्रकाश को आगे ❋ जुगनू ज्योति तेजनिजत्यागे ॥
उदय होत तिमिविश्व विमोहन ❋ सियारूप सौन्दर्य सुशोभन ॥
छीनभई छबि सबकी त्यहिछन ❋ रह्यो न उनकरनेक निदर्शन ॥
मंचस्थित—वेदी पर सीता ❋ शोभितभइँ सुकुमारिविनीता ॥
होन लग्यो लखि अनुभव ऐसे ❋ यक लावण्यलता करजैसे ॥
कोमल किशलय डोलत ऊपर ❋ कै विमला लोचन आनँदकर ॥
धारण सुधा किये वसुधापर ❋ लसत सुधाकर कलामनोहर ॥

दो०—ज्योंवसन्त आगमनिरखि, तरुके अन्तर केर ।
लह विकास आनन्दरस, सुमन रूप वहिबेर ॥
त्यों समीप सियराम की, छबिअवलोकि विचित्र ।
गाधितनय करमुख भयो, मनहुँ हर्ष को चित्र ॥

रोला छन्द ॥

नवलवधू संकोच लोचनन महँ विस्तारी ।
आनन कमल छपाय कमल करसों सुकुमारी ॥

प्रभुमुख सन्मुख मंजु मृदुल मुख अवनत करिकै।
बैठीं सुखसों सिया सुउपमा इमि अनुसरिकै॥
रक्तकमल के कोष माहिं मानहुँ मन भायो।
राहुभीत निशिनाथ छप्यो पूरण दरशायो॥
अरु ललाटथित तिलक आसपासन नखपाँती।
शोभमान अनुमान करावत मन यहि भाँती॥
मनहुँ पूर्णशशि श्रेणि रुचिर रुचि रुचि कर राजै।
अरुण अरुण के दुहूँ ओर सुन्दर छबि छाजै॥
ललित ललामक युक्त मुक्त अवली त्यहि ऊपर।
यहि बिधि उपमा लहत अनुपमा महत मनोहर॥
मनु अलकावलिरूप तुमुलतम यकशशि थलमहँ।
दशनिशिनायकनिरखि आक्रमण उन्मुखनिजकहँ
इन्दुभीत बहु बिंदु २ करि नैनन नीरा।
बिपुल बहावत मुक्त श्रेणि मिस विकल शरीरा॥
जनक बहुरि बहुमूल्य वस्त्र आभूषण द्वारा।
वर अर्चाकरि रामहाथ सिय करं पर धारा॥
पवनदेव प्रच्छन्नभाव सों तब मण्डप कर।
अपसारित करिदियो बिमल चन्द्रातप हरबर॥
तबहि सुरासुर सुरी सिद्ध विद्याधर किन्नर।
अवसर उचित निहारि हेरि बरबधू मनोहर॥
मंगल ध्वनि उचारि चारि ओरन हरषाये।
कल्पवृक्ष के कुसुम सुगंधित बहु बरषाये॥

दो०—पुष्प वृष्टि सों दृष्टिगत, भई नई कमनीय।
अपर विचित्र वितान की, सृष्टि परमरमनीय॥
हेरि होत अनुभव हिये, मनहुँ तारकाराजि।

मारुत संचालित पतित, मण्डल पै रहिराजि ॥
कै सुर सुन्दरि वृन्द को, मंजुल हास विलास ।
महिमण्डल महँ पतितह्वै, अद्भुत करत प्रकास ॥
कै उज्ज्वल घन खण्ड कै, मण्डित प्रभा अखण्ड ।
पुंज २ नवनीत के, निपतित निर्मलपिण्ड ॥
मुक्ताफल माला ललित, कै हिम वर्षा होत ।
गिरत गगन सों इन्दु को, किधौं किरणको स्रोत ॥
कै क्षीरोदधि की विमल, बाचि वृंद सों बाम ।
भयो परिस्रावित सबै, सभाभवन अभिराम ॥
नभ निपतित पराग सों पागे * सुरतरु सुमन सुरन के त्यागे ॥
तिनकरलजित बिलोलविलासा * केतकि कुसुम समूह सुबासा ॥
कुमुद निकर प्रस्फुरण मनोहर * कुन्दपुष्पनिपतनँ अतिसुन्दर ॥
कुवलय पुञ्ज मंजु बरसन ते * दशहुदिशा छाइँ कुसुमन ते ॥
सभा उपस्थित नरनारीगण * त्यहिक्षणयहव्यापारविलक्षण॥
शिर उठाय लखि कौतुककाहीं * विस्मितभये भूरि मन माहीं ॥
प्रांगण गृहाच्छाद गृह चत्वर * सभासदन तनुभाससदनकर ॥
कुसुम समाच्छादित सब सोहत * सो शोभा हेरत मन मोहत ॥
कोविद वृन्द तत्वविद नाथा * सहसा सुनी गगनयह गाथा ॥
"सकल सिद्ध कुल हम सब भूमैं * कल्पारंभ कालते घूमैं ॥
पै जो दृश्य आज हम हेरा * मिथिलापुरी माहिं यहिबेरा ॥
अब लौं अस अद्भुत व्यापारा * चौदहभुवन न कबौंनिहारा" ॥
दो०—प्रभुकर सीता कर तरे, धरे लसत मनुसोइ ।
सियकर निम्नहि पद लह्यो, प्रभापराजित होइ ॥
श्रीकर पर शोभा अहो, श्री कर केरि अनूप ।
मनहुँ कोकनद अरुण पै, मधुपपुञ्ज वररूप ॥

सो०—पुरांगना महि माहिं, सुरांगना गन गगन महँ ।
मिलिमंगलध्वनिकाहिं,करहिंसुखितचितअपरमित॥

जनक जनक जो जग जननीके * कन्यादान मन्त्र पढ़ि नीके ॥
बेदि विहित बर विधि अनुसारी * हवन कर्म कीन्यो शुभकारी ॥
पुनि गंभीर शब्द सों त्यहि छन * बोले बर बर बेश ईश सन ॥
बत्स! आज ते अबतुम सिय सों * है एकत्र हर्षयुत हियसों ॥
संचित धर्म अर्थ अरु कामा * करतरहहुनितकरि शुभकामा ॥
मोह पतित पति केर उबारा * करन काहिंयक नारिअधारा ॥
ज्यों गुणवती तिया हरि बाधै * निजस्वामी कर मंगल साधै ॥
गुरु उपदेश शास्त्र की चर्चा * मंत्र तंत्रसाधन अरु अर्चा ॥

दो०—त्यों मङ्गल नहिं करि सकहिं, साधनजौन अनेक ।
पति अवलंबन बिपति महँ, है अर्धांगिनि एक ॥
धन सुख शास्त्र बिवेक गुरु, मित्र भृत्यअरुभ्रात ।
सखा सुहृद सब स्वामिके, केवल नारि लखात ॥

होत जहां नारिन कर आदर * रहत तुष्ट तहँ सुरसब सादर ॥
नारि निरादर निरखहु जाहां * निष्फलक्रिया सकलहैं ताहां ॥
राखब उचित सुखी निजनारी * विप्रिय किये होत अघभारी ॥
गृह शोभा अरु मङ्गल मूला * यासों पूज्य नारि अनुकूला ॥
लखहु पुराण शास्त्र अरु वेदा * गृह श्री अरु स्त्रीमहँ नहिंभेदा ॥
है प्रतिकूल नारि ज्यहि जनकी * नहिंगतिमिलतपरस्परमनकी ॥
सो यहि लोकहि महँ कुविचारी * निरय यातना भोगत भारी ॥
प्रेम परस्पर पति पत्नीकर * मिलब स्वर्गहू महँअतिदुस्तर ॥

दो०—गृह निवास सुखमूल है, पै त्यहि सुखकर मूल ।
गृह सागर कर कूल तिय, गुनआगरि अनुकूल ॥
पुरुष होंय पापी अशुचि, चहै नगर बन माहिं ।

पै यदि है तिय सतीतौ, सुगति मिलै उनकाहिं ॥
जो नर ज्ञानवान जग आहीं ❋ प्रकृतिनिरादर उचित न ताहीं ॥
कारण यहिकर यह निर्धारा ❋ प्रकटत पुरुष प्रकृति के द्वारा ॥
कामिनि कला प्रकृतिकी मानी ❋ सुमतिसुशील मुनीनप्रमानी ॥
हैं ब्रह्माण्ड माहिं सब नारी ❋ प्रकृति अंशअंशांश विचारी ॥
यासों काहू कहँ अपमाने ❋ प्रकृति निरादर शास्त्र प्रमाने ॥
जो नर करत नारि सन्माना ❋ होत सदा त्यहिकरकल्याना ॥
जो नर नारि निरादर कीना ❋ तौन नराधम है मतिहीना ॥
जो जन दोषरहित निज नारी ❋ युवती कहँत्यागत कुविचारी ॥
दण्डयोग्य सो शास्त्र प्रमाना ❋ अथवा जोनर निपटअजाना ॥
नहिं तिय माहिं तनय उपजाई ❋ ब्रत बैराग्य गहत अन्याई ॥
स्रवत सुकृत तप त्यहिकर ऐसे ❋ जलचलनीकर महिमहँ जैसे ॥
हे नरवर ! जो नर अविचारी ❋ पतिब्रतातजि अपनी नारी ॥
दो०—होय जात सन्यस्त कै, ब्रह्मचर्य ब्रत लेत ।
तीर्थ पर्यटन माहँ कै, मुक्ति हेतु मनदेत ॥
बनिज निमित कै अन्य कोउ, कारणतेमति मन्द ।
बसत बिदेशहि जाय कै, बहुदिन लौं स्वच्छन्द ॥
अथवा भव भय भीतह्वै, तप ठानत बन माहिं ।
ताहि मोक्ष तौ मिलतही, नहीं किन्तु त्यहिकाहिं ॥
धर्म मार्ग विच्युति कर भारी ❋ होत घोरअघ दुर्गति कारी ॥
त्यहि निरुपाय सती के आनन ❋ कढ़तदीर्घनिःश्वाससबहिछन ॥
तिनसनत्यहिनरकहँदोउलोकन ❋ होत न श्रेय केर अवलोकन ॥
होत न यश यहिलोक मँझारा ❋ लहत नरक परलोक अपारा ॥
अर्धांगिनी सीय सुकुमारी ! ❋ तात आजते भई तुम्हारी ॥
जस गुण युक्त मनुजसँग नारी ❋ ब्याही सरला होहिं कुमारी ॥

वैसेइ गुणन गहहिं मृदुगाता * राम! स्मरणराखेहु यहबाता ॥
लोकसिखावन हितयहिब्याजा * रामहिं शिक्षा दीन्ही राजा ॥
पुनि निजसुता सिया सों ऐसे * बोले बचन मधुर मधु जैसे ॥
पुत्रि ! सुनहु रमणी गण केरा * कर्म उपनयन आदि न हेरा ॥

दो०-है बिवाह संस्कारही, उपनयनादि स्वरूप ।
पतिसेवा व्रत गुरु अहै, गुरुकुल वास अनूप ॥
बन्हि स्थापनसहृश गृह, कृत्य कियो अनुमान ।
जननी सनसुनिहौ अपर, निज कर्तव्य बिधान ॥
पुनि कामस्तुति पाठकहँ, कुल गुरुविधि सोंकीन ।
सूक्षम वस्त्र अच्छादि पुनि, बर अरुवधू नवीन ॥
लख्यो परस्पर त्यहि समय, मंगलमय जयकार ।
शंखगीत ध्वनि मोदप्रद, लागी होन अपार ॥
मृदु मृदंग मर्दल मुरज, दुन्दुभि भेरी नाद ।
संजीवित दशहू दिशन, करयो भरयो प्रतिनाद ॥
पट पहिरे प्रभु जानकी, शोभा यहि विधि होय ।
मनहुँ शरद घन मैं घिरे, पूर्ण चन्द्र हैं दोय ॥

कोटिशरद शशिशोभन सुन्दर * प्रियामुखारविन्दछबिमन्दिर ॥
नत मुख राम लाज बश होई * अँखियनलखत कनखियनसोई
कोकहिसकतप्रभु समयछहिछन * करतनइमि अनुमानमोदसन ॥
"सियमुखकरि आदर्श स्वरूपा * विरचि विरंचि पूर्णशशिरूपा ॥
मुख अनुरूप रूप न निहारी * बार २ रचिदेत बिगारी" ॥
एकबार केवल प्रभु आनन * निरखिजानकी;जनुछविकानन
मूँदिलिये लोचन छबिछाजे * बालवधू लाजहि लहि लाजे ॥
मनुसियमन, प्रभुमुख कीशोभा * शोभनसुधामधुर लखिलोभा ॥
निजहियमहँ करिकै अनुरागा * लैकरि ताहि लुकावन लागा ॥

आनन्दितचित सविधिविधाना ＊ यथासमयमहँ जनकसुजाना ॥
दक्षिणान्त पाठऽरु प्रदक्षिणा ＊ कीन्हीदीन्ही द्विजनदक्षिणा ॥
करि"कृतमिदं"आदिमन्त्रनकर ＊ उच्चारण भूपति तदनन्तर ॥

दो०—अच्छिद्रावधारण क्रिया, कीन्ही सविधिसमाप्त ।
बहुरि वशिष्ठ महर्षि वर, जिनकरयशजगव्याप्त ॥
कुशकण्डिका समाप्तकरि, योजक पावक केर ।
समिध वेदिकामहँ कियो, संस्थापन वह्निबेर ॥
अरु आहुति द्वारा कियो, प्रस्तुत प्राजापत्य ।
देव देव दानव दलन, मानव राज अपत्य ॥
धारा होमादिक महत, कर्मकाण्ड सविधान ।
सम्पादन कीन्ह्यो सकल, कुलगुरु कथन समान ॥
पंचदेव उद्देश मैं, पंचाहुति प्रभुदीन ।
पुनि"पाणिंगृहणामि"यह, मंत्रपाठ शुभकीन ॥
कंजगर्व गंजन बहुरि, जन मन रंजन मंजु ।
कंज मंजु कर महँ लियो, कोमल सियकर मंजु ॥
स्वमिदत्त घृत लैसिया, मातृदत्त लै लाज ।
चारबार आहुति दई, प्रजा पतिहि सहलाज ॥
बहुरि बरबधू दोउ मिलि, हवन अग्नि की कीन ।
प्रदक्षिणा त्रयबार तब, उपमा भई नवीन ॥
कैसुमेरुगिरि चारिदिशि, निशिदिनश्यामलगोर ।
बिचरि रहे कै राम सिय, पावक के चहुँओर ॥

बहुरि शिला रोहण कृतिनाना ＊ सप्तपदी गमनादि विधाना ॥
ध्रुव अरुन्धती दर्शन आछे ＊ कीन्ह्यो सकल हवन कृतिपाछे ॥
याहीविधि तिहुँ कुँअरन केरा ＊ भयो बिबाह कृत्य वहि बेरा ॥
राम बामदिशि जनककुमारी ＊ शोभित भई सुमन सुकुमारी ॥

लपटी ज्यों तमाल तरुतीरा * हेमलता अतिललित शरीरा ॥
नवदम्पति लखि जनक नृपाला * भेप्रमुदित मनयों त्यहिकाला ॥
समासीन यक आसन माहीं * ज्यों लक्ष्मीनारायण काहीं ॥
सागर सरिता रमण निहारी * भयो अनंदित हृदय मँझारी ॥
अरु दशरथहू के उर त्यहिविधि * उमड़िचल्योआनंदनीरनिधि ॥
ज्यों रोहिणी समेत निशाकर * लखिकै उमड़िउठत रतनाकर ॥

दो०–झुकि झाँकी झाँकी युगल, छवि छाकी सविवेक ।
दर्शक रमणी वृंद बिच, बोली रमणी एक ॥
जनक किशोरी केशनहिं, अवलोके जन जौन ।
चारु चमर चय की चहै, करै प्रशंसा तौन ॥
कह कामिनि कोउ रामके, चिकुरजाल तुलनाहिं ।
केकीकुलन कलाप है, एककला सम नाहिं ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

कह कोउ बैदेही बदन बिधु बिंब अवलोकन लहे ।
श्रीरामनैन चकोर निरखहु नृत्य कैसे करिरहे ॥
कह एक तिय–सियनैन हैं नलिनी हमारी जान में ।
श्रीराम लोचन भ्रमर तब तौ भ्रमत उनही में रमें ॥
बोली अपर एकनारि निरखहु सखि ! महीपकुमारको ।
अति स्वच्छ बक्षविशाल माहिं विहार मुक्ताहार को ॥
कैसो सुसोभित है ? मनौं अति नीलगिरि तटऊपरै ।
सित राजहंसनकेरि राजि विराजि केलिकला करै ॥
बोली अपर एहो अहो ! सियके नितंबन देखिकै ।
अस मोहिं जानिपरै मनौं मन्मथ जगत जय लेखिकै ॥
रथचक्र धरि दीन्हे किधौं जयदुंदुभी औंधीधरी ।
तदुपरि पुरन्दर सुन्दरी सुन्दर अपर पुर सुन्दरी ॥

बोली—सुनहु ममजान जानकि अंग कोमलकमलसे ।
बिरचे बिरंचि सुधाकरहि सों प्रभा सुन्दरसों लसे ॥
नतु दृष्टिपरतहि दर्शकनको तिनउपरिसखि ! साँचही ।
क्यों होत हैं पीयूषसिक्त शरीर, मन, तत्कालही ॥
दो०—नरनारी सामान्य सब, तब मन याहि प्रकार ।
युगलरूप तुलना करन, लागे मति अनुसार ॥
पै ज्ञानिन की दृष्टि में, दोऊ एकहि रूप ।
कृत्तिवास कहँ लखि परे, यहि उपमा अनुरूप ॥
एक ज्योति महँ दूसरी, ज्योति जबै मिलिजाय ।
तबतिनमहँ कछु भेदनहिं, काहू कहँ दरशाय ॥

चतुर्विंशोसततम् सर्ग ॥ १२४ ॥

रत्नवेदि पर चार कुमारा * सपत्नीक बैठे सुकुमारा ॥
अस अनुमानहोत लखिउनकहँ * मनहुँ अष्टसिधिसोहहिंमहिमह ॥
ज्यों मधुलोलुप मधुकर वृन्दा * तजियककमलकुसुममकरन्दा ॥
जाहिं अपर इन्दीवर पासा * त्योंदर्शकगण सहितहुलासा ॥
चारहु बर अरु बधू वृन्द कहँ * लखि अतृप्त ह्वै हर्षितमनमहँ ॥
पान करहिं उनकी मनभाई * सुधा मधुर तनु सुन्दरताई ॥
बाम भागथित नृपति कुमारी * सियामाण्डवी अतिसुकुमारी ॥
तिन सँग राम भरत दोउभाई * यह शुभ शोभा लहत सोहाई ॥
कनक रेख रचित ह्वै राजैं * युगलनिकष ज्यों सुषमासाजैं ॥
अरुऊर्मिला कुंअरि श्रुतिकीरति * उभय सुमित्रा तनयलहे पति ॥
दो०—गौरवर्ण दोउ कुँअर सँग, स्वर्णवर्ण दोउ बाम ।
सोहहिं ज्यों कञ्चन अचल, विजटितदामिनिदाम ॥

रैनि उजेरी महँ किरण, वेष्टित पूरण चंद ।
उदय भये; जैसे महा, सागर पाय अनंद ॥
निज तरंग मालान कहँ, वेलाभूमि मँझार ।
राखि सकै नहिं; बरबधू, छबिलखि त्यहीप्रकार ॥
नृपकुल चूड़ामणि नृपति, दशरथ-हृदय विशाल ।
रोंकिसक्यो न अनन्दको, बेग बिपुल त्यहिकाल ॥
जनकरानि इतनिजसुता, जामातागण काहिं ।
अन्तःपुर आनयन हित, व्यस्त भई मनमाहिं ॥

ऋषि वशिष्ठ अनुमति अनुसारा * तब बरबधू वृन्द सुकुमारा ॥
सुरपुर सुन्दर जनक निकेता * कियो प्रवेश सुवेष उपेता ॥
पुनि प्रत्येक मनोहर जोरी * हेरत हरत हृदय बरजोरी ॥
भिन्न २ कुट्टिम सुरलोभन * शोभितकियेजायअतिशोभन॥
उन अनुपम आगारन माहीं * बिविधशिल्पकौशलदरशाहीं ॥
इन्दुनील मणिमय कोउ सुन्दर * कोउप्रभात रविप्रभा मनोहर ॥
मोरपुच्छ छत्रन छबिछाये * रत्न खचितअतिही मनभाये ॥
यहिबिधिबिबिधबितानबिशोभित*जगमग करत भौनमणिमण्डित
कहुँ मरकत कृत स्तम्भ सोहाये * कहूँ फटिकबिघटितछविछाये ॥
कहुँ प्रबाल मणिमाणिक मुक्ता * रचितस्तम्भ श्रेणी द्युतियुक्ता ॥

दो०-पुष्पमाल्य सज्जित द्विरद, रदनिर्मित उनमाहिं ।
पद्मराग मणि जटित बहु, मण्डप मञ्जु लखाहिं ॥
कम्बल कोमल ऊर्णकृत, रचित बालमृग लोम ।
काञ्चन द्रव चित्रित रुचिर, बिछे बिछौना छोम ॥
दम्पति उपवेशन निमित, उन मन्दिरन मँझार ।
चामर दर्पण युक्त अरु, संयुत मुक्ताहार ॥
रत्न जटित अपूर्व बहु, अर्धचन्द्र आकार ।

सिंहासन सोहत सुमन, मण्डित भलीप्रकार ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

राजहिं सुवर्ण प्रदीप अरु मणिमय शिखा-तरुश्रीचही ।
सुरभित शिकथ कृत बर्तिका-मालाज्वलहिंसबठौरही ॥
निजसन सदन समुदाय दीप्ति सुवास संयुत ह्वरहे ।
मानहुँ मलयगिरि कीगुहानं महान शुभ शोभालहे ॥
उज्ज्वल सकल औषधि लता आलोक पुञ्ज पसारहीं ।
इत नारिवृंद निहारि दम्पति मोदमन विस्तारहीं ॥
सिंहासनहि आसीन सीतापति सिया सन्मुख सबै ।
कुलकामिनी पुष्पित लता कमनीय तनु ठाढ़ी तबै ॥
उनके कटाक्ष महामनोहर सुमनसम विकसित भये ।
फलसम लसत कांचन बरनकुच कंजछबिगंजन नये ॥
रामांग प्रति बिम्बित भये गृहगणखचितमणिजालमैं ।
अनुमान इमि मनमहँ करावत प्रभायुत त्यहिकालमैं ॥
सीताप्रियाके पूर्ण अवयव प्रभु निहारन कारनै ।
मनुकायव्यूह कियो सृजन मन माहिंउत्सुकत्यहिछनै ॥
नव बधूसिय समयानुसारहि लोक लाज निहोर सों ।
लोचन हटाय लिये मनोहर राम आनन ओर सों ॥

अरु इत उतं लागीं अवलोकन * पै इमि तन्मय भईं तौन छन ॥
नैन जाहिं जहँ, तहँ अभिरामा * राममूर्तिलखिपरहि ललामा ॥
यहि अवसर यकरसिका नारी * रामचन्द्र कहँ मौन निहारी ॥
बोली विहँसि-भये भयविह्वल * काहे रसिकराज तुमयहिथल ॥
हमैं आपनोई जन जानहु * बिलग ननेकहृदय महँमानहु ॥
निज गुणगणकछुकरो प्रकाशा * पूर्णकरहु सबकी अभिलाशा ॥
बचन हीन जड़ प्रतिमा काहीं * हमसब आईं निरखन नाहीं ॥

तब प्रभु बिहँसि मधुरि गंभीरा * बोले इमि घनश्याम शरीरा ॥
मोहिं सहृदयता माहँ तुम्हारी * नहिं सन्देह नेक सुकुमारी ! ॥
पै केवल यहि हेतुहि हेरे * धीरधरिसकहिंक्यहिबिधितेरे ॥

दो०–यदपिअनिल है अनलकर, सुहृद सहायक ख्यात ।
तदपि दीप पावक लखहु, क्षुद्र सपदि बुझिजात ॥
त्योंतुम सँगममसम परम, क्षुद्र व्यक्ति सुकुमारि ! ।
सरबर कैसे करिसकै ?, हेरहु हिये विचारि ॥
चतुरनारि उत्तर दियो, हे गुणमणि रघुराज ! ।
युक्ति युक्त यह उक्तिनहिं, तवशंका बिन काज ॥
भला कमल दलहू कबहुँ, अलिहि सतावत जाय ।
सदा अलिहि अरविंद कहँ, छेड़त है तहँ आय ॥
राम कह्यो केवल अहै, यह भ्रम सखि ! बिनमूल ।
अलिनलिनी करभिषकहै, चिर अनुगतअनुकूल ॥
जासों अलि अतियत्न सों, रसाधिक्य अपसारि ।
विगत ज्वर करि देत है, नलिनीकहँसुकुमारि ! ॥

राम वचन सुनि सो सुकुमारी * बोली बिहँसिअहो बलिहारी ॥
जानि परत अस मोहिं तुम्हारी * है कछु दृष्टि निदान मँझारी ॥
बोले कोशल ईश किशोरा * बिहंसि हेरिरमणी की ओरा ॥
हे सुन्दरी ! निदानहिं माहीं * केवल हमहिं एक दरशाहीं ॥
चतुर्मुखहि हमही उपजायो * चारयुगन कर चूर्ण बनायो ॥
हाथ हमारे रहत सदाबर * गंगाधर चूरण अति सुन्दर ॥
और ठौर महँ देखन काहीं * मिलै सुदर्शन चूरण नाहीं ॥
जय मंगल हमहीं सुकुमारी ! * सब कहँ देहिं परम सुखकारी ॥

दो०–मकरध्वज मम शिष्य के, अहै व्यवस्थाधीन ।
शिवदा संजीवनि हमहिं, प्रकट जगत महँ कीन ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

सर्वांगसुन्दर जो चहौ तौ मम कृपा ते सुलभ है।
कल्याण तौ हमदेहिं जो जग मैं महादुर्लभ अहै॥
कहुँऔरचिन्तामणिमिलैनहिंसकलचिन्ताजो दहै।
त्यों नित्त्य नित्त्यानन्दरस केवलहमहिंसोंप्राप्तहै॥
सुकुमारि! योगानन्द पूर्णानन्द सृष्टि हमारही।
निर्मित कियो मैं योगराज न झूठ यामैं मैं कही॥
अभया हमार अमोघभक्तिविशेषकाहकहौंधनी!।
ठहरै न यक पलहू निकट मेरे विकार अनीघनी॥
यहसुनिकह्योयकचारुहासिनिविहँसिहर्षित ह्वैहिये।
तवगुणगणनकीकौनआननसनप्रशंसा कीजिये॥
हौ तुमगुणी सन्देहनहिं त्यहिकरप्रमाणअहैयही।
कीन्ह्योजनकतनयाबिवाहहिविश्वमहँकीरतिलही॥
सुकुमारि नारि हँसी ठठाय अनन्दसोंयहसुनिसबै।
यक और तिय पूर्वोक्त रसिका सों कह्यो ऐसेतबै॥
इनकेजनकजा सँगबिवाहकियेकहा विस्मयगहो?।
यहतौस्वयंअजकुलतिलकहैंहीं चतुरपदधरअहो!॥
अरुआपनीकुलरीति के अनुसारभगिनी आपनी।
यकशृंगिकहँब्याहिबहुरिबहुहँसीयहसुनिसबजनी॥

दो०-तब प्रभु हँसि बोले सुनहु, तुम भूलहु सब बाल।
जो हम मैं अजशक्ति नहिं, होती तौ यहिकाल॥
अजगव पीड़ित तव सखी, सुमुखीकर प्रतिकार।
हम कैसे करि सकत? तुम, मनमहँकरहु विचार॥
अरु जो तुम्हरे जनक की, सुता सियासँग ब्याह।
कीन्ह्यो हम तौ डाहकर, तुम्हरे कारण काह?॥

यह सुनि बोली नागरी, सुनहु महीप कुमार ! ।
यहि महँ ईर्षा केर कछु, कारण नहीं हमार ॥
पै बलिहारी आपकी, प्रबल ढिठाई केरि ।
जो मिथिला महराजकर, अस दारुण प्रण हेरि ॥
राज कुमारी लाभ के, लोभविवश निश्शंक ।
मिथिलहि आये आप ज्यों, रत्नलाभ हितरंक ॥
पै यदि तुम्हरे भाग्य ते, पीन पिनाक पुरान ।
अतिशय जीर्णनहोतकहुँ, तौ रघुनाथसुजान ! ॥
अजकुल आननकहहुकिमि, होतऊजरो आज ? ।
व्यंग्य बचन यह सुनि बिहंसि, बोले श्रीरघुराज ॥

सत्य कहहु तुम सब सुकुमारी * पै निज मनमहँ लेहुविचारी ॥
धारे तृण भक्षण की आसहि * संकट पूर्ण विकट बन पासहि ॥
गमन करनमहँमृग कब डरहीं? * सोतहँजाय अवशितृणचरहीं ॥
एक नारि यहि अवसर माहीं * लै कर महँ यक दर्पण काहीं ॥
प्रभुमुख सन्मुखकरि मृदुबानी * बोली मधुर सुधारस सानी ॥
नर नागर! यहि माहँ निहारी * पक्षपात तजि कहहु बिचारि ॥
हमरी सखी स्वरूप अगारी * कछु गणना ह्वैसकत तुम्हारी ॥
तब हँसि कह अवधेश कुमारा * अतिअद्भुत यह प्रश्नतुम्हारा ॥

दो०—भला कलानिधिमुखी ! तुम, कहयह जानहुनांहिं ।
निर्मल नलिनीसामुहे, अलि क्यहि गणना माहिं ॥
मनहर नलिनी माधुरी, कहँ को जानत नाहिं ।
ज्यहि महँ ह्वैआसक्त अलि, वारत तनुमन काहिं ॥
मधुकर कमलिनि करअहै, चिर अनुगत निरुपाय ।
कहुँ षटपद करि सकत है, शतदल की समताय ॥
तदनन्तर यक रसवती, युवती गहि प्रभुहाथ ।

हँसि २ लागी कहन इमि, अहो२ रघुनाथ ॥
धनुष भंग व्यापार निहारी * भइ शंका हमरे मनभारी ॥
का तुम्हरे कर कुलिश कठोरा * ह्वै हैं जिन दारुणधनु तोरा ॥
पै अब अवलोके सुखकारी * कमल कलीकोमल मनहारी ॥
रामचन्द्र हँसि कह्यो बहोरी * सुनहुसुमनसुकुमारिकिशोरी ॥
बहु पदार्थ विधि कृत जग माहीं * जे कठोर अति जाने जाहीं ॥
पै परसत उनके अति शीतल * होय जात इन्द्रियमन हीतल ॥
यही भाँति चहुँ कुँअरन संगा * करहिं सकलतिय हास्यप्रसंगा ॥
ज्योंअतृप्त मनलहि यक वांछित * अन्य कामना कहँ धावतनित ॥
दो०–त्यों रमणी गण प्रति क्षण, चहुँ कुँअरन के पास ।
गमना गमन करैं करत, उन सँग हास विलास ॥
यों आमोद बिनोद मैं, निशा महूर्त समान ।
सब अति वाहित ह्वै गई, प्रात समय दरशान ॥
सुधामधुरज्यहि भावकर, पूरण रूप विकास ।
भयो कृष्ण अवतार महँ, त्यहि करकछु आभास ॥
हरिजनमनरंजन निमित, हरिजनकबि कृतिवास ।
निजमतिगतिअनुसारही, यहिथलकियो प्रकास ॥

पंचाविंशोत्तरशततम सर्ग ॥ १२५ ॥

अरुणोदय अरुणाई राची * भई प्रकाशित प्रातहि प्राची ॥
प्रात समय लखि आनँद मानी * बोलन लगे बिहगबहु बानी ॥
प्रकृतिहि मनौं जगावन काहीं * मागधवन्दिकरतस्तुति आहीं ॥
क्रमशः सब प्रकाश आकासहि * छायगयोकरिबिमलबिकासहि ॥
रजनी तिमिर मुक्तनभ मण्डल * देखिपरयोसुनीलअतिउज्ज्वल॥

देव दिवाकर तेज निधाना * जगत प्रकाशक रत्नसमाना ॥
अब लगि मँजु मंजूषा माहीं * पिहिते हते सोअब जगकाहीं ॥
करत प्रकाशित भये बहिर्गत * अस अनुमानहोत उरअवगत ॥

दो०—निद्रित नर नैनन सहित, सकल कमल दल प्रात ।
भे उन्मीलित भानुभा, भासित लहि मृदुबात ॥
कार्यशाल नरदल सदृश, सूर्य किरण सब ठाम ।
व्याप्त होन लागीं क्रमहि, करत आपनो काम ॥
सकल समागत सुन्दरी, राम बिछोह बिचारि ।
भईं कुमुदिनीसम मलिन, नलिनमुखी सुकुमारि ॥
यहि अवसर महँ आयकै, रानीसन कर जोरि ।
यों दासी बोली बचन, सुनहु स्वामिनी मोरि ॥
कहि पठयो यों कुलगुरु, शतानन्द भगवान ।
कै" दशरथ नरनाथनिज, नगरहि करत पयान ॥
कुअरन के आगमन की, यासों निरखत राह" ।
यह सुनि रानी सत्वरहि, चारहु कुँअरन काँह ॥
निकट बोलाय असीस दै, सीस चूमि उन केर ।
बिदा किये अति प्रेम सों, अवध कुँअर वहिबेर ॥
माला सूत्र वियोग ते, मुक्ता एकहि एक ।
पृथक२ ह्वै जात ज्यों, त्यों स्त्रीगण प्रत्येक ॥

श्रीरघुनाथ बियोग निहारी * निज२ सदन गईं सुकुमारी ॥
इत दशरथ कोशल नरनाथा * चारहु कुँअरन कहलै साथा ॥
सहित बरातिन जनवासे महँ * आयेलौटि लखतपुरछबिकहँ ॥
भोजन बिबिध बरातिन केरे * भोजननिमित सुस्वादु घनेरे ॥
मिथिलानाथ जनक नरपाला * बनवावन लागेत्यहि काला ॥
नृप निदेशलहि त्यहिअनुसारा * सूपकारगण निपुण अपारा ॥

बिविध भोज्य सामग्री सुन्दर * प्रस्तुत करन लगे बर हरबर ॥
स्वयं महारानी मन लाई * कार्य निरीक्षण करहिं तहाँई ॥

रामगीती छन्द ॥

धधकन लगे उद्धान शत२ पाक शालामाहिं ।
मनुदेव पावक धारि कै अगणित शरीरन काहिं ॥
भे अग्रसर स्वयमें वरंधन कार्य महँ सउमंग ।
यहि दिशिकुशध्वज मंत्रिवृद्धप्रधान सचिवनसंग ॥
मिथिलेश के आदेश सों दशरथ निमन्त्रण हेतु ।
गवने जनवासहि सहितहितचिन्तकन कुलहेतु ॥
कोशल नृपतिसादरकुशध्वज जासोंमिले हरषाय ।
पुनिनिजनिकट सिंहासनहि तिनकहँलियोबैठाय ॥
बोले बहुरि अवधेशयों मिथिलेश कर अब कौन ।
आदेश है ? मनुजेश ! हमसों कहिय सत्वर तौन ॥
वैदेह प्रेषित वहु उपायन दै कुशध्वज भूप ।
सविनय कहन यहिभाँति लागेसुनहु कोशलभूप! ॥
ज्यों आप अपने दर्शननदै और करि सम्बन्ध ।
हम दोउ वंधुनकहँ कृतारथ कियो धन्य सगन्ध ॥
त्यों अपने उच्छिष्टसों हमरे सदन कहँ आज ।
कीजै पवित्र पवित्रपद कोशल नगर नरराज ॥
यहसुनि कह्यो हँसिकै हँसा सों हर्षिहिय नरपाल ।
यह तौ कही मनकी हमारे बात तुम यहिकाल ॥
जिन समधिनिन के दर्शननकी लालसाहमकाहिं ।
है खैंचिलाई अवधपुर सों जनक नगरी माहिं ॥
दो०—उनकर परिचय पाइ हौं, अरु उनही के साथ ।
भोजन लाभहु होइ है, मिथिला नगरी नाथ ॥

पुनिसमुचित सन्मानसन, दशरथ भूप उदार।
कुशध्वजहि किन्ह्योबिदा, प्रमुदित हृदय मँझार॥
पुनि मध्यान्ह काल महँ भूपा * चारकुमार समेत अनूपा॥
कुलगुरु ऋषि वशिष्ठ अरुऔरहु * ब्रह्मकल्प ब्रह्मर्षि बृन्द बहु॥
और निमंत्रित नृपगण साथा * जनक भवनगवने नरनाथा॥
इत राजर्षि जनक सउमंगा * मंत्रि बंधु बांधव गणसंगा॥
आदर सहित महा मुद मानी * ले सत्त्वर दशरथ अगवानी॥
लाप सुसज्जित सभाभवन महँ * बैठायो समुचित थलसब कहँ॥
दो०—तब आमोद प्रमोद अरु, वार्तालाप विलास।
करन परस्पर सब लगे, बिविध हास परिहास॥
यथा समय महँ कुशध्वज, कह्यो विनययुत आय।
प्रस्तुत है भोजन चलहु, राजराज नर राय!॥
तब दशरथ नर नाथ लै, कुँअर नृपति मुनि साथ।
गवने भोजन भवन महँ, देव गीत गुण गाथ॥
वह विशाल शाला छवि छाजी * रहि राजीवराजि सों राजी॥
सुमन माल्य सज्जित सब ठामा * लज्जित करत सुरेश्वर धामा॥
मृगमद अगुरु उशीर सुवासित * भासितज्वलित कपूरप्रभासित॥
भीतर भूमि सितासित निर्मित * मर्मर प्रस्तरखण्ड विमण्डित॥
त्यहि पै चित्र विचित्र बिछाये * कोमल कम्बल लसतसोहाये॥
सो सुन्दर बहु आसन पाँती * शोभमान शोभन यहिभाँती॥
मनु मंजुल मखमण्डप माहीं * सुरगण के आवाहन काहीं॥
चक्र सर्वतोभद्र सोहावन * अरु लिंगतोभद्र अतिपावन॥
वास्तु योगिनी आदिक नाना * स्थापित किये गये सविधाना॥
रत्न रचित स्तम्भावलिदरसै * मणिमय भवनभित्तिछबिसरसै॥
कारु कार्य मण्डित पटमण्डित * अद्भुत शोभालहत अखण्डित॥

देवन के मन जाहि निहारी * होत विमोहित विस्मयधारी ॥

दो०–पै ज्यों तारागण सकल, हिमकरकीद्युति पाय ।
अधिकहोत भासिततथा, मणि माणिक समुदाय ॥
चारहु कुँअरन केर लहि, ब्रह्म ज्योति आभास ।
भये विभासित भूरि भे, अद्भुत करत प्रकास ॥
जब प्रभु भाइन सँग भये, पिता पास आसीन ।
तब अद्भुत शोभा यही, उलही निपट नवीन ॥
पूर्ण चन्द्र अरु तारका, प्रति बिम्बित रमणीय ।
स्फटिक शैल उज्ज्वल मनौं, शोभमान कमनीय ॥
यहि अवसर यक कंचुकी, अन्तः पुर सों आय ।
मिथिला पति सों यों कह्यो, मधुरेस्वर शिरनाय ॥
रनिवासहि गवनहि कुँअर, चारहु भोजन काज ।
महरानी की कामना, यहै अहै महराज ॥
तब दशरथ नरनाथ की, आज्ञा के अनुसार ।
कियों गवन अन्तःपुरहि, चारहु राजकुमार ॥

चारुहासिनी अति सुकुमारी * धेरि कुमारन कहँ पुरनारी ॥
अन्तःपुरमह चलीं लेवाई * त्यहि छन यहउपमा मनआई ॥
बिविधछन्दमम ऋचाविमण्डित * चारवेद मनु लसतअखण्डित ॥
सहित सनेह जनककी रानी * चारहु कुँअरन कहँ मुदमानी ॥
अति विचित्र मृदु आसनमाहीं * बैठायो गहि कोमल बाहीं ॥
लगीं करावन सुन्दर भोजन * परसि आपने करसह व्यंजन ॥
जानि परयोतब मनहुँ सनेहा * भयो प्रकट धरि रमणी देहा ॥
धन्यभाग्य मिथिलापति केरा * अद्वितीय त्रिभुवन महँ हेरा ॥

दो०–जौन जनक केभक्तिवश, बिवशहु यज्ञपति आय ।
भवनमाहँ भोजन करं, आज प्रकृत नरन्याय ॥

भोजन भयो अरंभ इत, सकल बरातिन केर।
सूपकार सुचतुर लगे, परसन यों वहि बेर॥
कनक कटोर कटोरिका, रतनजटित सोहाहिं।
रजतरचित भाजननमहँ, भोजन यह दरशाहिं॥
खाण्डव खोवा खीर मधुरतर * पिष्टपाक परमान्न मनोहर॥
कृशराकुण्डलिका निष्यन्दन * मधुक्रोडा मण्डक मनभावन॥
चूलिक सतक फेनिका पूरी * त्यों कूष्माण्ड बटी छबिरूरी॥
दुग्धसार मोदक मन लोभन * सरसमर्जिता अतिशयशोभन॥
बहु कर्पूर नालिका नीकी * बिमलबरन मनुपगीअमीकी॥
बर घृतपूर कपूर बसाए * यहिबिधिबहु पकवानसोहाए॥
बार्ताकी कर्कारु अनूपम * सिम्बिपटोल अलावू उत्तम॥
मधुसूदनी प्रसादक आलू * सुधावास कर्कटी रतालू॥
दो०—कारबेल्ल कोशातकी, बृहत्फला स्वादिष्ट।
बज्रकन्द आदिकअमित, व्यंजन नाम विशिष्ट॥
नारिकेल सुफला लकुच, सुफल रसाल रसाल।
आरुक पनस विचित्रफल, मुकुलक अलुक ताल॥
तूनतूद्र निम्बुक सरस, अक्षोटक नारंग।
शुक्रप्रिया रम्भा मधुर, जम्बू और कलिंग॥
आतृप्यादि अनेकफल, पञ्चसार दधि दुग्ध।
पानक आदिक पेय जो, करत देव मन मुग्ध॥

रामगीतीछन्द॥

काशंदि अवलीढ़ादि बहुविध लह्यो वस्तु अनन्त।
जनबृन्द आगे भाजनन भोजनधरे रसवन्त॥
भोजन समय अवधेश दशरथ पाकरचना केरि।
लागेप्रशंसा करन अतिशय जनकनृपदिशिहेरि॥

मृदुहँसिजनक नृपयोंकह्यो अवधेशसोंत्यहिकाल ।
यहकार्य सम्पादन कियो समधिन तुम्हारिनृपाल ॥
यहसुनिकह्यो दशरथसुन्यो हमजोप्रथमनरराज ।
स्त्रीशक्तिही मिथिलापुरीमहँ है प्रधान सु आज ॥
प्रत्यक्षदेख्यो निजनयन मिथिलापुरी महँ आय ।
यहसुनि जनकउत्तर दियोंअवधेशकहँ मुसकाय ॥
तुम्हरोकथन यह कोशलेश नरेश सत्य अशेष ।
पै औधहू महँ है न परिचित पुरुषशक्ति विशेष ॥
जासों तुम्हारेसम गुणी पुरुषार्थि कहँ निरुपाय ।
लेनहिपरयोआश्रय लखहु मखक्षीरकरनरनाय ॥
यहि भाति दोऊदिशि परस्पर होत हास विलास ।
भोजन अनन्तर आचमन कीन्ह्यो सबन सोल्लास ॥

दो०—पुनि लवंग एला प्रभृति, सौरभयुत ताम्बूल ।
दीन्हे जनकानुज सबन, लोकरीति अनुकूल ॥
पुनिमुनिनृप वेष्ठितनृपति, लै सँग चारि कुमार ।
ह्वै विदेह नृपसों बिदा, आये शिविर मँझार ॥
नित२ नवसत्कार लहि, यहि प्रकार अवधेश ।
नव उत्सव निरखत रहे, कछुदिन मैथिलदेश ॥
चहूँओर ते जल गिरे, यथा जलायश माहिं ।
उठत अनन्त तरंग चय, कौतुकमंग दरशाहिं ॥
आनन्दोत्सव वीचि बहु, जहँ तहँ मिथिला माहिं ।
तथा निमन्त्रितनरन के, आवन ते दरशाहिं ॥

अद्भुतविभव विशोभित सगरी * प्रभुनिवासते मिथिलानगरी ॥
अन्तर अमृत युक्त सागर सम * देवगणन कहँ भई मनोरम ॥
एक दिवस दशरथ नरपाला * कहे जनकसन वचन रसाला ॥

महाराज मिथिलेश सुजाना * करनचहौं मैं अवध पयाना ॥
यासों हमैं प्रीति सों आजू * करहु विदा बिदेह नरराजू ! ॥
भयोभम यह सुनि नृप केरा * सुखमय स्वप्नमनौं वहिबेरा ॥
मुख विषाद की छाया छाई * बोले दशरथसन नरराई ॥
आप कहहु यह कहा कृपाला * हृदयबिदारक वचन कराला ॥
दो०—करिन सकहुँ छग ओट मैं, प्राण प्रिया सियराम ।
नयन पूतरी दोउ मम, जीवनतरी ललाम ॥
कोशलपति बोले बहुरि, लखहु बिचारि नरेश ! ।
हम दोउ महँ यककहँ अवशि, ह्वै हैकछुककलेश ॥
उत सुत मुख देखे बिना, रामजननि दुख पाय ।
अतिव बिकल ह्वै हैं सकल, गृह के कृत्य विहाय ॥
अरु ज्यों सीताराम की, युगल मूर्ति अभिराम ।
आप लोग लखि २ करहु, पूर्ण अपनमन काम ॥
सोई वासना अवधपुर, वासिन के मनमाहि ।
पुरवहुनिजकर्तव्यगनि, निमिकुलमनि तुमताहि ॥
कछुदिन पाछे निज सुता, जामाता गण काहिं ।
तुम बोलाय लीन्हेउबहुरि, मिथिला नगरी माहिं ॥
रामबियोग क्लेश की शंका * करहुननिमिकुलकुमुदमयंका! ॥
जासों गुणमणि राघव केरा * है अद्भुत गुण यह हम हेरा ॥
उनप्रति प्रेमकरत जन जोई * सबथल लखत उन्हैं नर सोई ॥
क्षणिक मोह मिथिलापतिकेरा * यह सुनिभयो दूर वहिबेरा ॥
तव बिदेह बैदेहि बिदाहित * करनलगेआयोजनस्थिरचित ॥
जनकअमात्य यथोचितकार्यन * करनलगे उद्योग त्यही छन ॥
दो०—यह सम्बाद विषादमय, हृदय कँपावन हार ।
पवन प्रचालित तीक्ष्णतर, कटुक गंध अनुहार ॥

पसरि गयो सब नगर महँ, यहिदिशिविश्वामित्र।
गन्यो निजहि कृत कृत्य लखि, रामबिवाहचरित्र॥
तब बिदाय अवधेश अरु, जनक राज सों लीन।
पुनि चारहु कुँअरनसफल, शत २ आशिषदीन॥
उत्तर पर्वत कहँ बहुरि, गये हर्षि ब्रह्मर्षि।
कृत्तिवास कवि कहतइमि, हे मुनिराज महर्षि!॥
पूर्णशक्ति अरु पूर्णप्रभु, दोउकर परिणय काज।
भूमिभार संहारकर, पर्यो बीज सम आज॥
तव त्रिलोक मंगलकरण, यहि यशतुलनामाहिं।
ब्राह्मण पदकर लाभ तव, मोहिंअतितुच्छलखाहिं॥

षटविंशोसततम सर्ग॥१२६॥

दो०—एरे मेरे चित चपल!, अति अनुराग बढ़ाय।
अमृत लाभ के लोभते, अबलगि तू असहाय॥
प्रभु अचिन्त्यको अपरिमित, लीला उदधिमँझार।
करत रह्यो सन्तरण पै, पैहै अब तू पार॥
त्यहि अपार जलराशि की, दुस्तरतरल तरंग।
तिन सौरहु निर्भय भले, जासों तेरे संग॥
जगत तारिणी जग जननि, नित्यशक्ति पदपद्म।
रहि हैं तरणी सम अभय, अब ते दोउ शुभसद्म॥

रे मानस रसना रसनेही ❋ देह हीन देही बैदेही॥
दोउन केर मिलन रस पाना ❋ जियभरिकरु तूसुधासमाना॥
आज बरबधू वृन्द बिदाकर ❋ अहैदिवस मिथिलाविषादकर॥
भयोप्रभात प्रभा विस्तारत ❋ पुरजनकर सुखस्वप्ननिवारत॥

ज्यहिविधि हृदयबिवेकप्रकासत * सकल बासना जालविनासत ॥
त्यों अरुणोदय भये अकाशा * तत्क्षणभयो निशातमनाशा ॥
भयेभूरि कर निकर पसारी * उदय शैल पै उदय तमारी ॥
उदयाचलकी बिमल मनोहर * तुंगशृंगश्रेणी अति सुन्दर ॥

दो०—सहस २ रविरश्मिभा, भासित यों दरशाहिं।
मनु पसारि निजकरनिकर, सूर्यगहे गिरिकाहिं ॥
क्रम २ कछु रबिकर परसि, मृदु प्रभात करबात।
तप्यो सोई शीतल किये, हिमकणले पन गात ॥
गयो चलन दशहूदिशा, निशाक्लान्तिकरिशान्त।
करतप्रफुल्लितललितछबि,नलिनकलिनअतिकान्त॥
ज्यों हिमन्त के अन्तमहँ, तरु अरु लतावितान।
जीर्णशीर्ण ह्वै जात हैं, शोभाहीन महान ॥
त्योंमिथिलाकी भइदशा, शिथिलविशुष्कविकास।
हास विमुख मुख नगर नर, दासी दास उदास ॥

शोभाबिभव सम्पदा सुन्दर * नरनारिनकीभीर अधिकतर ॥
सबहि अहै पहले की नांई * पै सब छबि बिहीन दरशाई ॥
मंत्रि सभासद सचिव समेता * बहुविभागमय राज निकेता ॥
मनौं विषाद दृश्यमय चित्रित * देखिपरतयक चित्रविचित्रित ॥
सन्ध्या वन्दन करि नर नाथा * मंत्रिपुरोहित सचिवन साथा ॥
सभा भवन महँ जाय मलीना * भये स्वर्ण आसन आसीना ॥
काहू के मुख वचन न निकसत * भये सभासद निश्चलयावत ॥
जानिपरत जनु जनक राजके * प्रकृत मनोहर बर समाज के ॥

दो०—परिवर्तन महँ एक जड़, लिखित चित्रपटमात्र।
अहै अवस्था पित सहित, परिष्द परिषद पात्र ॥
गुरु गभीर स्वर सों उचित, देशकाल अनुरूप।

कछुछन बीते यों कह्यो, सभासदन सों भूप ॥
हम कहँ सब कोउ कहत है, जग महँ जीवन्मुक्त ।
सोइ उपाधि अब होय है, उचित अर्थ संयुक्त ॥

रामगीती छन्द ॥

ज्यहि हेतु सीताविरहरूप कठोर घोर कुठार ।
करि छिन्न यहि छन आज सत्वरप्राणग्रंथिहमार ॥
करि देइ है हम काँह जीवन पाश मुक्त अवश्य ।
पै रामसियकर ब्याह है निश्चय बिबुध गणवश्य ॥
यहिकर प्रमाण अहै अलौकिक काज हरधनुभंग ।
यहिहेतुलौकिक शोक है अनुचितअलौकिकसंग ॥
यासोंबिलम्ब बृथा न करि यहिसमयमहँहमकाहिं ।
है योग्य होब प्रवृत्त तनया बर बिदाकृति माहिं ॥
अवधेश दशरथ भूप कहँ सविनय सहित सत्कार ।
लावहु सचिवमन्त्री समेत सभानिकेत मँझार ॥
मिथिलेश केर निदेशलहि मन्त्री अमात्यप्रधान ।
अवधेशके शिविरहिगये शुभशीलन्यायनिधान ॥
सविनय वचनसन जनक की इच्छाजनाई जाय ।
सोसुनि परम हर्षित भये कोशल नगर नरनाय ॥
वैकुण्ठश्रीके श्रीचरण रजकण विरजसों भूप ।
साकेत धरणिहि धन्यकरिवे हेतु देवस्वरूप ॥
सुतरूप चारि शरीरधारी जगजनक के साथ ।
रथचढ़ि चलेनृप जनकके मंदिर अवध नरनाथ ॥
बहुबीर भूप अनूपरूप महाप्रबल बलधाम ।
अरु तत्वदर्शी ऋषिमुनिनकी मण्डली अभिराम ॥
वेदार्थविद कोविद तपोनिधि ब्राह्मणन के वृंद ।

सौम्य प्रकृति मन्त्रीनिचय अन्यान्य जनसानंद ॥
पूजन जनककर लेन कहँ अवधेश के पश्चात ।
रथबाजि गजचढ़ि राजपथ कंपितकरत सबजात ॥
दो० –जनकोलाहल शंखध्वनि, दुंदुभि भेरी शब्द ।
मिलिथापुर महँभरिगयो, होनलग्यो प्रति शब्द ॥
प्राणहीन निश्चेष्ट स्थिर; पुर नाटिका मँझार ।
बहुरि होन लाग्योमनहुँ, रुधिर केर संचार ॥
बिविध भाँति सादर सन्मानी * लीन्हीजाय जनकअगवानी ॥
सहित बरातिन कोशलपतिकहँ * गए लेवाय सभा मंदिर महँ ॥
यथाउचित आसन बैठाई * सविनय कह्योजनक नरनाई ॥
सात्विक शील सकलगुणपूरण * ब्रह्मरूप ब्रह्मर्षिन के गण ॥
अरु नरेन्द्र कुलतिलक यशस्वी * महानुभाव सकल तेजस्वी ॥
यदि उपकरण देव दुर्लभ वर * प्रस्तुत होत सकल हमरे घर ॥
और आप सबकर मैं उनसन * ह्वै प्रसन्न करिसकतेउँ पूजन ॥
तऊ होत नहिं योग्य तुम्हारे * पै यह दृढ़ विश्वाश हमारे ॥

नरिन्द छन्द ॥

जल जंतुनकी चपल चाल सों ज्यों जलनिधि गंभीरा ।
क्षुभित न होत गनत नहिं उनकी चंचलता अतिधीरा ॥
त्यहिविधि भई भूरि त्रुटि हमते तदपि आप मतिमाना ।
करिहौ कृपा हमारे ऊपर धारे भाव समाना ॥
यहसुनि पुनि मुनिगण जनकहि कहिसाधु२ त्यहिकाला ।
बोले वचन द्व्यर्थ संयोजित कोमल रुचिर रसाला ॥
हेराजर्षि जनक सुनिये 'जो क्षीर नीरनिधि काहीं ।
मिल्यो अतुल यश श्रीकहँ दै कै श्रीपति के कर माहीं ॥
निज आयो निजा धन्या कन्या ज्यहिसम अन्या नाहीं ।

दै रघुबर कर त्यहिकर कर तुम लह्यो सोइ यशकाहीं ॥
हमसब देहिं सफल आशिष तव जामाता ध्रुवधामा ।
रामनाम अभिराम बाम छबि श्यामल लोक ललामा ॥
कमलारूप सुता सीता तव राज्य सम्पदा पाई ।
जगत अमंगल दूरि करैं दोउ मंगल मुद सरसाई ॥
अपरापर द्विजगणन तदनु अनुमोदन यहिकर कीना ।
तब दशरथ सों कह्यो विमलयश शोभित जनक प्रवीना ।

दो०—महाराज ज्यों कोउनर, महा मूल्य निधिपाय ।
यहिप्रकार चिन्ता करत, निज मनमाहिं सदाय ॥
"कौन सुरक्षित ठौरमहँ,राखहुँयहिनिधिजाय?" ॥
सोइ चिन्ता हमकहँहती, अबलौं हे उरुगाय ! ॥
ममजीवननिधिजानकी, भइ तुम्हरे अधीन ।
भयोआजयहकाजकरि, अब मैं चिन्ताहीन ॥

यहसुनिकह्यो विहँसि अवधेशा * सुनहुसुजानजनकमिथिलेशा॥
तुमधन धरयो धरोहर जोई * रहिहै सदा तुम्हारहि सोई ॥
पै त्यहिके अपूर्व गुण गणसन * अपर रत्न यक दुर्लभ दर्शन ॥
रामनाम अभिराम कुमारा * भयो आज ते सोउ तुम्हारा ॥
अब बिचारकरि तुमहि नरेशा! * कहहुभयो क्यहि लाभविशेषा ॥
सभा भवनमहँ दोउ नृपसत्तम * वार्तालाप करत इमि अनुपम ॥
अन्तःपुर अन्तर इत रानी * पुरनारिन समेत मुदमानी ॥
चारहु कन्यन लगीं सिंगारन * पट भूषण सब अंग सँवारन ॥

दो०—स्नानसमयजगजननिके, अलकनजलकन पाँति ।
शोभमान लखिहोतहिय, अनुभव नवयहिभाँति ॥
मनौं गगन महँ ह्वै रह्यो, घन घन उल्कापात ।
व्यालबालअगणितकिधौं, मणिगणउगिलतजात॥

कनक लता ऊपर उदित, निष्कलंक शशि न्याय ।
चारु अंगयुत श्री बदन, शोभाशुभ दरशाय ॥
जपापुष्प गर्भित अमल, कमल कुसुम अनुरूप ।
अरुण अधरधर जानकी, आनन लसत अनूप ॥
मधुलोलुप मधुकर बधू, सदृश श्याम अभिराम ।
सोहत दृगतारा उभय, कछुक चपल छबिधाम ॥
कंजगर्ब गंजन भयो, खंजन भये अचैन ।
अंजन रंजन जब लह्यो, जनरंजन दोउ नैन ॥
तब अनुभव यहउर भयो, मानहु चपल चकोर ।
कोऊ दोऊ संयत किये, कज्जल रेखा डोर ॥

भ्रभंगिमा निरखि भ्रम व्यापा * मानहुँ मन्मथ के युग चापा ॥
नील विष्णुकान्ता कुसुमन सन * अहैंविमण्डित अतिहीशोभन ॥
सूक्ष्मवस्त्र अच्छादित नीकी * गौरकान्तित्रिभुवनजननीकी ॥
यों सोहत ज्योंहिमचय मण्डित *कनककमलकमनीयसुशोभित॥
बार २ सरसावत सुषमा * अञ्चल खसतलसत यहउपमा ॥
मनहुँ शरदघन बारंबारा * अपसृत होत पवन के द्वारा ॥
मेरु शृंगयुग त्यहि छनमाहीं * अर्ध प्रकाश करत दरशाहीं ॥
निहित बक्षथलमहँ छबिछाजी * रोमराजि यहिभाँति बिराजी ॥

दो०—गरुड़चंचु सम नासिका, लखि नागिनी डेराय ।
मनहुँयुगलगिरि संधिमहँ, लुकायित भइ जाय ॥
सुन्दर सिंदुर बिंदु रुचि, रंजित मुख पश्चात ।
मेचक कुंचित कचनिचय, तममय यों दरशात ॥
करिपाछे घनतिमिर कहँ, मनु आछे रविचंद ।
उदित भये यक साथही, एकहि समय अमंद ॥
जनकसुता के कण्ठथित, गजमुक्ता कृतहार ।

बक्षस्थल पैस्वच्छ छबि, अविरल करत विहार ॥
मानहुँ मदन बैर परिहरि कै * गंगाअंबु कंबु महँ करिकै ॥
शंभुशीश पै छोड़त धारा * उपमा उपजत यही प्रकारा ॥
सियके कुटिलकटाक्ष निहारी * बोध होत यह हृदय मँझारी ॥
पुंज २ मंजुल मनु मधुकर * श्वेत कमल सोंकढ़त मनोहर ॥
याही विधि तीनिहु सुकुमारी * भइँ विभूषित राजकुमारी ॥
तब रानी अवधेश कुमारा * चारहु रुचिर रूप सुकुमारा ॥
लिये बुलाय मनोज मनोहर * अन्तःपुर अभ्यन्तर नरबर ॥
अगणित हर्षित उर पुरनारी * आइँ भूपति भवन मँझारी ॥

दो०—होन लग्यो लखि कै उन्हे, यह अनुभवअभिराम ।
मञ्जुल ज्योत्स्ना पुंजज्यों, शोभित लोकललाम ॥
तिनके तनुकी प्रभालखि, बोध होत मनमाहिं ।
विकसितशत२कुमुदिनी, मनुचहुँदिशिदरशाहिं ॥
केश जाल उनके मनौं, मन्मथमृग के आहिं ।
क्रीड़ाकानन मन हरन, श्याम बरन दरशाहिं ॥
लोचन चय उनके चपल, सोहत मानहुँ मीन ।
पंकज कलिकाछबि करत, छीन पयोधर पीन ॥

जानि परै जिन कहँ लखि ऐसे * धवल पयोधर सुन्दर जैसे ॥
विमल रैनिमहँ अम्बर तरे * इत उत शोभत शोभा भरे ॥
कै मनहर हर अतिशय सुन्दर * सरसावत छबिछटादिगम्बर ॥
चूचुकनीलकण्ठ बिष शोभित * अलकजालशिरब्यालविमंडित
अंगराग सित भूति विराजी * मुक्तमाल सुरसरिता साजी ॥
अरुनिपतित मुक्ताफल आभा * करतैशशिकलातुलनालाभा ॥
यहि छबि आपण महँ रघुनाथा * आये जबतिहुँ कुँअरनसाथा ॥
यहि विधि तबसबकेलोचनचित * निजदिशिकरिलीन्हेअकर्षित॥

दो०—ज्यों सन्ध्याघन तारका, गनशशियुत कमनीय ।
गगन मण्डलहि गहत हैं, मेरु शैलरमनीय ॥
मणिगणकिरणनधवलद्युति, भूषण भूषित बाम ।
यहि प्रकार शोभित भयो, प्रभुशरीर शुभश्याम ॥
रत्नपुंजयुत नीलछबि, ज्योंजलनिधिजलशान्त ।
देखिपरत हिमकर किरण, रंजित लोचनकान्त ॥

राघवके मुख मण्डल ऊपर * परी कनककुण्डलछविसुन्दर ॥
सोऊ हास ज्योतिके जागे * होत मलीन लीन त्यहि आगे ॥
चन्द्रकान्ति सम कान्त सोहाई * दशन श्रेणि प्रभुकी दरशाई ॥
जनमन कैरव जाहि निहारी * होहिं प्रफुल्लित सदा सुखारी ॥
आखण्डल धनुमण्डल मण्डित * मञ्जुमेघ माला शोभाजित ॥
कनककिरीटमुकुटछबि मण्डित * किंचितकुंचितकचचयशोभित ॥
भ्रुकुटी निकट ललाट पटलपर * चन्दनतिलकलसतसितसुन्दर ॥
मनहुँ तुमुल तमपुंज बिदारी * उदय भयोहिमकर सुखकारी ॥
श्याम विशाल वक्षथल ऊपर * मुक्ताहार विहार करत बर ॥
जनुजमुनाजलपरसितछविधर * फेमपुंज दरशात मनोहर ॥
अरुण पराग पुंज सों संकुल * नीलनलिन मृणालज्योंमंजुल ॥
रक्ताम्बर आवृत रघुवर कर * श्यामशरीर लसततिमिसुंदर ॥

दो०—कंजमान मोचन युगल, लोचन सहित ललाम ।
श्रीमुख यह नव श्रीलहत, मुनिजनमनअभिराम ॥
मनहुँप्रफुल्लितललितछबि, नीलसरोज मँझार ।
जनमन रंजन करत द्वै, खंजन करत विहार ॥
तवसबसियकी प्रियसखी, सखी वियोग अधीर ।
बोलीं इमि रघुनाथ सों, हे रघुकुलमणिवीर ! ॥
हम सबकी सुखरैनि कर, भयो आज अवसान ।

और अवधवासीन कर, सुप्रभात प्रकटान ॥
वह यह शोभा सदन तव, चन्द्रवदन अभिराम ।
हेरि हिये ह्वैहैं सुखित, लहि अपने मनकाम ॥
पै ह्वै है वह दशा हमारी * ज्यों कोऊ नर भवन मँझारी ॥
सहसा चिन्ता मणि कहँ पावै * कछु छनमहँ पुनिताहिंगँवावै ॥
यक तो यह तव श्याम शरीरा * नैन ओट ह्वै हरिहै धीरा ॥
त्यहि पै सखी परम जो प्यारी * सो ह्वै है हमते अबन्यारी ॥
किन्तु चहै जो भाग्य हमारे * होय कष्ट अवधेश दुलारे ! ॥
तुम सो यहै विनय है भारी * राखेहु सुखमहँ सखी हमारी ॥
उनकर मननहिं होय मलीना * अब वह हैं तुम्हरे आधीना ॥
वह हैं राजसुता यहि हेता * राखेहु गौरव मान समेता ॥
दो०—यहसुनिप्रभुपुनिहँसिकह्यो, सुनहुसकलसुकुमारि! ।
प्रथम अवस्था महँ नहीं, अब हैं सखी तुम्हारि ॥
उन अब हमरे हृदय मँझारा * करिलीन्ह्योहैनिजअधिकारा ॥
यदि अपनी इच्छासन यहिछन * वह यह तजैं राजनिजनूतन ॥
तौ सुन्दरी वृन्द ! यहि काला * यह सब मिटिजावहिजंजाला ॥
अरु जो मम वियोग के कारण * चिन्ता करहुसो अहैअकारण ॥
सहज उपाय यहै है यहि कर * यावत करहु प्रेम तुम हमपर ॥
सो अर्पण कीन्हेउ ईश्वर कहँ * तब सब मोहिं आपनेहियमहँ ॥
जब चहिहौ तबहीं लखि पैहौ * बिरह बेदना सकल गंवैहौ ॥
नतु हमरे साथहि यहि काला * चलहु अवध नगरीछबिशाला ॥
कृत्तिवास कह हे रघुनाथा * कैसी चलन कथा तुवसाथा ॥
तुम तौ जड़ चेतन सबहीके * हियमहँ अहौ विराजत नीके ॥
दो०—पै चिन्मय सत्तासबै, जानत तुम्हरी नाहिं ।
यासों माया देह धरि, प्रकटहु धरणी माहिं ॥

सप्तविंशोत्तरशततम सर्ग ॥ १२७॥

यहिविधिविविधमधुरवचननसन * करत प्रभूपुर तियमनरंजन ॥
यहि अवसर महँ परम तपस्वी * कुल गुरुशतानन्दन तेजस्वी ॥
मंगल कृत्य करन के कारण * किय अन्तःपुरमहँपदधारण ॥
चन्द्रातप मण्डित अति सज्जित * गृह प्रांगणमहँ भयेउपस्थित ॥
नवल वधू अरु कुँअरन केरा * भयो ग्रंथिबंधन वहिबेरा ॥
मूर्तिमान अष्टांग समन्वित * योग शास्त्रमनु अहै उपस्थित ॥
इमि बरबधू वृन्द ह्वै सज्जित * शुभयात्रा हितभये अवस्थित ॥
विकसित नील नलिन समताई * पाई श्री रघुनाथ सोहाई ॥

दो०—नील नलिनकी पीतछबि, कलिका समकमनीय ।
जनक नन्दिनी सोहहीं, कनक कान्ति रमनीय ॥
अरु दम्पति के रूप की, किरण श्रेणि चहुँ ओर ।
पसरी केसर पुञ्ज सम, मंजुल छबि चित चोर ॥

घंटा शंख आदि तहँ अगणित * बाजे बजन लगे मंगलहित ॥
मिथिला पतिरानी अतिशोभन * सियमुखकमलकेरकरिचुम्बन॥
अश्रु पूर्ण पुर नारि मँझारा * रोकि आपने अश्रु अपारा ॥
मधुर वचन यों कहे मनोहर * शिक्षापूर्ण नारिगणहितकर ॥
पुत्रि सुनहु सीता मन लाई * नारी धर्म सतत सुखदाई ॥
बाल्यकाल जब नारिन केरा * पिता अहै रक्षक वहिबेरा ॥
यौवन महँ स्वामी है भर्ता * वृद्धभये सुत रक्षाकर्ता ॥
सोरहबरस लगे नारीगन * रहैं बालिका कहैं सकलजन ॥
तीसबरस लौं नारिन केरी * तरुण अवस्था ग्रंथन हेरी ॥
पचपन लौं प्रौढ़ा अनुमानी * त्यहि पाछे वृद्धता बखानी ॥

दो०—बालबैस पितुमातु के, रहि रमणी आधीन ।

पालत आज्ञा उनहिकी, होत अतीव प्रवीन ॥
सुभसुभाव उपजत तबै, गुणगण मिलत अनेक ।
गृहकृतिकौशल बीजउर, उपजत सहित बिवेक ॥
ब्रह्मचर्य आश्रम यहै, अहै कामिनिन केर ।
इन्द्रिय संमयकठिननहिं, करन चहिय यहिबेर ॥
और न मनको दमन है, आवश्यक यहिस्थान ।
स्त्री शिक्षाकर है यही, कह्यो मुख्य सोपान ॥
कुसुमकली हित हेतुही, हिमकरण जौन प्रकार ।
त्यहिके ऊपर परत हैं, हरत अनेक बिकार ॥
त्योंसनेह सों मातुपितु, शिक्षा अरु उपदेश ।
कोमल बालस्वभाव पै, सींचत रहत विशेष ॥
शुभस्वभावसेवासुमति, आज्ञा पालन प्रेम ।
श्रद्धाभक्ति बड़ेन पै, दयाधर्म कर नेम ॥
भगिनि भ्रात सों स्नेह अरु, सुरसेवा अनुराग ।
कष्ट सहन अभ्यासत्यों, निन्द कर्मकर त्याग ॥
सत्यबचनबोलवविनय, नित्य कृत्य की टेंव ।
यहसबभावीशुभजनक, जीवन को है नेंव ॥

होहिं बालिका जब सब नारी ❋ जन्महिं तबहीं गुण उपकारी ॥
नहिं ज्यों पके बांस नहिं नवहीं ❋ त्यों बय अधिक होतहैजबहीं ॥
तब सब शिक्षा नारीगन की ❋ होतविफलकीन्हो गुरुजनकी ॥
ज्यों तरु छाँह तरे के धाना ❋ लहतन उन्नतिः त्यहीसमाना ॥
माता पिता पास नारिन कर ❋ सदा निवास न है श्रेयस्कर ॥
अरु स्वाभाविक नियमहुकेरा ❋ है विरुद्धः अस शास्त्रनहेरा ॥
पति के पास निवास नारि कर ❋ हैगृहस्थआश्रम अतिसुखकर ॥
श्वशुर भवनही महँ नारी गन ❋जानीजाहिंअशुभशुभगुणसन ॥

दो०-तियकर देवी दानवी, अरु मानवी स्वभाव।
प्रकट होत है भली बिधि, गये श्वशुर के गांव॥
स्वार्थ त्याग सम दृष्टिअरु, सहन शीलता नेम।
सब प्राणिन पै दया त्यों, निरभिमान पतिप्रेम॥
यह स्वभाव मंगल करण, देविन महँ दरशाहिं।
कुटिलकर्कशा कलहप्रिय, नारि दानवी आहिं॥
यहि माया मय जगतमहँ, तिय सन्मुख सबकाल।
अग्नि परीक्षा की अहै, स्थापित मूर्ति कराल॥
जो नारी यहि अग्निकी, कठिन परीक्षा माहिं।
होय पुत्रि! उत्तीर्ण जग, देवी कहिये ताहिं॥

जो तिय करि दुख संग लराई * कौनेहु समय बिजयनहिंपाई॥
ज्यहि तियकी धर्माग्नि मँझारा * भइ न परीक्षा एकहु बारा॥
त्यहि के जीवनकर जगमाहीं * पुत्रि! मूल्य किंचितहू नाहीं॥
बिपति कालमहँ जो रमणीया * सोइ यथार्थ रमणी कथनीया॥
जो रमणी रहि सुन्दर भवनन * केवल करत रहत सुखसेवन॥
कोमल फूल सेजपर सोवै * याहीमहँ सुखलहि बय खोवै॥
भाग्यवती यद्यपि वह भारी * तदपि अहै साधारण नारी॥
अरु जो धर्म शीश धरि चरणा * ठानत मनमाने आचरणा॥

दो०-त्यों केवल निज सुखहिकहँ, जानत सार पदार्थ।
सो माया विनि मानवी, है दानवी यथार्थ॥
पुत्रि! स्मरण राखेहु अवशि, यह शिक्षा सबबेर।
पतिही के हित होत है, जीवन नारिन केर॥
जो नारी भय भीत है, स्वामी के वश होय।
महानीच त्यहि कहँ कहैं, धर्मशास्त्र सब कोय॥
स्नेहभक्ति अरु प्रेम सों, रहब सदा बशमाहिं।

पति पत्नीकर धर्म है, यहै और कछु नाहिं ॥
वास्तव महँ स्त्री जाति हैं, पति की दासी नाहिं।
पै पति सेवा नित्यही, करन चहिय उनकाहिं ॥
स्नेहमाहिं भगिनी सम होई * सेवामहँ दासी इव जोई ॥
भोजन समय मातु सम रहई * सम्पति मिले मंत्रिपद गहई ॥
बिपति काल महँ मानहुँ छाहीं * रहै सदा स्वामी सँगमाहीं ॥
भ्रष्ट होय पतिकी मति जबहीं * सद्गुरु सम सिखवै शुभतबहीं ॥
है यथार्थ पत्नी सोइ कामिनि * वास्तवमहँपतिकीअनुगामिनि ॥
तंत्र मंत्र सों कोउ तिय नाहीं * पति सौभाग्यलहतजगमाहीं ॥
मंत्र औषधी सन जो नारी * चाहै पतिबशकरन अनारी ॥
त्यहिसम पापिनि यहि जगमाहीं * अहै और अबला कोउनाहीं ॥
दो०—काम क्रोध अभिमान तजि, पतिसेवा महँ प्रीति।
यहै अहै कुल कामिनी, सती नारि की रीति ॥
निन्दनीय नारिन के संगा * कुकथाकथन कुदृष्टि कुसंगा ॥
त्यों कुठौर बैठब निंदित मति * अरुरतिनिन्दनीयभोजनप्रति॥
निजकी गनती सती समाजा * उन्हैत्याज्य यहसकलकुकाजा ॥
जो कोउ बात छपावन हारी * श्रवण करै पति मुखते नारी ॥
तौ त्यहि कहँ प्रकाश नहिंकरई * पतिकी सम्मति कहँअनुसरई ॥
पुत्र सदृश पुरुषहु के पासा * नहिं यकान्त महँकरैनिवासा ॥
अकलंकिनि उत्तम कुल जाई * पतिब्रता पतिके मनभाई ॥
ऐसी जो तिय गुणी लखाई * वाही के सँग करिय मिताई ॥
दो०—सबके पहिले सोय कै, उठै आलसहि जीति।
सबके पाछे शयन—यह, कुल नारिन की रीति ॥
अभ्यागत की नित करब, यथा शक्ति सत्कार।
सासु ससुर द्विज देवता, सेवा भली प्रकार ॥

पास परोसिन संग शुभ, शुद्ध भाव व्यवहार।
दासी दासन प्रति करब, मधुर वचन उच्चार॥
नन्द और देवरन पै, भगिनी सम सब काल।
करब यथार्थ सनेहकर, तजब स्वभाव कराल॥
चारहु आश्रम माहिं प्रधाना * हैगृहस्थ आश्रमहि बखाना॥
कर्म क्षेत्र नारिन कर यहही * धर्मशास्त्र याहीबिधि कहहीं॥
यदि अभाग सों नारी कोई * बिधवा यहि संसारहि होई॥
तब सों तीजे आश्रम माहीं * करत प्रवेशहि संशय नाहीं॥
हेरि पुत्र पौत्रादिक को मुख * भोगिभले पतिसंगजगतसुख॥
अर्धवयस गत होवहि जबहीं * निज शरीरसुख त्यागैतबहीं॥
धारण करि मृगचर्म स्वरूपा * तीर्थपर्यटन धर्म अनूपा॥
हित साधन मय मुंज मेखला * कटितटकसै तौनछन अबला॥
अरु परमारथ चिन्ता काहीं * दण्ड स्वरूप गहै करमाहीं॥
सन्यासिनि समान सब स्वारथ * तजि कै भजै भले परमारथ॥
हाथ जोरि श्रीजगदम्बासन * करहुँ प्रार्थना यह मैं यहिछन॥
सोई नारि धर्म सीताकर * करि देवैं निर्वाह निरन्तर॥
दो०-यह कहि लोचन सनकरत, जलमोचन नृपरानि।
सियकरकर प्रभु करउपरि, धरि बोलीं यहबानि॥
सो०-वत्स राम रघुराज !, निज जीवन धन वालिका।
सौंपहुँ यह मैं आंज, तुम्हरे मृदुकर कमल महँ॥
अबहि बालिका अति सुकुमारी * है हमारि यह प्राणपियारी॥
कहत दुःख क्यहि कहँजगमाहीं * सो सपनेहु निरख्योयहनाहीं॥
अब लौं बहु उपाय करि प्यारे ! * पाल्यो यहि हमराजदुलारे !॥
गोदहि रहीं अबै लगि मेरी * जानत रीति न कछुजगकेरी॥
भूलि बालपनके वश होई * यह अपराध करै यदि कोई॥

तौ त्यहि पैं तुमदृष्टि न दीन्हेउ * सुत!ममवचनमानियहलीन्हेउ॥
ज्यहिप्रकारयह तबसहचारिनि * होइ सकै सुत ! आज्ञाकारिनि ॥
तुव सम लहै सुशील सुभाऊ * कीन्हेउ सब छन सोइ उपाऊ ॥
पतिकर अर्धअंगहै नारी * लिख्यौलख्योयहशास्त्रमँझारी ॥

दो०—अर्धअंश ज्यहि वस्तुकर, उत्तम यहि जगमाहिं ।
अरु अर्धांग निकृष्ट सों, उन्नति पावन नाहिं ॥
अर्ध अंग पत्नी अहै, विपति समय आधार ।
धर्म काम धन प्राप्ति कर, मूल रूप सुखसार ॥
निस्सहाय जब होयपति, तबतिय करत सहाय ।
धर्म कर्म महँ पिता सम, दुखित दशामहँ माय ॥
संकट मय मग महँ अहै, यहै एक विश्राम ।
बिन नारी के होत नहिं, पूरण एकहु काम ॥
कोउ करत विश्वासनहिं, नारि हीन नर केर ।
यासों पति की परमगति, पत्नी है सबबेर ॥
कैसिहुचिन्ता होय मन, तनु महँ रोग विकार ।
पै पत्नी मुख लखत पति, पावत हर्ष अपार ॥
जैसे कोउ आतप तपित, लखि शीतलजलकाहिं ।
भूलिसकलदुखसुखपरम, पावत निज मनमाहिं ॥

रोला छन्द ॥

वत्स ! तुम्हारे अरु सीता के अद्भुत व्याह मँझारी ।
स्पष्ट प्रकटहै नीलकण्ठ की चातुरता अतिभारी ॥
कोउअलौकिक अद्भुत कीरति करनहेतुमहिमाहीं ।
जनमेहौ तुमदोऊ—अहै अस दृढ़ निश्चयहमकाहीं ॥
अरु आदर्शरूप जो दम्पति धर्म प्रचार अनूपा ।
सोउ त्यहिकीर्ति केर उपयोगी है यकअंगस्वरूपा ॥

पै ममसम निर्बुद्धि नारि किमि दैवरहस्यअपारा ।
जानि सकै अनुमानिसकैअवधअधीशकुमारा ! ॥
सहजहि नाम नारिकरअबलाकहतसकलसंसारा ।
यहिकारणधरिसकौंधीरमैंयहिछनकौनप्रकारा ? ॥
पलकओटयकपलनकियोज्यहिसोइसियसुतादुलारी
चिरदिनहेतुजाततजिममगृह ,कमलकुसुमसुकुमारी
जानहुँ यदपि यथा दिन करके मण्डलते उत्पन्ना ।
पुण्यप्रभा शशिमण्डलमाहींमिलतकान्तिसम्पन्ना ॥
त्यों सिय एक राजकुलजनमी लालनपालन पाई ।
अपर राजकुलमाहँ मिली अबसबकरसाथबिहाई ॥
जननी नेह तऊमोहिं मोहितकरतअहै अतिभारी ।
सियमुखशशिबिनमिथिलानगरीरहिहैअबअँधियारा
और भसमसम प्राणशून्य यह देहमात्रमैं धारी ।
जीवनसमय बितैहौंजसततससबजगविबसबिचारी ॥
कहत २ यहि बिधि नृप रानी * सुतास्नेहसों अतिअकुलानी ॥
रुँध्यो कण्ठ मुखवचननिकसै * दोउलोचननीरझरिबिलसै ॥
प्राणपियारी कन्या काहीं * लियोलगाय रानि हियमाहीं ॥
और करुणस्वर सों तजिधीरा * रोवनलागीं शिथिल् शरीरा ॥
करुणामयी मातु जगदम्बा * जगतजनन पालन अवलंबा ॥
सुनिसकरुण रोदन जननीकर * रोवन लागीं होयअतिकातर ॥
यदपि इन्द्रते अधिक यशस्वी * पायोश्वशुर महान मनस्वी ॥
सासहु मिली शीलकी मूरति * देवर तीनहु भक्तिभरे अति ॥
दो०-अरु स्वामीतौ वह मिले, जिनकी त्रिभुवनमाहिं ।
काहू गुण महँ देखियत, उपमा पूरण नाहिं ॥
सो०-तदपि विदेह कुमारि, जननीकर रोदन निरखि ।

दोउ नैननजलढारि, भईअतिशयव्याकुलबिवश ॥
तदनन्तर बहु बार, कण्ठ लागि निज जननिके।
लोक रीति अनुसार, भेंटन लागीं जानकी ॥
मुखमयंक उनकर आँसुनसन * भीजिभयो यों परमसोहावन ॥
मानहुँ लगे राहु केरद छत * सुधासुधानिधिसनहैंनिकसत ॥
यह अवलोकि सकल पुरबाला * समझावन लागीं त्यहिकाला ॥
रोदन करहु न प्राणपियारी ! * धीरधरहुनिज हृदय मँझारी ॥
शुभ अवसर महँ राजदुलारी ! * रोदन अहै अमंगल कारी ॥
चिन्ता करहु न कछु मनमाहीं * कौनहु कष्ट न है तुम काहीं ॥
कछुदिन कीन्हेउ अवधनिवासा * कछुदिन रहेहु मातुपितुपासा ॥
तुम्हरे सदृश सुभाग्य और कहँ * अहै परम दुर्लभ सपनेहु महँ ॥
दो०-हमहिं अभागिनि हैं सबै, जो तुम हमरे पास।
कछुदिनरहिकरिकैसुखित, कीन्ह्यो आजनिरास ॥
यथा प्रकाशित करिगगन, चलचपला कछुकाल।
छिपत तुरत घन महँ करत, घनअंधियारकराल ॥
त्यहिबिधिकरिमिथिलहिअँधियारी*अवधनगरतुमआजसिधारी॥
जगदम्बा तुम कहँ दिन राती * राखै सुखितसखी ! सबभाँती ॥
पायो पति ज्यों परमयशस्वी * लहहु पुत्र वैसहि तेजस्वी ॥
सियकहँ यहिप्रकार समझाई * रानीसन पुनि कह्यो बुझाई ॥
राजरानि ! है परम प्रवीना * होहु न यहिबिधिधीरजहीना ॥
तुम्हें उचित समझाओ सीतहि * तुमतौ बिकलहोतिहौआपहि ॥
धीरज धरि रोदन परिहरहू * सुखसों बिदा सुताकहँ करहू ॥
यह सुनि रानी धरि मनधीरा * पोंछ्यो दोउकर नैनननीरा ॥
दो०-पुनि मंगलहित कीन्हेऊ, दूर्वा धान्य प्रदान।
सुता, वरन दीन्हे अमित, आशिषकरि सन्मान ॥

यहि अवसर मिथिलेशहू, अन्तःपुर महँ आय ।
निज सुकुमारि कुमारि कहँ, लीन्ह्यो गोदउठाय ॥
सिय मुख चंद चूमि नरपाला * भरिदोउलोचनजलत्यहिकाला॥
गद्गद कण्ठ कही इमि बानी * हेगृहलक्ष्मि!सकलगुणखानी ॥
कबहुँ २ मिथिला नगरी कहँ *स्मरणअवश्यकियेहुनिजमनमहँ
भाग्यहीन पितु माता काहीं * निपट भूलिजायहुकहुँ नाहीं ॥
बहुरि जनक मिथिला नरपाला * यक २ कन्याकहँत्यहिकाला ॥
दिव्य अमोल सोहाए कम्बल * क्षौमवस्त्र सुन्दरअति कोमल ॥
लक्षधेनु मणि वसन सँवारी * वत्सवती सब तरुण दुधारी ॥
मुक्तामाल प्रबाल प्रशंसित *त्रिविधरत्नअरुमणिगणअगणित॥
दासीदास अभूषण नाना * दीन्ह्योसुवरण बिनपरिमाना ॥
अरु कुँअरन कहँ दिये नरेश्वर * दश सहस्त्र रथ परम मनोहर ॥
षट सहस्त्र मदमाते कुंजर *ताजिकबाजिनियुतअतिसुन्दर॥
शत सहस्त्र सैनिक पदचारी * कनक थार थारी मणिझारी ॥
दश अर्बुद परिमित दीनारा * रजत रचित पर्यंक अपारा ॥
यहि बिधि यौतुकदियो अनूपा * राज राज सम्पद अनुरूपा ॥
अवधगमनकर अवधअधीश्वर * आयोजन कीन्ह्यो तदनन्तर ॥

दो०–रथ पदाति जग बाजियुत, राघव चमू विशाल ।
कम्पित धरणी कहँ करत, अवधचलीत्यहिकाल ॥
ऋषि मुनि नरपति मण्डली, चढ़ि २ उत्तमयान ।
जय २ ध्वनि विस्तारकरि, कीन्ह्यो अवधपयान ॥
देव विमान समान वर, रथपर परम प्रवीन ।
शिष्ठ वशिष्ठ महर्षि तब, हर्षि अरोहण कीन ॥
शत्रुंजय गजराज जो, ऐरावत अनुरूप ।
त्यहि पै दशरथ अरु जनक, शोभितभे दोउभूप ॥

चारु चतुर्दोलन चढ़े, कुँअर वधून समेत।
शिविकन चढ़ि साथहि चलीं, दासीदासनिकेत॥
पटह शंख भेरा मुरज, घंटा शब्द महान।
दशहु दिशन पूरतिभयो, प्रति निनाद प्रकटान॥
सकल देवगन गगन मँझारी * दुन्दुभिध्वनिकियमंगलकारी॥
अरु तुषार वर्षा सम प्रभुपर * बरसाये सुरतरु प्रसूनवर॥
पुष्प पराग पूर्ण आकाशा * अरुण वर्णकहँकियोप्रकाशा॥
जनक पुरी भवनन के आँगन * उच्च अटारी और आस्तरन॥
पूरिगये सुरतरु कुसुमन सन * पै मिथिला के नरनारी गन॥
सिय बिछोह दुखउदधिमँझारी * हते मग्नमन सुरति बिसारी॥
कुसुम वृष्टि मिथिला पुर माहीं * यहि कारण जानीकोउनाहीं॥
कृत्तिवासकहसकलसुमतिगण! * स्मरण रहै यहबात प्रतिक्षण॥
दो०—अवनि अवनहित अवनिजा, यात्रा भइहै आज।
है न श्वशुर गृह महँ जगत, सुख भोगनकेकाज॥
किन्तुकहत कालीसुनहु, कविकुल तिलकसुजान।
तुम्हरो कथन यथार्थ है, पै बहु मनुज अजान॥
राम चरित्र पवित्र कर, भाव गभीर अनूप।
रस विहीन अनुमानिकै, निज लघुमतिअनुरूप॥
क्षुद्र रासलीलादि बहु, कुमति कल्पना ठानि।
यहि आदर्श चरित्र की, मर्यादहि अपमानि॥
हीनभाव सों करत त्यहि, अंकित कलिमल ग्रस्त।
किन्तु भक्तिप्रतिकूल हैं, यह साधना समस्त॥

अष्टाविंशोत्तरशततम सर्ग ॥ १२८ ॥

परशुराम आगमन ॥

रोला छन्द ।

प्रबल पवन संचालित जैसे जलधि तरंग अपारा ।
तरथित शैलन की उपत्यकन ब्यापैं तौन प्रकारा ॥
अवधनाथ के अवध सिधारन समय सैन्यकिलकारी ।
किंकिणिजालऔरकर बालनकीझनझनध्वनिभारी ॥
देव दुंदुभी शब्द और धरणीतल वाद्य निनादा ।
जय २ साधुवाद सिद्धनकर गगन माहिं साल्हादा ॥
पुष्पपतन कर सन सन स्वन घन हय गजगर्जनभूरी ।
रथ चक्रन कर घर्घर रव रह दशहु दिशन परिपूरी ॥
जनक औरदशरथ दोउ नरपति जातअवधमगमाहीं ।
करहिं परस्पर परम प्रीति सों मधुरालापन काहीं ॥
गूढ़ प्रसंग प्रजासम्बंधी उन महँ उठत अनेका ।
नय धन धर्म बिषय आलोचन होत समेत विबेका ॥
देत याचकन दीन दरिद्रन धन अरु वसन अपारा ।
त्यों स्वाभाविक शोभानिरखत मगमहँउभयभुआरा ॥
बहुत दूरि मिथिला नगरी ते गये तबहि अवधेशा ।
आदर विनयप्रीति सों बोले—हे नृपाल मिथिलेशा ! ॥
क्लेश करहु नहिं जाहु लौटिअब इतते मिथिला काहीं ।
उभय भूप भेंटे तदनन्तर प्रेमबिवश मग माहीं ॥
उर वियोग बेदना दोउनके बहत नयन जलधारा ।
पुनि कर जोरि नृपति दशरथतेमिथिलानाथभुआरा ॥

बहुबिधि क्षमा प्रार्थना कीन्ही विनय सहितनयधामा।
वशिष्ठादि ऋषिगणचरणन पुनिकीन्ह्योदण्डप्रणामा॥
सुतारूपिणी नित्यशक्ति अरु अन्यकन्यकन केरा।
बार २ आनन इन्दीवर चुम्बन किय बहिबेरा॥
बहुरि उपाधि हीन मायावपु जामातन नरराई।
बिविध असीस स्नेह सों दीन्ही सीस चूमि उरलाई॥
अनुजकुशध्वज मंत्रि पुरोहित सहितबहु रिमिथिलेशा।
प्राणहीन ह्वै मनु मलीन मुख लौटे अपने देशा॥
यहिदिशि अवधनाथ दशरथहू यशयुत इन्द्र स्वरूपा।
किरणमाल मण्डित तेजस्वी दिन नाकय अनुरूपा॥
रतुरंगिनी चमू वेष्ठित ह्वै शुभ शोभा सरसाई।
अवधेश अभिमुख पश्चिम कहँ चले भले सुखपाई॥

हरिगीतिका छन्द॥

मिथिला पुरीसन तीन योजन जब गये अवधेश्वरा।
त्यहि समय सहसा घोर अशकुन होनलाग भयंकरा॥
बामांग बारम्बार फरकन लगे नरपति के सबै।
अरु शून्य पथ में पक्षिकुल कलकल करन लागेतबै॥
शुभहरिण दक्षिण ओर जात दिगन्त धूसर ह्वै गए।
नृप हेरि ह्वै उद्विग्न कुलगुरु सों कहत यहिविधिभए॥
ऋषिराज! सहसा भीमरूप असीम यहअशकुन महा।
दशहू दिशन दरशतअमंगल मूल अबकरिहैं कहा?॥
यह सुनविहँसि सर्वज्ञ ऋषिबोले सुनह अवनीश्वरा!।
नभमहँ बिहग चित्कार है निश्चय महान भयंकरा॥
पै दाहिनी दिशिजाता मृग मंगल जनकदरशात अहैं।
यहलखिकियोअनुमानजोहमसोनृपति! तुमसों कहैं॥

रामगीती छन्द ॥

कोऊ अपूरण दैव शक्ति अतीव भीषणरूप।
तुम्हरे प्रपूर्णाभ्युदय के प्रतिकूल उठिहै भूप ॥
पै अति कठिन अंकुशप्रपीड़ित मत्तकुंजर न्याय।
ह्वै जाइहै वह शान्त सत्वर सकल गर्ब गँवाय ॥
सत्कीर्ति के अनुरूप सुन्दर रूप चारि कुमार।
तुम्हरे चतुर्दिक हैं उपस्थित प्रबल हरि अनुहार ॥
जो कोउ करै तुम्हरे अमंगल करनकेर प्रयत्न।
तौ यों हसन के योग्य है ज्यों भ्रमरवाल सयत्न ॥
धरि पद्म चक्र उपरि सुमेरुहि ग्रसन चाहै मूढ़।
यहि बिधकहेऋषिबर मही पतिसोंवचनअति गूढ़ ॥
शिवचापभंजन जानकी परिणय कथायहि ओर।
कीन्ही श्रवण जमदग्नि सुत नृपबंशदहन कठोर ॥

पद्धटिका छन्द ॥

हरिअंशजानिकै निजहि काहिं। मुनि जामदग्न्य केहृदयमाहिं ॥
शिवइंगित द्वारा सहित प्रीति। ह्वैगई हती यह दृढ़ प्रतीति ॥
हम बिन कोउ दूजे मनुज काहिं। मिलिहै बिदेह नृपसुता नाहिं ॥
सिय ब्याह बात सुनि यही हेतु। भे विस्मित अति भृगुवंश केतु ॥
शिवकथन केर आशय सुगूढ़। नहिं जानिसके मुनि तमोमूढ़ ॥
अत एव राम कहँ परशु राम। जान्यो केवल नृप बाल बाम ॥
भे क्रोध प्रकंपित तनु प्रचंड। मध्यान्ह माझ मनु मारतंड ॥
प्रज्वलित ताम्रइव अरुण क्षिप्र। कसि कपर्द कहँ कस्यो विप्र ॥
दृढ़ बांध्यो कटितट ब्याघ्रचर्म। पहिरयो अभेद्य दृढ़कोस्य वर्म ॥
पुनि प्रलयकालके घन समान। बहु बर्षत जो अति प्रखरबान ॥
ऐसो वैष्णव कोदण्ड चण्ड। मुनिग्रहणकियोनिजदोरदण्ड ॥

नृप बाल रुधिर रंजित कठोर। लीन्ह्यो कुठारअति कठिनघोर॥
युग सूर्य प्रभासन्निभ तुणीर। कसिलिये दोऊदिशि विप्रवीर॥
ज्यहि भेदि सकै नहिं बज्रजाल। सो चर्म पृष्ठ धारयो विशाल॥
कर कालजीह समअतिकराल। करबाल कुटिल लै तौनकाल॥
यम दण्ड सदृश अतिचण्डरूप। त्यों कज्जल गिरि खण्डानुरूप॥
लै महागदा संहार शस्त्र। अरु काल पाश समपाश अस्त्र॥
शिव दत्त शूलआदिक जितेक। यमदूत सदृश प्रहरण अनेक॥
वै सकल भयंकर ग्रहण कीन। जमदग्नितनयऋषरण प्रवीन॥
करि महा क्रोध सों अट्टहास। कियप्रतिध्वनितगिरिगुहावास॥
पुनिउर निष्ठुरता भाव रोपि। यों कहन लगे स्वयमेव कोपि॥
मम अपरिणाम दर्शित्व काहिं। शत कोटि कोटि धिक्कार आहि॥
इक्ष्यकु वंश की कामि नीन। तजि लोक लाज ह्वै वस्त्र हीन॥
नृप रक्त पान कार्यहि प्रवीन। मम परशुधार सों ह्वै अधीन॥
शिशु मूलक नामककहँछपाय। नृप वंश मूल लीन्हा बचाय॥
याही कारण सों वह कुजाति। जग पाई नारी कवच ख्याति॥
यदि वहि पापहि नारिन समेत। मैं वही समय संहारि देत॥
तौ अब मोहिं सब रघुवंश केर। निरवंश करन कर श्रम घनेर॥
नहिं करन परत द्वाविंश वार। असकहिबलशाली ऋषिकुमार॥
पुनि दशन आपने कट कटाय। लखिपरशुओर अतिहीरिसाय॥
यों बोले रेमेरे कुठार!। क्षत्रियविनाशकरि अमित बार॥
अब अधिक कालसों लगुड़रूप। तू अहै करस्थित शस्त्र भूप!॥
अब आज फेरि द्वाविंश वार। क्षत्रिय कुलकी प्रियरुधिरधार॥
करि पान युद्ध धरणी मँझार। तोहिं नृत्य करन परिहै अपार॥
अस कहि ऋषवर बीरा वतार। निःश्वास तजत बहु बार बार॥
घन जटा जाल मण्डित प्रबुद्ध। दंष्ट्रापसारिकै परम क्रुद्ध॥

ज्यों करै आक्रमण सिंह वीर। त्यहि भांतिक्रोध कंपितशरीर ॥
करि वेष भयानक परम घोर। द्रुतधाये मिथिलापुरी ओर ॥
द्रुतपद चालन सों डगमगात। मनुगिरि महेन्द्र पाताल जात ॥
उनके मुखनासा कर्णद्वार। अरु अरुण वर्ण नैनन अपार ॥
निकसत ज्वलन्त उल्का अनन्त। मनुकरि हैं आजहिजगतअन्त ॥
अवलोकि वीर रस भूमि देह। उपजत मन भो अनुमान एह ॥
बहु अग्नि करणोद्गारी कराल। मनु सूर्य उदित है प्रलयकाल ॥
कालान्तकाल के न्याय घोर। साक्षात रौद्र रस इव कठोर ॥
प्रभु केरि रौद्रतनु प्ररशुराम। रणनिपुण महाबल क्रोध धाम ॥
तिनसंग शान्ति मय शार्ङ्ग पानि। परिपूर्ण तेजविभु अभयदानि ॥
श्रीरामचन्द्र दाशरथि केर। संघर्ष कुतूहल तौन बेर ॥
निरखन कहँ गौरीपति विधात। इन्द्रादिक यावत देवव्रात ॥
सब कौतुक संयुत हे महान। आये नभ थल चढ़ि२ विमान ॥
जब दशरथ नरपति चमूतीर। पहुँचे मुनि नायक परम बीर ॥
तब घूर्णवायु उठि अतिप्रचंड। तिहुँलोक व्याप्त कीन्हे अखंड ॥
नदनदी शैलयुत भू विशाल। सब डोलन लागी तौनकाल ॥
सिन्दूरलिप्त सर्पानु रूप। बहु धूम्रकेतु कुत्सित कुरूप ॥
प्रज्वलन लगे त्यहि छन अकास। जनुज्वलनकरत शतशतप्रकास
पुनि बन्हिशिखाभीषण ज्वलन्त। भू भेदनकरि प्रकटीं अनन्त ॥
त्यों शोणित स्नावित सुमनगुच्छ। सुरतरुबरसन लाग्यो स्वतच्छ ॥
अरुभये भयंकर भूमिकाम्प। तरुवृन्द सकल लहिलंपझंप ॥
महिमध्य पतित भे होय भग्न। सब बिश्वभयो भयउदधिमग्न ॥
दिकमण्डल व्यापी विपुलकाय। अतिभीमहुताशन शिखान्याय
नभथित अदृश्य नक्षत्र जाल। ज्वलिउठेपसारतज्योतिज्वाल ॥
गिरि गुहाद्वार मण्डलाकार। भयो धूम्रजाल निर्गत अपार ॥

दशादिश ज्वालमय लाललाल। प्रज्वलित ह्वै गई दिवसकाल॥
मनु सागरथित पावक कराल। करिशुष्कसागरहि अतिविशाल
ह्वै खण्ड खण्ड अतिही प्रचण्ड। चहुँव्यापिलियोनभथलअखंड॥

रोला छन्द॥

विश्वव्यापिनी बन्हिशिखा ह्वै पुंज२ भयकारी।
धक२ करत रक्तपट नाई छाई भुवन मँझारी॥
यहि अवसर दशरथ सेनाके तीर परशुधर वीरा।
पहुँचिगये कोपारुण लोचन कम्पितओष्ठशरीरा॥
महाशरासन विस्फारित करि तवभार्गव भटभारी।
भीषणसिंहनाद करिबोले सन्मुख मुखललकारी॥
नारीकवच वंश महँ जन्म्यो विक्रमसाहस हीना।
कहाँअहैअजनन्दन ?जोममगुरुधनभंजनकीना॥
मरणकाल निकटस्थभये पै ज्योंपिपीलिका केरे।
प्रकटहोत हैं पक्ष तहीबिधि अब विचार महँ मेरे॥
आगतमृत्यु मूढ़ दशरथ है भयो मदान्धमहाना।
क्षत्रियवंशशमनममपरशुहिअबलौंनहिंपहिंचाना॥
हा धिक ! आजसिंहकीदंष्ट्राअजशिशुरक्तमँझारा।
डूबि, कलंकित होइजाइहै यहमोहि शोचअपारा॥
सिंहनाद सहसा सुनि भयप्रद भीषण भार्गवकेरा।
दशरथ सैन्य मध्यकम्पज्वर मनु आयो वहिबेरा॥

दो०-कछुछनमहँसबजनलख्यो, तड़ित पुंज अनुहार।
आवत सन्मुखही चली, तेजोराशि अपार॥
सो०-वह विभीषिका व्याप्त, रौद्रदृश्य कछु काल महँ।
भयो निकट जब प्राप्त, सबनतबैयहि बिधिलख्यो॥
दो०-ज्वलन शिखासन्निभजटा, मण्डल मण्डित भाल।

दीप्तिमान बहु अस्त्र अरु, शस्त्र लिये विकराल ॥
कार्तवीर्य संहार कर, अमितवीर्य अति घोर ।
क्षत्रिय वंश विनाश व्रत, धारी परम कठोर ॥
जामदग्न्य कम्पित अधर, मनमहँ कोप बढ़ाय ।
आय गये सेना निकट, कालमृत्यु के न्याय ॥
उनकी दुस्सह अग्निमय, भीमा कृतिहि निहारि ।
वशिष्ठादि ऋषिगण सबै, मनमहँ सम्भ्रम धारि ॥
सादर अर्घ्य प्रदानकरि, पूजन कियो समग्र ।
तदनन्तर जमदग्नि सुत, कोपकषायित व्यग्र ॥
करपुटकरि नतशिर खरे, दशरथ नृप की ओर ।
निरखिकहे यहिबिधिबचन, कोप प्रकाशक घोर ॥
यहि बिधिस्पर्धा बढ़ि गई, दशरथ तुम्हरे जीय ।
रख्यो नाम निज पुत्रकर, मम सम निर्भय हीय ॥

महिमण्डल मैं मैंही केवल * रामनाम हौं ख्यात महाबल ॥
मम सम कक्ष आपने सुत कहँ * कहाजानिलीन्ह्योतुममनमहँ ॥
यह सुनि दशरथ उत्तर दीना * सुनहु विप्रवर ! परमप्रवीना ॥
मम अपराध क्षमा अब करहू * कोप बेगि उरते परिहरहू ॥
मोहिं सुत नामकरणके अवसर * कार्यव्यग्रतावश हे मुनिवर ! ॥
तुम्हरो स्मरण रह्यो कछु नाहीं * यासों क्षमा उचित तुम काहीं ॥
यह सुनि जामदग्न्यरणपण्डित * भयेततोऽधिकक्रोध प्रज्वलित ॥
ज्यों पावक घृत आहुति पाई * ज्वाला जालव्याप्त दरशाई ॥

दो०—पुनि बोले भृगु वंशमणि, कहा कह्यो नरपाल ? ।
भूलि गये हम कार्य वश, नामकरण के काल ! ॥
निज पूर्बज अनरण्यकहँ, भूलि गये तुम कांह ? ।
ज्यहिरावणरणबिचकियो, काल कवल छनमांह ॥

जीतिलियो बालक सदृश, जो त्यहि रावणकाहिं ।
वह अर्जुन मम कोप परि, भस्मभयो रणमाहिं ॥
अरु हम तुम्हरे स्मरण के, योग्य न ठहरे भूप ! ।
यासों यहि अपराध के, प्रायश्चित स्वरूप ॥
तुमकहँ प्राणविहीन करि, तुम्हरे वंश समेत ।
यमकर अतिथि बनाइहौं, पठइ कृतान्त निकेत ॥

दशरथ कहे बहुरि इमि बैना * सुनियेभृगुकुलमणिगुणऐना! ॥
पूज्यपाद महि देवनही कहँ * अतिथि वृत्ति संगतहै जगमहँ ॥
क्षत्रिय कुलकी नहिं यह रीती * जगत प्रसिद्ध अहै असनाती ॥
शान्त शील तव पिता यशस्वी * हैं जमदग्नि महर्षि तपस्वी ॥
देव देव शंकर भगवाना * तव शिक्षागुरु अहैं सुजाना ॥
तुम्हरिहु छाई जगत मँझारी * महत प्रतिष्ठा विस्मय कारी ॥
द्विज कुल महँ है जन्म तुम्हारा * कछुककरहुनिजहृदयबिचारा ॥
अहैं परम धन ब्राह्मण केरे * तप अध्ययन व्रतादिक हेरे ॥

दो०—तुम सम समदर्शीन कर, होब क्रोध आधीन ।
है नितान्तही असंगत, हे ऋषिराज प्रवीन ! ॥
ज्यों मनुष्य के चर्म कहँ, कुष्ट नष्ट करिदेत ।
त्यहिविधि क्रोधनशावही, बुधियश कीर्ति समेत ॥
ज्यों कोउदुर्जनजनसुजन, केरी पाय सहाय ।
लहै प्रतिष्ठा आदरहि, राजसभा महँ जाय ॥
बहुरि सहायक सुजनकहँ, नृप गृहते वह दुष्ट ।
निष्काशित करि होत है, आप परम सन्तुष्ट ॥
त्यों क्रोधहु नरदेह मैं, करिकै प्रथम प्रवेश ।
करत नरहि पुरुषार्थ सों, विच्युत बेगि द्विजेश ॥
आप होय क्रोधान्ध अति, हम कह बारम्बार ।

कहहु अकारण कटुबचन, शाणितशर अनुहार ॥
किन्तु स्मरणराखहुअजौं, बृद्ध अवस्था माहिं ।
धनु विद्या कहँ परशुधर !, दशरथ भूल्यो नाहिं ॥
अरु भार्गव ऋषिदत्त मम, अस्त्र समूह कराल ।
क्षीणशक्ति हततेज नहिं, भे एतावत काल ॥
तव नितान्त इच्छा यहै; तौ प्रस्तुत है दास ।
चरणन ऊपर देनहित, शस्त्रांजलि सोल्लास ॥
यह सुनि परशुराम भटमानी * यहिविधिकहीव्यंग्यकरिबानी ॥
नृपकुल तिलकजुद्विजसुतघाती * त्यहिकरशीलउचितयहिभांती ॥
किन्तु हमार आगमन यहिछन * भयो अहै प्रतिहिंसा कारन ॥
सत शिक्षाहित इत हम नाहीं * आये हैं महीप ! तुम पाहीं ॥
धर्मानुग हिंसा अरु युद्धा * क्यहु विधिनहिंहैशास्त्रविरुद्धा ॥
अवलोकहु करिकछुक विचारा * है असत्त्य नहिं कथन हमारा ॥
है ब्राह्मण गुण क्षमा बखाना * भलीभांति हमरहु यह जाना ॥
पै षट्ऋतु विभेद अनुरूपा * एकहि "समय" धरतबहुरूपा ॥
दो०—जल सागरमहँ धूलिकण, देखि परत हैं नाहिं ।
स्फुरितहोत केवल जलहि, तरल तरंगन माहिं ॥
ज्यहिप्रकारक्यहुकालमधि, ज्वलितहुताशनमाहिं ।
अन्यभाव उष्णता बिन, सम्भवक्यहिविधिनाहिं ॥
जामदग्न्य कहँ तौनविधि, प्रतिहिंसा ब्रत एक ।
परमसुख प्रद है सदा, छुटनहार नहिं नेक ॥
यहसुनिपुनिदशरथकह्यो, मुनिवर करिय न रोष ।
क्षमा करहु मम धृष्टता, अरु निकृष्टता दोष ॥
बिषहिजानिविषकीटनिज, इष्ट साधनो पाय ।
अमृत गनत पै अन्य कहँ, बिष बिषही के न्याय ॥

यह सुनि मुनि ह्वै क्रोधाधीना * भीषण अट्टहास कहँ कीना ॥
पुनिबोले नृप ! तुममहँयहिंक्षण * देखिपरत चैतन्योदय लक्षण ॥
क्षत्रिय क्षुद्र अपनमन माहीं * भीषणरूप परशुधर काहीं ॥
अग्रगण्य बिषधरन मँझारा * जानत आये सदा भुआरा ! ॥
हिंसाद्वेष नैन मम जानहु * असिखरशानजीहअनुमानहु ॥
ऋषिनराच प्रासशर तोमर * यह सब चरण हमार भयंकर ॥
निर्मम शील असूया दोऊ * पक्षद्वय जानत सब कोऊ ॥
कालपाश लांगूल विचारा * प्रलय वह्नि है उदर हमारा ॥
स्कन्धरूप विक्रममम अहई * काल मृत्युरद पदवी लहई ॥
मोहिं बिषकीट जानि यहि वेषा * सावधान अबहोहु नरेशा ! ॥
रुद्रमूर्ति भार्गव भगवाना * असकहि कोपितभये महाना ॥
क्रोधारुण लोचनन असीमा * कढ़नलगे पावककण भीमा ॥

दो०-उष्णवारि पर तैलकर, क्षेपण उचित विचारि ।
तब वशिष्ठऋषि दशरथहि, तहँते दीन्ह्यो टारि ॥
शान्त वचन सों भार्गवहि, शान्त करन के हेत ।
चण्ड प्रकृति ऋषि सों बहुरि, बोले स्नेह समेत ॥
वत्स ! यथा सत्कुसुम सों, केवल मिलत सुगंध ।
त्यों मंगलही होत है, भए साधुसम्बन्ध ॥
सूर्य संग सों होत ज्यों, नलिन मलिनता दूरि ।
त्यहि विधि सज्जनसंगसों, नाश होत दुखभूरि ॥
सत्यसंध धार्मिक परम, दशरथ भूप उदार ।
रक्षणाय हैं सर्वथा, सबहीं समय तुम्हार ॥
वत्स ! विप्रकृत क्षमामय, जलसिंचन कहँपाय ।
धर्म क्षेत्र उत्पादि का, शक्ति युक्त सरसाय ॥

दशरथादि धार्मिक महा, महीपाल गण जौन।
तव अनुकम्पासलिल के, योग्य पात्र हैं तौन॥
तमो गुणाच्छादित प्रकृति, जाम दग्न्य विकराल।
निनरि महर्षि बशिष्ठ के, शिष्ठवचन त्यहिकाल॥
गर्वपूर्ण बोले वचन, भगवन्! वारिद सोहिं।
कबहुँ समय अनुसार बहु, बज्रहु निपतित होहिं॥
कह वशिष्ठ करिये क्षमा, जाम दग्न्य मतिमान।
अबलौं शुक्तिक खण्ड महँ, रजत केर अनुमान॥
करत हते हम भ्रम भरे, अस कहि भे मुनि मौन।
कृत्तिवास कह उचित है, यहै कियो मुनि जौन॥
जलकण कर्ण प्रविष्ट जो, क्लेश देत त्यहि काहिं।
काढ़नकी सामर्थ्य है, केवल जलही माहिं॥

एकोनात्रिंससततम सर्ग॥ १२९॥

परशुराम पराभव॥

दो०–उच्चस्वर सों परशुधर, यहि विधि कह्यो रिसाय।
राम दाशरथि है कहां, भट मानी लघु काय॥

रामगीती छन्द॥

ममपितृ मातुल अस्त्रशिक्षा निपुण विश्वामित्र।
तिनकेरि कैसी अस्त्रविद्या है अमोघ बिचित्र॥
यहिकी परीक्षा लेनकी मोहिं लालसामन माहिं।
सो आय दशरथ सून्डु दिखरावैं इतै हम काहिं॥
गर्वित वचन भार्गव कथितसुनि चले लक्ष्मणबीर।
कम्पित भयो अति कोपसन उनकेर गौर शरीर॥

ह्वैअग्रसर लक्ष्मण कह्यो यहि भांति हेद्विजराज ! ।
जो विप्रकुल में जन्मलहिनहिंकरत ब्राह्मणकाज ॥
करि कवच धारण करत है उपवीतकर अपमान ।
अरुहोत लज्जित नेक नहिं धारत महाअभिमान ॥
त्यहिकेर असउद्धत स्वभाव विचित्र है कछुनाहिं ।
धनुवाण धारण वेद शास्त्र विरुद्ध है मुनि काहिं ॥
निजकाहँक्षत्रियकुलविनाशककहिपरशुधर! आप ।
बलदर्प दिखरावहु निरन्तर कहि कुठार प्रताप ॥
पै स्मरण राखहु जबकियो तुम क्षत्रिकुल संहार ।
तब रामसम जनम्यो नकोउमहिपालभूमिमँझार ॥
तब प्रज्वलित तुम भये केवल शुष्कतृण चयमांहि ।
अब तव कथन ते बाहुकण्डू कष्ट हमहू काहिं ॥
होन लाग्यो है अधिकतर समरक्रीड़ा काज ।
यदि युद्ध इच्छा बलवती ऐसी तुम्हें ऋषिराज ! ॥
तौ प्रथम अपनो अस्त्रबल मम सन्मुखहियहिकाल ।
दिखराइये देखहुँ मोहूं तव अस्त्र शस्त्र कराल ॥
निज वर्ण आश्रम धर्महीन मनुष्य तुम सम जौन ।
नहिं अहै अग्रज अग्र जैबे योग्य क्यहुबिधितौन ॥
दो०–तिरस्कारमय बाणइव, सुनि लक्ष्मण के बैन ।
भे भार्गव अप्रतिभ कछु, तेज पुंज बल ऐन ॥
पुनि तत्क्षण क्रोधांध ह्वै, अति कठोर मुनि घोर ।
कोपारुण नैनन लख्यो, श्रीलक्ष्मण की ओर ॥
पुनि बोले रे गर्वयुत, बर्बर क्षत्रिय बाल ! ।
बिना बिचारे जो कहे तू, कुवाक्य यहि काल ॥
त्यहि कर फल है है यहै, यह मम घोर कुठार ।

महीरेणुका शून्य द्रुत, करि हैं छनक मँझार ॥
हँसि लक्ष्मण उत्तरदियो, यह यश है तव ख्यात ।
मही रेणुका शून्य तुम, करी हृदय हरषात ॥
श्लेषउक्ति यह सुनि मुनि मनमें * उपज्यो अधिक क्रोध त्यहि छनमें ॥
पुनि बोले भार्गव भटमानी * रे बिषकण्ठ बाल अज्ञानी ! ॥
बोलु बिचारि बचन मम आगे * नतु जैहै जमपुरहि अभागे ! ॥
सुनि सौमित्रि परशुधर बैना * बोले बिहँसि बहुरि बल ऐना ॥
जो मुनिनायक ! तुममनमाहीं * बिषकण्ठहि जानहु हमकाहीं ॥
तौ हम तुम महँ गुरुशिष्यकर * भयो भले सम्बंध परस्पर ॥
मिटै बिवाद हमार तुम्हारा * योग्य यहै यासों निर्धारा ॥
सुनि मुनिवर मनमाहिल जाई * बोले बहुरि बचन रिसियाई ॥
सो०—ठहरु बाल बाचाल !, बिषरसना उत्पाटि तव ।
प्रती कार यहि काल, करहुँ धृष्टता केर मैं ॥
लक्ष्मण कह्यो एक मम रसना * उत्पाटित करि पैहौ यस ना ॥
अपरसहस्राधिकरसनापुनि * तुमनिरस्तकरिहौ क्यहिविधि? मुनि !
गूढ़ प्रश्नपै दृष्टि न करि कै * बोले मुनि स्वभाव अनुसरिकै ॥
स्तुति निन्दा इच्छा अनुसारा * करै हमारी सब संसारा ॥
पै द्विज द्रोही अधम कुचाली * क्षत्रियजातिजु अविनयशाली ॥
दमन करब त्यहि काहँ हमारा * जीवनब्रत है राजकुमारा ! ॥
बालक पन बश तू मम आगे * स्पर्धाकरहि इती भय त्यागे ॥
जानु राखु पै—ज्वाला जाला * ज्वलित हुताशन केरि कराला ॥
तुच्छमशाक शावक त्यहिकाहीं * जीति सकै काहू विधि नाहीं ॥
सुनि मुनि बचनबहुरिबलऐना * लखण ब्यंग्य बोले इमिबैना ॥
दो०—मन्द पवन के बेग सों, धरणी धरहू केर ।
अहै असम्भव सर्वथा, कम्पन काहू बेर ॥

यह सुनि भार्गव लखणपै, कीन्ह्यो कोप कराल।
कँपन कलेवर सब लग्यो, भृगुपतिकरत्यहि काल॥
मुष्टि बांधि दृढ़ घोर अति, गह्यो सँभारि कुठार।
क्रुद्ध सर्पसम दर्प सों, तजन लगे फुंकार॥
भीषण अवसर देखि कै, दर्शक वृंद समस्त।
किंकर्तव्य विमूढ़ मति, भये तौन छन व्यस्त॥
यहि विभीषिका कहँ द्रुतहि, दूरकरन के हेतु।
आय गये भार्गव निकट, राम सूर्यकुल केतु॥
द्वन्द्व युद्ध उद्यत अनुज, लक्ष्मण काहँ निवारि।
दण्डप्रणतिकीन्हीमुनिहि, पुनिअनुनयअनुसारि॥
यों बोले मृदु वचन प्रभु, हे भृगुबंश कुमार!।
है सौभाग्यो दय भयो, बड़ यहि समय हमार॥
सो०—देव देव भगवान, शंकर के प्रिय शिष्य कर।
दर्शन सुखद महान, मिल्यो हमैं स्वयमेव इत॥
दो०—शास्त्रज्ञान अरुशस्त्र की, शिक्षामहँ मुनि भूप!।
योगी योधा दोउन के, अहौ मुकुट अनुरूप॥
किंकर प्रति आज्ञा अहै, कहा? कहहुप्रभु! सोइ।
बालबुद्धि मम अनुज की, क्षमहु ढिठाई जोइ॥
त्रिभुवन सुन्दर जनमन रंजन * श्याम स्वरूप काममदभंजन॥
लखि उपज्यो मुनिकेमन छोहा * छनक भयो उररोष बिछोहा॥
पै ज्यों मलिन वसन के ऊपर * चढ़त न केसर रंग मनोहर॥
त्यों तामस मुनिके मनमाहीं * रह्यो भाव वह बहुछन नाहीं॥
कहे परशुधर कर्कश स्वरसों * यहिविधि वचनरामरघुबरसों॥
दशरथ तनय राम भटमानी * तुमही अहौ महा अभिमानी॥
अहंकारवश जो शिव धनुकर * कीन्ह्योकुमति विमूढ़निरादर॥

पै पिनाक वह रह्यो पुराना * त्यहि तोरे तवबल नहिंजाना ॥
ममकर लखहु जोभीम स्वरूपा * यह हरिधनु धनुष न कर भूपा ॥
गुणअर्पण करि तुम यहि पाहीं * निजबलदिखरावहु हमकाहीं ॥
दो०—मोर प्रतिद्वन्द्वी बनन, योग्य अहौ कै नाहिं।
शक्तिजानितब जानिहौं, मैं यह निज मन माहिं ॥
तुम्है सकुलयमसदनकहँ, पठवन निमित हमार।
भयो आगमन है यहां, दशरथ राजकुमार ! ॥
भार्गव सों बोले विहंसि, रघुकुल कमल दिनेश।
रच्योविरंचि तुम्हारकुल, हमरो पूज्य द्विजेश ! ॥
निजगृहअथवायमगृहहि, जानहेतु हम नाथ ! ।
हैं प्रस्तुत; पै चहहिं नहिं, युद्ध तुम्हारे साथ ॥
परशुराम श्रीराम सों, कह्यो कोपि त्यहिकाल।
बचन बोलु ह्वै स्वस्थचित, मम सन्मुख नृपबाल ! ॥
आशिष वादक शान्तऋषि, बशिष्ठादि अनुरूप।
केवल ब्राह्मण हम न हैं, हैं अत्युग्र स्वरूप ॥
घोर समर महं हम लियो, गणपति दन्त उखारि।
सुरसेनानी स्कन्दहू, गये समर महं हारि ॥
यक क्षत्रिय अपराध सों, पृथ्वी यक इस बार।
करिदीन्ही क्षत्रिय रहित, करिकै कोप अपार ॥
क्षत्रिय शिशुगर्भस्थ जे, तिनके करि शतखण्ड।
क्षत्रिय शोणित सों भरे, हमहृद पांच अखण्ड ॥
पितृलोक तर्पण कियो, उन मैं मैं हरषाय।
अरुतुम केवल द्विजगनो, मोहि कहं गर्ब बढ़ाय ॥
प्रभुपुनिमुनिसनयोंकह्यो, हे भगवान् ! यहिमाहिं।
तुव नृशंस ताही प्रकट, जानि परै हम काहिं ॥

नहिं नृशंसता अहै प्रशंसित * किन्तुघृणा योग्यहिहैशंसित ॥
भृकुटिकराल कुटिलकरिभृगुपति * बोलेत्यहिछनह्वै कोपितअति ॥
देखत हौं तुम कहं बल केरा * भयो अहै अभिमान घनेरा ॥
अब तत्पर ह्वै गहि धनुकर महं * प्रथमप्रहार करहु तुमहमकहं ॥
समर नियम हमरो यहि भांती * प्रथमहि करै प्रहार अराती ॥
मेरे प्रथित प्रहार अनन्तर * प्रति प्रहार कर रहैनअवसर ॥
उठ्यो कुठार कंधपर परई * तत्क्षण प्राण शत्रु के हरई ॥
तब अभिराम राम नय अयना * बोले बहुरि धर्म मय बयना ॥

दो०--करै हमारे कण्ठ महँ, चाहै हार विहार ।
विप्रवर्य ! कै आप को, सोहै कठिन कुठार ॥
कुलललनन के लोचनन, जलकण विलसैश्याम ।
कै कज्जल की कालिमा, लसै अतीव ललाम ॥
चन्द्र मुखी मुख कै लखैं, कै यममुख दुखमाहिं ।
पै तपसी हिंसा कबौं, ह्वैहै हम सों नाहिं ॥
यह सुनि भृगुपति की दशा, भई तौनछन सोय ।
ज्योंव्रण मुख में लवण के, परे विकल कोउ होय ॥

क्रोध अंध भे भार्गव ऐसे * काल कराल मूर्तिथित जैसे ॥
बोले पुनिमुनि यहिबिधिबानी * रेक्षत्रिय बालक भटमानी ! ॥
कोपित कालसर्प सँग माहीं * कुमतिबिवश क्रीड़ा करुनाहीं ॥
विप्र विप्र कहि बारम्बारा * करु ननिरादरअज्ञ ! हमारा ॥
अशनि खंडसम चंड हमारा * लखुयह कठिन कठोरकुठारा ॥
चिरते तजि प्रियक्षत्रियबधकहँ * रह्यो निरत इंधन छेदनमहँ ॥
बाणदण्ड बिन यह कोदण्डा * चिरते भयो न समर प्रचण्डा ॥
निर्विष आशीविष अनुरूपा * धरे यहै अतिशान्त स्वरूपा ॥

दो०--याही कारण जाति तव, दग्धोत्थिततरु न्याय ।

महि मण्डल आवृतकियो, बहुरि वृद्धि कहँ पार्य ॥
सहित अनुज अरु पिताके, पठइ तोहिं यमद्वार ।
रक्तयज्ञ करिहौं बहुरि, मैं आइ सवीं बार ॥
सुनि भार्गव के वचन प्रभु, बिहँसि कहे यों बैन ।
महानुभाव महर्षि भृगु, वंशज जो तप ऐन ॥
ब्राह्मण कहि परि चित भये, त्यहि करलज्जालाह ।
यक अद्भुत व्यापार हम, अवलोक्यो मुनिनाह! ॥
एक ओरप्रभु ! तुम महँ है जस * क्षात्रोचित बिक्रमबल साहस ॥
अपर ओर हैं त्यों शुभ कर्मा * तपविद्या आदिक कुलधर्मा ॥
यहि कारण मम बाहु मुनीश्वर ! * अभिनवशिक्षितधनुविद्याकर ॥
परिचय देन हेतु जस उद्यत * त्यों तव पदस्पर्शहू चाहत ॥
अन्तिमउक्त उपायहि समुचित * है हम कहँ हेसुभटप्रयूजित ! ॥
रघुवर कर उत्तर सुनि मुनिवर * बहुरिदियोयहिविधिप्रत्युत्तर ॥
राम नाम पर तव धिक्कारो * तव भुजदण्ड अतीवअसारा ॥
निपट कपट अनुनय अनुसरहीं * भीरुस्वभाव, न साहसधरहीं ॥
दो०—किन्तु शान्त नहिं होइ हैं, भार्गव याहि निहारि ।
करीकलभके नृत्त्य सों, होय न द्रबित मृगारि ॥
तोसों शतगुण श्रेष्ठ है, राम ! तोर लघुभाय ।
वहि में क्षत्रियतेजअरु, साहस कछु दरशाय ॥
धिक् कौशिककहँ जोमहा, भीरु प्रकृतिकुलजात ।
तवसमानकरिशिष्यनिज, मनमहँ नाहिं लजात ॥
गुरु निन्दा सुनि प्रभुहिये, भयो क्रोध संचार ।
होय ऊष्ण शीतल जलहु, ताप पाय बहु बार ॥
बोले प्रभु—मुनि ! यह कहा, भयो मोह तुमकाहिं ।
मम गुरुकी निन्दा करहु, मोरेइ सन्मुख माहिं ॥

कोऊ विषय की अधिकता, उत्तम नहिं सबकाल ।
क्षीरसिंधु हू के मथे, उपज्यो गरल कराल ॥
वाक्य वीरता सन तुम्हरी इत * रघुकुमारह्वै है नहिंविचलित ॥
करि शंकर धनु भंजन काहीं * मम भुजकण्डुअबहिगइनाही ॥
विषय गर्व करि चूर्ण तुम्हारा * ह्वै है त्यहिकर अब संहारा ॥
कहहुबेगि वास्तवमहँ भृगुपति ! * का इच्छा तुम्हरी है हमप्रति ॥
पुनि उत्तर दीन्ह्यो इमि भार्गव * साधु २ दशरथ सुत राघव ! ॥
कहे वचन अब तुम क्षात्रोचित * भये हमहुँ सुनिकै सन्तोषित ॥
करहु द्वन्द्वरण साहस धारी * यहहीहै अभिलाष हमारी ॥
पै प्रथमहि तव बल अनुमाना * करि; करिहैंहमसमरविधाना ॥
दो०—नतु अतुल्यबल दुग्धमुख, यक क्षत्रियकर बाल ।
त्यहि के जननी पयमिले, रुधिरमाहिं यहिकाल ॥
ह्वै है रञ्जित बृथा यह मम, रण कठिन कुठार ।
यासों यहि हरिचाप पै, रोपहु गुणहिकुमार ! ॥
यह कहि वह भीषण धनुष, धरयो महीतलमाहिं ।
प्रभुसलील करिकोपकछु, ग्रहणकियोत्यहिकाहिं ॥
जबहि जानुभर देइ कै, गुण रोप्यो जगदीश ।
तब धरणी कंपित भई, नये शेष के शीश ॥
भूमि कह्यो यहि भांति करि, आर्तस्वर चीत्कार ।
होत विदारित वक्षमम, हे प्रभु ! जगदाधार ! ॥
द्रुतनिज कार्मुक कहँ रघुराई ! * अनुकंपा करि लेहु उठाई ॥
भार्गव दत्त महाधनु ऊपर * गुणरोपणकरिगुणनिधिरघुवर
महाबाहु पुनिवाम बाहु सन * लियो उठाय रमेशशरासन ॥
अरुभृगुपतिदिशिजनमदमोचन * लख्योकुटिलकोपारुणलोचन ॥
बहुरि बल सहित प्रभु बलवन्ता * ज्या ज्यायसी श्रवण पर्यन्ता ॥

सव्येतर करसों करषी जब * कड़२ ध्वनिव्यापीत्रिभुवनतब॥
जानि परयो जनु सातपताला * भूनभभे विदीर्ण त्यहि काला ॥
धनुस्वनसन त्रिभुवन के प्रानी * भये बधिर मुख कढ़ै नबानी ॥

दो०—गगन स्थित सुर गणसबै, निज नारिन, उरलाय ।
दृढ़ करि कर पकरे अपन, यान महा अकुलाय ॥
सैन्य मंत्रि सेवक सहित, मूर्च्छितभे अवधेश ।
भ्रमत भ्रमे पथ सूर्य रथ, हय सुन्दर वय वेश ॥
महाशक्ति श्री जनकजा, लखण शेष अवतार ।
विष्णु अंश भृगुपति रहे, अचल चित्तअविकार ॥

भार्गव दत्त द्वितीय शरा सन * गहतहेरिप्रभुकहँसियत्यहिछन॥
शंकित भई यों हृदय मँझारी * कहा अपर कोउ राजकुमारी ॥
प्रियतम कण्ठ माहँ जयमाला * अर्पण करि है इहयहिकाला ॥
अस विचारि प्रभुओर किशोरी * लख्योप्रणयकृतकोपबिभोरी ॥
पुनि मुनि सों बोले रघुबीरा * गौरव युक्त वचन गम्भीरा ॥
दियो धनुष जस तसयकसायक * देहु हमैं अबतुमभृगुनायक ! ॥
हतमति जामदग्न्य प्रभुकर महँ * जैसे दियो तेजमय शरकहँ ॥
ताही छन त्यहि सायक साथा * भृगुपति तनुते श्रीरघुनाथा ॥
तेजपुंज अपनो हरिलीना * तब मुनिभे हरितेजबिहीना ॥
यक साधारण ब्राह्मण केरा * रह्यो तेज तिनमहँ वहिबेरा ॥
भृगुनायक मुख सन्मुख हेरा * प्रकट विराट रूप प्रभुकेरा ॥
लख्यो रामके मुखते निर्गत * अग्निशिखाउन्नतअतिशतशत॥

दो०—प्रभुकी भीषण मूर्ति मनु, रसना काढ़ि कराल ।
सकल विश्व कहँ ग्रसतहै, कालरूप त्यहि काल ॥

सो०—दशनावलि के घोर, कटकट रव सों सब जगत ।
कंपत चारहु ओर, भीमरूप लखि भय बिवश ॥

दो०--उनके भैय प्रद लोचनन, कढ़त धूम की राशि।
ब्यापि लियो ब्रह्माण्डसब, सूर्यप्रकाश विनाशि॥
बहुविध आयुध करधरं, बलीबीर अति पीन।
प्रभुके आनन बिवर महं, प्रविशात होत विलीन॥
सहससीस सहसननयन, सहसन चरण समेत।
प्रकट विराट स्वरूप तहं, त्रिभुँवन जीव निकेत॥
कोटि सूर्यसम प्रज्वलित, विद्युत पुञ्ज अनन्त।
प्रभु आकृति पै लहत हैं, उद्भासित ह्वै अन्त॥
अति प्रचण्ड दृष्ट्रान सों, कालरूप यम बृत्य।
अमित प्रकटि प्राणीन पै, करत आक्रमण कृत्य॥
अट्टहास सों जन्महीं, ज्यों ब्राह्माण्ड अपार।
भ्रुकुटि भंग सों होत त्यों, सबकर द्रुत संहार॥
लोचन मंनभय दायिनी, प्रभुकी आकृति घोर।
लखिमूर्छित ह्वै महीमहँ, गिरे मुनीश किशोर॥
सो०--घोर स्वरूप छपाय, करधरि मुनिके शीशपर।
कह यहि विध रघुराय, होहु सचेत तपस्विबर!॥
स्पर्शपाय रघुबर कर केरा * भेभार्गव सचेत वहि बेरा॥
पूर्वदृश्य वह परम विलक्षण * स्मरणभयोभय मयसबतत्क्षण॥
उठि करजोरि ईशके आगे * तब मुनिनाथ कहनइमिलागे॥
बाल्यकाल मैं मैं तपद्वारा * तोषित कीन्हे विष्णु उदारा॥
चक्रतीर्थ महँ दै मोहिं दर्शन * कह्यो सुदर्शनधरण सुदर्शन॥
ब्रह्मन्! हम तुमकहँयहिअवसर * देहिंतेजनिजअजयविजयकर॥
अब तुम मम चिदंशवर पाई * लौटि आपने आश्रम जाई॥
मम अंशांश सहस भुज भूपति * जोतवपितहिंहत्योबलयुतअति॥
ताहि मारि पुनि यकइस बारा * कीन्हेउ क्षत्रियकुल संहारा॥

तुम करिकै यह दुष्कर करणी * कश्यपऋषिकहँदीन्हेउधरणी ॥

दो०—जब त्रेतायुग आदि में, परमा शक्ति समेत।
लेहैं हम अवतार कहँ, कोशल ईश निकेत॥
ह्वै हैं पुनितव मम मिलन, तब चिदंश निजदत्त।
मैं लेहों लौटाय ऋषि!, तुम सों करि आपत्त॥
सोइ सनातन विभु अहै, तुम प्रभु जगदाधार!।
भ्रुकुटिभंग सों करत हो, सृष्टि सिथिति संहार॥
तुम्हरोई वह तेज बर, हे रघुवंश कुमार!।
विद्यमान अबलौं रह्यो, मेरी देह मँझार॥
अब मैंजान्यो आप कहँ, हे लोकप लोकेश!।
तब महिमा जानैं नहीं, हर विरंचि दे वेश॥

रामगीती छन्द ॥

जिमिमन्दमारुत सों प्रचालित जलद जालअपार।
लखि परै नभमहँ वृक्षगजहय प्रभृति नानाकार॥
तिमितुम चराचर वस्तु के आकार सों अविकार।
संसारकहँ परिब्याप्त कीन्हे हौ कृपा आगार!॥
तुमरामरमारमण! अनन्त यहिब्रह्माण्ड मुक्ताकेर।
हौ लम्बमान अमान सूत्र अछिन्न सबही बेर॥
जगदीश! ज्यों पुष्पन मनोहर गंधकेर विकास।
अरु तिलनमहँजिमितैलकर आद्यन्तमध्यनिवास॥
भस्त्रामँझार यथा पवन है बर्तमान विशेष।
तिमितुमअहौ सबआकृतिन महँविद्यमानपरेश!॥
प्रभु! क्षुद्रतर बटबीज अन्तर सदा जौन प्रकार।
सुविशाल बटतरु केरि सत्ता बसत बिन आधार॥
विभु! सूक्ष्मतर परमाणुरूप तुम्हार अन्तर माहिं।

त्यहिभाँतितीनिहु कालमहँ ब्राह्मण्डचयदरशाहिं ॥
श्रीवास ! वासु प्रयोग अर्थ यथार्थ अहै निवास ।
अरु देव पदकर कह्यो अर्थ प्रकाश कर वित्रास ! ॥
तुमसूर्यरूप करहु प्रकाशित नित भुवन समुदाय ।
ब्रह्माण्ड तुमही महँ अधिष्ठित अहै हे उरुगाय ! ॥
तव नाम यासों वासुदेव कहैं सबै संसार ।
हैं पृश्नि पदके अर्थ जल श्रुति अमृत अन्न अपार ॥
हैं निहित उक्त पदार्थ तुम्हरे गर्भ मह यहि हेतु ।
सब पृश्निगर्भ कहैं तुम्है नयसेतु ! रघुकुलकेतु ! ॥
रविवन्हिहिमकर-कर-निकरब्रह्माण्डमण्डल माहिं ।
प्रतिफलित होयकरैं प्रकाशित सबपदार्थन काहिं ॥
सोसबतुम्हारे कचनिचय हैं सदय ! चिन्मय! राम! ।
यहिहेतु सब कीर्तन करैं तव प्रथत केशव नाम ॥
आनन्दमयहौ लह्यो यासौं नन्द नामा रोप ।
गो नाम जगकर करहु पालन प्रथित यासोंगोप ॥
कू केर अर्थ अहै अमंगल त्यहि विनाशहु आप ।
यासों कुमार कहैं तुम्है सब प्रभु ! अपूर्व प्रताप ! ॥
यहिभाँति सब संसार मैं कमलेश ! ईश ! उदार ! ।
विख्यात है शुभनाम तुम्हरो नन्दगोप कुमार ॥
मा अर्थ विद्या श्री अहै अरु अर्थ धव कर नाथ ।
माधव कहत यहिहेतु तुमकहँ सकलजन रघुनाथ ॥
निर्वाणमय निज ब्रह्मसत्ता सों प्रभो अविकार ! ।
नहिं होइ च्युत यासों कहत अच्युत तुम्है संसार ॥
जनशब्दकर है अर्थजन-धन !जन्म जगतमँझार ।
है अर्थ अर्दन शब्दकर कोउ वस्तुकर संहार ॥

तुम्हरो स्मरण कीर्तन मनन आराधनाध्यानादि।
जेजनकरैं मनलायकै सन्तत अनन्त! अनादि!॥
वै जन्म बारम्बार जगमहँ लहत क्यहुबिधि नाहिं।
यासों कहैं सबजन जनार्दन मोक्षहित तुमकाहिं॥
मुच धातुकर है मुक्ति अर्थ यथार्थ जगतीजात!।
दा धातु करहै अर्थ दाता व्याकरण विख्यात॥
तुमदेहु मुक्ति उन्हें, भजैं जे तुम्हें होय विरक्त।
तुमकहँ मुकुन्द कहैं सबै यहिहेतु जन अनुरक्त॥
है अर्थ दशरथ केर आत्मा रहहु तुम त्यहि माहिं।
सबदाशरथि यासोंकहैं हे अजविरज! तुमकाहिं॥
ज्यहि चतुर्व्यूह मँझार रहि तुम अविच्छिन्नसदैव।
प्रति पालसब संसार केर करो यथाविधि, दैव!॥
सोइ चतुर्व्यूह कियो प्रकट तुमलै मनुज अवतार।
सुरकार्यसम्पादन निमित यहिमृत्युलोक मँझार॥
दो०—भयो पराभव आज जो, मेरो तुम्हरे हाथ।
सो लज्जा कर विषयनहिं, हे प्रभु त्रिभुवननाथ!॥
बोले यों राघव बहुरि, ब्रह्मन्! किन्तु हमार।
शरसंधान न ह्वै सकै, निष्फल क्यहू प्रकार॥
जोशर तुम हमकहँदियो, ताहि कहौ क्यहिठौर।
त्यागकरहिं हमयहिसमय, हे भृगुकुल शिरमौर!॥
गर्भस्थितशिशुहितलियो, तुम जो पातक शीश।
होन चहिय त्यहिकेरअब, प्रायश्चित मुनीश!॥
महीमाहँ तव दिव्य गति, अरु तप संचित लोक।
हरहुँ कहाइन दोउन मैं, मैं अब पुण्यश्लोक!॥
सो०—कह भार्गव भगवान!, जब कश्यपऋषि वर्य कहँ।

सकल मेदिनी दान, मैं दीन्ह्यो श्रद्धा सहित ॥
हे प्रभु रमानिवास!, तब उन हमसन यों कह्यो ।
करन न पैहौ वास, अबतुममम अधिकारमधि ॥

तब सों गिरि महेन्द्र के ऊपर * करहुँ वास मैं जप तप तत्पर ॥
यहि कारण गति रोध न कीजै * मेरीविनय मानि यह लीजै ॥
प्रभु ! नतुनिजनिवासथलकाहीं * लौटिजाय सकिहैं हम नाहीं ॥
किन्तु सुकृत जोकछुहम कीन्हा * सो सब हम तुमकहँ दैदीन्हा ॥
स्वर्गद्वार हमार कृपाला ! * शरतजिकरहु रुद्धयहिकाला ॥
भार्गव कथनहि के अनुसारा * बाण तज्यो रघुराज कुमारा ॥
मुनिके सकल लोक तपसंचित * नष्टकिये वहशर प्रभु प्रेरित ॥
भृगुपतिकरिविभु प्रभुहिप्रणामा * करि प्रदक्षिणा गे निजधामा ॥

सो०–गिरि महेन्द्र की ओर, जबै गये भृगुनाथ मुनि ।
तब अशकुन सबघोर, नष्ट भये दशहू दिशन ॥

दो०–निर्मल दिकमण्डल भये, और सबै सुरवृन्द ।
प्रभुहि प्रणति करि२ गये, निजभवनन सानन्द ॥
पुनि बोलाय कै वरुणकहँ, त्यहिक्षण श्रीरघुनाथ ।
मुनिप्रदत्त वैष्णव धनुष, दीन्ह्यो उनके हाथ ॥

दशरथादि सब भये सचेता * आये पितु पहँ कृपानिकेता ॥
शंकितनिरखि पितहि सन्मानी * बोले राम मनोहर बानी ॥
तात ! गये भृगुपति निजगेहा * करहिं न कोउ कछू संदेहा ॥
सैन्य सकल तव भुजबल रक्षित * अवध प्रयाण करै हर्षितचित ॥
दशरथ खोई निधि जनु पाई * पुलकिततनुसुख कह्योनजाई ॥
सुत सुत कहि लै गोद भुआरा * प्रभु मुख चुम्बत बारम्बारा ॥
कह बशिष्ठ सों अब मगमाहीं * ऋषिबर ! वाद्यबजै कहुँनाहीं ॥
वाद्यनाद सों कहूं कदाचित * होयन नूतन बिपद उपस्थित ॥

दो०—यहसुनि दशरथके वचन, रघुकुल मणि मुसक्याय ।
भे आरूढ़ सुगूढ़ गति, अपने यानहि जाय ।
यथा समय पहुँचे जबै, सब सिद्धा श्रम पास ॥
तब उतरे प्रभुयान ते, करत स्वतेज प्रकास ।
उटज कुटज वेष्ठिथ बने, उनमह सियसँग जाय ॥
ऋषिऋषि नारिन कहँ करा, प्रणतिरामशिरनाय।
मुनि पत्नीयकटक रहीं, जनक सुता छबिदेखि ॥
कहन परस्परसब लगीं, यों अति अचरजलेखि ॥

यहि मंजुल मुख सन्मुख माहीं * पावत शशि शोभाकछुनाहीं ॥
इन छबि अयननयन युगआगे * नील नलिनं हैं तुच्छअभागे ॥
इन भ्रुकुटीनदल्योनिजछबिसन * सुमन शरासनकेरशरासन ॥
यह कचनिचय नीलद्युतिसुंदर * जीतिलियेश्यामलजलधरबर॥
यहि श्री अंगनिकटअतिशोभित * श्रीके अंग लगत श्रीविरहित ॥
यहि प्रकार बररूप निहारी * कहहिंविमोहितमनमुनिनारी ॥
दशरथादि कहं बैखानस गण * दियेसकलआशिषशुभत्यहिक्षण
तहं ते विदाहोय त्यहिकाला * पहुंचे अवध मध्य महिपाला ॥

दो०—जिमिज्योत्स्नाआगमनसन, उपवन सुमन सयुक्त ।
होत सुशोभित चित हरत, ह्वै अपूर्णता मुक्त ॥
कृत्तिवास श्रीशक्ति के, आये तीन प्रकार ।
अवधनगरअतिशयलही, शोभा जगत मंझार ॥

त्रिंशसततम सर्ग ॥ १३० ॥

हिममयहिमगिरिशिखरनिचयकहं * अधिकश्वेतकरिबेकहंउनमहं ॥
ज्यहि प्रकार खड़िकाकर मर्दन * करै कोऊ मतिमन्द मूढ़जन ॥
अथवा अरुण कमलछवि काहीं * अधिक बढ़ावन हितउनमाहीं ॥
करिकोउ लालगुलाल विलेपन * देय मूढ़ता केर निदर्शन ॥
कै पूर्णिमा रैनि उजियारी * जगप्रसिद्ध त्यहिकरबबिचारी ॥
नभ महँ गगनदीप उद्दीपन * करै कोऊ अनवस्थितमनजन ॥
मधुमिष्ठता अधिक करिबे कहँ * मिश्रित करै शर्करा त्यहि महँ ॥
अथवा इन्द्रचाप करिचित्रित * करन चहै कोउताहिसुशोभित ॥

दो०—दामिनि दाम ललामकहँ, शोभित करबेकाहिं ।
यथा हरिद्रा चूर्ण कर, अनुरंजन त्यहि माहिं ॥
तैल मेलि नव नीत कहँ, मसृण करन आयास ।
सब बातुलता के अहैं, ज्यहि प्रकार आभास ॥
साधारण उपमान चय, द्वारा अनुपम काहिं ।
प्रकट करनकर यत्नहू, हँसन योग्य त्यों आहिं ॥
झिल्ली रवसों कोकिला, के पंञ्चम स्वरकेर ।
होय सकै अनु मान नहिं, क्यहु बिधि काहू बेर ॥

रामगीतिछन्द ॥

साक्षात श्रीके आगमन सों अवध श्री कमनीय ।
अभिनव लह्यो सौन्दर्य वर्य महान जो रमनीय ॥
त्यहि केर अनुभव हू करब दुस्तर अहै मनमाहिं ।
बर्णन करब तौ दूर है यहि मनुजमतिसन वाहिं ॥
परिपूर्ण माहि अभाव अथच अपूर्णता त्यहिकेरि ।
नहिं मन्द मानवमति सकै तिहुँकालमहँ यहहेरि ॥

अरु है उपस्थित समस्या ऐसिहि बिषम सुमहान।
ज्यहि हेतु पूरण पुरुष के अवतार ते जो स्थान॥
है चुक्यो पूरण त्यही केरि अपूर्णता सुविशाल।
श्रीशक्तिके आगमन ते भइ दूरि है यहिकाल॥
चहुँ ओर बाजत ढगड़ दुंदुभि शंख मुरज मृदंग।
भेरी तुरी बीणा दमामी झांझ अरु मुहचंग॥
जिनके महास्वन सन महानगरी महा कमनीय।
शब्दापमान महान सागर समभई रमनीय॥
पर्वत सदृश उन्नत सुनील गजावली छबिधाम।
घनघटा गर्जन समगभीर निनाद करिअविराम॥
लागीकरन कर्णन बधिर; अरुसित बरनहयपांति।
बहुमण्डलाकृति गतिगमतलखि परैंतहँयहिभांति॥
मनुफेन उद्गीरण करत आवर्त परत दिखात।
त्यों शस्त्र सज्जित पादचारी चमू सुकठिन गात॥
आकाशसदृशसुनीलआयसकलितकव चहिधारि।
लखि परत उमड़त महा अब्धि प्रवाहकेअनुहारि॥
रथहय गजारोहीन के बहु अस्त्र शस्त्र समूह।
कुण्डल किरीट सुवर्ण रजरंजित परिच्छद जूह॥
अरुअन्य उष्णीषादि चमकत यहि प्रकार अनन्त।
मानहुँप्रतापालन शिखादरशाहिं अतिद्युतिमन्त॥
हीरक जटित राजतरजत बिघटित मनोहर छत्र।
मनु चन्द्रमण्डल अमित संचित चहूंदिशि हैं तंत्र॥

देखिपरैं सब दिशा सु निर्मल * अधिप्रसन्नछबि धवल लसतभल
मानहुं अवध अधीश्वर केरा * यश उज्ज्वल रह छायघनेरा॥
रजकणहीन गगन अतिश्यामा * नीलनलिनसमलसतललामा॥

कलिकासमे कमनीय दिवाकर ❋ उनकी किरण लसैंजनुकेशर ॥
बहु दिन पर श्रीरघुबर काहीं ❋ निरखन की सबके मनमाहीं ॥
बढ़ी लालसा याही कारण ❋ चहुंदिशितेनागरनरत्याहिक्षण॥
मनु उन्मत्त चले सब धावत ❋ उघरे अंग चेत नहिं आवत ॥
आगन्तुक मण्डली मँझारा ❋ प्रविशन लागे यही प्रकारा ॥

दो०-एकसाथ सब वेग सों, धाइचले प्रभु पाहिं।
कठिन गात्र संघर्ष तब, भयो परस्पर माहिं ॥
आभूषण थित रत्नचय, चूर्ण होय कमनीय।
गिरनलगे जिनसों भई, भूमि अरुण रमनीय ॥
छिन्नसूत्र ह्वै हार तहं, अंग भ्रष्ट भे भूरि।
मारग मुक्ता फलन सन, गयो तौन छन पूरि ॥
जानिपरैजनु निशिसमय, शोभा मय नभ माहिं।
महामनोहर छवि अमित, तारागण दरशाहिं ॥

नरिन्द छन्द ॥

उद्धत वा अविनीत भावबश पुरवासीजन माहीं।
भईविशंखलता यह त्यहिछन अवधपुरीमहंनाहीं ॥
किन्तु राममुखलखन लालसा सबकेहृदयमंझारा।
योंअधिकान रह्योनहिंकोउकहंवाह्यज्ञानविचारा ॥
बृहत राजपथ महं परिचारक राजपुरुष सामन्ता।
धनिकबनिकनरपालबृंदअरुद्विजमण्डलीअनन्ता॥
देव ब्रह्मऋषि राजभृत्य अरु दर्शक नगरनिवासी।
भईभीर भारी इनकी बहु खरे दास दलदासी ॥
कछु छनमहं जब सबजन पहुँचे राजपुरीके द्वारा।
तबकुंअरनपर लाजवृष्टिकहं करन लगीं पुरदारा ॥
नवकिसलययुतकुसुद पल्लवन ऊपरहग सुखकारी।

मनुमयंक मण्डलसन हिमकी होत वृष्टिअतिभारी ॥
भाइनसंग सत्त्वर स्यन्दनते उतरि राम सुखदाई ।
कीन्हीप्रणतिसकलजननिनकेचरणनशीशनवाई ॥
कौशल्या कैकेयि सुमित्रा आदिक सब महरानी ।
भई योगमायवश मोहित अकस्मात मुदमानी ॥
केवलसुतगण मुखचुंबन करि दैआशिष असमग्रा ।
पुत्रवधूमुखशशि निरखनकहंचलींसपदिह्वैव्यग्रा ॥
मिथिलानाथ सुता बरबर्णा रूपराशि सुकुमारी ।
तिनकहंलखिदशरथकीरानीभईउर परमसुखारी ॥

माण्डवि अरु श्रुतकीर्ति ऊर्मिला * राजकुमारी परम निर्मला ॥
दामिनिदाम सदृश लखि परहीं * कनकमंजरी छबिहिनिदरहीं ॥
जलद तोमसम चामर चय कहँ * निदरहिंमेचककच तुलनामहँ ॥
भौंहलता भ्रमरावलि मानहु * कालभुजगिनी कैअनुमानहु ॥
दृगमृग नलिन मीनमद भंजन * हयचकोर खंजन छविगंजन ॥
नासातिल प्रसून मदहारी * खगपतिसुकखग लज्जाकारी ॥
गृध्रवधू मदमोचनि सुन्दर * श्रवण गठनिवर महामनोहर ॥
लखिमुख श्री सबकर मनलोभा * भई दर्पहत दर्पण शोभा ॥
अधर प्रवालराग अनुरागत * बिंबबिंबसम जिनकर लागत ॥
दाड़िम बीज बिजयकर सुन्दर * दन्त अनन्त लसन्त निरन्तर ॥

दो०—कनककुंभअरुगिरिशिखर, निन्दक कुचचय पीन ।
कञ्चुकि अन्तर लसत ज्यों, राहुग्रस्त शशिछीन ॥
परम सूक्ष्म कटिसमन हैं, घटि डमरू मृगराज ।
कदलीकरि-कर लखिउरू, लहत हीन ह्वै लाज ॥
कुन्दइन्दुसम नख निचय, दीप्तिमान रमनीय ।
नूपुर कलरव करत भल, कनककलितकमनीय ॥

तिहुं भगिनिन के अग्रमहं, रहीं जानकी राजि ।
ज्यों लक्ष्मीके मुख उपरि, स्वच्छतिलकरहभ्राजि ॥
अदिति अंशजा कौशल्या कहं * करनहेतु कृतकृत्य जगत महं ॥
जगत जननिनिज मूर्तिप्रकाशी * ब्रह्ममयी अनादि अविनाशी ॥
परमा रमारूप सीता कहं * लख्यो राममाता सन्मुखमहं ॥
नित्यस्वरूपा नित निरंजनी * निरहंकारा भक्त रंजनी ॥
निर्लिप्ता त्रिगुणा जगहित हित * हैंसहास्यकरिआस्यअवस्थित ॥
देव देव दारा उन केरे * बपु बिराटबिच बसत घनेरे ॥
अरु प्रत्येक लोम बिबरन सन * ज्वलितब्रह्ममय ज्योतिसुशोभन
निसरि पसरि सबही संसारा * करै प्रकाशित जगदाधारा ॥
बसत बासु की बेणी माहीं * मुखमहं गंगाधर दरशाहीं ॥
अलकनमहं यमकेर विलासा * भ्रकुटीमहं सन्ध्याबिनि बासा ॥
दो०—श्रवणन महं मारुत बसति, नासा महं बिधिबास ।
लोचन पावक बाहुमहं, सुरपति केर विलास ॥
सकलप्रजापति दशनमहं, शशिकुच मण्डलमाहिं ।
बसुगणकर अंगुरीन महं, प्रकट भये दरशाहिं ॥
कटि गायत्री केर विकासा * सावित्री कर नाभि निवासा ॥
गुरु नितम्ब महं भुवर भुवनबर * ऊरुमहं भूलोक मनोहर ॥
जघन वास जलनायक केरा * चरणन महं निधिनाथकुवेरा ॥
चरण अंगुरिन ज्योतिष्माना * राजत दिनकर देव प्रधाना ॥
पुनि सहसा माया की माया * भई तिरोहित ज्यों घनछाया ॥
अरुतव सब भूपति कीकामिनि * त्योंअन्तःपुरवासिनाभामिनि ॥
निरख्यो जनक नंदिनी काहीं * बालबधू सम मन्दिर माहीं ॥
शान्तप्रकृतिअति सरलस्वभावा * लज्जावन्त भीरु सद्भावा ॥
दो०—अनुपमलखिलावण्यअति, सीता देह मंझार ।

पुरनारी रानिन सहित, बिस्मित भईं अपार ॥
अनुभव यह उरमहं भयो, मनु विधि बैठि यकन्त ।
अभिनव यह सौन्दर्यकी, गुच्छ रच्यो छबिवन्त ॥
श्री पदतल अरु तदुपरि सुन्दर * नखअवली यों लसतमनोहर ॥
मानहुं इन्द्ररत्न सों विजटित * उत्तमपद्म राग मणिविघटित ॥
युगल मुकुर निर्मल दरशाहीं * शोभा वरणिसकत नरनाहीं ॥
पदअंगुली भली अति उज्ज्वल * मनुनवनीत सृजितअतिकोमल
चरण शरण दायक जनकाहीं * जनु फूले पंकज थलमाहीं ॥
गुल्फन यह उपमा अनुसरी * प्रभावृक्ष की मनहुं मञ्जरी ॥
हिमकर कर द्वारा मनु विरची * लसहिं पिण्डिका सुषमासची ॥
गुरु उरु उभय अनूप सुशोभित * मानहु करिकरहींगुल मंडित ॥
अतिलघु कटितटइमि छबिछाजै * मनु प्रतिभू अनंगकर राजै ॥
नव नितम्बमनुकनक कलशावर * सिंदुर रंजित लसत मनोहर ॥
दो०–उपरिस्थित राजत अचल, शृंगावृत कमनीय ।
मानस सरवर सम लसत, नाभि स्थल रमनीय ॥
एकहि बलिकहँ बाँधिहरि, भे उन्नत गुरुगात ।
त्रिबलि बंधनहु के भये, कटितट नम्र लखात ॥
कुन्दकुसुम सहि सकत है, भ्रमर चरण करभार ।
पै सीता की बरभुजा, कनकलता अनुहार ॥
परम सूक्ष्म परमाणु की, गरिमाकहँ क्यहु काल ।
सहि न सकैं कोमल परम, मानहुँ कमल मृणाल ॥
सियकेकरतलअरुणलखि, शोभा धामन वीन ।
भे अशोक पल्लव नवल, शोकाकुल छबिहीन ॥
करअंगुली निकर शोभा मय * मनहुँ मल्लिकाके कोरक चय ॥
करनखपाँति मनहुँ मणिरंजित * दशशशिबिंब अनूपमशोभित ॥

ग्रीवा करक बीज छबिहारी * लसत अलंकृत अतिसुखकारी ॥
मुख सुषमाकी उपमा क्यहुथल * हैनहिं अरु जोअहै सुनिष्फल ॥
जबनिशिपतिअसहृदयविचारी * "अबशशिमुखकहिविश्वमँझारी
कोउ काहू की मुख छबिकाहीं * करिहै कबहुँ प्रशंसितनाहीं" ॥
यक्ष्माग्रस्त भयो हियहारी * तब को मुखसरि करै अनारी ॥
सियके सुधास्यंदि अधरन सन * सुधाकेर किय बसुधा धारन ॥

दो०—दशनश्रेणि कमनीयसम, सोहि रही यहि भाँति ।
मनुईषत रक्ता भसित, राजत गुञ्जापाँति ॥
चारु चिबुक मुखसन्निकट, सोहत यों रसणीय ।
मनु परिपक्क रसाल फल, स्वर्ण वर्ण कमनीय ॥
किधौं सुधासागर निकट, नागर मदन प्रवीन ।
अर्धचन्द्रकी रुचिर रुचि, रेखा अंकित कीन ॥
हास विलास प्रकास सन, सीता वक्ष मँझार ।
प्रकटत मानौं धवलद्युति, अगणित मुक्ताहार ॥
अरुण पद्मरज सों गठित, वंशा की अनुहार ।
सोहत सियकी नासिका, सब शोभा को सार ॥
जाके परिमल गंध सों, लुब्ध मधुप के न्याय ।
नील नयन तारा लसत, तदुपरि वर छबिछाय ॥
अंजन रंजित मीन मद, मोचन लोचन दोय ।
हेरि, हृदय महँ यह परम, अनुपम अनुभव होय ॥
युगलकमलमनुअनिलसों, आंदोलित रमनीय ।
मधुपभार सों जात हैं, उलटि उलटि कमनीय ॥
बंक कटाक्ष विलोकि यह, होत हिये अनुमान ।
मनौं मदनत्रय शरनकर, करि धनुपर संधान ॥
तीनलोक जर्जर किये, दोय शेष शर जोय ।

सियनैनन महँ धरिदिये, विश्वविजयकरिसेथ ॥
भ्रुकुटिलता मनु मदन के, बर कर पत्र लखात ।
कै विनगुनजग बशकरन, द्वै धनु धरे सोहात ॥
कुन्तल मण्डित कर्णयुग, मनु नीलोत्पल माहिं ।
धवल श्वेत पत्री सुमन, उभय भले दरशाहिं ॥
स्पष्ट अष्टमी चन्द्र सम, सोहतभाल ललाम ।
मृगमदतिलकलसैललित, श्यामल शोभा धाम ॥
अलकदाम लावण्यमय, सरबर केर सेवार ।
कै मुख पंकज पै लसै, मधुकर पाँति अपार ॥
शीशसुशोभितमणिनिचय, दीप सदृश दरशात ।
चिकुरनिकरउनकरमनौं, कज्जल पुंज सोहात ॥
क्षीर समुद्र तरंग चय, वेष्ठित रमा समान ।
महिला मण्डलमहँसिया, शोभित भई महान ॥
कुसुमित पथपादपनिकट, पथिक हिये हरषाय ।
ताप निवारण हेतु ज्यों, होहिं उपस्थित आय ॥
अम्बर रत्ना भरण मय, पुष्पनिचय आवास ।
कल्पलता अनुरूप श्री, जनक सुता के पास ॥

सकल राजपरिवार अपरिमित * भयोआयत्यहिभाँतिउपस्थित ॥
बर्षाऋतु महँ जौन प्रकारा * उमड़ि चलीसरिताकी धारा ॥
प्लावित करै तीर तरु वृंदन * त्यहिविधिराजपुरीसबत्यहिछन
लहिजग जननिसमागम काहीं * बूड़िगई आनँद रसमाहीं ॥
कौशल्यादिक राज रानि सब * महामोद मन मानि२ तब ॥
पुत्रबधू मुख चन्द्रन केरे * करि चुंबन बहुबार घनेरे ॥
मणि मुक्ता माणिक अरु अंबर * करनलगीं न्यौछावर उनपर ॥
सकल बधुन कहँमुख दिखराई * दीन्ही पुरनारिन हरषाई ॥

उनमणिगण मुक्ता रत्नसन * पूर्ण विशालराजगृह आँगन ॥
जानिपरै जनु रत्न समन्वित * रत्नाकर तहँ अहै उपस्थित ॥
अथवा यह उपमा आँगन का * करै अपेक्षा नहिं रत्नकी ॥
जब जगजननि रमा परमातित * हैं साक्षातस्वयं समुपस्थित ॥

दो०—जनक नन्दिनी केर मुख, लख्यो जु एकहु वार ।
सो न फिराइ सक्योअपन, लोचन क्यहू प्रकार ॥
द्रवित प्रेमरस मय भये, मनुसब दर्शक लोक ।
तन्मय हियसों ह्वै गये, स्नेह बिवश गतशोक ॥
जो परिपूर्ण वैष्णवी, विश्वमूल गुणयुक्त ।
त्यहि अम्बाकी अर्चना, यहही है उपयुक्त ॥
लक्ष्मीपूजा रत्न सों, अरुक्षीरो दधि माहिं ।
क्षीरक्षेपणाः उभय यह, सम बातुलता आहिं ॥
राजभवनमहँ अपरिमित, पुरनारिन के वृंद ।
आवन लागे त्यहि समय, कौतुक युत सानंद ॥
मनु बसन्त श्री प्रीति हित, अमित प्रसून सुवास ।
चहूंओर कमनीय अति, लागे लहन विकास ॥
कौशल्या रानी सबन, आदर करि बैठारि ।
लागीं आप्यायित करन, मधुर वचन उच्चारि ॥

इत नृप आज्ञाके अनुसारा * मंत्री गण मतिमान उदारा ॥
याजक भट्ट वाद्य कर आदिन * दीन्ह्योधनअरुअन्नभिखारिन ॥
बहुरि बंधुगण विप्र समाजा * अरु सामन्त निमंत्रित राजा ॥
भोजन किये अन्न पकाना * सुधा मधुर मोदक मिष्ठाना ॥
बिविध प्रदेशन के नरपाला * हैअति आनन्दितत्यहिकाला ॥
बिदाग्रहणकरि कोशलपतिसन * चलेमुदितमन निज २ देसन ॥
बहुरि बिवाहोत्सव के पाछे * बारह बर्ष अवधमधि आछे ॥

माया शक्ति जनक जासाथा * कियो विहार ईश रघुनाथा ॥
दो०—रह्यो विमल यश ईशकर, दिग्दिगन्त महँ छाय ।
प्रभु गुण गण सों मुग्धभे, पुरवासी समुदाय ॥
अवध पुरी महि महँ भई, मनु वैकुण्ठ द्वितीय ।
सिद्ध साध्य सुर मुनिन कर, तीर्थ परम रमणीय ॥
भूप कुमार स्वरूप प्रभु, जगत जनक श्रीराम ।
मर्यादा पालन करत, सागर सम गुणधाम ॥
सुजनकुमुदबन कहँ मुददायक * भये चन्द्रसम श्री रघुनायक ॥
विद्वज्जन पंकज कानन हित * सूर्य सदृश प्रभुभयेप्रकाशित ॥
मानस सरसम भे करुणालय * सद्गुण हंस अवलिके आलय ॥
भे सुभाग्य नभके ध्रुवतारा * सुकुशल कोशल ईश कुमारा ॥
त्यों विलास कुसुमावलि केरे * ऋतु वसन्त सम रघुबर हेरे ॥
लीलालता दाम कहँ परसे * मृदुल मंद मारुत सम दरसे ॥
समररूप कुज्झटिका माहीं * प्रवल पवन समान दरशाहीं ॥
विषय विषलता दाहन हेतू * दहन सदृशभे रघुकुल केतू ॥
इन्द्रिय करि कुल दमन मँझारी * मृगपति समभे दृगसुखकारी ॥
सहनशीलता महँ भगवाना * अविचलमन्दरअचलसमाना ॥
दो०—साहस अरु उत्साह के, केन्द्र रूप रघुनाथ ।
जनमन रंजन ह्वै कियो, अवध प्रजान सनाथ ॥
श्रीसीता कमला कला, अवतीर्णा महि माहिं ।
करन लगीं अनुवृत्ति पति, गुरुजन केरिसदाहिं ॥
हँसत समय जगदंब के, उपजत अस अनुमान ।
मनौं अन्य शशि भूमिमहँ, उदयभयोद्युतिमान ॥
जगत जननिमुख मंजुछवि, लोचन सुखदअनूप ।
लसतअलकअलिअवलियुत, कमलकुसुमअनुरूप॥

जासों जनक नृपति की कन्या * जगतजननिसबजगमहँधन्या॥
जंगम विकसित पंकजिनी सम * जानीजाहिंहोत असमन भ्रम ॥
यह शिक्षाप्रद परम पवित्रा * जगतजननिजग जनकचरित्रा
केवल मनुजन के मनमाहीं * सत्प्रवृत्ति उपजावन काहीं ॥
नर बुधिबोध गम्य है अतिवर * चित्र चित्रपट सरल भावकर ॥
प्रभु कहँ कछु उद्विग्न निहारी * अति उद्विग्न होहिं सुकुमारी ॥
लखि हर्षितचितहोहिंअनन्दित * व्याकुलनिरखिहोहिव्याकुलचित
कुपति हेरि सेवहिं ह्वै भीता * जनक नन्दिनीपरम विनीता ॥

दो०—पूत पतिव्रत धर्म कर, करन हेतु विस्तार।
पतिके अनुगत छांहसी, निवसहि यही प्रकार॥
परमात्मा आत्मा अमर, जगदम्बा के संग।
कबहु कुसुम मण्डप गवनि, रुचिररचत रसरंग॥
मंजुल लता निकुंज महँ, कबहू करैं विलास।
कहुँ अन्तःपुर महँ करहिं, पुष्पशयनमहँ वास॥
कहु बसन्त श्रीनिलयवर, उपबन महँप्रभुजाय।
प्रिया सहित हिण्डोल महँ, झूलैं मोद मनाय॥
कबहुँ जाय बनराजि महँ, सुखसों करतविहार।
जहँ कलोल कोकिल करैं, करिकलरवविस्तार॥
कुन्द मधुप मन्दिर मृदुल, फूले बहु मन्दार।
मञ्जु मञ्जरी पुञ्ज युत, सोहिरहे सहकार॥
कहुँ तृण पूर्ण बनस्थली, कहुँ देवालय माहिं।
कहु पवित्र ऋषि आश्रमन, प्रियासहितप्रभुजाहिं॥
रात्रि समय कबहू विकच, कुमुदकाननजाय।
करैं केलि माया मनुज, माया सँग हरषाय॥
विकसित पंकज रजललित, बनस्थलान मँझार।

कबौं दिवस महँ पूर्ण प्रभु, रुचिसोंकरत विहार ॥
पुष्पित लतानिकुंज मँझारा * कबहु छिपत रघुराजकुमारा ॥
माल्य ग्रहण परस्पर करहीं * कहुँ परिहास वचन उच्चरहीं ॥
पहिरहिं कबौं कुसुम कृत माला * कबहुँ लखैं चित्रनकीशाला ॥
होयँ विविध विध भूषण भूषित * करैं कबौं रसकेलि अदूषित ॥
कबौं चलत गहिकर सविलासा * कहु बैठत क्रीड़ागिरि पासा ॥
स्वादुभक्ष्य भोजन कहुँ करहीं * उभय परस्पर करमन हरहीं ॥
एला लौंग कपूर सुवासित * खात बिरी कबहूँ हर्षित चित ॥
कबौं भवनथित पुष्पदोल महँ * दोऊ झुलावत एकएक कहँ ॥
कुंजर करभ तरणि आरोहण * करतकुतूहल सों कौनेहु क्षण ॥
कबहूँ सलिल केलि कहँ करहीं * कहुँ शृंगार चावचित धरहीं ॥

दो०—बीणा मुरज बजाय करि, नृत्य ठानिकरि गान ।
एक एक कहँ मोहहीं, रति रति नाथ समान ॥
कहुं देखहिं आख्यापिका, नाट्य नाटिकन माहिं :—
पढ़हिं पुरातन तत्वमय, बहु इतिहासन काहिं ॥
ऐसेहि कहुं प्रासाद महं, जाहिं कबहुं उद्यान ।
नदी पुलिन बिच बिचरहीं, नर शरीर भगवान ॥
गुण गण अगणित जगतमहं, जिनके हैंविख्यात ।
जिनकी कीर्तन करत हैं, कीर्ति देव मुनि ब्रात ॥
पराशक्ति सम्पन्न जो, नित्य निरीह अनन्त ।
जिनके पूरण विभवकर, कौनहु समय न अन्त ॥

कार्य शक्ति मय माया काहीं * करतनिरस्त जौनछनमाहीं ॥
सोइ जगतपति विश्व बिलासी * रमासहित वैकुण्ठ निवासी ॥
देव कार्य केरे अनुयायिक * धरि नररूप अनूपम मायिक ॥
अवध धाम महं राम सुशीला * करनलगे नितप्रतिनवलीला ॥

राम चरित्र सुधा सागर कर * है न अन्त पै जो कोउ नरवर ॥
यहिकर एक बिंदुहू सुन्दर * करि है पान महान मनोहर ॥
ब्रह्मानन्द सुरस महं वह जन * ह्वैहै महा भाग्य आप्लुतमन ॥
कृत्तिवास असमर्थ अजाना * करि मन महंऐसहिअनुमाना ॥

दो०—आदिम लीला प्रभूकी, कही बुद्धि अनुसार ।
बामन नर चन्द्रहि गहन, चाहै जौन प्रकार ॥

रामगीती छन्द ॥

निजतात भोलानाथ अरु श्री विन्ध्य वासिनि मात ।
तिनके चरण अरविंद को रज शीशधरि हरषात ॥
सोइभक्त वत्सल दयामय अव्यक्त व्यक्त अनन्त ।
सत्चित् अनन्दस्वरूप रूपविहीन अज गुणवन्त ॥
श्रीईशके चरणन परयो कालीप्रसन्न अबुद्धि ।
याचैयहै भिक्षा कृपानिधि नाथसन मनशुद्धि ॥
अरु प्रभुगुणन के कथनकी सामर्थ्य जिह्वा काहिं ।
अभिरुचिरुचिरप्रभुकथामधि चिरकाललौंचितमाहिं
प्रभुकी कृपासों यहि समयलौं विघ्नराशि अपार ।
आयों अतिक्रम करत क्रमक्रममैंभवाब्धि मँझारा ॥
लोकोपहास तथा अवज्ञा कर विषम जगमाहिं ।
यद्यपिकठिनकलिकाल वशपरिमाणहै कछुनाहिं ॥

दो०—किन्तु अल्पगति अल्पमति, हमरे लघु उरमाहिं ।
उनकी चिन्ता करन कर, अहै ठौरही नाहिं ॥
ज्यहिकर नासा बिवरलहि, श्लेष्मा वृद्धि विकार ।
घर्घर शब्द करै सदा, त्यहि कहँ कौनप्रकार ॥
चन्दनवास बिचार कर, देव उचित अधिकार ? ।
अथवा जो मदिरा पिये, शिथिलेन्द्रियसविकार ॥

धर्म विषय महं तत्कथित, को मानिहै प्रमान ?।
कै श्मशानगति मृतक कहं, को नर परमअजान ॥
वीणाकी मृदु मधुर धुनि, उहां सुनै है जाय ?।
कै प्रसन्न अंधहि करै, को दर्पण दिखराय ? ॥

बहु धर्मध्वज बकब्रत धारी * हैं मनुष्य संसार मंझारी ॥
जोकेवल बहु वाक्य प्रलापी * हैं अन्तर महं दारुण पापी ॥
असदुपायअर्जित धनव्ययकरि * कपटधर्म धरिधर्महिं परिहरि ॥
निज कहं परम बिवेकी जानत * अन्यनकाहंअधमअनुमानत ॥
पै ज्यों चित्रलिखित नर नारी * पावक जीवजन्तु जलचारी ॥
करहिं कार्य वह निज २ नाहीं * त्यों बिवेक केवलमुख माहीं ॥
अरु धर्माडम्बर निपुणाई * मानसमल नहिंसकहिंमिटाई ॥
केवल वाह्यमाहिं जग त्यागा * सोउ न अहै यथार्थ विरागा ॥
चित्त शुद्धिही एक लखाई * साधन मुक्तिमूल० सुखदाई ॥
अधम धातु मिश्रित अन्तरमहं * ऐसे शुद्धिहीन काञ्चनकहं ॥
कहै कलंकित सब संसारा * नतु पंकादिलेपके द्वारा ॥
बाह्य विदूषित सुवरण काहीं * कोउनर दूषित मानतनाहीं ॥

दो०—वाह्या सक्त मनुष्यहू, यदिनिज अन्तर माहिं।
लिप्तहोय नहिं तौ उचित, धन्य कहबत्यहिकाहिं ॥
"हमत्याग्यो धनदारगृह, सम्पद आदिक काहिं"।
तुम कहँ यह अभिमान है, बड़ उर अन्तर माहिं ॥
पै विचारि देखौ सबै, यह कब हते तुम्हार ?।
जोनिजनहित्यहितजनकर, तुम्हैकौनअधिकार?॥
दांभिक कपट ब्रत लिये, बहु असाधु समुदाय।
लोक प्रवंचन हेतु शिर, जटा विशाल बढ़ाय ॥
पहिरत गैरिक वसन वै, पूरण कलि अवतार।

करत सरल मानवन मह, अपन महत्त्व प्रचार ॥
साधारण ज्यहि सकैंक्रय, करि केहू विधिनाहिं ।
ई द्दश वस्तु अमूल्य कहँ, कौन वनिकजगमाहि ॥
आपण बाहर डारि है ?, बिन कछु बुद्धि बिकार ।
पै नहिं कोउ यह करतहै, अपने हृदय बिचार ॥
करब प्रपीड़ित यहि तनु काहीं * अहै मूढ़ता संशय नाहीं ॥
ज्योंजलपतितकाष्ठचयअगणित * होत तरंगनसन संचालित ॥
त्यों कोउ औरहि यहितनुकाहीं * चालितकरत सकलछनमाहीं ॥
मत्तचोर अति दुर्बल जन कहँ * पायभवनके एकपार्श्व महँ ॥
त्यहि प्रहार करि गवनत जैसे * अन्य कठिन कोउ तस्करवैसे ॥
यहि निर्दोष देह कहँ आई * करहि बिपन्न महा दुखदाई ॥
त्यहि मन केर दमनबल करिकै * उचितसबन धर्महिअनुसरिकै ॥
सुख दुख कर उत्पत्ति स्थाना * तदपि देह नहिं दोष निधाना ॥
दो०—वायु वेगवश फल पतन, फलित वृक्ष सों होय ।
वृक्ष दोष वह है नहीं, पवन दोषही सोय ॥
त्यहि बिधि यह तनुहूसदा, मनहीके आधीन ।
दुःख और सुख पावही, कहैं समग्र प्रवीन ॥
इन्द्रियरूपी अति प्रबल, विषधर गणन मँझार ।
यहिअजेय मन कहँ सबै, तक्षक करहु बिचार ॥
यहि अभेद्यभव दुर्ग महँ, रहि जोजन मतिमान ।
करतआक्रमणनिजउपरि, इन्द्रिय सैन्य महान ॥
ताहि पराजित करि सकै, धरि बिवेक मनमाहिं ।
प्रकृति सुभट सोई अहै, लहै क्लेश वह नाहिं ॥
विश्वविषय मय दुर्जय आमय * इन्द्रियअनीप्रबलहै अतिशय ॥
अहंकार नायक है त्यहिकर * द्वंद्वनिचयरथनिकरक्लेशकर ॥

माया शक्ति जनक जासाथा ❀ कियो विहार ईश रघुनाथा ॥

दो०—रह्यो विमल यश ईशकर, दिग्दिगन्त महँ छाय ।
प्रभु गुण गण सों मुग्धभे, पुरवासी समुदाय ॥
अवध पुरी महि महँ भई, मनु वैकुण्ठ द्वितीय ।
सिद्ध साध्य सुर मुनन कर, तीर्थ परम रमणीय ॥
भूप कुमार स्वरूप-प्रभु, जगत जनक श्रीराम ।
मर्यादा पालन करत सागर सम गुणधाम ॥

सुजनकुमुद्बन कहँ मुद्दायक ❀ भये चन्द्रसम श्री रघुनायक ॥
विद्वज्जन पंकज कानन हित ❀ सूर्य सदृश प्रभुभये प्रकाशित॥
मानस सरसम भे करुणालय ❀ सद्गुण हंस अवलके आलय ॥
भे सुभाग्य नभके ध्रुवतारा ❀ सुकुशल कोशल ईश कुमारा॥
त्यों विलास कुसुमावलि केरे ❀ ऋतु वसन्त सम रघुबर हेरे॥
लीलालता दाम कहँ परसे ❀ मृदुल मंद मारुत सम दरसे॥
समररूप कुज्झटिका माहीं ❀ प्रबल पवन समान दरशाहीं॥
विषय विषलता दाहन हेतू ❀ दहन सदृशभे रघुकुल केतू॥
इंद्रिय करि कुल दमन मँझारी❀ मृगपति संमभे दृगसुखकारी॥
सहनशीलता महँ भगवाना ❀ अविचलमन्दरअचलसमाना॥

दो०—साहस अरु उत्साह के, केन्द्र रूप रघुनाथ ।
जनमन रंजन ह्वै किया, अवध प्रजान सनाथ ॥
श्रीसीता कमला कला, अवतीर्णा महि माहिं ॥
करन लगीं अनुवृत्ति पति, गुरुजन केरिसदाहिं ।
हँसत समय जगदंब के, उपजंत अस अनुमान ।
मनौं अन्य शशि भूमिमहँ, उदय भयोद्युतिमान ॥
जगत जननिमुख मंजुछवि, लोचन सुखदअनूप ।
लसतअलकअलिअवलियुत, कमलकुसुमअनुरूप ॥

जासों जनक नृपति की कन्या ❀ जगतजननिसब जगमहँधन्या॥
जंगम विकसित पंकजिनीसम ❀ जानीजाहिंहोत असमन भ्रम॥
यह शिक्षाप्रद परम पवित्रा ❀ जगतजननिजग जनकचरित्रा॥
केवल मनुजन के मनमाहीं ❀ सत्प्रवृत्ति उपजावन काहीं॥
नर बुधिबोध गम्य है अतिवर ❀ चित्र चित्रपट सरल भावकर॥
प्रभु कहँ कछु उद्विग्न निहारी ❀ अति उद्विग्न होहिं सुकुमारी॥
लखि हर्षितचितहोहिंअनंदित❀व्याकुलनिरखिहोहिव्याकुलचित
कुपति हरि सेवहिं ह्वै भीता ❀ जनक नन्दिनीपरम विनीता॥

दो०—पूत पतिव्रत धर्म कर, करन हेतु विस्तार
पतिके अनुगत छांहसी, निवसहिं यही प्रकार॥
परमात्मा आत्मा अमर, जगदम्बा के संग।
कबहुँ कुसुम मण्डप गवनि, रुचिररचत रसरंग॥
मंजुल लता निकुंज महँ, कबहूँ करैं विलास।
कहुँ अन्तःपुर महँ करहिं, पुष्पशयनमहँ वास॥
कहु बसन्त श्रीनिलयवर, उपबन महँ प्रभुजाय।
प्रिया सहित हिण्डोल मह, भूलैं मोद मनाय॥
कबहुँ जाय बनराजि महँ, सुखसों करतविहार।
जहँ कलोल कोकिल करैं, करि कलरव विस्तार॥
कुन्द मधुप मन्दिर मृदुल, फूले बहु मन्दार।
मञ्जु मञ्जरी पुञ्ज युत, सोहिरहे सहकार॥
कहुँ तृण पूर्ण बनस्थली, कहुँ देवालय माहिं।
कहु पवित्रऋषि आश्रमन, प्रिया सहित प्रभुजाहि॥
रात्रि समय कबहू विकच, कुमुद कानन न जाय।
करैं केलि माया मनुज, माया सँग हरषाय॥
विकसित पंकज रजललित, बनस्थलान मँझार।

कबौं दिवस महँ पूर्ण प्रभु, रुचिसोंकरत विहार ॥

पुष्पित लतानिकुंज मँझारा * कबहुँ छिपत रघुराजकुमारा ॥
माल्य ग्रहण परस्पर करहीं * कहुँ परिहास वचन उच्चरहीं ॥
पहिरहिं कबौं कुसुम कृत माला * कबहुँ लखैं चित्रनकीशाला ॥
होयँविविध विध भूषण भूषित * करैं कबौं रसकेलि अदूषित ॥
कबौं चलत गहिकर सविलासा * कहु बैठत क्रीड़ागिरि पासा ॥
स्वादुभक्ष्य भोजन कहुँ करहीं * उभय परस्पर करमन हरहीं ॥
एला लौंग कपूर सुवासित * खात बिरी कबहूँ हर्षित चित ॥
कबौं भवनथित पुष्पदोल महँ * दोऊ झुलावत एकएक कहँ ॥
कुंजर करभ तरणि आरोहण * करतकुतूहल सोंकौनेहु क्षण ॥
कबहूँ सलिल केलि कहँ करहीं * कहुँ शृंगार चावचित धरहीं ॥

दो०—बीणा मुरज बजाय करि, नृत्य ठानिकरि गान ।
एक एक कहँ मोहहीं, रति रति नाथ समान ॥
कहुँ देखहि आख्यापिका, नाट्य नाटिकन माहिं ।
पढ़हिं पुरातन तत्त्वमय, बहु इतिहासन काहिं ॥
ऐसेहि कहुँ प्रासाद महँ, जाहिं कबहुँ उद्यान ।
नदी पुलिन बिच बिचरहीं, नर शरीर भगवान ॥
गुण गण अगणित जगतमहँ, जिनके हैं विख्यात ।
जिनकी कीर्तन करत हैं, कीर्ति देव मुनि व्रात ॥
पराशक्ति सम्पन्न जो, नित्य निरीह अनन्त ।
जिनके पूरण विभवकर, कौनहु समय न अन्त ॥

कायशक्ति मय माया काहीं * करतनिरस्त जौनछनमाहीं ॥
सोइ जगतपतिविश्व बिलासी * रमासहित वैकुण्ठ निवासी ॥
देव कार्य के अनुयायिक * धरि नररूप अनूपम मायिक ॥
अवध धाम महँ रामसुशीला * करनलगे नितप्रतिनवलीला ॥

राम चरित्र सुधा सागर कर * है न अन्त पै जो कोउ नरवर।
यहिकर एक बिंदुहू सुन्दर * करि है पान महान मनोहर।
ब्रह्मानन्द सुरस महँ वह जन * ह्वै है महा भाग्य आप्लुतमन।
कृत्तिबास असमर्थ अजाना * करि मन महँ ऐसहि अनुमाना।

दो०—आदिम लीला प्रभूकी, कही बुद्धि अनुसार।
बामन नर चन्द्रहि गहन, चाहै जौन प्रकार॥

रामगीती छन्द॥

निजतात भोलानाथ अरु श्री विन्ध्य वासिनि मात।
तिनके चरण अरविंद की रज शीशधरि हरषात॥
सोइभक्त वत्सल दयामय अव्यक्त व्यक्त अनन्त।
सत्चित् अनन्दस्वरूप रूपविहीन अज गुणवन्त॥
श्रीईश के चरणन परयो कालीप्रसन्न अबुद्धि।
याचैयहै भिक्षा कृपानिधि नाथसन मनशुद्धि॥
अरु प्रभुगुणन के कथनकी सामर्थ्य जिह्वा काहिं।
अभिरुचिरुचिरप्रभुकथामधि चिरकाललौं चितमाहिं॥
प्रभुकी कृपासौं यहि समयलौं विघ्नराशि अपार।
आयों अतिक्रम करत क्रमक्रममैंभवाब्धि मँझार॥
लोकोपहास तथा अवज्ञा कर विषम जगमाहिं।
यद्यपि कठिन कलिकालवश परिमाण है कछुनाहिं॥

दो०–किन्तु अल्पगति अल्पमति, हमरे लघु उरमाहिं।
उनकी चिन्ता करन कर, अहै ठौरही नाहिं॥
ज्यहिकर नासा बिवरलहि, श्लेष्मा वृद्धि विकार।
घर्घर शब्द करै सदा, त्यहि कहँ कौनप्रकार॥
चन्दनवास बिचार कर, देव उचित अधिकार?
अथवा जो मदिरा पिये, शिथिलेन्द्रियस विकार॥

धर्म विषय महं नरकथित, को मानिहै प्रमान ? ।
कै श्मशानगति मृतक कहं को नर परम अजान ॥
वीणाकी मृदु मधुर धुनि, उहां सुनै है जाय ? ।
कै प्रसन्न अंधहि करै, को दर्पण दिखराय ? ॥

बहु धर्मध्वज वकव्रत धारी * हैं मनुष्य संसार मंझारी ॥
जो केवल बहु वाक्य प्रलापी * हैं अन्तर महं दारुण पापी ॥
असदुपायअर्जित धनव्ययकरि*कपटधर्म धरिधर्महिं परिहरि ॥
निज कहँ परम बिवेकी जानत*अन्यनकाहंअधमअनुमानत ॥
पै ज्यों चित्रलिखित नर नारी * पावक जीवजन्तु जलचारी ॥
करहिं कार्य वह निजं २ नाहीं * त्यों बिवेक केवलमुख माहीं ॥
अरु धर्माडम्बर निपुणाई * मानसमलनहिंसकहिंमिटाई॥
केवल बाह्यमाहिं जग त्यागा * सोउ न अहै यथार्थ विरागा ॥
चित्त शुद्धिही एक लखाई * साधन मुक्तिमूल सुखदाई ॥
अधम धातु मिश्रित अन्तरमहं * ऐसे शुद्धिहीन काञ्चनकहं ॥
कहै कलंकित सब संसारा * नतु पंकादिलेपके द्वारा ॥
बाह्य विदूषित सुवरण काहीं * कोउनर दूषित मानतनाहीं ॥

दो०—बाह्य सक्त मनुष्यहू, यदिनिज अन्तर माहिं ।
लिप्तहोय नहिं तौ उचित, धन्य कहवत्यहिकाहिं ॥
"हमत्याग्यो धनदारग्रह, सम्पद आदिक काहिं" ।
तुम कहँ यह अभिमान है, बड़ उर अन्तर माहिं ॥
पै विचारि देखौ सबै, यह कब हते तुम्हार ? ।
जोनिजनहित्यहितजनकर,तुम्हैकौनअधिकार ?॥
दांभिक कपट ब्रत लिये, बहु असाधु समुदाय ।
लोक प्रवंचन हेतु शिर, जटा विशाल बढ़ाय ॥
पहिरत गैरिक वसन वै, पूरण कलि अवतार ।

करत सरल मानवन मह, अपन महत्त्व प्रचार ॥
साधारण ज्यहि सकैंक्रय, करि केहू विधिनाहिं ।
ई दृश वस्तु अमूल्य कहँ, कौन बनिक जग माहि ॥
आपण बाहर डारि है ?, बिन कछु बुद्धि बिकार ।
पै नहिं कोउ यह करतहै, अपने हृदय बिचार ॥

करब प्रपीड़ित यहि तनु काहीं * अहै मूढ़ता संशय नाहीं ॥
ज्योंजलपतितकाष्ठचयअगणित* होत तरंगनसन संचालित ॥
त्यों कोउ औरहि यहितनुकाहीं* चालितकरत सकलछनमाहीं॥
मत्तचोर अति दुर्बल जन कहँ * पायभवनके एकपार्श्व महँ ॥
त्यहि प्रहार करि गवनत जैसे * अन्य कठिन कोउ तस्करवैसे॥
यहि निर्दोष देह कहँ आई * करहि विपन्न महा दुखदाई ॥
त्याह मन केर दमनबल करिकै*उचितसबन धर्महि अनुसरि कै॥
सुख दुखकर उत्पत्ति स्थाना * तदपि देह नहिं दोष निधाना॥

दो०—वायु वेगवश फल पतन, फलित वृक्ष सों होय ।
वृक्ष दोष वह है नहीं, पवन दोषही सोय ॥
त्यहि बिधि यह तनुहूसदा, मनहीके आधीन ।
दुःख और सुख पावही, कहैं समग्र प्रवीन ॥
इन्द्रियरूपी अति प्रबल, विषधर गणन मँझार ।
यहिअजेय मन कहँ सबै, तक्षक करहु बिचार ॥
यहि अभेद्यभव दुर्ग महँ, रहि जाजन मतिमान ।
करतआक्रमणनिजउपरि, इन्द्रियं सैन्य महाने ॥
ताहि पराजित करि सकै, धरि विवेक मनमाहिं ।
प्रकृति सुभट सोई अहै, लहै क्लेश वह नाहिं ॥

विश्वविषय मय दुर्जय आमय*इन्द्रियअनीप्रबलहै अतिशय ।
अहंकार नायक है त्यहिकर * द्वंद्वनिचयरथनिकरक्लेशकर ॥

भोग राजि राजी गज राजी ❀ चेष्टारूप अपरिमित बाजी ॥
हिंसाद्वेष पदाति समाना ❀ तृष्णा वागुरास्त्र अनुमाना ॥
असि समान है लोभ बखाना ❀ कुन्त अस्त्रसम क्रोधहिजाना ॥
यहि भीषणसेनासन निशिदिन ❀ उठतकाम कोलाहल सबछिन ॥
चहैं कोऊ ऐरावत गज कर ❀ भेदिसकै गणुस्थल तजिशर ॥
पै इन्द्रियदल अहै भयावह ❀ महाकठिन है यहिकर निग्रह ॥

दो०—किन्तु शास्त्र महँ कथितहै, यह इन्द्रिय सबबेर ।
अविवेकिनके शत्रु हैं, मित्र बिवेकन केर ॥
केवल कर्महि मोक्ष कर, है अतिसहज उपाय ।
उन शुभ कर्मनं केर हैं, इन्द्रिय गणहि सहाय ॥
प्रभु जानतनिजकहँसकल, ज्ञानी दृढ़ विश्वास ।
अरु इन्द्रियगण कहँ गनैं, आज्ञा कारी दास ॥
यह साधन है अतिकठिन, यदपितदपि करि चाव ।
मग्नचित्त ह्वै ध्यावही, निश्चय करि जो भाव ॥
तौ क्रम २ ह्वैजात है, तन्मय जौन प्रकार ।
अग्नि योग सों आयसहु, होत अग्नि अनुहार ॥
पै भगवतकी कृपा महँ, किये बिना विश्वास ।
प्रकृत प्रेम बिन हृदयमह, दृढ़ता केर विकास ॥
तथा असम्भव है यथा, रज सों तैलोत्पत्ति ।
बिन्ध्याचल पेषण विषय, बन्ध्यासुत व्युत्पत्ति ॥
भगवत लीलामृत पियहु, यासों सहित प्रतीति ।
बिन यहि के नहि जन्मही, उरमहँ भगवतप्रीति ॥

दो०—गङ्गा तटथित राजही, गर्गाश्रम बर ग्राम।
तहँ जन्मे पाण्डेय कुल, भूषण श्री शिव राम॥
तिनकर सुत मैं मन्द मति, रूप नरायण नाम।
पद्य बद्ध कीन्ह्यो ललित, राम चरित्र अभिराम॥
दृग रस रस शशि वर्ष, अरु कृष्ण पक्ष मधुमास।
षष्ठी तिथि भृगु महँ भयो, आदिमकाण्ड प्रकास॥

इति शुभम्॥

Lucknow Steam Printing Press, Lucknow—1916.